THE BOOK WAS DRENCHED

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186615
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H050 Dw 99R Accession No. 5 915.

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

कुम्हलित कुमुद
सुमडलों को,
ज्यों राकेश,
खिलाता है।
मुरझाये वैद्यक
सूत्रों को,
"राकेश" पुनः
सरसाता है॥

सम्पादक—द्विवेदी पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री।

राकेश के नियम।

१—राकेश की नवीन वर्ष ३० सितम्बर से आरम्भ होती है अतः यह द्वितीय वर्ष का प्रथमाङ्क है।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों में प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य २) रु० है।

३—ग्राहक होने वाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें।

४—जिनके पास पत्र १५ तारीख तक न पहुँचे पोस्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें फौरन सूचना देवें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये।

६—ग्राहकों व गरीब रोगियों का एक प्रश्न मुफ्त छपेगा। अधिक छपवाने के लिये। पश्न देना होगा।

लेखकों के प्रति।

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

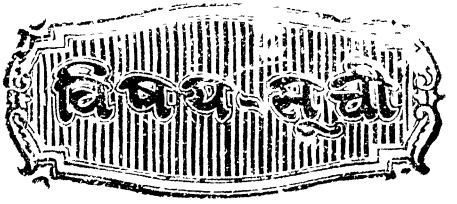
२—आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रयोग प्रश्न नहीं छापे जाते हैं।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषण पूर्ण लेखों को पत्रमें प्रथम स्थान मिलेगा।

४—श्रेष्ठ लेखों पर पुरस्कार मिलेगा।

५—लेखों के घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक का होगा।

६—प्रयोग प्रेषक सज्जन अपनेपन प्रयोग ही भेजने की कृपा करें मिश्रण प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे। मैनेजर



विषय	पृष्ट
१—नव वर्ष स्वागत	१
२—राकेश का द्वितीय वर्ष	२
३—ग्राहकों तथा पाठकों से अपील	३
४—द्वितीयवर्षारम्भ में	५
५—प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा के जेल जाने पर	७
६—राकेश सम्मेलनांक	८
७—प्राचीन भारत और शल्य तंत्र	९
८—अभिलाष उदय राकेश	
९—हैजा विशूचिका	
१०—औषधि विज्ञान	
११—धर्मार्थ काम.....मुत्तमम	
१२—अनुभव सार	
१३—वैद्यवरों से प्रश्न	
१४—वैद्यवरों के उत्तर	
१५—वैद्यक संसार समाचार	
१६—वैद्यक मनोरञ्जन	

वर्ष २ | सितम्बर सन् १९२९ ई०

नव वर्ष स्वागत ।

[लेखक—श्रीयुत "इन्द्र"]

नव वर्ष हम स्वागत करें, प्रिय आइये प्रिय आइये ।
राकेश को निर्विघ्न कर, सुख सौख्य युत
पूर्ण द्युति द्वादश कलायुत, यह वर्ष सम्पूरित हुआ ।
नव वर्ष ! तव शुभ आशिषे, युग वर्ष प्रा
आकांक्षायें जो सभी, उसकी नहीं विकसित हुई ।
नव वर्ष ! तव प्रारम्भ में, हैं चाहती प्र
हे वर्ष नव ! 'राकेश' है यद्यपि अभी शिशुकाल में ।
चाहत करन परपूर्ण सेवा, इस समय ।
इसलिये उत्साह और, उद्योग का शुभ दान कर ।
निर्विघ्नता के साथ में, फिर आयुर्वेदोत्थ
जिससे शिशु 'राकेश' की, शुभ चन्द्रिका प्रकाश हो ।
आरोग्य भारतवर्ष हो, सब आधि व्या

राकेश का द्वितीय वर्ष

आज उस जगज्जननि, कलिमलहरणि, विन्ध्यवासिनि, विन्ध्येश्वरी, श्रीमातेश्वरी भगवती की असीम कृपा से 'राकेश, अपनी प्रथम वर्ष की आयु सानन्द व्यतीत कर द्वितीय वर्ष में नवीन २ आशाओं और आकाँक्षाओं को लिये हुए अवतरित हो रहा है। हे मातेश्वरी! इसकी उच्चाकाँक्षाओंकी पूर्तिमें पूर्ण सहायक हो। जिससे तेरा शिशु 'राकेश' अपने बाल्यावस्था की किलोल में आयुर्वेद के लुप्त प्रायः अङ्गों का पुनर्ज्ञान करता हुआ तेरी गोदमें सुशोभित रहे।

'राकेश' ने प्रथम वर्षमें उदय हो लेख, कविता, अनुभूत प्रयोग तथा रोग प्रश्नोत्तरादि कला द्वारा प्रकाश डाल किस भाँति रोगान्धिकार मिटाया तथा आयुर्वेद का मुखोज्वलित किया? इसका ज्ञान पाठकों को तथा ग्राहकों को स्वयं ही पत्र अवलोकन से हो गया होगा तथा कर सकेंगे। इसके बारे में हम अपनी तरफसे कुछ नहीं प्रकट करना चाहते हैं न कर सकते हैं हां इतना अवश्य है कि समालोचकों ने भी समदृष्टि द्वारा उचित आलोचना की, विद्वानों ने भी सत्कार किया—पत्र संपादकों ने भी सहयोगिता दिखलाई श्रेष्ठ लेखकों ने भी हृदय में स्थान दे उत्तमोत्तम लेख भेंट किये, कवि जनों ने भी कवि कला द्वारा राकेश को शुभ अभिलाषा की ईश से प्रार्थना की। आदि २ सब कुछ होते हुए भी राकेश की गौरवतामें हमें तो यही प्रकट करना है कि "राकेश" वर्तमान वैद्यक पत्रों में ध्येय पर अटल रहने वाला एक मात्र सर्व श्रेष्ठ वैद्यक पत्र है। कारण कि प्रायः वैद्यक पत्र पत्रिकायें अपना आयुर्वेदीय ध्येय अलापते हुए भी पथ से विचलित होकर आङ्गिल साहित्य की शरण लेकर उसके विषयके लेख तथा प्रयोग छाप कर 'नट्टी की ओट शिकार खेलनेवाली कहावत, को चरितार्थ कर रहे हैं। वह एक गति 'राकेश' की ही है, तथा रहेगी कि वह अपने ध्येयके अन्तर्गत आयुर्वेद का पूर्ण रूप से प्रचार कर रहा है और करेगा। हालाँकि यह कार्य क्षेत्र तो विशाल है। पर यह स्वदेशी आंदोलन की जान की रक्षा की पूर्ण रूप ढाल है तथा आयुर्वेद के वृहत रूपमें प्रचार की एक मात्र चाल है। बस इसी कार्य की सफलता का हृदय में लक्ष्य बना 'राकेश' कर्तव्य पथ पर आरूढ़ है।

'राकेश ने जो आदर वैद्य समाज तथ विद्वानों द्वारा अब तक प्राप्त किया उसका

सर्व श्रेय हमारे दयालु विद्वान लेखकों ही को है। जिन्होंने अपने अमूल्य समय को 'राकेश' के लिये उत्तमोत्तम लेख लिखकर व्यतीत किया है। जिसके ही कारण आज राकेश भारत गगन में उदय हो पाठकों को अमृतमयी लेखों का प्रकाश डालने योग्य हो सका। उस महान पुण्यके भागी वही सज्जन हैं जिन्होंने अपने गुप्त अनुभव सिद्ध प्रयोगों को तथा रोगियों के जटिल प्रश्नों के उत्तर निष्कपट भाव से प्रकाशित कराकर उदारता प्रगट की। जिससे राकेश के पाठकों ने आरोग्य लाभ प्राप्त कर भ्रमित रोगोंसे छुटकारा पा तथा औरों को करा यश के भागी बने। ऐसी सूरत में कुछ काल के लिये हमें 'किं कर्त्तव्य विमूढ़' होना पड़ता है कारण कि समझमें नहीं आता कि ऐसे महानुभावों का हम किन शब्दों द्वारा आदर कर प्रतिकार रूप उऋणी होऊं। सिवा इसके कि मैं उनका आभारी हूं और हृदयसे धन्य वाद देता हूं और साथ ही साथ द्वितीय वर्षके लिये लेखादि भेजनेको तथा गत वर्ष की भांति प्रेम बनाये रखनेको सादर अनुरोध करता हूं। कारण कि इस साल 'राकेश' ने "शल्य शालाक्य„ स्तम्भ को बढ़ाकर विशेष स्थान दिया है। यह कार्य बड़े महत्व का है वैद्य सम्मेलनने भी इस के पुनः प्रसार के लिये प्रस्ताव पास किया है और हमने भी यह कार्य आप ही लोगों की सहायता पर छेड़ा है अतएव आप सब लोगों का भी कर्तव्य होगा कि इस विषयके उत्तमोत्तम लेख तथा प्रयोग भेजने का कष्ट ग्रहण करें, प्राचीन शल्यशालाक्य के उद्धारार्थ शैली युक्त अन्वेषण पूर्ण लेख प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों तथा प्राचीन अस्त्र शस्त्रादि भेजने का भी लेखक तथा वह मनुष्य जो इस प्रकार की सहायता प्रदान कर सकते हैं अवश्य प्रबन्ध करें। ताकि उद्देश्य कार्य के सफलीभूत शिखिर पर पहुँचने का मार्ग सुगम हो सके। यही हमारा आप महानुभावोंसे सविनय अनुरोध है। —सम्पादक

ग्राहकों तथा पाठकों के प्रति अपील

हमें यह सूचित करते हर्ष होता है कि राकेश के गुणों पर मुग्ध हो उसको वा. ल्यावस्थामें ही आशा जनक ग्राहक संख्या होने का जो परिचय मिला वह "राकेश" के अधिकता तथा उत्साह वृद्धि के लिये विशेष सहायक रूप हुआ। कारण कि हम देखते हैं कि कितने ही प्राचीन वैद्यक पत्र वर्षों निरन्तर सेवा करते रहने पर भी ग्राहक गणों ही की रुष्टता वश आज आयुर्वेदीय संसार से लोप हो गये हैं तथा होने की बाट देख रहे हैं। जिसका हमको भी महान् दुःख है। पर यह सब आप महानुभावों की ही उदासीनता का परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है। सुप्त आयुर्वेदीय जन समूह को जाग्रित अवस्था में लाने को पत्रों का होना कितना आवश्यकीय है

जीर्णावस्था में पड़े हुए आयुर्वेद शास्त्र को पत्रों द्वारा उद्धार करने का पाठ पढ़ाना कितना उपयोगी है। फिर ऐसे विकराल समय में आपको सहायता से इस प्रकार से कंधा डालना किस प्रकार शोभा प्रद है आयुर्वेदीय पत्र २) रु० से ४) रु० वार्षिक चन्दा से अधिक नहीं चाह रहे हैं। यह रकमें आप धनोमानी सज्जनों तथा आयुर्वेद प्रेमियों के लिये कोई बड़ी बात नहीं मालूम पड़ती है। दो चार रुपये मासिक औसत दर्जे के मनुष्य व्यर्थ में पान बीड़ी आदि खर्चे में व्यतीत कर देते हैं हम तो आपको दो या चार रुपये सालाना ही का आर्थिक कष्ट देते हैं। फिर भी बदले में कुछ आपको भेट ही करते हैं। आपकी इस आर्थिक विमुखता से पत्र संचालकों को अधिक खर्च का सामना करते हुए आखिर को बोझ असहनीय हो जाता है फिर आपकी तथा देश की सेवा करने के सौभाग्य से वंचित रह जाते है—अतः यह भली भाँति सिद्ध है कि पत्र संचालन, बिना आपकी विशेष अनुकम्पासे नियमित रूप से नहीं हो सकता। हम अपने गत वर्ष के ग्राहकों को जिन्होंने हमें प्रथम वर्ष ही में परियाप्त सहायता दे उत्साह बढ़ाया तथा द्वितीय वर्ष के लिये भी वचन दिया धन्य वाद देते हैं जो आज उन्हीं के कृपा फल रूप राकेश विशेष उत्साह के साथ द्वितीय वर्ष में भी सेवा क्षेत्र में अग्रसर हो रहा है। गत वर्ष में समभवतः नवीन कार्य होने की वजह से ग्राहकों को पत्र देर में मिलने, तथा डाक वालों की असावधानी से न मिलने की वजह से यदि कुछ असन्तुष्टता रही हो या प्रेस तथा प्रूफरीडर की वजह से लेखों में अशुद्धता रही हो तो मांगा चाहता हूं हालांकि हमने ग्राहकों की सूचना आने पर उसी समय राकेश न मिलने पर दुबारा तिबारा तक भेजा है।

इस वर्ष राकेश में आप लोगों के पठन पाठन की सामिग्री में विशेष स्तम्भादि बढ़ा कर उपयोगिता करने का भरसक प्रयत्न किया गया है और बराबर किया जावेगा—पृष्ठ संख्या भी बढ़ा दी गई है, विशेषाङ्क भी यथा आवश्यकीय समय पर निकालने का आयोजन किया जावेगा इसी लिये आपसे इस साल ॥) और वार्षिक मूल्य में बढ़ाकर वार्षिक मूल्य १॥) के बजाय २) कर दिया गया है जिसको कि शायद आप अनुचित न समझकर पत्र के व्यय का ध्यान रख जो राकेश की वी० पी० आपके पास जावेंगीं सहर्ष स्वीकार कर लेंगे—

मुझे पूर्ण आशा है कि आप गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी "राकेश"को अपनायेंगे। स्वयंही नहीं अपनायेंगे वरन् अपने इष्ट मित्रों को तथा दूसरों को पांच २ या दश दश की संख्या में नवीन ग्राहक बना कर राकेश के प्रति प्रेम बढ़ा सहायता देंगे।

अन्तमें अब हम आपसे विशेष कुछ न कह कर इसी आशा के प्रतीक्षक हैं कि पाठक गणों का राकेशके प्रति कितना प्रेम रहेगा हमारी प्रार्थनाका कितना स्मरण हो कर्तव्य पथ का पालन होगा। प्रार्थी मैनेजर

द्वितीय वर्षारम्भ में

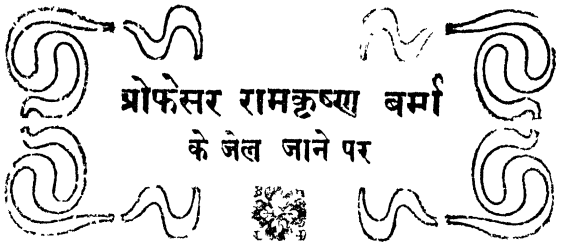
राकेश तेरे जन्म का यह दूसरा जो वर्ष है।
सानन्द सोज्वल सुचि ललित सुन्दर कलेवरादर्श है॥
गौरव जो आयुर्वेद का चिरकाल से अहा! लुप्त था।
सब अङ्ग प्रत्यङ्गों का जो शुभ भाव मार्मिक गुप्त था॥
पाश्चात्य जो अनुकर्णी हैं अनुकर्ण कर आभास की।
जाते थे जो आगे बढ़े ताली बजा उपहास की॥
ऐसी प्रबल हुई मण्डली नहीं रोकने से रुक सकी।
आसा निरसा सी हुई तिल भर भी तो नहीं झुक सकी॥
रुकना तो कोसों दूर था आगे ही बढ़ने जा रहे।
उपहास्य आयुर्वेद का करके सिर पर चढ़ते आ रहे॥
अधिकार सारे छीन कर हो बैठे थे सर्वज्ञ जो।
इंगलैण्ड भारत देश क्या वसुधा सकल मर्मज्ञ जो॥
यह देख अवनति बहुत से स्थल में उतरे ध्यान से॥
युक्ति लड़ाई सैकड़ों ले पूर्व ले सामान से॥
अन्धकार अविद्या में भला सुन्दर विजय आशा कहाँ।
कर्तव्य पथ निर्विघ्न का भला हो सके वासा कहाँ॥
तूने समय विकराल में राकेश लेकर के जनम।
बाल्यावस्था ही से तू पालन लगा सात्विक धरम॥
करके निर्धारित शुभ नियम जिनसे विजय सर्वत्र हो।
जो गुप्त लुप्त और सुप्त थी सब सामिग्री एकत्र हो॥
आशा जो जग की टूटती जाती थी पुनरुत्थान की।
वह धीर से बंधने लगी करुणा हुई भगवान की॥

जिस भांति पहला वर्ष यह निर्विघ्नता अवतीर्ण है।

इस भाँति रही निर्विघ्नता तो आदि व्याधि जीर्ण है॥
द्वादश कला अब तक खिली सोलह कला अवतार तू।
संहार अन्यानुकर्णी का सच्छास्त्र का भण्डार तू॥
हो गई कहावत सिद्ध अब भागीरथी ऋषिराज की।
प्रारब्ध जगती दीखती है, अब तो वैद्य समाज की॥
सद्वैद्य मंडल्यनुकर्ण से जिस प्रश्न में अहा मौन थी।
बहु भांति लज्जित थे बने विस्मित किया यह कौन थी॥
हल करने को उस प्रश्न को राकेश तू तत्पर हुआ।
उत्थान आयुर्वेद का करने को दृढ़ सत पर हुआ॥
अच्छा प्रिये! उत्साह से निज चन्द्रिका छिटकाइये।
उत्थान आयुर्वेद कर अज्ञान तिमिर मिटाइये॥
भगवान धन्वन्तरि तेरे इस कार्य में सहकार हों।
सद्वैद्य भारतवर्ष के तेरा सेवा में तैयार हों॥
कर्तव्य पथ पर धैर्य से राकेश तुम रहना डटे।
अनुकर्णी कृत्रिम जाल की यह जाली भी जल्दी कटे॥
राग द्वेष और मान मद लोभादिकों को त्याग कर।
संसार के तमको हरो सद्भाव से अनुराग कर॥
सद्वैद्यो सद्भाइयो मेरी विनय है आपसे।
"राकेश" ग्राहक बन बचो शनभिज्ञ रुग्न सन्ताप से॥
राकेश को करना विमल है आपके आधार पर।
नरनारियों के प्रेम पर और रुग्ण के संचार पर॥
सद्वैद्य भारतवर्ष के शुभ रक्षा पै कटि बद्ध हों।
तब ही तो आयुर्वेद का सब मर्म भाव प्रबद्ध हो॥
विश्वस्त देकर औषधि संसार को करदो चकित।
जो अन्यानुकर्णीय है पुरुषार्थ से कर दो थकित॥
बस फिर तो भारतवर्ष में गौरव जगे अग्नि वेष का।
शर्मा का जीवन सफल हो यश सुन के भारत देश का॥

ले० मुन्शीराम शर्मा

*



प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा
के जेल जाने पर

शोकोद्गार और देव वाणी से संतोषित करना।

प्रो—त्साह हमारा अथाह जो था अब उसमें कुछ काबिलता नहीं।
फे—रा क्या कर्म का आन हुवा आघात जुदाई का झिलता नहीं॥
स—व आशा निराशा सी जान पड़ी जो आयुर्वेदीय उन्नति की।
र—ह २ के जिगर में होले उठे पतझार हृदय का हिलता नहीं॥१॥

(माता का सँतोषप्रद वचन पुत्र राकेश के प्रति)

रा—केश क्यों इतना अधीर है तू कुछ दिन को लाल संतोष करो।
म—हानात्माओं का भाग्य सुभग बिन जेल में जाये से मिलता नहीं॥२॥
कृ—पा सिन्धु अति अनुकम्पा करें हो देश हितैषी का जन्म तभी।
ष्ण—सनी देश में व्यापे बिना कर्त्तव्य का फल कुछ मिलता नहीं॥३॥
वर्मा—ग यही क्षीरातराज से माता की जल्दी पीर हरें।
वि—ख्याति कीर्ति हो देश वही जिसके मनमें बुज़दिलता नहीं॥४॥
ज—ब द्वापर त्रेता में राम कृष्ण भये, क्या २ विपतायें झेली नहीं।
य—द्यपि अब जेल में दोनों पड़े छुटने में कुछ मुश्किलता नहीं॥५॥
ता—जोम बढ़ी जेल जाने से महानात्माओं में नाम हुआ।
म—त चिन्ताकर राकेश कचित शर्मा सेवा में स्थिलता नहीं॥६॥

ले० शर्मा

नोट—अगले अङ्क में प्रोफेसर रामकृष्ण जी वर्मा का सचित्र परिचय छापा जावेगा। सम्पादक

वैद्यक संसार में सम्मानित हो सुप्त आयुर्वेद को जाग्रित करने वाला

राकेश सम्मेलनांक

आगामी नवीन १०० ग्राहकों को मुफ्त

राकेशका सम्मेलनाँक नामक विशेषांक जो १९ वे वैद्य सम्मेलनावसर नासिक के समय पर प्रकाशित हुआथा जिसकी विशेषता आप नीचे लिखे विद्वानों की सम्मति से समझ सकेंगे। हमने अपने द्वितीय वर्ष के १०० नवीन ग्राहकोंको देना निश्चयकियाहैअतः इस सूचना के बाद के १०० ग्राहकों को मुफ्त में ही उपहार रूप यह अंक उन के पास 'राकेश „ के साथ भेज दिया जावेगा १०० ग्राहकों के बाद हम कापी अगले ग्राहकों को न देसकेंगे इस लिये ग्राहकगण शीघ्रता करें।

राकेश के सम्मेलनांक पर विद्वान पत्र सम्पादकों का जो राय हुई वह यथावत नीचे प्रकाशित की जाती हैः—

१—राकेश के सम्मेलनांक पर बूटा दर्पण लहोर के स० सम्पादक श्रीयुत आचार्य मौद्गल्य जी की राय यह अंक बड़ा मनोहरहै और योग्यताके साथ सम्पादन किया गया है। प्रत्येक वैद्य को संग्रह करना चाहिये, कई चित्र भी हैं। मूल्य ॥)।

२ "स्वास्थ्यबन्धु„ अलीगढ़के सम्पादक श्रीयुत पं० रामचन्द्रजी शास्त्रीकी सम्मति—

यह राकेश पत्र के प्रथम वर्षका नवां और दसवाँ अङ्क है। इसमें आयुर्वेद महामण्डल के १९ वें वैद्य सम्मेलनका सम्पूर्ण विवरण तो है ही। किन्तु इसके सिवाय अनेक विद्वान वैद्यों के लिखे मनन करने योग्य उत्तम लेख सन्निविष्ट हैं। वैद्य सम्मेलन का सुन्दर चित्र भी दिया है और कई प्रतिष्ठित वैद्यों के चित्र भी दिये हैं कई एक ऐसे कार्टून भी दिये हैं जिन से वैद्य समाज बहुत अच्छा लाभ उठा सकता है। हम राकेश को ऐसा सर्वाङ्ग सुन्दर विशेषाङ्क निकालने के लिये धन्यवाद देते हैं और हृदयसे आदर करते हैं कि वैद्य समुदाय उसका आदर करे।

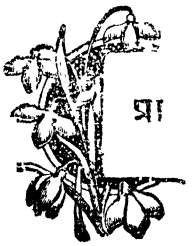
३ "वैद्य" मुरादाबाद के विद्वान सम्पादक की सम्मतिः—

बरालोकपुर इटावा से सहयोगी राकेश अच्छी उन्नति कर रहा है। इसने पहिले ही वर्ष में अपने सम्मेलनाङ्क नामक विशेषाङ्क को विशेष सजधज के साथ निकाला है। इसमें उन्नीसवें वैद्य सम्मेलनके विस्तृत विवरण के सिवाय कितने ही विद्वान वैद्यों के लिखे हुए आयुर्वेदिक भिन्न विषयों पर अच्छे २ गवेषणा पूर्ण लेख हैं। कई चित्र भी दिये हैं। पत्र का सम्पादन व अच्छे ढंग से हुआ है इसके लिये हम उत्साही सम्पादक और प्रकाशक महोदयको बधाई देते हैं। इस अङ्क का मूल्य ॥) है।

प्राचीन भारत और शल्यतन्त्र

(ले०—प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस०, आयुर्वेदाचार्य)

स्वच्छन्दता से कर तुझे करने पड़ें प्रस्ताव जो।
जग जायें तेरी नींद से सोते पड़े हों भाव जो॥



प्राचीन काल में शल्यतन्त्र का कितना प्रचार था, यह तो पुराण आदि ग्रन्थों से ही प्रकार से जानी जा सकती है परन्तु आज कल इसका ह्रास सा हो गया है इससे यही स्पष्ट विदित होता है कि वैद्यों का शल्य में किसी प्रकार का अस्तित्व ही नहीं है। न आज वैद्य समुदाय इस विषय के लिये कुछ उपाय ही करता है वह तो अपनी वही अपूर्ण काय चिकित्सा को ही लिये हुये है परन्तु अब वह तिमिरांधकार का समय नष्ट हो गया कर्तव्यक्षेत्र में द्वितीय बार आकर महर्षि धन्वन्तरि के उपदेश शल्य तन्त्र प्रधान को फिर अपनाना होगा तभी कार्य पूर्णतया आयुर्वेद का संचालित होगा अन्यथा सिर्फ काय चिकित्सा द्वारा ही पूर्ण उत्थान कदापि नहीं हो सकता है।

आयुर्वेद में जिस प्रकार यन्त्र शास्त्रों का वर्णन है पाठकों के दिग्दर्शनार्थ कुछ संक्षेपतया यहांपर लिखा जाता है। उन्नति दर में या पारचात्य विद्वानों अभी इन यन्त्रों से कहीं भी नहीं कर सके हैं कि प्राचीन ऋषियों (सुश्रुत-दि) ने किया है। पर समय के फेर से अब हम लोगों ने नष्ट कर दिया जिसका फल अब सामने आ गया है। अब जो कुछ रह गया उसमें फिर उन्नति करना चाहिये हमेशा समय एक सा नहीं रहता है दिन रात परिवर्तन होता है एक दिन जब तीन दशायें दिवा रात की हो जाती है तो मनुष्य के लिये होना कोई कठिन नहीं है अब कर्तव्य करना चाहिये उन्नति जरूर होगी। शस्त्रों का वर्णन आयुर्वेद शास्त्र में इस प्रकार से है—अगर इसमें किसी प्रकार की भूल हो जाय तो योग्य महाशय इस भूल को माफ करके उचित सूचना शीघ्र प्रदान करेंगे—

मंडलाग्र—यह शस्त्र आंख के रोग (Nterygium) मूढ़ गर्भ गलशुण्डिका अर्श अधि जिव्हा रोग में कार्य देता है जैसे सुश्रुत में कई स्थानों पर वर्णन है।

१—अथाऽङ्गुलि सन्दंशेनाकृष्य I B. गल शुण्डिकाम्—छेदयेन्मंडलाग्रेण जिह्वाया परि च संस्थिताम् ॥ यह गल शुंडिका के लिये वर्णन है अन्य के लिये यथा।

२—मण्डलाग्रेण कर्तव्यं छेद्यमन्तर्विजनिता ततः स्त्रियमाश्वास्य मंडलाग्रेणाँगुली शस्त्रेण वा शिरो विदार्य। मूढ़ गर्भ के लिये प्रयोजित किया गया है—

अधिजिह्वा ॥ उन्नम्य जिह्वामाकृष्य वडिशेनाधि जिह्वकाम् छेदयेन्मंडलाग्रेण अर्श में—अर्शस्तथा वर्त्मनाम्ना

शुष्काशोंऽबुर्द मेचच।
मंडलाग्रेण तीक्ष्णेण
मूलोच्छिन्द्याद् भिषक शनैं ॥

इस शास्त्रकी लम्बाई ६ अंगुल प्रमाण होती थी और एक शिरा गोल तथा दूसरा शिरा छूरे समान होता था परन्तु वाग्भट्ट ने इसका आकार अर्जुनी के नख के समान माना है परन्तु इसके विषय में कोई नियम नहीं है जिस प्रकार से सुचारु रूपसे कार्य लिया जा सके वैसा यत्र बना लेना चाहिये इसी नीति के अनुसार इसमें भिन्नता होती चली गई और यह आज और ही तरह का तैयार किया जाता है—

कर पत्र शस्त्र

इस शस्त्र को एक प्रकार का छोटा आरा समझना चाहिये इसकी लम्बाई ६-१२ अंगुल प्रमाण होती है और चौड़ाई दो अंगुल होता है इसका कार्य विशेष कर अस्थियों के काटने में किया जाता है। परन्तु बहुत से लोग इसका सिर्फ शब्दार्थ ही करके हाथ की अंगुलियों तुल्य मानते हैं पर मालुम नहीं होता कि इससे क्या मतलब निकालते हैं इसका उपयोग इन स्थानों पर किया जाता था यथा—

भवति तक्षत यत्कटकैः रचितँ स्याच्चत् कर पत्रम् छेदेऽस्थाँ वर ज्ञँ तु खरधारँ द्वादशाँगुलम् ॥ वाग्भट्ट में ऐसा वर्णित है हड्डी छोड़ कर अन्य कार्य नहीं लिया जाता है।

अर्द्ध धार

इसकी लम्बाई ८ अंगुल जिसमें हत्था की लम्बाई ६ अंगुल और फल की लम्बाई २ अंगुल प्रमाण होती थी चौड़ान प्रायः १ अंगुल था इस यन्त्र द्वारा शरीर के विभक्त करने का कार्य लिया जाता था यह यन्त्र जैसा प्रथम था वैसा ही अब इस जमाने में बनता है इसमें कोई भेद नहीं है परन्तु इस विषय में भिन्न २ लोगों का सिर्फ अर्द्ध धार शब्द पर ही अलग मत है कि सिर्फ शब्द ही यहाँ ग्रहण किया जाता है कर्तव्य कुछ करता नहीं सिर्फ बातें बनाना जानते हैं जिनको शल्य के आधुनिक यन्त्र शास्त्र देखने का समय मिला होगा वह इसका नाम देख करके ही समझ लेंगे कि यह भी काटने फाड़ने का अध कटा चाकू है इससे उपरान्त अर्द्ध धार का क्या मतलब ही है॥

व्रीहिमुख

इसकी लम्बाई ६ अंगुल जिसमें २ अंगुल का बेंटा और ६ अंगुल प्रमाण शास्त्र होताथा उपयोग करते समय सम्पूर्ण शास्त्र के इसप्रकारसे पकड़ना पड़ता थाकि मूठ करतलके मध्यमें रहै और और नोक अंगुष्ट और तर्जनी के मध्य में आजाय उपयोग इसका विशेष करके जलोदर मूढ़गर्भ और वृद्धि रोग में शिरोव्यध में किया जाता था आजकल इस कार्य के करने के लिये Trocar का उपयोग किया जाता है परन्तु प्राचीन समय पर यहट्रोकार आदि न थे इनका अधिक व्यौहार हा होता था—

जलोदर—तत्र जातोदकं सर्वमुदरं
च व्यथते भिषक्,
वाम पार्श्वेऽधो नाभेः
नाडी दत्वाच गालयेत्;
लब्धानुज्ञो भिषक कुर्यात
पाहन व्यधनक्रियाम।
सुवेष्टित मधो नाभेः
वामतः चतुरंगुलात्॥
अंगुली रुदर मात्रं तु
व्रीहि वक्त्रेण भेदयेत्
नाड़ी मुभयतो द्वारां
संयोज्याहरेज्जलम् (आत्रेय)

वृद्धि रोगे—अथात्र द्विमुखाँ नाडी दत्वा
विश्रावयेद् भिषक्॥(सुश्रुत)
से वेत्या पार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येत्
व्रीहि मुखेन वै (वाग्भट्ट)

मूढ़गर्भ—व्रीहि वक्त्रं प्रयोज्यं च
तच्छिरोव्यध संज्ञिधौ (वाग्भट्ट)

त्रिकूचक

यह यंत्र लकड़ी अन्यथा धातुके मूठ दार तीन नोक वाले होते थे इनके प्रत्येक नोक के बीचका अन्तर एक चावल प्रमाण रखा जाता था उपयोग विशेष करके कष्ट रोगमें अथवा नाशार्श में लेखनद्वारा रक्त निकालने में किया जाता था आज कल वेकसीनेशन करने के लिये व्यौहार होता है।

स्थिर कठिन मंडलानांस्विन्नानांप्रस्तर प्रताड़ीभिः। कूर्चैं विधट्टितानाँ रक्तात् क्लेशोऽनेतव्यः (आत्रेय)॥ 'कूर्चैं वृत्तैक पोठस्था सप्ताष्टौ वा सुबन्धनाः।

संयोज्या नीलिका व्यंगकेषु शातेषु कोथनै अर्द्धांगुलेमुर्खेवृत्तैः अष्टाभिः कण्टकैर्युक्तः पाणिभ्यां मध्यमानेन आणातेन हरेदसृग (वाग्भट)

परन्तु वाग्भट्टने इसी प्रकारके अन्य दो शास्त्रोंका और भी वर्णन किया है जिसमेंसे सात आठ सुइयाँ एक लकड़ी के हत्था में लगी होतं थीं इसकी लम्बाई चार अँगुल प्रमाण होती है इसका व्यौहार नीलिका और गंज में किया जाता है इसके द्वारा ऊपरी त्वचा का लेखन होता था और दूसरा जिसमें लम्बी आठ सुई लगाई जाती थी इसके द्वारा नाशार्शमें रक्त निकाला जाता था परन्तु इन दोनों का व्यौहार नहीं होता है न ऐसे आजकल बनाये जाते हैं।

उत्पल पत्र

इसका आकार कमल पत्रके समान होता है अग्रभाग नोकदार और तेज यह छेदने और काटने के कार्य में व्यौहार किया जाता है विशेषता के साथ व्यौहार शिरावेध में होता है पशुओं के भी रोग में इसका उपयोग किया जाता है।

शस्त्रेणोत्पल पत्रेण वृद्धि पत्रेणवाभिपक्व शिरावेध विधि सम्यक् दृष्ट कर्मा प्रयोजयेत्

सूची शस्त्र ।

इसकी मोटाई मालती पुष्पके तने के बराबर होती थी और सिरपर सूत्र डालने का स्थान चिपटा बना रहता था, इसके तीन भेद होते थे। १ तीन अंगुल लम्बी जिसका उपयोग माँसल स्थान होने में किया जाता था—दूसरी २॥ अंगुल लम्बी जिसका व्यौहार जहांपर मांसपेशी कममोटी होती थी वहां पर किया जाता था जैसे जोड़ों के पास। तीसरा दो अंगुल प्रमाण लम्बी थी आम शय, आंत, अण्डकोष आदि स्थानों में सीने के लिये व्यौहार होता था यह सब सुइयां धनुवाकार टेढ़ी होती थी सीने के अतिरिक्त कोष्ट से द्रव निकालने के लिये भी व्यौहार होता था गति व्रण अर्बुद की चिकित्सा में भी इनका उपयोग हुआ करता था इस चिकित्सा में भी इन सुइयों के द्वारा क्षार सूत्र प्रवेश किया जाता था अथवा बध देकर रक्त संचार रोका जाता था। जैसे सुश्रुत में वर्णन है अलोकाभि तथा शस्त्रैः सूच्याधिर्वा पुनः पुनः। अवर्तयानं रुधिरं रक्तार्शेभ्यः प्रवाहवेत्। अथवा—

एषणया गतिमन्विष्य क्षार सूत्रानुसारणीम्। सूचीं निदध्याद गलपन्ते तथोन्नम्यां शुनहरेत॥ सूत्रस्यान्तं समालीयं गाढ़े बन्धं समाचरेत्। ततः क्षार बलं बंदय सूत्र मन्यत्रयोजयेत् (तथा) अर्बुदादिषु चोत्क्षिप्य मूले क्षार निधापरेत। सूचीभिर्यंत्रयक्ताभिराचित वा समन्ततः। मूल सूत्रेण बध्नीयात् छिन्नेचोपाचरेद व्रणम्॥

इसके उपरान्त भी और काम लिये जाते थे जहां पर जैसा कर्म आवे।

आही मुख शस्त्र ।

इसका आकार आही पक्षी के समान होता था इसकी लम्बाई ६ अंगुल होती थी इसका व्यौहार पीप आदि कोमल स्थानों से निकालने में किया जाता था विशेषतया इसका और कुशपत्र का व्यौहार समान था। आही एक जलका उपक्षी है उसीके मुख समान रचना होती है।

कुश पत्र

यह शस्त्र कुशके समान बारीक नोकदार पतला तेज धार वाला होता था इसकी पूरी लम्बाई ६ अंगुल प्रमाण थी जिसमें प्रायः ४ अंगुल का हत्था और दो अंगुल का फलक होता था इसका कार्य विद्रधि आदि से पीप आदि का निकालना है और अधिकतर यह कोमल स्थानों पर व्यौहार किया जाता है। यथा-

जङ्घाधः पार्श्वयोर्मूले शिरा द्वादश कीर्तिता। तासां स्थूले शिरे द्वेच छिन्धाद्वै च शनैः शनैः॥ वडिशेनैव संगृह्य कुशपत्रेण बुद्धिमान्। श्रुते स्थे व्रणे तस्मिन दद्यात्स गुडमाद्रकम्॥

बृद्धि पत्रम्।

इसका आकार वृत्त के पत्ते के समान होताथा इसीसे इसका वृद्धिपत्र नाम रखा गया है इसके दो स्वरूप होते थे। (१) सीधा जिससे त्वचा की विदधियां खोली जाती थीं। (२) वक्र—जिससे गम्भीर विद्रधियां खोली जाताथी इनको अंचितास्र और प्रयत्नाग्र कहते थे इस शस्त्र की लम्बाई प्रायः ६ या सात अंगुल होता थी इसका उपयोग व्रण के पास से बालों को हटाने में छेदन या लेखन में—वृद्धि रोगमें शल्य कर्म म और सिरके काक पद करने में किया जाता था। वृद्ध पत्रेण मतिमान सम्यग्दंश मलोद्धरेत्। यह छेदन लेखन का व्यौहार है—रक्तेत् फले सेवनीं च वृद्धि पत्रेण दारयेत्। मेदस्तथा समुद्धृत्य दद्यात्कालीस सार्वे॥ इस प्रकार से व्यौहार वृद्धिरोग में होता था और काक पद में यहप्रमाण है—

प्रयत्नित्वा त्रुरेणाँग केवलानिल पीडितम्। कुर्य्यात् काक पदाकर (वाग्भट्ट इस काक पद द्वारा औषधि अन्दर प्रवेश की जाती थी जो रक्त में मिल जाती थी पर अब इसका व्यौहार कम होकर उनके स्थान पर इन्जेक्शन द्वारा कार्य लिया जाता है।

मुद्रिका शस्त्र

इस शस्त्र को कोई अंगुली शस्त्र के नाम से भी पुकारते थे इसका आकार तर्जनी अंगुली के प्रथम पर्व के समान होता था उपयोग इसका गलरोग और मूढ़गर्भ में किया जाता था सुश्रुत ने इसका व्यौहार इसी स्थान पर किया है विष्कम्भी नामतो मुद्रो शस्त्र दारण महतः मँडलग्राँमुलि शस्त्राभ्याँ तत्वकर्म प्रशस्यते (सुश्रुत)

नख शस्त्र

इसको लोग नहरना कहा करते हैं इसकी लम्बाई आठ या नौ अंगुल होती है इसका उपयोग छेदन, भेदन, लेखन, करने तथा विशेशतः आचूषण करने में होता है इनके द्वारा बहुतसे कार्य होते हैं जहाँ पर जैसा उपयोग किया जाय। वृद्धि पत्रनख शस्त्र मुद्रिकोत्पल पत्राद्धै धारिणि छेदने भेदने। (सुश्रुत)

शरारी मुख शस्त्र

यह एक प्रकार की कैंची है जिसका आकार शरारी पक्षी के समान होता है यह पक्षी दो प्रकार का होता है धवलस्कंध और रक्तशीर्षक इसमें प्रथमही को शरारी कहा जाता है प्रयोग इसका व्रण कर्ममें था सुश्रुत ने भी इसे कर्नटी के नाम से पुकारा है परन्तु वागभट्ट जी ने कर्तरी शब्द से सिर्फ काटने वाली ही का ग्रहण किया आचूषण करने वाली का ग्रहण नहीं

किया है। कर्तरि शब्द से भी स्रावण कर्म हो सकता है परन्तु सुश्रुत में इसका कीर्तन अन्य स्रावण करने वाले त्रिकूर्चक आदि के साथ किया गया है इससे कर्तरि पृथक् माना गया है और यह भिन्न है——

दशाङ्गुला शरारीमुखो सा कर्तरीति कथ्यते

(सुश्रुत)

परन्तु डल्हण ने भाष्य में इस प्रकार लिखा है। तस्य शस्त्रस्य लोके कर्तरिः इति संज्ञा॥

अन्तर्मुख शस्त्र

यह भी एक प्रकार की कैंची ही का भेद है इसकी लम्बाई ६ अंगुल और और चौड़ाई ½॥ अंगुल होती है वाग्भट्टजी ने इसका आकार-अर्ध चन्द्राकार बताया है और लम्बाई भी आठ अंगुल प्रमाण कही है विद्रधियों आदि से पूय निकालना ही इसका प्रधान कार्य है। हारीत संहिता वालों ने इसका उपयोग अर्थात अर्ध-चन्द्राकार शस्त्र का मूढ गर्भ में वायु में वायु छेदन करने के लिये बताया इस प्रकार से कभी एक मत स्थिर नहीं रहा है जिस आचार्य को जैसा व्यौहार पड़ा वैसा ही लिख मारा है। यथा—

तद्वदन्तर्मुखं तस्य फलमर्धाङ्गुलम अर्द्ध चन्द्रानन चैतद तथाऽर्द्धा गुल फले (वाग्भट्ट) अथवा अर्द्धचन्द्रेण शस्त्रेणैव मृतगर्भस्य वायु युगलं संच्छिद्य वायु निसारयेत् (हारीत संहिता)

एषणी।

इस शस्त्र की लम्बाई आठ अंगुल होती थी यह दो प्रकार की वस्तुओं के द्वारा निर्मित होती थी एक कठिन लोहा आदि से बनाई जाती थी जिसका उपयोग गंभीर व्रणों की परीक्षा में होता था दूसरी मृदु जो नाल आदि से बनाई जाती थी इसका उपयोग ऊपरी त्वचा के व्रणों में परीक्षा के लिये होता है परन्तु वाग्भट्ट जीने एक ऐसी एषणी का वर्णन किया है जिसमें प्रायः छिद्र होता था उसमें तागा डालकर भगंदर आदि में प्रयुक्त करते थे इस प्रकार का कृत्य आजकल भी किया जाता है इसके अतिरिक्त लिंग नाश में प्रयुक्त होनेवाली एषणी का आकार कुश के समान बताया है सुश्रुतने जो वर्णन दिया है वह वर्तमान काल के Prala के समान है जो आगे से डोडे की भांति होता है इसके कर्त्तव्य इसे प्रकारसे वर्णन किये गये हैं—

१-गतिरन्विष्यते श्लक्ष्ण .गण्डूपद मुखैषणी।

२-एषण्या गतिमन्विष्य क्षार सूत्रा नुसारणम।

३-पर्व समिता वक्त्र येर्मुकुला कृतिः।

४-भेदनार्थेऽपरा सूचीमुखा मूल निविष्टवा

५-ताम्रा शलाका द्विमुखा मुखे च कुरवा कृतिः। लिंग नाश तथा विधेत।

इस शस्त्र में भी मतभेद पाया जाता है यह भी आचार्यों पर ही और काम पर निर्भर है।

दंत शंकु

यह एक चाकुठा और तेज़ किनारों का शस्त्र था इसकी लम्बाई १॥ अँगुल होती थी इसका उपयोग दांतोंकी शर्करा को नष्ट करने के लिये किया जाता था वर्तमान काल में जो दांतोंके लिये Tooth Elevator व्यौहार किया जाता है वह प्राचीन काल से बहुत मिलता जुलता है सुश्रुत के समय में दाँत उत्पाटन किये जाते थे इस कार्य का अभ्यास मृतक पशुओं पर कराया जाता था यदि दांतमें नाड़ी व्रण हो जाता था तो दाँत उखाड़ करके उसको जला दिया जाता था। और प्राचीन समय में दांत भी आजकलके समान लगाये जाते थे जैसे पुराणमें बताया गया है। तथा चरक में भी पूषन देवता के दांत बनाने का वर्णन आया है। तैसे भग्नौष्ठौ रदनाः पूष्णो नेत्रे नष्टे भगस्यच बाहवश्च भुजास्तस्मैः ताभ्यामेव चिकित्सतः ॥ शात्रेय ॥

इसके उपरांत राजा जयचन्दके शव की भी परीक्षा उसके कृत्रिम दांतोंके ही द्वारा की गई थी सुश्रुतमें इस दंत शंकु का वर्णन इस प्रकार है।

य दन्तमधि जायेत नाड़ी तद्दन्तमुद्धरेत।
छित्वा माँसानि शस्त्रेण यदिनोपरुजो भवेतह
सशूल दशनं तस्मद् उद्धरेत भग्निमस्थिच
उद्धरेत्तत्तरे दन्ते सशूले स्थिर बन्धनै ॥२
शस्त्रेण दन्तवेदर्भ दन्त मूलानि शोधयेत॥३
दत लेखनकतेन शोधयेत दन्त शर्कराम ॥

(शेष फिर)

अभिलाष, उदय, राकेश,

उदय हुआ राकेश रोग निशि तिमिर हटाने।
उदय हुआ राकेश धूर्त पाखण्ड घटाने ॥
उदय हुआ राकेश नियमवत् प्यारा।
उदय हुआ राकेश पत्र पत्रिन में न्यारा ॥
रोगियों के रोग को हरके पुनः हरसायेगा।
दुःखित जीवनधारियोंमें सुक्ख बहु बरसायेगा ॥
नित नई निर्माण औषधि कर दिखायेगा अभी।
फिर न कोई करसकेगा साथ इसका भी कभी ॥
ईश से है यह विनय उत्थान कर राकेश का।
जग मगादे ज्योति, झण्डा उच्चहो राकेश का ॥

लेखक—पं० रामभरोसे चतुर्वेदी सागर सी० पी०

हैजा (विशूंचेका) Cholera

(लेखक—प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस०)

उदर सम्बन्धी पीड़ा समूह अर्थात Diseases of the abdomen में हैजा जिस को इंगलिश भाषा में कोलेरा कहा जाता है अत्यन्त भयानक और सद्य प्राण हारक व्याधि है यह पीड़ा भारतवर्ष में प्राचीन समय से ही चली आती है। साल प्रति साल हजारों मनुष्य विशेष करके नवयुवक गण कि जिनके सौरभ के प्यासे भ्रमरों का मकरंद गुंजारते रहते हैं इससे अकालमें ही काल कवलित हो जाते हैं। समूह महिलाओं का सौभाग्य काँच के समान टूट फूट जाता है। यद्यपि भारत में एक प्लेग दूसरा इनफ्लूएञ्जा Influenza ही विशेष घातक समझा जाता है जिसमें प्लेग, Plague में स्थान परिवर्तन करने से और इनफ्लूएञ्जा में लघन द्वारा प्रतीकार प्राप्त होता है पर इस व्याधि में कोई क्रिया कार्य नहीं देती है और थोड़े समयमें ही असंख्य मृत्यु हो जाया करती है। यह मीठा मार मारनेवाला रोग है कि प्रथम से इसका कोई उपसर्ग स्पष्ट नहीं होता है अभी जिनसे बातें कर रहे थे क्षण मात्र में चिर निद्रा के आधिभूत हो जाते हैं। जहाँपर इसका प्रसार हुआ बिलकुल सत्यानाश कर दिया। यह कोई नई बीमारी नहीं है समान रीति से प्राचीन और अर्वाचीन काल तक बराबर वैसी ही चली आ रही है परन्तु आजतक समय के फेरसे उस का उचित उपाय प्राप्त नहीं हो सका है।

यद्यपि भारतीय सरकार का हेल्थ डिपार्टमेंट इसमें कुछ कोशिश करता है परन्तु भारतीय सभ्यता से अनभिज्ञ होने से कार्य होता ही नहीं है। इसका प्रादुर्भाव अनेकों स्थानों पर इसका प्रादुर्भाव पड रहा है वहाँपर उक्त ठेकेदारों का कार्य सिर्फ पानी में ३ रोज पुटास डालना और Potass Permangonate पुटास परमेंगनेटके जल व्यौहार करना तथा हैजा का टीका लगाना ही सिर्फ उपाय है। इसी पर इनकी विद्या बुद्धि का अन्त है। हमारे आर्यावर्तीय भ्रातृ गण इसे ईश्वरीय प्रकोप कहते हैं। ऐसा कह करके ईश्वर पर भी दोषारोपण करते हैं ऐसे लोगों की बुद्धि के लिये धन्य है। हमारे शिक्षित लोग दिन रात पुस्तकों का घोटम घाट किया करते हैं परन्तु संस्कृत न सही तो भाई भाषाही ग्रन्थ देखा महर्षि तुलसीदास जी महोदय रामायण में कहते हैं।

करहिं पाप दुख पावहिं,
भय रुज शोक वियोग।

अब आंखे पसार कर अवलोकन कीजिय आप देखा ह या ईश्वर । जैसा कर्म करत हो वैसा फल भी प्राप्त होरहा है उसी का दंड स्वरूप जिस प्रकार से सम्राट फांसी नियुक्त किया है अभियोगी पर अभियोग पूर्ण निर्णय पान पर शीघ्राति शीघ्र विनष्ट कर देता है उसी प्रकार से हैजा भी फांसी रूप है जो क्षण मात्र में प्राणोंका निर्णय कर दिया करता है । यहा व्याधि प्राचय काल में भी होती थी परन्तु इतनी दुखदाई नहीं होती थी नमूना के तौर पर दो चार केश हो जाते थे और इतने स्वल्प समयमें भी नष्ट नहीं होते थे जैसा आजकल होरहा है । अतः यह स्वयं अपने ही कर्मों का फल है जब से हमने महर्षियों के मार्ग को परित्याग कर दिया दूसरेके आडम्बरा पर झुक गये कांचन कामनाको ध्यानने चित्तमें अधिकार कर लिया भारके तरह मोठे बचन कहकर लोगा क अपकारमें तत्पर होगये । स्वार्थी लोलुप पर द्रव्यहारी संतान होने लगी जिस उपयोग करके स्वयं अपने कृत्य पर विनष्ट होने लगे । प्राचीन काल में इन सब दुष्ट लोगों को विनष्ट करने वाला राजा होता था परन्तु आज राजा विदेशीय होने से अपनी अनभिज्ञता का परिचय दिया समर्थ न हो सका तो प्रकृत ने इस प्रकारकी व्याधियां लाकर पछाड़ देना शुरू किया अगर ऐसा कठोर दंड नियुक्त न होता तो संसारिक स्वार्थियों का गोल अपना प्रचंड प्रभाव फैला देता। या इससे कुछ २ डरता रहता है सहसा साहस करने पर समर्थ नहीं हो सकता है—

यद्यपि हमारे बहुत से भाई जो वय वृद्ध-विद्या वृद्ध--गुण वृद्ध--कर्म वृद्ध हैं कुछ २ प्रकाश डाल चुके हैं परन्तु मैं बालक आज उन्हीं लोगों के मनरंजन के लिये लेखनी उठाता हूं जो कुछ भूल चूक होगी विद्वज्जन सुधार लेंगे--अनेक पत्रों में हैजा की दवा की चर्चा देख करके उस पर भी यह दोषारोपण कि अमुक दवा ने फायदा न किया देखकर रहा नहीं जाता है क्योंकि—

कंह लगि रहिय सहिय मन मारे।
नाथ साथ धनु हाथ हमारे॥

कुछ उत्तर प्रदान ही करना पड़ता है इसके लिये मैं तो यही कहूँगा कि चिकित्सक समुदाय ने अभी पढ़ा ही क्या है चरक सुश्रुत के पत्र उलट जाने से नहीं होता है । ऋषि प्रणीत मार्ग का यथोचित अवलम्बन करो चरक सुश्रुतमें सम्पूर्ण तत्व भरा है उसे योग्य विद्या द्वारा उपयोग करो तो फिर ऐसी बातें जो प्रश्न रूप से प्रत्येक पत्र में छपती हैं करने को आवश्यक्ता नहीं पड़ेगी। इस विषयको अन्यत्र लिखूंगा पर इस स्थान पर इतना कहकर के अपने उचित मार्ग को फिर संवरण करता हूँ ।

विसूचिका जिसको हैजा कहते है कई प्रकार का होता है । जैसे एसियाटिक asiatic cholera-२ कालरा सिक्का cholera sicca ३ इन्फेन्टाइल कालरा-४ कलेरीन वा कलेरीक डायरिया ५ इंगलिश कालरा व बिलीअस कालरा English or Bilious cholera इत्यादि इत्यादि । इन सबके भिन्न २ लक्षण भी प्राप्त हुआ करते है और उसी प्रकार से उनमें मृत्यु में भी परिवर्तन देखा जाता है शवागार में चीड़ फाड़ Postmortem द्वारा निरीक्षण करने से अंग प्रत्यंगों में पृथक पृथक २ दोष समूह पाये जाते है । अगर सिर्फ उपरोक्त विसूचिकाओं में हैजा या कालरा या विसूचिका ही नाम कहा जाय साथ का अन्य नाम न लिया जाय तो वहां पर एसियाटिक कालरा ही समझना चाहिये । यहाँ पर बहुतायत से यही फैला करता है जो घरोंका सत्यानाश कर देता है अन्य कालरा विदेशियों के संसर्ग से यहाँ पर भारत को उपहार में प्राप्त हुये है । जिनका आक्रमण बहुत कम होता है आर्यावर्त जैसे विशाल देशमें इनके लाख पीछे दस केश देखे जाते है परन्तु अन्य देशों में इनका प्रभाव अधिकता से होता है । यहां पर एसियाटिक ही का वर्णन करते हैं । अन्य का संक्षेप इशारा मात्र करेंगे—

इस रोग में प्रायः साधारतः चार अवस्थायें पाई जाती हैं यथा १ अंकुरायमान और आक्रमण अवस्था Premonitory Stage—२ विकाशावस्था stage of evauastion or Full development ३ कोलैनस वा पतनावस्था collapse stage प्रतिक्रियावस्था stage आदिक अवस्था है जिनमें निम्नांकित लक्षण समूह पाये जाते हैं—

१ प्रथम इस रोग में आक्रमणावस्था अंकुरावस्था के ६–७ घन्टा से लगाकर ५ दिन तक के समय विशेष में प्रारम्भिक होती है उस समय सामान्य उदरामय ही इस अवस्थाका प्रधान लक्षण है । आयधिक दुर्बलता–भय-विकृत-मुख मण्डल कभी २ मेदा में नाना प्रकार का कष्ट देखा जाता है और मल त्याग के समय थोड़ा पेशाब भी होता है पेट में भारा पन मालुम देता है इन्द्रियोंमें शिथिलता ज्ञात होता है जीभ सूखा ओष्ट फटे शरीर खरखरा-पेड़ू में दर्द-पैर की अंगुलियों में चमक-मस्तिष्क कम्पन आदि बिकार प्रमुख उत्पन्न होजाया करते हैं निद्रा की इच्छा बढ़ जाती है पेट में मामूला दर्द रहता है लाला ग्रंथि अपने कार्य्य मे शुद्ध थूक नहा तयार करते है—इसके बाद फिर पूर्ण विकाशावस्थामें प्राप्त होती है इसमें अधिक परिमाण मे दस्त और वमन होता है तृष्णा इतनी अधिक हो जाती है कि किसी प्रकार उसका निवारण नहीं किया जा सकता है । हाथ और पैर मेंऐठन होती है रोगी अत्यन्त स्थिर रहता छट पटाता है और क्रमशः रोगी पतला

अवस्था पन्न हे जाता है। प्रायः शेष रात्रि में दस्त हो कर यह बीमारी आरंभ होती है। पहले पहल मल पतला और विवर्ण युक्त हे ता है बाद मल भांगा भातके पानी या चावल धोअन के तरह होता है। वमन में पहिले पहल खाया हुआ पदार्थ रहता है बादमे फिर पतला पानी म्यूकस (आंव) इत्यादि के वमन होता है इस समय पर पेशाब बंद हो जाया करता है शरीर काला होने लगता है रक्तका जमाव आरम्भ हे जाता है देहमें जलन मालूम देती है शरीर हरदम शिथिल होने लगताहै।

पतना वस्था ॥ द्वितीया वस्था से ही यह धीरे अवस्था उपस्थित होता है यह अवस्थामें रोगी निराशा युक्त ज्ञात होता है आखें अन्दर को धस जाया करती हैं और नेत्र मंडल के चारो तरफ नीला पन प्राप्त होता है। हाथ पैर और सब शरीरमें ठंडा पसीना होताहै· शरीरका सारासम्मुह ठंडा होजाया करताहै अंगुली और हथेली का चमड़ा सिकुड़ जाता है नाक तीक्ष्ण होता है जीभ और नाक के ऊपर हाथ देने से बर्फ के समान ठंडक मालूम देती है। शरीरोत्ताप मामूली से भी कम हो जाता है नाड़ी अत्यन्त मृदुगति और क्षीण या बिलकुल लुप्त हो जाती है। स्वास प्रस्वास में अतिशय कष्ट बोध होता है। पेशाब इस अवस्था में बंद रहा करता है लार श्राव भी नहीं होता है दस्त और के प्रायः बंद हो जाया करतेहैं प्यास अत्यन्त और अधिक रहता है रोगी निस्तेज स्थिर व्याकुल रहता है पठन भी हो सकता है इस समय पर प्रायः ज्ञान लोप नहीं होता है श्वास क्रिया रुक २ करके सम्पादित होता है इसी समय मृत्यु भी होजाया करती है अगर रोगी इससे मुक्त होजाय तो तुरन्त ही प्रतिक्रियावस्था आरम्भ होजाती है।

प्रतिक्रियावस्था।

इसके उपस्थित होने ही रोगी की प्राचीन अवस्था धीरे २ सुधरने लगती है चेहरा और वर्ण अच्छा होजाता है जो प्रथम विकृत होगया था। नाड़ी और हृत्पिंड की अवस्था भी उन्नति होती जाती है। श्वास की क्रिया शरीरोत्ताप क्रमशः स्वभाविक होजाता है। स्थिरता, तृष्णा, व्याकुलता इत्यादि लक्षण सब कम होजाते हैं। वमन बिलकुल बन्द होजाता है, दस्त अल्प २ होने लगता है किंतु इसमें पित्त वर्तमान रहता है यदि इस अवस्था में किसी प्रकार का उपसर्ग प्रकाश न पावे तो रोगी आरोग्य लाभ करता है परन्तु कभी २ अनेकों प्रकारके उपसर्ग उपस्थित होजाते हैं अथवा रोग का पुनः आक्रमण होजाता है या यह प्रतिक्रिया अति अल्प होने से बहुत काल पर्य्यन्त दुख पाकर टाइफाइड [illegible] अवस्था प्राप्त होता है अथवा रोगी का मृत्यु होजाता है अथवा रोगी धीरे २ आरोग्य लाभ करता है। इस समय पर अगर मूत्र होता है या नहीं इस

पर विशेष ध्यान रखना चाहिये क्योंकि पेशाब आने से सब शङ्कायें नष्ट हो जाया करती हैं।

और रोगी स्वास्थ्य लाभ करता है अगर पेशाब ठीक न हुआ तो फिर बचना कठिन है, पेशाब आदि करें हैजा में सहकारी उपद्रव भी होते हैं जो रोगीके लिये यमपुर की सूचना देते हैं इनका उपाय शीघ्रातिशीघ्र करने की आवश्यकता हुआ करती है जैसे ज्वर fever कभी २ हैजा में ज्वर होकर के स्वल्प विराम ज्वर Remittent fever या सविराम ज्वर Intermittent की अवस्था प्राप्त कर लिया करता है और कभी २ यह ज्वर टाइफाइड या विकार अवस्था प्राप्त कर लेता है और रोगी के जीवन की आशंका आकर प्राप्त हो जाती है हिचकी Hiccough यह हैजा में अतिशय कष्ट दायक उपसर्ग है मृत्यु का प्रमाणपत्र देता है इसके होने से रोगी अति दुर्बल हो जाता है नाड़ी लुप्त होने लगती है अगर जल्दी से यह दूर न किया गया तो अवस्था आशंका जनक हो जाती है फिर रोगी बच नहीं सकता है चाहे कैसा ही उपाय क्यों न किया जाय।

मूत्र विकार Uraemia इसके होनेसे रोगी का ज्ञान लोप होने लगता है और रोगी मन माना प्रलाप करने लगता है। बार २ मूत्र का वेग होता है किन्तु मूत्र त्याग नहीं होता है इससे महान कष्ट होता है। प्रायः शरीर शास्त्रके जाननेवाले अच्छी प्रकार से जानते हैं कि शरीर में सबसे उपयोगी दो अंग हैं। जिनके द्वारा शरीर भर के यंत्र संचालन होते रहते हैं अगर इनमें किसी प्रकार का विकार प्राप्त हो जाय तो फिर अन्य यन्त्र भी रोग ग्रसित होकर कार्य में बाधा उत्पन्न कर देते हैं उन दोनों में एक का नाम यकृत दूसरे का नाम वृक्क है। यकृत रक्त बनानेका अंग है रक्त का कार्य शरीर में यह है 'रक्तं सर्व शरीरस्थं जीवयत्या न मुत्तमम, इत्यादि इत्यादि इसी प्रकार वृक्क रक्त को साफ करनेवाला और उसके अवगुणोंको विभाग द्वारा पृथक करनेवाला अंग है जिसमें हैजा होते ही यकृत अपना कार्य प्रथम ही बन्द कर देता है जिससे रक्त के सम्पूर्ण कार्य नष्ट हो जाया करते हैं इससे सम्पूर्ण व्याधियां प्राप्त होकर जीवित्याशा नष्ट हो जाती है। अगर किसी कारणवश वृक्क थोड़ा २ अपना कार्य करता रहा तो यकृत फिर संचालन हो जाता है। जिस प्रकार से मशीन बन्द कर देने से प्रथम तेजी से चलते हुए उसके यन्त्र आदि कुछ न कुछ थोड़ा देर संचालित होते रहते हैं उसी क्रिया मुताबिक अगर वृक्क काम करता रहा तो उसकी परीक्षा मूत्र आने से मिल जाती है कि वृक्क Kidny अपना कार्य सम्पादन करता है शारीरिक यंत्र सब बन्द नहीं हुए उचित चिकित्सा द्वारा शीघ्र उपकार मालुम पड़ेगा अगर पेशाब न आया और उसमें विकार ही प्राप्त रहा

ी समझ लो कि रोगों के जीने में संदेह
ऐंठन Cramps ज्यों २ यंत्रों का कार्य नष्ट होता जाता है और भिन्न २ स्थान के भिन्न सेलों में coll- मूर्छन तथा मृतक अवस्था प्राप्त होती जाता है त्यों २ शरीरमें ऐंठन भी होती जाती है यह मनुष्य शरीर सेल समुदाय से ही सँगठित किया हुआ है इसकी वृद्धि के साथ वृद्धि और नाशके साथ नाश होता है जैसा शरीर शास्त्र के ज्ञाताओं ने या माइक्रोस्कोप के द्वारा निरीक्षण किया है प्रत्येक सेलों के कार्य विभाग में परिवर्तन होने से यह अवस्था प्राप्त होती है अगर शरीर भर के सेल एकदम नष्ट हो जाते हैं त्यों ही शरीर मृतक हो कर के अकड़ जाता है। यह अकड़न मृत्यु के पधारने की सूचना प्रकाश करती है इसलिये इसके रोकने का उपाय अत्यन्त ही जल्दी करना चाहिये।

प्यास जिस समय पर रक्त जमना शुरू हो जाता है और शरीर के सेलों का तथा उसके केन्द्रों को उपयुक्त सामान न मिलने से उनमें एक प्रकार की शुष्कता आ जाती है और पित्त बढ़ कर के प्रज्वलित होकर शरीर को दग्ध करने लगता है उस समय कफ संतप्त होकर विकृति होता है जिसका विकृत पना शरीर सह नहीं सकता है तो उसके शाँति प्रदान करने के लिये उसे तरल बनाने को प्यास प्यास लगता है परन्तु उससे उपरोक्त कार्य यथातथ्य स्ववलम्ब नहीं पाता उससे दस्तों की संख्या अधिक होती जाती है। वह जल फोरन गुद मार्ग द्वारा बाहर निकल जाता है और प्यास ज्यों की त्यों बनी रहती है। इसका उपसर्ग होते ही समझ लेना चाहिये कि हैजा ने आकर अपना डेरा जमा दिया उस झूठी प्यास के रोकने का प्रयत्न करना उपयोगी है। नहीं पानी बार २ पीने से पित्तज उष्मा शाँत होती जाती है शरीर शीतल होता जाता है और आखीर में मृत्यु सदया पर हमेशा के लिये मनुष्य लीन हो जाया करता है।

मूर्छा—जिस समय पर अंग अपना कार्य करना परित्याग करने लगते हैं उसी समय पर हृत्पिण्ड में भी विकृतिपन आ जाता है जिससे उसका कार्य पूर्ण संचालित नहीं हो सकता है तब रक्त जो शरीर में स्थान २ पर गमन कर रहा है रुक कर जम जाता है मस्तिष्क में प्राप्त हुआ रक्त उसी अवस्था में वहां पर ज्ञान तंतुओं पर अपना प्रभाव डाल कर भारी कर देता है और स्वयं जम जाता है उन ज्ञान ततुओं का इस प्रकार प्रभाव पड़ जाने से वह अपना कार्यसंचालन त्याग देते हैं जिससे मूर्छावस्था हो जाती है आँखें इस समय पर रक्त शून्य हो जाती है इंद्रियों के कार्य विज्ञान नष्ट प्रायः हो जाते हैं इसका उचित प्रतीकार न हुआ तो इसे ही विलीनावस्था कहा जाया करता है। यह अवस्था बहुत बार चिकित्सा दोष से ही प्राप्त होती है

इनमें उपसर्ग हैजा में प्रधानता से होते हैं इसके उपरांत अन्य रोगान्तरगत भी पर्याय व्याधियां जिनकी जैसी आवश्यकता होती है होती रहती है जिनके लक्षण ग्रन्थांतरों से पूर्णतया परिज्ञात किये जाया करते हैं।

रोग परिचय।

भीगा भात के पानी अथवा चावल धोवन की तरह तरल दस्त और वमन होता है मूत्र नहीं होता यह ही हैजा का प्रधान उत्कृष्ट लक्षण है। इसके साथ पैरों में ऐंठन, शरीर शीत होजाना, शीतल पसीना होना, शरीर में ज्वाला अत्यन्त, प्यास लगना, आंख धस जाना, स्वर भग, हाथ पैर का चमड़ा सिकुड़ जाना और नील वर्ण होना इत्यादि लक्षणोंसे विशूचिका अनायासमें ही पहिचाना जाया करता है। बहुत बार परिज्ञात किया गया है कि हैजा का समय भी नहीं है न किसीको इस व्याधि ने अभी ग्रसित किया है पर कोई व्यक्ति को ज्यों ही सूखी ठण्डी हवा लगी पसीना रुक गया और पेशाब बन्द होकर के हैजा होजाया करता है यह भी हैजा कहा जायगा। इसमें पतला मल पाना की तरह लस्सादार हरा या काला पेचिस की तरह बहुत जल्दी २ मल त्याग होता है और अत्यन्त तृष्णा, पानीको अधिक मात्रा में पीना, शरीर में ज्वाला, अत्यन्त बेचैनी, व्याकुलता, ओष्ठ काला, हाथ पांव ठंडा, नाड़ी न पाला होजाता है। यद्यपि ऐसी व्याधि एक दो को होनेसे लोग एक नवीन व्याधि समझने लगते हैं और उनका वास्तविक उपाय अवलम्बन नहीं करते हैं जिससे व्याधि शांत नहीं होती प्रभाव बढ़ता चला जाता है।



औषधि विज्ञान

बचनाग सं० वत्सनाभ

(ले० वनौषधि चिकित्सक विद्याभूषण एच० पी० क्षत्रिय पथरोट त० पलचपुर



प्रिय पाठक वृन्द ! आज मैं आपके सन्मुख यह स्वदेश वनौषधि को लेकर उपस्थित होता हूँ इसको उपयोग में ला जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ है। उसे आप सज्जनों के सन्मुख रखता हूँ। और आशा करता हूँ कि आप लाभ उठायेंगे। यदि हमारे प्रिय पाठकवृन्दों ने इस स्कीम को अपनाया और हमें उत्साहित किया तो क्रमशः इसी शीर्षक से प्रत्येक वनौषधियाँ अनुभविक ले उपस्थित होऊंगा।

बचनाग का पौधा छोटे पौदे के आकार में रहता है। पहाड़ी प्रदेशमें बहुतायत से मिल सकता है। नाले के कगार से होता है। हमारे सातपुड़ा पहाड में बहुत मिलता है। इस झाड़ का मूल महा विष में शुमार की जाती है जिसे बचनाग कहते हैं।

बचनाग का रंग काला सूरणोदुम आकार सी रहती है। जो जड़ वजन में जितनी जियादा होगी। उतना अच्छा समझा जाता है। बचनाग शोधकर बहुत से रसायन में वर्ता जाता है। बचनाग का लेप बहुत सी बीमारी में दिया जाता है बचनाग के सुफेद वा काला दो भेद हैं। बचनाग---बलकारक. रसायन, वायुश्लष्मा विकार कुष्ट वातरक्त, अग्निमाँद्य श्वास, काँस नाशक प्लीहा, उदर, भगंदर, गुल्म पाँडु, जखम नाशक तीक्ष्ण गुणकारी सुखकर व योगवाही है।

वर्णशूल—बचनाग निंबू के रसमें अरख कर लेप देना, गंडमाला गलगंड में उक्त विधि से वर्तना संधिवात के सूजन में निंबू के रस में उबाल कर लेप देना।

बिच्छू के दंश में बचनाग घिसके लगाना चाहिये।

कानके दर्द में—बचनाग को बेखंड सज्जान भाग तिली के तेल के साथ खूब गरम कर कान में डालना, सूजन में-बचनाग, सोंठ और पुनर्नवा को जड़ गोमूत्र में घिसकर लेप देना।

घिसपै, नाभय, बचनाग, मोरचूर कुचला समान दहो में घिस के लेप करना बद पै लेप, बचनाग व कुचला बीज गोदुम में घिस लेप करना ऊपर कागज चिपकाकर गरम ईंट रख के सेंकना। (कपड़े में ईंटों के टुकड़े रख सेंकना) काँख भांगरी में बचनाग पानीमें घिस लेप करें।

बचनाग शोधन विधि—जो हमें एक महात्मा से प्राप्त हुई दूध में बचनाग डाल के चुराना, दूध काला होगा। दूध को गड्ढे में गाढ़ दो खयाल रहे उक्त काले दूध को कोई जनावर न पिये गड्ढा खोद जमान में दाब देना चाहिये बादमें फिर दूसरा दुध ले पकावे काला होगा। बचनाग निकाल दूध जमीन में गाढ़ दो। फिर यही क्रिया बनक बचनागप दूध काला न होवे समझना कि बचनाग शुद्ध हो गया। चाहे जिस योगमें आय् प्रमाण वर्तना चाहिये। कच्चा महा विष है शुद्ध किये बाद फिर फायदा कार्य अमृत का करता है।

प्रिय पाठक वृन्द हमने सातपुडा पहाड़ के दुर्गम दरों खारों से भ्रमण कर महात्मा महन्त कई अलौकिक सिद्ध वनोषधि योग हासिल किये हैं। हमारे जड़ी बूटियों की ताकत राग हारक गुण 'बूटा बो कभी न होवे झूंठा,, कहावत ठीक है।

करंज।

प्रिय महाशयो! आज आपके समक्ष प्राकृतिक अलौकिक शक्ति के प्रभाव रूप और जीवन का रक्षक (शरीरमें हानवाले जरा व्याधि से मुक्त करनेवाली) वनस्पति करंजक को लेकर उपस्थित होता हूँ जिसके गुणों को आप सर्व महानुभाव परीक्षा कर लाभ उठावेंगे।

नाम—गुजराती में करँज, कणजी, कच्छी कहते हैं।

मराठा में—करेज, घाणेश करंज कहते हैं।

हिन्दी में—करंज, करञ्जक, कंजा।

संस्कृत—करंज।

आकार तथा उत्पत्ति स्थान।

करंज का झाड़ २० से ४० फीट तक ऊंचा होता है नदी व तालाब के किनारे अकसर यह उगे हुये पाये जाते हैं धड़ व शाखायें मूली के भस्मी रंग का होता है कभी २ उसकी डंडी की शाखायें वेला के माफिक पसरता हुआ पाई जाता हैं और कोमल शाखायें नीचे झुकी रहती हैं उसके ऊपर कांच जैसा चमकता घेरा नीला रँग का शुशोभित रहता है, बरसातके दिनोंमें इस वृक्ष में जरा गुलाबी लिये हुए आसमानी रँग तथा सफेद रंग की छोटी

(जिस माफिक गुथे हों ऐसा) कलियाँ पत्र कोण में विराजमान होती हैं, जाड़े की ऋतु आरम्भ होतेही बादामके आंकार का परन्तु ज़रा चपटा फल का झुपका लग जाता है कभी २ ऐसा भी देखा गया है कि पिछले साल के फल भी अगले साल मौजूद रहते हैं, ज्येष्ट आषाढ़ मासमें जब बरसात होता है तब इस करंज के झाड की शोभा देखने लायक होती है, करंज की मूल पीली सफेदी लिये भूरा रंग की और ऊपर की छाल रेखा लिये होती है पत्ते सलदार होते हैं नवीन कोमल पत्ते पीले सलोने रंग के होते हैं पके पत्ते ज़रा कड़कीला गहरे रंग के गोलाई लिये हुए रहते हैं। फल को चीरने से उसमें एक या दो बीज निकलते हैं इसकी खुशबू उग्र कड़आहट लिये हुए होती है।

उपयोग।

इसका समस्त वृक्ष का सर्वांग उपयोग में आता है।

गुण दोष।

बिषाही, जन्तु नाशक बद्धघ्न और वातहर है।

१—करँज के कोमल २ पत्तोंको ग्रहण कर घृत में पकाकर भोजन करनेसे आलस्य का तथा बादी का नाश होता है।

२—करंज की कोमल जड़को तेल में पकाकर उस तेल का लेप करनेसे निश्चय संधि वात दूर होता है।

३—करँज की छाल (मूलकी) अच्छी तरह से कूट के पीस कर संधिवात पीड़ा व सूजन पर लेप करने से चमड़ी तुरन्त लाल होकर आराम हो जाता है।

४-करंज के पान का रस दाद के ऊपर लगाने से शीघ्र लाभ पहुँचाता है।

५—आंखें दुखने पर सूजन पर करंज पुष्प की पोटली बनाके गर्म कर फेरने से आराम देता है।

६—बीज को घिस कर खाज दाद पर लगाने से फायदा होता है।

७—करंज चित्रक, समुद्र नमक दही के साथ समभाग पीस कर लेप श्वित्र कुष्ठ पर प्रयोग करने से फायदा देता है।

८—कोमल पत्तों का स्वरस जले स्थान पर लगाने से शान्त होती है।

९—करंज की मिंगी की छालका चूर्ण जवाखार मिलाकर मटर प्रमाण गुटिका बनाने से कूकर खांसीपर अनुभूत है।

१०—करंज के मूल की छालके रस को भगंदर व नासूर के व्रणमें पूरित करने से लाभ होता है।

करंज बीज में से तैल भी निकाला जाता है जो कि चमड़ी के रोगों पर मालिश करने में उपयोगी है रात्रिमें रोशनी के काम में दीपक जलाने में भी उपयोग किया जाता है।

पृथ्वीसार तैल।

करंज तैल १ सेर, काँजी, चित्रकमूल कनेरमूल, वत्सनाभ, नाड़ीकि बीज (छुहारी

के बीज) हर एक पांच २ तो० लेकर कांजी में पीस कर करंज तैल में लुगदी रखके सूर्यताप में सात दिन तपाने से बाद छान कर वात व्याधि में मालिश करना अति लाभ दायक है।

तिक्तादि घृत।

करंजपत्र फल, कूट मीठा, हकदर, लेठीमद, पखलपत्र मालती सब सम भाग लेकर कल्क कर लेय कल्क सोलह गुण घी लेकर सिद्ध करें यह भी पान करने में वातहर है।

करंजादि वटी

करंज मिगी तुलसीपत्र, नागर बेल, काली मिर्च समान भाग लेकर मरदन कर गुंजा प्रमाण गोली बनाकर हर प्रकार का ज्वर नष्ट होता है अनुपान ताजा कूप जल।

वैद्य रविशंकर अम्बाशंकर शास्त्री
घाटकोपर

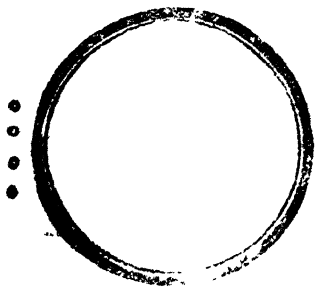
एक दम मुफ्त

अपूर्व लाभ

रमल शास्त्र द्वारा

सिर्फ दो माह के लिये 'द्वितीय वर्ष प्रवेश' की खुशी

मन चिन्तित कार्यों का विचित्र फलादेश भाग्योदय, रोजगार सन्तान विवाह' बीमारी, ऋण, जीत हार, प्रश्न, परीक्षाफल, स्वप्नफल, वर्षफल आदि भावी सुख दुख और उनके उपाय जानने की रुचि हो तो:—



इस माफिक चक्र में ईश्वर और अपने कामों का सुमरन कर एक ही साँसमें जितने शून्य रख सको रेखा के बाहर रखो,जगह भर जानेपर अन्दर भी बिंदु पात कर सकते हैं। साथमें जन्मपत्रकी नकल भी होना तो और अच्छा हो।

मुफ्त प्रश्न उन्हीं को बतलाया जावेगा जो राकेश के ग्राहक होंगे—या औषधियों के स्थायी ग्राहक हैं वा पूर्व में मुफ्त प्रश्नाजिन्होंने नहीं किया है। उत्तरार्थ एक आने का टिकट तथा ग्राहक नम्बर लिखिये।।

अनेकों स्थानों से प्रशंसा पत्र प्राप्त

पता—पाठक गोरीशङ्कर वैद्य रमल शास्त्री बड़ा बाजार, सागर सी० पी०

धर्मार्थ काम मोक्षाणां आरोग्यं मूल मुत्तमम् ॥

विलक्षण सिद्धांतीय ऋषियों की उपर्युक्त पदकी भावना बड़ी ही गंभीर धारणा एवम सर्वदा सत्य और अकाट्यप्रमाण की है। यथार्थ में स्वर्ग अपवर्ग और चौदह भुवन व्यापी जीव मात्र के जन्म से मरण पर्यन्त अहर्निशि क्षण क्षण पर खटकने वाली बात यदि कोई है तो अनारोग्यता ही किसी भी अभीष्ट सिद्धिकी घोरघातक हुई है होती है और होगी।

जब कोई देश अपने को स्वाधीन व सुखी बनाने की इच्छा करता है, जब कोई व्यक्ति अधर्मी व्यक्ति से अपनी धर्म विजय चाहता है, जब कोई व्यापार कुशल श्रेष्ठ अपनी वैभव की और पुरुषार्थ वृद्धि चाहता है, स्त्रियां धार्मिक और शक्तिशाला सन्तान की चाह करती हैं विरक्त और गृही मोक्ष मार्ग का अवलम्बन करता है तब तब प्रत्येक गति में आरोग्यता और उसके प्रभाव की बात ऐसा कोन व्यक्ति है जिसे एक बार याद स्मरण नहीं आती है तात्पर्य अर्थ, सम्पत्ति, शक्ति, विजय, कीर्ति धर्म, मोक्ष सभी पदार्थों की प्राप्ति का मूल श्रेय, "आरोग्यता" पर ही है जब से हमारी आयुर्वेदीय सदाचारीक दिन चर्या रात्रि चर्या ऋतु चर्या सद्वैद्यों की संगति, सनातन धर्मीय नियम, शास्त्र सिद्धदिव्योषधियों का सेवन, पथ्यापथ्य विचार, सध्योपासनादि निज निज वर्णगत कर्मों की अवहेलना कर, विधर्मी आचरण, भाषा, भाव, भेष, अश्लील साहित्य पुस्तकों का स्वाध्याय रुक्ष गरम मादक तीक्ष्ण वस्तुओं के सेवन का नित्य नियम डालते हुये अपना समस्त गौरव और स्वाधीनता को और उसके अखंडित सुखानुभव की लीला समाप्त कर दी गई है तभीसे आरोग्यता की इति श्री एक दम हो गई है।

आज दिन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र रङ्क धनी राजा महाराजा सन्त महन्त जैनी सनातनी आर्य नानकी रामानुजी दूकान दार महाजन, आफिसर मुखिया पञ्च एडीटर मेम्बर मालिक मालिकन लड़का बहू चाचा बाबा अर्थात् जन समूह में उस आरोग्यताका दर्शन यथा तथ्य देखने और सुनने में आता है।

प्रायः दाद खाज खेहुँआ धातु दोष, रुवाब, पोलापन अंड वृद्धि प्रदर, अंग मर्द गरम वात, कब्जियत, बालों का पकना, कम नजर, बवासीर, इन्द्रिय की शिथिलता स्मरण शक्ति का ह्रास, हृदय की धड़कन नेत्रों में क्षणिक अंधेरा लगना सहज ही आलस रहना आज इस चीज ने फायदा किया कल उस वस्तु ने नुकसान किया था, यही आकाश वाणियें निरन्तर गूंजती रहतीं हैं तभी तो अप्रमाणिक तिला नपु-

स्सकता वटी टानिक वीर्य समुद्री चूर्ण अहर्निशि स्थम्भन रस गोलमाल सुधा आदि आदि के विज्ञापनों की खाली बन पड़ती है।

न मालूम ऐसी आशीर्वाद स्वरूप रंग विरंगी पैकिंग की शीशियों के भीतर की औषधियों से नैरुज्य प्रजा का कितना कल्याण वा अकल्याण प्रति दिन हो रहा होगा।

साथ ही अनेकों औषधियाँ आजकल चूर्ण सिरप शराब मूत्र मांस आदि अनेकों अभक्ष्य पदार्थों को मिश्रित सुन्दर सुन्दर सजधज में हमें जानकर या अजान कर मिल रही हैं और अधाधुन्धी तथा अन्धा युक्त सेवन करते हुये विदेशों को अपना गाढ़े परिश्रम का द्रव्य भेज रहे हैं और उससे होने वाले धार्मिक नैतिक आत्मिक महत्ता एवम् विकाश को नष्ट प्रायः अपने आप करते हुये भी अपने देश, आयुर्वेद, सुजन परिश्रमी वैद्य समाज तथा भावी सन्तान के विषय में भी ध्यान नहीं दे रहे हैं—फिर ऐसी हालत में कहाँ तक वे घोर घोर विद्वान, आयुर्वेद विषयक साहित्य की उन्नति तथा समाज सेवा के भागी बन सकेंगे। अस्तु

सहृदय वृन्द! सामूहिक शक्ति सहित अल्प लागत की आयुर्वेदीय महोपकारी महौषधियों और तद्ज्ञान भण्डार रूपी आयुर्वेदीय पत्रों की ओर श्रद्धेय जनों के ध्यानमग्न्यार्पण और बढ़ती करने के भागी बनिये और संसार को दिखा दीजिये कि हम आर्य सन्तान हैं और आयुर्वेदीय औषधि ही हमारे जीवन मरण की संगी हैं।

स्वधर्मो निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।

विनीत

पाठक गौरीशङ्कर सागर

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे (किश्तीनुमा) चिकने, खूबसूरत मय घोटने की उत्तम मूसली सहित तैयार रहते हैं. इनकी लम्बाई ६½ इंच चौड़ाई २० इंच ऊंचाई ¾ इंच वजन में २½ सेर के हैं दो सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जा सकती है, इनके सिवाय तश्त खरलादि पारदीय सरकार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं, प्रत्येक खरल का मूल्य १०) रु० है खरल का आर्डर देते समय ५) रु० पेशगी अवश्य भेजें, और साथही अपना नाम, डाकखाना, जिला व पास का रेलवे स्टेशन मय लाइन के नाम केसाफ २ हिंदी या अंग्रेजी में लिख भेजें—बिला पेशगी आये आर्डर रद्दी समझा जायगा।

मगाने का पता—

श्री भगवन आयुर्वेदिक फारमेसी बरालोकपुर (इटावा यू० पी०)

अनुभव सार

सर्व रोग नाशक चूर्ण

१- पृथ्वी पुष्प के अन्तर्गत १ प्रकार का काले रंग का पदार्थ सूक्ष्म चूर्ण रूप प्राप्त होता है यह घावों के पूरने में अति-तीव्र होता है विशेष कर कर्णप्राव में छोड़ने से फौरन बहना बन्द कर देता है और अन्य किसी भी स्थान पर व्रण होने से लगाने से जल्द पूरा देता है मेरा अनुभूत है ४ मरीजों पर का।

२ इमली वृक्ष की ऊपर की सूखी छाल लेकर जलाकर खाक करले यह सूक्ष्म व्रणों पर बुरकने से लेखन रोपन दोनों कार्य करता है यह योग मेरा अनुभूत है।

यदि फोड़ा पक गया हो फूटता न हो तो इसे घृत में फेंटकर बांध दो फौरन फोड़ देगा।

३-नासूर नाड़ी व्रण की अनुभूत दवा—(१) सहिंजनेका छाल महीन पीस कर शहद में फेंटकर सूराख में भरदे थोड़े दिनों में अच्छा हो जायगा।

२—चूना कली, फटका सफेद सखिया सफेद गोंद सहिंजना, रार, सम भाग मिला कर नाड़ी व्रण के छिद्र में भर दो जब घाव पूरा होजाय तब चूना न छोड़े शेष औषधियों का प्रलेप किया करे घाव भर जायगा और फिर न उभरेगा।

३ - स्वर्णक्षीरी का स्वरस तथा कड़ुआ तेल समभाग लेकर उभय तैल गर्म करे तब तुल्य तैल में १ माशा तूतिया पीस कर सुरमा दे जलने पर उतार कर ठण्डा करके पुनः उपरोक्त स्वरस मिलाकर फिर अग्नि पर धरदे स्वरस जल कर जब तैल मात्र रह जाय तो छान ले उस तैल की मालिश से व्याधियां शीघ्र आराम होने में देर नहीं। अपने औषधालयमें रखता हूँ मेरा पूर्ण अनुभूत है।

४—कटयानाशी के पंचाँग की लुगदी बनाकर एक लोह सलाका के साथ कपड़ा में लपेटकर फिर कड़वे तैलमें भिगो दे और अग्निजला दे नये चीनी का पात्र रख दे उसमें उपकरण एरियालो लिये तैल इकट्ठा होगा यह आयुर्वेदीय टिंचर होगा। एलोपैथिक टिंचर का कार्य इससे पूर्णरूप से चलेगा यदि अधिक तैल जला दिया जाय तो रंग भी वैसा ही सुरखी मायल बन जाता है समस्त प्रकार के शोथ, वर्द व व्रणों को लाभप्रद है

५—गुलाबी फिटकरी ऽ॥ को भटकटैयाके अष्टांशशेष क्वाथमें भावना इतनी दी जाय कि ऽ२ सेर क्वाथ फिटकरी में लय होजाय पुनः सुखा कर फिटकरी पीस कर कुमारी रस से टिकिया बनाकर गजपुटमें फूँक ले, स्वाँग शीतल होने पर निकाल कर ६० गोली बनाले इन गोलियोंके सेवन से १८ प्रकार के कुष्ठ तथा भगन्दर, नाड़ीव्रण, व्रण, फोड़े फुन्सी, मसूरिका, प्रभृति समस्त चर्मरोग तथा प्रमेह पिडिका व उपदंश आदि के भयङ्कर व्रण शीघ्र अच्छे होजाते हैं। मेरा अनुभूत है।

डा० प० रामेश्वरप्रसाद द्विo
आयुर्वेदाचार्य, गोंडोना।

६—मस्तिष्क रंजन तैल—तेल चमेली, तेल जुही, तेल गुलाब, तिल का तेल एक एक पाव, तेल बेला आधपाव, त्रिफला का रस पावभर, कपूर, पिपरमेंट ३-३ मासे, नर्गिस २ मासे।

विधि—पहिले तिल के तैलमें त्रिफला के रस को पकावे। आवाज आने लगे तो कपूर पिपरमेंट छोड़ दें। तेल मात्र रहने पर उतार कर ब्लाटिंग या फलालेन से छानकर नम्बरवार तेल मिलाते जायँ। फिर नर्गिस मिला हिलाकर रक्खें। यह अत्यन्त खुशबूदार तैल होगा। नित्य लगाने से मस्तिष्क सम्बन्धी समस्त रोग शीघ्र नष्ट होकर स्मरणशक्ति तीव्र होगी। चित्त प्रसन्न रहेगा।

वैद्य श्यामनारायण शर्मा,
दारागंज-प्रयाग।

७-सतावर की जड़ का चूर्ण आध सेर गोखरू का चूर्ण आध सेर बराहीकंदका का चूर्ण आध सेर मिलोयसत आध सेर शुद्ध मिलावा १ सेर चित्रककी छाल पाँच छटाँक तिल काले शुद्ध आध सेर त्रिकुटा पाव भर मिसरी सवा दो सेर उपरोक्त दवाइयों को कूट छान मिसरी मिलाकर रखले—सेवनविधि १ तोला चूर्ण ६ मा० घृत १ तो० शहद मिला कर सेवन करे यदि हो सके तो १ पाव धारोष्ण दूधपीले समय—सुबह शाम। पथ्यापथ्य—गुड़ तेल खटाई लाल मिर्च अत्यन्त स्नेह अत्यन्त खारी अधिक तेज चरपरे पदार्थों का परहेज बाकी सब सात्म्य आहार हित कर है रोगनाश, धातु विकार, प्रमेह, नामर्दी, शीघ्रपतन स्वप्नदोष, बालों का पकना, शरीर सूखन पाँडु रोग, पीनस, १८ प्रकार का कोढ़ रक्त विकार, ८ प्रकार के उदर रोग, क्षय रोग राजयक्ष्मा, स्वांस महा स्वांस ५ प्रकारकी खाँसी ८० प्रकार के वायुरोग ४० प्रकार के पित्त रोग २० प्रकार के कफ रोग १० प्रकार के रक्त रोग बवासीर, कब्ज मन्दाग्नि, आदि समस्त व्याधियों को नाश कर शरीर में ताकत देता है। यह चूर्ण मनुष्यों के लिये अमृत

तुल्य है। हम इसे प्रति वर्ष बनाकर रोगियों को सेवन कराते हैं और अनेक असाध्य रोगी आराम हो चुके हैं। यह चूर्ण आयुर्वेद का एक रत्न है इसकी प्रशंसा जहाँ तक की जाय वह थोड़ी है। इस चूर्ण को बाल वृद्ध युवक स्त्री हर ऋतुमें सेवन कर सकते हैं, स्त्रियों को कैसा ही प्रदर श्वेत रक्त आदि किसी प्रकार हो तब इस चूर्ण चावलके धोवन से सेवन करा दिये असाध्य प्रदर शांत होगा बालकों के रोग में १॥ से ३ मा० तक चूर्ण खाली शहद में देने से बालकों के समस्त रोग नष्ट होते है और बालक मजबूत मोटे ताजे रहते हैं एक बार बनाकर लाभ उठाइये। तब आपको मालुम होगा कि हमारे आयुर्वेदिक शास्त्रमें कैसे २ चमत्कारी रत्न पड़े हैं चूर्ण तैयार करने तथा सेवन करने के विषय में यदि कोई बात समझ में न आवे तो लेखक से पूछलें।

लेखक—भन्डारीलाल वैद्य
सिनगोड़ी जबलपुर सी० पी०

८-विसूची ज्वर पर—प्राणसंजीवन ठंडाई कासनी १ माशा काहू १ मा० मगज कद्दू ५ मा० मगज खीरा ५ मा० गुलबनफसा ५ मा० गुलगाअबाँ ५ मा० मुलैठी ३ मा० मुनक्का २ अदद पोदीना ५ मा० मिश्री ३ तो० पानी ⅝ सुबह शाम घोट कर ५ दिन तक पिलाने से विसूचि ज्वर की प्रबल पिपासा, बेचैनी, वमन, दस्त, आदि समस्त उपद्रव दूर होते हैं।

९-ज्वर सुदर्शन अर्क—तेजाब गन्धक २५ बूंद मिश्री ⅝॥ पानी ⅝= विधि. काँच की साफ बोतल में पानी डालकर मिश्री व गन्धक का तेजाब डाल दो सब एक रस हो जावे तब काम में लावें। मात्रा ⅝ मिट्टी या कांच पात्र में।

गुण—पित्तज्वर मे जलन, पिपासा, दाह, तथा ज्वर, यकृत, तिल्ली के दोषादि सभी शान्त होते है।

गन्धक तेजाबविधि—गन्धक आमला सार ⅝। फिटकरी ⅝॥ आधा सेर लेकर एक चिकने मिट्टी के पात्र में कूट कर भर दे ऊपर से दूसरा पात्र आँधा दे ऊपर वाले पात्र में नली फंसा दे जिससे बोतल में तेजाब टपके मध्यम आग्निसे आंच देवे।

हर्ष समाचार।

हर्ष का विषय है कि एं० मुन्शीरामजी शर्मा अग्निहोत्री मु० कुटबा मुजफ्फरनगर वाले "राकेश" के सहकारी सम्पादन को तथा श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी की रसायनशाला के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के लिये गत श्रावणी पूर्णिमा से राकेश आफिस में नियुक्त होगये हैं। प्रायः सभी सज्जनगण पंडितजी की योग्यता से पूर्व ही से परिचित होंगे। विशेषकर आप आयुर्वेद के सिद्ध चिकित्सक अनुभवी रसायन शास्त्री तथा ज्योतिष और रमल शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता हैं। आपके प्रेमी मित्रों से सूचनार्थ निवेदन है कि वह पंडितजीसे आगामी पत्र व्यवहार राकेश कार्यालय बरालोकपुर इटावा यू० पी० के पते पर करें।

मनेजर।

उष्ण बात (सोजाक) पर

नुस्खा बतलाऊं, तुम्हें समझाऊँ दवा परहेज से खाइयो जी ॥

सफेद मूसली मोचरस ताल मखाना राल।
पाषाण भेद सत बहरोज़ा बड़े गोखरू डाल ॥
मिश्री १ तोला नहीं कुछ रोला तोला और एक एक लाइयो जी ॥१॥

सब काँटे में तौल कर लेना खूब सम्हार ।
खोटी खरी विचार कर पड़वा लेना यार ।
इमामदस्ता लाकर साफ करवाके दवाई सब कुटवाइयो जी ॥२॥

सत बहरोज़ा राल के लेना अलग निकाल ।
और पाँचोंको कूटकर कपड़ छान करडाल ॥
अलग पिसवाके मिश्री मिलवाके पुड़िया सब २८ बनइयो जी ॥३॥

एक सुबह और शाम को लेना करके नेम ।
बकरी दूध से खाना दोनों टेम ॥
लालमिर्च खटाई और सब्जी मिठाई छोड़ परहेज निभाइयो जी ॥४॥

दिन के जब १२ बजे लेना चन्दन तेल ।
६ मासे लेना सिता ८ बूंद ले मेल ॥
देर नहीं लावे जलदी खा जावे जिगरकी गरमी मिटाइयो जी ॥५॥

कीकरकस और आंवला बूटी बाड़ी पात ।
८ सेर जलमें लो पका, आधा रखना भ्रात ॥
ठन्डा करवाके जखम धुलवाके मिले तो पिचकारी लगाइयो जी ॥६॥

तेल आंवला संतरा मंगवा लेना और ।
शिरमें नित मालिश करो खुश्की जा दिलफौर ॥
मुन्शीका कहना झूठ रत्ती है ना सोजाक फिर हमें दिखाइयोजी ॥७॥

पं० मुन्शीराम जी वैद्य



वैद्यवरों से प्रश्न

१—एक स्त्री उम्र करीब ३२ साल करीब १७ साल हुये गर्भपात हुआ था तब से गर्भ धारण नहीं हुआ तभी से श्वेत व लाल प्रदर भी है। अकसर मासिक रजोधर्म काल के बाद ७ दिन तक लाल प्रदर जारी रहता है। श्वेत प्रदर हमेशा जारी रहता है। पान तम्बाखू अधिक सेवन करती है आज कल की हालत रोगी—कमजोरी है-हाथ पाँव में जलन, कोठे में गुड़गुड़ाहट, सुस्ती बेहद, काम करने में अरुचि, अग्निमन्दः दस्त साफ नहीं आता है। बाज समय पतला दस्त आता है। कृपया विद्वान वैद्य जन निर्णय कर शीघ्र अनुभवी योग प्रकाशित करें—योग सर्व सुलभ, कम खर्च होना चाहिये, सांडु ब्रदर्स की दवा दी गई लाभ नहीं हुआ।

२—एक रोगी उम्र ४० साल करीब ३ माह हो गये, स्वांस बहुत जोर से है—गर्दन में कान के पास बाँई ओर एक गिल्टी है। कई जंगली जड़ी बूटियों का लेप किया गया फायदा नहीं हुआ हालत निहायत कमजोर है, रात में नींद नहीं आती है। स्वांस तकलीफ देता है। चलने में स्वांस निहायत ही फूल जाता है। जिस से रोगी बेचैन रहता है। आवाज स्वर भंगकी तरह है, घरघराहट रहती है विद्वान वैद्य वृन्द अनुभूत योग प्रदान करने की दया करें।

भवदीय

एस० पी० क्षत्रिय आर्य हितैषी कार्यालय पथरौट एलिचपुर।

३—एक मरीज बहुत समय हुआ आतशक हो गई थी मुद्दत हो गई अच्छी भी हो गई पर उसके लिंग के सुपारी के नीचे इर्द गिर्द दोनों तरफ फुन्सीके निशान हैं कुछ तकलीफ नहीं रहता है परन्तु चार छः वार अधिक मैथुन करने से निशान फुन्सी जैसा हो जाता है। मैथुन करने से दर्द होने लगता है। कृपया कोई ऐसा खाने लगाने की औषधि तजवीज करके लिखिये जो कई बार की अनुभूत हो—महती दया होगी।

४- हमारे भ्रातृवरजी के दक्षिण हस्त की मध्यम अंगुली के नख में ३ साल का अरसा हुआ जब प्रथम अन्दर दर्द पैदा हुआ फिर नख पक गया पुनः वह नख गिर दूसरा जमा फिर वह भी गिरा तब से यही क्रम जारी है नीचे का मांस पुष्ट

हो गया है उसके ऊपर जो नख जमता है मांस में चिपकता नहीं कुछ दिन बाद टूट जाता है। नख के जड़ में जब २ नया नख जमता कुछ पीछे को बढ़ता भी है इससे अनुमान होता है कि यही क्रम जारी रहा तो कुछ काल में समग्र अँगुली नख रूप होकर बेकार जावेगी। अमृतसागर में इस रोग का नाम (कुक्ख) लिखा है दवा लगाने की बहुत की मगर कुछ लाभ नहीं है अब अमृत सागर के लेखानुकूल काँतीसार भस्म शहद से खिलाते हैं कुछ लाभ की संभावना इससे भी नहीं पाई जाती, अब वैद्य समाज से प्रार्थना है कि इस रोग का निदान नाम तथा अनुभूत योग लिखे और रोगी की हीनावस्थाका ख्याल रहै वह बहुत गरीब तथा दुःखी है।

५—हमारे १ मित्र जिनकी आयु ३८ वर्ष की है स्कूल मास्टर हैं, विवाह होगया है, पत्नी गृह में है, परन्तु दैवबस एक दिन एक मेला में गये वहाँ पर एक स्त्री से कुछ वार्तालाप हुआ, प्रथम उसी स्त्री से आपकी शादी न होकर दूसरी हो गई, अब उस स्त्री की भी दूसरे वर के साथ शादी हो चुकी है, उसी क्षणसे हमारे मित्र जी के दिल में धड़कन उत्पन्न हो गई है भोजन में अरुचि रहती है चित्त बेचैन है, किसी कार्य में चित्त नहीं लगता, हमारी समझमें कामोन्माद या प्रेमोन्मादके लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं यदि कुछ काल यही दशा रही तो फिर अच्छे होने में महान कष्ट होगा उन्माद स्थाई हो जायगा, अतः समस्त वैद्यराजों से विनीत प्रार्थना है कि वह योग्य चिकित्सा तथा रोग निदान लिखे जिनके प्रयोग से लाभ होगा उन्हें १ स्वर्ण पदक प्रदान किया जायगा।

आयुर्वेदाचार्य डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी गोतौना।

प्रश्न ६—एक रोगी जिसकी अवस्था ५८ वर्ष की है ६ वर्ष हुये निमोनियाँ हुआ था उस वक्त आयुर्वेदीय चिकित्सा हुई थी तभी उन्हें सांसी ठहर गई है फिर बड़े इलाज हुये लाभ कुछ न हुआ अवस्था निबल ह' होती जा रही है भैषज्य रत्नावली का लक्ष्मी विलास भी खिलाया गया है। भूख अच्छी लगती है मल साफ उतरता है परन्तु स्वांस सा चढ़ा रहता है खांसी जब उठता है बेहाल हो जाता है मानों गश आ गया चलगम नहीं है पानी सा झड़ता है, धातु पानीवत हो गई है क्या आयुर्वेदज्ञ इस सदाचारी ब्राह्मण की तरफ ध्यान देंगे स्वयं पाक से भोजन खाता है ३ घंटे भजन करता है पर-माथे है सिद्धानुभव योग लिखें।

प्रश्न ७—क्या कोई ऐसा औषधि आयुर्वेद में किसी वैद्य रत्न के अनुभव हुई है कि दुबल मनुष्य मोटा हो जाय रोग कोई नहीं है क्षुधा अच्छी है हाजमा दुरुस्त है और सब तरह आरोग्य है अवस्था ३० वर्ष की है परन्तु शरीर में मांस अधिक नहीं बनता शरीराकृति बूढ़े सरिस है। प्रयोग अधिक व मूल्यवान न होवे।

विनीत दानाराम
मु० कुटवा

वैद्यवरों के उत्तर

नोट अगले अङ्क में वैद्य वरों द्वारा दिये इस अङ्क के प्रश्नों के उत्तर इस स्थान पर प्रकाशित किये जावेंगे पाठकगण इस नियम विवशता पर क्षमा करें। —सम्पादक

३८ साल से प्रसिद्ध ?

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी, मथुरा की बनाई हुई यह अमूल्य दवायें केवल इस भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ साल से प्रसिद्ध है। इन की अपूर्व गुणकारिता का यह जीवन्त सबूत है कि इतने दिनों इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जारही है-इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है ?

१—सुधासिन्धु

सभी बीमारियों के लिये कफ, खांसी, हैजा, वमन, शूल, आंव, खून के दस्त, पेट की सभी बीमारियाँ, बच्चों की बीमारी, हरे पीले दस्त, के, दूध पटकना, ऐंठा, गाँठिया आदि के लिये सुधासिन्धु रामबाण है। तुरंत फायदा पहुँचता है। सुधासिन्धु सुगन्धित है स्वादु है और सर्वकुलता है। मूल्य फी शीशी केवल ॥)

२—बालसुधा

बच्चों के सभी रोगों के लिये इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं. कमजोर लड़के ताकतवर होते हैं नीरोग लड़के बीमार होने से बचते हैं। मीठा है, बच्चे खुशी से पीते हैं। बीमार फी शीशी ॥)

३—दद्रुराज केसरी

नया ,पुराना चाहे जिस प्रकार का दाद हो, इससे तुरंत आराम होता है। दादके लिये ऐसी अचूक और शर्तिया दवादूसरी नहींहै। जलन, तकलीफ वगैरह कुछ नहीं होती। मूल्य ।)

यह दवाइयां भारत सरकार से भी रजिष्टर्ड हैं।

हमारी दवाएं सब जगह मिलता हैं। यदि आपके शहर, कस्बे या गाँव में न मिले तो इस पते पर पत्र लिखकर मंगवाइये।

(बड़ा नया सूची पत्र मुफ्त मंगवाइये)

मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा

वैद्य संसार समाचार

निखिल भारत वर्षीयायुर्वेदीय २० वाँ वैद्य सम्मेलन

करांची

ता० १, २, ३, ४, जनवरी १९३० में होगा,

जिसमें

४ स्वर्ण पदक

प्रदान किये जावेंगे।

(१) स्वर्ण पदक, वैद्य पं० घनानन्दजी पन्त, चौक बाज़ार, मुरादाबाद द्वारा उसे दिया जायगा। जिसका 'आयुर्वेद का ह्रास, इस विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध होगा।

(२) स्वर्ण पदक, रायबहादुर शेठ श्री शिवरतन मेहता, आनरेरी मजिष्ट्रेट करांची, द्वारा उसको दिया जायग जिसका 'आयुर्वेदीय शल्य चिकित्सा प्राचीन समय में किस प्रकार थी उसका ह्रास किस कारण से हुवा, तथा अब उसका पुनरुत्थान किस रीति से हो सकता है। इस विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध होगा।

(३) स्वर्ण पदक, शेठ श्री जमशेद जी एन० आर० मेहता, प्रेसीडेन्ट करांची म्यूनीसिपैल्टी, द्वारा उसे दिया जायगा जिसका 'विना किसी औषधि सेवन के आयुर्वेदीय पद्धत्य नुकूल चलकर किस प्रकार मनुष्य स्वस्थ जीवन प्राप्त कर सकता है, इस विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध होगा।

(४) स्वर्ण पदक, शेठ केवलराम गोवर्धनदास, आनरेरी मजिष्ट्रेट करांची द्वारा उसको दिया जायगा जो 'बद्धपारद, करके दिखलायेगा अथवा जिसका निबन्ध पारद के अष्टादशसंस्कारों की सरल तथा अनुभूत विधि पर सर्वोत्तम होगा।

विशेष ज्ञातव्य जानने के लिये पत्रव्यवहार करें—

श्री श्याम मनोहर मिश्र रस वैद्य

प्रधान मन्त्री,

स्वागतकारिणी समिति नि० भा० २० वीं वैद्य सम्मेलन,

लक्ष्मीदास स्ट्रीट, करांची,

सर्व वैद्य निमंत्रण ।

(संस्कृत से भाषा कर प्रकाशित)

प्रिय सज्जन वृन्द !

यह बड़े आनन्द का विषय है कि २० वां निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद सम्मेलन सिन्ध प्रांत के कराँची नगर में होगा। इस सम्मेलन की सफलता और अच्छे ढङ्ग से काम करने के लिये यहाँ की स्वागत समिति बड़े उत्साह से कार्य में तत्पर है। आप सरीखे विद्वान वैद्यों का भी यह कर्त्तव्य है कि इस आयुर्वेद सम्मेलन रूपी सेवा यज्ञ में यथोचित सहायता प्रदान करें। निरन्तर आयुर्वेद की सेवा दीक्षामें लगे हुए आप लोगों को भी ऐसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे कि सर्व जन कल्याणकारी महर्षियों करके प्रणीत आयुर्वेद शास्त्र की कीर्ति दिग्दिगन्तमें फैले। इसकी कीर्ति का नक्कारा दशों दिशाओं में बाजे और आयुर्वेद की विमल कीर्ति पताका आकाश मण्डल में फहराये।

प्राधानतया हमारी प्रार्थना यह है कि आप सब महानुभाव सम्मेलन के अवसर पर सुनाये जाने योग्य आयुर्वेद शास्त्र के कठिन शङ्कास्पद और दुरुह विषयों पर अपने प्रकाँड पांडित्व और अखण्ड योग्यतासूचक अपने२ निबन्ध लिखकरस्वागत समिति के पास भेज दें तथा वहां होने वाली सद्विद्वत्समभाषा परिषदों में भी विद्वानों के सन्मुख चर्चा करने योग्य गम्भीर ज्ञान प्रदान करने वाले विषय को अपने २ निबन्ध रूप में लिखकर अपनी विद्वता का लाभ प्रदान कराकर सम्मेलन को सफल बनावें। अपिच विनीत प्रार्थना यह भी है कि प्रदर्शिनी के लिये अपने प्रांत की सन्दिग्ध वनौषधियां हस्तलिखित दुष्प्राप्य प्राचीन ग्रन्थरत्न तथा यन्त्र शस्त्रादिक और इसी प्रकार के आयुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाले अनेक पदार्थोंको भेजकर हमारे परिश्रम को सफल करें। विशेष प्रार्थना यह है कि आयुर्वेद के सर्वाङ्ग पुष्टि के लिये भारतवर्षीय आप सब विद्वान वैद्यों के सम्मेलन की सफलता और उपयोगिता प्रकट करनेके लिये सर्व प्रकार से सहयोग दान देना आवश्यकीय है। अतः आशा करते हैं कि आप लोग कार्य की सफलता के लिये अवश्य उद्योग का आरम्भ करेंगे और अपने प्रांत के वैद्य वर्ग को भी प्रेरणा करके बड़ी संख्या में सम्मेलन में एकत्रित होकर सुशोभित होंगे।

आपका दर्शनाकाँक्षी—

प्रधान मंत्री—

स्वागतकारिणी समिति,

नि० भा० २ रा वैद्य सम्मेलन कार्यालय

लक्ष्मीदास स्ट्रीट कराँची

मन्त्रिणः।

श्री चन्द्रसेन जेतली बी० ए०

श्री छोटालाल विश्वनाथ पण्डित:

श्री त्र्यम्बकलाल नाना लालाचार्यः

दमा (श्वांस) की

अव्यर्थ औषधि का बिना मूल्य वितरण !

गत वर्ष शरद पूर्णिमा की रात्रि को दमा (श्वास) की एक अव्यर्थ औषधि श्रीमान राजा साहब रेहुवा की ओर से वितरणकी जाती है स्थान बरणापुर जिला बहराइच में है इस अव्यर्थ औषधि का केवल एक मात्रा वर्ष में केवल एक बार उपरोक्त तिथि को विधिके अनुसार सेवन करने से यह रोग जड़ से जाता रहता है लगातार तीन वर्ष तक उपरोक्त तिथि को एक मात्रा सेवन करनेसे कैसा ही पुराना दमा क्यों न हो अवश्य आराम हो जाता है। गत वर्ष करीब २००० दोहजार रोगियों को यह औषधि दी गई थी इस वर्ष शुक्रवार १८ अक्टूबर सन १९२९ ई० को शरद पूर्णिमा पड़ेगी गत वर्ष की सफलता को देखते हुये यह आशा की जाती है कि ३-४ हजार रोगी इस वर्ष एकत्रित होंगे औषधि वितरण का सुन्दर प्रबन्ध कर दिया है जो सज्जन इस भयंकर रोग से पीड़ितहो उनसे प्रार्थना है कि उपरोक्त तारीखको एक या दो दिवस पूर्व बरणापुर पहुँच कर औषधि सेवनकर लाभ उठाइये बरणापुर बहराइच रेलवे स्टेशन B. N. W. R से सात मीलपर है सवारियां सब प्रकार की मिल सकती हैं आने की सूचना एक सप्ताह पूर्व देने से विशेष सुविधा होगी बाहर से आने वाले को कोई कष्ट न होगा इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है।

अयोध्याप्रसाद बी० ए०
प्राइवेट सिक्रेटरी रेहुवा राज्य बहराइच

समस्त वैद्य बन्धु से प्रार्थना

श्री स्वामी गणेशानंद जी अर्हेत द्वारा स्थापित दातव्य श्री गणेशौषधालय गोंडा ना आज २१ वर्ष से देशी विदेशी सर्व जनता की सेवा निःशुल्क कर रहा है। स्थानाय जनता कोमुफ्त तथा बाहर से डाक व्यय प्राप्त होने पर मुफ्त भेज कर यह औषधालय जीवन दान दे रहा है। रोगियों को भोजनादि का प्रबंध रहता है स्त्रियों की चिकित्सार्थ एक दया भी रहता है जिससे विशेष सुविधा है। दो वर्ष से इंडियन मेडीसिन बोर्ड लखनऊ (५०) सालाना सहायता देना स्वीकार करचुका है। परन्तु खर्च अधिक होने से समस्त वैद्यबन्धुओं से प्रार्थना है कि इस धार्मिक कार्य के लिये औषधियाँ प्रदान करने की कृपा करें।

सर्पविषकी चमत्कारिक चिकित्सा

(सर्पाक्षी की अपूर्व विष नाशक शक्ति)

आयुत एकल पाँड़े नैपाली वैद्य मुरादाबाद वाले ने वैद्य मासिक पत्र में अपने सर्प विष के अनुभव को प्रकाशित कराया है वह वैद्यके आधारपर यहाँ दिया जाताहै

साह जगदीश पूरणजी रईस की कोठा पर दो मनुष्यों के सर्प विष की चिकित्सा को उक्त वैद्य जी गये सर्पदंश रोगी बे होश थे-वैद्यजी ने सर्पाक्षीघनौषधि द्वारा रोगियों की नासिका में नस्य दिया रोगी होशमें आगये चैतन्य होगये। यह औषधि सर्प विष वाले को खाने लगाने सुँघाने में प्रयोग की जाती है॥

वैद्यक मनोरंजन

पितर महोत्सव पर स्वर्ग में वैद्यक सनसनी

कलिकाल के आयुर्वेद की गति की रिपोर्ट वैसे तो हफ्ता हफ्ता भूलोक से स्वर्ग में पहुँचने वाली आयुर्वेदीय आत्माओं द्वारा पहुँचती ही रही फिर भी जब से हमारे अ० भा० वर्षीय वैद्य सम्मेलनके जन्मदाता श्रीमान महा महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्री पटे स्वर्ग सिधारे उन्होंने जाकर तोरा चिट्ठा रवाना कर दिया साथ ही पितर वैद्यों का संगठन कर दैव-वैद्यों के अंगभूत एक स्वर्ग सभा भी कायम कर रक्खी थी इधर श्रीयुत यामिनी भूषण राय ने भी पहुँच कर काफी उथल पुथल मचा रक्खी थी पर सितारे बहुत दिनों से इसी चिन्ता में थे कि हमारा सन्देश यथा समय किस प्रकार पहुँचाया जा सके—अभी नासिक वैद्य सम्मेलन की रिपोर्ट का पूरा विवरण 'राकेश' द्वारा पहुँचने पर भूलोक वैद्यों के कृत्यों पर प्रफुल्लित भी हुए तथा किसी कृत्यों पर क्षोभ भी हुआ, फल स्वरूप यही निश्चय किया कि सर्व वैद्य दैव सम्मेलन पितर महोत्सव पर किया जाय उसमें कलिकाल के आयुर्वेद की गति पर विचार तथा उसके भावी कार्यक्रम को सुधारकर निश्चय कर भूलोक में सन्देश रूप भेजा जावे इसी बीच में एक शङ्का उत्पन्न हुई कि सन्देश किस प्रकार पहुँचाया जावे बड़ी खोज के पहुँच के बाद यही विचारा गया कि यह कार्य या तो 'सूर्य देवता, या औषधि पति "राकेश,, ही कर सकते हैं। सूर्य देवता ने अपनी परिस्थिति को बतलाते हुए असमर्थता प्रकट की कि मुझे सुबह से शाम तक दिन में ही कार्य करना पड़ता है। जब से अंग्रेजी राज्य हुआ तब से आकाशी मार्ग में भी वायुयान द्वारा अधिकार कर के पहरा रक्खा गया है और यह सन्देश "कुछ आंगिल औषधियों के बहिष्कार को लिये हुए भी है,,। अतएव इसकी जांच होने पर रोके जानेकी सम्भावना है। इसके बाद औषधि पति राकेश से परामर्श लिया गया, राकेश ने वचन दिया कि मैं निडरता पूर्वक इस सन्देश को अपने प्रतिबिम्ब "राकेश,, पत्र में प्रकाश. न अर्थ पहुंचा दूंगा और मेरा मार्ग भी प्रायः निष्कण्टक रहता है कारण कि मुझे रात्रि में ही भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है। आखिरकार यह निश्चय होने पर मीटिंग काल (Call) की

गई सर्व वैद्य पितरदल तथा दैव दल के आयुर्वेद ज्ञाता एकत्रित हुये—सभापति के लिये धनवन्तरि भगवान ही सर्व सम्मति से नियुक्त किये गये कारण कि यह कुछ काल तक अलोगढ़ में निवास कर अभी थोड़े ही दिन हुये अपने प्रतिबिम्ब धन्वन्तरिको मरणासन्न छोड़ अन्तर्ध्यान होकर चले आये हैं आपने आयुर्वेद प्रेमियों की निरन्तर घोर परिश्रम द्वारा सेवा करते रहने पर भी अश्रद्धा देख पुनः अपना स्थिति बदलने के लिये यह माया प्रगटाई है ऐसा कहते थे फिर जैसे जो कुछ उनके दिली विचार हों। खैर सर्व लोगों ने यही उचित समझा कि यही भूत आयुर्वेद के हालात से भी परिचित हैं तथा वर्तमान स्थिति को समझकर आये हैं—और शल्य शालाक्य जिसके द्वारा आयुर्वेद का जीर्णोद्धार करना है उसके प्रवर्तक भी हैं अतः यही सभापति बनाये जावें।

सभा बैठक—

पिंडाल (सभा भवन) बड़ा ही भव्य तथा विशाल था जिसकी उपमा भूलोकमें तो कोई दृष्टिगोचर नहीं होती कोई औषधालय तथा आफिस तथा भवन नहीं समझमें आता जिसे बताऊ। हां एक जगह कहीं हमने तिलका पहाड़ पढ़ा था जिसकी महान बखानता अवश्य आंखोंके सामने चक्कर लगा रही है समझ में आता उसी को उपमेय बनादूं—कारणकि जैसी सच्ची बखानता उसमें है वैसी ही यहां पर उपयुक्त होगी बस लीजिये पिंडाल भवन उतना ही सुन्दर था जितना हरिहर औषधालय और और उतना ही विशाल था जितना अनुभूत योगमाला आदि स (भाइयो हमारा अन्दाज ठीक न लगा हो तो माफ करना कारण कि देखा भाला तो कुछ आँखों ने था ही नहीं तारीफ का पुल अवश्य पढ़ा था) खैर कुछ भी हो भीड़ अपार थी ऐसी रिपोर्ट आई थी। ऊपरी बंधिस तो कल्पित ही कर ली गई है।

सभा कार्यारम्भ—

सभापति ने स्थान पर आग्रह करने पर सुशोभित हो आरम्भमें एकत्रित समूह को सम्बोधित करते हुए कहा—"भूलोक की आयुर्वेद गति के सूचक जितने सभा. चार तथा आप लोगों के विचार हों आप सब लोग प्रगट कीजिये ताकि उनपर विचार व बादा विवाद होकर सन्देश रूप में भूलोक में भेजा जा सके। आदेशानुसार विचार प्रगट किये गये जो निम्न प्रकार थे— (शेष फिर)

व्यायाम (मासिक पत्र)

कुश्ती, लाठी, वगैरः व्यायामों की सचित्र माहिती देने वाला हिन्दी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥) रु० है। पता—व्याम कार्यालय, रावपुरा, बड़ोदा।

[इस पत्र के इसी अङ्क का आड़ पत्र]

श्री धन्वंतरि जयतिः

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

संसार प्रसिद्ध

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

आर० के० डी० कलक्टर गंज बरालोकपुर

इटावा यू० पी०

की

तत्काल गुणकारी सर्व जनमान्य और प्रशंसित औषधियों का

आरोग्य पथ प्रदर्शक

सूचीपत्र

"यस्यदेशस्य योजन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्,,

आत्रेय,

संस्थापक—

पं० रूपेन्द्रनाथ जी वैद्यशास्त्री

प्रकाशक—

मैनेजर—वीरेन्द्रसिंह वर्मा

रामदत्त के प्रबन्ध से शर्मा प्रेस इटावा में छपा।

औषधियां मंगाने से प्रथम पढ़िये

१—इससे प्रथम के समस्त नियम रद्द किये जाते हैं इसलिये औषधियाँ मँगा समय निम्न लिखित नियमावली को खूब सोच विचार कर पढ़लेना चाहिये।

२—पत्र पाते ही २४ घंटे के अन्दर ही माल भेज दिया जाता है इसलिये विचार पूर्वक आर्डर लिखो ताकि माल लौटाना न पड़े।

३—एक साथ २५) की दवा खरीदनेवाले सज्जन एजेन्ट श्रेणीमें दर्ज किये जायंगे उनके नाम के साइन बोर्ड व विज्ञापन बाँटने के वास्ते कार्यालय से मुफ्त भेजे जायंगे ताकि उस प्रान्त में एजेन्ट का नाम विख्यात हो जावे =) प्रति रुपया कमीशन भी देंगे पैकिंग माफ, परन्तु पोस्टेज खरीदार को ही देना होगा।

४—ज्यादा दवा मँगाने वाले सज्जनों को अपने पासकी रेलवे लायनका व स्टेशन का नाम लिखना चाहिये।

५—रेलवे से माल मंगानेवाले को अपने आर्डर का चौथाई रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

६—तरल पदार्थ (आसवारिष्ट व तैल इत्यादि) पोष्ट पार्सल से न भेज कर रेल से भेजे जाते हैं। इसलिये तरल पदार्थ मंगाते समय रेलवे लायन मय स्टेशन के नाम के लिखना आवश्यक है।

७—शेष सब प्रकार की दवाइयां वी० पी० पोष्ट औफिस के ज़रिये भेजी जाती हैं

८—हर रोग की व्यवस्था मुफ्त बतलाई जाती है, ऐसे पत्र के साथ -) का टिकट भेजना चाहिये।

९—यहाँ से प्रत्येक पार्सल प्रबन्धकर्ता के निरीक्षण में पूरी तौर से जाँच कर तथा पैकिंग बहुत होशियारी से करके भेजी जाती है कदाचित डाक व रेलवे कर्मचारियोंकी असावधानी से रास्ते में पार्सल टूट फूट जाय तो उसका जिम्मेवार कार्यालय न होगा

१०—हमारी कोई भी वस्तु अगर आप को पसंद न हो तो वे रोक टोक वापिस कर रुपया या और कोई अपनी इच्छित वस्तु मंगा लीजियेगा।

सज्जनो !

नोट—केवल बरालोकपुरमें ही नहीं बल्कि यू० पी० प्रांतमें श्रीभगवत फार्मेसी के समान कोई भी अन्य औषधालय वा फार्मेसी एवं औषधि निर्माण शाला इतने बड़े परिमाण में और सस्ती दवा बेचने वाली नहीं है स्वयं आकर देखियेगा।

पता—मैनेजर श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा यू० पी०

क्या कहूँ ?

—*—

इस विज्ञापन युग में, विज्ञापन बाजी की चढ़ती जवानी के समय में चारों ओर जिस तरफ दृष्टि पात होती है उधर आडम्बर की प्रबलता ही दिखाई देती है। नकली के सामने असली लज्जित है पारखियों की परीक्षा विज्ञापन बाजी के भंवर में चक्कर लगा रही है, प्रायः औषधियों के व्यापारमें तो सर्वत्र विज्ञापनबाजीका ही बोल बाला है

अधिकाँश में रोगी जन एवं वैद्य संसार विज्ञापनीय उपदेशोंमें भ्रमित हो रहा है, स्वदेश निर्मित शास्त्रीय औषधि पीयूष के पान करने वाले न्यून गणनामें हैं, ऐसे समय में विज्ञापन कला से अनभिज्ञ मुझ जैसे व्यक्ति का औषधि व्यापार क्षेत्र में अवतीर्ण न होना ही उत्तम था। परन्तु नहीं–संसारमें सत्य परीक्षक एवं स्वदेशी औषधि अमृतपान करनेवालों की अधिकता न सही। पर सर्वथा अभा . भी तो नहीं है।

सज्जना! भ्रमर हर एक प्रकार के पुष्पों पर रसास्वादन हेतु मंडराता है लेकिन अन्त में पद्म पुष्प पर ही उसे मनोवांछित सुख एवं लाभ होता है। बस इसी आश्वसन के बल पर मैं इस फार्मेसी की वृहद रसायन शाला की कतिपय अत्यन्त प्रभाव शाली परीक्षित औषधियों की सूची केवल पारखी गुणग्राही पाठकों की शुभ सेवा में भेंट करना चाहता हूँ।

आशा है कि सज्जन वृन्द! इस रसायन शाला की किसी भी आवश्यकीय औषधिको मंगाकर और लाभ उठाकर मुझे उत्साहित करेंगे–कारण कि सत्य पथ निष्कंटक है।

आपकी आज्ञा का प्रतीक्षक–मैनेजर

ध्यान में रखना चाहिये।

कि रसायन औषधियों का बनाना कठिन है और अधिक द्रव्य तथा कौशलकी आवश्यकता है इसीलिये विश्वस्त कार्यालय के सुयोग्य वैद्य द्वारा बनी हुई ही दवाइयाँ चिकित्सा व्योहार में लाना चाहिये, वरना लाभ के बदले हानि उठानी पड़ेगी।

इस प्राँत में आयुर्वेदीय दवाइयों को बड़े परिमाण में बनानेवाला श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी से बड़ा अन्य कोई कार्यालय नहीं है यही एक ऐसा औषधि फर्म है

हमारा विचार

इसमें कोई शक नहीं कि आजकल जो आयुर्वेदीय विद्यार्थी विद्यालय में से उत्तीर्ण होकर प्रेक्टिस करते हैं। उनमें से अधिकांश वैद्य विद्यार्थी समय और धन के अभाव से अच्छी और शास्त्रानुमानुकूल दवाइयाँ तैयार नहीं कर सकते, यदि साहस कर तैयार करते भी हैं तो थोड़ा लाभ होने में बहुत महंगी पड़ जाती हैं। साथ २ बिगड़ने का भय हर वक्त लगा रहता है इस बात का अनुभव मैंने अपनी प्रेक्टिस के जमाने में खूब किया था कि आरम्भ में औषधियां तैयार करने में बड़ी दिक्कत होती है।

इस लिये उन वैद्यों को विश्वस्त औषधियां सस्ते मूल्य से दी जांय, तो चिकित्सा प्रेक्टिस में उनका हौसला बढ़ता रहेगा। इस प्रकार आयुर्वेदोन्नति में वे बहुत कुछ सहायक बन सकेंगे, उन सज्जनों के लाभार्थ हमने इस सूचापत्र में जो जो औषधियां तैयार की जाती हैं वह कौन २ ग्रन्थ के आधार से, और किस रोग पर दी जाती हैं पूर्णतया लिखा जायगा।

डाक्टरों को यह सुभीता होता है कि उनको हर प्रकार की तैयार दवाइयां मिल जाती हैं उन दवाइयों के ऊपर बाह्य आवरणपर कौन कौन चीज से यह दवा बनी यह सब लिखा होता है इससे हर कोई डाक्टर उसको समझ कर आसानीसे प्रयोग कर सकते हैं तथा आशातीत सफलता प्राप्त कर यशी और मालामाल बन जाते है।

वैसे ही आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में किया जाय तो हर कोई वैद्यराज उन आसानीसे प्राप्त हुई औषधियों का रोगों पर उपयोग कर आशातीत सफलता एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आशा है कि हर एक फारमेसी और औषधि निर्माण शाला संचालक इसका प्रणालाको स्वीकार करेंगे, तो वैद्यों को बहुत ही सुभीता हो जायगा।

जहां तक हो सका। और होसकेगा। हम अपनी सारी शक्ति इस कार्य में लगा देंगे, इसी हेतु हमने ऐसी ठीक २ कीमत औषधियों की निश्चित की हैं यह बात वैद्य लोग स्वयं हमारे कार्य को देखकर जान लेंगे। मेरा विचार यही है कि थोड़ी दवा बनाने वाले वैद्यवर इस हिसाबसे कममें कोई भी दवा तैयार न कर सकेंगे, यह अधिक परिमाण में ठीक दवा बनाने ही का कारण है, कि हम इतने सुभीते से दवाइयां अत्यल्प मूल्य में दे सकते हैं।

हमारी प्रत्येक दवा यथा शास्त्र समस्त उपादानों से पूर्ण बनती हैं, यदि किसी को शंका हो तो उचित परामश देकर वापिस कर सकता है हम पर जिन्हें अविश्वास हो उनके सामने बना कर देसकते है। वैसे तो परमात्मा और धर्म केवल मनुष्य का साथी है इसके अतिरिक्त कोई भी अन्य उपाय ऐसा नहीं जिससे हम आपको विश्वास दिला सकें, परीक्षा प्रार्थनीय है आशा है कि वैद्य लोग अपनाकर लाभ उठावेंगे।

विश्व-सेवक—

मैनेजर

आपको नेक सलाह

बन्धुओ ! किसी भी रोग में, किसी भी अवस्था में, किसी भी समय में अच्छी सलाह लेने के लिये बुद्धिमान; अनुभवी, सिद्धहस्त विद्वान बहुश्रुत वैद्य की आवश्यक्ता है नीम हकीमों, मामूली किताबों को नज़रसे गुजारने वालों, या बाप दादोंके नाम से वैद्यराज कहलाने वाले निरक्षर भट्टों की आवश्यक्ता नहीं है।

कारण कि इन्द्र कावज्र मस्तक पर गिरने से भी किसी प्रकार मनुष्य बच सकता है किन्तु बज्रमूर्ख, आडम्बरी, अपठित, वैद्य नामधारी जीव की औषधि से रोगी निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

हमारा अन्तिम उपदेश यह है कि पाठक गण जिस वैद्य से अपने रोग का इलाज करावें उसके योग्य होने का निश्चय पहिले करलें। आडम्बरी, खुशामदी नक्काल वैद्यों से उन्हें सदा बचना चाहिये।

जगत में वैद्य तीन प्रकार के होते हैं। १-एक प्रकार के वैद्य खरल, शीशी, पुस्तक भूषा वेष आदि से वैद्यपने का आडम्बर लादे रहते हैं, वास्तव में वे मूर्ख वैद्य होते हैं। २-दूसरे प्रकार के वैद्य धनवान और विद्वान लोगों के कहने से डींग हाकने, और अपने को वैद्य का बेटा और पोता बताकर वैद्य होजाते हैं, वास्तव में वे सिद्ध साधित वैद्य नहीं होते हैं। ३ तीसरे प्रकार के वैद्य रोगीके निदान और चिकित्सा, अभिज्ञता, सिद्धि युक्त सुखके दाता प्राण रक्षक होते हैं वास्तव में वैद्यराज ये ही हैं, इसलिये जो बुद्धिमान हैं जिनको अति काल तक जीवित और आरोग्य रहने की इच्छा है वे रोगी युक्ति वाह्य मूर्ख सिद्धि-साधितों की औषधियों से दूर ही रहें, वरना यह समझलें कि——

कुर्यान्निपतितो मूर्ध्नि सशेषं वासवाशनिः।
सशेषं मातुरँ कुर्यान्नत्वज्ञ मत मौषधम् ॥

चरकः

भावार्थ उपरोक्त दूसरे पैरे का है।

आपको आरोग्य और अपने जीवन की विशेष २ बातें जानकर निरोग और सुखी रहना हो, तो "राकेश" आयुर्वेदीय पत्र के ग्राहक बन जाइयेगा, उससे आपके बाल बच्चों को, आपको और आपके मित्रों को सर्वदा स्वास्थ शिक्षा की सहायता मिलेगी।

आवश्यकीय निवेदन

आज हम इतने पराधीन हो गये हैं कि हमें अपनी शारीरिक आरोग्यताके ठीक करने के लिये भी दूसरे देशवासियों के चिकित्सा विज्ञान का आश्रय लेने को मुंह ताकना पड़ता है, हजारों मील दूर के निवासी, हमारे, आहार, बिहार, जल वायु से पूर्ण परिचय न रखने वाले लोग यान्त्रिक शक्ति द्वारा हमारे ही देश की वनस्पति, तथा खनिज पदार्थों का रूप रंग आकार प्रकार बदल कर इस देश में भेजते हैं।

और अपने देश की उन्हीं कौड़ियों की औषधियों को हम रुपयों में मोल लेकर देश का करोड़ों रुपया बाहर भेज रहे हैं। यही नहीं प्रत्युत् विदेशी औषधियों में मिले हुये सुरा, सरेस, चरबी, आदि अनेक अभक्ष्य पदार्थ सेवन करके धर्म भ्रष्ट भी हो रहे हैं, हमें अज्ञानवश यह सब कुछ स्वीकार करते हुये भी, हमारे स्वास्थ्य की जो हीन दशा हो रही है, वह किसी भारतीय बन्धु से छिपी नहीं है, वस्तुतः विदेशी औषधियों से स्वास्थ्य लाभ की कुछ अधिक आशा नहीं की जा सकती, हमारे स्वास्थ्य के लिए तो ऐसी औषधियाँ उपयोगी हो सकती हैं, जैसा कि महर्षि आत्रेय जी कहते हैं।

"यस्यदेशस्ययो जन्तुस्तज्जंतस्यौषधं हितम् ।,,

अर्थात् जिस प्राणी का जन्म जिस देश में हुआ है, उसी देश की औषधियां उस प्राणी के लिये हित कर हो सकती हैं,

यों तो देशी औषधियाँ स्वभावतः ही विदेशी औषधियों की अपेक्षा सस्ती होती हैं. परन्तु इस फार्मेसी ने अधिक से अधिक प्रचार करने के लिये, स्वदेशी शास्त्रानुसार निर्मित औषधियों का मूल्य बहुत ही सस्ता रक्खा है. इतने सस्ते मूल्य पर और कहीं असली औषधियां मिलना कठिन हैं।

इस फार्मेसीकी तैयार की हुई रस भस्म आदि समस्त औषधियाँ विकार रहित भय रहित अपने गुण में चमत्कारी हैं यहाँ हर एक धातु उपधातु आदि का शोधन मारण, प्राचीन शास्त्रोक्त विधि के अनुसार कई अनुभवी वैद्यराजों एवं शास्त्री जी की देख रेख में होता है. और विधिवत बनी रस भस्मादिक समस्त आयुर्वेदीय औषधियां परीक्षा करने के बाद जनता एवं वैद्य बन्धुओं की सेवामें पेश की जाती हैं।

सर्व साधारण का यह विचार है कि ४० वर्ष की अवस्था से पहिले रस या भस्म सेवन करने से हानि होती है, यह बात बिलकुल निर्मूल है. उत्तम प्रकार से बनी हुई योगवाही भस्में छोटे बच्चों से लेकर वृद्धों तक के लिये अमृत समान लाभ दायक हैं।

हमारे यहाँ हमेशा उत्तम और ताजी वनस्पतियां ही काम में लाई जाती हैं सड़ी गला या नीचे दर्जे की कोई भी वनौषधि दवाइयों में नहीं डाली जाती; एवं औषधि निर्माण में पूरी पूरी क्रिया की जाती है।

वैद्यराजो ! यह फार्मेसी अर्से से पं० रूपेन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री जी की अध्यक्षता में पूरी पूरी देख रेख से सफलता पूर्ण संचालित है, और शास्त्री जी के गम्भीर और पुराने अनुभवसे विश्व सेवा में पूर्ण रूपसे कृत कार्य हो रही है।

इस फार्मेसी का उद्देश्य ही

"प्राचीन ग्रन्थों से खोज कर फौरन असर करने वाली चमत्कारी एवं निर्भय औषधियाँ ठीक २ शास्त्रोक्त विधि से बनाकर सस्ते मूल्य में प्रचार करना है,,

आशा है आप एक बार परीक्षा करके पूर्ण संतोष पाकर विदेशी चिकित्सा शैली को मुंह ताड़ उत्तर देने में समर्थ होंगे।

इसी फार्मेसी से—

भारत के अन्य प्राँतों के छोटे बड़े एवं दातव्य औषधालय, फारमेसी, थोक दवाइयां खरीदती है इसके एक विभाग से 'राकेश' नामक आयुर्वेदीय उच्च श्रेणी का मासिक पत्र निकलता है जिस को समस्त आयुर्वेद प्रेमी व वैद्यराजों ने अपनाया है। नमूना मुफ्त मंगाकर देखियेगा।

यही एक ऐसा वृहत औषधि फर्म है जहाँ से अविश्वासियों के सामने उनकी इच्छित वस्तु उनके ही सामने बना कर विश्वास करा दिया जाता है। कृपया पधारिये और दर्शन दे इस फारमेसी को कृतार्थ कीजिये।

बन्धुओ ! सावधान

कुछ लोगों ने हमारी औषधियों की उत्तमता और व्यवहार सदव्यौहार के कारण बढ़ी तरक्कीको देखकर नये २ औषधालय खोल रक्खे हैं उन्होंने नाजायज़ फायदा उठाने के अर्थ बिलकुल मिलती जुलती सूची छपाकर—कहाँ तक कहें, जहां तक हो सकता है हमारे ग्राहकों को धोखा देते हैं इसलिये हम अपने ग्राहक महानुभावों को सावधान करते हैं कि पार्सल लेने से पहिले पार्सल पर "श्रीभगवत आयुर्वेदिक फारमेसी,, वा राकेश कार्यालय का नाम पढ़ कर पार्सल छुड़ाना चाहिये वर्ना धोखा होगा।

नोट—यदि किसी समय आप को उपरोक्त धोखा सन्मुख हो तो वह पार्सल पोष्ट औफिस में डिपाजिट (अमानत) करा कर हमें सूचित कीजियेगा। हम आपके धोखा को शमन कर यथोचित लिख भेजेंगे ताकि आप को धोखे से नुकसान न होगा।

प्रार्थी—मैनेजर

फार्मेसी का कार्यक्रम

इस फार्मेसी में नियमानुसार ६ विभाग खोले गये हैं।

१ वनस्पति संग्रहालय विभाग—इस विभाग में फार्मेसी ने बड़े प्रयत्नसे भारत के उन बड़े व्योपारियों के पते ढूंढ़कर हस्तगत किये हैं, जिनके हाथों अनेक प्रान्तीय वनस्पतियाँ निकल कर प्रतिवर्ष देश देशान्तर को जाती हैं. उन व्योपारियों से ही इस विभाग में उत्तम वनस्पतियां व खनिज द्रव्य मंगाकर संग्रह किये जाते हैं तथा प्रत्येक वस्तु अल्प लाभ लेकर वैद्यों व औषधिफर्मस व धर्मार्थ औषधालयोंको उत्तम रीति से भेजी जाती हैं।

२—औषधि निर्माणशाला विभाग—इस फार्मेसी ने उत्कृष्ट वृहत निर्माणशाला की नीव डाली है, जहाँपर शास्त्राज्ञानुसार विधियों सुसंस्कृत प्रत्येक आयुर्वेदिक विधि विधान युक्त उत्तम व सुलभ विधियों से, रस भस्म, आसवारिष्ट, चूर्ण, गुटिका, अवलेह, तैल, घृत, पाकादि बड़ी २ तादाद में तैयार किये जाते हैं और उपर्युक्त तैयार शुदा औषधियाँ अत्यन्त सूक्ष्म मुनाफा लेकर वैद्यों, धर्मार्थ औषधालयों, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के औषधालयों व दूकानदारों तथा आयुर्वेदीय औषधि पीयूष पान करने वालों को भेजी जाती हैं।

३—धर्मार्थ औषधालय विभाग—इस फार्मेसी ने एक वृहद धर्मार्थ औषधालय खोल रक्खा है जहां पर उत्तमोत्तम औषधि मुफ्त मिलती रहने के कारण काफी तादाद में दैनिक गरीब रोगियों का मुफ्त इलाज होता है। इस धर्मार्थ औषधालय में प्रत्येक शास्त्रीय निर्मित एवं "राकेश" द्वारा वैद्यराजों के अनुभव सिद्ध प्रयोगों का व्योहार करके उनके पूर्ण गुणागुण की परीक्षा की जाती है। और उत्तम सिद्ध होने पर पुनः फार्मेसी में विक्रियार्थ रक्खी जाती हैं इसीसे इस फार्मेसी की समस्त औषधियां परीक्षित होनेके कारण विशेष गुणकारी होती हैं।

४—चिकित्सा विभाग—इस विभाग में फार्मेसी के मालिक पं० रूपेन्द्रनाथजी वैद्य शास्त्रीजी अपने आयुर्वेदीय विशेष अनुभवसे स्थानीय और बाहरके आये धनाढ्य रोगी एवं रईस व साहूकारों की यथेष्ट चिकित्सा करते हैं। बाहर के रोगियों के लिये स्थानादि का सुप्रबन्ध चिकित्सा भवन के पास ही कर दिया जाता है जिसका भाड़ा किराया कुछ नहीं लगता है। पत्र व्योहार से चिकित्सा कराने वालों को अपने रोगकी पूरी डकीकत लिखने पर योग्य सलाह मुफ्त दी जाती है।

५ पेटेन्ट विभाग—इस विभाग में शास्त्रीय व वैद्यराजों के योगों को सुमार्थ औषधालय में रोगियों पर सेवन कराकर इस प्रति पूर्ण गुणकारी साबित होने पर वह औषधियाँ पेटेन्ट की जाती हैं उन औषधियों का मूल्य सर्व साधारण के लाभार्थ थोड़े नफे से निर्धारित किया जाता है।

६ पत्र विभाग—इस विभाग से आयुर्वेदीय उच्चकोटि का मासिक पत्र "सन्देश" निकलता है जिसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन सारगर्भित उत्तमोत्तम लेख एवं अनेक विद्वानों के अनुभव सिद्ध योग कठिन रोगों के सुगम इलाज और आरोग्यता प्राप्त करने के साधारण नियम प्रकाशित होते हैं रोगियों और वैद्यों के रोग सम्बन्धी प्रश्नोत्तर मुफ्त छापे जाते हैं वार्षिक मूल्य १॥) नमूना मुफ्त मंगा सकते हैं।

शल्य चिकित्सा विभाग

इस विभाग में स्थानीय और बाहर के व्रणादि से पीड़ित भगन्दर युक्त रोगियों का आयुर्वेदीय शास्त्रानुकूल विशेषता से अनुभव पूर्ण इलाज किया जाता है। तथा अंग्रेजी औषधियों के बजाय स्वदेशी आयुर्वेदीय लेखन, रोपण, शोषण, स्नेहन इत्यादि औषधियां प्रस्तुत रहती हैं।



कतिपय रोगों पर अनुभूत उपाय

ज्वर

शरीर की गर्मी बढ़ जाना ही ज्वर का मुख्य लक्षण है कभी ज्वर सर्दी लग कर आता है, और कभी बिना सर्दी के ही, शिर दर्द, उल्टी, बदन दुखना, आँखों में जलन आदि ज्वर के साधारण लक्षण हैं। ज्वरकेआरम्भमें लँघनकरना चाहियेअथवा सोंठ, मिर्च काली, तुलसी के पत्र को चाय तथा दूधपर ही रहना चाहिये, अन्न खाना अच्छा नहीं। कब्ज हो तो शुद्ध परंड तैल या इच्छाभेदी रस का जुलाब ले लेना चाहिये।

साधारण ज्वर में महा सुदर्शन चूर्ण त्रिभुवन कीर्तिरस महाज्वरांकुश रस बला बल अनुसार दिन में तीन बार देने से पूर्ण लाभ होता है यदि इन औषधियोंसे ज्वरन हटे तो-अमृतारिष्ट के साथ जयमंगल रस सेवन करना अत्यन्त जरूरी है।

कदाचित ज्वर बहुत जीर्ण हो या बिगड़ गया हो, और रोगी अधिक क्षीण होगया हो और श्वांस कास कफ प्रबलहो तो अमृतारिष्ट व जयमंगलरस प्रातः सायं [illegible], तथा [illegible] तोला सितोपलादि चूर्ण में [illegible] माशे स्वर्ण बसंत मालती मिला दिन में २-३ बार शहद व अदरक रस में मात्रानुसार चटावें भोजन के साथ पिप्पल्यादि घृत खिलावें, दिन में १० बजे के लगभग वृ-चन्दनादि तैल या वृ-लाक्षादि तैल की सर्वांङ्ग में मालिश कर पश्चात भीगे कपडे से समस्त शरीर पोंछ डालना चाहिये, इस क्रिया से ज्वरादि तो क्या क्षय भी शमन होता है।

ब्यादी बुखार—यह बुखार सात, दस या बारह दिन तक रहता है हर समय बुखार रहता है पसीना नहीं आता इसमें कभी २ मोतीझरा भी होता है। इस ज्वर में पसीना लाने वाली या बुखार रोकने वाली दवा न देना चाहिये। पाचन तथा शक्तिवर्धक आषधियां देना योग्य है, स्वर्ण बसंत मालती महासुदर्शन चूर्ण या अभयादि क्वाथ के साथ देना हितकर है शाम को शिवाक्षारपाचन देना योग्य है आहार हलका ले।

सन्निपात—सन्निपातकी दशामें विशेष योग्य वैद्यकी सलाह लेना उचित है सन्निपात भैरवरस, मृतप्राण वाईरस, नारायण रस और कनक सुन्दर रस अभयादिक्वाथ या महा सुदर्शन चूर्ण के साथ देने से लाभ होता है मूर्छितावस्था में योग्य वैद्य सूचिकाभरण रस का प्रयोग करे, समीर पन्नगरस भी हितकारी है।

विषम ज्वर—जो बुखार कभी किसी वक्त, कभी किसी वक्त, कभी कम और कभी ज्यादा आये, तथा छूट २ कर बार २ आवे

हो अगर, उसमें वृ-सर्व ज्वर हर लौह विषम ज्वरों तक लौह चन्दनादि लौह अमृतादि क्वाथ या सुदर्शन चूर्ण के साथ दें। या हमारा स्वदेशी औषधियों से तैयार किया ज्वर संहार पिये।

पुराना बुखार—२१ दिन के बाद बुखार "जीर्ण ज्वर" कहलाता है इसमें तिल्ली और जिगर बढ़ जाते है। शरीर निर्बल होकर खांसी कब्ज आदि उपद्रव भी हो जाते हैं। इसमें स्वर्ण बसंतमालती रत्नगिरि रस वृ-सर्व ज्वर हर लोह सिद्ध मकरध्वज, जयमंगल रस आदि औषधें उपयोगी हैं तथा समस्त शरीर में महा लाक्षादि तैल या वृ चन्दनादि तैल की मालिश करना हितकारी है।

माता शीतला—इस रोगमें प्राय. शीत चिकित्सा उपयोगी होती है सुदर्शन अर्क के साथ १ माशे की मात्रा में खाने वाली हल्दी खिलाना लाभ कारी है भोजन में मूंग पानी दूध भात आदि सात्विकी भोजन देना हितकारी है। अगर कब्ज हो तो शिवाक्षार पाचन देना चाहिये।

इच्छा भेदी रस	१ तो० ॥)
महा सुदर्शन चूर्ण	५ तो० ।)
महाज्वरांकुश रस	१ तो० ॥)
जयमंगल रस	१ तो० १०)
अमृतारिष्ट	१० तो० १।)
स्वर्ण बसंत मालती	१ तो० १०)
वृ-चन्दनादि तैल	५ तो० १)
महा लाक्षादि तैल	५ तो० १)
सन्निपात भैरव रस	१ तो० ५)
कनक सुन्दर रस	१ तो० ॥)
सूचिका भरण रस	१ तो० ५)
सर्वांग पद्मक रस	१ तो० ५)
रत्नगिरि रस	१ तो० १०)
वृ-सर्व ज्वर हर लोह	१ तो० १०)
सि० मकरध्वज	१ तो० ४)

ज्वरातिसार—

अगर बुखार के साथ दस्त आते हो तो महासुदर्शन चूर्ण के साथ आनन्दभैरव रस, पंचामृत पर्पटी रस, सिद्ध प्राणेश्वर रस आदि में कोई एक जो उचित समझी जावे दें, मूंग की दाल चावल आदि हल्की खुराक देना चाहिये।

आनन्दभैरव रस	१ तो० ।)
पंचामृत पर्पटी रस	१ तो० २)
सिद्धप्राणेश्वर रस	१ तो० २)

अजीर्ण, बदहजमी, मन्दाग्नि

भूख न लगना, खट्टी डकारें आना, कच्चे पक्के दस्त या वमन, पेट में दर्द, अफारा गड़गड़ाहट होना आदि अजीर्ण के साधारण लक्षण हैं। हिंग्वाष्टक, शिवाक्षार पाचन लवण भास्कर, शंखवटी, आरोग्य वटी, अग्निकुमार रस, महाकल्याणादि रस, लवण वटी, द्राक्षासव लोहासव या कुमारी आसव मात्रानुसार देने से अजीर्ण आदि उदर व्याधियां शान्त होती है।

हिंग्वाष्टक चूर्ण	१० तो० ॥)
शिवाक्षार पाचन	१० तो० १)
लवणभास्कर चूर्ण	७ तो० ।)

वृ० शंखवटी	१	तो० ॥)
अग्निकुमार रस	१	तो० ।=)
महाकल्याण रस	१	तो० ।)
द्राक्षासव	४०	तो० २)
लोहासव	२०	तो० १।)
कुमारी आसव	२०	तो० १)

अतिसार दस्त—

दस्तों की शुरूआत में अजीर्ण नाशक हुई दवाइयां देना चाहिये, और पुराने दस्तों में वृद्ध गंगाधर चूर्ण अग्निकुमार रस, गृहणी गज केसरी, तथा रस पर्पटी पंचामृत पर्पटी आदि बहुत गुणकारी हैं भोजन में तक्र भात खाना उपयोगी है।

वृहद् गंगाधर चूर्ण	१	तो० ॥)
अग्निकुमार रस	१	तो० ।=)
गृहणी गजकेसरी	१	तो० ५)
रस पर्पटी	१	तो० १)
पंचामृत पर्पटी	१	तो० २)

विशूचिका [हैजा]

बार २ पतले चावलके धावनके से सफेद दस्त उल्टी आना पेट में दर्द पेशाब बन्द होना आदि हैजे के प्रधान लक्षण हैं, हैजे का लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त योग्य वैद्य की सलाह लेनी चाहिये। कर्पूर रस आनन्द भैरव रस, बजूक्षार चूर्ण, महा कल्याद्रि रस, मृत संजीवनी सुरा आदि हैजे की उत्तम औषधियाँ हैं खाना देना रोगकी हालतमें वर्जित है।

कर्पूर रस	१	तो० १)
आनन्दभरव रस	१	तो० ।)
बजूक्षार चूर्ण	१०	तो० १)
महा कल्याद्रि रस	१	तो० २)
मृत संजीवनी सुरा	८०	तो० १२)

संग्रहणी—

अतिसार के पश्चात् अपथ्य करने से संग्रहणी उत्पन्न होती है इस रोग में कभी कच्चे कभी पक्के, कभी पतले, कभी गाढ़े; बदबूदार दस्त होते हैं पेट में गुड़गुड़ाहट हाथ पैरों व चेहरे पर कुछ सूजन और अरुचि होती है।

पंचामृत पर्पटी	१	तो० २)
गृहणी कपूर रस	१	तो० ५)
कुटजवटी	१	तो० ४)

आदि दवाइयां देना हितकारी है भोजन में सिर्फ दूध या छाछ ही देना लाभ करता है।

अम्लपित्त—

लक्षण मुहँ से खट्टा या खारी पानी आना या उल्टी होना छाती में जलन खट्टी खारी गर्म डकार आना, भूख न लगना हरे पीले दस्त आना।

चिकित्सा—दस्त साफ न आता हो तो रोजाना अविपत्तिकर चूर्ण खाते रहें लीला विलास रस, मृतसेखर रस, स्वर्ण पर्पटी या भक्त बटी आदिमेंसे कोई एक दवा आंवले के मुरब्बे या हरीत की अवलेह के साथ सेवन करे।

द्राक्षासव या संशमनी बटी भी विशेष हितकारी है।

लीलाविलास रस	१	तो० १)

संशमनी वटी	१ तो० १)
मृतशेषर रस	१ तो० ४)
स्वर्ण पर्पटी	१ तो० १०)

कृमि—

अनेक बार बच्चों के पेट में कृमि हो जाते हैं बाज - मनुष्यों के भी पेट में कृमि उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण जी मिचलाना भूख न लगना पेटमें दर्द होना बुखार शिर दर्द अरुचि आदि होना आदि लक्षण होते हैं इस रोग में कृमि मुद्गर रस क्रिमि कुठार रस अमृतावलेह आदि में से कोई एक दवा सेवन करावें या विडंग त्रिफला चूर्ण का प्रयोग करें कृमिमर्दन रस भी लाभ दायक है।

अर्श—बवासीर

गुदामें खाज और जलन होती है कब्ज रहता है [illegible] है और [illegible] होते हैं और मस्से अंकुर [illegible] होते हैं यह बड़ा ही दुखदायी रोग है

इस रोग में नवनीत रस, अग्निमुख लोह, [illegible] अर्शकुठार रस, शूरण मोदक, शोफरलोह आदि में से कोई एक दवा सेवन करावें। मस्से नाशनार्थ हमारा अर्शहर तैल लगाने से अर्श निर्मूल होगा। अगर खून अधिक आता हो तो बोल पर्पटी, बाज - हलेम रस सेवन करावें तथा काशीसादि प्रलेप लगावें भोजन में जिमीकन्द व छाछ अत्यन्त उपयोगी है।

कृमि मुद्गर रस	१ तो० ॥)
कृमिकुठार रस	१ तो० ॥।)
अमृतादि अवलेह	४० तो० २)
कीटादरस	१ तो० ॥)
अग्निमुख लोह	१ तो० १)
अर्शकुठार रस	१ तो० ॥।)
शूरण मोदक	१० तो० २॥)
शाँकर लौह	१ तो० ५)
बोलपर्पटी रस	१ तो० २)
अर्शहर तैल (पेटेन्ट)	१० तो० ३)

खाँसी

साधारण खांसी में खाँसी की गोली मुँह में रखकर चूसे और दिन में दो बार लक्ष्मीविलास या मृगेन्द्रलाल की अवलेह सेवन करें, कफ न निकलता हो तो अग्नि रस, अपामार्ग क्षार [illegible] जवाखार का सेवन करे तथा कण्टकारी अवलेह काश कासारि [illegible] सितोपलादि चूर्ण, एलादि चूर्ण, आदि औषधियाँ उपयोगी है भोजन में दाल तथा खुश्क रोटी आदि में रक्खे।

हिचकी

हिचकी वदहजमी और सर्दी आदि कारणों से पैदा हो जाती है पहिले कारण को दूर करें फिर हरीतकी अवलेह, ताम्र भस्म या पिप्पलयादि लौह सेवन करें। खुराक स्निग्ध किंचित उष्ण और हलकी खावे।

भृङ्गराज की अवलेह	४० तो० २)

अग्नि रस	१ तो० ॥)
अपामार्ग क्षार	१ तो० ।)
जवाक्षार	१ तो० ।)
खदिरादि गुटिका	१ तो० ॥)
वासावलेह	४० तो० २)
रसेन्द्रवटी	१ तो० १।)
एलादि वटी	१ तो० ।)

क्षय–उरक्षत

शरीर में बारीक बुखार रहना, प्रातः काल पसीना आना, खाँसी, अरुचि, कमजोरी दिनों दिन शरीर का दुबला होते जाना तथा कफ के साथ खून आना यक्ष्मा (क्षयी) रोग के मुख्य लक्षण हैं उरक्षत में मुंह से खून आता है।

स्वर्ण वसन्त मालती, स्वर्ण पर्पटी, सिद्ध मकरध्वज, हेमाभ्र, रससिंदूर, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, द्राक्षासव सितोपलादि चूर्ण इन में से कोई एक जो मुनासिब समझे खिलावें शरीर पर वृ० चन्दनादि तैल लाक्षादि तैल या लक्ष्मीविलास तैल की मालिश करें खुली हवा में रहें दूध भात आदि हल्की खुराक खाये।

रस सिंदूर	१ तो० १।)
अभ्रक भस्म	१ तो० २)
प्रवाल भस्म	१ तो० ॥)
लक्ष्मीविलास तैल	२ तो० १)

रक्त पित्त

आंख, कान, नाक, मुंह, गुदा आदि से खून आना, रक्त पित्त का मुख्य लक्षण है, इसके साथ में कमजोरी खांसी और ज्वर आदि उपद्रव भी होते हैं, खून बन्द करने के वास्ते बोल पर्पटी रस और च्यवन प्राशावलेह दें इसके बाद रक्त पित्त कुठार रस अभ्रक भस्म, हरिन शृंग भस्म, वासावलेह व क्षय की दवायें सेवन करायें खुली हवा में रहें, और सैर करें खुराक हल्की व पौष्टिक खायें।

बोल पर्पटी रस १ तो० का	२)
च्यवन प्राशावलेह ४० तोला	२)
रक्त पित्तकुठार रस १ तोला	४)
अभ्रक भस्म १ तोला	२)
हरिन शृंग भस्म १ तोला	।)
वासावलेह ४० तोला	२)

हृदयरोग

दौल दिली, दिल घबराना, दिल का अधिक तेजी से धड़कना; बोलने, जोर की आवाज सुनने, खाँसी आने या करवट लेने से छाती में दर्द होना सुस्ती और निर्बलता आदि इस रोग के साधारण लक्षण हैं।

ताम्रपर्पटी, हृदयार्णव रस, हृदरोग रसायन अर्जुनाभ्रादि, इसकी मुख्य दवायें हैं, इनमें से १ व २ दवा च्यवन प्राशावलेह अथवा अर्जुनारिष्ट के साथ सेवन करें भोजन लघु तथा पौष्टिक, खुली हवा में रहें।

ताम्र पर्पटी १ तोला का	४)
हृदयार्णव रस १ तोला	५)
हृदरोग रसायन (पेटेन्ट) २० तोला	२॥)
अर्जुनारिष्ट २० तोला	१।)

उदररोग और गुल्म

जलंधर, तिल्ली, जिगर आदि और कितने ही अन्य रोग उदर रोग के अन्तर्गत आ जाते हैं पेट चाहे जिस मर्म स्थान को उदर पीड़ा से दुखता हो, उसे उदर रोग कहते हैं।

पेट में वायु का गोला सा मालूम हो तो उसे गुल्म कहते हैं, लोह भस्म यकृत प्लीहारि लोह, शोथोदरारि लोह, महामृत्युञ्जय लोह, वज्रक्षार चूर्ण, इन्द्रायणी चूर्ण महा कल्याद्य रस, कुमारी आसव त्रैलोक्याडम्बर रस आदि औषधि उपयोगी हैं गुल्म के लिये, लवण वटी गुल्म काला नल रस, शंख वटी पूरी मात्रा में खावे भारी वायु करने वाला आहार न खाये थोड़ा कसरत भी करते रहें।

यकृत प्लीहारि (पेटेन्ट) १ तोला	३)
शोथोदरारि लोह १ तोला	१)
महामृत्युञ्जय लोह १ तोला	४)
इन्द्रायणी चूर्ण ५ तोला	।)
महा कल्याद्य रस १ तोला	२)
कुमारी आसव २० तोला	१।)
गुल्म काला नल रस १ तोला	१)

पाँडु, कामला, हलीमक

पाँडु में नाखून, आँख और चेहरा, पीला हो जाता है जीर्ण ज्वर, खाँसी, कमजोरी अरुचि भूख न लगना; आदि उपद्रव होते हैं कामला में सब चीजें पीला दिखाई देती हैं

इस रोग पर—लोहासव प्राणवल्लभ रस, मंडूर भस्म शोथोदरारि रस आदि दवाइयां उपयोगी हैं कुमारी आसव सेवन करना भी अत्युपयोगी है। साफ हवा में रहना हल्का भोजन करना, थोड़ी कसरत भी करना चाहिये।

बच्चों का शरीर मिट्टी खाने के कारण पीला पड़ गया हो तो दिन में दो बार कुमार्यासव, तथा मृत्तिका विरेचन देना चाहिये।

मंडूर भस्म १ तोला	॥)
लोहासव २० तोला	१।)

मूर्च्छा

मूर्छा (बेहोशी) के लिये सिद्धमकरध्वज च्यवनप्राशावलेह, आदि दिमाग को ताकत देने वाला एवं वायु नाशक औषधियां दें, बेहोशी के समय काली मिर्च का कपड़ छन चूर्ण नाक में फूंकने से चेतन्यता आ जाती है इस रोग में हल्की पौष्टिक वायु नाशक खुराक खाना चाहिये।

सारस्वतारिष्ट—ब्रह्मी घृत देना भी हितकारी है।

सारस्वतारिष्ट	१ सेर का ५)
ब्रह्मी घृत	१० तोला २॥)

बात व्याधि, पक्षाघात, लकवा,

बात व्याधि (पक्षाघात, लकवा, गठिया आदि) आधे शरीर का बेकार हो जाना।

गांठों में दर्द होना शरीर का जकड़ जाना, कभी मुंह का टेढ़ा तिरछा हो जाना आदि रोग बात व्याधि के अन्तर्गत हैं।

वात व्याधि में महा योगराज गुग्गुल सप्तधातु मिश्रित, वात विध्वंस रस, एकांग वीर रस, समीरपन्नग रस सिद्ध मकरध्वज आदि में से कोई एक दवा महा रास्नादि क्वाथ के साथ सेवन करावें, तथा महा नारायण तैल की सर्वाङ्ग में मालिश करावें।

आलस्य के कारण वात व्याधि हुई हो तो केशरादि रस या एरण्डादि घटी के साथ मंजिष्ठादि क्वाथ सेवन करे, कब्ज हो तो रात्रि को दूध में बलादि तैल पिये खुराक हल्की स्निग्ध तथा वायु नाशक खावें नमक मिर्च खटाई से परहेज

महायोगराज गुग्गुल सप्तधातु मिश्रित	१ तो० ८)
वात विध्वंस रस	१ तो० ५)
एकांग वीर रस	१ तो० ४)
समीर पन्नग रस	१ तो० ३)
महा नारायण तैल	५ तो० १)

आम वात गठिया

गांठों में दर्द और सूजन हो जाना इसका प्रधान लक्षण हैं इसमें योगराज गुग्गुल सिंहनाद गु० सोंठ और गोखुरू के काढे के साथ दें। तथा वात व्याधि की अन्य औषधें सेवन करावे।

दातरक्त

इस रोग में हाथ पैरों में अत्यन्त दाह ज्वर और शरीर में चकते हो जाते हैं, पहिले पहिल हाथ पैरों की अंगुलियों नाक, कान लिंग में प्रकट होता है घाव होकर रक्त बहने लगता है।

इस रोग में—रात को दूध में बलादि तैल पियें एवं मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ कैशोर गुग्गुल अरण्डादि तक सेवन करें भोजन हल्का करें।

बलादि तैल	५ तो० ॥)
मंजिष्ठादि क्वाथ	४० तो० ।)
कैशोर गुग्गुल	१ तो० ॥)

उन्माद (पागलपन)

उन्माद निग्रहण रस, उन्माद गजकेसरी रस मोती भस्म प्रवाल भस्म ब्राह्मी घृत के साथ सेवन करें सारस्वतारिष्ट पिलावें नाड़ी शोधन प्रयोग अधिक करना हो तो वातफलादि चूर्ण का क्वाथ बनाकर उसके साथ भोजन स्वल्प तथा हल्का दें।

उन्माद गजकेसरी रस	१ तो० १)
मोती भस्म	१ तो० ३०)
प्रवाल भस्म	१ तो० ॥)
ब्राह्मी घृत	१० तो० २॥)
सारस्वतारिष्ट	१ सेर ५)
वातफलादि चूर्ण	५ तो० ॥)

अपस्मार (मृगी)

एका एक हाथ पैरों का तन जाना, मुंह से झाग आना, बेहोशी, दांत कट कटाना आदि मृगी के मुख्य लक्षण हैं, दौरे में मुंह से झाग आते और कई बार हाथ पैर भी विकल होता है; कई घोर निद्रा होती है, शिशुओं में भी मृगी जैसी लक्षण होते हैं, परन्तु मुंह से झाग नहीं आते।

हिष्टिरियामें भी उन्माद नाशक औषधि लाभ पहुंचाती है, विशेषतः दिमाग़ को ताकत देने वाली दवाइयां देनी चाहिये,

सिद्ध मकरध्वजरस, चिन्तामणि चतुरमुख रस, वातारिरस, यशद भस्म, चांदी भस्म आदि औषधियों में १-२ औषधि ब्राह्मी घृत या च्यवनप्राश दीर्घ काल तक दें, प्रथम रोगों के कारणों को नाश करना चाहिये, भोजनपौष्टिक तथा हल्का देना चाहिये,

चिन्तामणि चतुरमुख रस १ तोला	१०)
वातारि रस १ तो०	॥)
यशद भस्म १ तो०	॥)
चाँदी भस्म १ तोला	२॥)

पेशाब के रोग ।

मूत्राघात, पथरी रोग, पेशाब के साथ खून आना, नींद में पेशाब होजाना आदि पेशाब के अनेक रोग होजाते हैं,

पेशाब के रोगों में वंगभस्म, तथा चन्द्रप्रभा अत्यन्त उपयोगी हैं, सिद्ध मकरध्वज, संशमनी अग्नितुंडी, अश्वगंधादि चूर्ण, वसंत कुसमाकर रस आदि औषधियें सेवन करना चाहिये,

पेशाब थोड़ा या तकलीफ से होता हो तो; छोटे गोखरू के हिम कषाय में शोरा डालकर पिलायें दस्त साफ आने के वास्ते शिवाक्षार पाचन दें ।

तैल लाल मिर्च आदि गरम पदार्थों से परहेज करें चावल इत्यादि हल्के पौष्टिक भोजन करें ।

वंग भस्म १ तोला	१)
चन्द्रप्रभा वटी १ तो०	१)
अग्नितुंडी वटी १ तो०	॥)
अश्वगंधादि चूर्ण ५ तो०	।=)
वसंतकुसमाकर रस १ तो०	१५)
शिवाक्षार पाचन ५ तो०	।)

सुजाक, बहुमूत्र, मधुमेह

पेशाब में जलन होना, मवाद जाना, पेशाब का रंग लाल होना आदि सुजाक के लक्षण हैं,

बहु मूत्र में पेशाब बार २ आता है, मधुमेह में मूत्र के साथ शक्कर आती है, प्यास की अधिकता, तथा शरीर दुबला होजाता है,

इस रोग में वसन्त कुसमाकर रस, चन्द्रप्रभा गुटिका, मूत्र कृच्छ्रांतक इनमें से किसी एक को च्यवनप्राश के साथ दें, आहार सादा तथा पौष्टिक खाना चाहिये,

वसंत कुसमाकर रस १ तो०	१५)
चन्द्रप्रभा गुटिका १ तो०	१)
मूत्र कृच्छ्रांतक १ तो०	१॥)
मूत्र कृच्छ्र रसायन (पेटेन्ट) शीशी	२॥)

उपदंश (आतशक)

यह रोग प्रायः कुत्सित, प्रसंग से उत्पन्न होता है इन्द्री के ऊपर घाव और फुन्सियां होजाती हैं इसका यथेष्ट इलाज न करने से कुछ अर्से बाद शरीर में जगह २ फोड़े फुन्सी, गठिया, रक्त बिकार के

अन्य रोग होजाते हैं, इस रोग में मंजिष्टा दि क्वाथ के साथ केसरादि या उपदंशारि वटी सेवन करे उपदंश कुठार कैशोर गुग्गल, तथा हमारा (खदिरारिष्ट) भी उपयोगी है, खुराक में घी और वेसन की रोटी तथा दूध चावल खाना चाहिये नमक तेल खटाई लाल मिर्च से परहेज रक्खें।

सारिवाद्यारिष्ट, तथा रक्त शोधक स्वदेशी सालसा भी उपयोगी है,

केशरादि वटी १ तो०	२)
उपदंशारि वटी (पेटेन्ट) १ तो०	१)
उपदंश कुठार रस १ तो०	२)
कैशोर गुग्गल १ तो०	॥)
खदिरारिष्ट १ सेर	४)
सारिवाद्यरिष्ट १ सेर	४)
(पेटेन्ट) रक्तशोधक स्वदेशी सालसा	२) शीशी

कुष्ट त्वगरोग

कुष्ट अनेक प्रकार का होता है, सूखी यातर खुजली में भी तथा दाद और त्वचा रोगों में कुष्ट के समान ही चिकित्सा करना चाहिये,

इस रोग में वृ० मंजिष्टादि क्वाथके साथ माणिक्य रस, अरोग्य वर्द्धिनी वटी तथा हरताल भस्म सेवन करना विशेष उपयोगी है दवा देने से प्रथम विरेचन देना चाहिये;

खुजली, दाद, खाज में मंजिष्टादि क्वाथ के साथ वा खदिरारिष्ट के साथ गंधक रसायन सेवन करना चाहिये, दाद पर हमारी दद्रु घ्न मलहम लगावें, शरीर को भली भांति स्वच्छ रक्खें, भोजन में सिर्फ चने की रोटी तथा घी खावें, महामरिचादि तेल की मालिश भी करें

माणिक्य रस १ तो०	२)
आरोग्यवर्द्धिनी वटी १ तो०	१)
हरताल भस्म १ तो०	२)
गंधक रसायन १ तो०	॥)
दद्रु घ्न मलहम (पेटेन्ट) २॥ तो०	१)
महामरचादि तेल ५ तो०	॥)

विसप

इस रोग के शमनार्थ थोड़ी मात्रा में मंजिष्टादि क्वाथ या रक्तशोधक स्वदेशी सालसा सेवन करना चाहिये तथा दशांग लेप लगाना चाहिये वृहत सोमराजी तैल को लगाना उपयोगी है,

दशांग लेप १० तोला	॥)

शीत पित्त

यह रोग प्रायः पाचन क्रियाके विकार से होता है शरीर पर लाल २ चकत्ते हो जाते हैं, और तीव्र खुजली होती है, इस रोग में पाचन औषधियां देनी चाहिये, शिवाक्षार पाचन; नरायण चूर्ण, संशमनी वटी आदि दवाइयाँ अच्छा काम करती हैं प्रथम इच्छा भेदी रस से जुलाब ले लेना चाहिये, शरीर पर गुलाब या गेरु मिट्टी मलनी चाहिये, भोजन सदा हलका करना चाहिये,

शिवाक्षार पाचन १० तो०	१)

नारायण चूर्ण ५ तो० ।-)
संशमनी वटी १ तो० १)
इच्छाभेदी रस १ तो० ॥)

आँख के रोग ।

हर प्रकारकी आई हुई आंख के वास्ते नेत्र बिन्दु डालने से किसी दोष से भी आई हुई आंख ठीक होजाती है अगर कुछ धुन्ध वगैरह की शिकायत जान पड़े तो चन्द्रोदय वर्ति, मुक्तादि महा अंजन, कृष्ण-सर्पवसाञ्जन लगाना उपयोगी है ।

अगर माड़ा फूली (शुक्र रोग) की शिकायत जानी जावे तो दन्तवर्ती, भगवत नेत्राँजन तथा कृष्णसर्पवसा नेत्र में अँजन करना लाभदायक है.

त्रिफला चूर्ण के साथ लोह भस्म देना उपयोगी है,

चन्द्रोदयवर्ति १ तोला ॥)
मुक्तादि महा अन्जन १ तो० ५)
कृष्णा सर्पवसांजन १ तो- ५)
दन्तवर्ती १ तो० २)
भगवत नेत्रांजन (पेटेन्ट) १ तो० १)
कृष्ण सर्प वसा १ तो० ४)
यशद भस्म १ तो० ॥)

कान के रोग

कान के बहरेपन के लिये इन्दुवटी, तथा सरिवादि खाना. और कान के पीव के वास्ते तथा दर्द के वास्ते अपामार्ग तैल कान में डालना उपयोगी है, अगर किसी कारण से विशेष कष्ट हो तो पत्र द्वारा पूछियेगा ।

इन्दु वटी १ तोला ४)
सारिवादि वटी १ तो० ॥)
अपामार्ग तेल १ तोला ॥)

पीनस

नाक से पीव या दुर्गन्धि आती हो और श्वास लेने में कष्ट होता हो शिर में दर्द होता हो तो नाक में षड बिन्दु तैल या व्याघ्री तैल डालना चाहिये, स्वर्ण बसंत मालती, मकरध्वज प्रवाल भस्म आदि दवाइयाँ च्यवन प्राश के साथ खानी चाहिये और दूध आदि पौष्टिक पदार्थ खाना चाहिये ।

षडविन्दु तैल फी तोला ।)
व्याघ्री तैल तोला १ तो० १)

स्त्रियों के रोग

प्रदर

स्त्रियों के गुप्त भाग से सफेद या लाल पानी जाना, कमर शिर में दर्द होना ज्वर तथा निर्बलता इस रोग के मुख्य लक्षण हैं, इस रोग में प्रदरारि लौह सोमनाथ रस, यशद भस्म, प्रवालभस्म, स्वर्ण बसंत मालती, लोहभस्म स्वर्ण मालिक भस्म, आदि दवाइयां च्यवनप्राश के साथ देने से विशेष लाभ होताहै, भोजन हल्का तथा पौष्टिक खाना चाहिये, अशोकारिष्ट के साथ पुष्यानुग चूर्ण देना विशेष गुण-कारी है ।

प्रदरारि लौह १ तो० २)
यशद भस्म १ तो० ॥)

स्वर्ण माक्षिक भस्म १ ती० ॥)
अशोकारिष्ट २० तो० १)
पुष्पानुग चूर्ण १० ती० ॥।)

ऋतु दोष

स्त्रियों को मासिक धर्म ठीक समय पर न होना, या पीड़ा के साथ होना, अधिक या कम होना, अथवा बिलकुल न होना, आदि रोगों के लिये ऋतु दोष सुधारक गुटिका चन्द्र प्रभा वटी, रजः प्रवर्तनी वटी नष्ट पुष्पांतक रससे योगराज गुग्गुल देना उपयोगी है भोजन में दुग्ध भात या मत्स्य मांस रस दें।

नष्ट पुष्पांतक रस १ ती० २)
ऋतु दोष सुधारक गुटिका (पेटेन्ट) १ ती० २)
चन्द्रप्रभा वटी १ ती० १)
रजः प्रवर्तनी वटी १ तो ॥)
योगराज गुग्गुल १ ती० १)

गर्भपात और गर्भिणी के रोग

गर्भपात के लिये गर्भ पालन रस, और गर्भिणी के दस्त, बुखार उल्टी आदि रोगों के लिये गर्भ पीयूष वल्लीरस, गर्भ विनोद रस, बसंतमालती और संशमनी वटी आदि उपयोगी हैं।

गर्भपाल रस १ ती० २)
गर्भ पीयूष वल्लीरस २॥) ती०
गर्भ विनोद रस २)

सूतिका रोग

बच्चा पैदा होने के बाद बुखार, दस्त, उल्टी दौरा आदि रोग पैदा हो जांय तो देवदार्वादि क्वाथ देना चाहिये, बुखार में रत्न गिरी रस, दस्तों में पंचामृतपर्पटी दौरा के वास्ते लक्ष्मी नारायणरस देना चाहिये, प्रसूत रोग में वृ० सूतिका विनोद रस प्रताप लंकेश्वर रस और आरोग्य वर्धिनी आदि भी उपयोगी है, तथा दशमूलारिष्ट भी देना उपयोगी है प्रसूता को अगर कोई रोग न हो तो सौभाग्य सुंठी खिलाना चाहिये।

भोजन लघुपाची तथा शक्ति वर्द्धक

देवदार्वादि क्वाथ १० ती० ॥)
रत्नगिरी रस १ ती० १०)
पंचामृत पर्पटी १ ती० ४)
लक्ष्मीनारायण रस १ ती० २॥)
वृ० सूतिका विनोद रस १ ती० २)
प्रताप लंकेश्वर रस १ ती० ॥)
दशमूलारिष्ट २० ती० १॥)
सौभाग्यशुंठी १ सेर ४)

वंध्यत्व (बांझपन)

प्रथम रोग के कारणों को दूर करें पश्चात् बांझपन के नष्ट करने के वास्ते फल घृत, चन्द्रप्रभा महा योगराज गूगल मंजिष्ठादि क्वाथ आदि दवाइयाँ देना उत्तम है, विशेष पत्र द्वारा पूर्ण विवरण लिख कर भेजिये उचित सम्मति दी जावेगी।

फलघृत ४० ती० ५)
मंजिष्ठादि क्वाथ ४० ती० १।)

बाल रोग

बच्चों के बुखार, उल्टी, दस्त, कब्ज खांसी गला बैठना आदि रोगों के लिये

बाल पाल घुटी पिलाना चाहिये, बच्चों को मोटा ताजा मजबूत बनाने के वास्ते शिशुरक्षक रसायन सेवन करावें तथा बाल चातुर्भद्र, अतिविषादि गुटिका, यवक्षणादि चूर्ण इत्यादि औषधियें भी उपयोगी हैं।

बालपाल (पेटेन्ट) १ शी० ॥)
शिशुरक्षक रसायन (पेटेन्ट) १ शी० ॥)
अति विषादि गुटिका १ ते० ॥)
यवक्षारादि चूर्ण ५ ते० ॥)

डुब्बा रोग

यह रोग बच्चों को बार २ हो जाता है इस रोगमें दस्त नहीं आता, पेट फूलता है, खांसी आदि उपद्रव होते हैं, बच्चों को हमेशा सर्दी से बचाये रखना चाहिये, इस रोग में इन्द्र सुधा १-१ बूंद माँ के दूध में दें तथा वासावलेह, द्राक्षासव देवें पूर्ण लाभ होगा।

वासावलेह ४० ते० २)
इन्द्र सुधा (पेटेन्ट) १ शी० ॥)
द्राक्षासव ४० ते० २)

सुखटी रोग पर

इस रोग में ग्रसित बच्चा बिलकुल सूख जाता है किंचित ज्वर भी रहता है इस रोग के दमनार्थ अरविंदासव, व बाल पाल सेवन करावें तथा सर्वांग में बाल लाक्षादि तैल की मालिश करें पूर्ण लाभ होगा। साथ ही चिकित्सा के सुखा रोग की जड़ी गले में पहिना देना चाहिये।

नोट—यह सूखा रोगकी जड़ी हर एक सज्जनको मुफ्त भेजीजाती है सेवन विधि साथ ही होती है।

अरविंदासव २० ते० १॥)
बालपाल [पेटेन्ट] १ शी० ॥)
बाल लाक्षादि तैल ५ ते० १)
सूखा रोग की जड़ी मुफ्त दी जाती है।

धातु क्षीणता तथा नपुंसकता

यह दुखदाई व्याधि अधिकाँशमें भारतीय नवयुवकों के ऊपर अपना अड्डा जमा गई है मनुष्य जीवित अवस्था में मुर्दा समान है। इस दुखदाई रोग को दमन करने के वास्ते स्वर्ण घटित मकरध्वज रस सिंदूर, लोह भस्म, वंग भस्म स्वर्ण राज वँगेश्वर, अभ्रक भस्म, कामनी मदभंजनरस बृहत्पूर्णचन्द्र रस आदि दवाइयों में से एक या दो दवा च्यवनप्राशावलेह के साथ खाना चाहिये।

पेशाब के साथ धातु जाने और स्वप्न दोषादि के लिये यह सभी दवाइयाँ उपयोगी हैं, इनके अतिरिक्त चन्द्रप्रभा गुटिका शतावरी चूर्ण, धातुपौष्टिक मकरध्वज मकरध्वज घड़ी, मदनानन्द मोदक, संशमनी आदि दवाइयां भी उपयोगी हैं, वीर्य स्तम्भन के लिये आकारकर भादि शुक्रबल्लभरस, कामिनी विद्रावण रस और वीर्य स्तम्भन गुटिका उपयोगी हैं

अगर हस्तमैथुनादि कुटेवों से उपस्थ इन्द्रिय में शैथिल्यता हो गई हो तो बृहत कामेश्वर तिला लगाइये। तथा कामजागृत

पोटली से सेक करियेगा। किसी भी प्रकार की हुई ध्वजभंग, क्लीवता, नसों की कमजोरी दूर होकर हताश भी मनुष्य रति केलिकला में पूर्ण कामयाब होता है।

नं० १ स्वर्ण घटित मकरध्वज १ तो० २०)
नं० २ स्व० घ० मकरध्वज १ तो० ६)
नं० ३ स्वर्ण घटित मकरध्वज १ तो० ४)
रस सिंदूर १ तो० १)
लोह भस्म १ तो० ॥)
वंग भस्म १ तो० ॥)
स्वर्ण वंग १ तो० २)
अभ्रक भस्म १ तो० २)
कामिनी मद भंजन रस १ तो० १)
धातु पौष्टिक मकरध्वज वटी (पेटेन्ट) ४० खुराक ५)
मदनानन्द मोदक ४० तो० ५)
कामिनी विद्रावण रस १ तो० २)
वृहत कामेश्वर तिला (पेटेन्ट) १ तो २)
काम जाग्रत पोटली ५ तो० २)

नोट—पौष्टिक औषधियों के सेवन करने से रोगी को पहिले मृदुरेचन लेकर कोष्ठ शुद्धि कर लेना चाहिये।

सूचना

१—दवा सेवन करने से प्रथम रोग का निर्णय अवश्य करा लेना चाहिये, रोग निर्णय होने के पश्चात दवा सेवन करने से अवश्य लाभ होता है।

२—थोड़ी मात्रा से अगर किसी औषधि के खाने से गुण न होता हो तो दवा की मात्रा धीरे २ बढ़ा दें, किन्तु अन्तिम परिमाण से अधिक न दें।

३—मीठा तेलिया वाली दवाइयाँ, हृदय रोग वालों गर्भिणी, अत्यन्तक्षीण और छोटे बच्चों को न देना चाहिये।

४—जमालगोटे का जुल्लाब छोटे बालक अति वृद्ध. गर्भिणी, अत्यन्तक्षीण, सँग्रहणी व अतिसार वाले रोगी को न देना चाहिये।

५—अफीम वाली दवाइयाँ बहुत छोटे बच्चों को तथा कब्ज और अफारे वाले रोगी को न देना चाहिये।

ऊपर जिन औषधियों का वर्णन है वह सब हमारी फार्मेसी से मिल सकेंगी, हर औषधि का मूल्य रोग व्यवस्था के साथ ही साथ दिया गया है, कदाचित इसमें किसी औषधि का मूल्य न लिखा गया हो तो, पत्र द्वारा मालूम करने का कष्ट उठाइयेगा क्योंकि हमारे यहां इस सूचीपत्र के अतिरिक्त और बहुत सी दवाइयाँ भी हर समय तैय्यार रहती हैं।

नोट—अपने रोग का पूरा हाल लिख भेजियेगा आपको रोग दूर करने की उचित सलाह मुफ्त दी जायगी।

निवेदक—जनरल मैनेजर

रजिस्टर्ड

श्री भगवत आयुर्वेदिक फारमेसी बरालोकपुर

इटावा यू० पी०

की

खैरीज भावकी सूचीकी तृतीया वृत्ति

का एक खण्ड

१—अहिफेनासव (भै० र०) हैज़ा, कै, दस्त और अतीसार की अनुभूति औषधि है ५ तोला का मू० १॥) है।

२—अशोकारिष्ट (भै० र०) समस्त प्रदर नाशक ऋतु दोष से हुई खराबियों को समूल नष्ट करने की प्रसिद्ध औषधि है। २० तोला का १)

३—अरविंदासव (भै० र०) बच्चों के सर्व रोगों की एक मात्र अव्यर्थ महौषधि है २० तोला का १॥)

४—अश्वगंधारिष्ट (भै० र०) मस्तक की कमज़ोरी को दूर करके बुद्धि को बढ़ा कर शरीर को हृष्ट पुष्ट करता है १-१तोला गो दुग्ध या जल में पिलाना चाहिये, मू० २० तोला का १॥)

५—अर्जुनारिष्ट (भै० र०) हृदय रोग की एक मात्र परमौषधि है मात्रा १ से २॥ तोला तक मू० २० तोला १।)

६—अमृतारिष्ट (भै० र०) बसे हुये जीर्णज्वर तथा समस्त फसली ज्वरों पर रामबाण औषधि है २० तोला का १।)

७—अशोकघृत (भै० र०) समस्त स्त्री रोगों पर १ तोला० दुग्ध गर्म में डाल कर पिलाना चाहिये १० तो० १॥)

८—अर्जुनघृत (भै० र०) हृदरोग के लिये इसके समान दूसरी कल्याणकारी औषधि नहीं है १० तो० १।)

९—अगस्त हरीतकी अवलेह (शार्ङ्गधर) क्षय, जीर्णज्वर, खांसी, मन्दाग्नि, संग्रहणी में देना हितकारी है मात्रा १ से २ तोला तक मू० ४० तोले का १॥)

१०—अश्वचोली रस (यो० चि०) समस्त उदररोग तथा मलज्वरादि पर वशेष रोग पर सिद्धौषधि है मात्रा २ से४ रत्ती गर्म जल से १ तोला का ॥)

११—अर्शकुठार रस (र० रत्ना०) सर्व प्रकार की बवासीर को नष्ट करने मे अव्यर्थ० औषधि है मात्रा ३ से ४ रत्ती तक मू० १ तो० ॥)

१२—अम्लपित्तान्तक लौह (भै० र०) हृदय की जलन, भारीपन, कड़ी व गर्म

डकारों का आना आदि में इसके सेवन से पूर्ण आराम होता है मात्रा २ से ४ रत्ती अनुपान शहद घृत मू० १ तो० का १)

१२ अम्लपित्तान्तकरस (भै० र०) इस के गुण भी अम्लपित्तान्तक लौह के समान ही है, मू० फी तो० ।॥)

१४—अमृत भल्लातकाबलेह (भै०र०) रक्त दोष, गलित कुष्ट तथा उदर रोग, बवासीर को दूर कर शरीर को कान्ति मय बनाता है मू० ४० तोला का ३) मात्रा १से २ तोला तक ।

१५—अभया गुग्गुल (भै० र०) समस्त मस्तक सम्बन्धी रोगों पर रामबाण औषधि है मू० ।) तोला

१६—अभयनृसिंह रस(भै०र०)किसी भी दोष से उत्पन्न अतिसार, संग्रहणी की सिद्ध औषधि है मात्रा २ से ४ रत्ती शहद के साथ १ तोला का मू० २)

१७—अगस्ति सूतराज (योग रस) आमवात, गुदभ्रँश, आदि में देना चाहिये १ तोला का मूल्य १॥)

१८—अग्नि तुण्डी रस (शार्ङ्गधर) अजीर्ण व सम्पूर्ण उदर रोग जैसे मंदाग्नि इत्यादि पर शीघ्र गुण देता है। मात्रा ३ से छः रत्ती तक मूल्य १ तो० का।)

१९—अग्निकुमार रस (भै० र०) हैजा, संग्रहणी, अतिसार, बवासीर आदि रोगों की अकसीर दवा है मात्रा ४ से ८ रत्ती पानी के साथ मूल्य १ तोला का।=)

२०—अग्नि मुख लौह (भै० र०) तिल्ली, यकृत वृद्धि को नष्ट कर पाचन शक्ति तीव्र हो जाती है मात्रा ४ से ८ रत्ती फी तोला १)

२१—अभ्रक भस्म १००० पुटी (र० मा०) पौष्टिक है क्षय तथा सन्निपात श्वांस रोग नाशक एवं आयुष्यवर्द्धक है मात्रा १ से २ रत्ती शहद घृत से, ऊपरसे दुग्ध पीवें मूल्य १ तो० का २०)

२२—अभ्रक भस्म ५०० पुटी (र०मा०) वीर्यस्राव, अशक्ति, प्रमेह; सन्निपात पर अनुभूत है मूल्य १ तो० १०)

२३—अभ्रक भस्म १०० पुटी (र०मा०) सन्निपात, निमोनियाँ श्वास नाशक है मूल्य फी तोला २)

२४—अमृतगुग्गुल (भा० प्र०) रक्त दोषोत्पन्न व्रण आदि में १ मा० से ३ मा० घृत से मू० फी तोला।)

२५—अभ्रक कल्प वटी—(र० मा०) ऋतु परिवर्तन में होनेवाले समस्त शरीर सम्बन्धी रोगों पर आश्चर्य जनक गुण करती है, अनुपान भेद से सभी रोगों पर दे सकते हैं मात्रा ६ से १२ रत्ती तक है। मूल्य १ तोला का १)

२६-अपामार्गक्षार (स्वनिर्मिति) खाँसी कफ, दमा श्वांस पर आश्चर्यजनक गुण करता है, मूल्य १ तोला का।)

२८—अश्वगंधा (यो० त०) धातु क्षीणता, निर्बलता में गुणदायक है तथा

इच्छा भेदी रस (मै० र०)

जुलाब के लिये सर्वोत्तम औषधि है, विदेशके पानीके विकार पेटका दर्द, शोथ, जलोदर, लगातार मलावरोध, पांडु कामला, आदिकी शुरूआतमें यह दवा अत्युत्तम गुण दिखाती है, मात्रा २ से ३ रत्ती तक शकरमें मिलाकर खावें ऊपरसे जितने चुल्लू पियेंगे उतनेही दस्त आवेंगे, अगर इच्छानुसार दस्त आगये हों तो शकर के शर्बत में दही अथवा नीबू का अर्क मिला कर पी लेना चाहिये दस्त बन्द हो जांयगे मू० १ तोला ॥)

इन्दुवटी (मै० र०)

कान के सभी दर्दों तथा मस्तिष्क सम्बन्धी विकारों पर विशेष उपयोगी है १ तोला ४)

उन्माद गज केसरी (यो० र०)

पागलपन, उन्माद, अपस्मार (मृगी) आदि में २ से ६ रत्ती तक दें, अनुपान घृत ऊपर से दूध गौका पियें मू० १ तोला का १)

उन्मादगजांकुशरस (र०सा०सं०)

सब तरह के उन्माद तथा मृगी रोग पर आश्चर्यजनक गुण करता है मात्रा ४ रत्तीसे १ माशा तक घृत से, १ तोला का मूल्य २)

उपदंश हर मलहम (स्वनिर्मित)

उपदंश व्रणोंपर लगाने से लाभ होता मूल्य ५ तोला का १)

उन्माद भंजिनी (र०सा०सं०)

उन्माद रोगके वास्ते दमनार्थ नेत्रोंमें प्रातः शहद तथा शाम को जलमें मिला अंजन करें १ तोलाका मूल्य ॥)

उपदंश कुठाररस (मा० भ०र०)

उपदंश गर्मी (आतशक) विस्फोटक बिगड़ा खून इत्यादि रोगों पर मात्रा ३ से ६ रत्ती तक अनुपान घृत व मलाई। मूल्य १ तोला का १)

उशीरासव (मै० र०)

रक्त पित्त [खुन गिरना] ववासीर पित्त प्रकोप, दाह, सूजन आदि रोगों पर मात्रा १ तोलासे २॥ तोला तक ताजे जल में पिलाना मू० २० तोला का १)

एलीयादि बटी, (वै० चि०)

कम ज्यादा समय पर ऋतुधर्मका जारी होना, या बिलकुल ऋतु जारी ही न होना, नष्टार्तव, या ऋतु के समय शूल होना, आदि स्त्री रोगों पर हितकारी है। मात्रा १ से ४ गोली अनुपान जल, ५ तोला का मू० १।)

कृच्छ्रराक्षस तैल (भाव प्र०)

खुजली, दाद, गजकर्ण, समस्त त्वचा रोगों पर उपयोगी है। मू० ५ तोला १)

कंटकार्यावलेह (शार्ङ्गधर)

स्वांस, खांसी, कफ का बढ़ना तथा हृद रोग आदि में १ तोला से २ तोला तक चटावें, पश्चात गर्म दूध पिलावें ४० तोला का मू० १॥)

कनक सुन्दर रस (शार्ंगधर)

अतीसार, संग्रहणी, आंवके दस्तों पर उपयोगी है। मात्रा २ से ४ रत्ती शहद व अदरक के साथ मू० १ तोला का ॥)

कनकादि मलहम (वै०जी०)

कंडू त्वचा की खुश्क खुजली दूर करता है मूल्य १० तोला १)

कर्पूर रस [भै० र०]

अतीसार, संग्रहणी हैजा, बहु मूत्रता आदि रोगोंपर विशेष अनुभवी सिद्धौषधि है,अफीम के व्यसन को भी दूर करती है मात्रा १ से २ गोली अनुपान शहद मू० १ तोला १)

कालानल [भै० र०]

त्रिदोष, सन्निपात, प्लेग,इनफ्लूएंजा आदि रोगों पर विचित्र गुण दिखाता है। मात्रा ४ रत्तीसे १ माशा तक उष्ण जलसे, १ तोला का १॥)

कामनी मदभंजन [भै० र०]

वाजीकरण तथा वीर्य स्तम्भक है मू० १ तोला का १)

कामाग्नि संदीपन गोली [भै० र०]

कामोत्तेजक, पौष्टिक, नपुन्सकता नाशक है मूल्य १ तोला का १।)

कान्तलोह भस्म १००पुटी [र० म०]

अशक्ति, रक्तविकार निर्बलता में उत्तम है पौष्टिक कान्तिवर्धक तथा शक्ति वर्धक है। ठंडीऋतुमें सेवन करना चाहिये मूल्य १ तोलाका ४)

कांचनारगूगल [शार्ंगधर]

व्रण रक्त विकार के गुमड़ा तथा कंठ माला आदि रोगों पर मात्रा १ से २ गोली सह जल मूल्य १ तोला का ॥)

कांचनाभ्ररस [शार्ंगधर]

रक्त विकार को दूर करने में पूर्ण समर्थहै आयुष्य एवं कान्तिवर्धक है। मात्रा २ से ४ रत्ती शहद घृत से मूल्य १ तोला का ७) रुपया

कर्पूरासव [भै० र०]

हैजा, अतीसारकी प्रसिद्ध शतगोनभृत सिद्ध औषधि है मात्रा १० से १५ बूंद एक एक घंटे बाद मूल्य ५ तोलो १।)

कल्पतरु [भै० र०]

सर्व ज्वरोंपर रामबाण दवाहै। मात्रा २ से ४ रत्ती अनुपान गर्म जल मूल्य एक तोला का ४)

कल्याण सुन्दराभ्र [भै० र०]

प्रमेह, शोथ- समस्त उदर रोग, अम्ल पित्त, क्षय, संग्रहणी आदि की सर्वोत्तम भैषज्यामृत है मात्रा २ से ४ रत्ती मूल्य १ तोला २)

कांस्य भस्म [र० सुं०]

श्वांस दमा, यकृत प्लीहा तथा उदर रोगोंपर अनुपान भेदसे देनेपर विशेष उपयोगी है। मात्रा २से३ रत्ती मूल्य १तो०॥)

कालाभि रस, [र० सा० सं०]

विसर्प, दाहमें २ से ४ रत्ती देना चाहिये। मूल्य फी तोला १॥)

किन्नर कंठ रस [भै० र०]

गला बैठ जाना, स्वर भंग, गले की सूजन पीड़ा आदिमें २से ४ रत्ती शहद के साथ देनेपर कंठ सुरीला होजाता है मू० फी तोला का १) ५ तोला का ४)

काशीशादि वटी [यो० त०]

स्त्रियों के ऋतु सम्बन्धी दोषों पर आश्चर्यजनक गुण करता है। मात्रा २ से ४ गोली मूल्य १ तोला का ॥)

कीटमर्दरस (भै० र०)

उदर क्रिम के नष्ट करने में अद्भुत सिद्ध चमत्कारी औषधि है। मात्रा तीन से छः रत्ती तक गर्मजल से मूल्य एक १ तोला का ॥)

कुंकुमादि तैल (भै० र०)

इसकी मालिश से मुख चन्द्रमा के तुल्य उज्वल हो जाता है तथा शारीरिक कान्ति बढ़जाती है त्वचा रोग नष्ट होजाते है मूल्य ५ तोला का २)

कुटजारिष्ट (भै० र०)

संग्रहणी ज्वरातिसार की परम सिद्ध भेषज है मात्रा १ तोला से २ तोला तक ताजे कूप जल से २० तोला का १।)

कुटजावलेह (शारंगधर)

खूनी बवासीर की खास दवा हैं तथा अग्नि प्रदीपक है मात्रा १ से २ तोला तक ४० तोला का मू० १॥)

कुमारी आसव (शारंगधर)

उदर सम्बन्धी सभी रोगों पर जैसे तिल्ली [कछुहया] यकृति वृद्धि गुलम रोग आदि में १ तोला से ३ तोला पानी में मिलाकर देना चाहिये मूल्य २० तोला का १)

गृहणी कपाट रस (भै० र०)

संग्रहणी व अतीसार में शहद के अनुपान में २ से ४ गोली देने से पूरा लाभ होता है मूल्य १ तोला का ५) रु०

गोक्षुरादि गूगल (शारंगधर)

प्रमेह के वास्ते विशेष लाभ पहुंचाता है, मात्रा १ से २ गोली तक देना चाहिये ऊपर गोदुग्ध पीवे, मूल्य २०तोला का १।)

गुल्म काला नल (भै० र०)

गुल्मवायु गोला के दर्द मे चिल्लाते रोगी को शीघ्र गुण दिखाता है, १ तोला का १)

गंधक रसायन (भा० भै० र०)

त्वचा सम्बन्धी तथा रक्त दोष पर आशुगुणकारी है मात्रा १ माशा से १॥ माशा तक मूल्य १ तोला का ॥)

गर्भेन्दु शेखर (भै० र०)

गर्भिनी स्त्री के ज्वर खांसी, संग्रहणी, अतीसार खून गिरना गर्भपात होना आदि रोगों पर अच्छा गुण दिखाता है, मात्रा २ से ३ रत्ती शहद में, मूल्य १ तोला २॥)

गंडीरासव (भा० भै० र०)

गुल्म उदररोग, भगंदार, शोथ, अर्श का नाश करने में पूर्ण समर्थक है। मात्रा १ से ३ तोला तक मूल्य २० तोला का १॥)

गुग्गु ल्यासव (भा० भै० र०)

समस्तरोग उदररोग, स्वांस, प्रमेह, आदि रोग में भोजन के आदि मध्य और अन्त में अथवा हर दूसरे ग्रासके पश्चात् सेवन करने से चमत्कारिक गुण करता है मूल्य २० तोला का १॥)

गंडमाला कंडनरस [यो० र०]

गलगंड, कंठमाला, व्रणरक्त बिकार में ३ से ७ रत्ती तक घीसे कीमत १ तोला का १) ५ पांच तोला का ४)

चनाक्षार [स्वनिर्मित]

गुल्मशूल, प्लीहा, आदि में ३ माशा २॥ तोला जल में मिलाकर पिलावें कीमत २० तोला का ३)

चन्दनासव [भैषज्य रत्ना वली]

पित्तज प्रमेह दाह पित्तरोग आंखों की जलन खूनी बवासीर पर १ से २ तो० तक पिलाना हितकारी है ४० तोला का २)

चन्द्र प्रभा गुटिका [शार्ङ्ग]

सर्वप्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी वृद्धि शूल स्वांस खांसी बवासीर ना भगंदर स्त्रियों के ऋतुदोष सम्ब-आदि विकार सभी नष्ट होते हैं मात्रा १ ४ गोली शहद घृत से मूल्य १ तोला

चन्द्रांस गुटिका (भै०र०)

स्त्रियों के श्वेत व रक्त प्रदर, सूतिका रोग गर्भिणी रोग आदि में परम हितकारी है, मात्रा २ से ४ गोली शहदघृत से ऊपर से दूध पियें मूल्य एक तोला का २॥)

चन्द्रोदय वर्ति [भ०म०]

आंखकी सुर्खी, पटल फूला आदि नेत्र रोगों पर पानी में घिसकर अंजन से आराम होता है, कीमत १ तोला का ॥)

चित्रकहरीतकी अवलेह भै र०

खांसी, मंदाग्नि गुल्म उदावर्त, हृदय रोग आदि में विशेष उपयोगी है, मात्रा १ से २ तोला चटाकर ऊपर से दूध पिलाना चाहिये कीमत ४० तोला का १॥)

चिंतामणि चतुर्मुख [भै० र०]

अपस्मार, [मृगी] कम्पवात, पक्षाघात सन्निपात, अर्धांगवायु, उन्माद मन्यास्तम्भ आदि रोग में आशु गुण करती है एवं ८० प्रकार के वात रोगों को नष्ट करने में पूरी समर्थक है, कीमत १ तोला का १०)

च्यवन प्राशावलेह [शारंगधर]

मात्रा १ से २ तोला ऊपर दूध पीकर पान खावे, गले के रोग, पित्तदोष, मलावरोध मस्तिष्क की कमजोरी शिर दर्द, मूत्ररोग, वीर्यदोष तथा स्त्रियों के ऋतु दोष में लाभदायक है एवं बल, कान्ति वीर्य, ओज, आयुष्य वर्द्धक है १ सेर का ३) १० सेर का २५)

चोपचीन्यादि चूर्ण यो० र०]

प्रमेह रक्तदोष उपदंश आदि रोग पर इसे ६ माशा तक शहद तथा घृत में दें कीमत १० तोला का ॥≠)

चौसंठ पहरी पीपल

२ से ४ रत्ती शहद में खावें, श्वांस खांसी ज्वर आदि पर देने से लाभ दायक है कीमत ५ तोला का १॥)

छर्दिघ्नान्तक यो० त०]

किसी भी दोष से उत्पन्न हुई वमन इसके सेवनसे बन्द होजाती हैं मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद में दें १ तोला का २)

जय मंगल रस (भै० र०)

यह महौषधि सर्व ज्वरो पर रामबाण हैं आयुर्वेद के अन्तर्गत जैसे बहुतसी औषधियां ज्वर नाशकहैं परन्तु इससे बढ़कर आश्चर्य जनक कोई दवा नहीं है कारणकि स्वर्ण व रौप्य इसके खास उपादान है मात्रा १ से २ रत्तीकी ४रत्ती भुने सफेद जीरा को पीस कर मिला लें और शहद में चटावें कीमत १ तोला का १०)

ज्वाला नल (र० सा० सं०)

बिना जुलाब लिये यह दवा पेटके समस्त विकारों को शमन करती है विशेष कर अलंधर में कुत्ते द्वारा विरेचन देकर पश्चात सेवन कराईयेगा पूर्ण लाभ होगा मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद के साथ। कीमत १ तोला का १।)

जीर्ण ज्वरारि रस (र०र०समु०)

मात्रा २ से ४ रत्ती शहद से दें, सर्व प्रकार के जीर्णज्वर में लाभ दायक है। कीमत १ तोला का १)

जात्यादि घृत (शार्ङ्गधर)

व्रण गुमड़ा फोड़े आदि पर आश्चर्य जनक गुण करता है १० तोला १।)

जवाखार

सर्व प्रकारकी खांसी व मूत्रकृच्छ पर उपयोगी है मूल्य दस तोला ३॥)

जलोदरारि (भै० र०)

२ से ४ गोली गर्म जलमें देना चाहिये इससे जुलाब होकर जलोदर के सर्व विकार दूर होजाते है मूल्य १ तोला का ॥)

ताम्र भस्म (र० रा० सुं)

मात्रा १ से ३ रत्ती शहदसे दें। कास दमा, खांसी, हृदय का दुखना, धड़कना सूजन, ज्वर, यकृत वृद्धि पर विशेष उपयोगी हैं। १ तोला का ॥)

तुत्थ भस्म (नीला थोथा) भस्म (र० मा०)

सर्प दंश, अफीम की जहर उतारने में वमन करावें उपयोगी है मात्रा ३ से ६रत्ती तक गर्म जल से मूल्य १ तोला का ॥)

त्रिपुर भैरव रस (भाव० प्र०)

ज्वर खांसी त्रिदोष ज्वरों पर लाभ करता है मात्रा २ से ६ रत्ती तक शहद में। मूल्य १ तोला का ॥)

त्रिभुवन कीर्तिरस (यो० र०)

विषमज्वर, इकतरा, द्विजारी तिजारी, चौथइया आदि ज्वरों पर गुण दायक है। मात्रा २ से ६ रत्ती तक मूल्य फी तो० ॥)

त्रयम्बकाभ्र (भै० र०)

स्वरभंग, वायु, कफसे, गर्मी से या भाषण देनेसे, गानेसे बैठा हुआ गला खुल जाता है एवं हिचकी, स्वांस, बवासीर, क्षय रोग में उत्तम है १ तोला का १)

त्रै लोक्य चिन्तामणि रस (यो० र०)

सर्वज्वर, विषमज्वर, सर्व उदर रोग तथा मूत्र रोग में हित करता है मूल्य १ तोला का १०) प्रमेह रोग पर भी आशातीत गुण करता है।

त्रिफलादि घृत (भ० प्र०)

नेत्र दुखना, तिमिर, पटल आदि समस्त नेत्र रोगपर परीक्षित है, दर्द शिरको लाभ करता है। मात्रा १ तोला से २ तो० तक चटाय ऊपर से दूध पिलाना चाहिये १० तोला का २)

द्राक्षासव (यो० र०)

बवासीर, उदावर्त, रक्त गुल्म, समस्त उदर रोग, पित्तज रोग, गले के रोग कफ रोग आदि में गुण प्रद मालूम होता है मात्रा १॥ से २ तोला ताजे जूनाले की कीमत ५० तोला रु० २)

दन्तवर्ती (भै० र०)

कांसे की थाली पर पानीमे घिस कर आंख में आंजने से आंखका फूला, पटल, तिमिर, मोतिया आदि मिट जाताहै मूल्य एक तोलाका २)

देवदार्वादि क्वाथ (शार्ङ्गधर)

सूतिका रोग, प्रसूता स्त्री का ताप, खांसी, दमा, अफरा, कम्पवात, शिर दर्द, वातव्याधि आदि में उत्तम है १॥ तोला जव कुट द्रव्यों को ४० तोले जल में पकाने से जब १० तोला शेष रहे तब छानकर ५ ५ तोला ६-६ घंटे बाद देना चाहिये। १० तोला का दाम ॥)

दशमूलारिष्ट (भै० र०)

प्रसूत रोग, कमर का दर्द, हिष्ट्रीया कमजोरी, शोथ, संग्रहणी आदि अनेक रोगों में व्यवहृत होता है मात्रा एक तोलासे १॥ तोला तक जल में मिलाकर २० तोला का १॥) ८० तोला ४)

नाग भस्म काली (र० मा०)

पौष्टिक प्रमेह नाशक औरतों के प्रदर आदि में दें मात्रा २-४ रत्ती शहदसे मूल्य एक तोला का १) ५ तोला २॥)

निर्गुण्डीय रस (भै० र०)

सब प्रकार के मसे, तथा अर्श के मसे नाशनार्थ ३ से ६ रत्ती गाय के घी में चटाय ऊपर से बकरी के मठे [छाछ] को पिलाना चाहिये एक तोला का १)

नागार्जुनाभ्र (र० सा० सं०)

उदर शूल, बवासीर, खून गिरना, सूजन, अम्लपित्त, हृद्रोग, आदि में विशेष लाभ पहुंचाती है कीमत १ तोला का १॥)

नारायण चूर्ण (वै० जी०)

समस्त उदर रोग नाशनार्थ नारायण चूर्णका सेवन करना चाहिये तथा समस्त वातरोगों से पीड़ित रोगी नारायण तैल का सेवन करें। संसार के भय से दुखित मनुष्यो! नारायण का भजन करो। मात्रा चूर्ण की ३ माशे से ४ माशे तक उष्ण जल से। मूल्य दस तोला का ॥)

नरसिंह चूर्ण (भै० र०)

पौष्टिक, वीर्य वर्धक, स्वादिष्ट है। मात्रा ६ माशा शहद में ऊपरसे दूध पिय। १० का १) ८० तोला का ५)

पारद भस्म लाल (र० सं०)

स्वांस, खांसी, हृद रोग नाशक तथा रक्तशोधक तथा शक्ति प्रद है एक तोला का मूल्य २) ५ तोलाका ६।)

पंचामृत लोह मंडूर (भै० र०)

पांडुरोग, कोमला, जीर्ण ज्वर, गुल्म, हृदय रोग आदि में २ रत्ती से एक माशा तक दें, एक तोला का ॥)

पुष्प धन्वा (भै० र०)

मात्रा २ से ६ रत्ती शहद घृत से। पौष्टिक, कामोतेजक, तथा बल, वीर्य, आयुष्य वर्धक है। मूल्य एक तोला का २)

पंचामृत पर्पटी रस (वै० जी०)

मात्रा २ से ६ रत्ती तक शहद में देना चाहिये। संग्रहणी, जीर्णज्वर, उदरविकार पांडुरोग, अम्लपित्त, अर्श और मंदाग्नि में अनुपान भेद से अपूर्व गुण दिखाती है। मूल्य एक तोला का ॥)

पुष्यानुग चूर्ण (भै० र०)

मात्रा ३से ६ माशा तक दूधसे स्त्रियों के सर्व प्रदर एवं पुरुषोंके प्रमेह रोगों पर अपना विलक्षण प्रभाव दिखाता है मूल्य दस तोला का ॥)

पित्त भंजी रस वृहत (भै० र०)

पित्त प्रकोप, वमन, अम्लपित्त, दिमाग में जलन प्रतीत होना, गर्भोका उपद्रव एवं रक्तज अर्श [बवासीर] मे विशेष गुण करता है मात्रा २ से ४ रत्ती शहद मक्खन से, या शकर घृतसे मूल्य एक तोला ५)

पूर्ण चन्द्रोदय [स्वर्ण घटित मकरध्वज]

निर्माण विधि व गुण—

पलंमृदु स्वर्ण दलं रसेन्द्रात्पलाष्टकम् पोड्ष गंधकस्य। शौर्णैः सुकार्पास भवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारकाद्भिः॥ तत्काच कुम्भे निहतं सुगाढं मृत्कर्पटी भिर्दिवसत्रयंच। पचेत्क्रमागौ सिकिताख्य यंत्रे ततोरजः पल्लव राग रम्यम्॥ मदोन्मदानां प्रमदा शतानां गर्भादिकत्वं श्लथयत्यकांडे बली पीलत नाशक स्तनु भृतां वयः स्तम्भनः। समस्त गद खंडनः पचुर रोग पंचाननःगृहेपि गृहपतेर्भयत्यस्य

चन्द्रो दयसपञ्चशरदर्पितो मृगदृशां भोक्ता प्रभुः ॥

हर प्रकार की अशक्ति, हस्तमैथुन से उत्पन्न हुई नपुन्सकता, अति स्त्री सम्भोग से धातु क्षीणता, संधि पीड़ा, गुह्य नसोंकी शिथिलिता आदि भयंकर रोग नष्ट होकर मनुष्य पूर्ण नौ जवान होकर स्त्री रमणमें क्रिया कुशल होता है, एवं इसके सेवन से दिमाग, हृदय, फुफ्फुस, यकृत, वीर्याशय मूत्रनली, जनेन्द्रिय आदि शारीरिक समस्त अवयव अपना अपना कार्य अच्छे प्रकार संचालन करने लगते हैं, स्त्रियों के श्वेत रक्त प्रदर सूतिका रोग, आदि दूर होते हैं बालकों वृद्धों के समस्त विकार नष्टहोते हताश हुये नपुन्सक रोगियों को अमृत स मान है, अनुपान भेद से सर्व रोग नाशनमें पूर्ण समर्थ है।

नोट—यह रस दो प्रकार का मिलता एक तो पिसा हुआ दूसरा खड़ा, जो कस्तूरी जलमें घोंटकर रक्खा जाता है व पिसा दूसरा खड़ा [बिना पिसा] जैसा शीशी में से उपलब्ध होता है वैसा ही। मगाने वाले सज्जनों को जैसे की आवश्यकता हो लिखा करें—

पूर्णचन्द्रोदय त्रिगुण वलि जारित स्वर्ण घटित

खड़ा अथवा पिसा हुआ मात्रा एकसे दो रत्ती तक एक तोला का मूल्य ६)

पूर्ण चन्द्रोदय [षड गुण वलिजारित स्वर्ण घटित मकरध्वज]

खड़ा या पिसा मात्रा एक से दो रत्ती एक तोला का १५) ५ तोला का ५०)

प्रताप लंकेश्वर रस [यो० र०]

मात्रा दो रत्ती से एक माशा तक शहद या घृत से सूतिका स्त्री के सभी रोगों में दिया जाता है मूल्य एक तोला का ॥) ५ तोला का १।)

प्रदरारि लोह [भै० र०]

स्त्रियों के समस्त प्रदर असुन्दर को नष्ट करता है ऋतु दोष एवं योनि शूल में विचित्र गुण करता है मात्रा ३ रती से एक माशा तक शहद में एक तोला का २)

प्रवाल भस्म श्वेत [मूगा भस्म अग्नि पक्व]

मन्दाग्नि खासी हृद्रोग में मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद घृत या शकर से कीमत एक तोला का ॥)

प्लीहारि रस [र०स०सं०

प्लीहा [तिल्ली] यकृत [लीवर] और उदर रोग मे जल से एक तोला का १।)

[फल घृत शारंगधर]

मात्रा एक से दो तोला दूध में पिलावें ऋतु स्नाता स्त्री को एक सप्ताह पर्यन्त चटाने से गर्भाधान होता है स्त्रियों का वन्ध्यत्व दोष एवं पुरुषोंका वीर्य क्षय रोग नष्ट होकर आनन्द देताहै कीमत दस तोला का २) ८० तोला का ७)

बंग भस्म श्वेत [र०स०सु०]

प्रमेह निर्बलता वातव्याधि में मात्र एक से दो रती शहद में दे एक तोलाका॥

बंगेश्वर वृहत् [लाल व काला]

[भैषज्य रत्नावली]

मधुमेह, प्रमेह पेशाब में रक्त आना आदि रोगोंपर दो से चार रती सकशहद घृत से दें एक तोला का २)

बहु मूत्रान्तक रस [भैषज्य रत्नावली]

मधुमेह, पेशाब का अधिक आना स्त्रियोंका सोमरोग इससे दूर होता है मात्रा २ से ४ रत्ती शहद या मक्खनमें एक तोला का ८)

बृहत कूष्माण्डि रस [भैषज्य रत्नावली]

हैजा, अतिसार, संग्रहणी मन्दाग्नि में २ से ८ रती तक उष्ण जल से एक तोला का २)

बिन्दु तैल [भैषज्यरत्नावली]

पेटका दर्द, सूजन, मलावरोध में विशेष गुणकारी है मात्रा ३ से १० बूंद गर्म जल में देना चाहिये ५ तोला का १॥)

ब्रह्मास्त्र रस (ल० यो० त०)

सन्निपात, निमोनियां इन्फ्लूएन्जा आदि रोग पर सुंघाना, आंजना, एवं २ से ६ रत्ती तक गर्म जल में पिलाना चाहिये। एक तोला का ५)

ब्राह्मी घृत [यो. त.]

उन्माद, पागलपन, अपस्मार [मृगी] आदिमें एकसे दो तोला चटावें ऊपरसे गो दुग्ध पिलावें दस तोलाका २॥) ८० तोला८)

भगंदरारि रस

भगंदर नासूर में दो से चार रती शहद में दें एक तोला का १॥)

भक्तोत्तरीय चूर्ण [भैषज्यरत्नावली]

अग्निवृद्धि, संधिवात, शूल उदर रोग, आदिमें ४ रतीसे १॥ माशा तक दें ५ तोला का १)

मदनानन्द मोद ८ [भैषज्यरत्नावली]

पौष्टिक, कामोत्तेजक, वीर्यवर्धक है४० तोला का ५) एक सेर का ८)

मदन कामेश्वर रस [शारंगधर]

कामोत्तेजक, पौष्टिक, वीर्य, बल, कान्ति आयुष्य वर्धक, औरतों का ऋतु दोष पुरुषों का वीर्य दोष दूर करने में अपनी शानी नहीं रखता। मात्रा दो से चार रत्ती मक्खन में एक तोला का १०)

मंडूर वटिका [शारंगधर]

कामला, पांडु, प्लीहोदर सूजन में एक एक गोली दें शहद से। एक तोला का ॥)
५ तोला का २।)

मंडूर भस्म [र०सा० सु०]

पांडुरोग, यकृत सीर, यकृत वृद्धि आदि उदर रोगों पर ३ से ६ रती तक एक तोला का ॥)

मल्ल चन्द्रोदय [र०सा०सं०]

श्वांस, कास अरुचि आदि में एक से दो रती शहद घृतसेदो ऊपरसे दूध पिये। एक तोला का २)

मल्ल भस्म श्वेत र. रा. सु.

श्वांस खांसी विषमज्वर में एक रत्ती पृथक् दें। उपरसे दुग्ध पाव १ तोलाका २)

महाकाशीशादि तैल [भावप्रकाश]

अर्श के मस्सों तथा नासूर भगंदर आदि में विशेष उपयोगी है दश तोलाका २॥) रुपया

महागंधक [भैषज्यरत्नावली]

संग्रहणी तथा सूतिकारोग व बालकों के समस्त रोगों पर लाभदायक है। मात्रा एक से बारह रती तक एक तोला का ॥)

महा ज्वरांकुशरस [भैषज्यरत्नावली]

विषमज्वर, मलेरिया ज्वर में क्विनाइन की जगह उपयोग कीजियेगा। मात्रा दो से ४ रती एक तोला का ॥) ५ तोला का २) रुपया

महातालकेश्वररस [शारंगधर]

कुष्ठ, कोढ़, खून बिगाड़, गलितकोढ़ श्वेत कुष्ट दाद खुजली गजकर्ण आदि त्वचा रोगों में ३ से ६ रती तक घृतसे दें एक तोला का ५)

महानारायण तैल [भावप्रकाश]

आमवात, सन्धिवात, अर्दित वात, पक्षाघात आक्षेप कम्पवात आदि ८० प्रकार के रोगों में बीससे पच्चीस बूंदगर्मदूध में लगावें भोजन दश

महापंचनिम्बचूर्ण [भैषज्यरत्नावली]

खुजली विशेषके जल विकार रक्त दोष आदि में ३ माशे से ६ माशे तक गर्म जल से खावें दश तोला का ॥)

महा सुक्तांजन—भावप्रकाश

आंखों में आंजने से, आंखों के पटल, तिमिर फूला आदि सभी नेत्र विकार नष्ट करता है एक तोला का ७)

महामृत्युञ्जय रस— भै. र.

भयंकर सन्निपात, प्लेग, फ्लू, शीतज्वर, विषम पर अमृत तुल्य है। मात्रा दो से ४ रती अदरक रस अथवा अभयादि क्वाथ से एक तोला का ३)

महायोगराज गुग्गुल सप्त धातु मिश्रित —शारंगधर

८० प्रकार के वात रोग, सन्धिवात, आमवात, पक्षाघातादि एवं सूती उन्माद, बवासीर वीर्यदोष स्त्री दोष प्रभृति रोगों पर रामबाण है वात रोगों में मात्रा दो से ६ गोली महारास्नादि क्वाथसे तथा अनुपान भेद से अन्य रोगों पर लाभप्रद है एक तोला का १) दस तोला ८)

महारास्नादि क्वाथ —भा. प्र.

अस्सी प्रकार के वात रोग दलन करने में पूर्ण समर्थ है मात्रा एक तोला से १॥ तोला तक क्वाथ विधि से पिलावें ४० तोला का १)

महाराज मृगांक रस —यो.रा.

क्षय, संग्रहणी, पांडुरोग की विचित्र गुणशाली सिद्धौषधि है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत में देना एक तोला का ५)

महालक्ष्मी विलास रस— भै.र.

पौष्टिक, कामोत्तेजक, वीर्य, बल, कान्ति वर्धक तथा अंड वृद्धि मधुमेह, क्षय, स्त्रियों के समस्त विकारों पर लाभदायक है मात्रा दो से ३ रत्ती अनुपान भेद से उपरोक्त सर्व रोग हनन करता है एक तोला का ५)

महा लोकनाथ रस —भै. र.

क्षय, श्वांस पांचो प्रकार की खांसी, हृदय रोग आदि में लाभ करता है मात्रादो से ३ रत्ती शहद घृतसे एक तोला का २)

महा सुदर्शन चूर्ण —भै. र.

शीत ज्वर, कालाज्वर, जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर नाजा देर के जल विकार शान्त होते हैं मात्रा दो तोला की आधसेर पानी में औटाकर अष्टमांश शेष रहनेपर पिलावें दस तोला का १) ८० तोला का ४)

मुक्ता भस्म —र. मा.

मस्तिष्क की कमजोरी हृदय का निर्बलता, क्षय रोग जीर्णज्वर, आदि रोगों पर रामबाण हैं एक तोला का ३०)

मूत्र कृच्छारि— भै. र.

दो से ४ रत्ती शहद या मक्खनमें देने से मूत्रकृच्छ में लाभ करताहै एक तोलाका १)

मृत संजीवनी सुरा —भै. र.

आधा तोला में दो तोला जल मिला कर पिलाने से पौष्टिक शक्ति वीर्य, कान्ति बढ़ानेमें पूर्ण लाभकारी है अस्सी तोला का १२) रुपया

मोफरवा यूनानी चाटण (भै०र०)

स्वर्ण रौप्य इसका खास उपादान हैं पौष्टिक, कामोत्तेजक बल वीर्य वर्द्धक हैं ४० तोला का ८)

यशद भस्म सफेद ला त

मस्तिष्क, हृदय शूल तथा मूत्राशयके दर्द में हितकारी है १ तोला का ॥)

रत्न गिरी रस (भा० भै० र०)

तीव्र दाह युक्त ज्वर, ज्वर की उष्णता मे २ से ३ रत्ती शहद में दें ज्वर उतारनेमें आयुर्वेद में इससे बढ़कर कोई अन्य औषधि नहीं है एक तोला का १०)

रस [illegible]क्षय —भै०र०

वीर्य दोष, रक्त दोष को दूर कर शक्तिता में [illegible] करता है मात्रा से २ रत्ती १ तोला का २)

रक्त पित्त कुलकंजन रस[भै० र०

[illegible] रक्त [illegible] मात्र उत्तम औषधि है रक्त [illegible] आमाशय [illegible] है म से ४ रत्ती १ तोला का ५)

रस पर्पटी [भै० र०]

रक्त प्रदर, अतीसार की परमोत्तम औषध है मात्रा २ से ४ रत्ती १ तो.

रसेन्द्र गुटी—भै. र.

मुख, दांत गले के सर्व रोगों में २ से ४ गोली दूध के साथ सेवन करना चाहिये। १ तोला का २॥)

रस सिन्दूर [भैषज्य रत्ना वली]

हृदयरोग, क्षयरोग, सूजरोग, स्त्रियों के समस्त रोग पर अनुपान भेद से विशेष गुणकारी है मात्रा २ से ४ रत्ती। १ तोला का १।)

रौप्य भस्म [र. रा. सु.]

समस्त वीर्यदोष व अशक्ति में एवं अनुपान भेद से सर्व रोग में लाभदायक है मात्रा दो से तीन रत्ती घृत से एक तोला का २)

लीला बिलास रस (भै० र०)

गुल्म, हृदय रोग, अम्लपित्त आदि में दो से चार रत्ती सेवन करना चाहिये मू० १ तोला का १)

लोह पर्पटी रस —भै. र.

अर्श [बवासीर] मलावरोध व उदर रोगों में दो से चार रती शहद में देना चाहिये। १ तोला का मूल्य १।)

लक्ष्मणा लौह —भै. र.

वन्ध्या रोग गर्भाशय के समस्त विकारादि कहां तक कहें स्त्रियों के समस्त रोगों के दमनार्थ परमोत्तम औषधि है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत से ऊपर से गो दुग्ध सेवन करना चाहिये १ तोला का ४)

लौह भस्म सौपुटी —र० मा०

कामोत्तेजक, कान्ति, बल वीर्य, एवं आयुष्य वर्धक है मात्रा १ से दो रत्ती शहद व घृत से मू० १ तोला का ५)

लौह भस्म [र०रा०सु-]

यकृत, प्लीहा वृद्धिनाशक तथा रक्त वर्धक है १ तोला का।)

लोह रसायन [शार्ङ्ग]

पांडु कामला हलीमक मेदोवृद्धि तथा समस्त उदर रोग नाशक है मात्रा दो से चार रत्ती अनुपान शहद से १ तोला का २)

लोहासव [शारंगधर

समस्त उदर रोग, शोथ, दशालीर हृदय रोगादि में १ से १॥ तोला जल में पिलानेसे पूर्ण गुण दिखलाता है बीस तोला की कीमत १।)

लाक्षादि तेल —शारंगधर

इसकी मालिशसे जीर्ण ज्वर मज्जागत ज्वरादि दूर होते हैं तथा हाथ पैर की जलन व पटकन तत्काल ही शान्त होती है ५ तोला का १)

लवंगादि चूर्ण [भै. र.]

जीर्णज्वर क्षय सर्व प्रकार की खांसी आदि रोगों को निर्मूल करता है ५ तोला का १) मूल्य है

बराटिकाभस्म[पीली कौड़ीकी]

ये भस्म समस्त उदर रोग नाशक है। मात्रा २से ४ रती शहद व अदरक स्वरस में १ तो०।)

बज्रक्षार चूर्ण [भै० र०]

अजीर्ण मन्दाग्नि शूलादि रोगों में १ माशा से ३ माशा तक पानी के साथ सेवन करने से जादू कीतरह असर करता है दस तोला का १)

बसन्त कुसमाकर [शार्ङ्गधर]

प्रमेह मात्र की अव्यर्थ औषधि है तथा स्त्रियों के बन्ध्यत्व रोग को भी दूर करता है मात्रा १ से दो गोली मू० १५) तोला

बात गजांकुश [भै० र०]

अस्सी प्रकार के वात रोगों को इस प्रकार दमन करता है जैसे मत्त गजेन्द्र हाथी को अंकुश। मात्रा ३ से ६ रत्ती अनुपान शहद व घृत से मू० १ तोला १)

बृहत वासावलेह [भै० र०]

रक्त,पित्तक्षय पांचो प्रकारकी खांसी व हृदय रोग को लाभ करता है। मात्रा १ से १॥ तोला ऊपर से गो दुग्ध पिलावे मू० ४० तोला २)

वासारिष्ट —स्वनिर्मित

भयंकर खांसी व दमा को मिटाने के लिये शतशोन भूत है मात्रा १ से १॥ तो० अनुपान अपामार्ग क्वाथ से मू० ५ तो०१)

विजय पर्पटी रस [भै०र०]

पांडु, कामला, संग्रहणी शोथ, क्षय व समस्त उदर रोग को दूर करता है २से३ रती शहद से १ तोला का १०) मूल्य है

बाकुची बीज गुड़ [शार्ङ्गधर]

सर्व प्रकार की अर्श को रामबाण औषधि है मू० ४० तोला का २)

विलासिनी वल्लभपारा -वैद्यजी०

देा से चार रती मक्खन में चटाकर ऊपर से गो दुग्ध सेवन करावे। वीर्य स्तम्भन कर महान आनन्द का अनुभव करता है एक तोलाका १।) मूल्य है

वृद्धि बाधिका वटी (भै० र०)

अन्तवृद्धि व अण्ड वृद्धि की अद्वितीय औषधि है मात्रा ३ से ५ गोली गर्म जल से। एक तोला का मूल्य १) है

व्रण गजांकुश रस [भै० र०]

सर्व प्रकार के फोड़े कण्ठमाला व भगन्दर में चार रती से १॥ माशा तक घृत में चटावे एक तोला का १)

विश्वताप हरण --वैद्यजीवन

सर्व प्रकार के ज्वरों के दूर करने की अनुपम औषधि है मात्रा एक से दो गोली गर्म जल से एक तोला मूल्य १)

शंखद्राव (भै० र०)

प्लीहा और यकृत वृद्धि तथा पेट के सर्व प्रकार के शूल व अजीर्णमें दो से तीन बूंद पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये। दस तोला का ४) मूल्य है

शंख भस्म [र० सा० सं०]

समस्त उदर विकार व खांसी पर लाभदायक है मात्रा दो से चार रती शहद व अद्रक में एक तोला का दाम।)

शंख वटी वृहत (भै० र०)

उदावर्त, अनाह, हैजा, शूल अजीर्ण में १ गोली पानी के साथ देने से लाभ होता है एक तोला का दाम ॥)

शांकर लौह [भा० प्र०]

सर्व प्रकार का खूनी बादी बवासीर के मिटाने में रामबाण है [इसको शिव जी ने नारद के प्रति सब प्रकार की बवासीर को निर्मूल करने के हेतु वर्णन किया था] मूल्य एक तोला १)

शीत भञ्जी रस (भै० र०)

सर्व प्रकार के शूल कष्ट तथा पारी से जाड़ा देकर आने वाले ज्वरों को शीघ्र ही आराम करता है। मात्रा दो से चार रत्ती पान तथा अद्रक स्वरस के साथ देना एक तोला का ॥) है

शुद्ध शिलाजीत सूर्य ताप

सम्पूर्ण वात रोग तथा वात प्रकार के प्रमेहों को नष्ट करता है। मात्रा ३ से ६ रत्ती गो दुग्ध से लेना और कुछ परहेज करना चाहिये। कीमत एक तोला का ॥)

शिला च्यवन [र० रा०सु०]

श्वांस दमा रोग फुफ्फुस की अशक्तिता आदि में एक से दो रत्ती घृत में देना हितकारी है दाम एक तोला का २)

शुक्र वल्लभ रस (भै० र०)

सम्पूर्ण शुक्रदोष [वीर्य दोष] को दूर कर वीर्य स्तम्भन करता है दाम एक तोला का ५) अनुपान ले ३ रत्ती एक दिन में दें

श्वांस कालेश्वर [भै० र०]

श्वांस खांसी हिक्का क्षय रोगमें हित कारी है दो से चार रत्ती शहदसे एक तो० का मू० २)

शृंगाराभ्र

हृदय रोग, खांसी, अशक्ति आदि में ३ से ६ रत्ती शहद से चटाने से लाभ करता है मूल्य एक तोला का १।)

शूलगज केशरी

किसी भी अंग का शूल हो तो दो से चार रत्ती शहदमें चटावे ऊपर से गरम जल पिलावें तत्काल शूल हरण करता है एक तोला का १।)

शोष शार्दूल लेप [भै० र०]

सम्पूर्ण प्रकार की सूजन में लगाने से गुण दिखाता है मू० एक तोला का २।)

शोथ दावानल [भै० र०]

उदर रोग व सूजन में दो से चार रत्ती मूल्य १। तोला

श्वेत कुठाररस [यो० र०]

श्वेत कोढ़ की परमोत्तम औषधि है मात्रा ३ से ६ रत्ती अद्रक स्वरस में एक तो० का दाम ॥)

श्वेत कुष्ट हर लेप (शारंगधर)

इस लेप को गोमूत्र में पीस श्वेत मंडलों पर लेप करने से श्वेतता मिट जाती है ५ तोला का १)

संजीवनी वटी (शार्ङ्गधर)

अजीर्ण, विशूचिका, सन्निपात, सर्व दंश पर उपयोगी है मात्रा ३ से ६ गोली पानी से देना चाहिये एक तोला का ।)

सन्निपातभैरव रस [भै० र०]

सर्व प्रकार के सन्निपात रोग में लाभ दायक है मात्रा एक से चार रत्ती शहद अद्रक रस से । एक तोला का ५)

सर्वस्त्री रोगांतक वटी [स्त्री-रोगांत०]

सम्पूर्ण स्त्रियों के सर्व रोग, हिस्टीरिया, जनेन्द्रिय रोग आदि २ सभी रोग दूर करने में पूर्ण लाभदायक है । मात्रा ३ से ६ गोली पानी के दें एक तोला का १)

सर्वज्वरहर लौह चूर्ण (भै०र०)

इस दिव्यौषधि से सर्वप्रकार का ज्वर सिर्फ सात दिन में नष्ट होता है मात्रा एक से दो गोली । पीपल के चूर्ण व सुहागे खील के साथ दें एक तोला का १०)

सर्वेश्वर पर्पटी रस(भै० र०)

पक्षाघात, [लकवा] कम्पवात, मृगी उन्माद हिस्टीरिया आदि ८०प्रकारके वात रोगों पर अनुपान भेद से चमत्कारिकगुण करती है । मात्रा दो से ४ रत्ती शहद में एक तोला का ४)

सारस्वता चूर्ण (भै० र०)

मात्रा एक माशा से ३ माशा तक घृत या मक्खन में मिलाकर चटाने से बुद्धि मेधा स्मृति बढती है। मस्तिष्क बलवान होता है दस तोला का १)

स्वर्ण घटित सारस्वतारिष्ट भै० र०

उन्माद, अपस्मार, मोहापस्मार नाशक तथा बुद्धि कारक है । मस्तिष्क को बलवान बनाता है ५) [illegible]

सारिवाद्यासव (भै० र०)

स्त्रियों के रक्तविकार तथा रक्त वि काल, उपदंश आदि रोगों पर देना चाहिये रक्त साफ करने में सारसा पेरला से भी बढ़कर है । चौथा हिस्सा १)

शंखद्राव भस्म (र०म०)

खांसी, श्वास, हृदय रोग तथा पार्श्व शूल [पसली का दर्द] में विशेष लाभ करती है । मे से ६ रत्ती शहद अद्रक स्वरस में दें मात्रा एक तोला ॥)

शिवा घृत (भै०र०)

पौष्टिक, कफ नाशक, तथा आयुष्य वर्द्धक है मकरध्वज की मालिश शीशी में पकाया जाता है गुण प्रायः मकरध्वज सेही मिलते हैं । मात्रा एक से तीन रत्ती घृतसे एक तोला का १५)

सूख प्रसव चूर्ण (भै० र०)

मात्रा ६ मासेसे ७ तोला तक गर्मजल से देने से प्रसव के समय औरतों का कष्ट दूर होकर गर्भ का प्रसव शीघ्र कष्ट रहित हो जाता है । ५ तोला का १)

सुधानिधि (भै० २०)

रक्त पित्त खूनी बवासीर, पित्तप्रकोप आदि में चूर्ण चमत्कारी है। मात्रा २ से ४ रती मक्खन में दें एक तोला का २)

स्वर्ण बंग (भै० र०)

बीसों प्रकार के प्रमेहों की रामबाण सिद्धौषधि है शीतल चीनी या इलायचीके चूर्ण के साथ दो दो रत्ती शहद में चटावें एक तोला का २)

स्वर्ण पर्पटी (भै० र०)

संग्रहणी सूतिका रोग की अव्यर्थ महौषधि है मात्रा एक से ३ रती शहद घृत से देना चाहिये एक तोला का १०)

स्वर्ण भस्म लाल (रा० सुं)

स्त्रियों तथा पुरुषों के समस्त रोगों पर अनुपान भेद से बड़ा ही अच्छा प्रभाव रखती है एक तोला का ३५)

वर्ण भूपाल रस कूपी पक्व (यो० र०)

अर्शांकित, जीर्णज्वर तथा क्षय रोगपर विचित्र आशापूर्ण शुभ करता है एक तो० का १२)

सूतिका विनोदरस (भै० र०)

सूतिका स्त्री के संग्रहणी, ज्वर, खांसी क्षय अजीर्ण में अमृत समान उपयोगी है मात्रा २ से ३ रत्ती घृत में या शहद में, एक तोला १)

स्वर्ण माक्षती बसन्त (यो० र०)

मधुमेह, क्षयरोग, हृदरोग, जीर्णज्वर, तथा बाल, वृद्ध, युवा सभी के रोगों पर विशेष गुण कारी है दोसे चार रत्ती शहद घृत में अथवा सितोपलादि चूर्ण में मिला कर देने से लाभ करती है ऊपरसे दूध पिलाना उत्तम है एक तोला का १०)

सोमघृत (भै० र०)

स्त्रियों के सर्वरोग तथा वन्ध्यत्व [बांझपन] को दूर करता है मात्रा ६ माशा से एक तोला चटावें ऊपर सेगोदुग्ध पियें। बीस तोला का ३)

स्नायुशूल हर लेप (भै० र०)

जल में पीसकर गर्म कर लेप करने से स्नायु, शूल नष्ट होता है ५ तोला १)

हयमारादि तैल

जननेन्द्रिय की असह्य खुजली योनि कंद, योनि व्रण आदि योनि गत रोगों पर बिजली की तरह शुभ करता है। ५ तोला का १)

हरगौरी रस (र० सा० सं०)

नपुन्सकत्व, धातु क्षीणता समस्त वीर्य दोषों पर अमोघ गुण करता है मात्रा २ से ३ रती शहद में एक तोला २)

हरताल भस्म

त्वचा रोग, खुजली उपदंश विरफोटक, कुष्ट आदि रोगोंपर १ से ३ रत्ती घृत में चटाने से शीतिया लाभ होता है काला १ तो० २) श्वेत १ तो० ४) लाल १ तो० ३)

हिंग्वाष्टक चूर्ण (भै०र०)

आनाह अजीर्ण, मंदाग्नि अरुचि पर १॥ मासे से ३ माशे तक गर्म जलसे देना चाहिये दस तोला का ॥)

हिंगुलेश्वर (भै०र०)

वायु तथा आम के ताप में २से चार रत्ती गर्म जलमें देना चाहिये एक तो०॥)

हिंग्वादि तैल (भै०र०)

ऋतुदोष, नष्टार्तव में २० बूंदसे ४० बूंद तक दूध में पिलाना चाहिये तथा रुई का फाया तर करके गर्भाशय के मुखपर र खना चाहिये। ५ तोला का १)

हिम सागर तैल (भै० र०)

सर्व प्रकार के वातदर्द में मालिश करने से शर्तिया गुण करता है दस तो०२॥)

हिरण्यगर्भ रस कृष्णवटी(शा०)

सन्निपात, प्लेग तथा विषमज्वरों पर २-३ रत्ती देने से आशु गुण करता है यह रस खड़ा [गोला सा] तथा पिसा हुआ मिलता है एक तोला १५)

हिरण्यगर्भ रस लाल

गुण उपरोक्त समान है एक तोला ८)

हृदयार्णव रस (भै० र०)

हृद रोग कफका उपद्रव, श्वांस,खांसी आदि छाती के रोगों पर अमोघ वाण है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत से एक तोला का ५)

हेमनाथ रस (भै० र०)

उरःक्षत प्रमेह बहुरोग, सोमरोग[स्त्रियों को होता है] श्वांस रोग आदिमें अनुपान भेदसे उपरोक्त सर्व रोगोंका दलन करने वाला है मात्रा २ से ३ रत्ती एक तोला का १०)

प्रार्थना

हम अपने यहां की औषधियों की सूची पूर्णरूप से कभी भी प्रकाशित नहीं करसकते हैं कारण कि सैकड़ों औषधियां नित्य प्रति तैयार होती रहती हैं, और नवीन अनुसन्धान से भी अनेक औषधियां तैयार होती रहती हैं, अतः निवेदन है कि अगर आपकी चाही हुई औषधि अगर इस सूची पत्र में न मिले तो कार्यालय से पत्र द्वारा पूछ कर भाव इत्यादि विदित कर मंगा सकते हैं।

भवदीय—जनरल मेनेजर

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे [किश्तीनुमा] चिकने, खूबसूरत मय घोटनेकी उत्तम मुसली सहित तैयार रहते हैं,इनकी लम्बाई १५॥इंच चौड़ाई १०इंच ऊंचाई ५। इंच वजनमें २५ सेरके हैं २सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जासकती है इसके सिवाय रस खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं, प्रत्येक खरल का मूल्य १०) हैखरल का आर्डर देने समय ५)रु० पेशगी अवश्य भेजे नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जावेगा पता पूरा मय रेलवे स्टेशन दे होना चाहिये मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फामेसी बरालोकपुर

शल्य शालाक्य विभाग की औषधियों का
सूची

आयुर्वेदीय टिंचर

यह टिंचर हमने आयुर्वेदीय औषधियों द्वारा मृत संजीवनी सुरा पर बनाया है जो कि "टिंचर आयोडिन" से भी अधिक गुणकारी साबित हुआ है इसके लगाने से चोट, सूजन, फोड़ा की सूजनादि सर्व विकार शान्त होते हैं कीमत फी शीशी ॥)

(स्वदेशी आइडो फार्म) व्रण पूरक

यह दवाई हमने आइडोफार्म की जगह स्तैमाल करनेको बनाई है इसके इस्तैमाल से दूषित घाव शुद्ध होकर भर आता है। मूल्य फी तोला ।)

मूर्च्छाप्रद रस
(स्वदेशी क्लिोरो फार्म)

वैद्य लोगों को बहुत दिनों से बड़ी आवश्यकता थी कि शल्य कर्म करते समय रोगी को बेहोश करने के लिये स्वदेशी औषधि जो क्लिरोफार्म की भांति असर दिखलावे तैय्यार होनी चाहिये मैंने बड़े परिश्रम के साथ बड़ी खोज के बाद इस औषधि को निर्माण करपाया है फर्क सिर्फ इतना रहा है कि यह दवाई खिलाई जाती है पर अच्छा फौरन दिखलाती है कीमत २)

मूर्च्छान्तक विन्दु

इस दवाई से "मूर्च्छा प्रद रस" के सेवन से आई हुई बेहोशी कुछ बूंदे डालने से ही तत्काल होश में रोगी आजाता है कीमत १ शीशी १)

व्रण को बैठालने का लेप
(स्वदेशी बिला डोना)

इस दवा को आग पर गर्म कर कपड़े पर लगाकर उठते हुये फोड़े पर प्रथमावस्था में लगाने से फोड़ा निश्चय बैठ जाता है। कीमत फी तोला ॥)

(व्रण पकाने का लेप)

कैसा भी कठोर व्रण हो इस के लेप से शीघ्रता से पकाव को प्राप्त होताहै कीमत ।) तोला

व्रण फोड़ने का लेप

इस लेप से बिना चीरा लगाये हुए व्रण फूट कर मवाद साफ होजाता है की० ।=) तोला

व्रण शोधक मलहम

यह मलहम फूटे हुए फोड़े पर लगाई जाती है इससे व्रण का दूषित अंश छटकर साफ होजाता है कीमत ।) तोला इसके लगाने के बाद पूरक मलहम जो ऊपर लिख आये है स्तैमाल करो।

घाव धोने की दवा

यह सब प्रकार के घाव धोने की पानी में मिलाकर इस्तेमाल करने की औषधि है कीमत ।) तोला

भगवत शक्ति रस

यह रस व्रणोत्पन्न दर्द आदि तथा अन्य समस्त प्रकार के दर्दों पर रामबांण है कीमत फी तोला १)

रक्त प्रवाहान्तक

इस औषधि को किसी स्थान से चोट लगकर निकलने वाले रक्त स्थान में लगानेसे रक्त उसी वक्त बन्द होजाता है कीमत फी शीशी ॥)

नेत्र रोहू नाशक औषधि

यह औषधि नेत्रोत्पन्न रोहू पर लगाने से सूजन तथा रोहू को शमन करती है कीमत ।) तोला ।

आई हुई आंख की दवा

यह औषधि आने वाली तथा आई हुई आंखमें डालने से आंखकी खुजलीलालामी दर्द, सूजन को लाभ पहुंचाती है मू०॥)शी०

नेत्र परवाल की औषधि

यह दवा नेत्रों के कटाव, खुजलाहट, आदि को दूरकर परवाल रोग को समूल नष्ट करती है कीमत फी शी० ॥)

माड़ा, फूला नाशक अंजन

इस अञ्जन के लगाने से माड़ा, फूला, कटकर मनुष्य की ज्योति शक्ति बढ़ाती है कीमत फी डिब्बी १)

नेत्र के फोड़ा की दवा

नेत्रों के कोये में यह फोड़ा उत्पन्न होता है कभी २ यह भयंकर होजाता है पीव देता रहता है पेस्तर इसे गुहेरी कहते हैं हमारी इस दवाई को इस पर लगाने से यह शीघ्र शमन होजाती है। कीमत ॥) शीशी

मोतिया विन्दु की दवा

अल्प दोष का मोतिया विन्दु इसके सेवन से विना शस्त्र क्रिया के नष्ट होकर नेत्र ज्योति प्राप्त हो सकती है। कीमत २) तोला

रतौंध की दवा

यह रोग अक्सर देखने में आता दिन में दिखाई देता है रात को अन्धा माता है इस दवा के अञ्जन से ७ दिन रतौंध हमेशा को विदा होजाती है की०

दिनौंध की दवा

यह मनुष्य को उल्लू की प्रकृति बनाता है जैसे उल्लू रात में दीखता है ही इस मर्ज वाले दिन में देख नहीं हैं पर रात में खूबी देख सकते हैं को नेत्रों पर अञ्जन से यह सब शिक्ष दूर होती हैं। कीमत ॥)

कान का फोड़ा की दवा

कान में फोड़े की यह दवा पीव बैठा देती है यदि पक जावे तो शी० कर मवाद बाहर निकाल देती है दर्द व भारी पन दूर होजा है। फी शीशी ॥)

वहिरेपन की दवा

इस दवा के कुछ काल के सेवन करने ही से वहरा पन नष्ट हो जाता है कीमत फी शीशी १)

कखरवाई की दवा

यह भी बड़ा दुखदाई रोग होता है खाज २ के पांच २ सात २ निकल कर कष्ट देती हैं यह बगल के नीचे पैदा होती हैं हमारे लेप से कखराई बैठ जाती है अथवा शीघ्र पका देती है कीमत ॥)

स्त्री के स्तनव्रण की दवा

इस व्रणको निकलते ही बैठाना चाहिये नहीं तो बड़ा दुखदाई होकर स्तन को कम जोर बना देती है हमारी इस औषधि को स्तन व्रण पर रूमाल करने से तत्काल फायदा होता है की० ॥)

गंजरोग नाशक दवा

इस दवाई से सूखी व तर हर प्रकार की गंजरोग की शिकायत दूर होजाती है कीमत फी शीशी १।)

कंठमाला नाशक दवा

यह रोग बुरा है पेस्तर यह ग्रंथि व्रण रूप में होता है बाद में समस्त शरीर में फैलता जाताहै इसमें पेस्तर दस्त व वमन की औषधि सेवन कर इस दवाई को कंठमाला पर लगावे आराम होगा कीमत २)

भगन्दर व्रणनाशक मलहम

इस मलहम के लगाने से भगन्दर का पीव आना बन्द होकर घाव भर जाता है कीमत १।)

अग्नि दग्धि हर औषधि

किसी भी प्रकार से जले हुए स्थान इस औषधि को लगाने से जलन शान्त होकर घाव भर जाता है। कीमत फी शीशी १॥)

नासूर की दवा

कैसा ही पुराना नासूर हो इस दवाई के लगाने से चन्द ही दिनों में नासूर आराम होजाता है कीमत २)

सूचना

आगे लिखी वनस्पतियों तथा वनौषधियों का मूल्य प्रायः घटता बढ़ता रहता है शायद किसी सज्जन के किसी बीजक में या पत्रमें कम ज्यादा मूल्य लिखा हो तो यही कारण समझना चाहिये, इस सूचीमें केवल सूखी वनौषधियों का मूल्य लिखागया है। हरी बूटियां भी यथा सम्भव भेजी जा सकती हैं, इस सूची मे लिखा हुई वनौषधियों के अतिरिक्त अगर आपको किसी वनौषधि की आवश्यकता हो तो लिखिये।

नोट—इस वनौषधि की सूची में केवल १ सेर का भाव दिया गया है. जो सज्जन थोक भाव से खर्च यानी २५) का माल एक साथ मंगावेंगे उन्हें २०) सकड़ा कमीशन दिया जायगा।

मैनेजर—वनौषधि विभाग।

बनौषधि विभाग की सूची

नाम औषधि	तौल	मूल्य
[आ]		
अतिबला [कंघी]	१ सेर	॥)
अखरोट छाल [अक्षोट]	,,	१)
असगंध [अश्वगंध]	,,	१)
अंकोला	,,	१)
अर्जुन छाल	,,	१)
अनंतमूल [श्वेत सारिवा]	,,	१॥)
अनंतमूल [कृष्ण सारिवा]	,,	२)
पीपल छाल [अश्वत्थ छाल]	,,	।)
अपामार्ग [चिरचिटा श्वेत]	,,	॥)
अरिष्टक [रीठा छाल]	,,	।=)
अम्लिका [इमली छाल]	,,	।)
आक की जड़ [अर्क मूल]	,,	॥)
आक पुष्प	,,	१)
अशोक छाल	,,	२)
अतीस मीठी	,,	२)
अतीसगढ	,,	५)
अरणी छाल	,,	॥)
अमर बल्ली [आकाश बेल]	,,	।)
अमृता [गिलोय]	,,	।)
आरग्वध [अमलतास फली]	,,	॥।)
आमला	,,	॥)
आकरकरा	,,	५)
आम्रातक [अम्बाड़ा]	,,	१)
[ई]		
इरमेद [दुर्गन्धित खैर छाल]	,,	१)
इन्द्रायण की छाल	,,	१।)
इन्द्रायण फल	,,	१)
इन्द्रयव	एक सेर	॥।)
ईश्वर लिंगी [शिवलिंगा बीज]	,,	१६)
[ऊ]		
उष्ट्रकंटक [ऊंटकटारा]	१सेर	॥)
उग्रगंधा [घुड़बच]	,,	॥)
उदुम्बर [गूलर छाल]	,,	।)
उशीर [खस मूल]	,,	॥।)
[ए]		
एरण्ड मूल छाल	,,	॥।)
एरण्डबीज	,,	॥)
[ओ]		
ओड्र पुष्पी [गुड़हल के फूल]	,,	१।)
[क]		
कतक [निर्मली बीज]	,,	१)
कंटकारी छोटी	,,	॥)
कमाला [कम्पिल्ल]	,,	२)
कपि कच्छु [कौंचकी जड़]	,,	२)
कौंच के बीज	,,	१)
करमर्दक [करौंदा]	,,	॥)
कर्कट शृंगी [काकरा सिंगी]	,,	१)
कैथफल [कपित्थ]	,,	।=)
कृष्णा [मिरचिया गंध]	,,	१)
कसेरू	,,	॥।)
करंजबीज	,,	॥)
कनेर तीनों प्रकार की	,,	१)
कालादाना	,,	१)
कोकिलाक्ष [तालमखाना]	,,	१॥)
कोशातकी [बनतोरई]	,,	१)
कुंकुम [केसर]	,,	२॥)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
कुलत्थ [कुत्थी]	एक सेर	॥)
कूठ मीठा	,,	५)
कुटज [कुड़ाकी छाल]	,,	॥)
किंशुक [टेसू के फूल]	,,	।–)
काक जंघा	,,	।॥)
काक नासा [कौआ ठोड़ी]	,,	१)
कासमर्द [कसौंदी बीज]	,,	१)
काकमाची [मकोय]	,,	॥)
कचनार [छाल]	,,	।॥)
(ख)		
खदिर छाल [खैर छाल]	,,	॥
खदिर सार [खैरसार]	,,	३)
[ग]		
गज पिप्पली [गज पीपर]	,,	१॥)
गोखरू बड़ा	,,	१)
गोखरू छोटा	,,	।॥)
गुंजा मूल [घुंघची की जड़]	,,	२)
ग्रन्थ पर्ण	,,	३)
गुग्गुल उत्तम	,,	१॥)
गुडूची सत्व	,,	१६)
गम्भारी छाल [खम्भारी]	,,	॥≠)
गंध प्रसारिणी	,,	≠)
[घ]		
घृतकुमारी [घीकुंवार]	,,	।≠)
[च]		
चविका —चव्य	,,	।॥)
चन्द्रशूर —हालो	,,	।॥)
चोरक —चोर	,,	२)
चौक	,,	२
चिरायता	,,	१)
चित्रक —चीता मूल छाल	,,	३)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
[छ]		
छिक्कनी —नकछिकनी	१सेर	१)
[ज]		
ज्योतिष्मती—मालकांगनी	,,	१)
जीवन्ती पीतरंग की	,,	३॥)
जटामांसी	,,	१)
जल निम्ब	,,	॥)
जल पिप्पली	,,	२)
[त]		
तगर	,,	१)
तेजबल	,,	।॥)
तेजपलपत्र	,,	।॥)
त्रिधारा = थूहर	,,	॥)
त्रायमाण	,,	५)
तालीस पत्र	,,	२)
तंडुलीयक—चौलाईमूल	,,	॥)
[द]		
द्रोणपुष्पी—गूमा	,,	।॥)
देवदाली —बंदाल डोडे	,,	१)
दुरालभा —धमासा	,,	॥)
दुग्धिका —दुद्धी तीनोंप्रकार	,,	।॥)
दारु हरिद्रा —दारु हल्दी	,,	॥)
वृ० दन्ती मूल	,,	१॥)
(ध)		
धव पुष्प —धायके फूल	,,	॥)
धतूर पंचांग	,,	१)
[न]		
नागकेसरि असली १तोला ॥)	१सेर	१६)
नील कंठी.....	१ सेर	२)
नीलोत्पल — नीलोफर	१ सेर	१॥)
नीम छाल	१ सेर	।)
निर्गुण्डी —सम्भालू	१ सेर	।॥)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
निर्विषी	१ सेर	४)
नागदोन	,,	१॥)
नाग बला —गनेरन पंचांग	,,	१)
नाकुली	,,	१)
(प)		
पृष्ट पर्णी	,,	१)
प्रसारिणी [खोप]	,,	१॥)
प्रयुन्नाट [पलांड़ बीज]	,,	।≈)
पुनर्नवा [सांठमूल]	,,	१)
पीपला मूल	,,	२)
पाटला [पाढ़ल छाल]	,,	॥)
पतिव्रटा [मर्मीरा)	,,	३)
पारिजात [हरि सिंगार]	,,	२॥)
पाखान भेद	,,	॥)
पारीश [पारस पीपलछाल]	,,	॥)
पारस पीपलफल	,,	१॥)
पाठा पंचांग	,,	१)
पटोल पत्र [परवल पत्ते]	,,	१॥)
पलांण्डु [जंगली प्याज]	,,	१)
पनस [कटहल छाल]	,,	॥)
(ब)		
बिल्व [बिल्व फल छाल]	,,	॥)
बालक [सुगंध बाला]	,,	१)
बृहदडी [पंचांग]	,,	२)
बन जीरक [काला जीरी)	,,	॥)
बब्बूल [कीकर छाल]	,,	।)
बौफली [बहुफली]	,,	१)
बकुल (मौल सिरी छाल)	,,	१)
बेला (खरेटी पंचांग)	,,	॥)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
(भ)		
भल्लातक —भिलावा	१ सेर	१)
भोजप	,,	१॥)
भूमि आंवला	,,	२)
भृंग राज	,,	१)
भारंगी	,,	१)
(म)		
मंजिष्टा —मंजीठ	,,	१)
मृणाल —भिस	,,	१)
मेथिका —मेथी पत्र	,,	२)
मूरवा —मोरवा	,,	२)
मूषा कर्णी —मूसाकनी	,,	२)
मुस्तक —नागर मोथा	,,	॥)
मुग्द पर्णी —मूंग पर्णी	,,	१)
मुंडी —गोरखमुंडी	,,	॥।)
मुचकुंद फूल	,,	॥•)
महा बला	,,	॥।)
महा निम्ब —बकायन छाल	,,	॥।)
मयूर शिखा —मोर शिखा	,,	४)
मछेछी —मत्स्याक्षी	,,	॥।)
मधु —बढ़िया शहद	,,	२)
मधुक —महुआ पुष्प	,,	१)
मास रोहिणी	,,	२)
मैनफल	,,	॥।)
माष पर्णी	,,	१)
मृग मद —कस्तूरी असली	१ तोला	३६)
(य)		
यवतिक्ता —हिरन खुरी	१सेर	१)
यवक्षार —गोरवार	,,	१६)
यवासक -जवासा	,,	।)

नाम औषधि	तोल	मूल्य
रोहितक छाल –रोहेड़ाछाल	१ सेर	२)
रेणुका –सम्भालू बीज	”	।।।)
रुद्रवंती बूटी	”	४)
रत्न ज्योति	”	१)
रास्ना–रायसन	”	।।।)
रसाजन –शुद्ध रसौत	”	२।।)

(ल)

लोध पठानी	एक सेर	।।।)
लांगली –कीलहारी	एक सेर	५)
लाक्षा –पीपर या बेरी लाख	”	३)
लक्ष्मणा –सफेद कटेली	एक सेर	४)
लता कस्तूरी –मुश्कदाना	एक सेर	६)
लज्जालु –लजवती बीज	एक सेर	२।।)
लजवंती पंचाग	एक सेर	१।।)

(व)

वच –दूधिया वच	एक सेर	५)
वृद्ध दारु बीज	एक सेर	५)
वृद्धदारु –विधारा	एक सेर	२।।)
वृहती –बड़ी कटेरी	एक सेर	।।)
वृश्चिका –विषु आबूटी	एक सेर	।।)
विष्णु क्रान्ता	एक सेर	१)
विदारी कंद	एक सेर	१)
विभीतक –बहेड़ा	एक सेर	।।।)
विजय सार	एक सेर	१)
वासा मूल तथा पंचांग	एक सेर	१)
वासा पुष्प	एक सेर	४।।)
वराही कंद	एक सेर	२।।)
वरुण –वरुना छाल	एक सेर	।।।)

(श)

नाम औषधि	तोल	मूल्य
शण पुष्पी –जंगली सण	१ सेर	।।।)
शंख पुष्पी –शंखाहूली	एक सेर	१॥)
शूरण कंद –जिमी कंदहरा	एक सेर	।)
श्रीवास –शु० बहरोजा	एक सेर	२)
श्योनाक –अरलू छाल	एक सेर	॥)
शोभांजन –सहिजना बीज	एक सेर	३)
शिला पुष्प –छरीला	एक सेर	॥)
शिरीष –सिरस छाल	एक सेर	॥)
शिलारस	एक सेर	३)
शिलाजीत शुद्ध सूर्य तापी	एक सेर	२४)
शालनियीस –राल	एक सेर	१)
श्याम लता –कृष्णा सारिवा	”	१)
शालमली –सेंभल छाल	एक सेर	।॥)
शालमली मूल –मूसरा सेभल	,,	२।।)
शाल पर्णी –सारिवन	,,	१)
शर पुंखा –सरफोका	,,	॥)
शतावरी –शतावर	,,	१।)

(स)

सप्त पर्णा –सतौना छाल	एक सेर	२)
स्वर्ण दुग्धा –सत्यानसीबीज	एक सेर	२)
स्वर्ण दुग्धा –सत्यानासीपंचाग	,,	॥)
सहदेवी –सहदेई	,,	२)

(ह)

हंसपदी –हंसराज	,,	।।।)
हिज्जल –समुद्र फल	,,	१)
हिंगु असली –हींग	,,	१४)
हस्ति शुंडी –हाथी सुडां	,,	।।।)
हरीतकी –हर्र छाल	,,	।॥)
हरड़ बड़ी –हरीतकी	,,	१]

भारत सरकार से रजिस्टर्ड—

कतिपय शतशोनभूत पेटेन्ट औषधियां

रजिस्टर्ड

इन्द्रसुधा।



यह अनुपम गुण मय अमृत समान अद्वितीय सैकड़ों बार की अनुभव सिद्ध महौषधि है, जो सर्व स्वदेशी औषधियों के मिश्रण से तैयार हुई है नीचे रोगों पर "इन्द्रसुधा,, रामबाण ही है—

अजीर्ण, के, दस्त, हैजा, [विशूचिका] शिरदर्द, प्रतिश्याय, दांत व डाढ़ का दर्द. बर्र, बिच्छू विष, वायुगोला का दर्द, ज्वर फसली, व हिचकी का बढ़ना, आदि रोगों पर विधि वत सेवन करने से चमत्कारिक गुण करती है, कीमत फी शीशी ॥) ६ शीशी का २॥) दर्जन का ४)

बच्चों को मोटा ताज़ा तन्दुरुस्त बनाने वाली

स्वादिष्ट तथा मीठी दवा

रजिष्टर्ड

बाल पाल।



इस 'बाल पाल, के सामने सब बालामृत मात हैं, बच्चों के लिये आजकल बहुतेरी प्रकार के बालामृत, बालानंद, जन्म घुट्टी और सब तरह के लाल पीले शरबत बाजारों में बिकते हैं परन्तु यह अधिक तर अंगरेजी तेज़ दवाइयों द्वारा तैयार किये हुये मिलते हैं जिनसे लाभ के बदले हानि होती है, कारण कि बच्चे इन औषधियों के पीने के अभ्यासी हो जाते हैं फिर उस दवा के छुड़ाते ही उन बच्चों का

पहिले से भी ज्यादा खराब होजाता है, परन्तु "बालपाल"मे यह एक भी दोष
है, 'बालपाल' बच्चोंकी बदहजमी, कब्ज, दूध का पटक देना हरे, पीले दस्त,
सी सुखटी रोग डब्बारोग बुखार सर्दी आदि रोगों को दूर करने में रामबांण है
औषधि होने के कारण बच्चे स्वयं मांग २ कर पीते हैं फ़ी शी० ॥।) ३ शीशी
न का ६) डाक खर्च जुदा

रजिस्टर्ड—

महिला जीवन

❀ स्त्रियों को अमृत समान उपयोगी है ❀



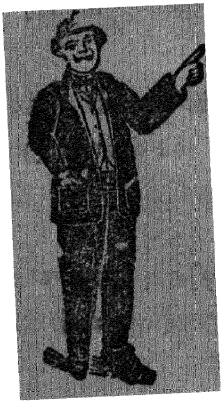
इस 'महिला जीवन' के स्तेमाल से औरतों की सब प्रकार की शरीर सम्बन्धी बीमारियां दूर होती हैं जैसे प्रदर। गुप्त भागसे श्वेत अथवा लालपानी जाना। ऋतु हो मासिक धर्म ठीक २ न होना। सर्वदा कन्या प्रसवही होना आदि वांझपन वंध्यत्व हिष्ट्रीया रोग दूर होकर आरोग्यता मय स्वर्गीय सुख मिलता है।

सगर्भा स्त्रियों को सेवन करने से, धीर, वीर साहसी, बुद्धिमान सुन्दर शुवारत्न पैदा करने में इसके समान और कोई उपयोगी औषधि ही नहीहै लिखे अनुसार गुण न करे तो दाम वापिस देंगे, परीक्षा प्रार्थनीय है मू० फी बोतल ४)

रजिस्टर्ड—

पारद गुटिका

यह पारद गुटिका विशुद्ध पारद तथा स्वर्ण रौप्य एवं वनौषधियों के संयोग से बनाई जाती है प्रत्येक रोग पर विचित्र गुण करती है उपदंश रोग की वजह से हुआ रक्त दोष इसके निरंतर सेवन करने से कुछ काल मे शरीर निरोग्य होता है, सर्व साधारण के लाभार्थ सिर्फ १ मास तक १) में ही दी जावेगी, ताकि इसके गुणागुण से सभी सज्जन जान कार हो जावें



बृहत कामेश्वर तिला

इस तिला के सेवन से कैसी ही हस्त मैथुनादि कुटेवों से उत्पन्न हुई नसों की कमजोरी ढीलापन अशक्तिता हो २१ दिनमें दूर करके नामर्द को मर्द बनाकर रति कार्य में पूर्ण कुशलबना देती है, हताश बन्धुओं को परीक्षा प्रार्थनीय है लिखे अनुसार गुण न करे तो दाम वापिस देते हैं कीमत फी तोला २)



❋ तिजारी की हुक्मी दवा ❋

अगर तिजारी आप को या आप के किसी संम्बन्धी को दुखित कर रही है तो आजही 'तिजारी की हुक्मी दवा, की शीशी मंगाकर पिलाइये उसी रोज़ तिजारी दुम दवा कर भाग जायगी तिजारी न जावे तो दाम वापिस मू० फी शीशी ॥)



❋ तिल्ली की शर्तिया दवा ❋

यह रोग बड़ा ही दुखदाई है, और यथेष्ट उत्तम औषधि प्राप्त होने पर ही दूर होती है, इस लिये आप अगर तिल्ली का इलाज करते करते हताश हो गये हैं तो तिल्ली की शर्तिया दवा सेवन कीजियेगा साथही तिल्ली नाशक अद्भुत लेप भी लगाइयेगा यह लेप तब छूटेगा जब तिल्ली नष्ट हो जायगी कीमत पीनेकी दवा की दो रुपया। लेप की दवा की कीमत १॥)

❋ ज्वर हर वटिका ❋

हर प्रकार के फसली ज्वर, इकतरा दिजारी तिजारी चौथिया ज्वर की शर्तिया बटी हैं। धर्मार्थ बांटने वालों के लिय बड़ी काम की चीज है मू० १०० गोली का १)

❋ दन्तपौष्टिक मंजन ❋

इस मंजन से दांतो की सब प्रकार की पीड़ा जैसे मैलापन, टीसन, हिलना कीड़ा लगना जरा सा दांत मांजनेपर खून आना आदि शिकायतें दुर होकर दांत मोती जैसे चमकदार होजाते हैं मूल्य फा डिब्बी।)

❋ काश्मीर केश विहार तैल ❋

शिर की समस्त शिकायतोंको दूरकर तबियतको अजहद खुश करता है इसके निरन्तर स्तेमाल करने से बाल सफेद नहीं होते, अगर थोड़े बहुत बाल सफेद हो भी गये हों तो इसके लगाने से फिर काले होजाते हैं खुशबू इतनी मन मोहक हैकि लगाते लगाते दिल बाग बाग होजाता है मूल्य फी शी० १)



❋ आतशक (गर्मी) की दवा ❋

यह अनमोल दवा इस दुष्ट रोग [गर्मी]को समूल नष्ट करने में एक मात्र अव्यर्थ सिद्ध औषधि है, अगर इन्द्री पर घाव हैं तो उपदंश मलहम लगाइयेगा। अगर समस्त शरीर मे गर्मी फूट निकली हो तो खदिरा रिष्ट के साथ इस दवा को खाइये, अवश्य ही आप रोग मुक्त होंगे आतशक की दवा कीमत ४० खुराक का २) उपदंशारि मलहम ५ तोला का १) खदिरारिष्ट फी बोतल २) डाक व्यय अलग,

❋ प्रदर नाशक सुधा ❋



किसी भी प्रकार का स्त्रियों का प्रदर जैसे लाल पीत श्वेत इससे दूर होता है और कटि पीड़ा सोम रोग आदि रोगों को दमन कर मासिक धर्म कीपीड़ा या कम ज्यादा वक्त पर होना आदि सभी शिकायतें रफा होती है मू० फी बोतल का ३)

❋ रजः प्रवृतनी वटी ❋

स्त्रियों के रुके हुये आतव को जारी करने मे एक मात्र अव्यर्थ महौषधि है, साथ ही इसक 'रजः स्रावक पोटली' भी वर्तने से शीघ्र लाभ होता है रजः प्रवतनी वटी फी तोला १) रजस्रावक पोटली कीमत १॥)

❋ अंड वृद्धि हर लेप ❋

किसी भी कारण से बढ़े अंडकोष को ठीक करने में यह लेप आश्चर्य मय गुण करता है जिन रोगियो को किसी भी औषधि से लाभ नहीं हुआ वह कृपा कर एक बार इस लेपको इस्तैमाल कर रोगसे मुक्त होकर सुखमय जीवन बनावें मू० २० तोला का २)

❋ अर्शहर वटिका ❋

सब प्रकार की बवासीर को अगर दूर करना है तो अर्शहर वटिका सेवन कीजियेगा मू० ४० दिवस की औषधि सेवन का ४)

❋ अर्शोघ्न तैल ❋

बवासीर के मस्से दूर करने के वास्ते अर्शहर वटिका सेवन काल में इस अर्शो घ्न तेल को लगाना चाहिये बवासीर शर्तिया दूर होगी मू० १० तोला का २)

❋ नेत्र संजीवन सलाई ❋

यह सलाई शास्त्रोक्त विधि अनुसार जड़ी बूटियों के बुझाव देकर तैयार की जाती है इसको प्रति दिन आंखों में फेरने से नेत्रों मे होने वाले कोई रोग पैदा नहीं हो सकते, नेत्रों की ज्योति बढ़ानेमें अद्वितीय है मू० फी सलाई ॥) डा० ख० अलग

चन्द्र कांती लेप (खूब सूरतीकी जान)

इसको मुख पर लगाने से, मुख की झांई, फुंसी, चेचक के भद्दे दाग मुहांसा खुश्की खाल का फटना, इत्यादि सब चेहरे की कुरूपता दूर कर पूर्ण सौदर्य प्राप्त होता है, कैसा ही बद सूरत चेहरा हो, इस के लगाने से गुलाब के फूल जैसा मनोहर हो जाता है, अगर आपको अपनी धर्मपत्नी सहित पूर्ण सौदर्यका आनन्द प्राप्त करना है, इसे अवश्य ही काम में लागाइयेगा खुशबू इतनी मस्त है कि लगाते २ तबियत मस्त हो जाती है, मू० फी डि० १।) डा० ख० अलग।



लोग कहते हैं कि "दमा दम के साथ जाता है,, इस कहावत को पूर्ण रूप से मन करने में यह "दवा" अद्वितीय है, पांचों प्रकार की खांसी तथा श्वांस, दमारोग समूल नष्ट होता है अगर आप को दमा से पीछा छुड़ाना है तो आज ही १ शीशी का आर्डर दीजिये ना। मू० फी शीशा १।) डा० ख० अलग

❋ दद्रुहर लेप ❋

कैसा भी दाद हो इस दवाई के लेप करने से नष्ट हो जाती है न लगती है न धब्बे ही डालती है कीमत फी डि० ।)

खारिष्ट नाशक तैल

शरीर में किसी प्रकार के चर्म दोष से उत्पन्न खुजली हो हमारी इस दवाई के लगाते २ ही शान्त होजाती है कीमत फी शीशी १)

सांप काटे की दवा

काल की तो दवा नहीं पर सर्प काटने पर हमारी बनाई हुई दवाको विधिवत इस्तेमाल कराने से रोगी निश्चय जी जाता है सर्प के काटने हो "विषनाशक पाउडर,, को दंश स्थान पर चीरा देकर लगादे ऊपर से 'सर्पारि चूर्ण' खिलादे वमन व दस्त होकर विष शान्त होगा डाट पड़ने पर 'मूर्छाहर रस' मस्तिष्क शिरामें चीरा दे लगादे डाट खुल कर होश आजावेगा की० 'विष नाशक पावडर' १) 'सर्पारि चूर्ण १।) मूर्छाहर रस २) तोला



कैसा भी नया व पुराना खुजाक हो इस औषधि के सेवन से सिर्फ २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है अधिक विकार वाले रोगी को साथमे इन्द्रो जुकाब तथा पिचकारी से धोने की दवा भी सेवन करना पड़ेगी मू० २॥) शीशी इन्द्रा जुकाब व पिचकारी की दवा का मू० सिर्फ १॥) रु० है।



❋ एजेन्सी नियम ❋

१—जो सज्जन हमारे यहांसे २५) रु०का माल एक साथ खरीदेंगे उन को हम एजेन्ट करार देंगे।

२—फुटकर कईबारमें २५)के मूल्य या अधिकका माल मंगाने पर वह शख्स एजेन्ट नहीं माने जावेंगे।

३—एजेन्टको फार्मेसीके थोक भावके सूचीके अनुसार माल मंगाने पर =) प्रति रुपया तथा खेरीज भावके सूचीपर २५) सैकड़ा क मीशन दिया जावेगा।

४—रार्ग व्यय एजेन्ट ही को देना होगा पर पेकिंग खर्च फार्मेसी से माफ रहेगा।

५—एजेन्ट करार दिये जानेके बाद २५) से कमकी भी औषधियां म गा सकता है पर ५) की कम की औषधियों पर पेकिंग भी ए-जेन्ट को देना होगा। कमीशन बराबर मिलेगा।

६—आर्डर के साथ एजेन्ट को चौथाई रुपया पेशगी भेजना पड़ेगा व्यौहार पड़ने पर बिना पेशगी भी भेजा जावेगा पर उधार देन लेन का नियम नहीं है।

७—एजेन्टकी विख्यातिके लिये फार्मेसी अपने खर्चासे खुशनुमा सा इनवोर्ड तथा नोटिस बांटने को भेजेगी।

८—तरल पदार्थ तथा भारी पार्सल भेजने के वास्ते पास की रेलवे स्टेशन का पूरा साफ २ पता अवश्य लिखना चाहिये।

९—हमारे पेकिंग के अनुसार एजेन्ट को ६ माह तक माल न बिकने पर और माल बदले में भेजा जा सकेगा।

❋ सोलएजेन्सी के नियम ❋

१—जो सज्जन एक साथ २५०) का माल खरीदेंगे उन्हें स्थानीय तथा प्रान्तीय सोल एजेन्सी दी जावेगी ।

२—सोल एजेन्ट को एजेन्टों तथा शहर और प्रांत की मांगों को पूरी करना । होगा सोल एजेन्टके प्रान्त के आये हुये फार्मेसी सेपूरित आर्डरों पर सोल एजेन्ट को अपने कमीशन का अधिकार होगा

३—खेरीज भाव के सूची के अनुसार माल मंगाने पर ३३) रु सैकड़ा तथा थोक भाव के सूची के अनुसार माल पर २०) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ।

४—मार्ग व्यय तथा पैकिंग खर्च फार्मेसी के जिम्मे होगा पर सोल एजेन्ट को ५०)रु० से कम कामाल मगाने पर मार्गव्यय देने होगा

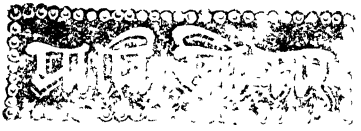
५—सोल एजेन्ट का माल रेलवे पार्सल से ही भेजा जावेगा अतः पास की स्टेशन का पूरा पता तथा आर्डर के साथ पेशगी चौथाई रुपया भेजना आवश्यकीय होगा ।

६—सोल एजेन्ट का माल हमारे यहां से पैकिंग के अनुसार सालभर तक न बिकने पर उसकी इच्छा तथा आवश्यकतानुसार और सोल उतने ही मूल्य का भेजा जा सकेगा ।

७—सोल एजेन्ट के नाम के प्रचार को फार्मेसी अपने खर्च मे खुश नुमा साइनबोर्ड नोटिस हैन्डबिल तथा पोस्टर समय २ पर एजेन्ट के पास भेजती रहेगी ।

८---उधार देने का नियम नहीं-लिखा पढ़ी इसके बारे में वृथा है ।

नोट हमारे यहांसे वैद्यक संसार में नई जान डालने वाला "राकेश,, नामक उच्च कोटि का वैद्यक मासिक पत्र वार्षिक मूल्य २) में प्रकाशित होता है उस के भी ग्राहक बनानेवालों को कमीशन तथा पत्र एजेन्सी दी जाती है इसके लिये पत्र द्वारा नियम तै कर लीजिये । हर शहर व प्रान्त में एजेन्ट हो रहे हैं शीघ्रता कीजिये धन व यश कमाकर आयुर्वेद प्रचार में हाथ बंटाइये । आपका-जनरल मेनेजर



धन्वन्तरि का प्रयोगांक

यह प्रयोगाङ्क नामक विशेषाङ्क विजय गढ़ के 'धन्वन्तरि' मासिक पत्र का है— वैसे तो यह पत्र कई साल से आयुर्वेद की सेवा कर रहा है। पर उसने अभी इस प्रयोगाङ्क नामका विशेषाङ्क निकालकर वैद्य समाज का तथा जनता का बहुत ही उपकार किया है इस अङ्क में अनेक प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध वैद्यों के अनुभव दिये सिद्ध प्रयोग वृहत रूप में संग्रह किये गये हैं— परन्तु हम देखते हैं कि जिस उद्योग से पत्र सम्पादक ग्राहकों के प्रति उद्योग कर रहे हैं उसके विपरीत ग्राहक गण ऐसे उपयोगी पत्र के लिये न मालूम क्यों अश्रद्धा दिखा रहे हैं जैसा कि 'मरणासन्न शीर्षक, लेख से विदित हो रहा है प्रयोगाङ्क की पृष्ठ संख्या २८३ है वार्षिक मूल्य ४) इस अङ्क का मूल्य १॥) अंक संग्रह योग्य है वैद्यों के अलावा साधारण लोग भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

पत्र का सम्पादन बुद्धिमता तथा परिश्रम से किया गया है हम इस उद्योग के लिये सम्पादक तथा प्रकाशक को बधाई देते हैं और ग्राहकों तथा पाठकों से अनुरोध करते हैं कि सम्पादक के इस हतोत्साहित काल में ग्राहक बन उत्साहित वृद्धि करें।

शोक सूचना

महान शोक

गत १५ अगस्त सन १९२९ ई० को दिन के तीन बजे नाडी विज्ञान तथा मृत्यु विज्ञान के प्रधानाचार्य, धनंजय आरोग्य भवन के संस्थापक, पूज्य गुरुवर्य पं० सोहनलाल जी वैद्यराज का स्वर्गवास हो गया है। ईश्वर मृत आत्मा को शान्ति दे तथा कुटुम्ब को धैर्य्य प्रदान करे।

असह्य वज्रपात।

शोक के साथ लिखना पड़ता है कि ता० १३ सितम्बर को प्रातःकाल ९॥ बजे पर हमारे मित्र श्रीयुत छोटेलालजी जैन अध्यक्ष रत्नाकर औषधालय के भतीजे तथा उनके ज्येष्ठ भ्राता श्रीपालजी जैन के सुपुत्र पद्मचन्द्र की १३ वर्ष की अवस्था में मन्यज्वर के प्रकोप से मृत्यु हो गई। मृत्यु नहीं यह मित्र परिवार पर असह्य वज्रपात हुआ जिससे एक सुखी परिवार का तथा उसके इष्ट मित्रों को असह्य वेदना हुई। बालक सुशील, सुबुद्धिमान, तथा मृदु भाषी होने के कारण सर्व प्रिय था अंग्रेजी स्कूल की सातवीं कक्षा में पढ़ता था। ईश्वर से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति दे। तथा मित्र कुटुम्ब के शोक को कम करके धैर्य्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

"राकेश,, के ग्राहकों को द्वितीय वर्षारम्भ के उपलक्ष में

मुफ्त अपूर्व-उपहार मुफ्त

मुफ्त सिर्फ २ माह के लिये

"राकेश" के ग्राहकों को हम विशाल भुजा उठाकर जागृत करते हैं कि जिन प्रयोगों को हमारे पूर्वज ने गुप्त रखकर यश व धन के भागी बने थे उन्हीं रत्नों को आज हम उपहार रूपमें बांट रहे हैं। समय चूकने पर पछताना पड़ेगा शीघ्रता कीजिये

उपहार नं० १—जो सज्जन "राकेश" के ५ ग्राहक बनावेंगे उन्हें विचित्र तैल और आनन्द मंगल घृत का प्रयोग बतावेंगे।

विचित्र तैल गुण—फोहा भर कर छाती पर रखने से छर्दि (कै) हानी रहेगी और पेटपर रखनेसे दस्त ही होते रहेंगे फोहा उठा लेने पर बन्द होंगे

आनन्द मंगल घृत गुण—जिस वक्त शिर दर्द हो सौंक भर कर लगाने से फौरन दर्द बन्द हो जाता है।

उपहार नं० २—१० ग्राहक "राकेश" के बनाने वालों को १ संतान जीवन प्रयोग २-कुमार संजीवन प्रयोग ३—कालान्तकरस प्रयोग देंगे।

गुण नं० १—जिनके कन्या २ ही होती हों निश्चय पुत्र होगा—

२—जिनके सन्तान न होती हों उनके अवश्य होगी—

३—प्रलापक सन्निपात में जिसमें रोगा भागे, बके, स्वेद प्रवाह हो इस रससे १००) की बाजी मार कर आराम कर सकता है।

उपहार नं० ३—"राकेश" के १५ ग्राहक बनाने वालों को (गर्भ शिशुपाल वटी) का प्रयोग देंगे—

गुण—जिन अबलाओं के सहस्रों प्रयत्न करने पर भी गर्भ पूर्ण नहीं होता हो उन्हें यह गर्भ शिशुपाल पूर्ण ९ या १० मास तक रक्षा करके सुख प्रसव करा सुन्दर हृष्ट पुष्ट संतान देगा।

नोट—यदि कोई सज्जन झूठ समझें परीक्षा करें कि जब बालक पैदा होगा दो हमारी बटी बालक की दोनों बंधी हुई मुट्ठी में साथ आवेंगी।

प्रयोग निष्फल होने पर हमारी शर्त—यदि उपरोक्त उपहार लेखानुसार गुण न करें तो राकेश मूल्य १॥) और १५) हम अपने पास से देंगे। पता-आने पर प्रतिज्ञा पत्र भी लिख देंगे। पं० मुन्शीराम शर्मा रसायन शास्त्री, बरालोकपुर।

उपहार नं० ४—१-जो सज्जन राकेश के ५ ग्राहक बनावेंगे उनके ३ प्रश्नों का उत्तर मुफ्त दिया जावेगा।

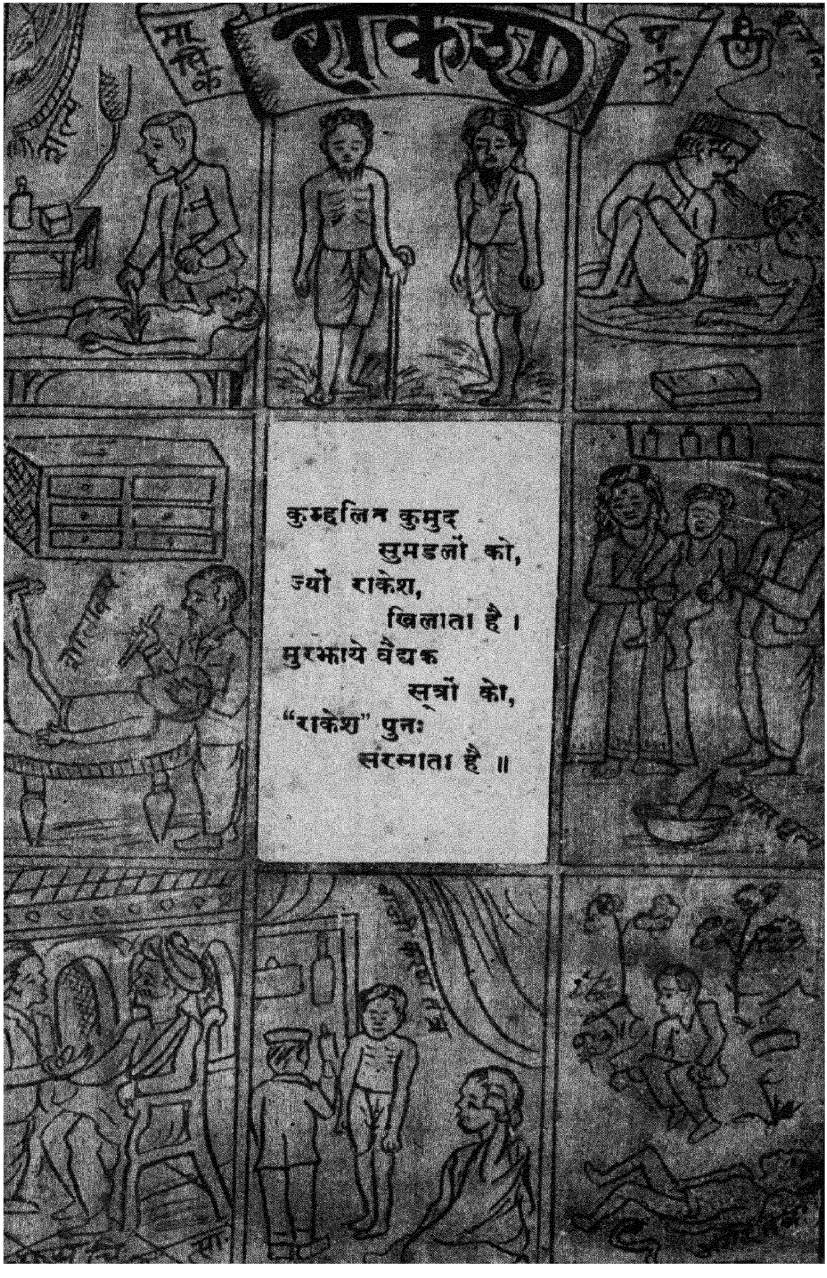
२—जो सज्जन स्वयं ग्राहक बन ९ ग्राहक अन्य नये बनायेंगे उनके ५ प्रश्नों का उत्तर मुफ्त मिलेगा।

प्रश्न पूछने का पता—ज्योतिर्विद पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी

मु० गोतौना; पो० हैदरगढ़-बाराबंकी।

RAKESH

Regd. No. A. 1870



सम्पादक--द्विवेदी पं० रूपेनारायण शास्त्री।

राकेश



(आजकल जेल में)

श्रीयुत प्रो० रामकृष्णजी वर्मा

B. A. B. S. C. L. M. S.

आयुर्वेदाचार्य

जमगवाँ–फतेहपुर ।

—— ❀ ——

(आका परिचय इसी पत्र के पृष्ठ 9 पर दिया हुआ है)

राकेश



श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

के

रसायन शास्त्री

तथा

"राकेश" मासिक पत्र के

सहायक सम्पादक

श्रीयुत पं० मुन्नीरामजी शर्मा ।

॥ श्री धन्वन्तरि जयतिः ॥

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण--परीक्षित ऐसी।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ का क्रिया जड़ा करते वैदेशिक सारे।
करते हैं आरोग्य वहाँ जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २ | अक्टूबर सन् १९२९ ई० | उदय २

प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य का जेल जाने के बाद राकेश के पाठकों को

संदेश

छन्द

आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन भक्षण के लिये।
जो बिक गये चान्डाल के घर सत्य रक्षण के लिये॥
अस्थियां तक दान करदी लोक हित जाती जहां।
शिव, दधीच हरिश्चन्द्र, से होते रहे दानी यहां॥

भा० भा०

ऐसे वीरों की जन्मभूमि यह भारत आज सब तरह से भारत हो गया है परोपकार का सिर्फ नाम मात्र है बल्कि उसकी ओट से शिकार किया जा रहा है। जिस भारत में सुबह शाम यह पाठ होता था कि नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम। प्राणिनां दुःख तप्तानां कामये दुख नाशनम्॥ परन्तु शोक है कि उसी देशके निवासियों का यह ध्यान है कि—भूत द्रोह रतः सर्वे स्वार्थ साधन तत्परः। इत्यादि कार्य यह है तिस पर भी अपनी प्रतिष्ठा चाहते हैं। पर जगत्पिता परमेश्वर उसका उचित फल भी प्रदान करते हैं। गति अति नीच ऊंच मति आछी-चहिय अमिय जग मिलत न छांछी। इससे भला कभी ऐसे देश का उद्धार हो सकता है। और ऐसे घृणित विचार वाले व्यक्ति कभी प्रतिष्ठा पा सकते हैं अगर कभी ऐसा हो भी जाय तो—चार दिना की चाँदनी फेर अंधेरी रात॥ वाली कहावत चरितार्थ है और अन्त में यही होता है—न खुदा ही मिला न विसाले सनम। या चोरी करी जिसके लिये खुद चोर वही कहने लगा या—जोगी था सो रम गया आसन रही भभूत के सिवा और क्या होता है।

इससे प्यारे वैद्य वरो आर्य ऋषियों की तुम भी तो संतान हो राम, लषण गौतम कपिल; करुणाद का रक्त तुम्हारे बदन में है उनकी संतान कहाने का दावा है धन्वतरि, सुश्रुत, चरक हारीत आदि सब तुम्ही में हुए हैं पर तुम्हें मोह लोभ की निद्रा ने अधिक आविभूत किया है इस दुष्टा को परित्याग न करो इसने तुम्हारा सत्यानाश कर दिया है देखो संसार किस गति को संवरण कर रहा है तुम भी कर्म क्षेत्र में आगे पैर बढ़ाओ और अपना कर्तव्य कर्म करके जग को दिखा दो कि इन्डिया में भी एक आर्य जाति है सिर्फ हिन्दू ही नाम को सार्थक न करो अनेकों कर्तव्य शील व्यक्ति दिन रात तुम्हे जगाने की कोशिश में अनेकों उपाय रच रहे हैं पर तुमने ऐसा मद्य पिया है कि टस से मस नहीं होते हो बल्कि प्रमाद की अवस्था में भी वही स्वार्थता पूर्ण प्रलाप करते हो नित्य पान सुपारी सुरती आदिमें व्यय खर्च कर देते हो पर अपने चिकित्सक इस राकेश शिशु की खबर नहीं लेते क्या तुम्हारा धर्म नहीं है कि इस शिशुकी पुष्टि पर ध्यान दो जिससे वह बालक तरुणावस्था का आनन्द जान ले यह न हो जाय कि बाल रोगों से ग्रसित होकर पूतना आदि व्याधि समेट ले जाय इससे यन्त्र मन्त्र दान पुन्य आदि क्रिया द्वारा इसका स्वास्थ करना चाहिये होनहार बिरवान के होत चीकने पात वाली कहावत इस बच्चे में देखी जाती है तरुण होने पर अनेक आशायें की जाती हैं कि धन्वतरि सम्प्रदाय का पूर्ण रक्षक होगा पर जीवन तुम्हारे लोगों के हाथमें है मुझको यह शंका पूर्ण रीति से है कि वैद्य समुदाय अपनी उन्नति से एक दम विफल है अनेकों कौमार अवस्था के पुत्र अकाल में काल कवलित होगये इसलिये आप लोग तन मन धन से इसको पूर्णावस्था प्रदान करदो अगर बालअवस्था बीत जाय और तुतलापन मिटजाय और कौमार अवस्था आप लोगों के उद्योग से आजाय तो शिक्षा व्यवस्था मैं करा दूंगा उस समय पर यह तरुण होकर के दैहिक दैविक भौतिक तापों को हरण करेगा।

प्रो० रामकृष्णजी वर्मा

प्राचीन भारत और शल्य तन्त्र

(गताँक से आगे)

(ले० प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य)

सर्पास्य

इसका आकार सर्प के मुख समान और फलककी लम्बाई १॥ अंगुलके करीब होती थी उपयोग इसका नाखार्श और गुदार्श पर किया जाता है। यथा॥ उर्वा-ग्यं व्रण कर्णार्श च छेदनेऽर्धाँगुलं फलम् इसके उपरान्त अन्य उपयोगी कार्य भी देता है।

प्रतुद

इसके द्वारा लेखन कर्म किया जाताहै यथा-प्रतुदैर्दारयेच्चैनं मर्म्माणि विवर्जयेत्

अनुशस्त्र

उपरोक्त शस्त्रों के उपरान्त कुछ अनु-शस्त्र भी कार्यमें लिये जाते हैं। जिसमें मुख्य यह है जलौका॥ इसका उपयोग रक्त मो-क्षण के लिये किया जाता है इसकी कई जातियां हैं जिसमें कुछ विषैली हैं उनका व्यौहार नहीं किया जाता है यह अशुद्ध रक्त का पान करती है-परन्तु शुद्ध रक्त का पान करते ही इसे हटा दिया जाता है जिसके लिये नमक हल्दी का अलग २ उपयोग करना चाहिये, शुद्ध रक्त खींचने की परीक्षा इस प्रकार होती है कि स्थान परकंडु प्रतीत होता है आदत्ते प्रथमं हंस, क्षीरं क्षीरोद कादिव।

क्षेत्राणि ग्रहणं जन्तु
र्योपणँ सावचारणम्।
जलौकसां च या वेत्ति,
तस्याधीनं सजयेद्व्रणदान।

नाल

इसके लिये कनक नाल का उपयोग होता था जिसको एषणी कार्यके अतिरिक्त दुष्टस्तम्भ की अवस्था में तरल आहार पेट में डालने तथा स्टमक पम्प Stomach pump का कार्य देता था जो कार्य आज कल रबड़की नलियों द्वारा होते हैं या इससे पूर्ण लिये जाते थे—

१—स्रष्टोरण्ड नालेन मूत्रयेत्तं तमामये॥ चक्र।

२—उत्पलस्य च नालेन क्षीरं पानं विधीयते॥ सुश्रुत॥

पत्र

शल्य चिकित्सा में कई प्रकार के पत्रों का व्यौहार होता था जो लेखन में कार्य देते थे जैसे भिन्न २ ग्रन्थों में भिन्न २ पत्रों का प्रयोग पाया जाता है।

१ कर्कशानि च पत्राणि लेखनार्थं प्रदर्शयेत्। सुश्रुत:

१—गोजी शेफालिका पत्रैरर्कै संलिख्य लेखयेत्। चक्रदत्त:

वांस

इसको Splint के रूपमें प्रयोग किया जाता है और ग्रन्थि आदि पर दबाव भी दिया जाता है।

विभग्नञ्च नरं दृष्ट्वा वेणु खंडेन वंधयेत्, मृत्तयेश्नवनीतैरण्ड पत्रैश्च वेष्टयेत्।

अभ्यज्य स्वेद विहवा यित्वा तु वेणु नाड्या ततः शनैः। सुश्रुत।

इस प्रकार के शस्त्रों का व्यौहार होता था इसीसे धन्वन्तरि शास्त्र हस्त कौशलसे उच्चासन पर प्राप्त हो गया था जिससे सबसे मुख्य कहलाने का सौभाग्य शल्य तन्त्र को ही प्राप्त है इसने जो २ कौशल दिखाये हैं वह गाथायें पुराणों में प्रगट हैं यथा॥ प्रशीर्णा दन्तकः पूष्णोनेत्रे नष्टे भग-स्पच-बज्रणश्च भुजस्तम्भः ताभ्यामेव चिकित्सतः। चरक में अश्विनौ तथा अथर्वा दोनों को आयुर्वेद का जन्म दाता माना गया है यह दोनों शल्यतन्त्र विशेषज्ञ थ ।जसमें अश्विनो को निरुक्तमें दैवचिकित्सक बताया गया है यथा अश्विनौ देव भिषजौ यज्ञ वाह विति स्मृतै॥ और अथर्वा को ऋग्वेद दशम मंडलमें औषधि सूक्तका ऋषि कहा गया है। चरकमें इनके विषय में इस प्रकार लिखा है।

ऋग्यजु सामार्थक वेदानामात्मनोऽथर्व वेदे भक्तिरादेश्या। वेदोह्यथर्वा स्वस्त्ययन बलि मंगल होम प्रायश्चितोपवासादिभिः चिकित्सा प्राह।

सुश्रुत में भी वर्णन किया गया है कि अभिघात से उत्पन्न व्रणों का सरोहन करने के लिये सबसे प्रथम शल्य तन्त्र की आवश्यकता पड़ती है इससे सर्व प्राचीन इसको मानना श्रेष्ट है शल्य तन्त्र में जिस प्रकार शस्त्रों का व्यौहार होता है उसी प्रकार से यन्त्रों का भी प्रयोग किया जाता है पाठकों के लाभार्थ उन्हें भी यहां पर वर्णन करते हैं।

ताल यंत्र

यह दो प्रकार का होता है जिसमें एक नाल लगा हो और दूसरा जिसमें दो नाल लगे हों लम्बाई बारह अंगुल प्रमाण इसका व्यौहार नाक-कान आदि के शल्य निकालने में होता है ताल शब्द का अर्थ कोई मछलीके छिलका (scales) और कोई तालु (palate) अर्थ करते यथाः ताल यन्त्रे द्वादशांगुले मत्स्यताल वेशक ताल छिवाल के। कर्ण नासा नाड़ी शल्यानाभा हरणार्थम्॥

नाड़ी यंत्र

यह अनेकों तरहके होते हैं पर संख्या २० है। जिसमें कुछ दोनों तरफ से खुले कुछ एक तरफ से बन्द कुछ में अनेक छिद्र होते हैं कार्य इनका आशयों (Cavities) के निरीक्षण करने तथा शल्य देखने में होता है यथा—

नाड़ी यंत्राणिसुबिराण्ये कानेक मुखानिच स्रोतोगतानां शल्यानामाशयानांच दर्शने। क्रियांणाँ सुकरत्वाय कुर्यादाचूषणायच तद्विस्तार परीणाह दैर्घ्यं श्रोतोऽनुरोधतः

शल्य निर्घातनी

इस यन्त्र का सिरा कमल के समान होता था और दूसरा शिरा खुला चार भागों में विभक्त होता था लम्बाई १२ अंगुल होती है इससे पकड़कर शल्य को चारों तरफ से घुमाकर ढीला कर दिया जाता था और गम्भीर प्रविष्ट शल्य निकाला जाता था परन्तु सुश्रुत ने दृढ़ संलग्न शल्य से निकालने के लिये लोहके एक हथोड़े का उपयोग करना कहा है इससे शल्य ढीला हो जाता है पद्मकर्णि-क्रिया मूर्ध्नि सदृशी द्वादशांगुला चतुर्धशु-षिरा नाडी शल्य निर्घातनी मता।

कंठ शल्यावलोकिनी

इसे गले में फँसे शल्य को निकालने में व्योहार करते हैं सुश्रुतने शल्य गलेका निकालने की तीन विधियां दी है यथा—दशाँगुलार्द्धनाहाढ्यः कण्ठ शल्यावलो-किनी नाड़ी जाम्बुनि कण्ठगतस्य शल्यस्यो-पलेखार्थि-प्रवेश्याग्नि तप्ताश्च शलाकां।

तथावगृह्य शीताभिरद्भिः परिषिच्य स्थिरी भूत युद्धरेत्। अजादुग्ध मधूच्छिष्ट लिप्तया शलाकया पूर्व वलयेत ॥सुश्रुत॥ ॥१॥ लोहे की गरम शलाका को अन्य शीत शलाका में रखकर गले में प्रविष्ट करें इससे वह वस्तु उष्णता से गल जायगी या धुलकर चिपक जायगी तब धीरे २ बाहर कर लेवें ॥२॥ लाख या मोमको पि-घला कर शलाका में लगादे जिससे वस्तु चिपक कर बाहर आ जायगी ॥३॥ इसमें बालों का ब्रुश एक दृढ़ तागासे बांध करके रोगी को निगलवा दे तागाके दूसरे सिरे पर एक लकड़ी बांध दे जिससे तागा अन्दर न जाय फिर पानी पिलाकर वमन करावे जिससे शल्य बाहर आ जाय यदि शल्य पार्श्व में लगा हो तो बुरुश से निकाले यह विधि ग्रास शल्य में अधिक प्रशस्त है—

पंचमुखी और त्रिमुखी

नाडी पंच मुखा छिद्रा चतुष्कर्णस्य संग्रहे। वारङ्गस्य द्विकर्णस्य त्रिछिद्रा तत्प्र-माणतः यह चार कोणवाले एवं तीनकोण वाले बाण को निकालने में प्रयुक्त होती है·

अर्शो यंत्र

इनका आकार गौस्तन के तुल्य होता है यह लकड़ी पीतल, हाथीदाँत, लोहा के बीचमें खोखले बनाये जाते हैं पुरुषों के लिये चार अंगुल परिध पांच अंगुल स्त्रियों के लिये एक २ अंगुल अधिक बनाये जाते हैं इनमें दो छेद होते हैं एकसे रोगकी परीक्षा दूसरे से क्रियाकी जाती है क्रिया में खार दाह आदि छिद्रकी लम्बाई तीन अंगुल और परिध अंगुष्ट प्रमाण होती है छिद्र से अर्द्ध अंगुल दूर पर एक गोल उभार पाया जाता है परन्तु वाग्भटजी ने दो भिन्न २ यन्त्रों का उपयोग दोनों कार्यों के लिये बताया है जिनकी लम्बाई परिध समान होती थी वे दोनों इकट्ठे प्रयुक्त होते थे एक से परीक्षा दूसरे से क्रिया कर्म यथा।

अर्श सांगोस्तना कारं यंत्रकं चतुरंगुलम्। नाहे पंचाँगुलं पुंसा प्रमदाना षडंगुलम्। द्विछिद्रं दर्शने व्याधैरेकछिद्रन्तु कर्मणि ॥ वाग्भट ॥

शमी यंत्र

इसी प्रकार का एकयन्त्र और बनाया जाता है जिसके पार्श्व में छिद्र नहीं होते हैं इस से मस्से देखे जाते हैं यथा— शम्यारव्यं तादृगछिद्रं यंत्रमर्शः प्रपीडनम् और अश्व के अर्श भी देखे जाते हैं जिससे उपरोक्त अर्शयन्त्र का व्यौहार किया जाता है अर्शस्तेन तुघाहस्य द्विछिद्रेण विलोकयेत। एकछिद्रेणवैं कर्म कुर्याच्छेदादि पूर्वकम्।

भगंदर यंत्र

इसका आकार प्रकार आदि सब अर्श यंत्र के समान होता है परन्तु वर्णिका नहीं होती किन्तु अर्द्धचन्द्र होता है। सर्वथाऽपनयेदोष्ट छिद्रादूर्ध्वं भगंदरे। छिद्रादूर्ध्वं हरेदोष्टं अर्शो यँत्रस्य यँत्रविद् ॥ वाग्भट ॥ तनोभगंदरे दद्यात एतदर्धेन्दु सन्निभम ॥ सुश्रुत ॥

अंगुलि त्राण

इसका आकार कौवा की चोंच के समान और लम्बाई चार अंगुल होती है इसका उपयोग मुख खोलनेमें किया जाता है आज कल इस कार्य के लिये mouth gog यंत्र व्यौहार होता है ॥ तत्र वक्तं विवृतौ संवृत्त मुखस्यातुरस्य मुखव्यादान निमित्तं सुखं सुखकरं स्यात्। त इदं दंतघातात् रक्षति। इससे अंगुलियो की रक्षा होती है अँगुलीदंतेभ्यो रक्षणार्थं त्वादंगुली त्राण मिति नाम।

नाशा यंत्र

यह भी अर्श यंत्र के समान है उपयोग नासाउर्द-नाशार्शा में होता है यह अर्श यंत्र से छोटा परिध में पतला होता है लम्बाई २ अंगुल छिद्रतर्जनी जाने योग्य इसमें एक पार्श्व होता है। घ्राणार्बुदार्श सामेकच्छिद्रा नाड़ी द्वयङ्गुला प्रदेशिनीपरिणाहास्पाद् भगंदर यंत्र वत्। इससे प्रथमन नस्य दिया जाता है ध्यान विरेचनं चूर्ण युञ्जयात् तु मुखे वायुना (वाग्भट) नावनं चूर्णाञ्चैषां प्रथमने हितम् (चरक) शार्ङ्गधर— चक्रदत्त ने इसका आकार ६ अंगुल बताया है और छिद्र नासाछिद्र के बराबर बताया है परन्तु यह एकप्रकार का चम्मच है (donle nonspoon)षडंगुला द्विवक्त्रा या नाड़ी चूर्णतथाधमेत्। तीक्ष्णां कोलमितं वक्त्र घातैः प्रथमनं हितम्। इसी प्रकार से एक अन्य यंत्र बनाकर फाहा तैलादि में भिगोकर नली में रख कर नासा में प्रविष्ट किया जाता था नासापुटं पिधायैकं पर्यायेण निषेचयेत्। कृष्णं भैषज्यं पुनर्नाड्या पिचुना ऽथवा ॥ और नासास्थ के भंग तथा Rminaplastic opira operation में भी नाड़ी का उपयोग करना प्रशस्त है— सुसंहित सम्प्रगथो यथा वन्नाड़ी छ्यंन नाभि समीक्ष्य बध्वा ॥ तथा च ॥ नासा सन्धा विवृतां वां ऋज्वी कृत्वा शलाकया पृथक नासिक्यो ४ नाड्यो द्विमुख्यो संप्रवेशयेत्॥ अपूर्ण

शरद ऋतु का विराट उपहार

उत्तमोत्तम पाक सेवन कीजिये।

हमारी फार्मेसी में सभी प्रकार के पाक स्त्रियों व पुरुषों की बीमारियों को दूर करने जैसे प्रदर, प्रमेह, वीर्यका पतलापन, इन्द्रिय स्थिलतादि पर शास्त्रोक्त विधिनुसार शुद्धता पूर्वक तैयार किये गये हैं जैसे सौभाग्य सुंठी पाक, सुपारीपाक, कौंचपाक मूसलीपाक, शतावरीपाक, शिलाजा पाक दि सभी प्रकार के पाक तैयार हैं इसके अलावा जो सज्जन इच्छानुसार पाक तैयार करवाना चाहें आर्डर देने पर तैयार किया जा सकता है। विलासी पुरुषों तथा शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाकेवाले सज्जनों को यही समय है कि वह अपनी शारीरिक कमी को पूरा करें।

पता—मैनेजर श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर ।
इटावा यू० पी०

स्वर्ण अवसर

राकेश के ३ नए ग्राहक बनाने वाले सज्जन को सुप्रसिद्ध पुस्तक "प्रयाग महात्म" शताध्यायी सरल भाषा टीका युक्त ५) रु० की पुस्तक ४) में ही सिर्फ एक मास तक दी जायगी।

२—एक ग्राहक बनाने वाले सज्जनको अपने यहाँ की सभी औषधियों पर २५) सैकड़ा कमीशन देंगे।

यह सुअवसर सिर्फ १ मास तक ही रहेगा

वैद्यराज पं० श्याम नारायण शर्मा
तीर्थेन्द्र औषधालय दारागंज-प्रयाग

सूचना।

नेशनल आयुर्वेद विद्यालय मुनिहाई आगरा ने १ जनवरी सन् १९३० ई० से "वैद्य-बन्धु" नामक मासिक पत्र निकालने का निश्चय किया है। इसमें भारतवर्ष के प्रसिद्ध २ वैद्यों, हकीमों, और डाक्टरों के गवेषणापूर्ण लेख, विशेष अनुभूत प्रयोग रोगों की जटिल समस्याओं पर विचार, जड़ी बूटी, खनिज पदार्थों का विवरण, पेटेन्ट दवाओं के नुसखे, वैद्य डाक्टरी आदि २ बातें होंगी। ३० दिसम्बर सन १९२९ ई० तक ग्राहक होने वाले सज्जनों को एक रुपये के मूल्य की २२५ पृष्ठ की मोतीज़वर चिकित्सा केवल चार आने लेकर उपहार में दी जायगी वार्षिक मूल्य केवल २) रु० मात्र होगा। —व्यवस्थापक

भगवान धन्वन्तरि प्रार्थना।

(धनवन्तरि महोत्सव पर श्री भगवत आयु० फार्मेसी बरालोकपुर में पठित एक गान)

सुधि लो धनवन्तरि महाराज, आयुर्वेद रचाने वाले ?

देखे रोगी जब मृत्यु लोक, फैला घर २ में अति शोक, अपनी अनुकम्पाकी झोक
तुम हो धीर बंधाने वाले ॥१॥

उरमें धारण कर उपकार, लीना मनुज रूप अवतार, करके आयुर्वेदोद्धार।
जग को स्वस्थ बनाने वाले ॥२॥

निश्चर देवों पर हो क्रुद्ध, करने लग गये पापी युद्ध, लेकर देवों की तुम सुध
तुम हो प्राण बचाने वाले ॥३॥

शल्य शालाक्य विषयका ज्ञान, करके मृत्युलोक मैदान, कीन्हा सृष्टिका कल्याण
वैद्यक ज्ञान सिखाने वाले ॥४॥

आयुर्वेदिक आठो अङ्ग, रचकर स्वास्थ विषय का ढङ्ग, लेकर अमृतघट को सङ्ग
सब दुःख दर्द मिटाने वाले ॥५॥

करके आयुर्वेद उपदेश, फिरसे करदो जागृति देश, जिससे उज्ज्वल हो राकेश
तुम हो ज्योति जगाने वाले ॥६॥

आकर नाशो रुजसंताप, जिस विधि आये थे कर्मी आप, बढ़गयारोग शोकमोह पाप
तुम हो दुःख में आने वाले ॥७॥

जगमें हो "राकेश" प्रकाश, होकर आधिव्याधिका नाश, शर्मा कर्ता यही अभिलाष
तुम हो नियम निभाने वाले ॥८॥

ले० पं० मुन्शीराम शर्मा वैद्य

वीर्य और सामाजिक व्यवस्था

(ले० प्रोफे० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एल० सी० एल० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य)

छन्द ॥ स्वच्छन्दता से कर चुके करने पड़े अस्ताव जो ;
जग जायँ तेरी नोकसे सोते पड़े हों भाव जो ॥

वीर्य वह वस्तु है जिससे कि मनुष्य उत्पन्न होते हैं यह मनुष्यके शरीरमें रहकर शरीरके परिमाणुओं को मिलाकर ऐसा पुष्ट कर दिया करता है कि सैकड़ों वर्ष पर्यन्त शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है। हड्डियाँ रगें पुष्ट होकर रक्त साफ होता है इसी वीर्य के बल मनुष्य का मस्तिष्क पूर्ण बलवान हो जाता है जिससे कि वेदों के ज्ञान को भी अपने मस्तिष्क में धर सकता है और शरीर से तप करके सैकड़ों वर्ष तक योग कर सकता है शरीर की पुष्टता और आनन्द इसी की रक्षा करने में हो हैं।

परन्तु अब जो मनुष्य वीर्य की रक्षा करने समर्थ व्यायाम और मस्तिष्क का काम नहीं करते हैं और राजसी भोजन पान करते हैं वह इस वीर्यकी रक्षा किसी प्रकार से भी नहीं कर सकते हैं इसका रोकना अति कठिन हो जाया करता है और उन्हें विषय करना पड़ता है। प्राचीन समय में जब धर्म का सूर्य उदय था तो ब्राह्मण पचास वर्ष तक वीर्यको रक्षा करते थे और विद्या विचार के कार्य में लगाते थे और अन्य उपाय द्वारा वर्च घटना नहीं जानते थे। स्त्री को भी आयु पर्यन्त में एक वार दान देते थे वैदिक रीति से भोग करके एक संतान पैदा करते थे और दो संतान से अधिक पैदा करना अधर्म समझते थे इसी प्रकार क्षत्री दो सन्तान और वैश्य कई, शूद्र बहुत पैदा करते थे इससे अधिक वीर्य देना श्वान-वत समझा जाता था परन्तु आजकल तो दिन रात भर में कई वार दान हो जाता है। ऐसे व्यक्ति जो इस विद्या ज्ञान प्राणायाम वेद और योग के आनन्द को न जानकर झूठे दुखदाई और थोड़े सुख के लिये अन्धे होकर अपने अनमोल वीर्य का वृथा सत्यानाश कर रहे हैं पशुओं से भी बुरे हैं कारण कि पशु तो अपने समय पर वार्य दान देते हैं। अब तीन प्रकार के पुरुष संसार में प्रचार पा रहे है जिनके लिये मुझे महान शोक है कि क्या से क्या हो गया।

प्रथम उन पर जो पच्चीस वर्ष से प्रथम अपने वीर्य को वृथा नाश कर देते हैं।

२—उन पुरुषों पर जो उस समय पर विषय करते हैं जब कि स्त्री की गोदी में दूध पीता बच्चा हो।

३—तीसरे वह व्यक्ति जो नित्य प्रति स्त्री को वीर्य दान देते हैं या वेश्याओं से मुंह काला करते हैं या खूब सूरत लौंडों को गले लगाये फिरते रहते हैं इनसे भी बढ़कर स्वयं हस्तक्रिया से मानसिक ध्यान वाले विशेष बढ़ गये हैं।

बड़े शोक की बात है कि इस समय इस प्रकार के पुरुष संसार भर में अधिक देख पड़ते हैं। इसीसे अधर्म फैलता जाता है और पशुओं की भाँति उनकी बुद्धियाँ हो गई हैं छोटे २ दुर्बल शरीर होकर आयु बहुत कम रह गई है प्रत्येक निर्बल और रोगी रह कर सौ बरस वर्ष की आयु तक रहित रह कर अकाल अवस्था में ही दुख भोगते हुए प्राण त्याग देते हैं शोक है कि देश रोगों और बीमारियों से बढ़ रहा है परमात्मा शांति दे—शूर वीरता की पूर्ण आयु तो मिलना कठिन है यहाँ पर अपने रोगों को ही निवारण करना कठिन हो रहा है। प्राणायाम और तप करना वेदों का पढ़ना अलग रहा यहाँ तो समझने की भी शक्ति नहीं है जंगलोंमें तप करना गरमी सर्दी का सहन करना तो दूर परन्तु जो थोड़ी सी सर्दी लग जावे तो शरीर ही छूट जाय। शरीर बहुत दुर्बल हो गये हैं बड़ी कठिनता से ऐसे शरीरों में थोड़े दिन तक यह प्राण रह हैं मस्तिष्क की यह दशा है कि वेद विद पढ़ना तो असम्भव जानते हैं वेद विद को भी पूरी तौर से नहीं पढ़ सकते अगर अधिक कुछ वेद विद्या पढ़लें तो विचारे नेत्र हो निर्मल हो जावें और म स्तिष्क और निगाहें कमजोर हो जा जिससे प्रत्येक समय सिर पर हाथ औ आंखों में ऐनक रखनी पड़े और निरोगत के लिये रोते हुए देख पड़ें। बस थोड़ समय पहिले तो मनुष्यों की दशा अच्छ थी परन्तु अब तो दिन पर दिन अन्धका फैलता जाता है बीमारियां तो यहां ऐसी फैल गई है कि जिसमें नये २ रोग प्रकट होते देखेजाते हैं अगर थोड़े दिन और ह ऐसी दशा रही तो संसार का बुरा हाल होना बस हे सज्जनो मैं पूर्णतया सिद्धान्त निश्चित करके कहता हूँ कि १ महीने एक बार भी वीर्य दान देनेवालों को प्राणायाम कदापि न करना चाहिये अन्यथा हानि छोड़ कर कभी लाभ नहीं होगा इसी प्रकार व्यायाम करना भी मना है अगर व्यायाम किया जायगा तो अण्डवृद्धि, हर्निया उदर रोगों की वृद्धि हो जावेगी, जो आज प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर हो रहा है मैंने बहुत सी लैटिन पुस्तकों को पढ़कर ज्ञात किया है कि अब से कोई ५०० वर्ष प्रथम इस भारत वर्ष के सारे पुरुष वेद

मार्ग पर चलते थे जिसका उन्होंने वर्णन अपने यहाँ पर किया है और रचयिता महाशय लिखते हैं कि सब मनुष्य अपने अपने वर्णानुसार कार्य करते थे स्त्रियाँ विदुषी होती थीं और [illegible] वह स्त्रियाँ इच्छानुसार स्वयम्वर करती थीं और उनके विवाह बनाती थीं सत्यता प्रत्येक स्थान पर फैली हुई थी चोर बदमाश का नाम भी नहीं था सभी प्रकार [illegible] भी प्रकार [illegible] अधिक [illegible] रखा वस्त्र पहिनते थे और साधारण भोजन माँस नहीं खाते थे दूध घी में विशेष हित था खूब तन्दुरुस्त रहते थे डेढ़ सौ और दो सौ वर्ष की आयु होती थी और सौ वर्ष से प्रथम मरने वाले को अधर्मी कहा करते थे कि इन्होंने कोई भूल वेदोंके अनुसार चलने में और कर्म करने में की है इसी से जल्द मर गया।

ब्रह्मचर्य में रहा करते थे वीर्यकी रक्षा जवाहरात दौलत से भी अधिक करते थे अपनी खास स्त्री के साथ भी एक या दो बार से अधिक सन्तान उत्पत्ति को वीर्य खराब नहीं करते थे बल्कि कोई २ तो सारी उम्र तक वीर्य की रक्षा करते थे सैकड़ों तरह के हुनर जानते थे परन्तु आत्मिक विद्यामें विशेष प्रेम था अब वर्तमान अवनति इस प्रकार आई कि ब्राह्मण लोग अधिक धनवान हो गये वह अपनी सन्तान को दौलत छोड़कर मरते थे फिर वह सन्तान दुख पाकर के शेष विलास में फंस कर सर्वथा भ्रष्ट होती इसी प्रकार [illegible] होती गई और [illegible] इस अवस्था को प्राप्त हो गई है कि [illegible] अपने को भी लज्जा लगता है।

[illegible] धन छोड़कर मर जाते हैं वह सब [illegible] फेंक जाया करते हैं दुनियाँ में जो लोग धन छोड़ कर मरते हैं वह अपनी औलाद को मुफ्त खोर भ्रष्टाचारी बना जाते हैं जिससे यह अधर्म फैल जाया करता है। अतः इससे बढ़कर और कोई पापी दृष्टि नहीं आता है। मनुष्यको चाहिये कि अपनी सन्तान के लिये धन कभी एकत्र न करे बल्कि उनको विद्या ज्ञान का धन देना चाहिये। यदि सन्तान धर्मात्मा होगी तो स्वयं धन उपार्जन कर लेगी अगर अधर्मी होगी तो सब तरह से बरबाद कर देगी इस से सब धन धर्म व परोपकार पर बलिदान कर देना चाहिये और संसार को स्वप्नवत समझके नाम बाकी रहने के धोखा में न रहे सब धर्म सब विद्या की खोज पूर्ण रीतिसे ब्रह्मचर्य धारण करके करता रहे ऐसा करते हुए अगर शरीर छूट जावेगा तो फिर मनुष्य शरीर प्राप्त होगा और उसमें सब संस्कार शुद्ध होने से अपने आप इसी रास्ते पर फिर आ जायगा परन्तु वह सब

ईश्वरीय शक्ति के द्वारा ही सम्पादित होता है वह ईश्वरीय शक्ति वीर्य है इसीके नष्ट होने से बहुत कम किसी कार्यके पास तक पहुंचते हैं। संसार में सम्पूर्ण वस्तु अपने परमाणुओं के मिलने से पुष्ट होकर बहुत समय तक बनी रहती है, पृथ्वी परिमाणुओं से ही मिलकर बनी है लोहा धातु सब परिमाणुओंसे बने हैं जिस वस्तुके अणु परिमाणु अधिक मिलकर कड़े होगयेहैं वह बहुत काल पर्य्यन्त रहती है। और उस वस्तु के परिमाणु बहुत समय के उपरान्त अलग होते हैं परन्तु जिसके अणु कम होते हैं वह वस्तु नर्म और ढीली रहती है इसी कारण अति शीघ्र नाश को प्राप्त हो जाती है। इसकी जांच संसार के सारे जीवों के शरीर को देख कर कर सकते हो पुष्ट शरीर वाले अधिक समय तक बने रहते हैं निर्बल शीघ्र ही नाश को प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार से वृक्ष व धातु व अन्य वस्तुओं को देखकर उनके स्थिर रहने और नाश होने का हाल जान पड़ता है ईश्वरीय शक्ति किसी को मारती व जिलाती नहीं है यह परिमाणुओंसे ही जिन्दगी चल रही है जैसा कर्म करो वैसा फल सामने आवे विद्या पढ़ने का अभ्यास करो विद्वान बन जाओ योग का कर्म करो तो योगी बन जाओ, शरीर की पुष्टि का कर्म करो तो बड़ी आयु हो, इसी कारण प्रथम लोग शरीर की पुष्टिका कार्य किया करते थे जिसके करने से शरीर हृष्ट पुष्ट होकर सैकड़ों वर्ष तक शरीर बना रहता था आज उलटा उल्टा व्योहार करने से जल्द ही मर जाते हैं और दोष कलियुग के सिर पर मढ़ते हैं कि इस युग में इतनी ही आयु है, अगर इन अंधे गांठ के पूरों से पूछा कि कर्म तो तुम करते हो फल कलियुग देते है, बाहरे बुद्धि कहांतक कहा जाय सभी अपने निर्दोष बनने की फिकरमें हैं परन्तु एकके पीछे लाठी लेकर दौड़ते हैं—

इस जमाने में अब कोई जिसे देखो सभी अखबारों बनने का दावा करते हैं जिनमें फिर वह [illegible] सब्जबाग तो इस कदर दे चुके [illegible] जिसे ठगने की [illegible] भी [illegible] को [illegible] ले तो यही कहेगा [illegible] किया है कि [illegible] व्यभिचारियों से भी बने बीते हैं [illegible] पूर्ण तारा हैं, इनमें [illegible] विशेष कर्मशत हो रहा है। जिस [illegible] शिक्षा पा रहा था [illegible] विषयक इंगलिश [illegible] मैंने उसे आदि से अन्त तक पढ़ा वह मुझे बहुत ही अच्छा [illegible] परन्तु खोटी अवस्था होने से विद्वे [illegible] न होने पर [illegible] पूर्णतया निश्चय कर लिया कि अवश्य इसका पालन करके अपनी शक्तिको शक्ति बढ़ाऊंगा, इस समय मैं अनेकों पुस्तकों में पढ़ने और बुद्धि द्वारा विचार

करने पर ज्यों २ मस्तिष्क शक्ति पूर्ण होती गई त्यों २ बुद्धि का विकाश बढ़ता गया इस प्रकारसे २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य रहने से आज भी वैसी ही उत्तम बुद्धि बनी हुई है तो भला जो आजन्म ब्रह्मचर्य पालते थे न मालूम उनमें कितनी न विशेषता हो जाती रही हो आधुनिक उदाहरण के लिये स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज हैं जिनकी शक्ति में कमी थी कब है—

सारे संसार में हमें दो प्रकार की वस्तुयें दिखाई देती हैं एक चैतन्य दूसरी जड़। इनमें चैतन्य वह होता है जिसमें बुद्धि विचार शक्ति ज्ञान ग्रहण त्याग ग्रहण करने की शक्ति विद्यमान हो, वह पूर्ण शक्तिमान और वह इन्द्रियों के शरीरों में रह कर नेत्रों से दिखाई नहीं पड़ते हैं। यद्यपि वह चैतन्य प्रकृति से बने हुये शरीर को देख सकता है। परन्तु उस चैतन्य रूपी आत्मा को कभी न देख सकते हैं जैसे कि हम रात दिन मनुष्य संसार में आना जाना व्यवहार किये हुये विचरते हैं, इनके अन्दर तो हम देखते हैं परन्तु जीव को नहीं, परन्तु चलते फिरते देख कर और बोलते सुनकर और भी बहुत से आचारों से हम जान लेते हैं कि इनके अन्दर चेतन जीव है। प्रकृति चेतन के वश में है, परन्तु चेतन जीव अपने प्रकृति से बने हुये शरीर को जैसे चाहे तोड़ा बड़ा कर सकता है। पुष्ट और बलवान बना सकता है। जिससे कि उस में आराम से रह सकै और अगर मूर्खता से काम लेते तो वह शरीर खराब और दुर्बल हो जाता। जिससे कि रोगादि उत्पन्न होकर शरीर शीघ्र ही नाशको प्राप्त हो जाता है और चेतन्य को दूसरे शरीर में अन्य रूपधारण करना पड़ता है। कारण यह है कि अज्ञानता मूर्खता से चेतन को नाना प्रकार के दुःख उठाने पड़ते हैं, बुद्धि और विचार पूर्वक कर्म करने से आनन्द प्राप्त होता है विद्वान मनुष्य शरीरों का ख्याल नहीं करते हैं चाहे वह सुन्दर हो या कुरूप हो उनके अन्दर वास करनेवाले चैतन्य की परीक्षा लेते हैं। विद्वानका आदर करते हैं और मूर्ख से घृणा करते हैं परन्तु साधारण मनुष्य इससे विरुद्ध करते हैं।

अब वस्तु यह है कि जिसका आकार है और नेत्रों से दिखाई देता हो, परन्तु चैतन्यताई विचार शक्ति और बोलने सुनने इत्यादि गुण चैतन्य जैसे न हो और चैतन्य के अधीन हों जैसे हम किसी चेतन्य को पुकारें तो वह शीघ्र ही उसको सुन कर अपने प्रकृति से बने हुये शरीर को अपनी शक्तिसे जोर देकर हमारे पास लाकर खड़ा कर देवेगा और जिस तरह से हम उससे कहें उसी तरहसे वह अपने शरीर को टेढ़ा या सीधा करके खड़ा हो जायेगा लेकिन प्रकृति हमारी वाणी को नहीं सुन सकती जैसे हमको मकान की आवश्यकता हो और हम उसको बुलायें

कि ऐ प्रकृति तू एक बहुत सुन्दर इच्छा पूर्वक महल और मकान बन करके खड़ी होजा तो वह न तो हमारी बात सुन सकती है और न स्वयं मकान बना सकती है कारण यह है कि बिना किसी चैतन्य को कोई जड़ वस्तु अपनी शक्ति से इच्छानुसार नहीं बन सकती है। इसी तरहसे जब हम किसी सुन्दर मकान को इच्छा पूर्वक बहुत ही शोभायमान बना हुआ देखते हैं और अपने जी में यह समझ लें कि जड़ प्रकृति अपनी शक्तिसे ऐसा सुन्दर मकान बना गई है तो हमारी बड़ी मूर्खता है क्योंकि ऐसा होना असम्भव है उस समय ठीक विचार ज्ञानी और विद्वान का यह होता है कि किसी चेतन्य ने अपनी बुद्धि के बल से इसको ऐसा सुन्दर इच्छा पूर्वक बनाया है यह भी विचार होता है कि यह चेतन बहुत ही बुद्धिमान चतुर कारीगर होगा कि जिसने जड़ रूप प्रकृति को अपनी कृपासे ऐसा सुन्दर बनाया है। इसी तरह से अब हम किसी बनी हुई चीज को देखते हैं तो प्रथम हम को तीन बातों का ध्यान होता है। प्रथम वह वस्तु जो हमारे सामने बनी हुई दिखाई देती है जिसको कार्य कहते हैं। दूसरे यह जिस वस्तु द्वारा बनी हो जिसको कारण कहा जाता है। तीसरे उसके बनाने वाले का ध्यान उत्पन्न होता है जिसको कर्ता कहते और मिट्टी कारण हुई जिससे यह मकान बना है और जिस मनुष्य ने इसको रचना किया है वह कर्ता होता है।

इसी प्रकार से संसार की जिस बनी हुई वस्तु पर दृष्टि पड़ती है तो हम को इनहीं तीन बातों का ख्याल पड़ता है। कारण, कार्य, कर्ता, इसी तरह से अब हम इस पूर्ण रीतिसे बने हुये संसारको देखते हैं। जिसमें ठौर २ स्थान पर नदी पर्वत समुद्र देश देशान्तर नाना प्रकारके शरीर धारी जीव पशु पक्षी इत्यादि और भांति २ के वृक्ष फल फूल और भोजन के लिये नाज इत्यादि आकाश में सूर्य चन्द्रमा तारा गण आदि यथा नियत समय पर उदय अस्त होते हैं। शरद ऋतु वर्षाऋतु ग्रीष्म ऋतु इत्यादि का ठीक २ समय पर होना और तरह २ के मनुष्य इस सुन्दर संसार में देख कर विचार उत्पन्न होता है। कि यह कार्य रूप संसार है, अब इसका कारण क्या है तो वही समझ में आता है कि इसका कारण प्रकृति है। कि जिससे संसार और उसकी समस्त वस्तुयें बनी है अब इस बात का विचार करो कि जो हम एक मुट्ठी मिट्टी से भर ले और उसके करोड़ों भाग कर डालें।

शेष फिर।

कामना

प्रियवर! नव उत्साह समन्वित होता रहे हमेश।
मेरा प्यारा सखा जगत का सच्चा हितकारी राकेश॥
दिव्य ज्योतिसे करे अविद्या नैश-तिमिर का पूरा नाश।
फैलावे पीयूष-पाणिता वैद्यों में राकेश प्रकाश॥१॥
सुधा सींचि मृत आयु निगमका जीवनदाता बन जावे।
नित नव आविष्कार प्रकट कर गूढ़ तत्व को बतलावे॥
ऐसा सदुपदेश का दानी हमको चहिये चरित उदार।
वैद्यक समाचार का जग में करने वाला पूर्ण प्रचार॥२॥
छलता को छलने वाला औ कर्म वीरता का सेवक।
सच्चा वैद्य निगम का प्रेमी चहिये हमको सम्पादक॥
दुराक्षेप दुःसाहसिकों का मुख मर्दन करने वाला।
सत्प्रमाण सत्पक्ष समर्थक चहिये इक लिखने वाला॥३॥
आक्षेपों की समालोचना विविध भाँति करने वाला।
शास्त्र युक्ति औ सच्चे मन से शंका को हरने वाला॥
पूर्ण निरंकुश सत्साहस से आगे पग धरने वाला।
हमको चहिये एक समालोचक सुविज्ञ औ मत-वाला॥४॥
इतना होने पर भी मिथ्या कभी एक रह जावेगी।
और यही सज्जन जन के शुभ मानस में गड़ जावेगी॥
इसी लिये मेरे उत्साही आइकगण का है कर्तव्य।
वैद्य निगम का आदर करना यह उद्देश्य रहे स्मर्तव्य॥५॥

काव्यतीर्थ आयुर्वेदाचार्य—
पँ० गिरजादत्त पाठक वैद्य
श्री कालिकेश्वर औषधालय पो० बक्सर (आरा)
(बिहार)

हैजा (विशूचिका)

(गताङ्क से आगे)

कोलेरा सिका

Cholera Sicca.

यह भी अति कठिन पीड़ा है इससे दस्त और वमन होने के प्रथम ही रोगी का नीलवर्ण होकर प्राण नष्ट हो जाया करता है। इससे पसली दर्द पेटमें होकर हृदय अज्ञानावस्था होजाती है या अन्य दस्त कय एक दो होकर अज्ञान होजाता है और कुछ ही घन्टे के बाद चल बसता है इस रोगी के शवागार में मृत शरीर की परीक्षा करने से देखा गया है कि उसकी अन्तरी में विशूचिका की मल की तरह बहु परिमाण जलवत मल रहता है रोग की अतिशय उग्रता के हेतु अंतरियों के शून्य होजाने से मल निकलने का समय नहीं मिलता है और उचित चिकित्सा भी नहीं कराई जाती न रोगी को दवा खाने का वक्त ही प्राप्त होता है क्योंकि इसका कार्य बड़ी शीघ्रता के साथ जीवनलीला को समाप्त करता है। जब इसका १-२ केश होजाता है तो लोग उसे कोई व्याधि निश्चित नहीं करते और इधर उधर के मनमाने वाक्य जो अप्रमाण हैं उच्चारण करते हैं और पाषाण आदि पूजा निर्धारित करते हैं बड़े २ धैर्यवानों की बुद्धि चक्कर काटने लगती है अगर कुछ भी ज्ञान से काम लें और धन्वन्तरि सम्प्रदाय का अनुकरण करें तो शीघ्र व्याधि निर्धारित हो जासकती है।

इङ्गलिश या बिलियस कोलेरा

यह पीड़ा आधा रातके बाद अचानक उपस्थित होजाती है यह विशेष करके कोई विष जनित नहीं है। दस्त और वमन में पित्त का भाग बहुत ठहरता है मल दुर्गन्धमय होता है। पेट में देहना अधिक रहती है। बहु संख्या दस्त होने के बाद मल वर्णहीन होजाता है यह पीड़ा यदि शीघ्र आराम न हुआ तो एसियाटिक कोलेरा के लक्षण पैदा, कोलेप्स इत्यादि लक्षण समूह देखा जाता है इसमें विशेष भय नहीं रहता है रोगी शीघ्र ही आरोग्य लाभ करता है।

कीटाणुवाद

आधुनिक पश्चिमी विद्वानों ने जब विशूचिका रोगी की मृत परीक्षा की जाती है तो अङ्ग प्रत्यंग विशेष,कर अंतड़ी में एक प्रकार के कीटाणु पाये जाते हैं जिनको कोका कौमलल कहा जाता है

काक साहबने सर्व प्रथम इन कीटाणु की जांच खूब किया था इसीसे उन्हीं के नाम से इसके अधिष्कार कर्त्ता कही गिने जाते हैं. यह कीटाणु जब पर्य्याप्त संख्यक शरीर में स्थान कर लेते हैं तब अपनी शक्ति से शरीर ध्वंस कर देते हैं यद्यपि प्रतिरोधन शक्ति जो शरीरमें ईश्वर प्रदत्त मौजूद है इसे बहुत रोकती है और जब वह कमजोर होजाती है तभी इनका कार्य होता है उस समय जब शरीर में प्रवेश करते हैं स्वेत कण जो रक्त में पाये जाते हैं उनसे और इनसे आपस में संग्राम शुरू होता है अगर स्वेत कण अधिक शक्तिमान हैं तो इन्हें पराजय दे देते हैं। और जो हैजा के कीटाणुओंमें शक्ति बहुत है तो यह कीटाणुओं पर अपना अधिकार जमा लेते हैं और उनको भक्षण कर जाते हैं तब यकायक अपनी मारक शक्ति बढ़ा कर कार्य पूर्ण करते हैं यह कीटाणु माइक्रोस्कोप Micrascop के द्वारा दिखाई पड़ते हैं। यद्यपि हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस विषय का इस रोग पर वर्णन बहुत कम किया गया है परन्तु सूक्ष्म रूप से आंतों में रहने वाले अँत्रादा नाम से वर्णन अवश्य हुआ है शायद इन्हीं की कोई किस्म यह भी हो जिसे काक साहब बताते हैं कि हैजा इससे उत्पन्न होता है। रहा उत्पन्न होने का उपाय वह प्राच्य और पाश्चात्य में बहुत विभेद डालता है। प्राच्य जन कीटाणु कारणों की तरफ न जाकर आन्तरिक ही कारण मानता है परन्तु पाश्चात्य बाहरी तरफ झुकता है वह ठीक ही है इसे तो आडम्बर अति प्रिय है और कोई भेद नहीं है रोग प्रायः समान ही है परन्तु इतनी उन्नति करते रहने पर भी आजतक वे भी अचूक औषधि निर्माणित ही हुई है जोकुछ है उससे संशयक गुण भारतीय औषधि और रोधक उपाय अधिकतर फायदा देते हैं। क्योंकि यहां पर तो भिन्न भिन्न प्रकृति पर नियमानुकूल भिन्न भिन्न उपाय हैं परन्तु विदेशियों के यहां तो वही २।। बातें जो कुछ कालिजों में उपदेश दे दिया जाता है छोड़ कर अपनी सामर्थ से करना कठिन है इस विषयमें सिर्फ विज्ञान वेत्ताही बड़े हैं जो अपनी गति को स्थिर न करके परिचालित करते रहते हैं—

यद्यपि आधुनिक विज्ञान वेत्ता लोग कीटाणु शास्त्र पर ही रुक जाते हैं उससे आगे चलना उनके लिये असम्भव है परन्तु महर्षियों ने इस कीटाणु वाद को जितना भयानक नहीं माना है जैसा आज माना जाता है। सिर्फ एक ब्रह्मचर्य व्रत जो इस कर्म क्षेत्र के मनुष्यों को प्रथम तोड़ा है उस पर दृढ़ रहने से हृदय दौर्बल्य नष्ट होकर संशयोच्छेद भेद नष्ट होकर मस्तिष्क शक्ति प्रबल हो जाती है उस समय पर इन बातों पर प्राच्य पाश्चात्य विभेद पूर्णतया ज्ञात होते हैं और इस पर कहे

गये कीटाणुओं का असर नहीं होता है इस लिये सबसे प्रथम ब्रह्मचर्य के प्रयोगोत्पादक गूढ़ महत्व पर ध्यान देना प्रधान कर्तव्य है इससे रोग प्रतिबंधक शक्ति प्रबल होकर रोगोत्पादक शक्ति का दमन कर देती है। ब्रह्माणि चरतीति ब्रह्मचर्य। अर्थात् अपने चित्तको बाह्य भ्रम से च्युत करके स्वात्मा में लीन रखने का ही नाम ब्रह्मचर्य है जिस प्रकार सजल सरोवर पर पक्षी स्वयं आजाते है उसी तरह ब्रह्मचारी में भी सब प्रकार के शुभ गुण बल वीरता आ आतीं है जिस प्रकार के सरोवर के जीव जन्तुओं को पक्षीगण भक्षण कर लेते हैं उसी प्रकार ब्रह्मचारी के सब दुर्गणों और रोगों को ब्रह्मचर्य शक्ति और शुभ गुण ग्रास कर लेते हैं। जैसे—

Brahmacnarya is the Greatest beauty of a manand his mast hidden Tresure it is the giver of all Enyoyment Fame and happiness अर्थात् ब्रह्मचर्य ही मनुष्य का गुप्त धन और प्रसन्नता यश का दाता है। अगर इसका ध्यान न दिया गया और मानव कर्तव्य से च्युत हो यौवन की ख्याति पर प्रमत्त हो अवधि भौतिक क्षण स्थायी स्वप्न सुखों पर आरुढ़ रहा गया तो समझलो ऐसीअकाल कवलित बीमारियों के व्यक्ति जरूर होंगे। और ऐसे ही व्यक्ति इन सर्व भक्षी रोगों के पंजे में फंस कर सदा के लिये मृत्यु शैय्या पर विलीन हो जाते हैं। एक ने ठीक कहा है—

The wise man whom the arr ows of beuitfull women glances do not affect and who doesnot Fall in the Snare of evil passion canguers all the three worlds अर्थात् जिसके हृदय को स्त्रियों के कटाक्ष बाण भेदन नहीं कर सकते और इन्द्रियों के विशय भोग चित्त को चंचल नहीं कर सकते वह धीर पुरुष तीनों लोकों को वश में कर सकता है। ब्रह्मचर्य की विपुल आँधी के सामने कुचेष्टाओं का जमना और रोगों का समूह रहना असम्भव है इससे अगर इन सद्यः प्राण हरण व्याधियों से बचना है तो— —शेष फिर

सूचना

श्री राष्ट्रीय विद्या-भवन तथा सरस्वती सदन आगरा का व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष आयुर्वेद रसायनशास्त्र तथा हिन्दी साहित्यादि की परीक्षाएं १७ दिसम्बर १९२९ ई० से गृहीत होंगी। परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र सशुल्क अन्तिम पर्यन्त आ जाने आवश्यक हैं। प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को रजत पदक प्रदान किया जायगा केन्द्र रहित स्थानों में ७ से अधिक छात्र होनेपर केन्द्र हो सकेगा। नियमावली व आवेदन पत्र एक आने के टिकट आने पर भेज दिये जावेंगे।

निवेदक—जगन्नाथप्रसाद—मंत्री

वनौषधि विज्ञान

वच ।

वच के संस्कृत नाम—

वचोग्रगन्धा षणग्रन्था गोलोमी शतपर्विका।
क्षुद्रपत्रोचमगल्या जटिलोग्रा च लोमश ॥

मराठी—वेखंड, गु०—वज, बं०-वच ।

वर्णन—यह पौधा कीचड़ या पानी की जगह पर होता है। इसकी ऊँचाई एक पुरुष तक की होती है। इसके पत्ते बाजरे या ईख खाटा के पत्तों के समान होते हैं। इसके मूल में बहुत सी जटा के रूदश जड़ की शाखा प्रशाखायें चारों ओर फैली हुई होती हैं। इसीसे इसका नाम संस्कृत में 'जटिला, भी है। विशेष कर इसके, इन जड़ों को ही 'वच, कहते हैं। इसीके टुकड़े बाजार में बिकते हैं। इस पौधे के सब भागों में दर्प या उग्रगंध होती है, किन्तु इसकी जड़ में यह गन्ध अत्यधिक होती है। इसको फूल नहीं ल-
। पौधे के पिंड में रोवे (लोम) खूब
ते हैं।

वच को अनेक जाति हैं—खुरासानी
ा, घुड़वच, श्वेत वच, महामरी वच,
कुलीजन और अकरकरा आदि।

औषधि प्रयोग में विशेषतः श्वेत वच का ही उपयोग किया जाता है।

वचोग्रगन्धा कटुकातिकोष्णा वातिवन्हिकृत्।
विबन्धाध्यमान शूलघ्नी शकृन्मूत्र विशोधिनी॥
अपस्मार कफोन्माद भूत जन्तूत्व निलान्हरेत।
दीपनी वाक्प्रदा कंठ्या शोफ वातज्वरापहा॥

१—पचनेन्द्रिय के विकारों पर इसका अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है।

(अ) यदि भूख बराबर न लगती हो तो वच का महीन चूर्ण २ रत्ती भर शहद के साथ रोज सायं प्रातः चाटे।

(आ) यदि पेटमें किसी शत्रुघ्न पदार्थ के चले जाने से या विष वगैरह के खा लेने से जी मिचलाता हो तो तुरन्त वच का चूर्ण २ माशा और थोड़ा नमक गरम जल के साथ पिलावे, कय होकर शाँति प्राप्त होगी।

(इ) पेट वायु के कारण फूल गया हो तथा दस्त न होते हों तो इसका चूर्ण १ मासा बड़ी सौंफ १ मासा, घी, शकरके साथ सेवन करे। दस्त होकर पेट उतर जायगा। इसका सेवन घी, शकर के साथ ही करना चाहिये नहीं तो कय होजायगा।

(१) अग्निमाँद्य हो अर्थात् रोज साफ दस्त न होते हों, पेट फूलता हो, भूख न लगती हो; ग्लानि रहती हो, इत्यादि विकार हो तो—वच, हींग, गजपीपर, काली मिर्च, सोंठ, हर्र, संचलखार, अतीस ये सब समभाग लेकर १ मासे से २ मासे तक सेवन करे।

(उ) पेट में दर्द हो, तो—वच का महीन चूर्ण ४ रत्ती, एक छटाँक तक्र के साथ थोड़ासा नमक डालकर सेवन करे।

(ऊ) छोटे बच्चों के पेट में कृमि हो गये हों तो—२ रत्ती वच का चूर्ण दूध के साथ ३-४ दिन देने से कृमि नष्ट हो जाते हैं

श्वास रोग—(दमा) में भी यह अच्छा काम देती है किन्तु ठीक २ फायदा होने के लिये, प्रथम २ इसको अधिक मात्रा में देनी चाहिये यहां तक कि रोगी का जी मिचलाने लगे और वमन की भाँति हो, फिर कम प्रमाण में सेवन कराते रहना चाहिये।

ज्ञानेन्द्रियों पर वचका प्रभाव—(अ) भीतरी स्त्री को अब वायु के प्रकोपसे अनाह रोग (जिसमें दस्त और पेशाब बन्द हो जाता है) तब इसका प्रयोग यों करना चाहिये—

वचका चूर्ण ४ रत्ती और लहसन १ रत्ती पावभर दूध में डाल कर पकावे फिर उसमें आधी रत्ती हींग भूनकर और बिजिरा काला नमक डालकर पिलावे।

(आ) सुख पूर्वक प्रसव का नर्म मोक्ष होने के लिये बच को जलके साथ सिलपर पीसकर और उसमें थोड़ा सा अरण्ड का तेल मिलाकर, नाभिपर लेप करने से बगैर किसी तकलीफके जचकी हो जाती है।

(इ) प्रसूती के समय गर्भ यदि कड़ा हो गया हो तो बच मासा ६ और केसर मासा १ गधी के दूध में (अभावमें बकरी के दूध में) खरल कर लम्बी सी गोली बनावे। इस गोली को योनि में धारण कराने से तुरन्त सुखसे गर्भ मोक्ष हो जाती है। ज्वर पर भी इसका अच्छा उपयोग होता है। विषमज्वर पर हमने निम्न प्रकार से प्रयोग किया है तथा फायदा उठाया है बच का तथा चिरायते का चूर्ण सम भाग लेकर (१ से २ मासातक दिन में ३ बार शहद के साथ रोगी को चटाना, और बच का चूर्ण, हरड़का चूर्ण घी में गलाकर उसे धूप दिया। दूसरे रोज रोगी चंगा हो गया विशेष कर बालकों के ज्वर पर यह बहुत शीघ्र फायदा पहुंचाती है। लेख अधिक बढ़ जाने के कारण हम सर्वोपयोगी द्रव्य का अब अधिक वर्णन नहीं कर सकते फिर कभी किसी अवसर पर इसके विषय में अधिक लिखा जावेगा।

ले० श्री रामप्रसादजी अध्यापक
पाठशाला जहाँगीरपुर

गुलाचीन स० 'पुष्पप्राचान'

प्रिय पाठक गण, आज आपके सन्मुख अपरिमित प्रभावशाली 'गुलाचीन, नामक वनस्पति की रोग नाशक शक्ति वर्णन भेट करते हैं इसके गुणों को आप सर्व महानुभाव परीक्षा कर लाभ उठावें।

नाम—उर्दू भाषा का मिलता जुलता देश प्रसिद्ध नाम 'गुलाचीन।,

संस्कृत में—पुष्प प्राचीन, श्वेतपुष्पी, हीनवीर्या आदि नाम हैं—

आकार तथा उत्पत्ति स्थान—झाड़करी व २१-३० फुट ऊंचा होता है, पत्ती लम्बी करीब १ बालिस्त के हरे रंग की होती है पुष्प श्वेत भीतर पीलापन लिये अत्यन्त सुगन्धित होते हैं। लोग इसे वाटिकाओं में लगाते पानी अधिक चाहता है फल नहीं लगते प्रायः समस्त युक्तप्रांतमें इसके वृक्ष पाये जाते हैं।

उपयोग—अधिकतर इसकी छाल औषधि में प्रयुक्त होती है।

गुण—वमन तथा विरेचन दोनों कार्यों में समान गुणकारी है।

मात्रा—६ माशा से १ तोला तक अष्टावशेष क्वाथ गर्मागर्म पीना चाहिये।

रोग-वातोदर, जलोदर, कठोदर, बद्धगदोदर आदि समस्त उदर रोग, कब्ज, तथा २० प्रकारका कफ रोग अफरा, मद्यपान, अरुचि, अग्निमान्द आदि का शीघ्र समन करती है।

विशेषता—विशेषता यह है कि इस की छाल काटकर नीचे की ओर खींचली जायगी तो विरेचन होगा और ऊपर की ओर खींची जायगी तो वमन होगा माठा पिलानेसे वमन विरेचन दोनों शाँति होंगे।

आयुर्वेदाचार्य डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी वैद्य मार्तण्ड विशारद

स्वागत।

ले०—श्री भंडारीलाल वैद्य।

कु०—अति उत्तम "राकेश,, यह वैद्यन को सुखधाम।
यदि के सब उद्देश शुभ पूर्ण करेंगे राम॥
पूर्ण करेंगे राम वैद्यवर धीरज धरिये।
शुभ दिन पहुँचे आय सभी मिल स्वागत करिये॥
कह वैद्यन कर दास, सुनो प्रिय पाठक बानी।
अपनाओ "राकेश,, यही सबको हित जानी॥

दो०—द्वितीय वर्ष "राकेश,, का सुनिये पाठक मित्र।
छै २ मैं ग्राहक करो यह कर्तव्य पवित्र॥

अनुभव सार

पारद निकासन शोधन

(स्व० अनुभवेन)

शोधन विधि—हिंगुलोत्थ पारे को धार के पठे के रस में २ दिन घोटने से पारे में रहनेवाले नाग (सीसा) दोष दूर होते हैं। अमलतास के क्वाथ में दो दिन घोटने से मल दोष दूर होते हैं। गौसूत्र में २ दिवस घोटने से बंग (रांग) दोष दूर होता है। नीबू के रस में दो दिवस घोटने से अग्नि दोष दोष दूर होता है। चीते के स्वरस या काढ़े में २ दिवस घोटने से असह्याग्नि दोष दूर होता है। और चांचल्य पन नाश होता है। आंकोल के स्वरस अथवा काढ़े में घोटने से विष दोष नष्ट होता है। सहस्रवार गाढ़े कपड़े से छान लेने पर गिरि दोष नष्ट होता है। तथा सात दिन गौ मूत्र में भिगोकर और सात दिन हंस पदी के काढ़े में घोटने अग्निसे न सहने का दोष दूर होता है।

इसमें से चाहे जिस औषधि में पारद को घोटकर कांजी से धोकर शुद्ध कर लेना चाहिये। विशेष डमरू यंत्र से ७ कांचरी का दोष दूर होता है। यहांपर आठ प्रकार के पारद संस्कार लिखे हैं इतने संस्कार करने पश्चात ही पारा रसों में प्रयोग करने के योग्य होता है। रसराज सुन्दरादि ग्रन्थों में अष्ट संस्कारित पारद के बहुत प्रकार लिखे हैं परन्तु यहाँपर तो हमने अपने निजी अनुभव प्रकट किया है।

हिंगुल से पारा निकालने की विधि—

सिंगरफ डेली का २० तोला, नीमके पत्ते २० तोला, दोनों को घोटे, पश्चात डमरूयंत्र में भरकर आँच लगानेसे ऊपरी पात्र की तरी पर पारद उड़कर जा लगेगा शीतल होनेपर यन्त्र में से पारद खुरच कर निकाल ले, यह पारा भी रसमें वर्तने लायक और गुण प्रद है।

डमरू यन्त्र में पारद उड़ानेकी विधि—

उपरोक्त शोधनोक्त—वनस्पतियों के स्वरसों अथवा काढ़े में घोटे एवं घुटे हुए पारे को डमरूयंत्र में भर कर और चूल्हे पर चढ़ाकर दो प्रहर अग्नि जलावे। और ऊपर की हांडीपर ठण्डे पानी का फुचारा फेरते रहें। जब दोपहर व्यतीत हो जावे तब शीतल कर यन्त्र के ऊपर वाले पात्र की तरी में लगा हुआ पारा खुरचलो सर्व रसों में प्रयोग करनेके वास्ते यह सप्त कांचरी रहित पारा हो जाता है इसी पारद की भस्म गुणमें अति उत्तम होती है। रविशङ्कर अम्बाशंकरजी शास्त्री

धारकोपर

कृमि रोग—अकसर बच्चोंको बाज समय बड़े मनुष्यों के भी पेटमें कृमि पैदा हो जाती हैं, जिनकी लापरवाही से उदर विकारादि महान कष्ट का सामना करना पड़ता है यह प्रयोग हमारा कृमि रोग पर अति गुणकारी है:—

पलास पापड़ (ढांकके बीज) भुनी हींग, बायविडंग, कपूर, पीपर, कुटकी, सेंधा नमक समभाग लेकर कुकरौंधे के रस व नीमके रस की भावना देकर मूंग बराबर बटी बनाकर मां के दूध में बच्चे को दे बड़ों को अवस्थानुसार मात्रा में पानी के साथ दे।

पाँडु कामला पर—गो मूत्र तथा त्रिफला योग से की हुई मंडूर भस्म को अवस्थानुसार मात्रा में दे। वार मधु के अनुपान से रोगी को खिलाने से असाध्य रोग साध्य होता है साथ में नस्य देना भी आवश्यकीय होगा।

नस्य प्रयोग—देवदाली (बंडाल के फल) लेकर मिट्टी के माट में पानी में ४ घण्टे भिगोकर और मसलकर ४-५ बूंद सुबह शाम नाक द्वारा नस्य देनेपर नेत्र विकार कामला शीघ्र शमन होता है।

आधा सीसी परनश्य—रीठा का स्वरस सेंधा नमक समभाग लेकर जिस तरफ दर्द होता हो उसके दूसरी तरफ नस्य देने से आराम होता है—

लेप—जमाल गोटा की मिंगीको पानी में घिसकर दर्द स्थान को चिकना कर लेप कर दे ५ मिनट बाद लेप हटादे दर्द बन्द हो जावेगा ध्यान रहे लेप नेत्रपर न लगने पावे। अनुभूत है।

सर्व व्रण नाशक मलहम—

१ तो० राल, ४ तूतिया, मुरदासंख १ तो० लेकर पीसकर तिल तैलमें पीस कर घोटे ऊपर से पानी डालकर रगड़ता जावे जब फूल उठने लगे तब पानी निकालकर मलहम रखले फोड़ेपर कपड़े पर मलहम लगाकर चिपटादे पानी से भिगोता रहे फोड़ा अच्छा होनेपर मलहम छूटेगा यदि कोई कसर रहे दुबारा चिपटादे।

योग प्रेषक राजवैद्य विश्वनाथ वाजपेयी फफूँद

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे (किश्तीनुमा) चिकने, खूबसूरत मय घोटनेकी उत्तम मुसली सहित तैयार रहते हैं, इनकी लम्बाई १५॥ इञ्च चौड़ाई १० इञ्च ऊंचाई ५। इञ्च वजनमें २५ सेर के हैं दो सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जा सकती है इसके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं प्रत्येक खरल का मूल्य १०) रु० है खरल का आर्डर देते समय ५) रु० पेशगी अवश्य भेजे और साथ ही अपना नाम डाक खाना जिला व पास का रेलवे स्टेशन मये लाइन के नाम के साफ २ हिन्दी या अंग्रेजी में लिख भेजें—बिला पेशगी आये आर्डर रद्दी समझे जायेंगे।

पता...श्रीभगवत आयर्वेदिक फारमेंसी, बरालोकपुर इटावा यू० पी०

वैद्यवरों से प्रश्न

८—हम अक्सर सुना करते हैं कि अमुक वैद्यराज ने अमुक रोगी को जिसके विषमज्वर था नेत्रमें अंजन लगाकर उतार दिया। एक नेत्र में आँजने से समस्त आधे अङ्ग का ज्वर उतरता है और दोनों में लगाने से सर्वाङ्ग का ज्वर उतर जाता और फिर नहीं आता है। अतः समस्त वैद्यराजों से विनीत प्रार्थना है कि वे अपने अनुभव में आया हुआ प्रयोग लिखने की कृपा करें प्रयोग चाहे नवीन हो चाहे प्राचीन पर अनुभूत हो?

९—सुनते हैं कि खेतकी हरड़को हाथ में लेने से विरेचन होता है, क्या कोई महाशय यह बताने की कृपा करेंगे कि खेतकी हरड़ कहाँ से और किस मूल्य में मिलती है।

१०—एक वैद्यराज के पास एक प्रयोग था उसको ग्रीवा में लगाने से वमन तथा नाभि पै लगाने से विरेचन व वस्ति पै लगाने से इन्द्रिय जुलाब व जघन देश में लगाने से ऋतु जारी होता था क्या कोई ऐसा प्रयोग बताने की कृपा करेंगे।

पं० रामेश्वरप्रसाद जी गौतमा

११—चैसलीन किस प्रकार बनाई जाती है पूर्ण विधि लिखें। साधारण या बढ़िया दोनों किस्में लिखने की कृपा करें।

१२—मेरी जिनेन्द्रियमें सुपारी के इर्द गिर्द दो फुन्सियां मुद्दत से हैं (आतशक पेश्तर हुई थी) वैसे तो कष्ट नहीं परन्तु अधिक····· के करने से कष्ट होता है क्या तरकीब हो कि सारी व्यथा दूर हो पूरा नुसखा खाने व लगाने का सरल लिखियेगा। बड़ी कृपा होगी।

राकेश के स्थाई ग्राहक—ग्याप्रसाद जी कूर्मि क्षत्रिय

१३—कोई महाशय कृष्ण सर्पविष निकालने की सुलभ विधि जानते हों तो प्रकाशित करने की दया करें।

१४—कोई सज्जन ऐसी आयुर्वेदीय औषधियों का प्रयोग बतलाने का कष्ट ग्रहण करें जो अंग्रेजी दवा Hydrogine peroxide के मुकाबिले या मिलता जुलता काम देसके यह औषधि झाग देकर काम के व्रण तथा अन्य व्रणों के मैल को झाग द्वारा निकाल कर शीघ्र साफ करने में गुण कारी होती है—

दाताराम्शरण चिकित्सक कुटवा

१५—"कर्मिलास" कौनसे जानवर का नाम है या कोई पक्षी है कौन २ देश में किस किस नाम से पुकारते हैं—जानकार महाशय गण राकेश द्वारा प्रकाशित करें।

कृष्णलाल मिश्र भड़ोच

वैद्यवरों के उत्तर

उत्तर प्रश्न १—पाषाण भेद का क्वाथ ५- में १ तोला शहद मिलाकर सायं प्रातः सेवन कराइये २१ रोज पान तम्बाकू खाना बन्द कर दीजिये जब तलब लगे तो केवल छोटी इलायची खाये समस्त शिकायतें रफा हो जायंगी । और:—रात्रि में वैद्यों का प्रसिद्ध चूर्ण पञ्चसकार ६ माशा गर्म जलसे सेवन कराना चाहिये जिससे कब्ज न हो।

उत्तर प्रश्न २—राकेश वर्ष २ अंक १ का ४ प्रयोग गिल्टी पर मालिस कराइये और जुवार मक्का की बाल की कुखुरी जला कर काली भस्म बना लीजिये और शहद में दिन में ३ बार चटाइये ६-६ माशा अवश्य लाभ होगा।

उत्तर प्रश्न ३—उपरोक्त विधि से बनी भस्म ६ माशा शहद ६ माशा अदरख का स्वरस ६ माशा पकाकर नित्य सायं प्रातः खिलाओ ईश्वरेच्छासे अवश्य लाभ होगा।

उत्तर प्रश्न ३—उपदंश के चट्टों पर सेलखरी भुनी हुई ६ मा० कौड़ी भस्म ६ मा० सड़ी सुपारी की भस्म ६ माशा सफेद कत्था ६ माशा भुना नीला थोथा १॥ माशा उपरोक्त दवाइयों को अंजन के समान बारीक कूट छान २॥ तोला सौ बार के धुले हुये गाय के घी में मिलाकर खूब घोट कर चौड़े मुख की शीशी में रख ले और थोड़ा सा लेकर वही उपदंश के जख्मों में लगा दें एक सप्ताह में आराम हो जायगा, खाने के लिये—चोबचीनी १ पाव लेकर बारीक चूर्ण कर कपड़ छान ले और उस चूर्ण के बराबर मिसरी मिलाकर रख ले सुबह ६ माशा चूर्ण खा कर जल से उतार जावे इसी प्रकार रात को भी इससे उपदंश की जड़ नष्ट हो जायगी । लाल मिर्च, खटाई, अधिक नमक स्त्री संग आदिका कुछ दिन परहेज करना चाहिये नमक की जगह सेंधा खा सकते हैं।

ले० श्री भण्डारीलाल वैद्य।

उत्तर प्रश्न नं० ७ आप प्रातः सायं ६-६ मा० च्यवन प्राशावलेह स्वर्ण वंग २ रत्ती मिश्रित ½ सेर दुग्ध से सेवन करें खाना खाने के बाद अश्वगंधारिष्ट १ तो० की मात्रा से जलयुक्त कर पी जावें बदन में अश्वगन्धादि तैल की मालिश करें। अवश्य दुर्बल शरीर आरोग्य होगा।

उत्तर प्रश्न नं० ६—आप इस रोगीको वासावलेह सुबह शाम मात्रा ६ माशा तथा वासारिष्ट भोजनोपरांत मात्रा १ तो० सेवन कराइयेगा और शरीर में चन्दनादि तैल की विशेष कर छाती पर मालिश कर जाइयेगा—आराम पहुँचेगा। सम्पादक

वैद्यक मनोरंजन

वर्ग में वैद्यक सनसनी।

(गतांक से आगे)

सभा कार्यारम्भ—

सभापति ने आग्रह किये जाने पर पद को सुशोभित किया उसके बाद एकत्रित समूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि "भूलोक के आयुर्वेद की गति सूचक जो समाचार तथा विचार आप सब लोग रखते हों प्रगट कीजिये ताकि उन पर वादविवाद हो स्वीकृति हो सन्देश रूपसे भूलोक में भेजा जावे ,। आदेशानुसार विचार प्रगट किये गये जो निम्न प्रकार थेः—

प्रथम औषधिपति राकेश द्वारा प्रिया वनौषधियोंकी टेरसूचक विज्ञप्तिका सुनाना।

"हे पतिदेव राकेश,, हमारी इस युगमें बुरी हालत है न तो कोई मेरा पहिले सा आदर है न उपयोग ही है। न तो कोई हमारे गुणोंसे परिचित है ऐसे न्यून संख्या की गणना में वैद्य लोग हैं जो हमें जानते हैं। बहुत सी हमारी सँगी सखी सहेलियाँ इसी चाह में मुरझा जाती हैं कि मुझे कोई उपयोग करे। थोड़ा बहुत जो कुछ भी आदर है वह भी किस रूप में कि पसारी लोग अपका बालअवस्था में ही मुझे जंगली लोगों द्वारा पकड़ाकर मगवा लेते हैं और बोराकृपी काल कोठरी में बन्द रखते हैं जिससे कुछ ही काल में हमारे गुणरूपी प्राण पखेरू उड़ जाते और मृत प्रायः शरीर को अनभिज्ञ वैद्य मंगा कर गुणहीन संचित होने पर अनादर करते हैं और कराते हैं। दूसरे विदेशी लोग मुझे सात समुन्दर पार लाद कर मशीनों द्वारा पेर कर रंग रूप बदल क्रिस्तान बना विदेशी साज पहिना फिर अपनी सन्तान कहकर व्योहार कराकर भारत माता जिसकी गोद में हम फली फूली थी उसके ही सपूतों के धन को मुझ द्वारा लूट कर माला माल बन प्रभुत्व बनाये हुये हैं अतः हे पति देव हमारी पुकार सुन उद्धार करो।,,

२—यमराज की विज्ञप्ति—

"कलि काल की अकाल मृत्यु संख्या अधिक है, कारण को पता विशेष जाँच के बाद मुझे तो यही मालुम पड़ता है कि बिना देशी औषधियों के रोग का पूर्णरूप से नाश न होकर ही संख्या बढ़ रही है साथ ही कुछ ब्रह्मचर्य का पालन न हो। उपदंश सुजाक नपुन्सकता को लिये हुये अधिक मृत मनुष्य पाये हैं अधिकाँश मनुष्य तो ऐसे पाये गये हैं कि जिनकी

मूत्रेन्द्रियों लघु कृश तथा टेढ़ी पाई गई है, इनको काफी मार पीट के बाद पता दिया कि हम लोग वेश्या गमन तथा गुदामैथुन के अनुगामी रहे थे। इनका सर्व नाश हुआ इन लोगों ने यमपुर में भी असर डाल दिया हमारे कर्मचारी इनको लाते समय मारपीट करते समय स्पर्श करने मात्र ही से इस दूषित संक्रामक रोग में ग्रसित हुये पाये गये अतः मुझे बड़ा भयावह है—या तो स्वदेश द्वारा इसकी रुकावट के लिये सुधार स्कीमके नियम भेजिये यदि इस पर भी यह लोग बाज न आये तो हम इनको अपने नरक के कुण्ड में जगह देने को तैयार नहीं कारण कि यह तो मुझे भी ले डूबेंगे।

कपशः।

३८ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी, मथुरा की बनायी हुई यह अमूल्य दवायें केवल समग्र भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ सालसे प्रसिद्ध हैं। इनकी अपूर्व गुणकारिता का यही सबसे बड़ा सबूत है कि इतने दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है—इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है?

१—सुधासिन्धु।

सभी बीमारियों के लिये। कफ, खाँसी, हैजा, दमा, शूल, आँव, खून के दस्त, पेट की सभी खराबियां, बच्चों का रोना, हरे पीले दस्त, के, दूध पटकना, ऐंठा, गठिया आदि, के लिये सुधासिन्धु रामबाण है। तुरन्त फायदा पहुँचाता है। सुधासिन्धु सुगन्धित है, सुस्वादु है और सर्वसुलभ है। मूल्य फी शीशी केवल आठ आना।

२—बालसुधा।

बच्चोंके सभी रोगोंके लिये। इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं, कमजोर लड़के ताकतवर होते हैं, नीरोग लड़के बीमार होनेसे बचते हैं। मीठा है, बच्चे खुशीसे पीते हैं। कीमत फी शीशी ॥)

३—दद्रुगज केशरी

नया, पुराना चाहे जिस प्रकार का दाद हो, इससे तुरन्त आराम होता है। दादके लिये ऐसी अचूक और शर्तिया दवा दूसरी नहीं। जलन, तकलीफ वगैरह कुछ नहीं होती। मूल्य।)

यह दवाइयां भारत सरकार से भी रजिस्टर्ड हैं।

हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं। यदि आपके शहर, कस्बे या गांव में न मिले तो इस पते पर पत्र लिखकर मंगवाइये।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये)

मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा

वैद्य संसार समाचार

निखिल भारत वर्षीय आयुर्वेदीय विंशतिम वैद्य सम्मेलन
करांची का भावी कार्य क्रम

हर्ष समाचार ।

हर्ष का विषय है कि स्वागत कारिणी समिति के ता० ६-१० २९ के अधिवेशन ने सर्व सम्मति से श्रीयुत पंडित रामप्रसाद जी शर्मा वैद्य रत्न वैद्योपाध्याय पटियाला निवासी को सभापति निर्वाचित किया है आगामी नि भा० २० वां वैद्य सम्मेलन बड़े समारोह पूर्वक सिन्धु प्रान्तीय सुप्रसिद्ध नगर करांची में होगा जिसका संक्षिप्त कार्य क्रम निम्न लिखित है—

(विशेष ज्ञान पर बाद में छापा जावेगा)

१. सम्मेलन समारोह जनवरी १९३० के प्रथम सप्ताह में ता० १, २, ३, ४, तक होगा। प्रदर्शिन्युद्घाटन ता० ३१ दिसम्बर १९२९ को सायङ्काल ५ बजे से ही कर दिया जायगा। तथा सभापति महोदय का स्वागत समारोह (Procession) भी इसी दिन किया जायगा।

२. सम्मेलन में पधारने वाले किसी सज्जन से भोजन तथा स्थान के लिये किसी प्रकार का कोई शुल्क न लिया जायगा। स्वागत कारिणी समिति उक्त दोनों कार्यों का सुत्तम प्रबन्ध करने के लिये अभी से प्रयत्न कर रही है।

३. सम्मेलन में चार तद्विषयसम्भाषा परिषदों के आयोजन करने का प्रबन्ध किया गया है। परिषदें निम्नलिखित होंगी

(१) निदानचिकित्सा सम्भाषापरिषद्

(२) रसायनसम्भाषापरिषद्

(३) वनस्पतिसम्भाषापरिषद्

(४) स्वास्थ्यरक्षसम्भाषापरिषद्

एवं इनके क्रमानुसार निम्न निर्दिष्ट सुयोग्य सभापति भाव्य हैं—

(१) इस परिषद्के प्रमुख की स्वीकृति वांछित है

(२) श्रीयुत कविराज प्रतापसिंह जी, रसायनाचार्य बनारस

(३) श्रीयुत वैद्य पं० हरिप्रपन्न जी शास्त्री, बम्बई.

(४) श्रीयुत डा० लक्ष्मीपति जी B.A. M.B.&C.M. भिषगरत्न मद्रास

४. सम्मेलनमें पढ़ने के लिये अच्छे २ विद्वानों से निबन्ध याचना की गई है। उत्तमोत्तम निबन्धों का पठन होगा। श्रेष्ठ लेखकों को यथोचित सम्मानपत्र, प्रशंसा पत्र, पदक, पारितोषिकादि देने का भी प्रबन्ध किया जायगा।

५. स्वागतकारिणी समिति की गत बैठक जो ता० ८-९-२९ को तिथिनिर्णयादि के लिये एकत्रित हुई थी, उसमें उपस्थित सज्जनोंमें तद्विषसंगाषापरिषदों के नियम सुनाने के अनन्तर मन्त्रियों के किञ्चित अनुरोध करने पर चार सहृदय आयुर्वेदानुरागी सज्जनों ने क्रम से चार विषयों पर चार सुवर्ण पदकों के प्रदान करने का वचन दिया है जो कि गताङ्क में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

स्वागतकारिणीसमिति द्वारा याचित
निबन्ध विषय सूची।

सुयोग्य वैद्यविद्वान इन विषयों पर उत्तम निबन्ध लिख भेजने की कृपा करें। उत्तमोत्तम निबन्ध-लेखकों को यथोचित सम्मान पत्र पदक, पारितोषिक प्रशंसा पत्रादि देकर सम्मानित किया जायगा। (निबन्ध संस्कृत अथवा गुजराती और हिन्दी भाषा में होने चाहिये) और तारीख १-१२-२९ तक पहुँच जाना चाहिये।

विषय इस प्रकार है—

(१) क्षय रोग पर अनुभूतचिकित्सा

(२) अर्शरोगपर स्वानुभवित निदान लक्षण पूर्वक अचूक चिकित्सा

(३) हृदय रोग एवं गुल्म किन २ कारणों से उपजता है। इसका निदान लक्षण यत्नादिक। गुल्म एवं हृदय रोग ये दोनों परस्पर एक साथ एक ही समय पर अथवा कालान्तर देकर क्यों उत्पन्न होते हैं। इसकाकारण तथा इसकी अचूक चिकित्सा। इस विषय पर शास्त्रीय एवं स्वानुभवप्रदर्शक उत्तम निबन्ध।

(४) उपदंश का निदान, लक्षण और यत्न स्वानुभव पूर्वक

(५) Gonorrhoea (सूजाक) एवं पूयमेह तथा Diadetes (मधुमेह) एवं बहुमूत्र ये रोग परस्पर एक ही हैं अथवा अलग २। यदि अलग हैं तो कैसे। इन रोगों का प्रकोप कारण काल इत्यादि का शास्त्रानुकूल सप्रमाण विवेचन, एवं अनुभवित निदान लक्षण एवं अचूक चिकित्सा

(६) अपस्मार रोग की अनुभूत चिकित्सा एवं दग्धक्रियाविधान।

(७) प्राच्यनाडी विज्ञान पर विस्तृत विधान।

(८) जानपदोध्वंसकारी भावों की उत्पत्ति का कारण और उसका निराकरण किन २ प्रकारों से किया जा सकता है।

(९) कुचला, विषमुष्टि ये दोनों पदार्थ एक ही हैं या अलग २। यदि एक हैं अथवा अलग २ हैं तो किस प्रकार से। रोगों पर इसका प्रयोग किन २ प्रकारों से किया जा सकता है। इस पर गवेषणापूर्ण उत्तम निबन्ध॥

प्रोफेसर रामकृष्ण जी वर्मा
का
संक्षिप्त परिचय

श्री युत प्रो० रामकृष्ण जी वर्मा के नाम से तो पाठक गण भली भाँति परिचित ही होंगे कारण कि बहु काल से प्रायः सभी वैद्यक पत्रोंमें आपके ही अधिकांश लेख लिखे रहते हैं। जिसकी वजह से ही अधिकांश वैद्य समाज आपके नाम से तो भली भांति परिचित होगया है पर आपके विशेष परिचय के ज्ञान को प्रायः बहुत सा समाज उत्सुक था। अतः पाठकों के ज्ञानार्थ हम उनके संक्षिप्त परिचय को जो कि उनके इष्ट मित्रों से ज्ञात हुआ यहां पर प्रकाशित करते हैं।

उनका वंश तथा कुटुम्ब—आपके पिता का नाम रामप्रतापसिंह जी तथा माता का नाम श्रीमती उमराईदेवी चाचा का नाम विजयबहादुरसिंहजी तथा छोटे भाई का नाम रामनारायणसिंहजी है आप उदयपुर के राणा वंशीय हैं पर आज कल आप अमराचाँ ग्राम में जो कि फतहपुर के पास है कुटुम्ब सहित निवास करते हैं कारण कि यह गांव आपके चाचा को उपहार में मिला है।

किस्सा यों है कि आपके चाचा फौज के एक उच्च लेफ्टीनेन्ट पद पर नियुक्ति थे विलायत में ही आपके पिता माता आपके चाचाके साथ रहते थे और आपका जन्म भी लन्दन ही में सम्वत १९५४ में हुआ आपने वहीं से बी० ए० बी० एस० एल० एम० एस० की डिग्री प्राप्तकी साथ ही संस्कृत का भी ज्ञान प्राप्त करते गये और वहांसे आकर आपने मद्रास गवर्नमेंट कालेज से संस्कृत में आयुर्वेद की भी परीक्षा दे आयुर्वेदाचार्य के पद को ग्रहण किया आपको लन्दन से भारत आने पर ही आयुर्वेद से विशेष प्रेम था कारण कि इनके चचा जो इनके साथ थे स्वदेश के तथा प्राचीन भारत के ज्ञान के विशेष भक्त थे वह फौज में कार्य करते रहने पर भी अधिक समय आपको स्वदेशचर्चा द्वारा उपदेशमें देते रहे। आप जब लन्दन से भारत आये थे १२००) रु० मासिक के वेतन पर नियुक्त हुये थे पर असहयोग के समय आपने लात मारदी बाद में नेपाल के राजा के यहां १ साल तक तथा गोरखपुर कालेज में १ साल तक निर्वाह मात्र पर अध्यापक का कार्य किया बाद में बम्बई के कालेज में भी २ वर्ष ८००) मासिक वेतनपर सिर्फ

१ घन्टे शिक्षा देते रहे बादमें डेढ़ वर्ष तक कलकत्ते में भी शिक्षा का कार्य किया अभी करीब ३ माह पहिले तक आप लखनऊ कालेजमें सिर्फ ४००) रु० मासिक के वेतन पर सिर्फ ४५ मिनिट शिक्षा देने जाते थे। आपके बहुत से शिष्य हैं जो कि बड़ी बड़ी नौकरी पर वेतन पा रहे हैं प्रो० साहब वैसे तो अखिल चिकित्सा शास्त्र के तथा आयुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता है ही। पर विशेषकर आप शल्य शालाक्य ज्ञान आधुनिक व प्राचीन के पूर्ण ज्ञाता हैं और तुलनात्मक भी करते हैं। इस हिसाब से आपको इस युग का धन्वन्तरि कहा जाय तो अन्यथा नहीं है। साइन्स (विज्ञान) का ज्ञान आपका विशेष बढ़ा चढ़ा है जिसको कि पाठकों ने आपके औषधियों के मिश्रण को प्रथकी करण अभ्यास से ज्ञात ही कर लिया होगा आप आयुर्वेद प्रेमी होने के साथ ही साथ देश के पूर्ण तथा सच्चे भक्त हैं अभी करीब दो माह हुये थे आप बरालोकपुर पधारे थे आपकी रहन सहन बिलकुल सादा थी स्वदेश के बने हुये वस्त्र ग्रहण किये थे बोल चाल सीधी थी। स्वदेश प्रेम में लीन होने ही के कारण आज आप ३ माह के लिये जेल यात्रा कर कृष्णभूमि को सार्थक कर रहे हैं। आप जब यहां पर आये थे तब मुझसे शल्य शाला क्या प्रचारार्थ वार्तालाप हुआ था आपने मुझे भरसक मदद देनेकी प्रतिज्ञा की थी। यह आप जेल यात्रा करते हुये भी पालन करके दिखा रहे हैं जिसको कि पाठकगण आपके लेखों द्वारा पत्र राकेशमें देख ही रहे हैं।

आपने वैद्यक विषय पर कई पुस्तकों की भी रचना की है जिनके नाम यह हैं। मूत्र परीक्षा, इन्जेक्सन चिकित्सा, कीटाणु विज्ञान, वक्ष परीक्षा, कम्पाउन्डर्स प्रकाश, दन्त परीक्षा, अर्थवेद-भाषा; कृष्ण एनोटोमी, प्राकृतिक धातु ज्ञान, शल्य निदान, यह उपरोक्त सभी पुस्तकें आयुर्वेद की कमी को भली भाँति पूर्ण रूप से पूरित कर रही है।

नीर—प्रो० साहब की जेल यात्रा सुन कर पाठक गण विस्मित होंगे। कि किस अपराध जेल भोगने आप ३ माह को गये हैं उनके लिये यहां कहना है कि प्रोफेसर साहब किसी बुरे कार्य के अपराध में जेल नहीं गये पर आप देश प्रेम में उन्मत्त हो स्वदेश कार्य के अपराध ही में जेल गये हैं सुनाजाता है (तथा आप स्वयं कहते थे) कि मेरठ बमकेशके बमके अन्ययोंके प्रथकी करण करने की ठीक गवाही न देने का तथा बम केश के अभियुक्तों के प्रति सहानुभूति सूचक प्रस्ताव पास करने के अभियोग ही में आपको १ माह की कैद हुई और जुर्माना हुआ है जुर्माना देने से इनकार किया जिस पर २ माह की कैद और भुगतनी पड़ेगी—आपने सूर्य वंश में जन्म ले क्षत्रियों के गुणको उपरोक्त घटना द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखा दिया।

—सम्पादक



अनमोल बूटी—यह पुस्तक आक वृक्ष (अकौवा) पर विविध रोगों पर अनेक उपयोगों द्वारा प्रयोग वर्णन कर लिखी गई है-पृष्ठ संख्या ५१ कागज साधारण अच्छा छपाई उत्तम है—आक बूटी का ज्ञान अच्छी भांति इस पुस्तक द्वारा करके लाभ उठाया जा सकता है। मूल्य ।)॥ हिन्दीका उर्दू का ≈)॥ मंगाने का पता—

रामगोपाल अग्रवाल कटरा रोड
अमरोहा यू० पी०

समाज सेवक—माथुर वैश्य जातिका सर्व विषय विभूषित मासिक पत्र है साइज डिमाई टाइटिल सादा कागज अच्छा है। इसका प्रथम वर्षही आरम्भ हुआ है जाति हितार्थ के लिये उत्तमोत्तम लेख गल्प मनोरञ्जन रहता है सम्पादक गुलाबरायजी मुफ्त मंगाने का पता—

मैनेजर 'समाज सेवक,
शमसाबाद-आगरा

कमलाकान्त—साइज डिमाई कागज सादा छपाई अच्छी है इस पत्रमें कला कौशलादि विषय के साथ विशेषकर वैद्यक विषयकेलेख अनुभूत प्रयोगादि भी रहते है। स्वर सन १९२९ से निकलना आरम्भ हुआ है। अच्छा है उन्नति कर फले फूले। सम्पादक पं० रामरक्षपाल वैद्य शास्त्री हैं वार्षिक मूल्य २) है। मंगानेका पता—

मैनेजर 'कमलाकान्त, भिवानी हिसार

दर्जी—यह सचित्र मासिक पत्र ला० ईश्वरदत्तजी के संपादकत्व में लाहौर से जून सन १९२९ से निकलता है इस पत्रमें हिन्दी जाननेवाले सभी स्त्री व पुरुष सीने कीविद्या साधारण रीतिसे चित्रों व लेखों द्वारा समझ कर शीघ्र चतुर हो सकते हैं कार्यक्षेत्र अच्छा है। सम्पादक के श्रमपर बधाई है—गृहस्थी पुरुषों को मंगाकर अपने गृह की स्त्रियों में इसका प्रचार करना आवश्यकीय है। मंगानेका पता—

दर्जी कार्यालय
गणपति रोड लाहौर

रंगीला—३ फार्म में साधारण टाइटिल पर यह मासिकपत्र पं० सुरेन्द्रचन्द्रजी जैन विद्या भूषण के सम्पादकत्व में कोसीकला मथुरासे आज ढाई वर्षसे प्रकाशित हो रहा है पत्रका जैसा नाम वैसा प्राप्य विषय भी विविध विषयों से वर्णन रहता है जो कि उपयोगी व शिक्षाप्रद हैं। वार्षिक मूल्य १।)



* ओ३म् *

॥ लोक विख्यात ॥

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

बरालोकपुर (इटावा) यू० पी०

की

तत्काल गुणकारी शास्त्रोक्त विधि पूर्वक निर्मित औषधियों का

संक्षिप्त सूचीपत्र

सज्जनों ! गुण ग्राही बन्धुओ विश्वास कीजिये

अविश्वास का मौका हटाइये

कारण कि "श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी„ बरालोकपुर इटावा ने आयुर्वेदीय समस्त प्रकार की विधि पूर्वक निर्मित विशेष रूप से उत्तम वैद्यराजों और आयुर्वेद प्रेमियों द्वारा मान्य, प्रसिद्ध तथा प्रशंसनीय औषधियाँ उचित मूल्य पर देना निश्चय किया है, और विश्वास दिलाने के वास्ते पक्की गारंटी दे दी गई है कि जो महानुभाव जिस प्रकार चाहें विश्वास करलें अन्तिम निश्चय यह है कि स्वयं आकर अपने सामने दवाइयां तैयार करवा कर ले लीजियेगा। इस प्रकार हमारी व हमारे कार्यालय की सत्यता को समझ लीजियेगा परन्तु जो भी औषधि आप बनवायेंगे उसकी कम से कम आधी कृति आपको लेनी होगी १००) के खरीदार को हमारे यहाँ आनेपर मार्ग व्यय फार्मेन्सी से दिया जायगा आने वाले सज्जन कितनी ही दूर के निवासी क्यों न हो बिला संकोच आयें, आर्डर द्वारा कम से कम ५०) की औषधियाँ मंगाने पर पोस्टेज पेकिंग माफ किया जाता है विशेष निवेदन यह है कि हमसे व्यौहार कर आप सर्वदा संतुष्ट रहेंगे, परीक्षा प्रार्थनीय है।

व्यवस्थापक—

वैद्यशास्त्री पं० रूपेन्द्रनाथजी द्विवेदी सम्पादक—राकेश

मैनेजर—वीरेन्द्रसिंह शास्त्री

ओम् श्री धन्वतरये नमः

औषधियां मंगाने से प्रथम पढ़िये

१—औषधियों के आर्डर लिखते समय निम्न लिखित नियमावली को खूब सोच विचार कर पढ़ लेना चाहिये।

२—पत्र पाते ही २४ घन्टे के अन्दर माल भेज दिया जाता है इस लिये विचार पूर्वक आर्डर लिखो ताकि माल लौटाना न पड़े।

३—थोक भाव के सूची के खरीदने वालों को कमीशन नहीं दिया जाता है। इसके बारे में लिखना व्यर्थ है।

४—थोड़ी औषधियां मंगाने वाले सज्जन ग्राहकों को खैरीज भाव का सूची पत्र मंगाना चाहिये। खैरीज भावके नियमानुसार कमीशन भी दिया जाता है।

५—अधिक माल मंगाने वालों को अपने पासकी रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य ही लिख देना चाहिये। मये रेलवे लाईन के। और आर्डर के साथ चौथाई रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

६—पतली औषधि जैसे (अरिष्ट आसव अवलेह तेल घृत आदि) मँगाने वालों को कम से कम चौथाई रुपया एडवांस (पेशगी) भेजना जरूरी है। बिला चौथाई रुपया पेशगी आये आर्डर सप्लाई न होगी।

७—शेष सब प्रकारकी औषधियां वी० पी० पार्सल से भेजी जायेंगी।

८—हर रोग की व्यवस्था मुफ्त दी जाती है। ऐसे पत्र के साथ उत्तर के लिये -) का टिकट भेजना चाहिये।

९—यहाँ से प्रत्येक पार्सल प्रबन्धकर्ता के निरीक्षणमें सम्यकतया जांच कर भेजी जाती है। कदाचित डाक व रेलवे कर्मचारियों की असावधानी से मार्ग में पार्सल टूट फूट जाय तो उसका जिम्मेवार कार्यालय न होगा।

हर प्रकार के पत्र औषधियों के आर्डर मनीआर्डर का रुपया निम्न पते से आना चाहिये।

मैनेजर—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फारमेसी बरालोकपुर

जिला इटावा यू० पी०

कूपी पक्व रसायन ।

नाम औषधि	मुख्य गुण	की० १ तो०	की० ५ तो०
स्वर्ण घटित षण गुण	अनुपान भेद से सर्व रोग नाशक		
वलि जारित मकरध्वज (चन्द्रोदय)	वीर्य वर्धक रसायन	१०)	४०)
मकरध्वज स्वर्ण घटित त्रिगुण वलि जारित (चन्द्रोदय)	उपर्युक्त समान ही इसके गुण हैं	८)	३०)
रस सिन्दूर (द्विगुण वलि जारित)	अशक्ति, वीर्य विकार नाशक	१।)	५)
मल्ल सिन्दूर	वात व्याधि शिर, रोग नाशक, पौष्टिक	२)	९)
ताल सिन्दूर	दमा, श्वाँस, अशक्ति, वात व्याधि नाशक	२)	९)
कामनी मद मन्जन रस	कामोत्तेजक, महापौष्टिक	८)	३५)
स्वर्ण वंग न० १	सर्व प्रमेह, स्वप्न दोष, नपुंसकता नाशक	२)	७॥)

भस्में ।

नाम औषधि	गुण	की० १ तो०	की० ५ तो०
स्वर्ण भस्म (रक्तवर्ण)	क्षय, शिरोरोग, वीर्य विकारादि सर्वरोग नाशक	३५) रु०	१५) रु०
स्वर्ण भस्म (कृष्ण वर्ण)	उपरोक्त समान गुण ।	२८) रु०	१२५) रु
मौक्तिकभस्म नं०१	सर्व नेत्र व शिररोग.जीर्णज्वर क्षयनाशक	३०) रु०	४:) रु
मौक्तिक भस्म नं० २	शिर रोग, मधुरज्वर, क्षयनाशक	२५) रु०	१००) रु०
रौप्य (चांदी) भस्म,	वात व्याधि, प्रमेह नपुन्सकता नाशक	२) रु०	९) रु.
अभ्रक भस्म (सहस्रपुटी)	नं०, क्षय,१ दमा, अशक्ति, सन्निपात, अनुपात. भेद से सर्व रोग नाशक	२०) रु०	८०) रु०
अभ्रकभस्म(पाचसौपुटी)	नँ० १ क्षय, दमा अशक्ति सन्निपात, अनुपान,	०) रु०	५०) रु०
अभ्रक भस्म (सौ पुटी)	नं०२, क्षय,अशक्ति, सन्निपात अनुपान	२) रु०	१०) रु
लौह भस्म (५०० पुटी),	रक्तवर्धक, पांडु, संग्रहणी, क्षय	२॥) रु०	१०

लौह भस्म		॥) आना	१।) रु०
ताम्र भस्म,	उदर रोग, श्वांस, सूजन, हृदयरोग नाशक	॥) आना	१।) रु०
वंग भस्म (श्वेत)	अशक्ति. प्रमेह बहुमूत्रनाशक	॥) आना	१।) रु०
नाग भस्म	मूत्र रोग, प्रमेह, गुल्म. शूल, अर्शनाशक	॥) आना	१।) रु०
यशद भस्म	प्रमेह, प्रदर, जीर्णज्वर नेत्र रोग नाशक	॥) आना	१।) रु०
प्रवाल भस्म	क्षय, रक्त पित्त, खाँसी, अशक्ति नाशक	॥) आना	१।) रु०
मँडर भस्म	पाँडु, कामला, तिल्ली, यकृत वृद्धिनाशक	॥) आना	१।) रु०
स्वर्ण माक्षिक भस्म	गर्भाशय के रोग, पांडु, उदररोगनाशक	॥) आना	१॥) रु०
त्रिवंग भस्म	वीर्य स्राव, प्रमेह, अशक्तिनाशक	२) रु०	७॥) रु०
शँख भस्म	मन्दाग्नि, अजीर्ण, गुल्म रोग नाशक	।) आना	१) रु०
कपर्दभस्म (वराटिका भस्म)	तिल्ली, यकृत, परिणाम शूल नाशक	।) आना	१) रु०
शुक्ति सामुद्रिक भस्म	मन्दाग्नि, तिल्ली; क्षय, नाशक	।) आना	१) रु०
क्षादर अङ्ग भस्म (श्वेत)	पसुली दर्द, फुफ्फुस सन्निपात नाशक	॥) आना	१।) रु०
गौदन्ती हरताल भस्म	शीत ज्वर नाशक	।) आना	१) रु०
हरताल भस्म (श्वेत)	वात रक्त, वात व्याधि, कुष्ठ नाशक	२) रु०	७॥) रु०
शंखिया (मल्ल) भस्म,	पौष्टिक, वात व्याधि, नाशक	२) रु०	७) रु०
कान्ति लौह भस्म,	रक्तशोधक, रक्त वर्धक, पाँडु मन्दाग्निनाशक	४) रु०	१५) रु०

रसादिक

नाम	गुण	की० १ तो०	की० ५ तो०
बसन्त कुसुमाकर रस	सर्व प्रमेह बहुमूत्र मधुमेह नाशक	१५)	६०)
स्वर्ण बसन्त मालती रस	जीर्ण ज्वरक्षय नाशक	८)	३५)
स्वर्ण पर्पटी	संग्रहणी, क्षय, सूजन नाशक	१०)	४०)
विजय पर्पटी	" " "	१०)	४०)
लौह पर्पटी	मन्दाग्नि, पाँडु, संग्रहणी नाशक	२)	७।)
रस पर्पटी	संग्रहणी, शोथ, रक्त विकार नाशक	१)	५)
ताम्र पर्पटी	खाँसी, उदर रोग; सूजन नाशक	२)	७।)
पंचामृत पर्पटी	अम्लपित्त, संग्रहणी शोथहर	४)	२०)
कस्तूरी भैरव रस	त्रिदोष नाशक	१०)	४५)
चन्द्रप्रभा वटी	सर्व प्रमेह, अर्श, मन्दाग्नि नाशक	१)	३॥)
बृहत योगराज गुग्गुल (सर्व धातु मिश्रित)	८० प्रकार की वात व्याधि नाशक	१)	४॥)
सिद्ध प्राणेश्वर रस	ज्वरातिसार मन्दाग्नि नाशक	२)	७॥)
मृ० कुव्यादि रस	हैजा, शूल. अजीर्ण	१)	४)
मृत्युञ्जय रस	नवीन ज्वर नाशक	।)	१)
संजीवनी वटी	सर्पदंश, हैजा, सन्निपात नाशक	॥)	१।)
आनन्द भैरव रस	ज्वरातिसार, सन्निपात नाशक	।=)	१)

महाज्वरांकुश रस	विषम ज्वर शीतज्वर नाशक	॥)	१।)
कैशोर गुग्गुल	वात रक्त नाशक	।)	१)
काँचनार गुग्गुल	गंडमाला, अपची नाशक	।)	१)
वृ० शंखवटी	गुल्म अजीर्ण परिणाम शूल नाशक	।)	१)
गन्धक वटी	" " "	।)	१)
विषम ज्वरांतक लोह (पुटपक्व)	विषम ज्वर, पाँडु जीर्णज्वर नाशक	८)	३५)
विषम ज्वरांतक लोह	विषम ज्वर पाँडु नाशक	१)	३)
श्वाँस कुठार रस	श्वांस, खांसी, ज्वर नाशक	॥)	१।)
हिरण्य गर्भ पोटली रस	क्षय, मूर्छा, अपस्मार नाशक	१०)	४०)
ग्रहणी गजेन्द्र रस	सँग्रहणी, अतिसार नाशक	१)	४)
संग्रहणी कपाट रस रौप्य स्वर्ण मिश्रित)	असाध्य संग्रहणी घोर अतिसार नाशक	१०)	३०)
प्रदारि रस	सर्व प्रदर नाशक	२)	६।)
अम्ल पित्तान्तक लोह	अम्ल पित्त हर	॥।)	३)
इच्छा भेदी रस	रेचक उदर रोग ज्वर नाशक	॥)	१।)
उपदंश कुठार रस	उपदंश फिरंग रोग नाशक	॥)	२)
कटि मर्द रस	कृमि मन्दाग्नि उदर रोग नाशक	।)	१)
नारायण रस	सन्निपात, त्रिदोष हर	।)	१)
नवायश लोह	पांडु अजीर्ण शोथ नाशक	॥)	२)
श्रंगाराभ्रक रस	क्षय खाँसी, जीर्ण ज्वर	॥)	२॥)
शिरः शूलादि वज्र रस	शिरः शूल हरण में अद्वितीय	॥)	२)
कर्पूर रस	हैजा, खूनी, आंव के दस्त नाशक	१)	३)
दुग्ध वटी	संग्रहणी अतिसार अशक्ति नाशक	१।)	५)

शोधित द्रव्य

शुद्ध हिंगुल (हसपदा)	१)	तो० २)
शुद्ध आमलासार गन्धक	"	१।)
शुद्ध हिंगुलेत्थपारद	"	३)
शुद्ध जयपाल (अमाल गोटा)	"	४)
" हरताल वर्की	"	२)
" वच्छनाग (मीठा विष)	"	२॥)
" भल्लातक	"	१।)
" मैनसिल	"	१।)
" गुगुल	"	१।)
" सूर्यताप शिलाजीत	"	३)
" सखिया	"	५)
" कुचला	"	२॥)

तैल

महानारायण तैल	१ सेर
विष गर्भ तैल	"
वृ० चन्दनादि तैल	"
महालाक्षादि तैल	"
षठ विन्दु तैल	"
वृ० शुष्क मूलादि तैल	"
वृ० मरिचादि तैल	"
कृच्छ्र राक्षस तैल	"
वृ० कासीसादि तैल	" १
हयमारादि तैल	" १०

चूर्ण

सुदर्शन चूर्ण	१ सेर	४)
निम्बादि चूर्ण	„	२॥)
पुष्पानुग चूर्ण	„	४)
अविपत्ति कर चूर्ण	„	१)
नारायण चूर्ण	„	४)
कामदेव चूर्ण	„	५)
नसिंह चूर्ण	„	६)

घृत

महा त्रिफलादि घृत	१ सेर	६)
ब्राह्मी घृत	„	८)
फल घृत	„	८)
वृ० धात्री घृत	„	६)
वृ० अग्नि घृत	„	६)

अवलेह

च्यवनप्राशावलेह	१ सेर	३)
कूष्मांड अवलेह	„	४)
वासावलेह	„	३)
आद्रिकावलेह	„	३)
श्री बाहुशाल गुडावलेह	„	४)
वृ० कँटकारी अवलेह	„	४)
भृगु हरतिकी अवलेह	„	३)

अरिष्ट आसव

नाम औषधि	तौल	मूल्य
कुमारीआसव	५ सेर	७॥)
लोहासव	„	५)
खदिरारिष्ट	„	१०)
द्राक्षारिष्ट	„	८)
अमृतारिष्ट	„	१०)
कुटजारिष्ट	„	७)
बबूलारिष्ट	„	५)
अशोकारिष्ट	„	७॥)
कर्पूरासव	२० तो०	५)
सारिवाद्यारिष्ट	२ सेर	५)
वासारिष्ट	१ सेर	५)
दशमूलारिष्ट	५ सेर	१०)
चन्दनासव	५ „	६)
उसीरासव	१ सेर	८)

क्षार सत्व द्राव

यवक्षार चूर्ण	१० तो०	१॥)
अपामार्ग क्षार	„	३)
वासाक्षार	„	२)
कंटकारी क्षार	„	३)
इमली क्षार	„	३)
यवक्षार	„	३)
शँख द्राव	„	३)
जँबीरि द्राव	„	४)
सत्वगुडूचो	„	२)
रसांजन सत्व	„	१।)
साऊक्षार	„	४)

नोट—इस सूचीपत्र में दी हुई औषधियों के अतिरिक्त किसी भी आयुर्वेदीय औषधिकी आवश्यकता हो लिखिये विधि पूर्वक तैयार की हुई औषधि भेजी जायगी विशेष जानने के वास्ते फार्मेसी का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

पता—मैनेजर श्रीभगवत आयुर्वेदिक
फार्मेसी कलक्टर गँज
बरालोकपुर इटावा यू० पी०

कतिपय सहस्रोनुभूत पेटेंट औषधियां

पारद गुटिका

आयुर्वेद सिंधु में जिस अमृतमय गुण युक्त रत्न "पारद गुटिका„ को पूर्वज विद्वानों ने रासायनिक संसर्ग करके सिद्ध किया था वह रत्न प्राप्ति वर्तमान समय में दुर्लभ ही नहीं बरन दंत कथा जैसी प्रतीत होती थी परन्तु ईश्वरकी कृपा से हमने बड़ी खोज के साथ शुद्ध पारा तथा रसायन औषधि व वनस्पतियोंके संयोग से यह "पारेकी गोली तैयार की है जो कि समस्त भारतवासी भाइयोंके वास्ते लाभार्थ उपस्थित है जो सब प्रकार के असाध्य प्रमेह बवासीर, रक्त दोष हर प्रकार की नपुंसकता, ध्वजभंग आदि रोगों की शर्तिया दवा है अति समय मुख में धारण करने से मानुषिक व प्राकृतिक स्तम्भन कर महा आनन्द देती है उसपर भी तारीफ की बात यह है कि एकवार खरीद कर रख लेने के बाद सात पुश्त तक बराबर इसी रूप में अपना असर देती है वजन में सवा तोला की है मूल्य भी सर्व साधारण के लाभार्थ ४) रक्खा गया है पोस्टेज जुदा।

नोट—हमारे कार्यालयकी देखा देखी कुछ नक्कालों ने भी इसीसे मिलता जुलता नाम रख कर भाइयों को धोखा देना अखतियार कर लिया है अतः सावधान। मूल्य या वजन में कमी वेशी हो तो हर गिज न लेना वरना धोखा होगा पार्सल लेते समय श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा पढ़ लेना तब पार्सल छुटाइये।

वृहत् कामेश्वर पाक

प्रिय बन्धुओ! अगर आपके शरीर में थोड़ी या ज्यादा कमजोरी है। या धातु (वीर्य) का पतलापन मन्दाग्नि, स्मरणशक्ति व रति विषयक शक्ति का ह्रास हो चुका है तो आप इसी जाड़े की फसल में सिर्फ ४० दिन वृहत् कामेश्वर पाक सेवन कर लीजिये। उपर्युक्त शारीरिक विकार बिल्कुल दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट तथा बलवान हो जायगा। इस महौषधि का स्वर्ण व चांदी खास उपादान होने के कारण फौरन गुण करता है हर अवस्था वाले स्त्री, पुरुषों को सेवन करने में लाभदायक है। एक बार परीक्षा अवश्य कीजियेगा ४० दिन के इस्तेमाल योग्य दवा का दाम ४) है पोस्टेज अलग।

स्त्रियोंको अमृत समान उपयोगी

महिला जीवन

इस "महिला जीवन„के इस्तेमाल करने से स्त्रियों की समस्त प्रकार की शरीर सम्बन्धी बीमारियाँ दमन होती हैं जैसे प्रदर (योनि से श्वेत या लाल पानी का जाना) रजदोष, मासिक धर्म ठीक २ न होना, सर्वदा कन्या प्रसव ही होना, बांझपन, षढत्व, हिस्टिरिया रोग, इत्यादि दूर होकर आरोग्यता मय स्वर्गीय आनन्द मिलता है गर्भावस्था में सेवन करने से माता धीर वीर और साहसी बुद्धिमान सुन्दर

रत्न प्रसव करती हैं। लिखे अनुसार
उ। न करे तो ईश्वरको साक्षी देकर लिखें
नय वापिस दिया जायगा; परीक्षा प्रार्थ-
ु है। मूल्य फी शीशी ५) डा० अलग।

म हैजे के लिये रामवाण
ना इन्द्र सुधा।

क यह अनुपम गुण युक्त अमृत समान
नतीय सहस्रों बार की अनुभव सिद्ध
ोषधि है जो कि स्वदेशी औषधियों के
रणसे निर्मित हुई है। नीचे लिखे रोगों
मोड़ित हजारों रोगी इस 'इन्द्र सुधा'
ब्रआरोग्यता पा चुके हैं।

प अजीर्ण, दस्त, कै, हैजा (विशूचिका)
वृ सी, दमा, शिरदर्द, प्रतिश्याय, (जुकाम)
वृ ख दाँत, व डाढ़ का दर्द, कर्ण रोग,
द, खाज, खुजली, प्लेग, सूजन वात
ा, वर्र व बिच्छू, विष, प्लीहा, वायु
ला, बवासीर मुंह के छाले रक्त विका
तन तापबुखार हिचकी का बढ़ना, इन
ी रोगों के ऊपर सेवन विधि दवा के
थ भेजी जाती है। की० फी शी० ॥)
शी० १।) ६ शी० का २) दर्जन का ४)
र्जन के खरीददार को पेकिंग माफ।

चोंको मोटा ताजा बनानेवाली
अत्यन्त स्वादिष्ट और मीठी दवा
बाल पाल।
इसके आगे सब प्रकार के
बालामृत मात हैं।

बच्चोंके लिये आजकल बीसियों प्रकार
, बालामृत, बालानन्द, जन्म घुट्टी और
लाल पीले शरबत बजारों में बिकते हैं। परन्तु उनमें अधिकतर अंगरेजी तेज दवाइयों द्वारा बने हुये होते हैं। जिनके सेवन से लाभके बदले हानि होती है वह यह कि बच्चे उन आषधियोंके पीनेके अभ्यासी हो जाते हैं। यदि बच्चेको कुछ दिन पिला कर बन्द कर दिया जाय तो उसका हाजमा पहिलेसे भी खराब हो जाता है भूख मन्द होकर बच्चा सुस्त रहने लगता है परन्तु 'बालपाल' में यह एक भी दोष नहीं हैं।

बालपाल—बच्चोंकी बदहजमी (कब्ज) दूधका पटक देना हरे, पीले, दस्त, खाँसी सुखटी रोग, डब्बा रोग, बुखार, सर्दी आदि रोगों को दूर करने में रामबाण है। बच्चों को मोटा और बलवान बनाने में एक ही है मीठी २ औषधि होने के कारण बच्चे स्वयं मांग २ कर पीते हैं मू० फी शी० ॥) तीन शी० का २) दर्जन का ६) डाक व्यय अलग

बृहत कामेश्वर तिला

इस तिला के सेवन से कैसी ही हस्त मैथुनादि कुटेवों से उत्पन्न हुई नसों की कमजोरी, ढीलापन, अशक्तता, सिर्फ सात रोज में दूर करके नामर्द को मर्द बनाकर रति कार्य में कुशल बना देता है। हताश बन्धुओं को परीक्षा प्रार्थनीय है। अगर लिखे अनुसार गुण न करे ईश्वरको साक्षी देकर लिखने से दाम वापिस देते हैं। छोटी शीशी का १) कीमत फी तो० २)

मंगाने का पता- श्रीभगवत फारमेसी बरालोकपुर इटावा यू० पी०

माल पसन्द न पडने पर एक सप्ताह तक वापिस लिया जायगा.

आनन्दधारा ओफीसका

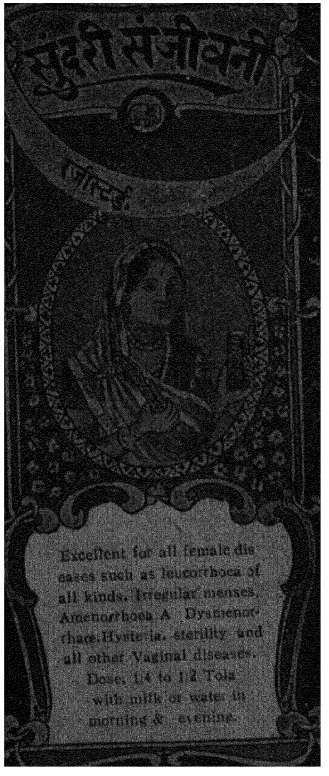
सब तरहके बुखारको ६ घन्टेमें नाबूद करनेवाला

मेलेरीया | हाथी रजी | छापका स्टर्ड | मीक्श्चर

मलेरीया, रोज़ाना, तिज़ारी, चौथिया आदि हरतरहके बुखारको नाबूद करके शक्ति देता है मूल्य ॥) आठ आना शीशी

स्त्रीयोंके समस्त रोगोंको एकही दवा

सुदरी संजीवनी (रजीस्टर्ड)



स्त्रियोंके समस्त रोगोंका नाश करके उनके शरीरको तन्दुरस्त और मज़बूत बनाता है। स्त्रियोंको होने वाले रोग प्रदर–कि जिनमें लाल, सफेद पीली आर चिकनी धातु जाती है, पेशाबमें जलन होता है, कमर, पीठ, घुटने और शिरमें दर्द होता है–इत्यादि तथा मासिक धर्म साफ़ न होना, कभी कम, कभी जियादह, कभी जल्दी, कभी देरमें और दर्दसे होना इत्यादि गर्भाशयके रोग, प्रसूति रोग, वन्ध्यत्व, निर्बलता, शरीरका फीका रहना आदि समस्त रोगोंको दूर करनेमें बेजोड़ दवा है। यह दवा कन्याओं को सेवन कराई जाय तो उन्हें भविष्यमें प्रदर इत्यादि होने का भय नहीं रहता। और शरीर हृष्टपुष्ट तथा तन्दुरस्त रहता है। इस का सेवन गर्भवती स्त्रियोंको कराया जाय तो गर्भपात का भय नहीं रहता, गर्भ को पोषण मिलता है और प्रसवके समय अधिक कष्ट नहीं होता; स्त्रियों को पुष्ट बनाता और उनकी सुन्दरता में वृद्धि करता है। मूल्य शीशी १ रु. १)

पता—१ ऊंझा फार्मसी, अहमदाबाद. Ahmedabad

(२) ,, कालबादेवी, वीट्ठलवाडी—बम्बई. नं. २

'सूर्यप्रकाश मुद्रणालय' पानकोर नाका—अमदावाद.

आनन्दधारा ओफीसकी प्रख्यात दवाईयां

सेंकडों रोगोंके लिए एकही तुरन्त अद्भुत गुण करनेवाली निर्भय अनुपम औषध.

आनंदधारा (रजीस्टर्ड)

अज़ीर्ण, अपचा, दस्त. कै, कोलेरा, अरुची, खांसी, श्वास, अतिसार, बुखार, शूल, चस्का पक्षाघात, लकवा, शिर दुखना, नाक, कान, मुंह, दांत के रोग, बिच्छु आदि जहरीले जन्तुके दंशमें उपयोगी है। मूल्य रु. १) शीशी.

वृद्धोंके शरीरमें बल और नवजीवन लाने वाला

वृद्धजीवन

वृद्धोंको अवश्य सेवन करना चाहिए। वृद्धावस्थामें होने वाले रोग इसके सेवनसे रुक जाते है और शरीर बलवान बनता है। 'वृद्धजीवन' वृद्धोंको नवीन जीवन देता है। वृद्धोंके लिए बहुत ही गुणकारी वस्तु है। मूल्य शीशी १ का १) रु.

धातुविकार और निर्बलताकी अकसीर दवा

शक्तिसागर (रजीस्टर्ड)

जवानीकी ताक़त चाहे जिस कारणसे नष्ट हुई हो इसके सेवनसे दुबारा लौट आती है। वीर्यस्राव, वीर्य की हर प्रकारकी खराबी, मूत्राशयके रोग, और शरीर तथा दिमागकी निर्बलतामें शक्तिसागर अच्छा गुण दिखलाता है। मूल्य ३२ गोलीकी शीशीका १) रु.

बालकोंको हृष्टपुष्ट, मज़बूत और स्वस्थ रखनेवाला

बालजीवन

यह बालकोंके लिये अत्युपयोगी औषध है, जिन बालकोंका चहेरा निस्तेज, फ़ीका, पीला और कुम्हलाया हुवा रहताहो; जिनका पेट घड़ासा और हाथ पैर डोरीसे हो गए हों; जो हमेशां बीमार और कमजोर रहते हों उन्हे यह दवा निरोगी मजबूत और हृष्टपुष्ट बनाती है। यह दवा रोगी और निरोगी सभी बालकोको निस्सन्देह सेवन कराया जा सकता है। बालकोंको हृष्टपुष्ट और मजबूत बनानेके लिए बेजोडहै। मुल्य १ शीशीका १) रु.

आंखोके अनेक रोगो के लिए

नेत्रबिंदु (Eye drops)

आंखों दुखना, लाल रहना, सूजन, सुबह उठते समय पलकोंका चिपट जाना आदि आंखोंके रोगोंमें अकसीर है। मूल्य शीशीका रु. ।) चार आना

संग्रहणी (स्प्रू) का अकसीर उपाय

संग्रहणी नाशक (रजीस्टर्ड)

चाहे जितनी भयङ्कर संग्रहणी क्यों न हो इसके सेवनसे शीघ्रही जाती रहती है दिनमें ५०-५० दस्त होते हों तो भी इस के सेवनसे शीघ्रही बन्द हो जाते हैं। मूल्य ४८ गोलीकी शीशी १ का १) रु.

सब जगह एजन्टों की आवश्यकता है। नियम मंगाइये।

पता— १ ऊंझा फार्मसी, अहमदाबाद. Ahmedabad

(२) " " कालबादेवी, वीठलवाडी—बम्बई २.

हर हमेश घरमें रखने योग्य निर्भय, सुलभ और गुणकारी औषध और

औषध पेटी

नाम	उपयोग	मूल्य १ तोलेका
महाज्वरांकुश	बुखार, विषमज्वर	८-८
आनन्दभैरवरस	ज्वरातिसार, सन्निपात	०-८
इच्छाभेदी रस	जुलाबकी उत्तम दवा	०-८
कर्पूर रस	मरोड, अतिसार, पेशिच	१-८
अग्निमुख लोह	अर्श, पांडु, कब्ज	२-०
राजवल्लभ रस	रक्तार्श, अजीर्ण	१-०
बृहद् शङ्खवटी	मंदाग्नि, अफारा, कोलेरा	०-८
कृमिमुद्गर रस	कृमि रोग	०-८
आनन्दधारा	समस्त रोगोंके लिए	१-८
शंङ्खद्राव	उदर रोग, गुल्म, शूल	१-०
बोलपर्पटी	सर्वप्रकारके रक्तस्राव	१-०
लोकनाथ रस	जीणज्वर, क्षय, खांसी	२-०
खदिरादि गुटिका	खांसी, स्वरभंग	०-८
श्वासकुठार रस	श्वास, दम, निमोनिया	०-८

नाम	उपयोग	मूल्य १ तोलेका
हिक्काहर रस	हिचकी	१-०
छर्दि रिपु रस	उलटी कै होना	१-०
महायोगराज गुग्गुलु	समस्त वातरोग	१-८
केशरादि रस	उपदंश, विस्फोटक	३-०
चन्द्रोदयाञ्जन	समस्त नेत्ररोग	०-८
गर्भपाल रस	गर्भिणी स्त्रीके रोग	२-०
षडबिन्दु तैल	नाक तथा कर्णके रोग	०-६
बालरक्षक पील्स	बालकोंके रोगोंकेलिए	०-१२
फीवर पिल्स	बुखारोंके लिये	१-०
यवक्षार	कफ, मूत्रविकार	०-६
अमृत संञ्जीवनी	धातुक्षीणता, अशक्ति	२-०
दद्रुघ्न मरहम	दाद खुजली	०-४
व्रणराक्षस	गांठ गूमडों के लिये	०-४

उपर लिखी हुई २७ दवाईयोंकी **औषधपटी** आती है जो उपरोक्त रोगोंके अतिरिक्त अन्य कितनेही रोगोंमें भी काममें आती है; और बार बार होनेवाले रोगोंके हमलेसे बचाने वाली होनेसे, वैद्यो, डाक्टरों, हकीमों, धर्मार्थ औषधालयों और सर्व साधारणको समान उपयोगी है। सफरमें सच्चा मित्रका काम देती है। हरेक शीशीमें लगभग १–१ तोला दवा होनेसे मूल्य ३०) लगभग होता है किन्तु हालमें थोडे समयके लिए २०) रखा है। पोस्टेज १॥) होता है। सुन्दर पेटी मुफ्तमें साथमें आती है। दवाइयां खराब होनेका भी भय नहि हैं। मंगानेके बाद पसन्द न पड़ने पर ८ दीन तक वापिस लिया जाता है।

निरोगी और तन्दुरस्त रहना हो तो

"आरोग्य–दर्पण"

(त्रिमासीक) का ग्राहक होना चाहिये क्योंकि इसमें आरोग्य वनस्पति रोगोंके कुदरती तथा आयुर्वेदिक उपचार आते है। वार्षिक मूल्य सिर्फ ॥) आठ आने। गुजराती, हिंदी और मराठी में निकलता है।

पताः (१) **ऊंझा फार्मसी, अहमदाबाद.** AHMEDABAD

(२) ,, ,, **कालबादेवी विट्ठलवाडीके नाके, बम्बई नं. २**

अत्युत्तम पौष्टिक

मकरध्वज याकूती

(रजीस्टर्ड)

नातः परतरः श्रेष्ठः सर्वरोगनिषूदनः ।
वीर्यवृद्धिकरश्चैव वाजीकरण उत्तमः ॥

वीर्य बढ़ाने वाली और पौष्टिक दवाओंमें यह दवा सबसे उत्तम है । पुराने समयोंमें राजा, महाराजा इस वाजीकरण दवाके रूपमें सेवन करते थे । यह वही दवा है कि १–२ तोला खिलाकर पुराने वैद्य रजवाडोंमेंसे बड़ी बड़ी जागीरें, सम्पत्ति और सन्मान प्राप्त करते थे । इस दवामें सुवर्ण भस्म, बंग भस्म, मोती भस्म, आदि कीमती भस्में, और रस सिन्दूर, सुवर्ण सिन्दूर, कस्तूरी आदि मूल्यवान और अत्यन्त गुणकारी दवाइयां पडती है। जो लोग राजशाही और बादशाही ताक़तकी दवाओंके नामसें कुचला अफीम और भांग आदिकी बनावटें खाकर अपनी तन्दुरस्ती ख़राब करते हैं उनसे इस दवाके सेवन करनेके लिये खास तौरपर सुफारिश की जाती है ।

यह दवा ज्ञानतन्तुओंको मज़बूत बनाती और वीर्यको गाढ़ा करती हैं। गई हुई ताक़त इसके सेवनसे लौट आती है । इस दवामें ख़ास गुण यह है कि रोगीको निरोग और निरोग मनुष्यको पुष्ट बनाती है । इसके सिवाय अनेक रोगोको नाश करती है । मू० ४० गोलीकी शीशीका १०) रु.

बालकोके समस्त रोगोंके लिए

बाल रक्षक पील्स.

बालकोंके लिये यह गोलियां बहुत खोज करनेके बाद ख़ास वनस्पतिसे बनाइ गई है जो सब बालकोंको बिना किसी खतरेके सेवन कराइ जा सकती है । शास्त्र पद्धतिके अनुसार बनी हुई इन गोलीयोंमें नशीली या मादक एकभी चीज़ नहीं हैं । इस लिए इनका सेवन करानेसे कोई हानि होनेका भय नहीं रहता ।

यह गोलियां बच्चोंके बुखार उल्टी, खांसी, दस्त, श्वास, सरदी, गला पडना दरद, अफारा आदि बालकोंके सब रोगोंमे उत्तम काम करती है । निरोगी बालकोंको सेवन करानेसे उनकी तन्दुरस्ती कायम रहती है और शरीर पुष्ट होता है । बहुतसी दवाइयां सेवन कराके बालकोंके शरीरको ख़राब न कर सिर्फ एक यही दवा सेवन कराइये इससे आपको जरुर सन्तोष मिलेगा । १ शीशीका मू० ॥|) बारह आना

पेता:—१ ऊंझा फार्मसी–अहमदाबाद AHMEDABAD

२ ,, ,, कालबादेवी; विठ्ठलवाडी बम्बई. नं. २

आयुर्वेदिक औषधें बनानेवाला ३६ वर्षका पुराना प्रसिद्ध लोकप्रिय कारखाना.

ऊंझा आयुर्वेदिक फार्मसी.

हेड ओफीस-रीचीरोड, अहमदाबाद.

बांच—कालबादेवी, विट्ठलवाडीनाका, बम्बई नं. २

कारखाना, ऊंझा (आबुके पास)

शक्तिका संग्रह करनेके लिए और तन्दुरस्ती बल, और बुद्धि बढ़ानेके लिये जाड़ेके दिनमें नीचेके निर्विकारी, निर्भय, औषधियोंमें से एकाद दो का च्यवन प्राश (जीवन) के साथ अवश्य सेवन कीजिए।

भस्मो	१ तोलेका मूल्य.
अभ्रक भस्म नं. १(१००० पुटी)	४०-०-०
,, नं. ३ (१०० पुटी)	८-०-०
सुवर्ण भस्म	५०-०-०
चांदी भस्म	८-०-०
ताम्र भस्म	४-०-०
बंग भस्म नं. १	४-०-०
,, नं. २	२-०-०
जसत भस्म	५-०-०
नाग भस्म	४-०-०
कांतलोह भस्म	५-०-०
लोह भस्म नं. १	४-०-०
,, नं. २	२-०-०
मंडुर भस्म	१-०-०
पन्ना भस्म	२५-०-०
माणक्यि भस्म	२०-०-०
मुक्ता भस्म नं. १	३०-०-०
वैक्रान्त भस्म	२०-०-०
प्रवालपिष्ट नं. १	१ ८-०
प्रवाल भस्म	१-० ०

रसो	१ तोलाका मूल्य
पूर्णचंद्रोदय रस नं १ (सुवर्णघटीत)	२५-०-०
चंद्रोदय रस	१५-०-०
पूर्णचंद्रोदयनी अनुपानवाली गोली	१२-०-०
,, ,, नं. २	६-०-०
मकरध्वज वटी	६-०-०
रस सीन्दुर	४-०-०
सुवर्ण पर्पटी	१२-०-०
महालक्ष्मीविलास रस	१०-०-०
सुवर्णमालती वसंत नं. १	१०-०-०
सिद्ध मकरध्वज रस	२०-०-०
वसंत कुसुमाकर रस	१५-०-०
हेमगर्भ पोटली रस	१५-०-०
बृहत्वंगेश्वर रस	१५-०-०
चींतामणी चतुर्मुख रस	२५-०-०

उपरोक्त दवाईयां सैकडों रोगोमें काममें आती है। सूचीपत्र मुफ्त मंगाईये।

पता—१ ऊंझा फार्मसी, अहमदाबाद. Ahmedabad.

२ ,, ,, कालबादेवी, विट्ठलवाडी—बम्बई नं-२

कुछ प्रभावशाली शास्त्रोक्त दवाईयां

नाम	उपयोग	मूल्य
चूर्ण-क्वाथ		१० तोलाका
महासुदर्शन चूर्ण	–बुखार. खांसी	०–८
त्रिफला चूर्ण	–कब्ज, नेत्ररोग,	०–६
हिंगाष्टक चूर्ण	–अजीर्ण, अपचा,	०–७
स्वादिष्ट चूर्ण	,, ,,	०–८
सीतोपलादि चूर्ण	–खांसी, क्षय	१–०
अभयादि क्वाथ	–बुखार, कब्ज	०–३
बृहत्मंजीष्टादि क्वाथ	–रक्तविकार	०–४
देवदार्व्यादि क्वाथ	–सूतिकारोग	०–५
दशमूल क्वाथ	– ,,	०–४
महारास्नादि क्वाथ	–वातव्याधि	०–४
प्रवाही क्वाथ	–उपरके सब तरहके	०-१२

गुटिका गुग्गुल

		१ तोलेका
खदीरादि गुटिका	–प्रमेह, मूत्ररोग	०–८
चन्द्रभा गुटिका	–प्रमेह, मूत्ररोग	१–०
शंखवटी	–अजीर्ण, अपचा	०–६
गोदन्ती पील्स	–बुखार, खांसी	०–८
महायोगराज गुग्गुल	–पक्षाघात	१–८
योगराज गुग्गुल	– ,,	०–४

– रसो –

		तोलेका
अग्निरस	–खांसी	०–८
अग्नि कुमार रस	–अजीर्ण, शूल	०–८
अग्नि तुंण्डीवटी	–मंदाग्नि, विर्यश्राव	०–८
अभ्र चोली रस	–शूल, कब्ज	०–८

नाम	उपयोग	१ तोलेका
आरोग्यवर्धनी रस	–उदररोग, सोथ	१–०
गर्भपाल रस	–गर्भणी स्त्रीके रोग	२–०
त्रिभुवन कीर्तीरस	–बुखार, सन्निपात	०–८
ज्वरमुरारि रस	–कब्ज, बुखार	०–८
पंचामृतपर्पटी	–संग्रहणी, सोथ	४–०
रत्नगीरी रस	–बुखार, अशक्ति	१०–०
सुवर्ण वसंत मालती नं. १	–क्षय, जीर्णज्वर, अशक्ति, धातुक्षीणता,	१०–०
सुतशेखर रस	–(सुवर्णयुक्त)अम्लपित्त	३–४

आसव–अवलेह ४० तोलेका

च्यवन प्राशावलेह	–धातुक्षिणता	२–०
वासावलेह	–दम, खांसी	२–८
हरीतकी अवलेह	–कब्ज, खांसी	२–८
अभयामलकी अवलेह	–संग्रहणी	२–८
द्राक्षासव	–अजीर्ण, कब्ज	१–४
कुमार्यासव	–उदररोग	१–८
लोहासव	–पांडु, यकृत,	२–०
अशोकारिष्ट	–प्रदर, लोहिवा	२–०

तैल–घृत १० तोलेका

नारायण तैल नं. १	–पक्षघात, लकवा	२–०
,, **नं. २**	,, ,,	१–४
लाक्षादि तैल	–क्षय, जीर्णज्वर	२–०
ज्योतिष्मती तैल	–अपस्मार, चित्तभ्रम	१–४
वाल्मीघृत	– ,, ,,	१–८
फलघृत	–व्यध्यत्व	२–०
त्रिफलाघृत	–नेत्ररोग	२–०

सूचीपत्र मुफत मंगाईए

पताः—१ ऊंझा–फार्मसी–अहमदाबाद. AHMEDABAD

२ ,, ,, काल्बादेवी विठ्ठलवाडी बम्बई नं. २

बड़ोदे राज्यकी लायब्रेरीके लिये मंजूर है।

आयुर्वेद शास्त्रका अपूर्व ग्रन्थ.

भारत भैषज्य रत्नाकर

इस पुस्तकमें अकारादि क्रमसे रस, भस्म, गुटिका, अवलेह, आसव, घृत तैल, चूर्ण, कवाथ आदिकी बनावट और गुणदोष, चरक, सुश्रुत, वागभट्ट रसेन्द्र सारसंग्रह, क्वदनिग्रह बुहत्निघंटु रत्नाकर, भैषज्य रत्नावली, आदि प्रमाणीक सैंकडो ग्रंथोंके संस्कृतमें श्लोक और हींदीमें टीका सहित आ जाते है इस लिये यह एक ऐसा उपयोगी ग्रंथ है कि विद्वान देखता है, वही मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करता है और कहता है कि **"भारत भैषज्य रत्नाकर पास रखनेसे अन्य ग्रन्थोंकी आवश्यकता ही नही पड़ेगी। यह एक ही ग्रन्थ एक अच्छी आयुर्वेदिक लायब्रेरीका काम देगा। इसकी एक प्रति तो प्रत्येक को अवश्य ही अपने पास रखनी चाहिये।"**

कुछ मामुली लोगोंका नही बल्कि कविराज महोपाध्याय गणनाथसेन सरस्वति M A. L M. S. वैद्यराज यादवजी आचार्य, वैद्यराज कृष्णशास्त्री देवधर प्राणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य लक्ष्मीराम स्वामी आदि निखील भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलनके प्रमुख वैद्यराज त्रंबकलाल त्रिभुवनदास प्राणाचार्य, वैद्यशास्त्री नारायणशंकर देवशंकर आदि गुजरात प्रांतिक वैद्य सम्मेलन के प्रमुख। वैद्यराज धीरजराम दलपतराम प्राणाचार्य, वैद्यराज जीवराज कालीदास, वैद्यराज नानभइजी आदि गुजरात और काठियावाडके प्रख्यात वैद्यराज। निखील भारत वर्षीय विद्यापीठका मंत्री भिषगरत्न डॉ. प्रसादीलाल L. M. & S. हिन्दु युनीवरसाटी बनारसके रसायन शालाके सुपरीटेन्डन्ट कविराज प्रतापसिंहजी भिषग्मणि वैद्यराज कृष्णप्रसाद त्रिवेदी आयुर्वेदविशारद B. A. आदि प्रसिद्ध वैद्यो। अष्टांग आयुर्वेदिक कोलेज, काली कमली वालेकी आयुर्वेदिक कोलेज, ललीतरही आयुर्वेदिक कोलेज, जगन्नाथपुरी संस्कृत महाविद्यालय, दयानन्द आयुर्वेदिक कोलेज, पटीयाला राजकीय आयुर्वेदिक कोलेज, कांगडी गुरुकुल विश्वविद्यालय, आदि आयुर्वेदिक कोलेजो। और अनुभूत योगमाला आरोग्यसीन्धु (हींदी) आयुर्वेद प्रकाश, वैद्यकल्पद्रुम, आयुर्वेद विज्ञान, वैद्यकल्पतरु, आरोग्यसीन्धु, राकेश वैद्य सम्मेलेन पत्रिका, चिकित्सक चिकित्सा चमत्कार आदि वैद्यक मासीक पत्रोंने मुक्त कण्ठसे प्रशंसा किया है **औषध निर्माण विधि वर्तमान कालापयोगी मात्रा और अनुपानादि भी लिखे गए है।**

पुस्तकके हरेक भागके साथ एक **चिकित्सा पथ प्रदर्शिनी** भी दी गई है, कि **जिसकी सहायता से** यह बात बडी आसानी से समज में आ सकती है किस रोगकी किस दशा और किन उपद्रवों में कौन सी औषध देनी चाहिए।

इस अपूर्व ग्रन्थकी एक एक प्रति हरेकके पास अवश्य होनी चाहिये। प्रथम भाग (बडे साइजके ३५६ पृष्ठः) मू० ४॥)**द्वितीय भाग** (बडा साइज ५७६ पृष्ठ) मू० ६॥

दोनों भाग एक साथ लेनेसे ९ रु०) और आरोग्य दर्पण भेट

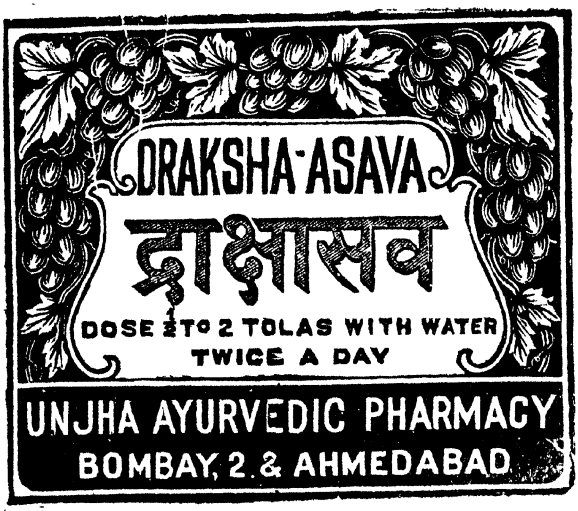
पताः १ **ऊंझा फार्मसी, अहमदाबाद.** AHMADABAD.

२ ,, ,, **कालबादेवी विठ्ठलवाडी नाके बम्बई–२**

सुचना–पुस्तक मंगानेके बाद पसन्द न पड़े तो सप्ताह तक वापिस लीया जायगा।

निरोगी और तन्दुरत रहनेके लिये

द्राक्षासव और च्यवनप्राशावलेह (जीवन) सेवन कीजीए।



द्राक्षासव.

कडाकेकी भूख लगाता, कब्जको दुर करता, खून साफ करता और बढाता है। इसके सेवनसे अशक्ति दूर होती और मीठी नींद आती है। दम, अम्लपित्त, अरुचि, संग्रहणी आदिमें उपयोगी है। क्षयको अटकाता है। मूल्य देढ रतलीका १।।) रतलीका १।) आधा रतलीका ।।।)

च्यवनप्राशावलेह



इसे सैंकडो आदमी सेवन करते और सन्तोष प्रगट करते है। बाल, वृद्ध, युवक, स्त्री, पुरूष सभीके लिऐ हितकारी है क्षय, दम, रक्तपित्त, धातु क्षीणता, अशक्ति, खांसी, स्वरभंग, और वीर्य विकारके लिए उपयोगी है। यह वही दवा है जिसके सेवनसे वृद्ध च्यवन ऋषिको युवावस्था प्राप्त हुई थी। मूल्य ४० तोलेका २). २० तोलेका १)= १० तोलेका ०॥=)

पता:—१ ऊंझा फार्मसी अहमदाबाद, AHMEDABAD.

२ „ „ कालबादेवी, विट्ठलवाडी नाका–बम्बई नं. २

राकेश के नियम।

१—राकेश की नवम वर्ष ३० मित-ख्वर से आरम्भ होती है अतः यह द्वितीय वर्ष का द्वितीय अंक है।

२—राकेश प्रतिमास मास की अन्तिम तारीखों में प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य २) रु० है।

३—ग्राहक होने वाले सज्जन अपना पता साफ अक्षरों में लिखें।

४—जिन्हें पौष पत्र १० तारीख तक न पहुँचे पत्र आफिस से उत्तर लेकर हमें सूचना दें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिए।

६—प्रति वर्ष अनावश्यक लेखों का एक पृष्ठ पृष्ठ छपेगा। अधिक स्थान के लिये ।) प्रति देना होगा।

लेखकों के प्रति।

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

२—ग्रार्थिक चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रायः नहीं छापे जाते हैं।

३—गार्हस्थ्य सम्बन्धी वैज्ञानिक आलोचना पूर्ण लेखों को पत्र में प्रथम स्थान मिलेगा।

४—लेखों पर पुरस्कार मिलेगा।

५—लेखों के घटाने बढ़ाने का पूरा अधिकार सम्पादक को होगा।

६—प्रयोग (नुस्खे) सज्जन अनुभूत प्रयोग ही भेजने की कृपा करें जिन्हें प्रयोग नहीं किया गया है वह प्रकाशित होंगे।

मैनेजर



विषय	पृष्ठ		
१—डाक्टर कृष्णजी वर्मा का जीवन और राकेश के पाठकों को सन्देश	४१	८—स्वागत	६१
२—प्राचीन भारत और शल्य तन्त्र	४३	९—अनुभव सार	६२
३—भगवान धन्वन्तरि प्रार्थना	४८	१०—वैद्यकों से प्रश्न	६३
४—वय और सामाजिक व्यवस्था	४९	११—वैद्यकों के उत्तर	६४
५—कामना	५१	१२—वैद्यक समाचार	६६
६—हैजा (विसूचिका)	५२	१३—वैद्य संसार समाचार	६८
७—द्रव्योषधि विज्ञान	५६	१४—डाक्टर कृष्णजी वर्मा का संक्षिप्त परिचय	७०
		१५—पारितोषिक	७२

'राकेश' के ग्राहकों का द्वितीय वर्षारम्भ के उपलक्ष में

मुफ्त अपूर्व-उपहार मुफ्त

मुफ्त सिर्फ २ माह के लिये

"राकेश" के ग्राहकों को हम विशाल भुजा उठाकर जागृत करते हैं कि जिन प्रयोगों को हमारे पूर्वजों ने गुप्त रखकर यश व धन के भागी बने थे उन्हीं रत्नों को आज हम उपहार रूपमें बाँट रहे हैं समय चूकने पर पछताना पड़ेगा शीघ्रता कीजिये।

उपहार नं० १--जो सज्जन 'राकेश' के ५ ग्राहक बनावेंगे उन्हें विचित्र तैल और आनन्द मंगल घृत का प्रयोग बतावेंगे।

विचित्र तैल गुण—फोहा भर कर छाती पर रखने से छर्दि (कै) होती रहेगी और पेटपर रखनेसे दस्त ही होते रहेंगे फाहा उठा लेनेपर बन्द होंगे

आनन्द मंगल घृत गुण—जिस वक्त शिर दर्द हो सींक भर कर लगाने से फौरन दर्द बन्द होजाता है।

उपहार नं० २—१० ग्राहक 'राकेश' के बनाने वालों को १-सन्तान जीवन प्रयोग २-कुमार सञ्जीवन प्रयोग ३-कालान्तकरस प्रयोग देंगे।

गुण नं० १—जिनक कन्या २ हो होता हो निश्चय पुत्र होगा।

२—जिनके सन्तान न होती उनके अवश्य होगी।

३—प्रलापक सन्निपात में जिसमें रोगी भागे, बके, स्वेद प्रवाह हो इस रस से १००) की बाजी मारकर आराम कर सकता है।

उपहार नं० ३—'राकेश' के १५ ग्राहक बनाने वालों को (गर्भ शिशुपाल वटी) का प्रयोग देंगे।

गुण—जिन अबलाओं के सहस्रों प्रयत्न करने पर भी गर्भ पूर्ण नहीं होता हो उन्हें यह गर्भ शिशुपाल पूर्ण ६ या ७ मास तक रक्षा करके सुख प्रसव करा सुन्दर हृष्ट पुष्ट सन्तान देगा।

नोट—यदि कोई सज्जन झूठ समझें परीक्षा करें कि जब बालक पैदा होगा तो हमारा वटी बालक की दोनों बँधी हुई मुट्ठी में साथ आवेगा।

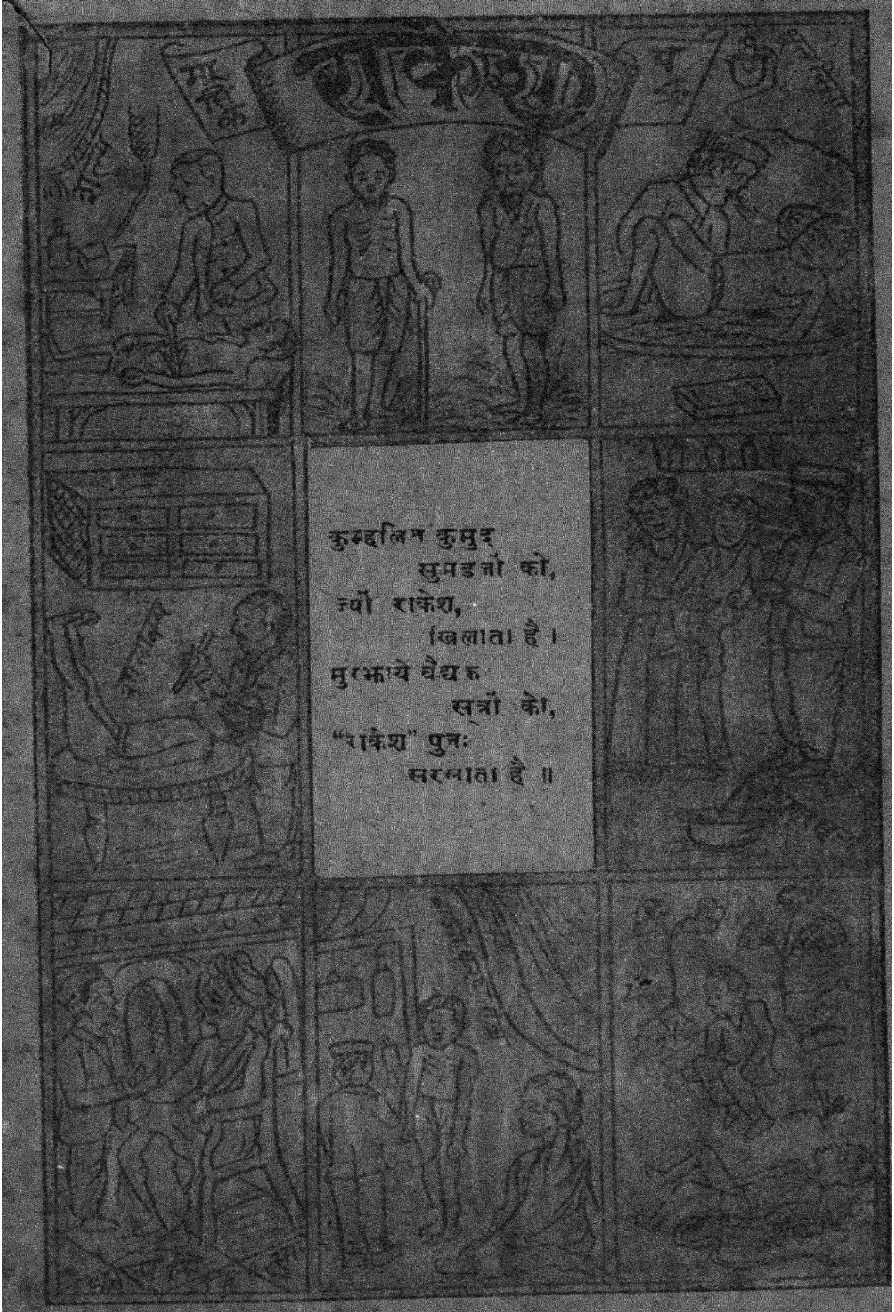
प्रयोग निष्फल होने पर हमारी शर्त—यदि उपरोक्त उपहार लेखानुसार गुण न करें तो राकेश मूल्य १॥) और ।=) हम अपने पास से देंगे। पता-आने पर प्रतिज्ञा पत्र भी लिख देंगे। पं० मुन्शीराम शर्मा रसायन शास्त्री बरालोकपुर।

उपहार नं० ४—१-जो सज्जन राकेश के ५ ग्राहक बनावेंगे उनके ३ प्रश्नों का उत्तर मुफ्त दिया जावेगा।

२-जो सज्जन स्वयं ग्राहक बन ५ ग्राहक अन्य नये बनायेंगे उनके ५ प्रश्नों का उत्तर मुफ्त मिलेगा।

प्रश्न पूछने का पता—ज्योतिर्विद पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
मु० गोतौना, पो० हैदरगढ़-बाराबङ्की।

RAKESH Rgd. No. A. 1870



संपादक—द्विवेदी पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री।

राकेश के नियम ।

१—राकेश का नवीन वर्ष ३० सितम्बर से आरम्भ होता है अतः यह द्वितीय वर्ष का तृतियाङ्क है।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों में प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य २) रु० है।

३—ग्राहक होने वाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें।

४—जिनके पास पत्र १५ तारीख तक न पहुंचे पोष्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें कृपया सूचना देवें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नं० अवश्य लिखना चाहिये।

६—ग्राहकों व गरीब रोगियों का मुफ्त छपेगा। अधिक छपाने के लिये ।) प्रति देना होगा।

लेखकों के प्रति ।

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

२—आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रयोग प्रश्न नहीं छापे जाते हैं।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषण पूर्ण लेखों को पत्र में प्रथम स्थान मिलेगा।

४—श्रेष्ठ लेखों पर पुरस्कार मिलेगा।

५—लेखों के घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

६—प्रकाशित किये सज्जन अनुभवी प्रयोग ही लेखें यही प्रार्थना है मिथ्या प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे।

मैनेजर

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

* कमलाकांत पाक्षिक पत्र *

यह पत्र स्वतन्त्र धर्म, आयुर्वेद, कलाकौशल और व्यापारादि विविध विषयों से विभूषित रहता है, प्रसिद्ध वैद्यों के अनुभूत प्रयोगों का एकमात्र खजाना है, कठिन और जटिल रोगों की सुलभ चिकित्सार्थ रोगियों तथा वैद्यों के प्रश्नोत्तर छापे जाते हैं, पाक्षिक पत्र होने पर भी वार्षिक मूल्य सिर्फ २) रु० मात्र है। नमूना मुफ्त मँगाकर देखिये।

इसी कार्यालय से प्रसिद्ध राजवैद्य पं० रामप्रसाद जी त्रिपाठी द्वारा 'सिद्ध योग संग्रह' प्रकाशित हुआ है जिसमें उक्त वैद्यमार्तण्डजी के कठिन परिश्रम और २१ वर्ष के अनुभव से प्राप्त हुए अद्भुत चमत्कारिक प्रयोगों का संग्रह है। यदि आप वैद्य बनकर स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हैं यदि अपने कुटुम्ब के मामूली तथा असाध्य रोगों में वैद्य तथा डाक्टर के पास दौड़ धूप न कर खुद ही इलाज करना चाहते हैं तो इसे अवश्य मँगाकर देखिये। मूल्य सिर्फ ॥) डाक खर्च ।) आना।

पता—मैनेजर कमलाकांत औषधिस, मु० भिवानी (पञ्जाब)

॥ श्री धन्वन्तरि जयतिः ॥

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण--परीक्षित ऐसी।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ का किया जहाँ करते वैदेशिक सारे।
करते हैं आरोग्य वहाँ जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २ | नवम्बर सन् १९२९ई० | उदय ३

शरदृतुचर्य्या और राकेश।

सृष्टी में उस जगदीश की करुणा सभी अनुपम कला।
आमोद और सुखबोध की सामिग्री सब निश्चला॥
उन्हीं कला के पुंज में ऋत्विक कला अनमोल है।
जिनकी छटा अनुपम ललित प्राकृतिक सौम्य किलोल है॥ १॥
ऋतुराज यद्यपि मुग्ध है सौन्दर्य निज आमोद में।
क्या उगते हैं सुन्दर कुसुम जननी प्रकृति की गोद में॥
सुन्दर सुगन्धित सुखमई नभ से धरा तक पूर्ण है।
संताप शीत वैकल्यता का दल समूह सब चूर्ण है॥ २॥
कहीं भूतली सम्पन्नसमि आमोद मन से छारही।
निज रंग विरंगे साज से जननी का रूप सजा रही॥
कहीं कोकिला कलरव करें आहा सुगंध रसाल में।
भौरे शिखणीं छन्द से करें नृत्य पंकज ताल में॥ ३॥
किन्तु। शरद ऋतु काल भी सजधज में कुछ कमसा नहीं।
अभिमत्त दत्त प्रमत्त में कहता कोई हम सा नहीं॥

अहा! देखये क्या मुग्ध है चकई लखि उस रूप को।
राकेश को! रजनीश को! शारदेश प्रकृति के भूप को ॥ ४ ॥
शृंगार जननी ने किया राकेश का किस ढंग से।
श्रवता सुधा वसुधा पतित आमोद और उमंग से ॥
बहु रङ्ग पुंजारिविन्द में अहा फूल सुन्दर खिल रहे।
राकेश गहने के लिये इस भावना से हिल रहे ॥ ५ ॥
अमृत छटा जो छा रही ऋतु शरद कुंज निकुंज में।
रहते नहीं चिरकाल तक यह सौम्य सुखदा पुंज में ॥
आवागमन संसार में प्रकृति का शुभ प्रस्ताव है।
इसही लिये तो आप से हमारा यह मार्मिक भाव है ॥ ६ ॥
जिस दिव्य द्युत राकेश के मिलने को लालित थे अहा।
वही पूर्ण घट पीयूष ले सौहृदयता दिखला रहा ॥
वैद्यो उठो उत्साह से राकेश का स्वागत करो।
दारिद्र दुःख संताप तज आरोग्यबल जाग्रित करो ॥ ७ ॥
लाये हैं प्रकृति मात का राकेश शुभ संदेश जो।
सादर श्रवण कर लीजियो श्रीमान करते पेश जो ॥
वर्षा ऋतु में देहका अहा भाव परिवर्तन पड़े।
कभी रश्मि दिन कर से तपे कभी पवन परवासे अड़े ॥ ८ ॥
इस हेतु वर्षा काल में नित चित्त रहता विकल है।
हृदय कमल खिलता कभी गर्मी से कभी अति खिन्न है ॥
वर्षा ऋतु का पित्त जो संचित हुआ था देह में।
सन्तप्त सहसा धूप से भ्रमता विषमता स्नेह में ॥ ९ ॥
उस पित्त के ही कोप से इस काल में बहु रोग हों।
ज्वर छर्दि मूर्छा भ्रांति से एक दम दुखी सब लोग हों।
अतएव ऐसे काल में रक्षार्थ उत्थित रोग का।
शान्त्यार्थ शुभ पालन करो प्रकृति के उत्तम योग का ॥ १० ॥
आहार और विहार का सेवन करो सद्भाव से।
यह पित्त शत्रु शांत हो राकेश के प्रस्ताव से ॥
लघु पाक भोजन चाहिये शीतल तरी से पूर्ण हो।
मिष्ठान्न क्या लवणान्न भी रुचि कर भरा सम्पूर्ण हों ॥ ११ ॥

गोधूम औदनशालि अरु शुभ मूंग सात्विक अन्न हो।
सेव दाडिमदाख आदिक मिष्टता सम्पन्न हो।
पालक पटोलादिक तथा मूली चौलाई शाक हो।
उपयोग उनका कीजिये जिनसे सहज परिपाक हो ॥ १२ ॥
घृत दुग्ध शर्करा शर्करा जीरा लवण युत तक्र हो।
वातले शमन यह रोग को इस ही का घर २ जिक्र है ॥
यदि औषधि भी खाय कुछ तो और भी आनन्द हो।
घृत पंचतिक्तिक सिद्ध कर खाने से देह स्वच्छन्द हो ॥ १३ ॥
दिन में दिवा कर रश्मि से जो नीर संतापित बने।
निशि में निशा कर रश्मि से शीतत्वता व्यापित बने ॥
यह नीर सोऽहल स्नान में शुभ स्वेद श्रोतो के लिये।
सुन्दर सुधा के तुल्य है सन्तप्त मोतों के लिये ॥ १४)
चन्दन कपूरादिक सहित लेपन करो सुस्नेह में।
स्वच्छन्द सुन्दर फूल की माला सुगन्धित देह में ॥
वस्त्र भी ऐसे हो का धारण भला माना गया।
सेवनशुनिर्मल चन्द्रिका अत्यन्त हित माना गया ॥ १५ ॥
प्रिय ! मांस तेलादिक दही मादक पदार्थ छोड़ना।
तीक्ष्ण लवण शुक्त शोक को निश्चस्थ हो मुंह मोड़ना ॥
रात्रि में खेलो ओस में दिन की भी निद्रा त्याग दो।
खोटे कर्म दुर्व्यसन में एक दम से मित्रो आग दो ॥ १६ ॥
पित्त होता है कुपित आतप कड़ा पाकर अहो।
इस वास्ते इस काल में अति धूप से बचते रहो ॥
मित्रो शरद ऋतु काल में आतप तजो आनन्द हो।
फिर चन्द्रिका राकेश में शुभ संक्रमण निर्द्वन्द हो ॥ १७ ॥
पीयूष वर्षाता अहा राकेश इस ही काल में।
प्रति मास घट पीयूष ले प्रत्यक्ष पत्रिक चाल में ॥
इस वास्ते हे प्राणियो पीयूष लो राकेश से।
आरोग्यदाही देह को करलो प्रकृति आदेश से ॥ १८ ॥
एक वर्ष में दो मुद्रिका ही का मिले पीयूष है।
दारिद्र दुख से ताप का हो नाश जो मनुष्य है ॥

राकेश कार्यालय खुला बरालोकपुर शुभ स्थान है।
शुभ प्रान्त इटावा पोष्ट खुद राकेश की पहिचान है॥ १९॥
श्री रूपेन्द्र नाथ जी शास्त्री सद्भाव सम्पादन करें।
सहकारी शर्मा साथ में नित चित्त से साधन करें॥
रहते नहीं दिन एक से आवागमन है कालका।
अपनाओ वैद्यो प्रेम से मौका है आज संभाल का॥ २०॥

लेखक—पँ० मुन्शीरामजी शर्मा वैद्य
स० सम्पादक

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे (किश्ता नुमा) चिकने, खूबसूरत मय घोंटने की उत्तम मूसली सहित तैयार रहते हैं, इनकी लम्बाई १५॥ इञ्च चौड़ाई १० इञ्च ऊंचाई ५। इञ्च वजन में २५ सेर के हैं दो सेर औषधि सरलता पूर्वक घोंटी कूटी जा सकती हैं इनके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं प्रत्येक खरल का मूल्य १०) रु० है खरल का आर्डर देते समय ५) रु० पेशगी अवश्य भेजे और साथ ही अपना नाम डाक खाना जिला व पास का रेलवे स्टेशन मये लाइन के नाम के साफ २ हिन्दी या अङ्गरेजी में लिख भेजें—बिला पेशगी आये आर्डर रद्दी समझे जांयगे।

पता—श्रीभगवत आयुर्वेदिक फ़ारमेंसी
बरालोकपुर इटावा यू० पी०

प्राचीन भारत और शल्य तंत्र

(ले०-श्रीयुत प्रो० रामकृष्ण जी वर्मा B. A. B. S. C. L. M. S.)

जिसमें चार फलकहोते थे जो आधार पर जुड़े रहते हैं खुलने पर इनका आकार कमल के समान हो जाता है यह फलक इक्षानुसार खुल और बंद हो सकते हैं।

योनि व्रणोक्षणां मध्ये सुषिरं षोडशांगुलम्।
मुद्गावद्धं चतुर्भित्तमम्भोज मुकुलाननम्॥
चतुः शलाकमा क्रान्तं मूले तद्विक सन्मुखे
॥ वाग्भट्ट ॥

इसके उपरान्त एक अन्य प्रकार का भी यही यन्त्र बनता था जिसको Vigmal spaculum अपने स्वरूप से मिलाता है जो भैंसेके सींग को काट करके बनाया जाता है क्रिया के समय नतोदर पृष्ट सामने रहता है इसका अधिक व्योहार नहीं होता था—

व्रण वस्ति

यह वस्ति वातिक व्रणों में विशेषतः कटि के निचले भाग में—

मूत्राघाते मूत्रदोषे शुक्र दोषेऽश्मरी व्रणे।
तथैवार्तव दोषे च वस्ति रप्युत्तरो हितः॥

प्रयुक्त होती थी। इसके लिये दो प्रकार के यन्त्र बनाये जाते है जिससे एक के द्वारा स्नेह सिंचन और दूसरे से व्रण विशोधन किया जाता है और वर्तमान कालमें भी प्रायः दो एनीमा व्योहार किये जाते हैं। इसके साथ नाड़ीं और चमड़े का वेग लगा रहता था नली-गोल-चिकनी गोस्तानाकार ६ अङ्गुल लम्बी लगी रहती है आगे का हिस्सा मटर के दाने के समान होता है। मुंह से कुछ दूर पर एक उभार बनाया जाता है।

दकोदर यंत्र

इसके लिये नाड़ी किसी धातु अथवा मोर पंख की खोखली बनाई जाती है इसके दोनों ओर मुंख होता है। कोष का बंधन व्रीहिमुख (Trocar) करने के पश्चात् इस नाड़ी से पानी बाहर किया जाता था यह नाड़ी ताम्र अथवा टीन की भी होती है इसको उरो गुदा में श्योत्वक्ति (Empy i- (ma) में भी व्योहार किया जाता है यथा द्विद्वारा नलिका पिच्छनलिका दकोदरे ॥ तथाच ॥ तत्र त्रप्वादीनामन्य तमस्य नाड़ी-द्विद्वारा पक्षनाड़ी वा संयोज्य दोषो दकमवसिञ्चेत् ॥ आजकल इसका कार्य Trocar and cannula. देता है।

वृद्धि यन्त्र

यह भी उपरोक्त रीत्यानुसार बनता है और वैसा ही कार्य करता है परन्तु आज कल जो यन्त्र व्योहार होता है वह उपरोक्त से छिद्रमें बड़ा है और उसको Hydracele Trocar and cannula कहा जाता है। सेविन्या पार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येत् व्रीहिमुखेनतु अथात्र द्विमुखां नाड़ी दत्वा विस्रावयेद् भिषक्। इस यन्त्र को लगाने की अपेक्षा कोई चिकित्सक भेदन करके जल निकालते थे—

निरुद्ध प्रकर्ष यन्त्र

इसको निरुद्ध प्रकर्ष ((Stricture in urethra) में लोहे की नाड़ी प्रयोग करना भी कहा जाता है। निरुद्ध प्रकर्षे नाड़ीं दत्वा विश्राव येद् भिषक्। दाखी वायस कृतां घृताभ्यक्तां प्रवेश येत्। ग्रहात् २ स्थूल तरां सम्भङ नाड़ीं प्रवेशयेत्।

२—सेविनी त्यक्त वा शस्त्रेण व मूत्र स्रोतः संकोच कराणां चर्म विदारयेत्

३—सन्निरुद्ध गुदे योज्या निरुद्ध प्रकर्ष क्रिया।

जब मूत्र रुद्ध होजाता था तब शलाका (Bougieor catheter) द्वारा खोला जाता था यह शलाका लोहा व लकड़ीं की बनी होंती थी प्रविष्ट करने के समय शूक्ष्म से आरम्भ करके धीरे धीरे स्थूल तक प्रवेश करते थे शलाकाको छिद्र के विस्तार के लिये तीन दिन वहीं पर रखते थे अर्थात इतने दिन एकका प्रयोग करते थे जब इसमें सफलता न मिलती थी तब शस्त्र कर्म करते थे। निरुद्ध प्रकर्षे नाड़ी द्विमुखी कनकादि-जाम। पुनः स्थूल तरा नाड़ी देपा स्रोतो विशुद्धये ॥ यही क्रिया सन्निरुद्ध गुदा (Stricture In Rectum) में भी की ज़ाती थी यथा रुद्ध गुदेप्येषा क्रिया कर्म (चक्रदत्त) यह शलाकायें स्वर्ण की भी बनतीं थीं।

बस्ति यन्त्र

इस यन्त्र में एक वेग और एक नली होती है यह नली किसी धातु या लकड़ी की बनाई जाती है जो कि चिकनी और साफ दृढ़ और गो पूच्छ के समान आकृति में होती है इसके सिरे पर गोल बल्व होता था जिसकी लम्बाई आकार परिध में अवस्था के अनुसार चरक-वाग्भट्ट सुश्रुत के भिन्न २ मत हैं हरीत ने लिखा है कि बांस की चार अङ्गुल शलाका बनाकर गुदा में दो अङ्गुल प्रवेश करे यथा—

चतुरङ्गुला वेणुमयीं नाड़ी प्रति लक्षणः कृत्वा तया वस्ति प्रति कर्म कुर्य्यात् गुदाभ्यन्तरे द्वयंगुलमात्रम्। साधारतः जब प्रयोग न होता था जन्तु प्रवेश बचाने से छिद्र बन्द रखते थे। गुदा में अधिक प्रवेश न हो जाय इससे एक उभार बनाया जाता इसी प्रकार दो अङ्गुल दूर पर एक और उभार होता था जो ट्यूब को वस्ति से नीचे खिसकने न देता था यह तागा या वस्त्र लपेट करके तय्यार किया जाता था वस्ति पशुओं के मूत्राशय से निर्मित होती थी दुर्गन्ध हरण करने के लिये चूना पानी से साफ होती थी उसे पूर्ण शुष्क करते थे। वस्ति स्वच्छ चिकनी होती थी यदि मूत्राशय न मिलता था तो मेढक की त्वचा या उदर की झिल्ली (Peritoneum) से बनाते थे सबके अभाव में वस्त्र या चर्म से बनाते थे—

अजाविके सौरयगजोष्ट्र योर्वा
गवाश्वयोर्वस्ति भुशन्ति माहिषम्।
सुवस्ति मष्टादशा षोड़शांगुलम्।
तथैव नेतंच दशांगुलम् क्रयात्॥

पर नलिका निम्न दोषोंसे शून्य होती थी। ह्रस्वं, दीर्घं, तनुस्थलं, जीर्णं, शिथिलबन्धनम्, पार्श्वच्छिद्रं तथो वक्रमष्टौ नेत्राणि वर्जयेत

इसी प्रकार से वस्ति भी दोष शून्य थी मांसल छिद्र विषय स्थूल जालक वातला। छिन्न विलग्नश्च तानष्टौ वस्तीन कर्मशु वर्जयेत्॥ परन्तु वस्ति कर्म करने पर—

साप शेषश्च कुर्वीत वायुः हितिष्ठिति कुछ द्रव बचा लेना चाहिये इसी प्रकार सुश्रुत ने नलिका में ग्यारह दोष और वस्ति में ५ दोष बताये हैं यथा—

अति स्थूलं कर्कश मतनत मणु मित्रं सन्नि-कृष्टं विप्नकृष्टं कणिकं सूक्ष्यम तिच्छिद्र मतिदीर्घ यतिहस्थमिति एकादश नेत्र दोषाः भवन्ति। तथाच बहुलताल्यता सच्छिद्रता प्रस्तीर्णता दुत्वर्द्धतेति यन्त्र वस्ति दोषाः। इसी तरहसे उत्तर वस्ति जो मूत्रमार्ग-योनि में दी जाती थी इन्हीं नियमों के आधार पर बनती थी पर नलिका का प्रमाण पारिध आवश्यकतानुसार होती थी यथा—

बण्नवद्वादशेत्येव मायामेन यथा क्रमम। शशादि भेदभिन्नानां त्रिधासाधन संस्थित॥ स्त्रीणां संसार मार्गोऽपि तद्वदेव प्रभिद्यते। आपाम परिहाणाभ्यां मृग्यादीनो शशादिवत् नियतं नेति केचित्तु परिणाहं प्रचक्षते॥

(जय मंगला टीका)

पुष्प नेत्र

इसका उपयोग लिंग में औषध प्रविष्ठ करने के लिये होता था इसकी लम्बाई १२ या १४ अङ्गुल होती है और सोने चांदी से निर्मित होती है परिध जाति पुष्प के समान छिद्र सर्षप समान मध्य में एक उभार होता है जलि प्रवेश से प्रथम शलाका के मार्ग की परीक्षा आवश्यक है। स्त्रियों में नली की लम्बाई दस अङ्गुल होती थी आधार से चार अङ्गुल दूर पर एक उभार था मूंग के दाना के समान छिद्र होता था। यथा—

वस्तेरुत्तर संज्ञस्य विधि वक्ष्याम्यतः परम्। चतुर्दशाङ्गुलं नेत्र मातुरांगुल सम्मितम्॥ मालती पुष्प वृन्ताग्रं छिद्रं सर्षप सन्निभम्। पुष्प नेत्र प्रमाणं तु प्रमदानां दशांगुलम्॥

मूत्र मार्ग की तरह स्त्रियोंमें योनिवस्ति दी जाती थी इसमें नलिका मोटी तथा परिध कनिष्टका के समान होती थी योनिमें चार अङ्गुल प्रविष्ट करते थे। युवतियों में दो अङ्गुल बालायों में एक अङ्गुल छिद्र इसका मूंग के समान होता था—

धूम्र नेत्र

यह भी भिन्न २ वस्तु से वस्ति यन्त्रकी तरह बनते थे जिसके तीन भेद थे विरेचन योग २४ अङ्गुल स्नेह योग्य ३२ अङ्गुल प्रयोग योग्य १६ अङ्गुल था कासघ्न एवं वामक प्रयोगमें इसका आधार अङ्गुष्ट समान सिरा कनिष्टका समान छेद मटर या माषके बराबर होता था। पञ्चनदीप दीर्घ बल ने धूम्र पान के लिये औषधियों के पिष्ट कल्क (Paste) को रेशम के वस्त्र पर लपेट कर सिगरेट की तरह पीने का आदेश किया है पीने से पूर्व उसे घृत से डुबा लेना चाहिये इससे जहां आग शीघ्र लगेगी वहां रुक्षता एवं विषजन्य रोगों (Cancer) की सम्भावना कम हो जायगी कारण घृत विषघ्न है चरक में एक और प्रकार की धूम्रवर्ति का

विधान है इसमें औषधियों का कल्क सरकन्डे पर आठ अङ्गुल लपेट दिया जाता है उसको छाया में सुखाकर सरकन्डा निकाल देते हैं तब वर्ति का उपयोग करते हैं। (१) पिष्ट्वा लिम्पेच्छिरीषकां तां वर्तिं यव सन्निभाम्॥ तथाच॥ २) कृत्वा वर्तिं पिवेद्धूमं क्षौम चैलानुवर्तिताम्॥ चरक॥ इसके उपरान्त चरक में एक अन्य तरह के इनेहलर (Inhaler) का वर्णन है इसमें मिट्टी के दो वर्तन होते थे जिनके मुख आपस में जोड़ दिया जाता है जोड़ने से पूर्व निचले पात्र में औषध और खैर के कोयला रख देते हैं ऊपर के वर्तन में दश अङ्गुल लम्बी एक नली होती थी इसका धूम्र फुप्फुस के रोगियों के लिये उपयोगी था धूम्र पान पांच प्रकार का होता था प्रत्येक नलीकी लम्बाई भिन्न २ होती थी।

	चरक	सुश्रुत	वाग्भट	शार्ङ्गधर
मध्यम	३२अङ्गुल	४८अङ्गुल	३२अङ्गुल	४०अङ्गुल
मृदु	१६	२४	४०	३२
तीक्ष्ण	२४	३२	२४	२४
कासघ्न	×	×	×	१७
वामक	×	१६	×	×

धूपन

यह क्रिया प्रायः व्रणों के लिये प्रयुक्त होती थी इसमें प्रयुक्त होने वाली नलिकाकी परिधि बेर के समान और छेद कुलथी के बराबर होता था सराव सम्पुट में औषधि रख कर जला दिया जाता था उससे उत्पन्न धूम्र से कृमि नाश के लिये धूपन किया जाता था यथा॥ सर्षपारिष्ट पत्रभ्यां सर्पिषा लवणेन च। द्विरह्नः कारयेद् धूमं दश रात्रमतन्द्रितः। तथाच। भूर्ज पत्रकाच भणि सर्प निर्मो कैश्चास्याः योनिं धूपयेत्॥ सुश्रुतः॥ धूम्र ग्राह्यव्रड़ें के अतिरिक्त गर्भ संग की अवस्था में (To make the contraction of the womb) योनि और गर्भाशय में भी दिया जाता था एवं मूत्र विरोध में भी प्रयुक्त होता था—

आचूषण शृङ्ग

इस कार्य के लिये प्रायः गौका शृङ्ग प्रयुक्त होता है जिसकी लम्बाई १८ अङ्गुल और आधार तीन अङ्गुल होता है इसके चूषण भाग पर राई के बराबर छेद होता है आकार चुचूक के तरह होता है इससे रक्त निकालने में (wet Cupping) का कार्य होता है जहां से दूषित रक्त निकालना होता था वहां पर स्केरी फिकेशन (Scarification) करके उस पर पतला वस्त्र डाल कर चूषण किया जाता है ततः प्रच्छिन्ने तनु वस्त्र यह लावनद्धेन शृगेण शोणित यव सेचयेदा चूषणात्। तथाच। स्वेदं विदध्यात् कुशलश्च नाड्यां शृङ्गेण रक्तं बहुशो हरेच्च—इसके उपरान्त वालुकी ने शृङ्ग प्रयोग की विधि यह बताई है श्वेत गौ के सींग को जो अर्ध चन्द्राकार का हो उसकी चौड़ाई सात अङ्गुल परिधि अङ्गुष्ट आधार समान और छिद्र मूंग के बराबर करे-परन्तु सुश्रुत ने काम में फसे जन्तु मल आदि को चूषण

द्वारा निकालना बताया है चरक ने सर्प विष चूसने के लिये प्रयोग दिया है परन्तु सुश्रुत ने विष को चूसने के लिये वस्तियन्त्र उपयोग में लिया है यथा—कर्णछिद्रेषु वर्तमानं कीटं क्लेदमलादि वा शृङ्गेणापहरेद्धीमान तथाव। प्रतिपूर्य मुखं वस्त्रेति नास्यूषणं भवेत् (सुश्रुत) तथाच प्रच्छन्न वेध जलौकैः शृङ्गैः स्राव्यं नतो रक्तम् (चरक)

अलाबू

यह एक प्रकार का कद्दू है उसे बीच से खाली करके धूप मे सुखाया जाता है लम्बाई १२ से १८ अंगुल शुन्य गोल तथा व्यास ३-४ अंगुल होता है चूषण से प्रथम इसकी वायु तिनके आदि जलाकर बाहर कर देनी चाहिये यह एक प्रकार का dry cupping है वाल्हुकी ने लिखा है कि इसको उत्तम बनाने के लिये काली मिट्टी का लेप करै य था - कृष्णमृदालिप्ता तनुश्रेष्ठा रक्तावसेचने ऽलाबूरिति (वाल्हुकी तन्त्र) सान्तर्दीप्या ऽलाब्वा (सुश्रुत) जलौकालाबु शृङ्गैर्वा रुधिरं तस्य निर्हरेत (चरक) रुधिरागमनार्थमथवा शृङ्गालाब्वादिभिर्हरेत् (योग रत्नाकर) चरक और योग रत्नाकर मे रक्त मोक्षण के लिये इसका विधान किया गया है।

घटियंत्र ।

रचना में यह भी अलाबू के समान होता है यह बड़े २ गुल्मों में प्रयुक्त किया जाता है यह प्रायः पीतल से बनाया जाता है इसमें तिनका आदि जलाकर वायु बाहर कर देते थे पश्चात् गुल्म पर प्रयोग करते थे इससे दर्द कम होजाता है। स्निग्धस्विन्न शरीराय गुल्मे शैथिल्यमागते। परिवेष्ट्य प्रदीप्तांस्तु वल्वजानथवा कुशान्॥ भिषक् कुंभे समावाप्य गुल्मं घटमुखेक्षिपेत्। संगृहीतो यदा गुल्मस्तदा घटमथोद्धरेत्। ॥ चरक ॥

वर्तमान काल में शीशे के Cupping में मैथलेटेड स्प्रिट जलाकर यह कार्य किया जाता है।

शलाका यंत्र

यद्यपि इनकी संख्या २० बताई गई है परन्तु संख्या अनिश्चित है कारण आवश्यक्ता और कार्य भेद से इनकी लम्बाई और परिधि में भी भेद होता है साधारणतः यह दो प्रकार का होना था एक गन्डू पद जिससे नाड़ी व्रण आदि का पता लगाया जाता था दूसरा व्यूहन जिसके द्वारा वस्तु इकट्ठी की जाती थी जैसे अश्मरी रोगी में होता है।

उष्णीय शलाका

इसके सिरों पर रुई लपेटी जाती थी उपयोग बाह्य स्रोतों कोसाफ करने में होता था गुदा को साफ करने के लिये १०-१२ अङ्गुल कान के लिये ८-९ अङ्गुल नाक के लिये ६-७ अङ्गुल होती थी। कार्पासबिहितोष्णीषाः शलाकाः षट प्रमार्जने ॥ सुश्रुत ॥ इस प्रकार की शलाका घोड़े के कान साफ करने में भी आती थी यथा। पिचुना वेष्टयित्वा तु शलाकाग्रं समाहितः। तेन कर्णान्तरे पूयं कर्ष चित्वा विचक्षणः

अश्व विद्या (शेष फिर)

—*—*—

विसूचिका

ले० प्रो० रामकृष्ण जी वर्मा B. A. B. S. C. L. M. S. जमरांवा फतेहपुर

(गतांक से आगे)

हमेशा यह याद रखो कि ब्रह्मचर्य्य के तेज से इतना परि पूर्ण हूँ कि किसी प्रकार की व्याधि मेरे निकट नहीं आ सकती है। तो इस धारणा से शारीरिक शक्ति बढ़ कर जिसे कीटाणु कहते हैं कभी पास में नहीं आसकते हैं उस समयपर सैकड़ों कीड़ों का अगर भक्षण भी कर जाओ तो वह स्वयं मृत हो जाते हैं। यद्यपि काक साहब ने इनका प्रत्यक्ष पता लगा दिया है जिससे संसार का महान उपकार किया है। उनके लिये धन्यवाद है कि हम सोते रहने वालों को उठा कर फिर से सचेत कर दिया कि तुम्हारे यहां का सामान है तुम मोह निद्रा में पड़े हो— यद्यपि हैजा के बहुत से भेद हैं वह चाहे जिस कारण से हों परन्तु लोगों के विशेष ज्ञान में की दस्त होना ही हैजा कहा जाता है। अन्य लक्षण होने से स्पष्ट समझ में नहीं आता है कि कौन सी व्याधि है लोग उसे नवीन रोग समझ लेते हैं। उपाय करना तो दूर रहा नाम से ही घबड़ा कर हृदय शक्ति क्षीण करके बीमारी को बुला लेते हैं। इस लिये कुछ लक्षण यहां पर सूचित किये देते हैं॥ बिशूचिका का मल ही प्रकृति विष है इसी में कीटाणु मिले रहते हैं यह विष खाद्य या पानीय पदार्थ के साथ पाकस्थली में प्रवेश कर जाता है जो दोष कारक हो जाता है। प्रथमावस्था में बीमारी का पहिचानना अत्यंत कठिन हो जाता है इस लिये लोग रोगी के प्रति विशेष ख्याल नहीं करते हैं न चिकित्सक के द्वारा उचित सहायता लेते हैं तभी बीमारी घातक हो जाती है।

१— जिस समय पर चेहरा विकृत और नीलापन आंखधंसा हुआ, अत्यन्त तृष्णा, पानी पीने के समय गल गल आवाज़ होना, वमन बिलकुल न होना पर वमन की चेष्टा बनी रहै पेट में अत्यन्त दर्द और ऐंठन होता है रोगी यंत्रणा से चीत्कार मारता है स्वांस कष्ट इतना अधिक होता है कि रोगीकी नाकके पास रुमाल तकभी रक्खा नहीं जाता है मूत्र की उत्पत्ति नहीं होना या अत्यन्त अल्प होना- दस्त भी बंद रहना अगर दस्त १ भी हो जाय तो हमेशा के लिये बेहोशी को निद्रा आ जाय- जब तक दस्त न हो निन्द्रा न लगै बदन ठंडा और नीलापन युक्त हो जाय- ठंडा पसीना बार२ आवे अत्यंत निस्तेजता- पेट खाली मालूम दे पेशाब बंद हो जाय देह में ऐंठन हो- जब दस्त हो तो उसमें मल पानी की तरह पतला और झिल्ली के टुकडे उसमें निकलै इसे सूखी बिशूचिका कहा जायग

इसमें दवा का टाइम नहीं मिलता न रोग ही निर्दूष होता है।

२— एकाएक किसी अङ्ग प्रत्यंग में दर्द हो कर बेहोशी प्राप्त हो जांय आंख चिकृत होना- और अधखुली रहना, अत्यंत निस्तेजता - अत्यंत प्यास लगै या न लगै पानी रुकता हुआ जावै मृगी के समान लक्षण प्राप्त हो जायें दस्त न हो सिर्फ काले रंग का १-२ कै आ जावै और पेशाब यकायक रुक जाय देह जोरसे ऐंठन करने लगै और अत्यंत जोर से खांस श्वांस लेवे छाती पर बोझ भारी मालूम देवे नाड़ी लुप्त होती जाय। यह हैजा रक्त के इक दम नष्ट हो जाने से होता है रोगी को चाहे जितना उपाय किया जाय पर आराम नहीं होता है शवागार में परीक्षा से ज्ञात होता है कि रक्ताशय फट जाता है हृदय का रक्त जम कर थक्का सा बना लेता है—रोग विकास होने के प्रथम नाड़ियों के कपाट जो हृदय में लगे हैं मोटे पड़ कर सिकुड़ जाते हैं जिससे कार्य रक्त का पूर्णतया नहीं हो सकता है।

३—जब पेट में नीचे की तरफ अत्यन्त शूल होने लगे, प्यास नष्ट हो जाय, शरीर कृष्णवर्ण होना शुरू हो जाय, पेशाब बिलकुल बन्द सर्वाङ्ग जलन, ऐंठन हो नेत्रों की पुतली फैलती जाय और सफेदी पन विशेष आ जाय, न दस्त हो न कै होवें परन्तु दस्त की इच्छा बनी रहै पेट में सूनयता बोध, रोम खड़े हो जाय, नाखून काले पड़ जांय गला से लगा कर जीभ तक कांटे व्याप्त हों— दर्शन शक्ति क्षीण होती जाय, सिर में चक्कर, कान में मन्द २ शब्द वदन एक तरफ अकड़ करके झुका सा जाय, हाथ पैर चर्म सिकुड़ जाय, नाड़ी दुर्बल ओष्ट काले नासिका बांई तरफ झुकी, कानों में ठण्डापन बाल छूने से ही उखड़ जांय, शरीर से दुर्गन्ध आवे, पसीना ठण्डा हो तो यह भी हैजा कहा जायगा इससे प्रथम से ही शारीरिक यन्त्र खराब हो जाते हैं और यह व्याधि यकायक आकर प्राप्त होती है— चिकित्सा से उपकार इसमें मिलना असम्भव हैं शल्य करने पर देखा जाता है कि अन्तड़ियों में चावल के धोवन ऐसा म्यूकस और लस्सादार रक्त मिश्रित सड़ा हुआ मल भरा है इसकी परीक्षा माइक्रस्कोप या अणुवीक्षण द्वारा पूर्ण तया करने से कीटाणु पाये जाते हैं वही इसके उत्पादक हैं बहुत सी नाड़ियां पतली सड़ जाती हैं। यकृत का असली रंग परिवर्तन हो जाता है पाकस्थली से मुर्दे के समान गन्ध निकलती है उसका रंग सड़े हुये कफ के सदृश हो जाया करता है।

इत्यादि इत्यादि उपसर्ग तथा उससे भिन्न नवीन उप सर्ग होना और उससे हैजा के दस्त कै पेट दर्द, ऐंठन, अचेतनता नाड़ी क्षीण आदि २ लक्षण वर्तमान रहै तो उन्हें हैजा ही माना जायगा आयुर्वेदीय लक्षण वैद्य गणों को पूर्णतया ज्ञात है इसी से यहां पर लेख बढ़ने के भय से लिखा नहीं जाता है जिन्हें देखना हो माधवादि निदान ग्रन्थों से अवलोकन किया जा सकता है—

आधुनिक निवारणोपाय ॥ लोगों के लिये निम्नांकित उपाय निवारण के बताये गये हैं जिसको प्रथम कह करके फिर आगे उत्पन्न होने का कारण चिकित्सा आदि कहेंगे—

सर्वदा कमर में तांमा का टुकड़ा या पैसा धारण करने से इस रोग के होने का सन्देह नहीं रहता है। यह उपाय जरूर कहा गया है पर ठीक नहीं है बहुत से व्यक्ति जो दिन रात तमाम पैसा लिये रहते हैं वह ही प्रथम शिकार होते हैं इससे विज्ञ महोदय अजमा कर देखें कि कहां तक सत्य है—हां विज्ञान की दृष्टि से देखा जाय तो यह मालूम होता है कि पैसा ताम्र का होता है जिसमें तूतिया Copper का अंश मौजूद है यह तूतिया जहरीला बवाई बीमारियों के लिये अत्यन्त उपयोगी और रोधक कीटाणु नाशक है। पर हैजा के लिये कीड़े पर ऐसा प्रभावदायक अगर होता है तो विशेष उत्तम बात है पर मेरे नजदीक तो यह सत्य नहीं साबित हुआ है न हैजा पर इसका प्रभाव ही पड़ा है—हमारे भारतवर्ष में ताम्र का उपयोग विशेष होता है लोग इसके बर्तन पवित्र मानते हैं इसी से बर्तन या घड़ा बना कर पानी भर कर उसे पीते रहते हैं भोजनादि भी करते हैं मूर्तियां जो मन्दिरों में रहती हैं इसी की बनती हैं जिनको नित्य प्रति धोकर चरणोदक लिया जाता है। हां विदेशमें इसका उपयोग इस प्रकारके शारीरिक सम्बन्धी कार्यों पर बहुत कम होता है इसलिये शायद उनके लिये पैसा धारण करने से कुछ न कुछ उपकार होता हो इसी से इस देश के निवासियोंके लिये भी वही योग सूचित किया गया हो। भारत ग्रीष्म प्रधान विलायतादि शीत प्रधान देश हैं इससे दोनों की दवाइयों में बहुत भारी अन्तर रहा करता है—

जूता के अन्दर गन्धक का चूर्ण रखने से यह बीमारी नहीं होती है।

विसूचिका के प्रादुर्भाव के समय कभी अल्प परिमाण में कपूर खाना और उसका सूंघना विशेष उपकारी है इससे वायु शुद्ध हो जाती है और उसमें प्रविष्ट हैजा के कीटाणु नष्ट प्राय हो जाया करते हैं—

मन्तव्य चिकित्सकों को कभी खाली पेट में हैजा रोगी के पास नहीं जाना चाहिये इसलिये रोगी देखने जानेके प्रथम कपूर को आघ्राण करके जाना चाहिये।

नित्यप्रति सायं प्रातः अपने २ निवास स्थानों में हवन जरूर करना चाहिये इससे हैजा के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और वायु भी शुद्ध हो जाती है।

गन्धक का जो आयुर्वेद प्रक्रियानुसार तैयार की जाती है नित्य उसका उपयोग अवश्य करना चाहिये इससे फिर कोई रोग पाकस्थली सम्बन्धी नहीं होता है—

अजीर्ण आदि उपद्रव होने पर भोजनादि न करना चाहिये जब तक कि उसकी व्यवस्था सम्यक प्रकार से निश्चित न हो सके क्योंकि ऐसे समय पर आहार करनेसे पाकस्थली की अवस्था बिगड़ कर ऐसी व्याधियां जल्द आ जाती हैं— (शेष फिर)

कस्तूरी

लेखक-श्रीमान् विद्याभूषण पं० मोहनशर्मा, विशारद, सम्पादक "मोहनी"

पुरातन काल से सभ्य समाज में जिन सुगन्ध द्रव्यों का व्यवहार होता आया है, शायद उनमें मृगनाभि प्राचीनतम् है। चीन देश में इसका विशेष आदर है। और प्राच्य चीनी साहित्य में अनेकानेक रोगों को नष्ट करने के सम्बन्ध में इसकी अनोखी क्षमता का जगह २ वर्णन मिलता है। उस देश के ख्यातनामा चिकित्सक पाओ-पुनची का कथन है कि-"मृग नाभि सदैव समीप रहने से सर्पदंश का भय नहीं रहता।" यही कस्तूरी मृग की भोज्य वस्तु है। अतः एक टुकड़ा कस्तूरी पास में रखकर कोई भी प्रवासी उसकी तीक्ष्ण गन्ध द्वारा सर्पकुल को दूर रख सकता है। चीन देश में कस्तूरी को 'स्यान्न-हियाङ्ग, अर्थात् मृग सुगन्धि कहते हैं।

भारतवर्ष में औषधि रूप में इसका विशेष प्रचार था और आज भी है। "भाव-प्रकाश" ग्रन्थ में तीन प्रकारकी कस्तूरी का वर्णन पाया जाता है (१) काम रूपी (२) नेपाली (३) काश्मीरी। इनमें काम रूपी कस्तूरी सर्वोत्कृष्ट है और वह कृष्ण वर्ण होती है। स्यात यह चीन और तिब्बत की कस्तूरी है। भारत में केवल काम रूप निवासियों के बीच में इसका व्यवसाय होता था भावप्रकाश के अनुसार नैपाली कस्तूरी रंग में नील वर्ण और गुण में काम रूपी से मध्यम है। काश्मीरी कस्तूरी भी सर्वथा निकृष्ट नहीं है।

आयुर्वेद शास्त्र के मतानुसार कस्तूरी अत्यन्त उत्तेजक और काम वर्द्धक पदार्थ है अन्ध ज्वर, स्नायुदौर्बल्य, और वीर्य हीनता में इसका व्यवहार उपयोगी है। शास्त्रोक्त स्वल्प कस्तूरी भैरव, मृगनाभ्या अवलेह, और वसन्त तिलक रस प्रभृति औषधियों में कस्तूरी व्यवहृत होती है।

ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुशीलन से पता चलता है कि सर्व प्रथम त्यांग्रानियस ने अपनी यात्रा विषयक पुस्तक में कस्तूरी का उल्लेख किया है। उसके भ्रमण वृतान्त को पाठ करने से इस सम्बन्ध की और भी अनेक ज्ञातव्य बात स्पष्ट हो जाती हैं। वह एक जगह लिखता है कि उसने अपने भ्रमण काल में प्रायः ७६०½ थैला कस्तूरी खरीदी थी।

योरोप में पहले पहल अरब लोगों ने कस्तूरी का प्रचार किया। सन ११८९ ई० में सालादीन ने रोम सम्राट को बहुत सी वस्तुयें उपहार स्वरूप भेजी थीं, जिनकी बृहत तालिका पुस्तक में उल्लिखित है

उसमें कस्तूरी का भी नाम है। दशवीं शताब्दी में अभिसेनाने अपनी भैषज्य विषयक पुस्तक में मृगनाभि को नाना रोग नाशक महौषधि के रूप में वर्णित किया है। विख्यात पर्यटक मार्को पोलो लिखता है कि, कि उसके समय में मृगनाभि (कस्तूरी) का खूब ही प्रचार था और वह बाजारों में मिलती थी।

यह सुगन्ध द्रव्य कस्तूरी मृग के नाभि देशसे प्राप्त होती है। इसलिये भारतवर्षमें कस्तूरी के साथ २ इसे 'मृगनाभि, भी कहते हैं। कस्तूरी मृग उत्तर भारत और मध्य एशिया में पाये जाते हैं। कहीं २ उत्तर साइबेरिया और चीनके उत्तरीय तथा पूर्वीय भूखण्डों में भी देखे जाते हैं। परन्तु अभी तक मङ्गोलिया, तिब्बत नैपाल काश्मीर, आसाम, एवम् चीन के अन्तर्गत सुचुएन तथा बैकाल के पार्श्ववर्ती स्थानों में ही कस्तूरी मृग से मृगनाभि निकालने की प्रथा है।

'मृगनाभि, कस्तूरी मृग की जननेन्द्रिय के ठीक सामने उत्तर देश के भीतर, एक थैली से निकलती है और यह सुगन्धि केवल पुरुष हिरण में ही रहती है। कस्तूरी की थैली के अन्तर में छोटे २ अनेक छिद्र होते हैं। इनसे कस्तूरी उद्भूत होती है और उक्त थैलीके पार्श्व में रहने वाली परिचालक थैली में इसका सञ्चय होता है। पहिले इसका रंग किञ्चित लाल और कुछ काला रहता है। तत्पश्चात् कस्तूरी मृग की मृत्यु होने पर क्रमशः कृष्ण वर्ण दानेदार पदार्थ के रूप में परिणित हो जाती है। २–३ वर्ष की आयु तक हिरण में कस्तूरी अच्छी तरह नहीं दिखाई देती। तदुपरान्त यौवन उपस्थित होने पर उत्पन्न होती है और ८–१० वर्ष की आयु तक बराबर रहती है। यह आयु भाग व्यतीत होने के बाद फिर कस्तूरी मृग में मृगनाभि का अस्तित्व नहीं रहता हरिण में एवम् हरिण की सहचरी हिरिणी में जब यौवन स्पृहा जागृत होती है तब हरिण से कस्तूरी अधिक प्रमाण में निकलती है। जहां कस्तूरी मृग रहता है वहां चतुर्दिक दूर तक उसकी सुगन्धि फैली रहती है। शिकारी लोग इसी गन्ध के अनुसरण से अपना शिकार खोजते हैं।

कस्तूरी मृग की प्रत्येक थैली में ढाई तोला से लेकर ५ तोला तक परिमाण में मृगनाभि निकलती है। इन थैलियों के देखने पर पार्श्व भाग चपटा दिखाई पड़ता है। कभी २ यह पार्श्वस्थ चमड़ा जननेन्द्रिय पर्यंत कस्तूरी थैली सहित सब काटकर बेचने को ले आये हैं। एवम् कभी थैली और पार्श्व चमड़ा आदि छोड़कर केवल एक नीले परदे सहित कस्तूरी काटकर बाहर निकालते हैं। कस्तूरी एक नीले परदे की थैली में रहती है। इसलिये कस्तूरी को 'नील कस्तूरी, नाम से अभिहित करते हैं। यह नीला परदा अत्यन्त सूक्ष्म और पतला होता है। अतएव कस्तूरी में बनावटी वस्तुओं का सम्मिश्रण करना सहज कार्य नहीं है

नील कस्तूरी इसी नीले परदे के कारण खूब शुद्ध और अच्छी समझी जाती है तथा अधिक मूल्य पर बिकती है।

कस्तूरी मृग निपट जङ्गली होता है। यह संघबद्ध होकर नहीं रहता। किन्तु नर मादा प्रायः एक साथ रहते हैं। दिन में हरिण अपने को छिपाये रहते हैं। केवल एक बार सन्ध्या समय और एक बार सूर्योदय के पूर्व आहार अन्वेषण के लिये बाहर निकलते हैं इनका शिकार साहजिक नहीं है। यह पार्वत्य प्रदेश में अत्यन्त अनुसरणशील शिकारी कुत्ते को पीछे छोड़ कर खूब क्षिप्रगति से दूर निकल जाते हैं। इनका शिकारी कुत्ता उन्हें पकड़ नहीं सकता। यह हरिण वर्ग जहां निवास करता है, वहां चारों तरफ मजबूत बाड़ी (बारगा) लगाई जाती है। एवम् बीच २ में उनके यातायातके लिये खाली स्थान छोड़ देते हैं। प्रत्येक खाली स्थान के मुहाने पर फन्दा लगा रहता है। इन्हीं फन्दों पर शिकारी लक्ष रखते हैं। क्योंकि इस ओर से जरा भी असावधान रहने पर कस्तूरी की तीव्र गन्ध से खिंच कर बड़े २ मांसाहारी जीव, इनका सुस्वादु मांस खा जाते हैं और फिर वहां कुछ भी शेष नहीं रह जाता है। कस्तूरी अधिक हो या कम हो, शिकारी फन्दों में फंसे हुए सभी हरिणों की हत्या करके मृगनाभि संग्रह करते हैं।

साधारणतः कस्तूरी की २२ थैलियों के एकत्र होने पर एक भट्टी की सामग्री तैयार होती है। सुतराम्, एक भट्टी की सामिग्रीमें २२ हरिणों का संहार होता है। किन्तु शिकारी लोग लोभ के वशीभूत होकर बिना विवेकबुद्धि से काम लिये छोटे, बड़े सभी हरिणों की हत्या कर डालते हैं। इससे फी भट्टी के हिसाब से प्रायः ३०-३२ मृगों की मृत्यु होती है। केवल एक अचिनलू शहरसे प्रति वर्ष २००० भट्टियों का चालान बाहर जाता है। अतएव, वहां प्रतिवर्ष ६०००० मृग मृत्यु के मुख में पतित होते हैं। इसके अतिरिक्त, एक साथ काशान सिंग, बातांग इत्यादि शहरों के वार्षिक चालान पर दृष्टिक्षेप करने से पता चलता है कि–वहां प्रति वर्ष कस्तूरी के लिये १००००० एक लक्ष मृगों के प्राण विनिष्ट किये जाते हैं। इन की जनन क्षमता (पैदायशी-कुव्वत) सामान्य होती है। यदि इसी प्रकार इनकी मृत्यु का क्रम चलता रहा तो भविष्यत में इनका वंश पृथ्वीसे सर्वथा विलुप्त हो जायगा और फिर कस्तूरी नहीं मिलेगी।

सारेङ्ग के लामा लोगों ने इनकी वंश रक्षा के हेतु, यह राजाज्ञा प्रचारित की है कि जो शिकारी कस्तूरी मृग की हत्या करते हुए देखा जायगा, वह मन्दिर के किवाड़ों पर दोनों हाथ छेदकर लोह शलाका में विद्ध कर दिया जावे।

अब यह विचारणीय है कि, बिना हत्या किये कस्तूरी मृग से मृगनाभि संग्रह की जा सकती है अथवा नहीं? यदि इन प्राणियों

को जङ्गल से पकड़कर किसी खुली जगह में बाड़े के अन्दर बन्द कर दिया जावे तो कस्तूरी नहीं मिलेगी। परन्तु हां, इन्हें किसी एक बड़े जङ्गली स्थान में बन्द करने के बाद इनसे कस्तूरी प्राप्त करने की कोई पद्धति निकालो जा सकती है। यह जीव अनेक समय धूप में लेट कर विश्राम लेता है। उस समय इसके शरीर में जहां कस्तूरी होती है वह स्थान भलीभांति देख सकते हैं। एवम् किसी उपयुक्त पद्धति से बिना उत्पीडन के कस्तूरी प्राप्त की जा सकती है।

मृगनाभि बहुमूल्य वस्तु है। प्रति तोला ३०) से लेकर ६०) तोला तक मिलती है। इसीलिये इसमें कृत्रिम वस्तुओं का समिश्रण करके बेचने का लोभ, लोगों में ज़्यादा है। अतः जो लोग कस्तूरी क्रय करते हैं उनको नीले परदे वाली थैली सहित कस्तूरी खरीद करना चाहिये, ऐसा नियम है। परन्तु इतने पर भी कृत्रिम वस्तुओं के समिश्रणका जाल बन्द नहीं होता। चीनी व्यवसायी कस्तूरी को शिकारियों से थैली सहित खरीद कर बाजार में लाने के पूर्व रास्तेमें विशेष नेपुण्य के साथ थैली का मुंह खोल डालते और उसमें शुष्क रक्त, अन्य जैविक पदार्थ तथा मिट्टी आदि मिलाकर थैली का मुंह पुनः बन्द कर देते हैं। जिससे असली कस्तूरी के सम्बन्ध में विशेष अभिज्ञता न होने से लोग ठगे जाते हैं। एवम् थैली का मुंह खोला गया या नहीं, इसका ठीक पता नहीं चलता। इसीलिये अकृत्रिम असली मृगनाभि दिनों-दिन दुष्प्राप्य होती जारही है। किसी समय शंघाई गवर्नमेंट ने अकृत्रिम मृगनाभि की प्राप्ति के लिये एक उपाय निर्द्धारित किया था कि व्यापारीगण कस्तूरी वाणिज्य में जो राज्य को शुल्क देते हैं; उस मूल्य की कस्तूरी राज्यको दें और यदि कोई व्यवसायी वाणिज्य शुल्क के रूप में कृत्रिम अथवा बनावटी कस्तूरी देगा तो उसको राज्य से प्राण दण्ड दिया जायगा।

कृत्रिम और अकृत्रिम कस्तूरी की परीक्षा के लिये विज्ञानवेत्ताओं ने अनेक पद्धतियों का आविष्कार किया है। यदि असली कस्तूरी में शुष्क रक्त मिश्रित हुआ तो अनुवीक्षण यन्त्र से वह रक्त और उसके अंश साफ दीख जाते हैं। असली कस्तूरीको जल में घोलकर उसमें Bichloride of mercury मिश्रित कर देने से कोई भी वस्तु जल से पृथक् नहीं होती।

लोग भैंसे के रक्त में एमोनियां मिलाकर उसे सुखा लेते और कस्तूरी में मिलाकर, अकृत्रिम कस्तूरी के रूप में बेचते हैं। सुतराम, कस्तूरी में एमोनियां की गन्ध मात्र से उसकी अकृत्रिमता के प्रति सन्देह हो सकता है। किन्तु साथ ही पुरानी असली कस्तूरी की सुगन्धि पुनः जीवित करनेके लिये प्रत्यक्ष रूप से एमोनिया व्यवहार में लाते हैं। अतएव एमोनियां की गन्धमात्र से कस्तूरी को एकदम नकली समझ लेना भी युक्ति युक्त नहीं है।

हमारे देश में उत्तेजक पदार्थ के रूप में कस्तूरी का व्यवहार दीर्घ काल से चला आ रहा है, जब मनुष्य मृत्युके चङ्गुल में आबद्ध होने लगता है. उस समय मृगनाभि रोगीकी

संरक्षा में अमोघ अस्त्र के सदृश काम करती है। एतद्देशीय बूढ़े सथानिलाक्षालिका भीषण स्थिति में कस्तूरी और मस्कस्लुके सिवाय किसी दूसरी औषधि से प्राण रक्षाकी आशा नहीं रखते। हमारे देश में बहुत काल तक व्यवहृत होने के बाद यह पीछे से ब्रिटिश फार्माकोपिया में स्थान मिला।

औषधि और सुगन्धि के रूप में इसका पहिले से व्यवहार होता आ रहा है। हमारे देश में इसका अन्य औषधियों के साथ में अथवा खाली मधु के साथ में सेवन करते हैं। ब्रिटिश फार्माकोपिया में शराब के साथ अर्क रूप में यह सेव्य है। इसके अतिरिक्त इसे शलाका विद्ध करके इसका Injection भी देते हैं।

यद्यपि सुगन्ध रूप में इसका प्रयोग सब से पहले हमारे ही देश में शुरू हुआ, तथापि विदेशी लोगों ने शराब एवम् अन्य सुगन्ध द्रव्यों के योग से इसके प्रयोग की अनेक अभिनव रीतियां अविष्कृत की है। कस्तूरी का अर्क तैयार करने की अनेक पद्धतियां प्रचलित हैं। कोई Glycerine जल और शराब एवम् कोई जल और शराब के साथ तथा कोई २ खाली शराब मिश्रित कर मृग नाभि, अर्क रूप में व्यवहार करते हैं। शराब में चौथाई भाग कस्तूरी मिश्रित करने से जो अर्क तैयार होता है उसमें ज्यादा सुगन्धि रहती है। वस्तुतः सुगन्धि रूप में कस्तूरीके व्यवहार करने के लिये तत्सम्बन्धी विशेष अभिज्ञता आवश्यक है।

विज्ञानवेत्ता गण उक्त जैविक पदार्थको बनाने के लिये रसायनिक क्रियाओं द्वारा विशेष उद्योग कर रहे है केवल जर्मनी में सन् १९२५ पर्यन्त वहां के वैज्ञानिक लोगोंने रसायनिक विधि से कस्तूरी तैयार करने की तेरह तरीके ढूंढ निकाले थे। किन्तु अद्यावधि रसायनिक विधि से तैयार की हुई कस्तूरी सुगन्धि और गुण में बिलकुल अकृत्रिम कस्तूरी जैसी सिद्ध नहीं हुई।

चि० म० जगत

रसायन की वाणिज्य संख्या

हिन्दी औद्योगिक मासिक पत्र 'रसायन' के सञ्चालकों ने उसके चतुर्थ वर्ष का प्रथम माङ्क "वाणिज्य संख्या" के नाम से निकालनेका निश्चय किया है। यह संख्या विद्याभूषण पं० मोहनलाल विशारद के सम्पादकत्व में अपूर्व सज धज के साथ प्रकाशित होगी। इसमें व्यवसाय-वाणिज्य, शिल्प, कला कौशल, हुनर विज्ञान, टोटका शिक्षा आदि व्यापार विषयों के सम्बन्ध में गवेषणा पूर्ण लेख तथा व्यापार, संक्रान्त, उपन्यास, गल्प, प्रहसन आदि रहेंगे। 'वाणिज्य संख्या' का मूल्य १) होगा। पर स्थायी ग्राहकों को यह संख्या मुफ्त दी जावेगी। विद्वान सज्जन अपनी रचनायें "सम्पादक रसायन" (वाणिज्य संख्या) तेन्दू-खेड़ा सैलवारा (दमोह) सी० पी० के पते पर भेजें। और ग्राहकगण और विज्ञापनदाता प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र व्यवहार--निम्नस्थ पते से करें।

व्यवस्थापक—'रसायन' संगरिया (बीकानेर)

अनुभव सार

१–दशन संस्कार मञ्जन—कपूर, लौंग मिर्च, सोंठ, हर्रा, नागरमोथा, दालचीनी खैर, सुपाड़ी भस्म २-२ तोले खरिया मट्टी १८ तोले। सब बारीक कर कपड़ छान कर लें। फिर कपूर मिला लें। इसको नित्य मलने से मुख की दुर्गन्ध, दांत हिलना, टीसना मसूड़ों की सूजन, दर्द इत्यादि सभी मुख रोग अत्यन्त शीघ्र दूर हो जाते हैं।

२—दद्रु नाशक वटी—कस्मो सोरा, मैनुधा गन्धक सम भाग लेकर नीबू के रस में गोली बना लें। इसको नीबू के ही रस में दोनों वक्त लगाने से पुरानी से पुरानी दाद ३ दिन में दूर होती है।

३–वात मर्दन तैल—सरसों का तैल दो सेर, सेन्धा नमक १० तोला, मेथी व अजवाइन आधी २ छटांक, लहसुन १ गांठ धतूर काला २ फल, कुचला २ फल, अफीम दो पैसे की। कूट पीस तेल में मिला कर सिद्ध कर लें। इसकी मालिश कर सेंक देने से सर्व वात व्याधि अत्यन्त शीघ्र दूर हो जाते हैं। परीक्षा कर देखें।

४–लकवा पर तैल–सरसों का तैल, तिल का तैल, पोस्ते का तैल, महुए का तैल, रेंड़ी का तैल, धतूर बीज, कबूतर व मोरा की विष्टा, चौथिया अफीम। एकत्र कर तैल सिद्ध कर लें। गर्भिणी को न दें। हाल के लकवा रोगी पर तत्काल गुण दिखाता है।

५–शीघ्र पतन व स्वप्नदोष पर—गोखरू, तालमखाना, कौंच के बीज, खिरेंटी के बीज शतावर व असगन्ध सम भाग कूट पीस छान कर रखें। प्रातः सायं ३-३ मासे गाय के दूध से देने पर, प्रमेह, स्वप्नदोष, धातु क्षीणता शीघ्र पतन आदि समस्त धातु रोग २१ दिन में दूर कर अपार बल वीर्य प्रदान करता है।

६–स्तम्भन प्रमोद रस—लौंग, जायफल, काली मिर्च, केसर, मस्तङ्गी, जावित्री, दालचीनी, सोंठ, ७-७ मासे शुद्ध कपूर व अफीम ३॥-२॥ मासे शहद में खूब घोटकर चने समान गोलियां बना लें २ घंटे पूर्व १ से २ गोली तक दुग्ध से लीजिये। देखिये क्या अनन्द लाता है।

पं० श्यामनारायणशर्मा दारागञ्ज (प्रयाग)

८–कंठ से रक्त श्राव उरक्षत रक्त पित्त पर—दम्मुलअख वैन १ तो० गिले अरमनी (स्वर्णगेरू) १ तो० कहरवा १ तो० छोटी इलायची बीज १ तो० वंशलोचन १ तो० संगजराहत भस्म १ तो० सब चूर्ण करो।

शर्वत जूफा–मा० ३ माशे शर्वत जूफा ६ माशे में चाटे समय द्वयोवेला।

८–स्वर्णासव मरणांसन्न रोगी पर–स्वर्ण वर्क ३ मा० मदीरा की तलस्थ ५। विधि—मदिरामें वर्क खरल करे जब मदिरा खुश्क हो जावे तब ५। मदिरा और डालकर फिर एक शीशी में भर दे और मुह बन्द कर दे फिर एक वर्ष तक आद्रि भूमिमें गाड़दे और वर्षान्त में निकाल छानकर रख ले। मात्रा–६ मासे से १ तो० रोग मरणासन्न रोगी वात कर सकता अशक्तिको मिटाता है।

पं० मुंशीरामजी शर्मा वैद्य।

वैद्यवरों से प्रश्न

(प्रश्न नं० १६)—बी० एन० शुक्ला विशारद (प्रधान चिकित्सक शुक्ला आरोग्य भवन मेरठ) ने धन्वन्तरि के प्रयोगाँक-में पृष्ट पर 'मातियाबिन्द के सुरमा' का प्रयोग छपाया है उसमें उन्हों ने सप्तपदिकपूर का उल्लेख किया है मैने उनसे पूछा उत्तर मिला कि सप्तपदिकके अभाव में आप भीम सेनी छोड़ लीजिये। जवाब के लिये सदा टिकट भेजा करिये, मैने दुबारा जवाबी पत्र दिया और प्रार्थना की कि सप्तदि कर्पूर का प्रयोग लिखिये या जहां से प्राप्त हो सके वहां लिखिये परन्तु उत्तर आज तक नहीं मिला क्या यही सभ्यता है। इसी का नाम देश

समस्त वैद्यवरों से प्रार्थन

सप्तपदिकर्पूर का

विस्तृत लिखने

आयु०

(प्र

मेरी प्रा

ने

सा

प

आंखें फेर दीं और हफलाना शुरू होने लगा मूर्छा होने की संम्भावना होने पर पानी के छींटे वगैरह देने से आंखें जो चढ़ी हुई थीं वह ठीक होगईं और हालत अच्छी होगई इससे हमें यह निश्चय हुआ कि बुखार ज्यादा होने से गश (मूर्छा) आगयी है और किसी २ ने मिरगी की शिकायत बतलाई। इसके बाद बच्चा दो माह तक भला चंगा रहा।

कल के रोज से फिर कुछ बुखार की हरारत मालुम हुई आज

बाद बच्चे के

कृपा करें। मूर्छा चेतन होने का नुसखा जरूर लिखें और इलाजकी दवाइयां ऐसी हों जो सहज में मिल सके जिससे निघटु आदि ग्रन्थ देखने का मौका न पड़े जैसे किसी वैद्य महाशय ने उत्तर लिख भेजा कि अमुक ग्रन्थ के अमुक पाठ का सेवन करो ऐसा मौका दवा करने में न आ पड़े अन्त में उस वैद्य महाशय का आभारी रहूँगा जो इसका इलाज वो नुसखा लिखने की कृपा करेंगे।

वैद्य मंडली का दास—
रामस्वरूप चंद जैन मुनीम
मु० पो० छुईखदान स्टेट
रायपुर (सी० पी०)

औरत सिसकी
[illegible]

है लगोट बांधता है माली हालत खराब है विज्ञापनोंपर श्रद्धा न होने से राकेश द्वारा वैद्य समाज से प्रार्थना है कि ऐसा सस्ता व सुलभ प्राप्त प्रयोग बतलाया जावे जो मित्र की शक्ती की कमी व इन्द्रिय आकार पूर्ण हो सके।

केशवराम जी शुक्ल खम्मान केम्वे

(प्रश्न नं० २१)—एक रोगी की उम्र ३२ साल—अर्मा ६ साल हुआ कामला रोग हुआ था दवाई करने से फायदा हुआ पर एक साल बाद पेशाब पीला जलन सहित—जब एक दो गिलास पानी पीता है तो पेशाब फिल्टर के पानी के समान स्वच्छ आता है और बार बार ४-४ पाँच २ मिनट बाद पेशाब आता रहेगा यदि पानी न पिये तो वही पीली जलन सहित पेशाब दिन में २—३ बार आवेगी शादी किये १७ वर्ष हुए ४ लड़की ३ लड़का पैदा हुए छोटा लड़का अब डेढ़ साल का
[illegible] कमजोर व सारे बदन में दर्द है
[illegible] थ भारी कमर में दर्द बड़
[illegible] जाती है पेट में वायु
[illegible] लगता है भूख
[illegible] २ छाती में
[illegible] स्वप्न दोष
[illegible] ता था।
[illegible] ना है।
वैद्य

वैद्यवरों के उत्तर

उत्तर नं० ५—आपके प्रश्न के उत्तर कामोनाद में अनुभविक योग भिजवा रहे हैं। आशा है बाद आरामके बचनानुसार स्वर्ण पदक प्रदान करेंगे।

योग यह है। चन्दन, बाला, नखला, जवाखार, शिलाजीत, पदमकाष्ट, जेष्टमध, सरल, देवदार, मजीष्ट, नागकेसर, लोध्र, तमालपत्र, कंकोल, संसालूली, जटामांसी, नागरमोथा, दारुहल्दी, सौलसिरी, कुटुकी, लवंग, अगर, पित्तपापड़ा, दालचीनी, केसर, तेल समान भाग तेलके चौपट छालकर लेनी लाख का रस तेल समान भाग तेल सिद्धकर वह सुबह शाम बलाबलनुसार सेवन कराइये भोजनोपरांत पुराना द्राक्षासव देना। ईश्वर इच्छा से उन्माद-फेंफरा आराम होकर शरीर पुष्ट होगा। काले धतूरे के बीज ४ आध पाव घी में भूनकर शाम को देना। पथ्यापथ्य—धारोष्ण दूध, शक्कर, गेहूं, मूंग, लाल चावल, पकवान, परवल, द्राक्ष यह हितकर है। और कटु, तीक्ष्ण व गरम क्षुधा, तृष्णा, शोक इनका अवरोध सुरापान अहितकारी है।

भवदीय—

विद्याभूषण एस० पी० क्षत्रिय

प्रो० आर्य हितैषी कार्यालय

पथरोट पलिवपुर

उत्तर नं० ८—अर्द्ध नारी नटेश्वर रस हरताल बर्की २ तोला को पेठे (कुष्मांड) के रस की २१ भावना देवे पुनः २१ भावना बांझ ककोड़े के रस की देवे तत्पश्चात सर्प की कंचुकी (काचली) ८ मा० मिला १ दिन खरलकर १२ याम बालुका यंत्र में पकावे तदोपरान्त उसे निकालकर ४ मा० तुत्थ भृष्ट (भुना तूतिया) मिला खरल कर रख लेवे इसको ४ चार या एक रत्ती स्वच्छ पत्थर पर रख जल से घोंट जिस नेत्र में आंजेंगे उस पार्श्व का ज्वर उतर जायगा तथा सन्निपात अवस्था में जब रोगी सज्ञाहीन रहता है उस समय इसके आंजने से ज्वर दूर होते हुये भी रोगी को चेतन्यता आजाती है इसमें यह १ गुण विशेष है कि इसके आंजने पर नेत्रों से अश्रुपात होता है यदि पहिले ही वार में अश्रु गिरे तो रोगी साध्य है तथा द्वतीय कष्टसाध्य एवं तृतीय वार अञ्जन करने से भी अश्रुपात न होवे तो वह रोगी बच भी नहीं सकता। परीक्षा कर कुणाऽगुण 'राकेश' द्वारा वैद्य महानुभाव लोग अवश्य सूचित करेंगे।

उत्तर नं० ९—चेतकी हरड़ (जो षटऽङ्गुल प्रमाण होती है) को हाथ में लेने से अवश्य विरेचन होता है यह आपको स्वामी हरिशरणानन्द दी पञ्जाब आयुर्वेदिक

फार्मेसी अमृतसर (पञ्जाब) द्वारा प्राप्त हो सकती है यहां से ३) रु० का ५ तोला के हिसाब से मिलेगी।

आयुर्वेद शास्त्री—

पं० धरणीधर शर्मा राजवैद्य

L. M. S. H, कछवा मिर्जापुर

उत्तर नं० २ के बारेमें-प्रिय वैद्यवरोंसे प्रार्थना है कि हमारे प्रश्न नम्बर २ राकेश सितम्बरके अङ्कमें छपे प्रश्न का उत्तर देनेमें व्यर्थ समय बर्बाद न करें। उक्त बीमार हमारे परम पूज्य काका जी थे। जो कि हमारे रोग निदान में असफलतावश और हमारे उस वक्त एक अबोध किंकर्त्तव्यमूढ़ होनेसे ता० ११-१-२९ बुधवार के प्रभात में हमें छोड़कर स्वर्गधाम सिधार गये। पथरोट निवासियों की बहुमतसे राय है कि हमारे पूज्यकाका पन्नुसिंह जी जैसे सरल छलकपट रहित योग्य रईस का पथरोट से अभाव होगया। ईश्वर मृत्त आत्मा को शान्ती प्रदान करे। ईश्वरोच्छा बलीयसी। मैनेजर—

आर्य हितैषी कार्यालय पथरौट

उत्तर नं० १२—आपके रोग कष्ट के लक्षण व प्रश्न नं० ३ के रोगी की व्यवस्था एक ही प्रगट होती हैं अतः आप अक्टूबर मास के राकेश के उत्तर प्रश्न नं० ३ के अनुसार औषधि सेवन कीजियेगा और साथ ही खाने के बाद दोपहर व शाम को अरिष्ट सेवन करें।

उत्तर नं० १३— ‡ कृष्णा सर्पवसा। निकालने के लिये आप जवान काला सर्प लीजिये। जिसका फणभाग अलग काटकर रक्खो बाकी शरीर चाकू से चीर कर अन्दर से सफेद चर्बी निकाल लो। उसको आग पर गरमकर औटा कर छानकर रखलो इस प्रकार साफ हो जाने पर औषधि कर्म में बरतो। शीतकाल में अधिक निकलती है।

स० सम्पादक

---

‡ कृष्ण सर्प वसा पाना मामूली कार्य नहीं यदि आपको विश्वस्त कृष्णवसा ही चाहिये तो हमारी फार्मेसी से मंगा सकते हैं हमने अपने यहां सामने सर्पों द्वारा चर्बी निकलवाकर शुद्ध कर एकत्रित कर रक्खी हैं अविश्वसियोंको सामने निकलवाकर देनेकी भी योजना कर रक्खी है। मूल्य २) तोला

मेनेजर—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

बरालोकपुर इटावा

—०—

व्यायाम (मासिक) पत्र

कुश्ती, लाठी, वगैरः व्ययामोंकी सचित्र माहिती देने वाला हिन्दी मासिक पत्र है। मूल्य २॥) रु० है।

पता-व्यायाम कार्यालय, रावपुर बड़ौदा

वैद्य संसार समाचार

करांची में होने वाले २०वें वैद्य सम्मेलन के मंत्री के भेजे पत्रों का समाचार-सार।

मन्त्रीजी के भेजे हुए पत्रों से ज्ञात होता है कि इस वार सम्मेलन विशेष समारोह पूर्वक होगा—स्वागत समिति के सभापति महोदय पं० सुन्दरलालजी वैद्य वाचस्पति तथा करांची आयुर्वेदोद्धारक सभा के माननीय प्रमुख निःस्वार्थ पूर्वक अपना अमूल्य समय व्यापित कर सम्मेलन को सफल बनाने तथा आने वाले वैद्यगणों के स्वागत के लिये बड़े परिश्रम से धन सञ्चय कर ठहरने आदि सुविधाओं की विशेष आयोजना कर रहे हैं। सम्मेलन के सुयोग्य प्रधान मन्त्री श्रीयुत रसवैद्य श्याममनोहरजी मिश्र भी अपने सहकारी मंत्रियों सहित बड़ी सतर्कता से समस्त कार्यों का निरीक्षण कर रहे हैं और समय २ पर समस्त कार्यवाही को पत्रों में प्रकाशित कराने को भेजने का समुचित प्रबन्ध किया है—तथा छपे हुए नियमादि भी यत्र तत्र आवश्यकीय स्थानों पर भेज दिये गये हैं जिससे सम्मेलन की तैयारी के लिये वैद्यबृन्दों को मौका मिल सका है। ऐसी कार्यवाइयों से विश्वास होता है इस वर्ष सम्मेलन कार्य अभूतपूर्व ही रहेगा। सम्मेलन की आयुर्वेदीय प्रदर्शिनी भी इमसाल विशेष वस्तुओं, औषधियों तथा वनस्पतियों सहित सुसज्जित की जावेगी, जिसके प्रबन्धकर्ता—करांची के वनौषधिवेत्ता श्री० पं० सी० चटर्जी हार्टी कल्चरिष्ट F. R. S. हैं। इस वार सम्मेलन में विशेष व्यर्थकी प्रस्तावबाजी न होना हो निश्चय हुआ है (जैसा कि पिछले सम्मेलनों में होता आया है पर कार्यरूप में परिणित नहीं होसका) जिससे सम्मेलन समय को उपयोगी विषयों व आयुर्वेदोद्धारक कार्यों में ही व्यतीत कर सकेगा। सम्मेलन में पधारने वाले सज्जनों को आराम पहुँचाने का अच्छा प्रबन्ध किया जावेगा—इस प्रबन्ध के लिये समस्त भार श्रीयुत सुखरामदासजी ओझा ही ने लिया है।

भोजन व स्थानादि के नियम।

सदस्यों व प्रतिनिधियों का समस्त भोजन प्रबन्ध व ठहरने के स्थान के लिये सब व्यवस्था विना कुछ लिये ही की जावेगी—इसके लिये महानुभावों को किसी प्रकार का कष्ट न होगा, सभी प्रकार की कच्ची पक्की भोजन सामिग्री वितीर्ण हो सकेगी, स्वयं-पाकी सज्जनों को अन्न, जल, चौका स्थानादि की सब सुविधा रहेगी पर पाक पात्र साथ में लाना होंगे। समुद्र तट पर बसने के कारण तथा हेमन्त ऋतु होने के कारण करांची सम्मेलन में पधारने वाले सज्जनोंको रास्ते की सर्दी से बचने के लिये गर्म कपड़े भली प्रकार सज्जित होकर प्रस्थान करना होगा।

सार समुच्चयक—

सम्पादक।

सद्विषयसम्भाषापरिषदों की नियमावली

(१) निदानचिकित्सा सम्भाषापरिषद्—

विचार्यविषयांश—(१) प्राच्यपाश्चात्य निदान एवं चिकित्साविधि में परस्पर वैशिष्ट्य दर्शाकर तत्पश्चात् अपनी आयुर्वेदीय निदान एवं चिकित्सा पद्धति की न्यूनतापूर्ति का प्रयत्न दर्शाना। दोनों पद्धतियों में अधिक विशेष और उत्तम कौन सी पद्धति का अवलम्बन श्रेय है। (२) मलेरिया, सिफलिस, न्यूमोनियां, गनोरिया इन रोगों के आयुर्वेदीय पद्धत्यनुसार निदान एवं चिकित्साक्रम के लिये विचार। इत्यादि एवं क्लोम विषय का विवेचन।

प्रमुख—श्रीमान् वैद्य पञ्चानन पं० कृष्ण शास्त्री कवडे बी० ए० पूना।

(२) रसायन सम्भाषा परिषद्—

विचार्य विषयांश—(१) पारद प्रक्रिया द्वारा, देहसिद्धि, लौहसिद्धि (उत्कृष्टधातुनिर्माणवाद कीमियां) का प्राप्त करना। धातूपधातुओं के सुष्ठुशोधन मारण प्रकार का सारे भारतवर्षमें नियत निर्धारण करना जिसमें सर्वत्र एक ही प्रकार की समान रूप वाली तथा समान गुण वाली भस्में तथा सादिक प्राप्त हों इस प्रबन्ध पर विचार। २) वैक्रांत, खर्पर, गोदन्त हरिताल, कंकुष्ठादि, संदिग्धद्रव्यों के निर्णय पर विचार आदि।

प्रमुख—श्रीयुत कविराज प्रतापसिंहजी रसायनाचार्य, बनारस।

(३) वनौषधिसम्भाषापरिषद्—

विचार्य विषयांश—(१) शालिपर्णी, प्रश्निपर्णी, श्योनाक, कुष्ठ, पुष्करमूल, पाठा, अष्टवर्गस्थ औषधियोंके निर्णयपर विचार। किनाइन, सन्टोनाइन, आदि पाश्चात्य देशों द्वारा विष्कृप औषधियों के समान गुण धर्म वाली आयुर्वेदोय एतद्देशीय औषधोंके अविष्कार का निर्णय। आदि

प्रमुख—श्रीयुत् पं० हरिप्रपन्नजी शर्मा शास्त्री, वैद्यराज, मुम्बई,

(४) स्वास्थ्य संरक्षण सम्भाषा परिषद्।

विचार्य विषयांश—जनपदोध्वंस का कारण, निवारण, अनुत्पत्तिके लिये विचार। जनपदोध्वंसध्वंसिनी सिद्धभेषज यन्त्र मन्त्र शस्त्रादिकों का अन्वेषण संग्रह।

प्रमुख—श्रीमान् डा० लक्ष्मी पति जी, B. A M. B. & C. M. भिषग्रत्न, मद्रास।

निवेदक—

श्रीश्याममनोहर मिश्र रसवैद्य

प्रधान मन्त्री

नि० भा० २० वैद्य सम्मेलन,

लक्ष्मीदास स्ट्रीट,

करांची।

—*—*—

३८ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी, मथुरा की बनायी हुई यह अमूल्य दवायें केवल समस्त भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ साल से प्रसिद्ध हैं। इनकी अपूर्व गुणकारिता का यही सबसे बड़ा सबूत है कि इनमें दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है -- इससे बढ़ कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है ?

१ —सुधासिन्धु ।

सभी बीमारियों के लिये। कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, आँव खून के दस्त, पेट की सभी बीमारियां, बच्चों का रोना, हरे पीले दस्त, के दूध पटकना. ऐंठा, गठिया आदि, के लिये सुधासिन्धु रामबाण है। तुरन्त आराम पहुंचाता है। सुधासिन्धु सुगन्धित है, सुस्वाद है और सर्वसुलभ है। मूल्य फी शीशी फेरा आठ आना।

२ —बालसुधा ।

बच्चोंके सभी रोगों के लिये इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं, कमजोर लड़के ताकतवर होते हैं, निरोग लड़के बीमार होनेसे बचते हैं। मीठा है, बच्चे खुशसे पीते हैं कीमत फी शीशी ।।।)

३—बृहद्गज केशरी

नया पुराना खांसी जिस प्रकार का दर्द हो, इससे तुरन्त आराम होता है। दर्दके लिये ऐसी अचूक और शक्तिवान दवा दूसरी नहीं। जलन, तकलीफ, दर्द कुछ नहीं होता। मूल्य ।)

यह दवायें भारत सरकार से भी राजस्टर्ड हैं।

हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं। यदि आपके शहर, कस्बे या गांव में न मिले तो इस पते पर पत्र लिखकर मंगवा लीजिये।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये)

मंगाने का पता—

सुख सञ्चारक कम्पनी मथुरा

प्रचारार्थ मूल्य कम
कर दिया।

शरद ऋतु की
अमूल्य भेंट

समय जा रहा शीघ्र
आर्डर दीजिये

उत्तमोत्तम पौष्टिक पाक सेवन कीजिये।

प्रिय ग्राहको तथा ग्रहस्थियो यही सब से अच्छा समय है कि आप अपनी शारीरिक स्वास्थ्य कमी, वीर्य की कमजोरी तथा पुरुषत्व को कायम रखने के लिये पौष्टिक औषधि सेवन करें। कारण कि इस ऋतु में स्वाभाविक मनुष्य की पाचन शक्ति अति तीव्र होकर पौष्टिक पदार्थ को पाचन कर वीर्य वृद्धि करने में विशेष सहायक हो सकती है —अतः आप हमारे यहां के विश्वस्त रूप से शुद्धता पूर्वक बने हुये शास्त्रोक्त पाक सेवन कीजिये—विशेष प्रशंसा की आवश्यकता नहीं आप स्वयं एकबार मंगा कर अनुभव कर लेंगे।

कुछ पाकों की नामावली

सतावरी पाक	२॥) सेर	नपुंसक जीवन पाक	१०) सेर
कौंच पाक	३॥) सेर	सौभाग्य सुंठ पाक	२॥) सेर
मूसली पाक	४) सेर	सुपारी पाक	४) सेर
अश्वगन्धा पाक	३॥) सेर	ब्राह्म पाक	२॥) सेर
कुङ्कुम पाक	४) सेर	भिलावा पाक	६) सेर
कस्तूरी पाक	८) सेर	गोखुरू पाक	३) सेर
मदनानन्द मोदक	२) सेर	चोबचीनी पाक	५) सेर

नोट—जो सज्जन रोगानुसार अपनी इच्छा तुल्य पाक तैयार करवा कर सेवन करना चाहें हम विशेष ध्यान से शीघ्र बनवा कर भेज सकते है पर चौथाई मूल्य देशगी देना पड़ेगा।

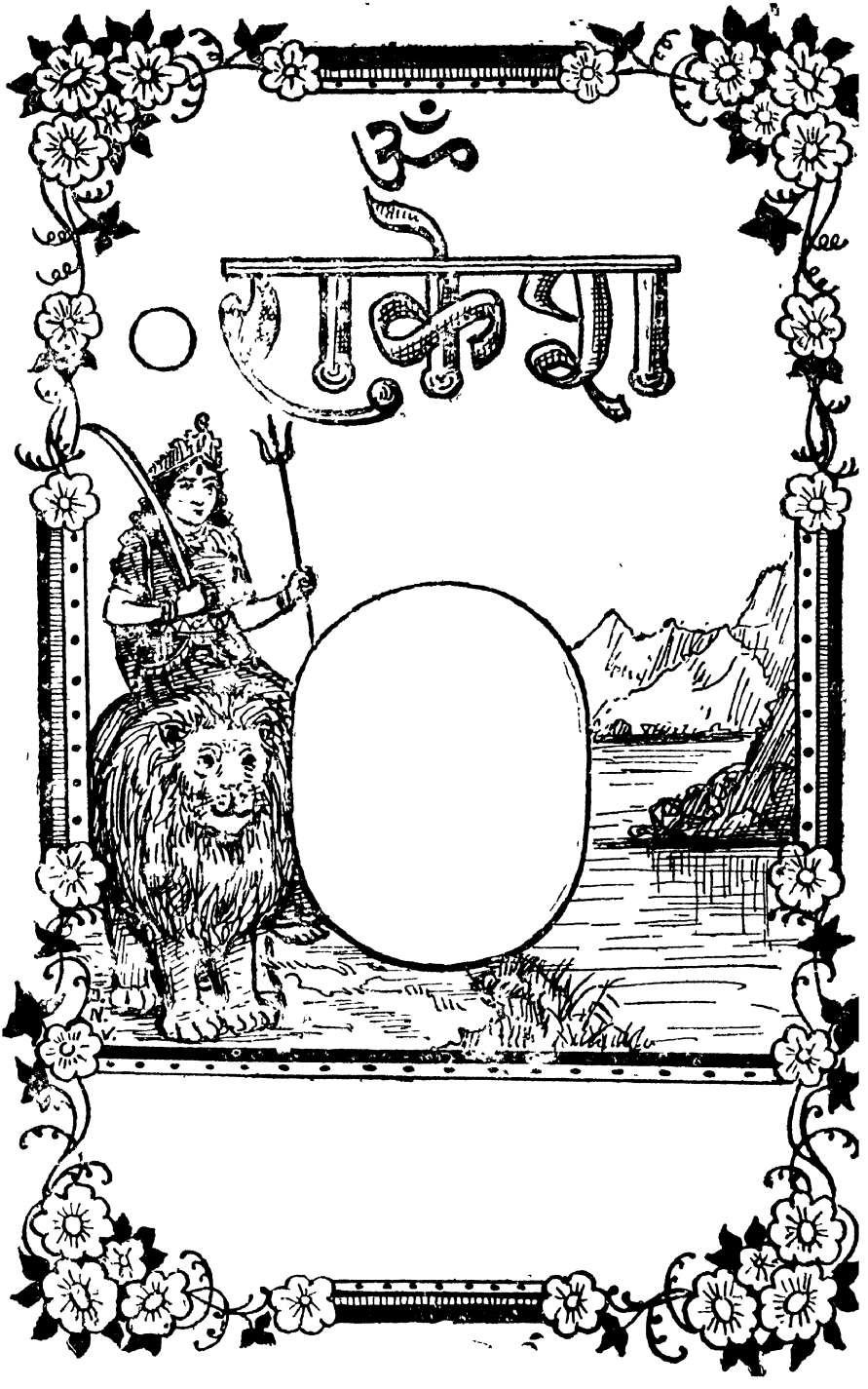
मिलने का पता—

मैनेजर

श्री भगवत आयर्वेदिक फारमेसी

बरालोकपुर इटावा (यू० पी०)

Printed by G. N. Gupta at the Sharman Press, Etawah.
Published by Pt. Rupendra Nath Dwavedi.



क्षमा याचना।

यद्यपि हम करांची वैद्य सम्मेलन के उपलक्ष मे सम्मेलनांक निकालने की सूचना राकेश के पाठको को २ मास पूर्व ही दे चुके थे। किन्तु हमारे जनरल मैनेजरके अकस्मात ज्वर रोग में ग्रसित होजाने और अब तक अस्वस्थ होने के कारण सम्मेलन करांची में राकेश के प्रतिनिधि के न पहुँच सकने तथा प्रार्थना करने पर भी सम्मेलन के मन्त्रीजी के द्वारा सम्मेलन कार्य विवरण की रिपोर्ट तथा आवश्यकीय लेटर व चित्रादि ठीक समय पर न प्राप्त होने व विलम्ब हो हमे अपने विचार स्थगित करने पडे। यहां तक कि इसी गड़-बड़ी मे हम पाठको की सेवा मे साधारण अङ्क भी नहीं भेज सके। राकेश के ग्राहको को जो समय पर पत्र न पहुंचने का दुःख उठाना पड़ा उसके लिये हम कृपालु पाठको से क्षमा याचना करते है आशा है आप हमारी इस कठिन कार्य विवशता पर ध्यान पूर्वक विचार कर इस भूलको क्षमा करेंगे। हालांकि हम उस समय के पूर्ण विवरण सम-लङ्कृत न कर सके। कारण कि आज ता० ३१ जनवरी अंक न छुटे और सम्मेलन का पूरा फोटो कोई भी रिपोर्ट कर लेने मैनेजर द्वारा नहीं भेजा गया जिसका प्रकाश पहिले होते राकेश द्वारा डालकर पाठको को सन्तुष्ट करते। सभा सम्मेलन आदि कार्य बिना समा-चार पत्रों के प्रकाशित हुए उच्च प्रचार रूप को नहीं पहुंच सकते। यहां पर लाहिरू च. मैनेजर के मन्त्री श्रीमान लालजी डाक्टर को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। जिन्होंने गत वर्ष सम्मेलनांक निकालने मे मुझे समय पर आवश्यकीय चित्र, व्याख्यादि तथा पूर्ण रिपोर्ट देकर सहायता प्रदान की थी जिसकी अनुकम्पा से राकेश ने सम्मेलनांक निकाल कर विज्ञ वैद्यों तथा प्रमुख पत्र सम्पादकों के कृपालोचक दृष्टि में वे प्रशंसार्ह विशेष सम्मान प्राप्त किया था। खेद! अब हम अपने पाठकों के समक्ष शीघ्र ही उस कमी को पूरा करने को एक विशेषांक उपस्थित करेंगे जिसका नाम "कविरत्नांक" होगा जो कि पाठकों की सेवा मे समय पर पहुंचेगा—कारण कि कल से निजी प्रेस न होने से पत्र देर से निकलने पर निश्चित समय पर ग्राहकगणों को सेवा में नहीं पहुंच सकता था, इस असुविधा को दूर कर दिया है जिसको सुनकर राकेश के प्रेमी तथा ग्राहकगण अवश्य प्रसन्न होंगे यह क्या कि राकेश ने निज प्रकाशनके लिये निजी प्रेस **"दी राकेश प्रिंटिङ्ग प्रेस"** के नामसे खोल दिया है और आगामी अङ्क इसी प्रेस से निकलेगा।

प्रार्थी- मैनेजर।

॥ श्री धन्वन्तरि जयतिः ॥

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण--परीक्षित ऐसी।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ को किया जहाँ करते वैदेशिक सारे।
करते हैं आरोग्य वहाँ जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २ } दिसम्बर जनवरी सन् १९३० ई० { उदय ४-५

हृदयोल्लास

(ले०—रामनारायण श्रीवास्तव वैद्य हृदयस्थ, नुनहड़)

रा—केश उदय होगया *तारे सकुच गये।
राजा के आते ही ज्यों दोषी नमुच गये॥

के—वल नहीं इस देश में रुज अन्धकार था॥
थे धूर्त मूर्ख वैद्यगण अज्ञान हट गये॥

श—र्मा जो मुन्शीराम ने बल पाया 'इन्द्र' का।
"हृदयस्थ" को आनन्द है रुजवृन्द घट गये॥

लो- गों से मेरी अपील है दोउ हाथ जोड़कर।
"राकेश लो" अति प्रेम से रुज जाल कट गये॥

* राकेश के प्रति ईर्षा करने वाले।



(लेखक—आयुर्वेद शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा राजवैद्य एल० एम० एस० एच०)

प्रिय पाठकगण !

जिस प्रकार जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा, प्रभृति दुःसाध्य रोग हैं उसी प्रकार यह भी अत्यन्त दुस्तर है यों तो आप जहां देखेंगे वहीं विज्ञापनवाले अनेक पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापन छपवा तथा बड़े २ अक्षरों में साइन बोर्ड लिखकर टांग देते है यद्यपि उनकी औषधि १ अंश भी लाभदायक नहीं होती तथापि अपने को बड़े ही योग्य चिकित्सक समझते हैं यथार्थ में वही कहावत चरितार्थ करते हैं कि 'नाम तो चीनी प्रसाद मजा घोटे का भी नहीं' मैं जिस शहर या कसबे में जाता हूं वहीं पर देखता हूं कि प्रमेह की अव्यर्थ औषधि तथा कहीं पर प्रदर ग्रहणी मधुमेह, नपुन्सकता, प्रभृति आदिका 'आश्चर्य प्रद औषधि' किन्तु ये सब बातें व्यर्थ हैं केवल द्रव्य लाभ के लिये ही ये अनेक प्रकार की युक्तियां कर सुन्दर २ साइनबोर्ड लिखवाकर टांग देते हैं ऊपरी भाग तो इनका इतना सुन्दर है किन्तु भीतरी वही भाग है जैसा कि कवि शिरोमणि श्री तुलसीदासजी ने दर्शाया है यथा 'मन मलीन तनु सुन्दर कैसे, विष रस भरा कनक घट जैसे' तथा 'मन कपटी तन सज्जन चीन्हा' आदि शोक है कि ऐसे ऐसे व्यक्ति ही मिलकर हमारे इस आयुर्वेद को जो कि सम्पूर्ण पाश्चात्य चिकित्सकों का शिरोमणि था उसे नष्ट कर रहे है। जिस आयुर्वेद के आश्रित हो ये अनेक डाक्टर लोग नाम पैदा कर जनता को अपने वशीभूत रखे हुए हैं कि जनता ने आयुर्वेद से अपना विश्वास ही उठा दिया है जहां देखिये वहीं सब अधिकांश इन्हीं पाश्चात्य चिकित्सकों के ही तरफ दौड़ते है। किन्तु कोई हर्ज नहीं है अब आयुर्वेदीय प्रेमी जाग उठे हैं अब आप लोगों की दाल नहीं गलेगी। अभी थोड़े ही दिन हुए प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस० आयुर्वेदाचार्यजी ने इस (आयुर्वेद की कितनी सेवा की है इनकी जीवनी से आप लोगों को अवश्य सूचित हो गया होगा कि ये विलायत में रहते हुए भी आयुर्वेदके कितने प्रेमी हैं केवल इन्हीं की सेवा से समस्त भारत वर्ष के अतिरिक्त अन्य भी देशों के विज्ञापन बाज लोग लज्जित होकर हताश हो गये हैं इसका कारण यही है कि 'उघरे अन्त न होइ निबाहू' अर्थात जब इनका रहस्य उक्त सज्जन ने जनता के समक्ष रख

कर दिखा दिया कि यथार्थ में ये लोग कैसे व्यक्ति है तो बेचारे क्या करें हताश हो गये अस्तु अब मैं विशेष न कहकर अपने दूसरे मार्ग पर चलता हूं।

सबसे प्रथम हमें इस वस्तुका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यकीय है कि--

ग्रहणी क्या है

इस विषय में सुश्रुताचार्य दर्शाते है कि पित्त को धारण करनेवाला पक्वाशय (आशय ७ प्रकार का होता है यथा, रक्ताशय, कफाशय, पित्ताशय, आमाशय, आदि) और आमाशय (नाभिस्तन हृतरं जंतो रामाशय इतिस्मृतः अर्थात नाभि और वक्षस्थल के मध्य का जो भाग है उसे ही आमाशय कहते है) के मध्य में स्थित जो छठी कला श्लेष्म स्नाय्व, पराच्छनः कलाख्यः काष्ट सारवत्। ताः सप्तः सप्तचा धारः रक्त स्याद्यः क्रमात्व रे अर्थात कला काष्ट के सारे सदृश हैं जैसे काष्ट का सार है उसी प्रकार धातु सार का शेष कला कहाती है जो कि कफ, नस जेर, से आच्छादित रहती है यह भी ७ प्रकार की होती है ७ सातों भिन्न २ नाम से विख्यात है किन्तु लेख बढ़ जाने के भय से नही लिखता हूं इसी से छठी कला का दूसरा नाम रोहिणी है) इसीको ग्रहणी कहते है।

गृहणी का कार्य

यह हर प्रकार के पदार्थ (खाये, चबाये, पिये तथा चाटे हुए) जो आमाशय द्वारा द्रव रूप होकर नीचे को जाते हैं तथा पक्वाशय के ऊपर पकने के लिये उपस्थित होते हैं उन्हे यही धारण करती है यथा 'अशितं खादितं, पीतं, लींढ कोष्ट गतं नृणाम्।' तज्जीर्यति यथा कालं शोषितं पित तेजसा' अर्थात जितने भी पदार्थ किसी भी प्रकार से जो मनुष्यों के कोष्टगत प्राप्त होते हैं उसे यही पित्त की गरमाई से शोणित करके पकाती है इस विषय में अन्याचार्यों का भिन्न २ मत है यथा चरकाचार्य कहते हैं "अग्न्यधिष्ठान मन्नस्य ग्रहणद ग्रहणीमता' अर्थात जठराग्नि का अधिष्ठान ग्रहणी है अन्न को ग्रहण (धारण) करने से ही उसे ग्रहणी कहते है पुनः 'अधश्च पक्व मामं वा प्रवृत्तं ग्रहणी गदः' अर्थात पक्व अथवा अपक्व अन्न अधोमार्ग से होकर निकले वही ग्रहणी कहाती है किन्तु अधोभाग तो कहा ही है परन्तु उर्ध भाग से निकलने लगता है देखिये 'तद्यात्यूर्द्धमधोपिवा' अर्थात उर्ध भाग (वमन द्वारा) तथा अधोभाग (विरेचन द्वारा) दोनों ही मार्ग से निकलता है।

गृहणी दूषित होनेका कारण

इसमें प्रायः सभी अन्न बिदाही हो जाते हैं और वही विवद्ध अन्न विबद्ध अथवा पतला होंकर अत्यन्त निकलने लगता है इसका कारण ग्रहणी का दूषित होना है और यह ग्रहणी जठराग्नि के विषम होने से दूषित होती है।

अग्निका कार्य

जिस प्रकार सूर्य भगवान आकाश में स्थिति होकर अपने तेजोमय किरणोंसे युक्त पृथ्वी के समस्त सरोवरों तथा तालादिकों को शोषण करते हैं उसी प्रकार मनुष्यों के कोष्टगत अग्नि सम्पूर्ण भोजन किये हुए वस्तुओं को शोषण करता रहता है अर्थात शीघ्र ही पाचन करता है।

यथा—सूर्योदिवि यथातिष्ठं, स्तेजो युक्ते गर्भस्तिभिः। विशोषयति सर्वाणि पल्वलानि सरांनिच।'

तद्वल्लरीरिणां भुक्तं, ज्वलनौ नाभि माश्रितः। मयूखैः पचतेक्षिप्तं, नाना व्यञ्जन संस्कृतम्॥ (र० प्र०)

अग्नि का स्थान

इसका स्थान ग्रन्थान्तरा से नाभी ही मालुम होता है।

यथा—तस्यां तरेण नाभेस्तु ज्योतिः स्थानं ध्रुवं स्मृतम्॥ सुश्रुत०

अर्थात् नाभी स्थान में ध्रुव (निश्चल) ज्योति प्रकाशक अग्नि का स्थान है तथा इसी प्रकार रस प्रदीप मे भी दर्शाया है यथा नाभौ मध्ये शरीरस्य, विशेषात्सोम मंडलम्॥ सोम मंडल मध्यस्थं, विद्यात्सूर्य स्य मंडलम्॥ प्रदीप वत्तत्र नृणां, स्थितो मध्ये हुताशनः॥ (र० प्र०)

अर्थात् शरीर के मध्य भाग (बीच में) जो नाभी स्थान है वही विशेषतः सोम मंडल है तथा सोम मंडलस्थ सूर्य मंडल स्थित है एवं वही सूर्य मंडल के अन्तर्गत दीप सदृश अग्नि मंडल विराजमान है।

अग्नि का भेद

यह अग्नि ४ प्रकार की होती है, प्रथम तो निर्दूषित हैं तथा अन्य जो ३ प्रकार की है वह विकार युक्त है "यथा" स चतुर्विधो भवति, दोषा नामि पन्न एको, विक्रया मान्न स्त्रिविधो भवति' सु०-जिसमें १ तो वही है जो निर्दूषित है, और तीनों, विषमाग्नि (१) तीक्ष्णाग्नि (२) मंदाग्नि (३) यह में तीनों नामों से विख्यात हैं ये तीनों तीन दोषों के युक्त होती हैं।

यथा—वायु से विषमाग्नि, पित्त से तीक्ष्णाग्नि, तथा मन्दाग्नि कफ से, एवं चौथी सम अग्नि, यह सब दोषों के समा, नता पर होती है यही निर्दूषित है। यथा—

विषमो वातेन, तीक्ष्णः पित्तेन मंदः श्लेष्मणः, चतुर्थः समः सर्वसाम्यादिति सु०

विषमाद्दाग्नि से होने वाले रोग

विषमाग्नि वायुके रोगोका हेतु (कारण) है अर्थात् वायु के रोग इसीसे उत्पन्न होते है, तथा पित्त के रोगों को प्रगट करने वाली तीक्ष्णाग्नि है उसी प्रकार कफ के विकारों को मंदाग्नि ही उत्पन्न करती है यथा—

विषमो वात जान्रोगान्तीक्ष्णः पित्त निमित्त जान्। करो त्यग्नि स्तथा मंदो, विकारान्कफ संभवान्॥ सु०

विषमाग्नि के रोग

इससे कभी २ अन्नादि का पचना तो ठीक २ होता है और कभी २ तो अफरा, पेट दर्द, उदावर्त, अतिसार, पेट का भारीपन, अत्र कूजन (आतें गुड़गुड़ाना) तथा, प्रवाहिका, आदि प्रभृति रोगों को उत्पन्न कर देती है तथा विषमता से अन्न को परिपक्व करती है।

यथा "यः कदाचित्त सम्यक् पचति, कदाचि दाध्मान शूलोदावर्तातिसार जठर गौरवांत्रकूजन प्रवाहाग्नि कृत्वा स विषमः सु० अर्थात् इसी को विषमाग्नि कहते हैं।

(क्रमशः)

प्राचीन भारत और शल्य तन्त्र

गतांक से आगे।

(लेखक—प्रोफेसर रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस०)

खल्लमुख

इसका आकार चम्मच या दावीं के समान होता था इसमें क्षार आदि रख कर व्रण स्थान पर डाला जाता था जैसे अर्श रोग में। त्रीणि दर्व्याकृतानि खल्लमुखानि। क्षारौषधि प्रणिधानार्थम्

नखाकृति

इसकी लम्बाई आठ अङ्गुल यह आगे को झुकी होती थी इसकी संख्या तीन थी आकार कनिष्ठका अनामिका मध्यमाङ्गुलि के समान होता था यह भी क्षार कार्य में प्रयोग किया जाता है यथा अष्टांगुला निम्नमुखा स्तिस्र क्षारौषधि क्रमे। सुश्रुत।

जांबोष्ठ अंकुशाकृति

इसमें कुछ का आकार जामुन के समान और शेष का अङ्कुश के समान होता था लम्बाई आवश्यकतानुसार होती थी इसके द्वारा क्षार आदि लगाये जाते थे। शलाका जाम्बोष्ठानां क्षारऽग्नौच प्रथक् त्रयम्। इसकी अपेक्षा एक और यन्त्र होता था जिसका आकार अङ्कुश समान था इससे नासार्बुद निकाले जाते थे आंत्र वृद्धि रोग Inguinal candal में दाह किया जाता था इसके किनारा तेज और बेर की गुठली समान गोल होते थे, कोलास्थि दल तुल्या स्यान्नासा ऽर्शोऽर्बुद दाह कृत।

सलाई

इसकी लम्बाई आठ अंगुल मोटाई मटर दाना के समान दोनों सिरा गोल (Buds) होते थे उपयोग आंख में औषध डालने में किया जाता है अञ्जनार्थमेक कलाय परिमंडल गुभयतोमुकुलाग्रम्। सुश्रुत॥ और पलकों में औषधि लगाने की शलाका ६ अंगुल लम्बी और फूले किनारों वाली होती थी यह सब धातुओं की बनाई जाती है पर आंख में अञ्जन के लिये सीसे की अधिक बनती थी लेखनमें ताम्र की रोपण Healing में लोहे की प्रसादन (To Make Clear) में सोने वा चांदी की उत्तम मानी गई है यह दश अंगुल लम्बी बीच में पतली सिरों पर मोटी होती है॥ सवितुरुदय काले साञ्जना व्यंजना वा कर करिक समेसा वर्म्म वैचिण्ड्य रोगान्। असित सित समुत्थान संधिवर्त्माभिजातान हरति नयन रोगान सेव्यमाना शलाका (चक्रदत्त)

कर्णशोधनी शलाका

इसका आकार श्रुवा तथा पीपल पत्र से मिलता है उपयोग कान का मैल कीड़ा

आदि निकालने में होता था यथा क्लेदयित्वा तु तैलेन स्वेदेन प्रविलाप्य च। शोधयेत् कर्णगूथंतु भिषक् सम्यक् शलाकया (चक्रदत्त)

गर्भ शंकु

इसकी लम्बाई १० से १२ अङ्गुल चौड़ाई आठ अङ्गुल अग्रभाग अङ्कुश समान उपयोग मूढ गर्भ (Difficult Labaur) में किया जाता है व्यौहार से प्रथम मंडलाग्र से सिर विदीर्ण कर लेते हैं॥ १॥ नतोऽग्रे शङ्कुना तुल्यो गर्भ शङ्कुरिति स्मृतः। अष्टांगुलोयतस्तेन मूढ़ गर्भ हरेत् स्त्रियाः। तथाच ॥२॥ ततः स्त्रियमाश्वास्य मंड़लाग्रेण अंगुली शस्त्रेण वा शिरो विदार्य। शिरः कपालान्याहृत्य शंकुना गृहीत्वोरसि कक्षायां वा प्रहरेत्। अभिन्ने शिरसि चाग्नि कूटे गंडे वा। (सुश्रुत मूढ़ गर्भ चिकित्सा।

प्रजन शंकु

इसे जीवित शिशु को गर्भाशय से बाहर करने में किया जाता है प्रयोग करने के पूर्व हस्त से क्रिया Manual Fractian की जाती थी जब हाथ से इस कार्यता न होती थी तब इसे प्रयोग करते थे यथा—

गर्भे जीवित मूढं तु गर्भं यत्नेन निर्हरेत्। हस्तेन सर्पिपाक्तेन योनेरन्तर्गतेन सा॥ मृते तु गर्भे गर्भिन्या योनौ शस्त्रं प्रवेशयेत्। शस्त्र शास्त्रार्थविदुषी लघु हस्ता भयोजिकता

(योग रत्नाकर)

शरपुंख

इसका आकार सर्पफण के समान होता है लम्बाई चार अंगुल इसका कार्य दन्तकोश से दांत निकालना था। यथा—शर पुङ्ख मुखं दंत या तनं चतुरंगुलम् (सुश्रुत)

सर्प फण

यह सर्प फण के समान होता है जिसमें एक तरफ चाकू दूसरी तरफ चम्मच होता है उपयोग अश्मरी में शल्य कर्म में व्यौहार होता था यह शल्य कर्म सीवन Perinium पर होता है, अश्मर्याहरणं सर्प फणाद वक्त्रा अग्रतः। तथाच। अल्प मध्य व स्थितं पुनः परिवृद्धि मेति। तस्मात् समस्त मग्र वर्क्र-णाददीत (सुश्रुत)

अर्द्ध चन्द्र मुख

यह आकार में अर्द्धचन्द्र होता है इससे अन्त्र वृद्धि का मार्ग (Inguinal Canal) तथा कठोर अर्बुद ग्रंथि, अपची आदि दागे जाते हैं आंत्र वृद्धि का मार्ग दागने से वहां दाग बनकर संकोच हो जाता है जिससे मार्ग रुद्ध हो जाता है। मध्योर्ध्व वृत दंडा च मूले चार्द्धेंदु सन्निभा। तत्र या वंक्षणस्था तां दहेदर्द्धेन्दु वक्त्रया। सम्यग् मार्गावरोधार्थम्॥ सुश्रुत॥

मूसल

इसका उपयोग दबी और टूटी अस्थियों के वास्तविक स्थान पर बैठाने पर किया जाता है यथा—

१ नासां सन्नां विवृता वा ऋज्वीं कृत्वा शलाकया। तथाच। २ सन्नमुन्न भयेत् स्विन्नभसकं मुसलेनतु। तथाच। ३ मूसलेनोत्क्षिपेत् कक्षाभंस संधौ विहंसते॥

मूत्र मार्ग विशोधक

अग्र भाग मालती पुष्प तुल्य होता है इसके द्वारा मूत्र मार्ग की शुद्धि की जाती है यथा॥ १ मूत्र मार्ग विशोधनार्थ मेकं मालती पुष्प वृन्ताग्र प्रमाण परिमण्डलम्। तथाच। २। ऋजोः सुखोपविष्टस्य हृष्टे मेढ़ घृतान्विते शलाकयान्विष्य गतिं यथाप्रतिहता व्रजेत्। ततः शेफ प्रमाणेन पुष्पनेत्रं प्रवेशयेत्॥ चरक॥

एषणी

इसका उपयोग भगन्दर-नाड़ी व्रण गति-व्रण का पता लगाने में किया जाता है। १ पराचीन मवाचीनं वहिर्मुखमन्तर्मुखं वा ततः। प्रणिधाय एषणी मुन्नम्य साशय मुद्धरेत॥ तथाच॥ २ नाडीनां गति मन्वीक्ष्य शस्त्रेणोत्याहय कर्मवित् (योग रत्नाकर)

उपयंत्र

इस शीर्षक में शल्य कर्म के उन उपकरणों का समावेश होता था जो किसी धातु आदि से नहीं बनाये जाते थे उनके द्वारा शोथ घट जाता था और विद्रधि फट जाते थे और शल्य कर्म के प्रधान सहायक थे—

क्षार सूत्र

इसके बनानेकी यह क्रिया थी कि रेशम के तागा को चार पांच दिन तक हल्दी के सोधुघोल में भिगोकर फिर थूहर के दूध में सात आठ दिन रखते थे, फिर अर्शाङ्कुर व भगन्दर व गतिव्रण की गति खोलते हैं इनका प्रयोग निर्बल भीरु पुरुषों के लिये किया जाता है। यथा॥ कृश दुर्बल भीरूणां नाड़ी मर्मश्रितान्वया। क्षार सूत्रेण तां छिन्द्यान्नतु शस्त्रेण बुद्धिमान्॥ तथाच॥ बन्धनात् सुदृढ़ं सूत्रं भिनत्यर्शोभगंदरम्।

वेणिका

यह एक प्रकार के बंध हैं जो रस्सी द्वारा दिये जाते हैं इनका उपयोग सर्पादि विष की अवस्था में विष के विस्तार को रोकनेमें किया जाता है। दंशातु विषं दष्टास्य विस्तृतं वेणिकां भिषकबन्ध्वा निस्पीडयेत॥ चरक॥ तथाच॥ सा तु रज्वादि भिर्प्रवृद्धा विष प्रति करीमता॥ सुश्रुत॥

पाश

प्राचीन वैदिक साहित्य में भीषणता या-क्रूरता के सूचक वरुण के पाश बताये गये हैं। अतः जिन अवस्थाओं में रोगी को भयभीत करने की आवश्यक्ता होती थी (जैसे उन्माद) उनमें इनका उपयोग होत था। जैसे ये ते पाशा विपाशा (अथर्वणा अथर्व) भीषयेत् सततं पाशैः कशाभिर्वाश्च ताड़येत् (चरक)

चर्म बन्धन

इसके द्वारा दृढ़ बंध बंधता था अतः शिरावेध के समय व विष की अवस्था में विष वेग रोकने के लिये यह शस्त्र कर्म के स्थान से चार अङ्गुल ऊपर बांध दिया जाता था ॥ यथा ॥ प्लोत चर्मान्त वल्कानां मृदुनान्यतमेनच । न गच्छति विषं देहेऽस्थिष्टाभिः निवारितम् ॥

पट्टी

यह प्रायः सूत रेशम कौशेय आदि से बांधी जाती थी इसके साधारण चौदह भेद बताये हैं परन्तु यह निश्चित नहीं। कारण कि जिस किसी स्थान पर जो पट्टी जिस किसी प्रकार उचित रीति से बंध सके उसे ही बांधना चाहिये। साधारणतः पट्टियां निम्न प्रकार से बांधी जाती हैं—

१ कोश

यह एक खोल के समान होती थी इसका स्वरूप जानने के लिये कागज को उंमली लपेट कर नक्शे पास से मोड़ कर जाना जा सकता है। यही पट्टी प्रायः इसी स्थान पर बंधती थी।

२ दाम

यह एक माला के समान चौड़ी बांधी जाती थी। इसका उपयोग दर्द कम करनेके लिये होता था। इससे अवयव पर दबाव होता था इसका स्थान उदर है।

३ स्वस्तिक

इसका स्वरूप अंगरेजी के आठ 8 से मिलता है यह सन्धि स्थानों में कंडे के भंग या व्रण में बांधी जाती है।

४ अनुवल्लिति

इसको बेल की तरह से बांधते हैं निचले चक्कर से आरम्भ करके प्रत्येक निचले चक्करका १ बटा ३ भाग छोड़कर ऊपर को बढ़ाते जाते हैं। उपयोग पार्श्वस्थिके भंग में तिरछे कटे गहरे व्रणों में तथा शालाओं में होता था।

५ प्रतोली

इसकी चौड़ाई तीन अङ्गुल होती है उपयोग गले या शिश्न पर होता है इसमें पट्टी ऊपर ही ऊपर घुमाई जाती है।

६ मंडल

इसका आकार गोल होता था अतः यह गोल अङ्गोपर बांधी जाती हैं। यथा जङ्घा भुजा कोष्ठ आदि।

७ स्थगिका

इसके द्वारा अवयव की गति रोकी जाती थी इसका व्यौहार करने में फलकः (Splint) या चिपकने वाले कल्क (Paste Emplaster) की सहायता ली जाती है यह अगूंठा उङ्गली शिश्न पर भी बांधी जाती है। सुश्रुत में वृद्धि रोगके लिये इसका उपयोग पानी निकालने के लिये बताया गया है।

८ यमक

इसमें दो पट्टियां आपस में काटती हुई १० अंश के कोणपर सी जाती थी उपयोग हनु या यमक व्रणों में होता है।

९ खट्वा

इसे (your fail) कहते है इसके बनाने के लिये एक पट्टी के दोनों छोरों के बीचमें चीर देते थे एवं बीचमें स्थानानुसार तीन या चार इंच जुड़ा रहने देते थे इसका उपयोग माथे गाल और अधोहनु में होता हैं।

१० चोंन

यह क्रिया से पट्टी आंख में बांधी जाती है।

११ विवंधर

यह चौड़ी और गोल होती है छाती पीठ पर बांधी जाती है।

१२ वितान

यह तम्बूके समान होती थी इसके लिये एक चौड़ा वस्त्र लेकर सिर पर फेला कर अगले सिरे को पीछे खेंचकर बांध देते थे यह पट्टी सिर पर बांधी जाती है।

१३ गोफणिका

इसका आकार नतोदर होता है यह उन्नतोदर स्थान पर जेसे ठोड़ी, नाक, सीवन पर बांधी जाती है।

१४ पंचाँगी

इसकी पांच पूछें होती हैं यह अधोहन्वस्थि एवं असकास्थि (Clonical) के भंग पर बांधी जाती है यथा ॥ स्थिरैः कवलिकाबन्धैः कुशाभिश्चैव संस्थिम्। पट्टैः प्रभूतसर्विष्कैः बन्धीयात् । २ तथाच हनुसंधौ ३ स्वेद वित्वा स्थिते सम्यक पश्चाङ्गी विचरेभिषक ॥ तथाच बद्ध्वा वेल्लतिकेनाशु वचस्तैलेन सेचयेत्। तथाच चर्मणा गोफणा बन्धः (सुश्रुत) पट्टी बांधनेके समय व्रण पर कवलिका (Bud) रखली जाती है पट्टी को बाम हाथ से पकड़कर बांधा जाता है और गांठ व्रणसे हटाकर दीजाती है उसका अभ्यास लकड़ी व मिट्टी के बने मनुष्य पर किया जाता है यथाः-

ततः कवलिकां दत्वा वस्त्र पट्टेन वेष्टयेत्। पुस्तमय पुरुषांग प्रत्यंगविशेषे तु बंधयेत्सम्यग्॥ अथ पुस्तका लक्षणम्। मृदा वा दारुणावाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्मणा। लौहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते—इसी प्रकार से सुश्रुत ने पट्टी बंध प्रायः तीन प्रकार का बताया है जैसे गाढ़-शिथिल समबन्ध इन्हीं को यथा स्थान दोषानुसार बांधना चाहिये।

उदर बन्ध

जलोदर की अवस्था में पानी निकालते समय एवं पश्चात् या प्रसव के बाद गर्भिणी के कोष्ट उदर पर यही बांधी जाती है इससे बात प्रकोप नहीं होता है यह चौड़े वस्त्र से बांधी जाती हैं। क्रमशः

खर्पर और उसका उपयोग

(संयुक्त प्रांतीय ७ वैद्य सम्मेलन के विचारार्थ)

(पं० श्रीनिवास रामरत्न वैद्य शास्त्री पेथर प्रान्त उन्नाव)

खर्पर के विषय में अनेक बार विद्वानों द्वारा वाद विवाद शास्त्रार्थ, निर्णय तथा निबन्ध और लेख निकल चुके हैं किन्तु आज तक इस विषयमें कोई निश्चित या निर्भ्रान्त निर्णय नहीं हुआ कि वास्तवमें खर्पर अमुक वस्तु है अथवा खर्पर से अमुक वस्तु का ग्रहण होना चाहिये।

इधर कई वर्षों से नि० भा० आ० वैद्य सम्मेलन में भी इस विषय में विचार हो रहा है। आशा है कि निर्णय हो जायगा।

हम भी यथा शक्ति अपने विचार खर्पर के विषय में सद्वैद्योके सन्मुख सदाकी भांति प्रस्तुत करते है वैद्यगण पढ़ें तथा विचार करें और इसके विषय में अपनी २ सम्मति देने की कृपा करें!

खर्पर का उपयोग

प्रथम यह विचार करना है कि खर्पर का उपयोग किस समय से हुआ अथवा खर्पर का अभिधान किन २ प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों में है। और प्रथम इसका किस नाम से उपयोग होता था इत्यादि।

चरक सुश्रुत वाग्भट्ट संहिता ग्रन्थों में "अमृतासंग" नाम से इसका व्यवहार होता रहा है कहीं २ तुत्थ (कर्पूरिका तुत्थ) नाम से भी वर्णन मिलता है। यथा -

१- कुष्ठामृता संग कटंकटेरी कासीस कम्पिल्लक मुस्तरोध्राः ॥ चरक सूत्र अ० ४। २६

उपर्युक्त श्लोक की टीकामें श्री चक्रदत्त जी लिखते है "अमृतासंग" ॥तुत्थकम् देखो श्लो० ८॥

२ मुस्तामृता संग कटंकटेरी कासीस कम्पिल्लक कुष्ठरोध्राः। वाग्भट्ट चि० अ० १९। ६०५॥

वाग्भट्ट ने भी चरकोक्त पद्य को उलट फेर करके उद्धृत किया है "अमृतासंग" शब्द का उपयोग वाग्भट्ट और चरक का ज्यों का त्यों है।

३- श्यामकाश्वत्थनिचुल मूलं लाक्षास गैरिकम् सहेमश्चाभृता संग वासोमं जेतिवर्ण कृत्॥

चरक चि० अ० २५।५७५

इस पद्य में भी "अमृतासंग" शब्द का महर्षि चरक ने उपयोग किया है।

४—तिन्तिड्याकुवीजं "द्वैतुत्थे" रोचना हरिद्रेद्वे। चरक चि० अ० ७।४४६

उपर्युक्त पद्य में "द्वेतुत्थे" दो प्रकार के तूतिया का वर्णन है इसको टीका में श्री चक्रदत्त जी लिखते हैं।

तुत्थेति कर्परिका तुत्थम् इति।

५ ऊषकम्तुत्थकं हिंगु कासीसद्वय सैंधवम् सशिलाजतुकट्वक्षक्षारपञ्चकसंदंशः कक्षा पटम्॥

चक्रदत्त खंड अ० १९।२२६

अरुणदत्त जी ने इस पद्य की टीका में "तुत्थशब्द का अर्थ तुत्थकं कार्परिकाख्यं पाषाणम् किया है।

अब विचार करना है कि अमृतासंग और कर्परिका तुत्थ या कार्पर के पर्याय क्या क्या है निघन्टु में अमृतासंग शब्द से किस वस्तु का ग्रहण होता है।

६ ऊषक सैंधव शिला जतु कासीस द्वयहिंगूनि तुत्थकञ्चेति॥ सुश्रुत खंड अ० ३८।३१६।

इसकी टीका में श्री डल्हणाचार्य जी लिखते है।

तुत्थं कर्परिकातुत्थं (खपरिया इति लोके) अन्ये मयूरग्रीव माहुः देखो श्लोक३८

यहां श्री डल्हणाचार्य जी की स्पष्ट सम्मति है कि मैं ऊषकादि गण में तुत्थ शब्द से खपरिया लेना मानता हूँ किन्तु कोई नीला थोथा (मयूरग्रीव) का ग्रहण करते हैं यह किन्ही का मत है मेरा नहीं।

इससे स्पष्ट होता है कि (तुत्थकां द्विविधंप्रोक्तं मायूरं खार्परं तथा) दो प्रकार के तूतिया में यहां खार्परी तुत्थ का ग्रहण करना चाहिये।

७—तुत्थं खर्परिका तुत्थ ममृतासंग मेवच। धन्वन्तरि २७।१ मदनपाल नि० ६६

तुत्थ खर्परिका तुत्थ, और अमृतासंग यह खर्पर (खपरिया थोथा) के पर्याय है।

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है कि आज से लगभग २००० दो हजार वर्ष पूर्व खर्पर का अमृतासंग और तुत्थ, कार्पर (कर्परिका तुत्थ) आदि नामों से उपयोग होता रहा है उस समय खर्पर को तुत्थ भेद मानते थे।

यह तो हुई तुत्थ खर्पर के विषय की बात अब रस काल (नागार्जुन) से इधर की ओर दृष्टिपात कीजिये। अर्थात् रस खर्पर के विषय में विचार कीजिये।

खर्पर दो प्रकार का होता है १ जसद खर्पर २ तुत्थ खर्पर इसी से वैद्य संसार में इतना अन्धकार हो गया है। अच्छा अब रस रत्नसमुच्चय और धातु रत्नमाला आदि रस शास्त्र के ग्रन्थो के प्रमाणोंका संगत अर्थ करके विचार करिये।

८—खर्परं द्विविधं प्रोक्तं जसदं * सस्यकं तथा

(धातुरत्न माला)

* सस्यकं के स्थान में शुल्लक भी पाठ है शुल्लक से ताम्र का ग्रहण होता है लेखक।

९—रस को द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कार वेल्लकः। (रसरत्न समुच्चय २३

अर्थात् खर्पर दो प्रकार का होता है १ जसद खर्पर दूसरा तुत्थ भेद (खर्परी तुत्थ)।

प्रकारान्तर से=उसी को दर्दुर और कारवेल्लक नामसे सम्बोधित किया गया है

इन सब प्रमाणों द्वारा यह स्पष्ट सिद्ध हो गया कि खर्पर दो प्रकार का होता है? १ जसद खर्पर (दर्दुर) २ तुत्थ खर्पर (कारवेल्लक)

दर्दुर, कारवेल्लक शब्द पर विचार

प्रथम दर्दुर और कारवेल्लक शब्द पर विचार करना उचित है।

दर्दुर–मन्डूक (मेंढक) जैसा पीतवर्ण होने से दर्दुर नाम है।

कारवेल्ल (क)–करेला जैसा हरित और किंचित पीतवर्ण होने से कारवेल्लक नाम है।

प्रकारान्तर से–पीत वर्ण होने से जसद खर्पर का दर्दुर और तुत्थ विशिष्ट होने से हरित पीतवर्ण युक्त तुत्थ खर्पर का कारवेल्लक नाम है।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध होगया कि २ प्रकार के खर्पर होते हैं।

अब यहां विचार करना है वसन्तमालती आदि प्रयोगों में किस खर्पर का उपयोग करना चाहिये।

शास्त्र में खर्पर का व्यवहार

१०—रस को द्विविधः प्रोक्तो दर्दुरः कारवेल्लकः। सदलो दर्दुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः। सत्वपाते शुभः पूर्वो द्वितीय श्चौषधादिषु॥

(रसरत्न २३ रसकामधेनु रसार्णव)

अर्थात् दो प्रकार के खर्पर में दर्दुर (जसद खर्पर) परतदार होता है और कारवेल्लक (तुत्थ खर्पर) बिना परत (दल) का होता हैं और सत्वपातन (रसशास्त्र) (रसवाद) में जसद खर्पर का तथा औषध प्रयोग औषधवाद) में कारवेल्लक (तुत्थ खर्पर का उपयोग करना चाहिये।

चरक आदि संहिताओं में इसीलिये तुत्थ खर्पर वर्णन आया हैं रसशास्त्र में सत्व पातन के लिये और वसन्तमालती में उपयोग करने के लिये जसद खर्परका वर्णन आया है जैसा कि रस वाग्भट्ट ने भी लिखा है "सत्व पाते शुभः पूर्वो द्वितीयश्चौषधादिषु"।

जब यह सिद्ध हो गया कि जसद खर्पर का ही रसादिकों में व्यवहार करना चाहिये तब यह प्रश्न उठता है कि जसद खर्पर क्या वस्तु है और उसके अभाव में किस वस्तु का ग्रहण करना संगत है।

जसद खर्पर के पर्य्याय।

११– रसकं जसदं चौरं सीसका कार सस्यकम्। (रस कामधेनु)

खर्परो नेत्र रोगारिः रीतिकृत्ताम्र रँजनः।
रसको रसकं चैव मतं जसद कारणम्॥

(रसार्णव रसतरंगिणी)

जसद, चौर, सीसकाकार, रसक, खर्पर, नेत्र रोगारि, रीतिकृत्, ताम्र रंजक, रँजक, जसद कारण इत्यादि खर्पर के पर्य्याय है।

यहां जसद को खर्पर का पर्य्याय माना है और रीतिकृत् (पीतल बनाने वाला) तथा जसद कारण (जसदुत्पादक) और ताम्र-रंजक आदि पर्य्यायों से वर्णन किया हैं!

इन प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि खर्पर जसद या जसदोपधातु या जसद जिससे बना है उस वस्तु को कहते हैं। शास्त्र में कहीं कहीं जसद जिससे निकलता हैं उस मिट्टी को खर्पर कहा गया है यथा—

१२—मृदा खर्पर संज्ञा (रसरत्न २१८)

मृत्तिका रसकोवरः (रसार्णव)

मृत्तिका भिश्चपीताभः (रसतरंगिणी)

क्षिति किट्टो रसोद्भवम् (रसार्णव)

अब खर्पर के गुण धर्म और स्वरूप का विचार करना चाहिये। रस शास्त्रके अनेक ग्रन्थों में खर्पर का पीतवर्ण (दर्दुर) लिखा है कई आचार्य शोधनानन्तर उसका पीतवर्ण मानते हैं यथा—

१३—पारदष्टंक एकः स्याद्विपलं पीत खर्परम्। (आयुर्वेद प्रकाश)

सुद्धोदोष विनिर्मुक्त पीत वर्णस्तु जायते। (रसरत्न २३ रसार्णव)

मृत्तिका भिश्चपीताभः(रसतरंगिणी)

पीतस्तु मृत्तिकाकारः (रस दर्पण)

पीतस्तु मृत्तिका कारो मृत्तिका रसकोवरः। (रसार्णव)

यहां पीत वर्ण खर्परका स्वरूप लिखा है इतना ही नहीं वल्कि यह ताम्र पारदादि को पीतवर्ण बना देता है इसीसे खर्परका ताम्र-रंजक नाम ही हैं।

क्या खर्पर का सत्व जसद है।

रस शास्त्र कहता है कि खर्परका सत्व वंग सदृश होता है। यथा—

१४ वंगाभं पतितं सत्वं समादाय नियोजयेत्। (रसरत्न सम्मुच्चम २३)

सत्वं वंगाकृतिग्राह्यं रसकस्य मनोहरम्। (रसरत्नाकर)

तदासौ सोपमं सत्वँ पतत्येवन् संशयः। (रसप्रकाश सुधाकर)

इन प्रमाणों से खर्पर का सत्व वंग सदृश (जसद) सिद्ध होता है। शास्त्र में जसद शब्द के जो पर्य्याय है वह निम्न लिखिति है।

१५ यशदं वंग सदृशं रीति हेतुश्च तंमतम्। (भावप्रकाश)

वंग सदृश शब्दकोष में जसद के लिये ही आया है यह जसद का वाचक है देखो वैद्यक शब्द सिन्धु ६२७

सीसका कार (सीसोपम) शब्द भी खर्पर के वाचक है, देखो प्रमाण नं० ११

क्या इससे सिद्ध नहीं होगया कि जसद खर्पर का सत्व है। जसद कारण पर्य्याय ही इसके लिये पर्य्याप्त है देखो प्रमाण नं० ११,

जसद शब्द पर शास्त्रीय विचार।

उपर्युक्त सिद्धान्त स्थिर करने के लिये जसद शब्द के शास्त्रीय नामों पर विचार करना उचित है प्राचीन समय में जसद का उपयोग खर्पर के नाम से होता था?

१६—कर्णाटक, तैलंग, और काठियावाड़में आज भी जसद को खर्पर कहा जाता है।

तैलंग में जसद का खर्पर नाम से तथा काठियावाड़ में खारी पारी नाम से व्यवहार होता है खारी पारी शब्द खर्पर का अपभ्रंश है।

अरबीमें जसदको रूमीतूतिया कहते हैं।

शास्त्र में जसद के—जसद, यशद, वंग-सदृश, रीतिहेतु, पर्य्याय, हैं। और खर्पर के जसद कारण, जसद, रीतिकृत् ताम्ररंजक, आदि पर्य्याय हैं!

अब आप विचारकी कसौटी पर रखकर देखिये कि अक्षरशः दोनों प्रकारके शब्दोंका एक ही अर्थ होता है या नहीं। हम क्रमशः दोनों शब्दोंकी तालिका नीचे उद्धृत करते है।

खर्पर या खर्पर सत्व —जसद

रीतिकृत —रीतिहेतु

जसद कारण—जसद

वंगाभ
वंगाकृति
सीसकाकार
} वंग सदृश

अब उपरोक्त शब्दों पर शास्त्रीय विचार करके देखिये अक्षरशः समानार्थक हैं इसी लिये खर्पर का जसदकारण और उसके सत्व का वंगाभ (वंग सदृश जसद) नाम करण किया गया है।

खर्पर सत्व और जसद के गुण।

खर्पर के सत्व और जसद के गुणों में भी सादृश्यता है यथा—

१७—रसञ्चो रंजको रूक्षो वातकृच्छ्लेष्म नाशनः। त्रिदोषघ्नंच तत्सत्वं नेत्ररोग विनाशनम्॥ (रसकामधेनु)

१८—यशदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफ पित्त हृत्। चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासंच नाशयेत्॥

(रसराज सुन्दर भावप्रकाश)

इन सब प्रमाणों से सिद्ध हो गया कि जसद खर्पर का सत्व ही है।

खर्पर का एक अन्य गुण यह भी है कि अग्नि पर स्थिर नहीं रहता और शीघ्र गल कर भस्म होजाता है यथा—

१९—अस्थिरोग्नि गतोरूर्ध्व दहते क्षण मात्रतः। (रसराज सुन्दर १८)

आप जसदको अग्नि पर रखकर देखिये क्षण मात्र में गलकर भस्म होजायगा।

यदि पूछा जाय कि वंग के सदृश या सीसकाकार वस्तु कौनसी है तो सार्वमुख उत्तर मिलेगा—जसद

जसद और वंग का मिलान करिये समस्त आकार प्रकार सदृश मिलेंगे। तभी तो आचार्यों ने उसका 'यशदं, 'वंग सदृशं, नाम से उपयोग किया है।

खर्पर जसदके शोधन मारणमें साम्यता

२१—जसदं गालयेत्पूर्व दुग्धमध्येत् ढालयेत्। एक विंशति वारांश्च खर्परं शुद्धि माप्नुयात्॥ (रसराज सुन्दर १८)

२०—जसदस्य चतुर्थांश पारदं गंधकं प्रिये। मर्दयेत्खल्वके सम्यक्कन्या निर्गुरसैः पृथक्। लेपयेत्तेन पत्राणि गजा हे

पाचयेत्पुटे। एक मेवपुटे नैव भस्मी भवति खर्परम्। (रसराज ६८)

उपरोक्त पद्यों में खर्पर और जसद दोनों शब्दों का साथ २ पर्य्याय रूपमें नाम आया है 'भस्मी भवति खर्पर के स्थान में भस्म साज्जासदं भवेत् भी पाठान्तर है जो खर्पर का ही अभिधायक है

खरपर और जसद के गुण

खर्पर और जसद के गुणों में भी सादृश्यता है लीजिये मिलान करिये।

२१–रसकः सर्वमेदघ्नः कफपित्त विनाशनः।
नेत्ररोग क्षयघ्नश्च लोह पारद रंजनः॥
(रसरत्न स० २३ रसकामधेनु)

२३–यशदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत्।
चक्षुष्यं परमंमेहान् पाण्डु श्वासंचनाशयेत्
(भावप्रकाश रसराज ६८)

नेत्ररोगेषु सर्वेषु भस्मीभूत मिदं शुभम्।
गुंजा द्वयंतु जसदं सर्व रोगान् व्यपोहति॥
(रसराज सुन्दर ६८)

२४–खर्परं पत्रकं कृत्वा लवणोन्तर्गतपचेत्।
जायते शोभनं भस्म 'सर्वरोगापहंस्मृतम्॥
(रसराज सुन्दर ६८)

उपरोक्त गुणों में बहुत साम्यता है। अक्षरशः मिलान कीजिये और शास्त्रोक्त 'गुञ्जाद्वयंतु जसदं सर्व रोगानव्यपोहति तथा सर्व रोगापदंस्मृतं' पर भी एक दृष्टि डालिये।

क्या अब स्पष्ट सिद्ध नहीं हो गया कि खर्पर और जसद दोनों एक ही वस्तु हैं।

१–कोई कोई सज्जन शंका करेंगे कि यदि खर्पर जसद ही है तो उसमें ताम्र आदि को पीत बना देने की शक्ति होनी चाहिये। और –

२–रसशास्त्रोक्त 'रसश्च रसकश्चोभौयेनाग्नि सहनौ कृतौ। आदि अग्नि में स्थिर न रहना स्वभाव या गुण होना चाहिये।

इन शंकाओं का समाधान निम्न लिखित प्रमाणों से संगत हो जाता है।

१–ताम्र आदिको स्वर्ण जैसा पीत बना देने की शक्ति जसद में विद्यमान है। पीतल ताम्र और जसद के मेल से बनना ही इस का पर्याप्त प्रमाण है।

रीतिकृत् या रीतिहेतु जसद का नाम इस बात का स्पष्ट द्योतक है।

(देखो प्रमाण नं० ११

२—खर्पर अग्नि स्थायी नहीं होता है यह बात जरा विचार से समझमें आनेवाली है जिसके लिये प्रमाण नं० १६ देख लेनेसे अर्थ संगत हो जायगा यथा—

अस्थिरोऽग्नि गतोत्यर्थं दह्यतेक्षणः मात्रतः।
(रसराज प्रमाण नं० १६)

अर्थात् खर्पर अग्निमें देर तक स्थिर नहीं रह सकता वह शीघ्र ही गल कर जल जाता है या उसकी शीघ्र ही भस्म बन जाती है।

यह बात जसद में सर्वांशतः ठीक है ही इसमें किसी को सन्देह नहीं है प्रत्यक्ष में हठ करना विद्वता के प्रतिकूल है।

२५—तेन स्वर्णमयी सिद्धिरर्जितानात्र शंसयः ॥ १ ॥ देह लोहमयीसिद्धिर्दासी तस्य नशंसयुः ॥ २ ॥

रही इन उपरोक्त बातों की शंका वह खर्पर द्वारा कायाकल्प या स्वर्ण सिद्धि प्रकरण के विषय की है। जो कलिकाल में दुस्तर कार्य या अप्रत्यक्ष है। ग्रन्थोंमें काया कल्प और स्वर्ण सिद्धि के अनेक प्रयोग हैं किन्तु सिद्धि नहीं होते हैं यदि कोई उक्त दोनों क्रियाओंको सिद्ध करके दिखा सकता हो तो खर्पर से स्वर्ण सिद्धि हो सकती है अन्यथा वकवाद मात्र है।

हमारे लिये प्रमाण नं० १६ के अनुकूल इसका क्षणमात्र में भस्म हो जाना ही अर्थ ठीक है। हमें रसेन्द्रसार संग्रहोक्त विधि द्वारा इन पद्योंका भस्म विधायक अर्थ कर के संगती लगाना चाहिये। यथा

२७—खर्परं पादेनैव वालुका यन्त्रगं पचेत्। चूर्णयित्वा दिनं यावच्छोभनं भस्म जायते। नेत्र रोगहरः क्षेदी क्षयहा खर्परो गुरुः ॥ रसेन्द्र ४५

अब इन प्रमाणों द्वारा भली भाँति सिद्ध हो गया कि जसद खर्पर ही है खर्पर के सत्व को ही जसद कहा गया है और खर्पर शब्द से जसद का व्यवहार करना शास्त्र संगत है इसमें सन्देह नहीं।

शास्त्रारण्यं महज्जालं बुद्धि विभ्रम कारणम्। श्री शंकराचार्य जी की इस उक्ति का लक्ष्य रखते हुये शास्त्री प्रमाणोंका संगत अर्थ करके विचार करिये तो निश्चय हो जायगा। कि अवश्य ही जसद खर्पर है।

यह विचार हमारा स्वतन्त्र नहीं शास्त्रीय है इसे हम सद्वैद्यों तथा सप्तम संयुक्त प्रांतीय वैद्य सम्मेलन के सम्मुख रखते हैं। वैद्यगण अपनी २ सम्मतियां देकर जैसा निर्णय करें।

सम्पादक महोदय जी से यह प्रार्थना है कि वे इसे शीघ्र प्रकाशित कर वैद्य सम्मेलन आगरा के सन्मुख प्रस्तुत कर हमें अनुग्रहीत करें।

भवदीय अनुग्रहीत
श्रीनिवास वैद्य शास्त्री
बेथर जिला उन्नाव।

व्यायम (मासिक पत्र)

—०००००—

कुस्ती, लाठी, वगैरः व्यायामों की सचित्र सहायता देने वाला हिन्दी मासिक है। वार्षिक मूल्य २॥) रु०० है।

पता—व्यायाम कार्यालय, रावपुरा, बड़ौदा।

वनस्पति विज्ञान

मदार।

(लेखक कुंवर रन्धीरसिंह वर्मा वैद्य वाघौरा गवालियर राज्य)



सको संस्कृत में श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, हिन्दी में, आक, सफेद आक, अकौआ मदार, लालआक, सफेदआक, आदि। वंगला में आकन्द, श्वेताकन्द, फारसी में खुर्क, दुध, मरहठी में रुई, पाढ़रीरुई, गुजराती में आकडो, भीलों आकड़ों आदि अनेक नाम है।

आक की पहिचान

इसका वृक्ष छोटा और छत्तादार होता है। पत्ते बरगद के समान पर कुछ मोटे होते हैं। हर सफेदी लिये पत्ते पकने पर पीले हो जाते है इसकी दो किस्में है १ सफेद फूलवाला २ पिन्तई फूल वाला, इनमें सफेद फूलवाला बढ़ियाहोताहै परन्तु प्रायः कम मिलता है। इसके फूल सप्त छोटे छत्तीदार होते है। फल आम केतुल्य होते है।

आक का उत्पति स्थान

यह गरमी के दिनो में रेतीली भूमि पर होता हैं। और खेतोंकी मेंड़ों पर बहुत पाया जाता है प्रायः समस्त भारतवर्ष में मिलता है चौमासे में पानी बरसने की वजह से सूख जाता है।

आक के गुण

उष्ण हैं प्लीहा, वात, कुष्ठ, खुजाल, व्रण, गुल्म, अर्श, कफ, कृमि, उदर पीड़ा, आदि रोगों में हितकारी है इसके सब अङ्ग औषधियों के काम आते है।

आक का रोगों पर प्रयोग

१ - शीत ज्वर नाशक। आक की जड़ २ तोला, काली मिर्च १ तोला दोनों पीस कूट कपड़ छन कर बकरी के दूध में घोंटे फिर झरबेरी के मानिन्द गोली बनावे सवेरे ताजे पानी से १ गोली खाय तो ४-५ रोज में शीतज्वर जाय।

२--विशूचिका पर प्रयोग। आक की जड़ की छाल २ तोला काली मिर्च २ तोला पीस कूट कपड़ छन करके अदरख के रसमें घोटे। फिर १ रत्ती की गोलियां बनावे इन गोलियों से हैजे में बड़ा लाभ होता है दिनमें ५-६ गोलियां खिलावे।

३--खुजली नाशक योग। आक की जड़ की राख में कड़ुआ तेल मिलाकर लगाने से खुजली नास होती है।

४--उपदंश पर योग। आककी लकड़ी की राख में बराबर मिश्री मिलाकर ॥) भर सुबह ॥) भर शाम को खाने से उपदंश रोग नाश होता है।

५--नहरुआ पर योग। आक की जड़ दूध में औटावे फिर उस दूधका घी निकाले इस घी के खानेसे नहरुआ रोग अच्छा होता है।

६--खून के रोकने में। आक की रुई खून बहते स्थान में लगाने से खून रुक जाता है।

७- पाचक गोली। आक की मुंह मुंदी कली पाव भर काली मिर्च १ तोला सेंधा नमक १ तोला तीनो महीन पीसे फिर झरबेरी के मानिन्द गोली बनावे इसको सुबह शाम खाने से अजीर्ण अफरा जाय।

८ आक की जड़ पानी में घिस कर लगाने से नाखूना रोग जाता है।

९--चोट की सूजन पर योग। आक की जड़ की छाल को पीसकर घी में भूने फिर चोटकी सूजन पर बांधे तो सूजन दूरहो

१०--अधासी पर योग। आक के पीले पत्तों पर घी चुपड़ सेंककर अर्क निचोड़े इस अर्क को कान में डाले तो अधासी जाय।

सिर्फ राकेश के ग्राहकों को ५) रु० का यंत्र २) में

और डाक खर्च माफ

१--वीर्य बंधक यंत्र इससे वीर्य का गिरना बंद होजाता है मूल्य २) रुपया

२--जिन स्त्रियों की सन्तति नष्ट होजाती हो व गर्भ गिर जाता हो वे इसे धारण करें तो फिर कदापि ही नहीं कोई शिकायत होसकती आधा मूल्य ३) रुपया सिर्फ ग्राहकों को ही डांक खर्च माफ।

३--जिस स्त्री के कन्यायें ही कन्यायें होती हों वे इसे धारण करें तो पुत्र होवे आधा मूल्य १॥) रुपया

नोट--जो पहिले मनियार्डर द्वारा दाम भेज देंगे उन्हीं को आधे मूल्य में व डांक खर्च माफ किया जायगा अन्यों को नहीं।

पांच ग्राहक बनाने वाले को एक यंत्र बिलकुल ही मुफ्त दिया जायगा चाहे कोई यंत्र मंगवाले।

पता--दुर्गाप्रसाद जी वैद्य रनेह
पो० हटा जिला दमोह

अनुभव सार

(१) बाल पुष्टिकारक अवलेह—उत्तम बना हुआ च्यवन प्राश ४ तो० शिलोपलादि चूर्ण १ तोला मगज बादाम पीसा हुआ ४ तोला मुलहठी चूर्ण ६ मासा केशर १॥ मासा वर्क सोना नग ५ वर्क चांदी नग १० असली मधु ५ तोला सबको एक में मिलाकर बड़े मुंह की शीशी में रखदे।

मात्रा—एक माशा से ३ माशा तक गाय बकरी के दूध में मिलाकर खिलावे अथवा यों ही चटा दें।

निरोग या रोगी बालक सभी इस अवलेह को खा सकते हैं। शरीर का दुबलापन पोलापन खांसी, श्वांस हिचकी, वमन, पिपासा, पित्त विकार, दाहादिक, भ्रम, मूर्छादि रोग, शीघ्र दूर होते हैं। यह अवलेह लड़के को हृष्ट पुष्ट बनाता है।

(२) अर्शामृत क्षार योग—पलाश, अपामार्ग, केला, तिक्त जीवन्ति (डोड़ा) को भस्म प्रत्येक एक भाग शूरण भस्म ४ भाग इन सबको एक रात्रि पानीमें भिगोकर मंदाग्नि से क्षार तैयार करलो। बस एक माशा प्रातः छोटी मूलीके स्वरसमें डालकर रात्रि को भी उसी प्रकार एक छटांक छोटी मूली की जड़के स्वरसमें डाल पीना। इससे सब प्रकार की खूनी बादी आदि बवासीर शर्तिया हमेशाके लिये निर्मूल नष्ट होजाया करती है।

नोट—उपरोक्त अर्शामृत क्षार मूली की जड़ के स्वरस के साथ ही खाना चाहिये।

३—रजावरोध पर इन्द्रायन की जड़। तोला कालेतिल १० तोला जव कुटकर ४ सेर पानी मे अच्छी प्रकार मंदाग्नि से चतुर्थांश क्वाथकर छानले कराहीमें डालकर चूल्हेपर चढ़ाय नीचे मन्दाग्नि दे और उस क्वाथ में आधा सेर देशी कच्ची खांड़ और आधासेर पुराना साफगुड़ मिलाय पकावे जब हलुआ के समान अवलेह हो जावे तब उतार रख सेवन कराने से स्त्री ऋतुमती होती है तथा पेट में कतरन, बेचैनी, पेडू, जांघ सारे बदन में दर्द ऐंठन, भूख का कतई न लगना, खाने पर अरुचि देह में सुस्ती रहना तथा योनि में खुजली होना आदि उपद्रव शान्त होते है मात्रा २ तोला प्रातः २ तोला शाम नित्य।

(४) प्रदरान्तक लोह—लोहा, तांबा, बर्की हरताल, वंग, अभ्रक, पीत कौड़ी, इन सभों की उत्तम भस्में—

सोंठ, पीपर लघु, मिर्च स्याह, हर्र, बहेरा आंवला यह तीनों बीजरहित, चीताचूर्ण, चव्य चूर्ण, वच दुधिया, कूट, कचूर, पाढ़

देवदारु गुजरातो दाना और त्रिधारा यह सब बराबर २ ले कूट पीस जल में खरल करके पांच २ रत्ती की गोलियां बनाले। मात्रा सुबह शाम १-१ तोला मिश्री १ मासे के साथ पीस गाय का ताजा घी २ माशा मधु ३ माशा में सम्मिलित कर सेवन करने से सर्व प्रकार का प्रदर, घोररक्त मात्र, पसबाडे, कमर, योनि और सर्व देह के शूल नष्ट होजाते है पुष्टकारक भी है।

(५) संखिया तैल—(सोडा) सज्जी साफ ४ तोला संखिया चूर्ण ८ तोला दोनों को कराहीमें धर २४ तोला जल मिला दे, मंद मंद आंच दे पकावे जब तोले भर जल शेष रहे तब उतारले जब पानी सूख जाय तब तैलको शीशीमें रखले। ५ तोला सरसों के तैल में १ तोला संखिया का तेल डाल कर दर्द स्थान में मलदे और ऊपर से रेड़ी के पत्ते गर्म करके बांध दे और ऊट की या बकरी की मेंगनी की आगसे सेंकदे दर्द दूर होजायगा।

सांप काटे पर—सांप दंश स्थान पर लगा देने से विष का जोर निकल जाता है।

रामप्रसाद अध्यापक वैद्य
जहांगीरपुर
पो० सहावर जिला एटा
यू० पी

(६) अगद योग—प्रिय पाठक गण समय सन्निकट है अतः परीक्षा कर अगले राकेश में गुणागुण प्रकाशित करें?

आम का बौर 'बसंत पन्चमीके दिन जो इस वर्ष ता० ३ फरबरी को आरही है, तोड़ कर उसका स्वरस हाथोमें खूबमल लीजिये पश्चात् बिच्छू भिड़ आदि विषाक्त जानवरों के काटे पर हाथ फेरिये जहर जाता रहेगा यह शक्ति हाथों में १ वर्ष तक कायम रहेगी हमारी राय तो यह है कि जभी बौर मिले तभी लेकर मल ले उक्त विषनाशक शक्ति उत्पन्न होगी।

आपका
आ० डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
गोतौंना

७—उपदंश गर्मी नाशक बत्ती—उपदंश गरमी यह एक बड़ा ही खराब रोग है जो कि इस दुनियां में बहुत ही संख्या में स्त्री या पुरुषों को अधिक देखने में आता है यह रोग ज्यादा कर व्यभिचारी पुरुषों को अत्यन्त ही देखने में आता है क्योंकि यह एक दूसरे से लगने वाला भी है वा अनेक ग्रन्थों में भी इसके बहुत कारण लिखे हैं और इसके लक्षण सब ही पुरुष जानते हैं इसलिये लेख बढ़ जाने के भय से लक्षण आदि ना लिख कर एक बत्तीका बहुत ही चमत्कारी प्रयोग जो कि बड़ी ही कोशिश से वा मेहनत करने पर मुझे अपने एक रिस्तेदार से प्राप्त हुआ है वही योग आज राकेश के नये वर्ष की

खुशी मैं भेजता हूं यह योग किसी गुणी मनुष्य का है जिसका उसके पास इसी योग का इतना चमत्कार था कि उसके पास इस गरमी वाले स्त्री पुरुष अनेक देश वा गांवों के आते थे इस रोग का कैसा ही असाध्य रोगी क्यों न हो व बिलकुल ही क्यों न सड़ गया हो वह इसी बत्ती द्वारा आरोग्य करता था जब कि ऐसा चमत्कार लोगों ने देखा तो कई लोग उसके पीछे पड़ बहुत सा लोभ दिखा २ कर इस योग को पूछने में बहुत प्रयत्न किये मगर उसने किसी को भी नहीं बताया अतएव इसी ही लोभ के वश मेरे एक रिस्तेदार ने उसका संग किया जब दोनों का बहुत प्रेम बढ़ा तब उन्होंने उससे यही योग पूछा किन्तु उसने बहुत छिपाया पर प्रेम वश व द्रव्य धन आदि के संकोचसे बतला दिया वही योग मैंने रिस्तेदार से प्राप्त किया था वही योग मुझे आज बतानेमें संकोच होता था पर आयुर्वेद की दशा देख वा मैनेजर साहब के लिखने पर राकेश के नये वर्षकी खुशी में भेजा जाता है इस बत्ती से केवल गर्मी ही नहीं किन्तु अनेक रोगों पर जुदे २ अनुपान से जादू कासा असर करती है जिसका कुछ ब्योरा आगे लिखे देते हैं कि जिनको पाठकगण अत्यन्त शीघ्र ही आजमा कर मुझे गुणा गुण से राकेश द्वारा शीघ्र ही सूचित करेंगे कि जिसमें आगे को और भी गुप्त प्रयोग भेजने को तत्पर रहूँ यदि पाठकों ने इसे अपनाया और गुणां गुण से सूचित किया तो मैं भी अपने परिश्रम को सफल समझूंगा और आगे को ऐसे ऐसे २ जड़ीके गुप्त योग भेजूंगा कि जिनका चमत्कार व प्रभाव देख पाठकगण धन और यश के भागी बनेंगे (सिर्फ राकेश के लिये ही गर्मी नाशक बत्ती) योग—आमलासार गंधक १) रु० भर कलमी शोरा पाव पैसा भर हरिया थोथा पाव पैसा भर शुद्ध पारा एक आना भर इन चार चीजों को इसी हिसाब से बांट डारे कजली सी हो जाने पर कते हुये कोरे सूत की चार अङ्गुल लम्बी अंगुली बराबर जबर भांज कर सात बत्ती बनावें फिर आधी छटांक गायके घी में उपरोक्त कजली मिला दे और उन सातों बत्तियों को उस घीमें मीड़े जिसमें कि उन बत्तियों में घी प्रवेश हो जावे फिर एक कोरा दिया लेवे और पक्की छैः ईंटें लेवे दो ईंटपर रोगी बैठे और तीन ईंट का चूल्हा बनावे उस पर रोगी पांव रक्खे बतौर झाड़े के बैठे बिलकुल निहङ्ग होकर बैठे और ऊपर से दोहर मुंह से ओढ़े सिर्फ आंखें भर निकाले रहे फिर उस दिया को चूल्हे में रक्खे और उसमें और घी डाल देवे और दिया लेश देवे दिया लिंग से बिलस्त भर दूर रक्खे बस एक घन्टा इस बत्ती से तपावे अगर घी निवट जावे तो और घी डाल देवे। एक घंटा तक दिया न बुझे और एक लत्ता से सिर बांध देवे जिसमें कि हवा का डर न रहे खूब पसीना आवेगा इसे कोई बिलकुल न पोछे अगर प्यास लगे तो गेहूँ की सूखी रोनी रोंटी का टुकड़ा खाकर पानी पिये चार दिन तो दोनों जोर सन्ध्या सवेरे लगावे बलाबल रोगी को देखकर बत्तीको लगावे

बस सात दिन बत्ती लगावे एक घन्टा बत्ती के बाद खाट पर पार देवे उघारो न होवे आधी रात तक खूब पसीना जावेगा इसे बिलकुल न पोंछे बहने दे जितना पसीना निकलेगा उतना ही फायदे बन्द है और पन्द्रह दिन तक बिलकुल ना नहावे और पन्द्राह दिन तक दूध रोटी दूध कुदई दूध भात खावे और चीज नहीं खावे पन्द्रहवें दिन सर्द पानी से सपरे अगर मुंह में छाले हों तो ये गोली बनावे—

माजूफल १ जिस्से दूना खैर १ रत्ती कपूर इनको बांटकर एक रत्ती की गोली बनावें दो बूंद पानी के डारकर बाद मुंहमें गोली डाले मुरावे नहीं लार थूंकत जावे यदि लार भीतर चली जाय तो कुछ हरज नहीं जहां तक मुंह ना मिटे तहां तक गोली डाले रहे अगर ओठों पर पिरकियां हों तो तो इसी की घुरकी दे अगर जो लिंग पर छाले हों तो उसपर न तो पानी पड़े न दवाई लगावे अगर जो चरांने लग जावे तो रोटी के साथ में घी खाने जावे लगावे कुछ नहीं अगर ऊपर के बदन के छाले या बदुआ के छाले हों तो माजूफल खैर छिपनी बारके पीस डाले और गाय के आधी छटांक घी में कांसे की थाली में पानी से २० बार धोवे जब घी धुल चुके तब इसमें तीनों चीजें मिलावे और छालों पर लगावे तो इस दवा से अपरस गर्मी के छाले इस दवा से बिलकुल नहीं बच सकते। अपरस में भी यही घी लगावे पहिले तो बिमले से लगेंगे फिर बिलकुल उदर जाते हैं इस बत्ती से गर्मी या सुजाक या परमेह कि जिसके लिंग से पीव गिरती हो या पीव की सिल अड़ने से पेशाब बन्द हो जाती है और लिंग सूजकर बहुत बड़ा हो जावे तो इस बत्ती के लगाने से पन्द्रह दिन में नष्ट हो जाती है या घाव सूख जाते हैं अगर गरमी सब शरीर में होकर सड़ जावे तो भी आराम हो जाती है यह प्रत्यक्ष की देखी हुई या की हुई है। दूसरा रोग जो नकसूर होता है जिससे नाक से खून गिरता है और सिर मुंह सूज जाता है और कीड़े होकर गिरने लगते हैं तो पारे को छोड़कर इसी बत्तीसे तपावे तो नकसूर नष्ट हो अगर कीरा गिरने लगें तो बोबई का रंग सुरका देवे तो कीरा निकल जावेंगे बाकी जो भीतर रहेंगे वे बत्ती से सूख जावेंगे और इसमें छीकें अधिक आती हैं अगर पेशाब बन्द हो जावे तो कपूर को ले कर पानी में गारके लिंगके छिद्र पर और टुड़ी पर लगावे तो फौरन पेशाब उतरे कैसी ही हो अगर छोटे बालक की पेशाब बन्द हो तो ये दवाई लिंग या टुड़ी पर लगावे और वहीं बत्ती खाट पर पार कर नीचे से लगावे तो फौरन पेशाब छूटे और भी कई रोगों पर यह बत्ती अपना जादू का सा प्रभाव दिखाती है इसलिये लेख बढ़ जाने से इतना ही लिखकर लेख पूरा करता हूं इसका गुणागुण निकलने पर आगामी अंकमें और भी जाहिर करेंगे या जिन २ रोगों पर और चलती है वह और लिखेंगे

जिस रोग में पसीना लानेकी जरूरत हो उसी रोग में इस बत्ती को लगा दीजिये फौरन ही पसीना निकल कर रोग शांत हो जावेगा।

नोट— जो बात यदि इसकी समझमें न आवे तो जवाबी पत्र डाल लेखक से पूंछ लें निशंकोच ही बतला दिया जावेगा।

(८) खूनी दस्त बन्द करने पर गोली अतीस ईशवगोल वंशलोचन जायफर बेर की बिजी बिनोराकी बिजो अफीम इनकी गोली बना महानीम के रंग में वा मेपरमें चटावेतो खूनी दस्त आना बन्द हो।

(९) निनवां की दवा

वर्र का छत्ता घोड़ा का नख दोनों की भस्म बना लेवे और अलसी के तेल में ये भस्में मिला दे और थोड़ा हरिया थोथा भी डालकर मथ ले जिसके निनवां हो उस जगह को पहिले धो डाले फिर पको इमली को पानी में मींड़ कर पने माफक बना लगा दे जिसमें सब कीड़े ऊपर आकर वाफे वगेरा निकल जांय बाद धोकर उपरोक्त मथी हुई दवा लगा दे तो कैसे ही निनवां हों जो किसी भी दवा से ना मिटते हों वो इसी हो दवा द्वारा आराम होते हैं।

नोट—एक ही बार दवा निनवा पर लगाने से घाव पूर कर पपड़ी पीछे उतर कर निकलती है आजमा कर गुणा गुण से सूचित कीजिये ताकि आगे को प्रयोग भेजने में उत्साह बढ़े।

(१०) हाथ पांव शिर शरीर कपनेकी दवा

इन्द्रायण की जड़ तीन छटांक तेल एक पाव दोनों को विध सहित चुरवे जब औषधि जल जाय तेल भर रहे तब उतार कर छान लेय यह तेल १। पैसे भर पिये और शरीरमें लगावे तो हाथ पांव वा शिर शरीर का कपना बन्द हो।

आपका आरोग्याकांक्षी—

दुरगाप्रसाद मिश्र वैद्य रनेह

पो० हटा जिला दमोह

जय मङ्गल रस

वैसे तो यह शास्त्रोक्त औषधि समस्त ज्वरों पर हमारे पूर्वज ऋषियों द्वारा अनुभूत सिद्ध हो ही चुकी है फिर भी हमने अनुभव काल में इस अमूल्य औषधि को सब ज्वरों में चाहे वह किसी दोष से उत्पन्न ही क्यों न हों दूर करने की अद्भुत शक्ति पाई है तिस पर भी विशेषता यह है कि ज्वर काल में प्राप्त हुई कमजोरों इसके सेवन से नहीं बढ़ने पाती है कारण कि यह स्वर्ण व रौप्य मिश्रित औषधि है। कीमत १ तोला ८) रु० डाक खर्च अलग।

मँगाने का पता—श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

वरालोकपुर इटावा यू० पी०

वैद्यवरों के उत्तर

(उत्तर प्र० नं० १७ वर्ष २ अंक ३)

महाशय जी हमारे अनुमान में यह अभी मिरगी रोग नहीं हैं परन्तु मृगी रोग हो जाने का नोटिस है यदि इसकी अभी से पूर्णतया चिकित्सा न की जावेगी तो अवश्य मिरगी रोग हो जावेगा।

कृपया निम्न प्रकार से चिकित्सा करें अवश्य लाभ होगा।

बालक को कभी कब्ज न होने दें तथा खान पान में कोई भी उष्ण रूक्ष, वायुकारक तथा गरिष्ट वस्तु न आने दें इसका सबसे प्रथम ध्यान रखना अति आवश्यक है। हमारे अनुमान में उस बालक को मलावरोध जरूर होगा और ज्वर भी इसको बगैर कब्जी के नहीं होता होगा इसलिये उपरोक्त बातों का ध्यान रखा जावे।

१–प्रयोग मुलहटी, मुनक्का, अतीस, गिलोय, पीपल छोटी, धायके फूल, काकड़ा सिंगी, हलदी, दारहलदी मिर्चकाली, सोंठ चोते की छाल, त्रिफला, नीमके पत्ते प्रत्येक एक २ छटांक लेकर जव कूट करके ४ सेर पानी में २ दिन भिगोदें उसके बाद भवका में अर्क खींच उस अर्क में ५ तोले चूना (कलई) डाल १ दिन रखा रहने दे फिर निंतार लें और जो नीचे तलछन रहे उसे फेंक दे और उस निंतरे हुए अर्क में १ सेर मिश्री देशी डालकर चासनी शर्बत की बना ले ठंडी होनेपर बोतलों में भर कर रख दें।

यह उस बालक को ७ माशे प्रातः और ७ सायं आध औंस (सवा तोले) गिलोय के अर्क में मिलाकर पिला दिया करें।

यदि आप इस शर्बत का ही सेवन रखेंगे और उपरोक्त बातों का ध्यान रखेंगे तो शायद है कि उस बालक को कोई भी शिकायत न होगी।

२–ज्वर होते ही संजीवनी बटी थोड़े कुमारी स्वरस के साथ दें।

संजीवनी बटी=वायविडंग, सोंठ, हरड की वकली, आंवला बहेड़े की वकली दुग्ध वच, गिलोय, शुद्ध भिलावा, मिरच काली शुद्ध मीठा तेलिया, चौंसठ पहरी पीपल शुद्ध गंधक, शुद्ध सुहागा प्रत्येक एक २ तोला लेकर गोमूत्र में खरल करके एक २ रत्ती प्रमाण गोली बना ले।

३– बेहोशी अथवा ऐंठन होने पर कुमार कल्याण रस अद्रक स्वरस के साथ दें।

कुमार कल्याण रस–रस सिंदूर, मोती भस्म, स्वर्णभस्म, सहस्रपुटी अभ्रक भस्म लोहभस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म, समान भाग लेकर ग्वार पाठे के रस में घोटकर मूंग प्रमाण गोली बनाले।

उ० प्र० नं० २० व० २ अं० ३—आप अपने मित्र को निम्न प्रयोग सेवन करावें अति शीघ्र लाभकारी है तथा परिक्षित है ॥ कारवल्ली फलं सर्ज - जल शूक समायुतम् वृहतीफल तोयेन लेपः शिश्न विवर्धये ॥

करेले का फल, राल, सिवार कोवड़ी कटहली फल के स्वरस में मर्दन कर इन्द्री पर लेप करावें।

और वीर्य वन्धु चूर्ण मात्रा में छः माशे प्रातः सायं मिश्री युक्त गो दुग्ध के साथ सेवन करावें।

वीर्य वन्धु चूर्ण—वंशलोचन, छोटी इलायची बीज, सालब मिश्री पंजेकी असली भूसी इस्वगोल, मस्तगी रूमी दारचीनी, कवाबची, विदारीकंद, बहमन सफेद, गाजवां, ढाकका गोंद, सतवहरोजा असली, बीजबन्द, सत गिलोह, इमलोकी मींग, ताल मखाना, सेंभल का गोंद मोचरस, तोदरी श्वेत, सत शिलाजीत असली प्रत्येक छः २ माशे अक्सीर नुकरा जिसके बनानेकी विधि नीचे दी जावेगी दो तोला, अक्सीर नुकरा के सिवाय सब औषधियों को कूट कपड़ छान करलें फिर उसमें अक्सीर नुकरा और १० तोले मिश्री देशी मिला दें।

अक्सीर नुकरा—चांदी के वर्क ६ माशे, कहरवासमई, मोतीकी सीप, मूंगेकी शाख, मूंगे को जड़ प्रत्येक चार २ माशे बंगेश्वर (हरताल योग द्वारा जारित] छः माशे इन सब औषधियों को खरल में डाल कर खूब घोटें जब बारीक पिस जावे तो तीन तोले अर्क केवड़ा, तीन तोले अर्क गुलाब डाल कर घोटते रहें जब घोटते २ बिलकुल सूख जावे तो निकाल कर रख लें बस अक्सीर नुकरा तय्यार है।

नोट—यदि कोई औषधि आप तय्यार न कर सकें तो हमारे कार्यालय से मंगालें।

उ० प्र० नं० २१ वर्ष २ अङ्क ३—आप उस रोगी को निम्न प्रयोग कम से कम ४० दिन सेवन करा दें, सब शिकायतें अवश्य दूर हो जावेंगी।

प्रयोग—त्रिफला, गिलोयहरी, अडूसे के पत्ते, कुटकी, चरायता, नीम की छाल पांच पांच माशे लेकर आध सेर पानी में क्वाथ करें आध पाव रहने पर मल छानकर एक तोला शहद मिलाकर मंडूर भस्म १ तोला १ माशे शहद में मिला खिला कर ऊपर से पिला दें। प्रातः सायं इसी प्रकार दें।

आरोग्य कांक्षी
डा० इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य।

उत्तर प्र० नं० २२

१—नीम के बीज की गूदी, अमलतास के बीज, बकायनके बीज छोटी पीपर, नीला थोथा भूना, शुद्ध मेनसिल, कागजी नीवू के रस में घोटकर सुरमा तैयारकर ज्वर व्याप्त रोगी को दोनों नेत्रों में अञ्जन करे, ३ मिनट के अन्दर ज्वर उतर जायगा।

२—सुरमा स्वेत १ तो० सीतल चीनी २ मा० कपूर भीमसेनी १ रत्ती छोटी इला-

उ० प्र० नं० १७—आपके लड़के को अपस्मार की बीमारी है अतः सिद्धि योग लिखते हैं अकरकरा ५ तोला सिरका गुड़का ५ तोला शहद ७ तोला अकरकरा का चूर्ण कर सिरके में घोटकर सुखा ले पुनः शहद मिला कर २-२ माशा की गोली बना लेवे १ गोली प्रातः काल १ सायंकाल खिलावे २१ रोज में बाल चंगा हो जायगा यही दवा जवान रोगी के लिये ६ मासा की खुराक देवे। अवश्य लाभ होगा।

डा० अ० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
गोतौना।

उत्तर प्र० नं० १८—दाडिम (अनार) का पञ्चांगलेकर तिलतैलमें पञ्चांगकी लुगदी बना कर पका लेवें छानकर उक्त तैल कुचो पर मालिश करें स्तन कठोर हो जायेंगे अथवा तेल तारपीन का मालिस करें कुच अवश्य कठोर होंगे।

उत्तर प्र०नं० १९—बावचीको भिगोकर कपरोटी की हुई आतशी शीशी में धरकर पाताल यंत्र की विधि से तैल निकालो यह श्वेत कुष्ठ के लिये अत्युत्तम होगा। या कोल्हू में पिरवाकर भी निकलवा सकते हो बाजार में अच्छा विशुद्ध मिलना असम्भव है।

प्रश्न नं० २१ वर्ष २ का उत्तर—रोगीके पेट में पुराना सख्त कालाहरा मैल पत्थर सा कड़ा बन बैठा है, जुलाब से निकलेगा नहीं और बिना उसके निकले रोग नष्ट नहीं होगा—पेशाब में पीलापन व जलन उसी का कारण है निम्न क्रिया करनेसे आराम होगा—

सनायपत्ती १ तो० ६० तो० पानीमें रात को भिगो रक्खो सुबह औटाकर १० तो० शेष रहने छानकर एरंड तैल २ तो० डालकर पिलाओ रात को गाय का दूध गरम ऽा में गायका घी २ तो० मिलाकर पिलाना, ४ बजे दिन को मंडूर भस्म २ रत्ती मधुके साथ चटना।

नोट—जिस दिन काली लेंड़ी दस्त में आना शुरू हो आराम प्रतीत होने लगेगा ऐसा तजुर्बा है, इसके ३-४ दिवस बाद सुबह का क्वाथ बन्द कर दे, और सुबह शाम मंडूरभस्म स्तेमाल करें रातको १ बटी चन्द्रप्रभासे गो घृतयुक्त गोदुग्ध ऽा दो करीब १ माह तक अवश्य लाभ होगा—बदन में श्री गोपाल तैल व बृहतचन्दनादि तैल की मालिश करना भी अवश्यकीय है जो श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बगलोकपुर इटावा से मंगा सकते हैं—

आपका—
बंडूनाना करकेर
एलिचपुर बरार।

उ० प्र० नं० १६ व २ अं० ३—आप शुद्ध बावची का तेल असली हमारे कार्यालय से मंगा सकते हैं। यह खालिस बावची से पाताल यन्त्र द्वारा निकाला हुआ है मू० २) तोला है।

शर्मा फार्मेसी जलालाबाद जि०मुजफ्फरनगर

यवी १ मा० कठगो शोरा १ रत्ती समुद्र-झाग १ मा० तबाखीर एक माशा।

सुरमा को प्रथम चील के अन्डे की जरदी में २१ रोज घोटे फिर अन्य दवा मिलाकर घोटकर सुरमा तैयार करले ज्वरव्याप्त रोगी के दोनों नेत्रों में आंजे तो तीन मिनट ही में ज्वर समस्त दूर होजायंगे।

विशेषतः—दोनों प्रकार के सुरमा में यह है कि यदि १ आंख में आंजा जायगा तो समस्त आधे अङ्ग का ज्वर उतरेगा और फिर शेष ज्वर अन्य दवासे कभी नहीं उतर सकता जब यही सुरमा दूसरे नेत्र में आंजा जायगा तभी उतरेगा।

आपका—

आ० कां० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी

गोतेना

उ० प्र० न० ८—प्रियवर महाशय ऐसा अञ्जन का योग तो जरा मुश्किल है पर एक अञ्जन का योग हम जानते हैं जिससे चढ़ा ज्वरतो नहीं उतरतापर नष्ट अवश्य होजाता है यदि आप कहें तो आगे के अंक में लिख देंगे।

उ० प्र० ९ वर्ष २ महाशय जी आप लक्ष्मणप्रसाद पाँण्डेय एलिचपुर बरार से जवाबी कार्ड द्वारा पूछलें वह इसके पेड़ का पता व मूल्य बतला देंगे।

उ० प्र० न० १० वर्ष २—ऐसा योग तो कोई बिरला पुरुष ही जानता होगा और जो जानता होगा वह बड़ी मुश्किलसे बतावेगा इसके लिये पं० मुन्शीराम शर्मा को चाहिये कि वे अपना विचित्र तैल का योग लिखदें क्योंकि सम्पादकजी को भी प्रश्नों का उत्तर जो मालूम हो व कठिन प्रश्न हो उसके उत्तर लोभ रहित हो लिख देना चाहिये जिससे अन्य वैद्य भी लोभ को त्याग योग भेजें।

उ० प्र० न० ११ वर्ष २—साधारण वैसलीन—१ पाव मीठे तेल को आग पर रख साफ देशी मोम मिलादो जब एक जी हो पिघल जांय तब गऊ लोचन भी थोड़ा डाल दो बाद उतारकर इत्रकी थोड़ी खुशबू देकर रखलो बस वैसलीन बन गई।

दूसरी विधि—नारियल का तेल आध सेर तिलों का तेल आध सेर केरोसेसन आयल आधसेर साफ देशी सफेदमोम १ छटांक कपूर २ तोला दोनों तेलों को आग पर रख चढ़ादो जब गरम हो जांय तब मोम डालदो जब मोम घुल जाय तब केरोसन आयल व व कपूर का द्रव मिला दो और रंग के लिये गऊ लोचन मिलाकर गरम ही पतले वस्त्र से छानकर डिब्बे आदि मे भर कर रखलो और इत्रकी खुशबूभी मिलादो बस वैसलीन बन गई विलायती से बढ़कर देखनेमें सुन्दर व गुणवान होगी इसे हर प्रकार के मलहमों मे बर्तें।

नोट—केरोसन आयल व कपूर को शीशी में भर घाम में रखदो जब वह दोनों एक जी हो जाँय तब उपरोक्त विधी अनुसार मिलादो बस आंख के जख्म में नहीं लगाना और सब जगह बर्तें।

पं० दुरगाप्रसाद मिश्र वैद्य रत्न

रनेह पो० हटा

उ० प्र० न० १२- छिपनी की भस्म माचूफल, खैर अच्छा मुरदासंख थोड़ी नेनो घी को अग्नि पर चढ़ादो जब गरम हो तब नीम की पत्ती की लुगदी डालकर रंग जलादो जब कुल लुगदी जल जाय तब उतारकर छानलो बाद गरम ही में उपरोक्त चीजें मिला दो और रखकर लगावो नष्ट होगी।

दुर्गाप्रसाद मिश्र वैद्य रनेह

पो० हटा जि० दमोह

राकेश वर्ष १ उदय १० सम्मेलनांक प्रश्न ५७— के उत्तर में निवेदन है पं० मुन्शी राम जी आपके उपरोक्त रोगी को डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी गोतौना वाला योग जो राकेश वर्ष १ अंक ११-१२ में प्रकाशित हुआ था और इस योग को उन्होंने अनुभूत भी लिखा था आशा है आराम हुआ होगा किन्तु यह योग सर्व साधारण को सुलभ न होने के कारण मैं एक योग कम खर्च वाला नशीन राकेश द्वारा प्रकाशित कर जनता की सेवा मे अर्पण करता हूं। आशा है कि आप कम से कम इस तथा अर्शामृत-क्षार को तो अवश्य ही प्रकाशित कर पुन्य के भागी बनिये।

श्रीमान् जी रोग का नाम योनिकन्दर रोग है, रोग कष्टसाध्य होता है और यह रोग प्रायः शस्त्र साध्य होता है। लेकिन फिर भी नीचे वाले योगसे अपूर्व लाभ होते देखा है। योग यह है—

उत्तम गेरू, आम की गुठली का गूदा, वायविडंग, हल्दी, शुद्धरसौत और कायफल इनका चूर्ण तैयार कर शहद मिला योनि में लगावे और प्रातः त्रिफला क्वाथ में शहद मिला नित्य प्रति योनि को धोवे, और नीचे लिखे तेल का फाया योनि में निरन्तर रक्खा करें—

चूहे का मांस पाव भर के टुकड़े २ करलें फिर उसको मीठे तेल १ सेर में डालकर मन्द २ आंच से पकावें जब माँस जलने पर आवे तब उतार लें और छानकर काम में लावें यदि आप खुद न बनाकर कारकसाव के जरिये अपनी निगरानी में बनवालें तो अच्छा रहेगा।

वैद्य रामप्रसाद अध्यापक

जहांगीरपुर

३० नवम्बर १९२९ के प्रश्न नम्बर २० का उत्तर—मैनसिल ३ मासे, जायफल ३ मासे, सुहागा ३ मासे, चमेली के पत्ते का रस ½ तेल तिलीका ½ सब उपरोक्त तीनों दवायें पीसकर तेल व चमेली का रस मिला कर मन्दी आंच से पकाकर इन्द्री की मालिश दोपहर एकवार करें लँगोट बाँधना बन्द करें योग अजमाया हुआ है।

पं० राजाराम वैद्य वरई

पो० पनिहार—ग्वालियर।

नोट—जो बना न सकें वे।) तोले के हिसाब से धनसिंह आयुर्वेद भवन वरई पो० पनिहार—ग्वालियर से मँगालें।

वैद्यवरों से प्रश्न

(प्र० नं० २३) क्या कोई वैद्य महोदय हमारे मित्र के रोग को दूर करने का अनुभवी प्रयोग प्रकाशित करने की दया करेंगे मित्र के हालात यह हैं—१४ वर्ष की उम्र से १८ वर्ष की उम्र तक हस्तमैथुन की आदत पड़ गई बाद को उसका विवाह होगया। विवाह होने के बाद उसकी हस्तमैथुन की आदत छुट गई अब उसकी उम्र २४ वर्ष की है और निम्न लिखित बीमारी में ग्रसित है—इन्द्री में नीचे सींवन में छिद्र सा है जिससे पीव जारी है, पेशाब में जलन है, थोड़े परिश्रम से थकावट प्रतीत होती है, दम फूल जाता है, स्त्री सम्भोग के समय इन्द्री के ऊपर चारों तरफ तड़क जाती है और कष्ट होता है, वीर्य स्खलित होते समय जलन विशेष होती है, किसी कार्य में चित्त नहीं लगता है, सारे शरीर में फुंसी होना फुंसी के बाद काला सा दाग़ होजाना, शिर दुखना आंखों में जलन व चक्कर आना, पाखाना साफ न होना, पेट में गुड़गुड़ाहट रहती है यहां तक कि बिल्कुल बेकारी है अब वैद्यवरों की सेवा में अपील है कि उत्तमोत्तम अनुभवी प्रयोग लिख भेजें या "राकेश" द्वारा प्रकाशित करें।

आपका—माला सांवला जमादार
वाल्मीकय मराठी स्कूल
अमरावती (वरार)

(प्र० नं० २४) एक नुस्खा ऐसा चाहिये जिसके इस्तैमाल से बाल जन्म भर न उगें तथा सेवन में तकलीफ भी न हो पर अनुभूत होना चाहिये।

वैद्य रामप्रसाद अध्यापक
जहाँगीरपुर

(प्र० नं० २५) किसी महाशय के पास निम्न वनौषधियों के बीज संग्रह हों तो भाव मय पूरे पते के राकेश द्वारा प्रकाशित करने की दया करें। लक्ष्मणा, विधारा, मूसाकर्णी काला भाँगरा, सफेद पुनर्नवा, रुद्रवन्ती, अनन्तमूल, मूर्वा।

वैद्य महावीरप्रसाद
पिंडखर-बाँदा

(प्र० नं० २६) हिङ्गुलादि खनिज पदार्थ असली सस्ते व सुगमता से कहां से प्राप्त हो सकते है ज्ञातागण पूर्ण पता लिखने की दया करें।

आयुर्वेदाचार्य छोटेलाल जैन
इटावा।

(प्र० नं० २७) हमारे शरीर में क़रीब एक माह हुआ कुछ २ खुजली होना आरम्भ हुआ, कहीं २ पर खुजलाते २ फुंसी पैदा होकर पकनी सी भी होजाया करती है जिनमें से पानी सा निकलता है कुछ दिनों से ऐसा प्रतीत होने लगा है कि किसी पदार्थ

खट्टे व मीठे का स्वाद भी लोप होगया है। वैद्यगण रोग का नाम मय चिकित्सा प्रयोग के लिखने की दया करें।

आपका—पं० देवोदयाल
मु० मई पो० बटेश्वर
आगरा।

(प्र० नं० २८) ६ व ७ वर्ष हुए मैं जबलपुर गया था वहाँ रात को एक बारगी हमारी जाँघ के ऊपरी माँसीली भाग में एक गाँठसी पड़ गई और दर्द जारी होगया सुबह उसी गाँठ के चार टुकड़े से मालूम पड़े और ज्वर भी प्रतीत हुआ डाक्टरी इलाज किया जिसमें उन्होंने लाइकर आरसेनी क. स टिंचर केप्सीकेन (सङ्खिया का अर्क टिंचर मिर्च) इस्तैमाल कराया जिससे आराम तो होजाता है परन्तु बीच में अब तक उसके साल दो साल बाद दौड़े होते रहते हैं और वही ग्रन्थियाँ सो पहिले पड़कर दर्द शुरू होकर ज्वर होजाता है क्या आयुर्वेद ज्ञाता वैद्य कोई अनुभूत प्रयोग मय रोग के निदान के राकेश द्वारा प्रकाशित करने का कष्ट करेंगे। एक ग्राहक

वैद्य संसार समाचार

यू० पी० वैद्य सम्मेलन से इन्डियन मेडीशन बोर्ड के लिये

प्रतिनिधि निर्वाचन नियम।

१—प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के वे कार्य कारिणी के सदस्य जो निर्वाचन पत्र पर हस्ताक्षर होने से एक वर्ष पूर्व से सदस्य रहे हैं वे ही इण्डियन मेडीशन बोर्ड के प्रतिनिधि हो सकते हैं।

२—प्रांतीय वैद्य सम्मेलन का चन्दा जिन पर बाकी न होगा। चन्दे का वर्ष चैत्र शुक्ल १ सं० १९८६ से आरम्भ होगा।

३—निर्वाचन समय में सदस्यों की सम्मति और उपस्थिति कम से कम दोनों मिलकर आधी संख्या आवश्यक होगी।

४—एकबार कोरम पूरा न होने पर द्वितीय अधिवेशन में निर्वाचन हो जावेगा। परन्तु उसका एजन्डा अवश्य निकाला जावेगा।

५—लिखित सम्मति वही ग्राह्य होगी जो प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृति सम्मति पत्र पर लिखकर सीधे मन्त्री के पास आयी हों और यह पत्र रजिस्टर्ड आना चाहिये और इनके ऊपर सम्मति पत्र लिखा हो, या प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन से प्राप्त छपा हुआ लिफाफा हो। निर्वाचन तिथि तक आयी हुई सम्मति ग्राह्य होगी।

६—सम्मति पत्र सभा के सन्मुख ही खोले जावेंगे, पहिले से खोलकर देख लेने का अधिकार किसी को न होगा, पहिले से खुली सम्मतियां मान्य न होंगी।

७ कोई सदस्य दोवारसे अधिक बोर्ड की सदस्यता के लिये उम्मीदवार न हो सकेगा।

८ निर्वाचन तिथि के एक मास पूर्व नामिनेशन पेपर भर कर मन्त्री के पास भेज देना होगा। अवधि के बाहर जो नामिनेशन पत्र आयेंगे वे ग्राह्य न होंगे। यह पत्र छपा हुआ कार्यालय से मिल सकेगा।

नामिनेशनपत्रपर कार्यकारिणी समिति के २ सदस्यों के हस्ताक्षर अवश्य होने चाहिये।

१०—समान सम्मति होने पर सभापति अपना एक वोट अधिक दे सकेंगे।

११—आधेसे अधिक सदस्यों के आवेदन करने और आधे से अधिक सम्मतियों के होने पर सदस्य अपने पद से त्याग पत्र देने के लिये वाध्य होंगे।

१२—प्रांतीय सम्मेलन के निश्चय के विरुद्ध सदस्य अपनी सम्मति नहीं दे सकेंगे, ऐसा करने पर उनको अपना पद जोड़ देना होगा।

१३—लिखित सम्मतियों पर एक सदस्य के हस्ताक्षर अवश्य होना चाहिये।

१४—निर्वाचन वहीं होगा जहां कार्यालय होगा। या सभापति और मन्त्री द्वारा निश्चित स्थान पर। सभापति और मन्त्री में विवाद होने पर कार्यकारिणी के निश्चयानुसार स्थान निश्चित किया जावेगा।

१५ प्रान्तीय मण्डल के मन्त्री और सभापति किसी व्यक्ति विशेष के लिये नोटिस आदि के द्वारा अपनी सम्मति न दे सकेंगे।

१६—निर्वाचन सम्बन्धी सूचना समाचार पत्रों में छपा देने और सदस्यों के पास पत्र द्वारा भेज देनेपर पर्याप्त मानी जावेंगी।

(१७) चुनाव के सन्देहास्पद विषयोंमें सभापति की आज्ञा मान्य होगी।

(१८) सम्मति गणना लिखित ही मान्य होगी, सम्मतिदाता को अपने हस्ताक्षर उस पर करना होंगे।

(१९) कार्यकारिणी के सदस्य और अधिकारी हीं इस मतदान के अधिकारी होंगे।

(२०) निर्वाचित सदस्य जो प्रान्त के बाहर रहने लगेंगे वे भी उस वर्ष मतदान तथा उम्मीदवार होने के अधिकारी होंगे।

(२१) चुनाव में वर्तमान अधिकारी नहीं खड़े हो सकेंगे। जो खड़े होंगे उन्हें अपना वर्तमान पद त्याग देना होगा।

विशेष—८ वें नियम को छोड़कर शेष नियम इसी वर्ष से लागू होंगे।

रघुवर दयाल भट्ट, वैद्य
मन्त्री, य० प्रा० वैद्य सम्मेलन

३८ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी, मथुरा की बनायी हुई यह अमूल्य दवायें केवल समस्त भारत वर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ साल से प्रसिद्ध हैं। इनकी अपूर्व गुणकारिता का यही सबसे बड़ा सबूत है कि इतने दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जारही है इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है?

१—सुधासिन्धु।

सभी बीमारियों के लिये। कफ, खांसी, हैजा, वमन, शूल, आँव खून के दस्त, पेट की सभी खराबियां, बच्चों का रोना, हरे पीले दस्त, कै दूध पटकना, ऐंठा, गठिया आदि, के लिये सुधासिन्धु रामबाण है। तुरन्त फायदा पहुंचाता है। सुधासिन्धु सुगन्धित है, सुस्वाद है और सर्व सुलभ है। मूल्य फी शीशी केवल आठ आना।

२—बालसुधा।

बच्चोंके सभी रोगों के लिये इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं, कमजोर लड़के ताकतवर होते हैं, निरोग लड़के बीमार होनेसे बचते हैं। मोठा है, बच्चे खुशी से पीते हैं कीमत फी शीशी ।।।)

३—दद्रुगज केशरी

नया पुराना चाहे जिस प्रकार का दाद हो, इससे तुरन्त आराम होता है। दादके लिये ऐसी अचूक और शर्तिया दवा दूसरी नहीं है जलन, तकलीफ वगैरह कुछ नहीं होती। मूल्य ।)

यह दवाइयां भारत सरकार से भी रजिष्टर्ड है।

हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं। यदि आपके शहर, कस्बे या गांव में न मिले तो इस पते पर पत्र लिखकर मंगवा लीजिये।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये)

मंगाने का पता—

सुख सञ्चारक कम्पनी मथुरा

श्री धन्वंतरि शरणम्

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

संसार प्रसिद्ध

श्री भगवती आयुर्वेदिक फार्मेसी

आर० के० डी० कालेज रोड, नरालोकपुर

इटावा यू० पी०

की

तत्काल गुणकारी सर्व जनोपयोग और परीक्षित औषधियों का

आरोग्य पथ प्रदर्शक

सूचीपत्र

"यस्यदेशस्य योजन्तुस्तज्जं स्वौषधं हितम्,,

आत्रेय,

संस्थापक—

पं० रूपेन्द्रनाथ जी वैद्यशास्त्री

प्रकाशक—

मैनेजर—वीरेन्द्रसिंह बर्मा

रामदयाल के प्रबन्ध से शर्मन प्रेस इटावा में छपा।

औषधियां मंगाने से प्रथम पढ़िये

१—इससे प्रथम के समस्त नियम रद्द किये जाते हैं इसलिये औषधियाँ मँगाते समय निम्न लिखित नियमावली को खूब सोच विचार कर पढ़लेना चाहिये।

२—पत्र पाते ही २४ घंटे के अन्दर ही माल भेज दिया जाता है इसलिये विचार पूर्वक आर्डर लिखो ताकि माल लौटाना न पड़े।

३—एक साथ २५) की दवा खरीदने से सज्जन एजेन्ट श्रेणी में दर्ज किये जायंगे उनके नाम के साइन बोर्ड व विज्ञापन बाँटने के वास्ते कार्यालय से मुफ्त भेजे जायगे ताकि उस प्रान्त में एजेन्ट का नाम विख्यात हो जावे =) प्रति दर्जन कमीशन भी देंगे पैकिंग माफ, परन्तु पोस्टेज खरीदार को ही देना होगा।

४—ज्यादा दवा मँगाने वाले सज्जनों को अपने पासकी रेलवे जंक्शन व स्टेशन का नाम लिखना चाहिये।

५—रेलवे से माल मँगानेवाले को अपने आर्डर का चौथाई रुपया पेशगी भेजना चाहिये।

६—तरल पदार्थ (आसवारिष्ट व तैल इत्यादि) पोस्ट पार्सल से न भेज कर रेल से भेजे जाते हैं। इसलिये तरल पदार्थ मंगाते समय रेलवे लाइन तथा स्टेशन के नाम के लिखना आवश्यक है।

७—शेष सब प्रकार की दवाइयां वी० पी० पोस्ट ऑफिस के ज़रिये भेजी जाती हैं

८—हर रोग का व्यवस्था मुफ्त में लिखी जाती है, रेल पत्र के साथ =) का टिकट भेजना चाहिये।

९—यहाँ से प्रत्येक पार्सल प्रबन्धकर्ता के निरीक्षण में अच्छी तरह से जाँच कर तथा पैकिंग बहुत होशियारी से करके भेजी जाती है [illegible] रेलवे कर्मचारियों की असावधानी से पाते में पार्सल टूट फूट जाय तो जिम्मेदार कार्यालय न होगा

१०—हमारी कोई भी वस्तु अगर आप को पसन्द न आवे तो ले कर टीक वापिस कर रुपया या और कोई अपनी इच्छित वस्तु मंगा लीजियेगा।

सज्जनो!

नोट—केवल बरालोकपुरमें ही नहीं बल्कि यू० पी० प्रांतमें श्रीभगवत फार्मेसी के समान कोई भी अन्य औषधालय या फार्मेसी एवं औषधि निर्माण शाला इतने बड़े परिमाण में और सस्ती दवा बेचने वाली नहीं है स्वयं आकर देखियेगा।

पता—मैनेजर श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा य० पी०

क्या कहूँ ?

—— # ——

इस विज्ञापन युग में विज्ञापन बाजी की बढ़ती अवनती के समय में चारों ओर जिस तरफ दृष्टि पात करिये उसी तरफ व्यापार की प्रबलता ही दिखाई देती है। नकली के जमाने में बाजी [illegible] के भंवर में चक्कर लगा रही है, पर [illegible] विज्ञापनबाजों की बोल बाला है

अधिकांश में तोते की [illegible] विज्ञापन डाक्टरों भ्रमित हो रहा है, स्वदेश हितैषी शासकों [illegible] पुनः करने के लिये स्वदेशी व्यापारों के ऐसे समय में विज्ञापन करना ये व्यापारिक पक्ष में [illegible] ही होना ही उचित था। परन्तु कर्मठ-उत्साही सत्य परीक्षक एवं स्वदेशी औषधि सेवी पाठकों की अधिकता न सही। पर संख्या अभाव भी तो नहीं है।

सज्जनो! भ्रमर को एक प्रकार के पुष्पों पर रसास्वादन हेतु मंडराना है लेकिन अन्त में पहुंच पुष्प पर ही उसे मनोवांछित सुख एवं लाभ होता है। बस इसी आश्वासन के बल पर मैं इस फार्मेसी की वृहद रसायन शाला की कतिपय अत्यन्त प्रभावशाली परीक्षित आयुर्वेदीय औषधियों की सूची केवल पारखी गुणग्राही पाठकों की शुभ सेवा में भेंट करना चाहता हूँ।

आशा है कि सज्जन वृन्द! इस रसायन शाला की किसी भी आवश्यकीय औषधि का मंगाकर और लाभ उठाकर मुझे उत्साहित करेंगे-कारण कि सत्य पथ निष्कंटक है।

आपकी आज्ञा का प्रतीक्षक-मैनेजर

ध्यान में रखना चाहिये।

कि रसायन औषधियों का बनाना कठिन है और अधिक द्रव्य तथा कौशलकी आवश्यकता है इसीलिये विश्वस्त कार्यालय के सुयोग्य वैद्य द्वारा बनी हुई ही दवाइयाँ चिकित्सा उपोद्धार में लाना चाहिये नहीं तो लाभ के बदले हानि उठानी पड़ेगी!

इस प्रांत में आयुर्वेदीय औषधियों को ठीक परिमाण से बनानेवाला श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी से बड़ा अन्य कोई कार्यालय नहीं है यही एक ऐसा औषधि फर्म है जहां [illegible] सूक्ष्म में शुद्ध एवोल्ट खनिजों को वस्तु सिद्ध बनाती है।

हमारा विचार

इसमें कोई शक नहीं कि आजकल जो आयर्वेदीय विद्यार्थी विद्यालय में से उत्तीर्ण होकर प्रेक्टिस करते हैं। उनमें से अधिकाँश वैद्य विद्यार्थी समय और धन के अभाव से अच्छा और शास्त्रोक्तमानुकूल दवाइयाँ तैयार नहीं कर सकते, यदि साहस कर तैयार करते भी हैं तो थोड़ी तादाद में चीजें बहुत महंगी पड़ जाती हैं। खाद्य २ बिगड़ने का भय हर वक्त लगा रहता है इस बात का अनुभव मैंने अपनी प्रेक्टिस के ज़माने में खूब किया था कि आरम्भ में औषधियां तैयार करने में बड़ी दिक्कत होती है।

इस लिये उन वैद्यों को विश्वसनीय औषधियां सस्ते मूल्य से दी जांय, तो चिकित्सा प्रेक्टिस में उनका हौसला बढ़ता रहेगा। इस प्रकार आयुर्वेदोन्नति में वे बहुत कुछ सहायक बन सकेंगे, उन सज्जनों के लाभार्थ हमने इस सूचीपत्र में जो जो औषधियां तैयार की जाती है वह कौन २ ग्रन्थ के आधार से, और किस रोग पर दी जाती हैं पूर्णतया लिखा जायगा।

डाक्टरों को यह सुभीता होता है कि उनको हर प्रकार की तैयार दवाइयां मिल जाती हैं उन दवाइयों के ऊपर बाह्य आवरणपर कौन कौन चीज से वह दवा बनी यह सब लिखा होता है इसी से हर कोई डाक्टर उसको समझ कर आसानीसे प्रयोग कर सकते हैं तथा आशातीत सफलता प्राप्त कर यशी और मालामाल बन जाते है।

वैसे ही आयुर्वेदिक औषधि निर्माण में किया जाय तो हर कोई वैद्यराज उन आसानीसे प्राप्त हुई औषधियों का रोगों पर प्रयोग कर आशातीत सफलता एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आशा है कि हर एक फार्मेसी और औषधि निर्माण शाला संचालक इसका प्रणाली को प्रचार करेंगे, तो वैद्यों को बहुत ही सुभीता हो जायगा।

जहां तक हो सका। और हो सकेगा हम अपनी सारी शक्ति इस कार्य में लगा देंगे, इसी हेतु हमने ऐसी ७ ८ प्रकार की औषधियों की निश्चित की हैं यह बात वैद्य लोग स्वयं हमारे कार्य को देखकर जान लेंगे। मेरा विचार यही है कि थोड़ी दवा बनाने वाले वैद्यवर इस हिसाबसे कमसे कमी दवा तैयार न कर सकेंगे, यह अधिक परिमाण में थोक दवा बनाने ही का कारण है, कि हम इतने सुभीते से दवाइयां अत्यल्प मूल्य में दे सकते हैं।

हमारी प्रत्येक दवा यथा शास्त्र समस्त उपादानों से पूर्ण बनती हैं, यदि किसी को शंका हो तो उचित परामर्श देकर वापिस कर सकता है हम पर जिन्हें अविश्वास हो उनके सामने बना कर देसकते हैं। वैसे तो परमात्मा और धर्म केवल मनुष्य का साथी है इसके अतिरिक्त कोई भी अन्य उपाय ऐसा नहीं जिससे हम आपको विश्वास दिला सकें परन्तु प्रार्थनाय है आशा है कि वैद्य लोग अपनाकर लाभ उठावेंगे।

विश्व-सेवक——

मैनेजर

आपको नेक सलाह

बन्धुओ ! किसी भी रोग में, किसी भी अवस्था में, किसी भी समय में अच्छी सलाह लेने के लिये बुद्धिमान; अनुभवी, सिद्धहस्त विद्वान बहुश्रुत वैद्य की आवश्यक्ता है नीम हकीमों, मामूली किताबों को नज़रसे गुजारने वालों, या बाप दादोंके नाम से वैद्यराज कहलाने वाले निरक्षर भट्टों की आवश्यक्ता नहीं है।

कारण कि इन्द्र कावज्र मस्तक पर गिरने से भी किसी प्रकार मनुष्य बच सकता है किन्तु बज्रमूर्ख, आडम्बरी, अपठित, वैद्य नामधारी जीव की औषधि से रोगी निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

हमारा अन्तिम उपदेश यह है कि पाठक गण जिस वैद्य से अपने रोग का इलाज करावें उसके योग्य होने का निश्चय पहिले करलें। आडम्बरी, खुशामदी नक्काल वैद्यों से उन्हें सदा बचना चाहिये।

जगत में वैद्य तीन प्रकार के होते हैं। १-एक प्रकार के वैद्य खरल शीशी, पुस्तक भूषा वेष आदि से वैद्यपने का आडम्बर लादे रहते हैं, वास्तव में वे मूर्ख वैद्य होते हैं। २-दूसरे प्रकार के वैद्य धनवान और विद्वान लोगों के कहने से डींग हाकने, और अपने को वैद्य का बेटा और पोता बताकर वैद्य होजाते हैं वास्तव में वे सिद्ध साधित वैद्य नहीं होते हैं। ३ तीसरे प्रकार के वैद्य रोगीके निदान और चिकित्सा, अभिज्ञता, सिद्धि युक्त सुखके दाता प्राण रक्षक होते हैं वास्तव में वैद्यराज ये ही हैं, इसलिये जो बुद्धिमान हैं जिनको अति काल तक जीवित और आरोग्य रहने की इच्छा है वे रोगी युक्ति वाह्य मूर्ख सिद्धि-साधितों की औषधियों से दूर ही रहें, वरना वह समझलें कि——

कुर्यान्निपतितो मूर्ध्नि सशेषं वासवाशनिः।
सशेषं मातुरँ कुर्यान्नत्वज्ञ मत मौषधम् ॥

चरकः

भावार्थ उपरोक्त दूसरे पैरे का है।

आपको आरोग्य और अपने जीवन की विशेष २ बातें जानकर निरोग और सुखी रहना हो, तो "राकेश" आयुर्वेदीय पत्र के ग्राहक बन जाइयेगा, उससे आपके बाल बच्चों को, आपको और आपके मित्रों को सर्वदा स्वास्थ शिक्षा की सहायता

आवश्यकीय निवेदन

आज हम इतने पराधीन हो गये हैं कि हमें अपनी शारीरिक आरोग्यताके ठीक करने के लिये भी दूसरे देशवासियों के चिकित्सा विज्ञान का आश्रय लेने को मुंह ताकना पड़ता है, हजारों मील दूर के निवासी, हमारे, आहार, विहार, जल वायु से पूर्ण परिचय न रखने वाले लोग यान्त्रिक शक्ति द्वारा हमारे ही देश की वनस्पति, तथा खनिज पदार्थों का रूप रंग आकार प्रकार बदल कर इस देश में भेजते हैं।

और अपने देश की उन्हीं कौड़ियों की औषधियों को हम रुपयों में मेल लेकर देश का करोड़ों रुपया बाहर भेज रहे हैं। यही नहीं प्रत्युत विदेशी औषधियों में मिले हुये सुरा, सरेस, चरबी, आदि अनेक अभक्ष्य पदार्थ सेवन करके धर्म भ्रष्ट भी हो रहे हैं, हमें अज्ञानवश यह सब कुछ स्वीकार करते हुये भी, हमारे स्वास्थ्य की जो हीन दशा हो रही है वह किसी भारतीय बन्धु से छिपी नहीं है, वस्तुतः विदेशी औषधियों से स्वास्थ्य लाभ की कुछ अधिक आशा नहीं की जा सकती, हमारे स्वास्थ्य के लिए तो ऐसी औषधियाँ उपयोगी हो सकता है, जैसा कि महर्षि आत्रेय जी कहते हैं।

"यस्यदेशस्ययो जन्तुस्तज्जंतस्यौषधं हितम् ।,,

अर्थात् जिस प्राणी का जन्म जिस देश में हुआ है, उसी देश की औषधियां उस प्राणी के लिये हित कर हो सकती हैं,

यों तो देशी औषधियाँ स्वभावतः ही विदेशी औषधियों की अपेक्षा सस्ती होती हैं, परन्तु इस फार्मेसी ने अधिक से अधिक प्रचार करने के लिये, स्वदेशी शास्त्रानुसार निर्मित औषधियों का मूल्य बहुत ही सस्ता रक्खा है, इतने सस्ते मूल्य पर और कहीं असली औषधियां मिलना कठिन है।

इस फार्मेसीकी तैयार की हुई रस भस्म आदि समस्त औषधियाँ विकार रहित भय रहित अपने गुण में चमत्कारी हैं यहाँ हर एक धातु उपधातु आदि का शोधन मारण, प्राचीन शास्त्रोक्त विधि के अनुसार कई अनुभवी वैद्यराजों एवं शास्त्री जी की देख रेख में होता है, और विधिवत बनी रस भस्मादिक समस्त आयुर्वेदीय औषधियां परीक्षा करने के बाद जनता एवं वैद्य बन्धुओं की सेवामें पेश की जाती हैं।

सर्व साधारण का यह विचार है कि १० वर्ष की अवस्था से पहिले रस या भस्म सेवन करने से हानि होती है यह बात बिलकुल निर्मूल है, उक्त प्रकार से बनी हुई योगवाही भस्में छोटे बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के लिये अमृत समान लाभ दायक हैं।

हमारे यहाँ हमेशा उत्तम और ताजी वनस्पतियां ही काम में लाई जाती हैं सड़ी गली या नीचे दर्जे की कोई भी वनौषधि दवाइयों में नहीं डाली जाती, एवं औषधि निर्माण में पूरी पूरी क्रिया की जाती है।

वैद्यराजो ! यह फार्मेसी अर्से से पं० रूपेन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री जी की अध्यक्षता में पूरी पूरी देश सेवा से सफलता पूर्ण संचालित है, और शास्त्री जी के गम्भीर और पुराने अनुभव विश्व सेवा में पूर्ण रूपसे कृत कार्य हो रही है।

इस फार्मेसी का उद्देश्य ही

"प्राचीन ग्रन्थों से खोज कर फौरन असर करने वाली चमत्कारी एवं निर्भय औषधियाँ ठीक २ शास्त्रोक्त विधि से बनाकर सस्ते मूल्य में प्रचार करना है,,

आशा है आप एक बार परीक्षा करके पूर्ण सन्तोष पाकर विदेशी चिकित्सा शैली को मुंह तोड़ उत्तर देने में समर्थ होंगे।

इसी फार्मेसी से—

भारत के अन्य प्रांतों के छोटे बड़े एवं दातव्य औषधालय, फारमेसी, थोक दवाइयां खरीदती है इसके एक विभाग से 'राकेश' नामक आयुर्वेदीय उच्च श्रेणी का मासिक पत्र निकलता है जिन को समस्त आयुर्वेदिक फार्मेसी व वैद्यराजों ने अपनाया है। नमूना मुफ्त मंगाकर देखें।।

यहां एक ऐसा वृहत औषधि फर्म है जहाँ से अविश्वासियों के सामने उनकी इच्छित वस्तु उनके ही सामने बना कर विश्वास करा दिया जाता है। कृपया पधारिये और दर्शन दे इस फार्मेसी को कृतार्थ करें।

बन्धुओ ! सावधान

कुछ लोगों ने हमारी औषधियों की उत्तमता और व्यवहार सदव्यौहार के कारण बड़ी तरक्की होते देखकर नये २ औषधालय खोल रक्खे हैं उन्होंने नाजायज फायदा उठाने के अर्थ बिलकुल मिलता जुलता सूत्र छपाकर-कहां तक कहें, जहां तक हो सकता है हमारे ग्राहकों को धोखा देते हैं इसलिये हम अपने ग्राहक महानुभावों को सावधान करते हैं कि पार्सल लेने से पहिले पार्सल पर "श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी,, या राकेश कार्यालय का नाम पढ़ कर पार्सल छुड़ाना चाहिये वर्ना धोखा होगा।

नोट—यदि किसी समय आप को उपरोक्त धोखा सन्मुख हो तो वह पार्सल पोस्ट औफिस में डिपाजिट (अमानत) करा कर हमें सूचित कीजियेगा। हम आपके धोखा को शमन कर यथोचित लिख भेजेंगे ताकि आप को धोखे से नुकसान न होगा।

प्रार्थी—मैनेजर

फार्मेसी का कार्यक्रम

इस फार्मेसी में नियमानुसार ६ विभाग खोले गये हैं।

१ वनस्पति संग्रहालय विभाग—इस विभाग में फार्मेसी ने बड़े प्रयत्नसे भारत के उन बड़े व्योपारियों के पते ढूंढ़कर हस्तगत किये हैं, जिनके हाथों अनेक प्रान्तीय वनस्पतियाँ निकल कर प्रतिवर्ष देश देशान्तर को जाती हैं. उन व्योपारियों से ही इस विभाग में उत्तम वनस्पतियां व खनिज द्रव्य मंगाकर संग्रह किये जाते हैं तथा प्रत्येक वस्तु अल्प लाभ लेकर वैद्यों व औषधिफर्मस व धर्मार्थ औषधालयोंको उत्तम रीति से भेजी जाती हैं।

२—औषधि निर्माणशाला विभाग—इस फार्मेसी ने उत्कृष्ट वृहत निर्माणशाला की नीव डाली है, जहाँपर शास्त्राज्ञानुसार विधियों सुसंस्कृत प्रत्येक आयुर्वेदिक विधि विधान युक्त उत्तम व सुलभ विधियों से, रस भस्म, आसवारिष्ट, चूर्ण, गुटिका, अवलेह, तैल, घृत, पाकादि बड़ी २ तादाद में तैयार किये जाते हैं और उपर्युक्त तैयार शुदा औषधियाँ अत्यन्त सूक्ष्म मुनाफा लेकर वैद्यों, धर्मार्थ औषधालयों, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के औषधालयों व दूकानदारों तथा आयुर्वेदीय औषधि पीयूष पान करने वालों को भेजी जाती हैं।

३—धर्मार्थ औषधालय विभाग—इस फार्मेसी ने एक वृहद धर्मार्थ औषधालय खोल रक्खा है जहां पर उत्तमोत्तम औषधि मुफ्त मिलती रहने के कारण काफी तादाद में दैनिक गरीब रोगियों का मुफ्त इलाज होता है। इस धर्मार्थ औषधालय में प्रत्येक शास्त्रीय निर्मित एवं "राकेश" द्वारा वैद्यराजों के अनुभव सिद्ध प्रयोगों का व्योहार करके उनके पूर्ण गुण:गुण की परीक्षा की जाती है। और उत्तम सिद्ध होने पर पुनः फार्मेसी में विक्रियार्थ रक्खी जाती हैं इसीसे इस फार्मेसी की समस्त औषधियां परीक्षित होनेके कारण विशेष गुणकारी होती हैं।

४—चिकित्सा विभाग—इस विभाग में फार्मेसी के मालिक पं० रूपेन्द्रनाथजी वैद्य शास्त्रीजी अपने आयुर्वेदीय विशेष अनुभवसे स्थानीय और बाहरके आये धनाढ्य रोगी एवं रईस व साहूकारों की यथेष्ट चिकित्सा करते हैं। बाहर के रोगियो के लिये स्थानादि का सुप्रबन्ध चिकित्सा भवन के पास ही कर दिया जाता है जिसका भाड़ा किराया कुछ नहीं लगता है। पत्र व्योहार से चिकित्सा कराने वालों को अपने रोगकी पूरी हकीकत लिखने पर योग्य सलाह मुफ्त दी जाती है।

५ पेटेन्ट विभाग—इस विभाग में शास्त्रीय व वैद्यराजों के योगों को धर्मार्थ औषधालय में रोगियों पर सेवन कराकर शत प्रति शत गुणकारी साबित होने पर वह औषधियाँ पेटेन्ट की जाती हैं उन औषधियों का मूल्य सर्व साधारण के लाभार्थ थोड़े नफे से निर्धारित किया जाता है।

६ पत्र विभाग—इस विभाग से आयुर्वेदीय उच्चकोटि का मासिक पत्र "राकेश" निकलता है जिसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन भारगर्भित उत्तमोत्तम लेख एवं अनेक विद्वानों के अनुभव सिद्ध योग, कठिन रोगों के सुगम इलाज और आरोग्यता प्राप्त करने के साधारण नियम प्रकाशित होते हैं रोगियों और वैद्यों के रोग सम्बन्धी प्रश्नोत्तर मुफ्त छापे जाते हैं वार्षिक मूल्य १॥) नमूना मुफ्त मंगा सकते हैं।

शल्य चिकित्सा विभाग

इस विभाग में स्थानीय और बाहरके व्रणादि से पीड़ित भगन्दर युक्त रोगियों का आयुर्वेदीय शास्त्रानुकूल विशेषता से अनुभव पूर्ण इलाज किया जाता है। तथा अंग्रेजी औषधियों के बजाय स्वदेशी आयुर्वेदीय लेखन, रोपण, शोधन, स्नेहन इत्यादि औषधियां प्रस्तुत रहती हैं।



कतिपय रोगों पर अनुभूत उपाय

ज्वर

शरीर की गर्मी बढ़ जाना ही ज्वर का मुख्य लक्षण है कभी ज्वर सर्दी लग कर आता है, और कभी बिना सर्दी के ही, शिर दर्द, उल्टी, बदन दुखना, आँखों में जलन आदि ज्वर के साधारण लक्षण हैं। ज्वरकेआरम्भमें लँघनकरना चाहियेअथवा सोंठ, मिर्च काली, तुलसी के पत्र की चाय तथा दूधपर ही रहना चाहिये, अन्न खाना अच्छा नहीं। कब्ज हो तो शुद्ध एरंड तैल या इच्छाभेदी रस का जुलाब ले लेना चाहिये।

साधारण ज्वर में महा सुदर्शन चूर्ण त्रिभुवन कीर्तिरस महाज्वरांकुश रस तुलसी बल अनुसार दिन में तीन बार देने से पूर्ण लाभ होता है यदि इन औषधियोंसे ज्वर न हटे तो-अमृतारिष्ट के साथ जयमंगल रस सेवन करना अत्यन्त जरूरी है।

कदाचित ज्वर बहुत जीर्ण हो या बिगड़ गया हो, और रोगी अधिक क्षीण होगया हो और श्वांस कास कफ प्रबलहो तो अमृतारिष्ट व जयमंगलरस प्रातः सायं दें, तथा २॥ तोला खितोपलादि चूर्ण में २ माशे स्वर्ण वसंत मालती मिला दिन में ८-१० बार शहद व अद्रक रस में मात्रानुसार चटावें भोजन के साथ पिपल्यादि घृत खिलावें. दिन में १० बजे के लगभग वृ-चन्दनादि तैल या वृ-लाक्षादि तैल को सर्वाङ्ग में मालिश कर पश्चात भीगे कपडे से समस्त शरीर पोंछ डालना चाहिये, इस क्रिया से ज्वरादि तो क्या क्षय भी शमन होता है।

म्यादी बुखार—यह बुखार सात, दस या बारह दिन तक रहता है हर समय बुखार रहता है पसीना नहीं आता इसमें कभी २ मोतीझरा भी होता है। इस ज्वर में पसीना लाने वाली या बुखार रोकने वाली दवा न देना चाहिये। पाचन तथा शक्तिवर्धक औषधियां देना योग्य है, स्वर्ण वसंत मालती महासुदर्शन चूर्ण या अभयादि क्वाथ के साथ देना हितकर है शाम को शिवाक्षारपाचन देना योग्य है आहार एकदा ले।

सन्निपात—सन्निपातकी दशामें विशेष योग्य वैद्यकी सलाह लेना उचित है सन्निपात भैरवरस, मृतप्राण दाईरस, नारायण रस और कनक सुन्दर रस अभयादिक्वाथ या महा सुदर्शन चूर्ण के साथ देने से लाभ होता है मूर्छितावस्था में योग्य वैद्य सूचिकाभरण रस का प्रयोग करे. समीर पन्नगरस भी हितकारी है।

विषम ज्वर—जो बुखार कभी किसी वक्त, कभी किसी वक्त, कभी कम और कभी ज्यादा आवे, तथा छूट २ कर आवे

आये, उसमें वृ-सर्व ज्वर हर लौह विषम ज्वरों तक लौह चन्दनादि लौह अभयादि क्वाथ या सुदर्शन चूर्ण के साथ दें। या हमारी स्वदेशी औषधियों से तैयार किया ज्वर संहार पिये।

पुराना बुखार—२१ दिन के बाद बुखार "जीर्ण ज्वर" कहलाता है इसमें तिल्ली और जिगर बढ़ जाते है। शरीर निर्बल होकर खांसी कब्ज आदि उपद्रव भी हो जाते हैं। इसमें स्वर्ण बसंतमालती रत्नगिरि रस वृ-सर्व ज्वर हर लोह सिद्ध मकरध्वज, जयमंगल रस आदि औषधें उपयोगी है तथा समस्त शरीर में महा लाक्षादि तैल या वृ चन्दनादि तैल की मालिश करना हितकारी है।

माता शीतला—इस रोगमें प्रायः शीत चिकित्सा उपयोगी होती है सुदर्शन अर्क के साथ १ माशे की मात्रा में खान वाली हल्दी खिलाना लाभ कारी है भोजन में मूंग पानी दूध भात आदि सात्विकी भोजन देना हितकारी है। अगर कब्ज हो तो शिवाक्षार पाचन देना चाहिये।

इच्छा भेदी रस	१ तो० ॥)
महा सुदर्शन चूर्ण	५ तो० ।)
महाज्वरांकुश रस	१ तो० ॥)
जयमंगल रस	१ तो० १०)
अमृतारिष्ट	१० तो० १।)
स्वर्ण बसंत मालती	१ तो० १०)
वृ-चन्दनादि तैल	५ तो० १)
महा लाक्षादि तैल	५ तो० १)
सन्निपात भैरव रस	१ तो० ५)
कनक सुन्दर रस	१ तो० ॥)
सूचिका भरण रस	१ तो० ५)
समीर पन्नग रस	१ तो० ५)
रत्नगिरि रस	१ तो० १०)
वृ-सर्व ज्वर हर लोह	१ तो० १०)
सि० मकरध्वज	१ तो० ४)

ज्वरातिसार—

अगर बुखार के साथ दस्त आते हो तो महासुदर्शन चूर्ण के साथ आनन्दभैरव रस, पंचामृत पर्पटी रस, सिद्ध प्राणेश्वर रस आदि में कोई एक जो उचित समझी जावे दें, मूंग की दाल चावल आदि हल्की खुराक देना चाहिये।

आनन्दभैरव रस	१ तो० ।)
पंचामृत पर्पटी रस	१ तो० २)
सिद्ध प्राणेश्वर रस	१ तो० २)

अजीर्ण, बदहजमी, मन्दाग्नि

भूख न लगना, खट्टी डकारें आना, कच्चे पक्के दस्त या वमन, पेट में दर्द, अफारा गड़गड़ाहट होना आदि अजीर्ण के साधारण लक्षण है। हिंग्वाष्टक, शिवाक्षार पाचन लवण भास्कर, शंखवटी, आरोग्य वटी, अग्निकुमार रस, महाकल्याणि रस, लवण वटी, द्राक्षासव लोहासव या कुमारी आसव मात्रानुसार देने से अजीर्ण आदि उदर व्याधियां शान्त होती है।

हिंग्वाष्टक चूर्ण	१० तो० ॥)
शिवाक्षार पाचन	१० तो० १)
लवणभास्कर चूर्ण	५ तो० ।)

वृ० शंखवटी	१	तो० ॥)
अग्निकुमार रस	१	तो० ।=)
महाकल्याद्दि रस	१	तो० २)
द्राक्षासव	४०	तो० २)
लोहासव	२०	तो० १।)
कुमारी आसव	२०	तो० १)

अतिसार दस्त—

दस्तों का शुरूआत में अजीर्ण में लिखी हुई दवाइयां देना चाहिये, और पुराने दस्तों में वृद्ध गंगाधर चूर्ण अग्निकुमार रस, गृहणी गज केसरी, तथा रस पर्पटी पंचामृत पर्पटी आदि बहुत गुणकारी हैं भोजन में तक्र भात खाना उपयोगी है।

वृहद गंगाधर चूर्ण	१	तो० ॥)
अग्निकुमार रस	१	तो० ।=)
गृहणी गजकेसरी	१	तो० ५)
रस पर्पटी	१	तो० १)
पँचामृत पर्पटी	१	तो० २)

विशूचिका [हैजा]

बार २ पतले चावलके धावनके से सफेद दस्त उल्टी आना पेट में दर्द पेशाब बन्द होना आदि हैजे के प्रधान लक्षण हैं, हैजे का लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त योग्य वैद्य की सलाह लेनी चाहिये। कर्पूर रस आनन्द भैरव रस, बजूक्षार चूर्ण, महा कल्याद्दि रस, मृत सँजीवनी सुरा आदि हैजे की उत्तम औषधियाँ हैं खाना देना रोगकी हालतमें वर्जित है।

कर्पूर रस	१	तो० १)
आनन्दभैरव रस	१	तो० ।)
बजूक्षार चूर्ण	१०	तो० १)
महा कल्याद्दि रस	१	तो० २)
मृत संजीवनी सुरा	८०	तो० १२)

संग्रहणी—

अतिसार के पश्चात् अपथ्य करने से संग्रहणी उत्पन्न होती है इस रोग में कभी कच्चे, कभी पक्के, कभी पतले, कभी गाढ़े; बदबूदार दस्त होते हैं पेट में गुड़गुड़ाहट तथा हाथ पैरों व चेहरे पर कुछ सूजन और कमजोरी होती है।

पञ्चामृत पर्पटी	१	तो० २)
गृहणी कपाट रस	१	तो० ५)
दुग्धवटी	१	तो० ४)

आदि दवाइयां देना हितकारी हैं भोजन में सिर्फ दुग्ध या छाछ ही देना लाभ करता है।

अम्लपित्त—

लक्षण-मुहँ से खट्टा या खारी पानी आना या उल्टी होना छातीमें जलन, खट्टी खारी गर्म डकार आना, भूख न लगना हरे पीले दस्त आना।

चिकित्सा—दस्त साफ न आता हो तो रोजाना अग्निपित्त कर चूर्ण खाते रहें लीला विलास रस, सूतशेखर रस, स्वर्ण पर्पटी या भक्त वटी आदिमेंसे कोई एक दवा आंवले के मुरब्बे या हरीत की अवलेह के साथ सेवन करे।

द्राक्षासव या संशमनी वटी भी विशेष हितकारी है।

लीलाविलास रस	१	तो० १)

सर्शमनी वटी	१ तो० १)
सूतशेखर रस	१ तो० ४)
स्वर्ण पर्पटी	१ तो० १०)

कृमि—

अनेक बार बच्चों के पेट में कृमि हो जाते हैं बाज २ मनुष्यों के भी पेट में कृमि उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण जी मिचलाना भूख न लगना पेटमें दर्द होना बुखार शिर दर्द अरुचि आदि होना आदि लक्षण होते हैं इस रोग में कृमि मुग्दर रस क्रिम कुठार रस अमृतादिलेह आदि में से कोई एक दवा सेवन करावें या विडंग तंडुल चूर्ण का प्रयोग करें कीटमर्द रस भी लाभ दायक है।

अर्श—बवासीर

गुदामें खाज और जलन होती है कब्ज रहता है कभी २ दस्त के साथ खून आता है और दस्त आते समय पीड़ा होती है और मस्से या गुदा से बाहर निकल आते हैं यह बड़ा ही दुखदाई मर्ज है।

इस रोग के नाशनार्थ वातारि रस, अग्निमुख लोह, त्रिफलादि गुग्गुलु, अर्शकुठार रस, शूरण मोदक, शाँकर लोह आदि में से कोई एक दवा सेवन करावें। मस्से नाशनार्थ हमारा अर्शहर तैल लगाव अर्श निर्मूल होगा। अगर खून अधिक आता हो तो बोल पर्पटी, राज वल्लभ रस सेवन करावे तथा काशीसादि प्रलेप लगावें भोजन में जिमीकन्द व छाछ अत्यन्त उपयोगी है।

कृमि मुग्दर रस	१ तो० ॥)
कृमिकुठार रस	१ तो० ॥)
अमृतादि अवलेह	४० तो० २)
कीटमर्दरस	१ तो० ॥)
अग्निमुख लोह	१ तो० १)
अर्शकुठार रस	१ तो० ॥)
शूरण मोदक	६० तो० २॥)
शाँकर लोह	१ तो० ५)
बोलपर्पटी रस	१ तो० २)
अर्शहरतैल (पेटेन्ट)	१० तो० ३)

खाँसी

साधारण खांसी में खाँसी की गोली मुहँ में रखकर चूसे और दिन में दो बार द्राक्षारिष्ट या भृगुहरीतकी अवलेह सेवन करे, कफ न निकलता हो तो अग्नि रस, अपामार्ग क्षार या जवाखार का सेवन करे तथा खदिरादि गुटिका वासावलेह काश केशरी गुटिका रसेन्द्र वटी, सितोपलादि चूर्ण, एलादि वटी, आदि औषधियाँ उपयोगी हैं, मोठ की दाल तथा खुश्क रोटी भोजन में रक्खे।

हिचकी

हिचकी बदहजमी और सर्दी आदि कारणों से पैदा हो जाती है पहिले कारण को दूर करें फिर हरीत की अवलेह, ताम्र भस्म या पिप्पल्यादि लौह सेवन करे। खुराक स्निग्ध किंचित उष्ण और हल्की खावे।

भृगुहरीत की अवलेह	४० तो० २)

अग्नि रस	१ तो० ।।)
अपामार्ग क्षार	१ तो० ।)
जवाक्षार	१ तो० ।)
खदिरादि गुटिका	१ तो० ॥)
वासावलेह	४० तो० २)
रसेन्द्रवटी	१ तो० १।)
एलादि वटी	१ तो० ।)

क्षय-उरक्षत

शरीर में बारीक बुखार रहना, प्रातः काल पसीना आना, खाँसी, अरुचि, कमजोरी दिनों दिन शरीर का दुबला होते जाना तथा कफ के साथ खून आना यक्ष्मा (क्षयी) रोग के मुख्य लक्षण हैं उरक्षत में मुंह से खून आता है।

स्वर्ण बसन्त मालती, स्वर्ण पर्पटी, सिद्ध मकरध्वज, हेमाभ्र, रससिंदूर, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, द्राक्षासव सितोपलादि चूर्ण इन में से कोई एक जो मुनासिब समझे खिलावें शरीर पर बृ० चन्दनादि तैल लाक्षादि तैल या लक्ष्मीविलास तैल की मालिश करें खुली हवा में रहें दूध भात आदि हल्की खुराक खाये।

रस सिंदूर	१ तो० १।)
अभ्रक भस्म	१ तो० २)
प्रवाल भस्म	१ तो० ॥)
लक्ष्मीविलास तैल	२ तो० १)

रक्त पित्त

आंख, कान, नाक, मुंह, गुदा आदि से खून आना, रक्त पित्त का मुख्य लक्षण है, इसके साथ में कमजोरी खांसी और ज्वर आदि उपद्रव भी होते हैं, खून बन्द करने के वास्ते बोल पर्पटी रस और च्यवन प्राशावलेह दें इसके बाद रक्त पित्त कुठार रस अभ्रक भस्म, हरिन शृंग भस्म, वासावलेह व क्षय की दवायें सेवन करायें खुला हवा में रहें, और सैर दरें खुराक हल्की व पौष्टिक खायें।

बोल पर्पटी रस १ तो० का	२)
च्यवन प्राशावलेह ४० तोला	२)
रक्त पित्तकुठार रस १ तोला	४)
अभ्रक भस्म १ तोला	२)
हरिन शृंग भस्म १ तोला	।)
वासावलेह ४० तोला	२)

हृदयरोग

हौल दिली, दिल घबराना, दिल का अधिक तेजी से धड़कना; बोलने, जोर की आवाज सुनने, खाँसी आने या करवट लेने से छाती में दर्द होना सुस्ती और निर्बलता आदि इस रोग के साधारण लक्षण हैं।

ताम्रपर्पटी, हृदयार्णव रस, हृदरोग रसायन अर्जुनारिष्टादि, इसकी मुख्य दवायें हैं, इनमें से १ व २ दवा च्यवन प्राशावलेह अथवा अर्जुनारिष्ट के साथ सेवन करें भोजन लघु तथा पौष्टिक, खुली हवा में रहें।

ताम्र पर्पटी १ तोला का	४)
हृदयार्णव रस १ तोला	५)
हृदरोग रसायन (पेटेन्ट) २० तोला	२॥)
अर्जुनारिष्ट २० तोला	१।)

उदररोग और गुल्म

जलंधर, तिल्ली, जिगर आदि और कितने ही अन्य रोग उदर रोग के अन्तर्गत आ जाते हैं पेट चाहे जिस मर्म स्थान की उदर पीड़ा से तुलना हो, उसे उदर रोग कहते हैं।

पेट में वायु का गोला सा मालूम हो तो उसे गुल्म कहते हैं, लोह भस्म यकृत प्लीहारि लोह, शोथोदरारि लोह, महामृत्युञ्जय लोह, वज्रक्षार चूर्ण, इन्द्रायणी चूर्ण महा कल्याद्य रस, कुमारी आसव त्रैलोक्याडम्बर रस आदि औषधि उपयोगी हैं गुल्म के लिये, लवण वटी गुल्म काला नल रस, शंख वटी पूरी मात्रा में खावे भारी वायु करने वाला आहार न खाये थोड़ा कसरत भी करते रहें।

यकृत प्लीहारि (पेटेन्ट) १ तोला	३)
शोथोदरारि लोह १ तोला	१)
महामृत्युञ्जय लोह १ तोला	४)
इन्द्रायणी चूर्ण ५ तोला	।)
महा कल्याद्य रस १ तोला	२)
कुमारी आसव २० तोला	१।)
गुल्म काला नल रस १ तोला	१)

पाँडु, कामला, हलीमक

पाँडु में नाखून, आँख और चेहरा, पीला हो जाता है जीर्ण ज्वर, खाँसी, कमजोरी अरुचि भूख न लगना; आदि उपद्रव होते हैं कामला में सब चीजें पीली दिखाई देती हैं।

इस रोग पर—लोहासव प्राणवल्लभ रस, मंडूर भस्म शोथोदरारि रस आदि दवाइयां उपयोगी हैं कुमारी आसव सेवन करना भी अत्युपयोगी है। साफ हवा में रहना हल्का भोजन करना, थोड़ी कसरत भी करना चाहिये।

बच्चों का शरीर मिट्टी खाने के कारण पीला पड़ गया हो तो दिन में दो बार कुमार्यासव, तथा मृत्तिका विरेचन देना चाहिये।

मंडूर भस्म १ तोला	)
लोहासव २० तोला	१।)

मूर्च्छा

मूर्छा (बेहोशी) के लिये सिद्धमकरध्वज च्यवनप्राशावलेह, आदि दिमाग को ताकत देने वाला एवं वायु नाशक औषधियां दें, बेहोशी के समय काली मिर्च का कपड़ छन चूर्ण नाक में फूंकने से चेतन्यता आ जाती है इस रोग में हल्की पौष्टिक वायु नाशक खुराक खाना चाहिये।

सारस्वतारिष्ट—ब्रह्मी घृत देना भी हितकारी है।

सारस्वतारिष्ट	१ सेर का ५)
ब्रह्मी घृत	१० तोला २॥)

वात व्याधि, पक्षाघात, लकवा,

वात व्याधि (पक्षाघात, लकवा, गठिया आदि) आधे शरीर का बेकार हो जाना।

गांठों में दर्द होना शरीर का जकड़ जाना, कम्प मुंह का टेढ़ा तिरछा हो जाना आदि रोग वात व्याधि के अन्तर्गत हैं।

वात व्याधि में महा योगराज गुग्गुल सप्तधातु मिश्रित, वात विध्वंसरस, एकांग वीररस, समीरपन्नगरस सिद्धमकरध्वज आदि में से कोई एक दवा महा रास्नादि क्वाथ के साथ सेवन करावें, तथा महा नारायण तैल की सर्वाङ्ग में मालिश करावें।

आतशक के कारण वात व्याधि हुई हो तो केशरादि रस, या उपदंशारि बटी के साथ मंजिष्ठादि क्वाथ सेवन करे, कब्ज हो तो रात्रि को दूध में वातारि तैल पिये खुराक हल्की स्निग्ध तथा वायु नाशक खावें नमक मिर्च खटाई से परहेज

महायोगराज गुग्गुल सप्तधातु मिश्रित	१ तो० १)
बात विध्वंस रस	१ तो० ५)
एकांग वीर रस	१ तो० ४)
समीर पन्नग रस	१ तो० ३)
महा नारायण तैल	५ तो० १)

आम वात गठिया

गांठों में दर्द और सूजन हो जाना इसका प्रधान लक्षण हैं इसमें योगराज गुग्गुल सिंहनाद गु० सोंठ और गोखुरू के काढ़े के साथ दें। तथा वात व्याधि की अन्य औषधें सेवन कराबे।

दातरक्त

इस रोग में हाथ पैरों में अत्यन्त दाह ज्वर और शरीर में चकते हो जाते हैं, पहिले पहिल हाथ पैरों की अंगलियों नाक, कान शिर में प्रकट होता है घाव होकर रक्त बहने लगता है।

इस रोग में—रात को दूध में वातारि तैल पियें एवं मंजिष्ठादि क्वाथ के साथ कैशोर गुग्गुल अरसा दराज तक सेवन करें भोजन हल्का करें।

वातारि तैल	५ तो० ॥)
मंजिष्ठादि क्वाथ	४० तो० ।)
कैशोर गुग्गुल	१ तो० ॥)

उन्माद (पागलपन)

उन्माद निग्रहरस, उन्माद गजकेसरी रस, मोती भस्म, प्रवाल भस्म, ब्राह्मी घृत के साथ सेवन करें अथवा सारस्वतारिष्ट पिलावें नींद न आती हो या रोगी अधिक घबराता हो तो जातीफलादि चूर्ण या आकर्ष करा दें भोजन स्वल्प तथा हल्का दें।

उन्माद गजकेसरी रस	१ तो० १)
मोती भस्म	१ तो० ३०)
प्रवाल भस्म	१ तो० ॥)
ब्राह्मी घृत	१० तो० २॥)
सारस्वतारिष्ट	१ सेर ५)
जातीं फलादि चूर्ण	५ तो० ॥)

अपस्मार (मृगी)

एका एक हाथ पैरों का तन जाना, मुंह से झाग आना, बेहोशी, दांत कट कटाना, आदि मृगी के मुख्य लक्षण हैं, दौरे में मुँह से झाग आते और बार बार हाथ पैरों में खिंचाव होता है; इसमें घोर वेदना होती है, हिष्टीरिया में भी मृगी जैसे ही लक्षण होते हैं, परन्तु मुंह से झाग नहीं आवे।

इच्छा भेदी रस (मै० र०)

जुलाब के लिये सर्वोत्तम औषधि है, विदेशके पानीके विकार पेटका दर्द, शोथ, जलोदर, लगातार मलावरोध, पांडु कामला, आदिको शुरूआतमें यह दवा अत्युत्तम गुण दिखाती है, मात्रा २ से ३ रत्ती तक शकरमें मिलाकर खावें ऊपरसे जितने खुलठू पियेंगे उतनेही दस्त आवेंगे, अगर इच्छानुसार दस्त आगये हों तो शकर के शर्बत में दही अथवा नीबू का अर्क मिला कर पी लेना चाहिये दस्त बन्द हो जांयगे मू० १ तोला ॥)

इन्दुवटी (मै० र०)

कान के सभी दर्दों तथा मस्तिष्क सम्बन्धी विकारों पर विशेष उपयोगी है १ तोला ४)

उन्माद गज केसरी (यो० र०)

पागलपन, उन्माद, अपस्मार (मृगी) आदि में २ से ६ रत्ती तक दें, अनुपान घृत ऊपर से दूध गौका पियें मू० १ तोला का १)

उन्मादगजांकुशरस (र०सा०सं०)

सब तरह के उन्माद तथा मृगी रोग पर आश्चर्यजनक गुण करता है मात्रा ४ रत्तीसे १ माशा तक घृत से, १ तोला का मूल्य २)

उपदंश हरमलहम (स्वनिर्मित)

उपदंश व्रणोंपर लगाने से लाभ होता मूल्य ५ तोला का १)

उन्माद भंजिनी (र०सा०सं०)

उन्माद रोगके वास्ते दमनार्थ नेत्रोंमें प्रातः शहद तथा शाम को जलमें मिला अंजन करें १ तोलाका मूल्य ॥)

उपदंश कुठाररस (भा० मै०र०)

उपदंश गर्मी (आतशक) विस्फोटक बिगडा खून इत्यादि रोगों पर मात्रा ३ से ६ रत्ती तक अनुपान घृत व मलाई। मूल्य १ तोला का १)

उशीरासव (मै० र०)

रक्त पित्त [खुन गिरना] बवासीर पित्त प्रकोप, दाह, सूजन आदि रोगों पर मात्रा १ तोलासे २॥ तोला तक ताजे जल में पिलाना मू० २० तोला का १)

एरीयादि बटी, (वै० चि०)

कम ज्यादा समय पर ऋतुधर्मका जारी होना, या बिलकुल ऋतु जारी ही न होना, नष्टार्तव, या ऋतु के समय शूल होना, आदि स्त्री रोगों पर हितकारी है। मात्रा १ से ४ गोली अनुपान जल,५ तोला का मू० १।)

कृच्छ्रराक्षस तैल (भाव प्र०)

खुजली, दाद, गजकर्ण,समस्त त्वचा रोगों पर उपयोगी है। मू० ५ तोला १)

कंटकार्यावलेह (शार्ङ्गधर)

स्वांस, खांसी, कफ का बढ़ना तथा हृद रोग आदि में १ तोला से २ तोला तक चटावें,पश्चात गर्म दूध पिलावें ४० तोला का मू० १॥)

कनक सुन्दर रस (शार्ंगधर)

अतीसार, संग्रहणी, आंवके दस्तों पर उपयोगी है। मात्रा २ से ४ रत्ती शहद व अदरक के साथ मू० १ तोला का ॥)

कनकादि मलहम (वै०जी०)

कंडू त्वचा की खुश्क खुजली दूर करता है मूल्य १० तोला १)

कर्पूर रस [भै० र०]

अतीसार, संग्रहणी हैजा, बहु मूत्रता आदि रोगोंपर विशेष अनुभवी सिद्धौषधि है,अफीम के व्यसन को भी दूर करती है मात्रा १ से २ गोली अनुपान शहद मू० १ तोला १)

कालानल [भै० र०]

त्रिदोष, सन्निपात, प्लेग,इनफलूएंजा आदि रोगों पर विचित्र गुण दिखाता है। मात्रा ४ रत्तीसे १ माशा तक उष्ण जलसे, १ तोला का १॥)

कामनी मदभंजन [भै० र०]

वाजीकरण तथा वीर्य स्तम्भक है मू० १ तोला का १)

कामाग्नि संदीपन गोली [भै०र०]

कामोत्तेजक, पौष्टिक, नपुन्सकता नाशक है मूल्य १ तोला का १।)

कान्तलोह भस्म १००पुटी [र०म०]

अशक्ति, रक्तविकार निर्बलता में उत्तम है पौष्टिक कान्तिवर्धक तथा शक्ति वर्धक है। ठंडीऋतुमें सेवन करना चाहिये मूल्य १ तोलाका ४)

कांचनारगूगल [शार्ंगधर]

व्रण रक्त विकार के गुमड़ा तथा ग्रंथि माला आदि रोगों पर मात्रा १ से २ गोली सद्य जल मूल्य १ तोला का ॥)

कांचनाभ्ररस [शार्ंगधर]

रक्त विकार को दूर करने में पूर्ण समर्थहै आयुष्य एवं कान्तिवर्धक है। मात्रा २ से ४ रत्ती शहद घृत से मूल्य १ तोला का ७) रुपया

कर्पूरासव [भै० र०]

हैजा, अतीसारकी प्रसिद्ध शतशोनभूत सिद्ध औषधि है मात्रा १० से १५ बूंद एक घंटे बाद मूल्य ५ तोला १।)

कल्पतरु [भै० र०]

सर्व ज्वरोंपर रामबाण दवाहै। मात्रा २ से ४ रत्ती अनुपान गर्म जल मूल्य एक तोला का ४)

कल्याण सुन्दराभ्र [भै० र०]

प्रमेह, शोथ- समस्त उदर रोग, अम्ल पित्त, क्षय, संग्रहणी आदि की सर्वोत्तम भैषज्यामृत है मात्रा २ से ४ रत्ती मूल्य १ तोला २)

कांस्य भस्म [र० सु०]

श्वांस दमा, यकृत प्लीहा तथा उदर रोगोंपर अनुपान भेदसे देनेपर विशेष उपयोगी है। मात्रा रसे३ रत्ती मूल्य १तो०॥)

कालाभि रस, [र० सा० सं०]

विसर्प, दाहमें २ से ४ रत्ती देना चाहिये। मूल्य फी तोला १॥)

किन्नर कंठ रस [भै० र०]

गला बैठ जाना, स्वर भंग, गले की सूजन पीड़ा आदिमें २से ४ रत्ती शहद के साथ देनेपर कंठ सुरीला होजाता है मू० फी तोला का १) ५ तोला का ४)

काशीशादि वटी [यो० त०]

स्त्रियों के ऋतु सम्बन्धी दोषों पर आश्चर्यजनक गुण करता है। मात्रा २ से ४ गोली मूल्य १ तोला का ॥)

कीटमर्दरस (भै० र०)

उदर क्रिम के नष्ट करने में अद्भुत सिद्ध चमत्कारी औषधि है। मात्रा तीन से छः रत्ती तक गर्मजल से मूल्य एक १ तोला का ॥)

कुंकुमादि तैल (भै० र०)

इसकी मालिश से मुख चन्द्रमा के तुल्य उज्वल हो जाता है तथा शारीरिक कान्ति बढ़जाती है त्वचा रोग नष्ट होजाते हैं मूल्य ५ तोला का २)

कुटजारिष्ट (भै० र०)

संग्रहणी उदरातिसार की परम सिद्ध भेषज है मात्रा १ तोला से २ तोला तक ताजे कूप जल से २० तोला का १।)

कुटजावलेह (शारंगधर)

खूनी बवासीर की खास दवा हैं तथा अग्नि दीपक है मात्रा १ से २ तोला तक ४० तोला का मू० १।)

कुमारी आसव (शारंगधर)

उदर सम्बन्धी सभी रोगों पर जैसे तिल्ली [कलुहया] यकृति वृद्धि गुलम रोग आदि में १ तोला से ३ तोला पानी में मिलाकर देना चाहिये मूल्य २० तोला का १)

गृहणी कपाट रस (भै० र०)

संग्रहणी व अतीसार में शहद के अनुपान में २ से ४ गोली देने से पूरा लाभ होता है मूल्य १ तोला का ५) रु०

गोक्षुरादि गूगल (शारंगधर)

प्रमेह के वास्ते विशेष लाभ पहुंचाता है, मात्रा १ से २ गोली तक देता जाकिये ऊपर गोदुग्ध पीवे, मूल्य २०तोला का १।)

गुल्म काला नल (भै० र०)

गुल्मवायु गोला के दर्द में चिल्लाते रोगी को शीघ्र गुण दिखाता है, १ तोला का १)

गंधक रसायन (भा० भै० र०)

त्वचा सम्बन्धी तथा रक्त दोष पर आशुगुणकारी है मात्रा १ माशा से १॥ माशा तक मूल्य १ तोला का ॥)

गर्भेन्दु शेखर (भै० र०)

गर्भिनी स्त्री के उदर खांसी, संग्रहणी, अतीसार खून गिरना गर्भपात होना आदि रोगों पर अच्छा गुण दिखाता है, मात्रा २ से ३ रत्ती शहद में, मूल्य १ तोला ८॥)

गंडीरासव (भा० भै० र०)

गुल्म रोग, भगंदार, शोथ, अर्श को नाश करने में पूर्ण समर्थक है। मात्रा २ से ३ तोला तक मूल्य २० तोला का१॥)

गुग्गु ल्यासव (भा० भै० र०)

समस्तरोग उदररोग, स्वांस, प्रमेह, आदि रोग में भोजन के आदि मध्य और अन्त में अथवा हर दूसरे ग्रासके पश्चात् सेवन करने से चमत्कारिक गुण करता है मूल्य २० तोला का १॥)

गंडमाला कंडनरस [यो० र०]

गलगंड, कंठमाला, व्रणरक्त बिकार में ३ से ७ रत्ती तक घीसे कामत १ तोला का १) ५ पांच तोला का ४)

चनाक्षार [स्वनिर्मित]

गुल्मशूल, प्लीहा, आदि में ३ माशा २॥ तोला जल में मिलाकर पिलावें कीमत १० तोला का ३)

चन्दनासव [भैषज्य रत्ना वली]

पित्तज प्रमेह दाह पित्तरोग आंखों की जलन खूनी बवासीर पर १ से २ तो० तक पिलाना हितकारी है ४० तोला का२)

चन्द्र प्रभा गुटिका [शार्ङ्ग]

सर्वप्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी अन्नवृद्धि शूल स्वांस खांसी बवासीर प्लीहा भगंदर स्त्रियों के ऋतुदोष सम्बन्धी आदि विकार सभी नष्ट होते हैं मात्रा २ से ४ गोली शहद घृत से मूल्य १ तोला का १)

चन्द्रांस गुटिका (भै०र०)

स्त्रियों के श्वेत व रक्त प्रदर, सूतिका रोग गर्भिणी रोग आदि में परम हितकारी है, मात्रा २ से ४ गोली शहदघृत से ऊपर से दूध पियें मूल्य एक तोला का २॥)

चन्द्रोदय वर्ति [भ०प्र०]

आंखकी सुर्खी, पटल फूला आदि नेत्र रोगों पर पानी में घिसकर अंजन से आराम होता है, कीमत १ तोला का ॥)

चित्रकहरीतकी अवलेह भै र०

खांसी, मंदाग्नि गुल्म उदावर्त, हृदय रोग आदि में विशेष उपयोगी है, मात्रा १ से २ तोला चटाकर ऊपर से दूध पिलाना चाहिये कीमत ४० तोला का १॥)

चिंतामणि चतुमुख [भै० र०]

अपस्मार, [मृगी] कम्पवात, पक्षाघात सन्निपात, अर्धांगवायु, उन्माद मन्यास्तम्भ आदि रोग में आशु गुण करती है एवं ८० प्रकार के वात रोगों को नष्ट करने में पूरी समर्थक है, कीमत १ तोला का १०)

च्यवन प्राशावलेह [शारंगधर]

मात्रा १ से २ तोला ऊपर दूध पीकर पान खावे, गले के रोग, पित्तदोष, मलावरोध मस्तिष्क की कमजोरी शिर दर्द, मूत्ररोग, वीर्यदोष तथा स्त्रियों के ऋतु दोष में लाभदायक है एवं बल, कान्ति वीर्य, ओज, आयुष्य बर्द्धक है १ सेर का ३) १० सेर का २५)

चोपचीन्यादि चूर्ण यो० र०]

प्रमेह रक्तदोष उपदंश आदि रोग पर इसे ६ माशा तक शहद तथा घृत में दें कीमत १० तोला का ॥≠)

चौसंठ पहरी पीपल

२ से ४ रत्ती शहद में खावें, श्वांस खांसी ज्वर आदि पर देने से लाभ दायक है कीमत ५ तोला का १॥)

छर्दिअन्तक [यो० त०]

किसी भी दोष से उत्पन्न हुई वमन इसके सेवनसे बन्द होजाती है मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद में दें १ तोला का २)

जय मंगल रस (भै० र०)

यह महौषधि सर्व ज्वरों पर रामवाण हैं आयुर्वेद के अन्तर्गत वैसे बहुतसी औषधियां ज्वर नाशकहैं परन्तु इससे बढ़कर आश्चर्य जनक कोई दवा नहीं है कारणकि स्वर्ण व रौप्य इसके खास उपादान हैं मात्रा १ से २ रत्तीकी ४रत्ती भुने सफेद जीरा को पीस कर मिला लें और शहद में चटावें कीमत १ तोला का १०)

ज्वाला नल (र० सा० सं०)

बिना जुलाब लिये यह दवा पेटके समस्त विकारों को शमन करती है विशेष कर जलंधर में कुटकी द्वारा विरेचन देकर पश्चात सेवन कराईयेगा पूर्ण लाभ होगा मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद के साथ। कीमत १ तोला का १।)

जीर्ण ज्वरारि रस (र०र०समु०)

मात्रा २ से ४ रत्ती शहद से दें, सर्व प्रकार के जीर्णज्वर में लाभ दायक है। कीमत १ तोला का १)

जात्यादि [illegible] (शार्ङ्गधर)

व्रण गुम[illegible]ड़ आदि पर आश्चर्य जनक गुण करता है १० तोला १।)

जवाखार

सब प्रकार की खांसी व मूत्रकृच्छ पर उपयोगी है मूल्य दस तोला ३॥)

जलोदरारि (भै० र०)

२ से ४ गोली गर्म जलमें देना चाहिये इससे जुलाब होकर जलोदर के सर्व विकार दूर होजाते हैं मूल्य १ तोला का ॥)

ताम् भस्म (र० रा० सुं)

मात्रा १ से ३ रत्ती शहदसे दें। कास दमा, खांसी, हृदय का दुखना, धड़कना सूजन, ज्वर, यकृत वृद्धि पर विशेष उपयोगी हैं। १ तोला का ॥)

तुत्थ भस्म (नीला थोथा) भस्म (र० मा०)

सर्प दंश, अफीम की जहर उतारने में वमन करावें उपयोगी है मात्रा ३ से ६रती तक गर्म जल से मूल्य १ तोला का ॥)

त्रिपुर भैरव रस (भाव० प्र०)

ज्वर खांसी विषम ज्वरों पर लाभ करता है मात्रा २ से ६ रत्ती तक शहद में। मूल्य १ तोला का ॥।)

त्रिभुवन कीर्तिरस (यो० र०)

विषमज्वर, इकतरा, द्विजारी तिजारी, चौथइया आदि ज्वरों पर गुण दायक है। मात्रा २ से ६ रत्ती तक मूल्य फी तो० ॥)

त्र्यम्बकाभ्र (भै० र०)

स्वरभंग, वायु, कफसे, गर्मी से या भाषण देनेसे, गानेसे बैठा हुआ गला खुल जाता है एवं हिचकी, स्वांस, बवासीर, क्षय रोग में उत्तम है १ तोला का १)

त्रैलोक्य चिन्तामणि रस (यो० र०)

सर्वज्वर, विषमज्वर, सर्व उदर रोग तथा मूत्र रोग में हित करता है मूल्य १ तोला का १०) प्रमेह रोग पर भी आशातीत गुण करता है।

त्रिफलादि घृत (भ० प्र०)

नेत्र दुखना, तिमिर, पटल आदि समस्त नेत्र रोगपर परीक्षित है, दर्द शिरको लाभ करता है। मात्रा १ तोला से २ तो० तक चटाय ऊपर से दूध पिलाना चाहिये १० तोला का २)

द्राक्षासव (यो० र०)

बवासीर, उदावर्त, रक्त गुल्म, रक्त उदर रोग, पित्तज रोग, गले के रोग कफ रोग आदि में गुण प्रद मालूम हुआ है मात्रा १॥ से २ तोला ताजे कूपजल में कीमत ५० तोला का २)

दन्तवर्ती (भै० र०)

कांसे की थाली पर पानीमें घिस कर आंख में आंजने से आंखका फूला, पटल, तिमिर, मोतिया आदि मिट जाताहै मूल्य एक तोलाका २)

देवदार्वादि क्वाथ (शार्ङ्गधर)

सूतिका रोग, प्रसूता स्त्री का ताप, खांसी, दमा, अफरा, कम्पवात, शिर दर्द, वातव्याधि आदि में उत्तम है १॥ तोला जव कुट द्रव्यों को ४० तोले जल में पकाने से जब १० तोला शेष रहे तब छानकर ५ ५ तोला ६-६ घंटे बाद देना चाहिये। १० तोला का दाम ॥)

दशमूलारिष्ट (भै० र०)

प्रसूत रोग, कमर का दर्द, हिष्टीरिया कमजोरी, शोथ, संग्रहणी आदि अनेक रोगों में व्यवहृत होता है मात्रा एक तोलासे १॥ तोला तक जल मे मिलाकर २० तोला का १॥) ८० तोला ४)

नाग भस्म काली (र० मा०)

पौष्टिक प्रमेह नाशक औरतों के प्रदर आदि में दें मात्रा २४ रत्ती शहदसे मूल्य एक तोला का १) ५ तोला २॥)

नितम्बोदय रस (भै० र०)

सब प्रकार के मस्से, तथा अर्श के मस्से नाशनार्थ ३ से ६ रत्ती गाय के घी में चटाय ऊपर से बकरी के मट्ठे [छाछ] को पिलाना चाहिये एक तोला का १)

नागार्जुनाभ्र (र० सा० सं०)

उदर शूल, बवासीर, खून गिरना, सूजन, अम्लपित्त, हृदरोग, आदि में विशेष लाभ पहुंचाती है कीमत १ तोला का १॥)

नारायण चूर्ण (वै० जो०)

समस्त उदर रोग नाशनार्थ नारायण चूर्णका सेवन करना चाहिये तथा समस्त वातरोगी से पीड़ित रोगी नारायण तैल का सेवन करें। संसार के भय से दुखित मनुष्यो! नारायण का भजन करो। मात्रा चूर्ण की ३ माशे से ४ माशे तक उष्ण जल से। मूल्य दस तोला का ॥)

नरसिंह चूर्ण (भै० र०)

पौष्टिक, वीर्य वर्धक, स्वादिष्ट है। मात्रा ६ माशा शहद में ऊपरसे दूध पिये। १० का १) ८० तोला का ५)

पारद भस्म लाल (र० सं०)

स्वांस, खांसी, हृद रोग नाशक तथा रक्तशोधक तथा शक्ति प्रद है एक तोला का मूल्य २) ५ तोलाका ६।)

पंचामृत लोह मंडूर (भै० र०)

पांडुरोग, कामला, जीर्ण ज्वर, गुल्म, हृदय रोग आदि में २ रत्ती से एक माशा तक दें, एक तोलाका ॥)

पुष्प धन्वा (भै० र०)

मात्रा २ से ६ रत्ती शहद घृत से। पौष्टिक, कामोत्तेजक, तथा बल, वीर्य, आयुष्य वर्धक है। मूल्य १ तोला का २)

पंचामृत पर्पटी रस(वै० जी०)

मात्रा २ से ६ रत्ती तक शहद में देना चाहिये। संग्रहणी, जीर्णज्वर, उदररविकार पांडुरोग. अम्लपित्त, अर्श और मंदाग्नि में अनुपान भेद से अपूर्व गुण दिखाती है। मूल्य एक तोला का ॥)

पुष्पानुग चूर्ण (भै० र०)

मात्रा ३से ६ माशा तक दूधसे स्त्रियों के सर्व प्रदर एवं पुरुषोंके प्रमेह रोगों पर अपना विलक्षण प्रभाव दिखाता है मूल्य दस तोला का ॥)

पित्त भंजी रस वृहत (भै० र०)

पित्त प्रकोप,वमन, अम्लपित्त, दिमाग में जलन प्रतीत होना, गर्मीका उपद्रव एवं रक्तज अर्श [बवासीर] मे विशेष गुण करता है मात्रा २ से ४ रत्ती शहद मक्खन से, या शकर घृतसे मूल्य एक तोला ५)

पूर्ण चन्द्रोदय [स्वर्ण घटित मकरध्वज]

निर्माण विधि व गुण—

पलंमृदु स्वर्ण दलं रसेन्द्रात्पलाष्टकम् घो डुय गंधकस्य। शोधैः सुकार्पास भवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारकाद्रिः॥ तत्काच कुम्भे निहतं सुगाढं [illegible] भिर्दिवसत्रयंच। पचेत्क्रमागौ सिकिताख्य यंत्रे ततोरजः पल्लव राग रम्यम॥ मदोन्मदानां प्रमदा शतानां गर्भादिकत्वं श्लथयत्यकांडे बली पीलत नाशक स्तनु भृतां वयः स्तम्भनः। समस्त गद खंडनः पचुर रोग पंचाननःगृहेपि गृहपेर्भवत्यस्य

चन्द्रोदयसपञ्चशरदर्पितो मृगदृशां भवेद्वल्लभः ॥

हर प्रकार की अशक्ति, हस्तमैथुन से उत्पन्न हुई नपुन्सकता, अति स्त्री सम्भोग से धातु क्षीणता, संधि पीड़ा, गुह्य नसोंकी शिथिलिता आदि भयंकर रोग नष्ट होकर मनुष्य पूर्ण नौ जवान होकर स्त्री रमणमें क्रिया कुशल होता है, एवं इसके सेवन से दिमाग, हृदय, फुफ्फुस, यकृत, वीर्याशय मूत्रनली, जनेन्द्रिय आदि शारीरिक समस्त अवयव अपना अपना कार्य अच्छे प्रकार संचालन करने लगते हैं, स्त्रियों के श्वेत रक्त प्रदर सूतिका रोग, आदि दूर होते हैं बालकों वृद्धों के समस्त विकार नष्टहोते हताश हुये नपुन्सक रोगियों को अमृत स मान है, अनुपान भेद से सर्व रोग नाशनमें पूर्ण समर्थ है।

नोट—यह रस दो प्रकार का मिलता एक तो पिसा हुआ दूसरा खड़ा, जो कस्तूरी जलमें घोंटकर रक्खा जाता है व पिसा दूसरा खड़ा [बिना पिसा] जैसा शीशी में से उपलब्ध होता है वैसा ही। मगाने वा ३ सज्जनों को जैसे की आवश्यकता हो लिखा करें—

पूर्णचन्द्रोदय त्रिगुण वलि जारित स्वर्ण घटित

खड़ा अथवा पिसा हुआ मात्रा एकसे दो रत्ती तक एक तोला का मूल्य ६)

पूर्ण चन्द्रोदय [षड गुण वलिजारित स्वर्ण घटित मकरध्वज]

खड़ा या पिसा मात्रा एक से दो रत्ती एक तोला का १५) ५ तोला का ५०)

प्रताप लंकेश्वर रस [यो० र०]

मात्रा दो रत्ती से एक माशा तक शहद या घृत से सूतिका स्त्री के सभी रोगों में दिया जाता है मूल्य एक तोला का ॥) ५ तोला का १।)

प्रदरारि लोह [भै० र०]

स्त्रियों के समस्त प्रदर असुन्दर को नष्ट करता है ऋतु दोष एवं योनि शूल में विचित्र गुण करता है मात्रा ३ रती से एक माशा तक शहद में एक तोला का २)

प्रवाल भस्म श्वेत[मूगा भस्म अग्नि पक्व]

मन्दाग्नि खासी हृद्रोग में मात्रा ३ से ६ रत्ती शहद घृत या शकर से कीमत एक तोला का ॥)

प्लीहारि रस [र०स०सं०]

प्लीहा [तिल्ली] यकृत [लीवर] और उदर रोग में जल से एक तोला का १।)

[फल घृत शारंगधर]

मात्रा एक से दो तोला दूध में पिलावें ऋतु स्नाता स्त्री को एक सप्ताह पर्यन्त खिलाने से गर्भाधान होता है स्त्रियों का वन्ध्य व दोष एवं पुरुषोंका वीर्यक्षय रोग नष्ट होकर आनन्द देताहै कीमत दस तोला का २) ८० तोला का ७)

बंग भस्म श्वेत [र०स०सु०]

प्रमेह निर्बलता वातव्याधि में मात्रा एक से दो रती शहद में दे एक तोलाका॥)

बंगेश्वर वृहत् [लाल व काला]

[भैषज्य रत्नावली]

मधुमेह, प्रमेह पेशाब में रक्त आना आदि रोगोंपर दो से चार रती तकशहद घृत से दें एक तोला का २)

बहु मूत्रान्तक रस [भैषज्य रत्नावली]

मधुमेह, पेशाब का अधिक आना स्त्रियोंका सोमरोग इससे दूर होता है मात्रा २ से ४ रत्ती शहद या मक्खनमें एक तोला का ८)

वृहत कुष्माण्ड रसायन [भैषज्य रत्नावली]

हैजा, अत सार, संग्रहणी मन्दाग्नि में २ से ८ रती तक उष्ण जल से एक तोला का २)

बिन्दु तैल [भैषज्यरत्नावली]

पेटका दर्द, सूजन, मलावरोध में विशेष गुणकारी है मात्रा ३ से १० बूंद गर्म जल में देना चाहिये ५ तोला का १॥)

ब्रह्मास्त्र रस (ल० यो० त०)

सन्निपात, निमोनियां इन्फलूएन्जा आदि रोग पर सुंघाना, आंजना, एवं २ से ६ रत्ती तक गर्म जल में पिलाना चाहिये। एक तोला का ५)

ब्राह्मी घृत [यो. त.]

उन्माद, पागलपन, अपस्मार [मृगी] आदिमें एकसे दो तोला चटावें ऊपरसे गो दुग्ध पिलावें दस तोलाका २॥) ८० तोला८)

भगंदरारि रस

भगंदर नासूर में दो से चार रती शहद में दें एक तोला का १॥)

भक्तोत्तरीय चूर्ण [भैषज्य रत्नावली]

अन्नवृद्धि, संधिवात, शूल उदर रोग, आदिमें ४ रतीसे १॥ माशा तक दें ५ तोला का १)

मदनानन्द मोदक [भैषज्यरत्नावली]

पौष्टिक, कामोत्तेजक, वीर्यवर्धक है४० तोला का ५) एक सेर का ८)

मदन कामेश्वर रस [शारंगधर]

कामोत्तेजक, पौष्टिक, वीर्य, बल, कान्ति आयुष्य वर्धक, औरतों का ऋतु दोष पुरुषों का वीर्य दोष दूर करने में अपनी शानी नहीं रखता। मात्रा दो से चार रत्ती मक्खन में एक तोला का १०)

मंडूर वटिका [शारंगधर]

कामला, पांडु, ववासीर सूजन में एक एक गोली दें शहद से। एक तोला का ॥) ५ तोला का १।)

मंडूर भस्म [र०सा० सु०]

पांडुरोग, ववासीर, यकृत वृद्धि आदि उदर रोगों पर ३ से ६ रती तक एक तोला का ॥)

मल्ल चन्द्रोदय [र०सा०सं.]

श्वांस, कांस अशक्ति आदि में एक से दो रती शहद घृतसेदो ऊपरसे दूध पिये। एक तोला का २)

मल्ल भस्म श्वेत र. रा. सु.

१ रत्ती सांसी विषमज्वर में एक रत्ती घृतमें दो ऊपर से दुग्ध पिये १तोलाका २)

महाकाशीशादि तैल [भावप्रकाश]

अर्श के मस्सों तथा नासूर भगंदर आदि में विशेष उपयोगी है दश तोलाका ३॥) रुपया

महागंधक [भेषज्यरत्नावली]

संग्रहणी तथा सूतिकारोग व बालकों के समस्त रोगों पर लाभदायक है। मात्रा एक से बारह रती तक एक तोला का ॥)

महा ज्वरांकुशरस [भेषज्यरत्नावली]

विषमज्वर, मलेरिया ज्वर में किनाइन को जगह उपयोग कीजियेगा। मात्रा दो से ४ रती एक तोला का ॥) ५ तोला का २) रुपया

महातालकेश्वररस [शारंगधर]

कुष्ट, कोढ़, खून बिगाड़, गलितकोढ़ श्वेत कुष्ट दाद खुजली गजकर्ण आदि त्वचा रोगों में ३ से ६ रती तक घृतसे दें एक तोला का ५)

महानारायण तैल [भावप्रकाश]

आमवात, सन्धिवात, अर्दित वात, पक्षाघात आक्षेप कम्पवात आदि ८० प्रकार के वात रोगों में बीससे पच्चीस बूंद गर्मदूध से पिलाना, तथा शरीरमें लगावें भी। दश तोला का २)

महापंचनिम्बचूर्ण [भैषज्य रत्नावली]

खुजली विदेशके जल विकार रक्तदोष आदि में ३ माशे से ६ माशे तक गर्म जल से खावें दस तोला का ॥)

महा युक्तांजन—भावप्रकाश

आंखों में आंजने से, आंखों के पटल, तिमिर फूला आदि सभी नेत्र विकार नष्ट करता है एक तोला का ४)

महामृत्युन्जय रस— भै. र.

भयङ्कर सन्निपात, प्लेग, न्यूमोनियां शीतज्वर त्रिदोष पर आशु गुण करता है। मात्रा दो से ४ रती अद्रक रस अथवा अभयादि क्वाथ से एक तोला का ३)

महायोगराज गुग्गुल सप्त धातु मिश्रित —शारंगधर

८० प्रकार के वात रोग, सन्धिवात, आमवात, पक्षाघातादि एवं मृगी उन्माद, बवासीर वीर्यदोष रजोदोष प्रभृति रोगों पर रामबाण है वात रोगों में मात्रा दो से ६ गोली महारास्नादि क्वाथसे तथा अनुपान भेद से अन्य रोगों पर लाभप्रद है एक तोला का १) दस तोला ८)

महारास्नादि क्वाथ —भा. प्र.

अस्सी प्रकार के वात रोग दलन करने में पूर्ण समर्थ है मात्रा एक तोला से १॥ तोला तक क्वाथ विधि से पिलावें ४० तोला का १।)

महाराज मृगांक रस —यो.र.

क्षय, संग्रहणी, पांडुरोग की विचित्र गुणशाली सिद्धौषधि है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत में देना एक तोला का ५)

महालक्ष्मी विलास रस— भै.र.

पौष्टिक, कामोत्तेजक, वीर्य, बल, कान्ति वर्धक तथा अंड वृद्धि मधुमेह, क्षय, स्त्रियों के समस्त विकारों पर लाभदायक है मात्रा दो से ३ रती अनुपान भेद से उपरोक्त सर्व रोग हनन करता है एक तोला का ५)

महा लोकनाथ रस —भै. र.

क्षय, श्वांस पांचो प्रकार की खांसी, हृदय रोग आदि में लाभ करता है मात्रादो से४ रती शहद घृतसे एक तोला का २)

महा सुदर्शन चूर्ण —भै. र.

शीत ज्वर, फसली ज्वर, जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर नाना देशके जल विकार शान्त होते हैं मात्रा दो तोला को आधसेर पानी में औटाकर अष्टमांश शेष रहनेपर पिलावें दस तोला का १) ८० तोला का ४)

मुक्ता भस्म —र. मा.

मस्तिष्क की कमजोरी हृदय का निर्बलता, क्षय रोग जीर्णज्वर, आदि रोगों पर रामबाण हैं एक तोला का ३०)

मूत्र कृच्छारि— भै. र.

दो से ४रती शहद या मक्खनमें देनेसे मूत्रकृच्छ में लाभ करताहै एक तोलाका१)

मृत संजीवनी सुरा —भै. र.

आधा चोला में दो तोला जल मिला कर पिलाने से पौष्टिक शक्ति, वीर्य,कांति बढ़ानेमें पूर्ण लाभकारी है अस्सी तोला का १२) रुपया

मोफरवा यूनानी चाटण (भै०र०)

स्वर्ण रौप्य इसका खास उपादान हैं पौष्टिक, कामोत्तेजक बल वीर्य वर्द्धक हैं ४० तोला का ८)

यशद भस्म सफेद लाल

मस्तिष्क, हृदय शूल तथा मूत्राशयके दर्द में हितकारी है १ तोला का ॥)

रत्न गिरी रस (भा० भै० र०)

तीव्र दाह युक्त ज्वर, ज्वर की उष्णता में २ से ३ रत्ती शहद में दें ज्वर उतारनेमें आयुर्वेद में इससे बढ़कर कोई अन्य औषधि नहीं है एक तोला का १०)

रस माणिक्य —भै०र०

वीर्य दोष, रक्त दोष, को दूर कर अशक्तिता में पूर्ण सहायक होता है मात्रा१ से २ रत्ती १ तोला का २)

रक्त पित्त कुलकंडन रस[यो० र०]

किसी भी अंगसे रक्त गिरने की एक मात्र अव्यर्थ औषधि है रक्त पित्त रोगपर आश्चर्य जनक प्रभाव करता है मात्रा दो से ४ रत्ती १ तोला का ४)

रस पर्पटी [भै० र०]

संग्रहणी, अतीसार की परमोत्तम औषधि है मात्रा २ से ४ रत्ती १ तोला १)

रसेन्द्र गुटी—भै. र.

मुख, दांत गले के सर्व रोगों में २ से ४ गोली दूध के साथ सेवन करना चाहिये। १ तोला का २॥)

रस सिन्दूर [भैषज्य रत्ना वली]

हृदयरोग, क्षयरोग, मूत्ररोग, स्त्रियों के समस्त रोग पर अनुपान भेद से विशेष गुणकारी है मात्रा २ से ४ रत्ती। १ तोला का १।)

रौप्य भस्म [र. रा. सु.]

समस्त वीर्यदोष व अशक्ति में एवं अनुपान भेद से सर्व रोग में लाभदायक है मात्रा दो से तीन रत्ती घृत से एक तोला का २)

लीला बिलास रस (भै० र०)

गुल्म, हृदय रोग, अम्लपित्त आदि में दो से चार रत्ती सेवन करना चाहिये मू० १ तोला का १)

लोह पर्पटी रस —भै. र.

अर्श [बवासीर] मलावरोध व उदर रोगों में दो से चार रती शहद में देना चाहिये। १ तोला का मूल्य १।)

लक्ष्मणा लौह —भै. र.

बन्ध्या रोग गर्भाशय के समस्त विकारादि कहां तक कहें स्त्रियों के समस्त रोगों के दमनार्थ परमोत्तम औषधि है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत से ऊपर से गो दुग्ध सेवन करना चाहिये १ तोला का ४)

लौह भस्म सौपुटी —र० मा०

कामोत्तेजक, कान्ति, बल वीर्य, एवं आयुष्य बर्धक है मात्रा १ से दो रत्ती श हद व घृत से मू० १ तोला का ५)

लौह भस्म [र०रा०सु-]

यकृत, प्लीहा वृद्धिनाशक तथा रक्त बर्धक है १ तोला का।)

लोह रसायन [शार्ङ्ग]

पांडु कामला हलीमक मेदोवृद्धि तथा समस्त उदर रोग नाशक है मात्रा दो से चार रत्ती अनुपान शहदसे १ तोलाका २)

लोहासव [शारंगधर]

समस्त उदर रोग, शोथ, बवासीर हृदय रोगादि में १ से १॥ तोला जल में पिलानेसे पूर्ण गुण दिखलाता है बीस तोला की कीमत १।)

लाक्षादि तेल —शारंगधर

इसकी मालिशसे जीर्ण ज्वर, मज्जागत ज्वरादि दूर होते हैं तथा हाथ पैर की जलन व पटकन तत्काल ही शान्त होती है ५ तोला का १)

लवंगादि चूर्ण [भै. र.]

जीर्णज्वर क्षय सर्व प्रकार की खांसी आदि रोगों को निर्मूल करता है ५ तोला का १) मूल्य है

बराटिकाभस्म[पीली कौड़ीकी]

ये भस्म समस्त उदर रोग नाशक है। मात्रा २से ४ रती शहद व अदरक स्वरस में १ तो०।)

वज्रक्षार चूर्ण [भै० र०]

अजीर्ण मन्दाग्नि शूलादि रोगों में १ माशा से ३ माशा तक पानी के साथ सेवन करने से जादू कीतरह असर करता है दस तोला का १)

वसन्त कुसुमाकर [शार्ङ्गधर]

प्रमेह मात्र की अव्यर्थ औषधि है तथा स्त्रियों के बन्धत्व रोग को भी दूर करता है मात्रा १ से दो गोली मू० १५) तोला

वात गजांकुश [भै० र०]

अस्सी प्रकार के वात रोगों को इस प्रकार दमन करता है जैसे मनवाले हाथी को अंकुश। मात्रा ३ से ६ रत्ती अनुपान शहद व घृत से मू० १ तोला १)

वृहत वासावलेह [भै० र०]

रक्त,पित्तक्षय पांचों प्रकारकी खांसी व हृदय रोग को लाभ करता है। मात्रा १ से १॥ तोला ऊपर से गो दुग्ध पिलावे मू० ४० तोला २)

वासारिष्ट —स्वनिर्मित

भयंकर खांसी व दमा को मिटाने के लिये शतशोन भूत है मात्रा १ से १॥ तो० अनुपान अपामार्ग क्वाथ से मू० ५ तो०१)

विजय पर्पटी रस [भै०र०]

पांडु, कामला, संग्रहणी शोथ, क्षय व समस्त उदर रोग को दूर करता है २से३ रती शहद से १ तोला का १०) मूल्य है

बाहु शाल गुड़ [शार्ङ्गधर]

सर्व प्रकार की अर्श को रामबाण औषधि है मू० ४० तोला का २)

विलासिनी वल्लभपारा -वैद्यजी०

दो से चार रती मक्खन में चटाकर ऊपर से गो दुग्ध सेवन करावे। वीर्य स्तम्भन कर महान आनन्द का अनुभव करता है एक तोलाका १।) मूल्य है

वृद्धि बाधिका वटी (भै० र०)

अन्त्रवृद्धि व अण्ड वृद्धि की अद्वितीय औषधि है मात्रा ३ से ५ गोली गर्म जल से। एक तोला का मूल्य १) है

ब्रण गजांकुश रस [भै० र०]

सर्व प्रकार के फोड़े कण्ठमाला व भगन्दर में चार रत्ती से १॥ माशा तक घृत में चटावे एक तोला का १)

विषतापहर रस --वैद्यजीवन

सर्व प्रकार के ज्वरों के दूर करने की अनुपम औषधि है मात्रा एक से दो गोली गर्म जल से एक तोला मूल्य १)

शंखद्राव (भै० र०)

प्लीहा और यकृति वृद्धि तथा पेट के सर्व प्रकार के शूल व अजीर्णमें दो से तीन बूंद पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये। दस तोला का ४) मूल्य है

शंख भस्म [र० सा० सं०]

समस्त उदर विकार व खांसी पर लाभदायक है मात्रा दो से चार रती शहद व अदरक में एक तोला का दाम।)

शंख वटी वृहत (भै० र०)

उदावर्त, अनाह, हैजा, शूल अजीर्ण में १ गोली पानी के साथ देने से लाभ होता है एक तोला का दाम ॥)

शांकर लौह [भा० प्र०]

सर्व प्रकार का खूनी बादी बवासीर के मिटाने में रामबाण है [इसको शिव जी ने नारद के प्रति सब प्रकार की बवासीर को निर्मूल करने के हेतु वर्णन किया था] मूल्य एक तोला ५)

शीत भञ्जी रस (भै० र०)

सर्व प्रकार के शीतज्वर तथा पारी से जाड़ा देकर आने वाले ज्वरों को शीघ्र ही आराम करता है। मात्रा दो से चार रत्ती पान तथा अद्रक स्वरस में देना एक तोला का ॥) है

शुद्ध शिलाजीत सूर्य तापी

समस्त वीर्य दोष तथा बीस प्रकारके प्रमेहों को नष्ट करता है। मात्रा ३ से ६ रत्ती गो दुग्ध से शीत ऋतु में सेवन करना चाहिये। कीमत एक तोला का ॥)

शिला चन्द्रोदय [र० राजमृ०]

श्वांस हृदय रोग फुफ्फुस की अशक्तिता आदि में एक से दो रत्ती घृत में देना हितकारी है दाम एक तोला का २)

शुक्र वल्लभ रस (भै० र०)

समस्त शुक्रदोष [वीर्य दोष] को दूर कर वीर्य स्तम्भन करता है दाम एक तोला का ५) अनुपान दूध के साथ ३ रत्ती मक्खन में दें

श्वांस कालेश्वर [भै० र०]

स्वांस खांसी हिक्का क्षय रोगमें हित कारी है दो से चार रत्ती शहदसे एक तो० का मू० २)

श्रृंगाराभ्र

हृदय रोग, खांसी, अशक्ति आदि में ३ से ६ रत्ती शहद से चटाने से लाभ करताहै मूल्य एक तोला का १।)

शूलगज केशरी

किसी भी अंग का शूल हो तो दो से चार रत्ती शहदसे चटावे ऊपर से गर्मजल पिलावें तत्काल शूल हरण करता है एक तोला का १।)

शोथ शार्दूल तैल [भै० र०]

समस्त प्रकार की सूजन में लगाने से गुण दिखाता है मू० दस तोला का २।)

शोथ दावानल [भै० र०]

उदर रोग व सूजन में दोसे चार रत्ती मूल्य १) तोला

श्वांस कुठाररस [यो० र०]

स्वांस खांसी की परमोत्तम औषधि है मात्रा ३ से ६ रत्ती अद्रक शहद में एक तोला का दाम ॥)

श्वेत कुष्ट हर लेप (शारंगधर)

इस लेप को गौमूत्र में पीस श्वेत मंडलों पर लेप करने से श्वेतता मिट जाती है ५ तोला का १)

संजीवनी वटी (शारंगधर)

अजीर्ण, विशूचिका, सन्निपात, सर्प दंश पर उपयोगी है मात्रा ३ से ६ गोली पानी से देना चाहिये एक तोला का ।)

सन्निपातभैरव रस [भै० र०]

सर्व प्रकार के सन्निपात रोग में लाभ दायक है मात्रा एक से चार रत्ती शहद अद्रक रसमे । एक तोला का ५)

सर्वस्त्री दाहांतकवटी [ल-यो०त०]

सगर्भा स्त्रियों के सर्व रोग, हिस्टीरिया, जनेन्द्रिय रोग आदि २ सभी रोग दूर करने में पूर्ण लाभदायक है । मात्रा ३ से ६ गोली पानी से दें एक तोला का १।)

सर्वज्वरहर लोह वृहत (भै०र०)

इस दिव्यौषधि से सर्वप्रकार का ज्वर सिर्फ सात दिन मे नष्ट होता है मात्रा एक से दो गोली । पीपल के चूर्ण व पुरानेगुड़ के साथ दें एक तोला का १०)

सर्वज्वर पर्पटी रस (भै० र०)

पक्षाघात, [लकवा] कम्पवात, मृगी उन्माद हिस्टीरिया आदि ८०प्रकारके बात रोगों पर अनुपान भेद से चमत्कारिकगुण करती है । मात्रा दो से ४ रत्ती शहद में एक तोला का ४)

सारस्वता चूर्ण (भै० र०)

मात्रा एक माशा से ३ माशा तक घृत या मक्खन में मिलाकर चटाने से बुद्धि मेधा स्मृति बढ़ती है। मस्तिष्क बलवान होता है दस तोला का १।)

स्वर्ण घटित सारस्वतारिष्ट भै० र०

उन्माद, अपस्मार, योषापस्मार नाशक तथा बाजीकरण है . मस्तिष्क को बलवान बनाता है ५) एक सेर

सारिवाद्यासव (भै० र०)

स्त्रियों के ऋतु विकार तथा रक्त विकार, उपदंश आदि रोगों पर देना चाहिये खून साफ करने के वास्ते सारसा पेरला से भी बढ़कर है । बीस तोला १।)

सुवर्ण शृंग भस्म (र०म०)

खांसी, स्वांस, हृदय रोग तथा पार्श्व शूल [पसली के दर्द]में विशेष लाभ करती है । दो से ६ रत्ती शहद अद्रक स्वरस में दें मूल्य एक तोला ॥)

सिद्धि सूत (भै०र०)

पौष्टिक, कामोत्तजक, तथा आयुष्य वर्द्धक है मकरध्वज की भांति शीशी में पाया जाता है गुण प्रायः मकरध्वज सेही मिलते हैं । मात्रा एक से तीन रत्ती घृतसे एक तोला का १५)

सूख प्रसव चूर्ण (भै० र०)

मात्रा ६ मासेसे ७ तोला तक गर्मजल से देने से प्रसव के समय औरतों का कष्ट दूर होकर गर्भ का प्रसव शीघ्र कष्ट रहित हो जाता है । ५ तोला का १)

सुधानिधि (मै० र०)

रक्त पित्त खूनी बवासीर, विसर्प आदि में चूर्ण चयनप्राश है। मात्रा २ से ३ रती मक्खन में दें एक तोला का २)

स्वर्ण वंग (मै० र०)

बीसों प्रकार के प्रमेहों की रामबाण सिद्धौषधि है शीत ठ चीनी या इलायचीके चूर्ण के साथ दो दो रत्ती शहद में चटावें एक तोला का २)

स्वर्ण पर्पटी (मै० र०)

संग्रहणी खूनिका रोग की अव्यर्थ महौषधि है मात्रा एक से ३ रती शहद घृत से देना चाहिये एक तोला का १०)

स्वर्ण भस्म लाल (रा० मृ)

स्त्रियों तथा पुरुषों के समस्त रोगों पर अनुपान भेद से बड़ा ही अच्छा प्रभाव रखती है एक तोला का ३५)

व्रण भूपति रस कूपी पक्व (यो० र०)

अशक्ति, जीर्णज्वर तथा क्षय रोगपर विचित्र आशापूर्ण गुण करता हैं एक तो० का १२)

सूतिका विनोदरस (मै० र०)

सूतिका स्त्री के, संग्रहणी, ज्वर, खांसी क्षय अजीर्ण में अमृत समान उपयोगी है मात्रा २ से ३ रत्ती घृत मे या शहद में, एक तोला १।)

स्वर्ण माक्षीक वसन्त (यो० र०)

मधुमेह, क्षयरोग, हृदरोग, जीर्णज्वर, तथा भोल, मुख, सुता सभी के रोगों पर विशेष गुण कारी है दोसे चार रत्ती शहद घृत में अथवा सितोपलादि चूर्ण में मिला कर देने से लाभ करता है ऊपरसे दूध पिलाना उत्तम है एक तोला का १०)

सोमघृत (मै० र०)

स्त्रियों के सर्वरोग तथा वन्ध्यत्व [बांझपन] को दूर करता है मात्रा ६ माशा से एक तोला चटावें ऊपर से गोदुग्ध पियें। बीस तोला का ३)

स्नायुशूल हर लेप (मै० र०)

जल में पत्थर गर्म कर लेप करने से स्नायु, शुल नष्ट होता है १ तोला १)

हयमारादि तैल

जननेन्द्रिय की असह्य खुजली योनि कंद, योनि व्रण आदि योनि गत रोगों पर बिजली की तरह गुण करता है। ५ तोला का १)

हरगौरी रस (र० सा० सं०)

नपुन्सकत्व, धातु क्षीणता समस्त वीर्य दोषों पर अमोघ गुण करता है मात्रा २ से ३ रती शहद में एक तोला २)

हरताल भस्म

त्वचा रोग, खुजली उपदंश विस्फोटक, कुष्ट आदि रोगोंपर १ से ३ रत्ती घृत में चटाने से शर्तिया लाभ होता है काला १ तो० २) श्वेत १ तो० ४) लाल १ तो० ३)

हिंग्वाष्टक चूर्ण (मै०र०)

आनाह अजीर्ण, मंदाग्नि अरुचि पर १॥ मासे से ३ माशे तक गर्म जलसे देना चाहिये दस तोला का ॥)

हिंगुलेश्वर (मै०र०)

वायु तथा आम के ताप में २से चार रत्ती गर्म जलमें देना चाहिये एक तो०॥)

हिंग्वादि तैल (मै०र०)

ऋतुरोध, नष्टार्तव में २० बूंदसे ४० बूंद तक दूध में पिलाना चाहिये तथा रुई का फाया तर करके गर्भाशय के मुखपर र खना चाहिये । ५ तोला का १)

हिम सागर तैल (मै० र०)

सर्व प्रकार के वातदर्द में मालिश क-रने से शर्तिया गुण करता है दस तो०२॥)

हिरण्यगर्भ रस कृष्णवर्त्ती(शा०)

सन्निपात, प्लेग तथा विषमज्वरों पर २-३ रत्ती देने से आशु गुण करता है यह रस खड़ा [गोला सा] तथा पिसा हुआ मि लता है एक तोला १५)

हिरण्यगर्भ रस लाल

गुण उपरोक्त समान है एक तोला ८)

हृदयार्णव रस (मै० र०)

हृद रोग कफका उपद्रव, श्वांस,खांसी आदि छाती के रोगो पर अमोघ बाण है। मात्रा दो से चार रत्ती शहद घृत से एक तोला का ५)

हेम नाथ रस (मै० र०)

उरःक्षत प्रमेह बहुरोग, सोमरोग [स्त्रि-यों को होता है] स्वांस रोग आदिमें अनु-पान भेदसे उपरोक्त सर्व रोगोंका दलन क रने वाला है मात्रा २ से ३ रत्ती एक तोला का १०)

प्रार्थना

हम अपने यहां की औषधियों की सूची पूर्णरूप से कभी भी प्रकाशित नहीं कर सकते हैं कारण कि सैकड़ों औषधियां नित्य प्रति तैयार होती रहती हैं, और नवीन अनुसन्धान से भी अनेक औषधियां तैयार होती रहती हैं, अतः निवेदन है कि अगर आपकी चाही हुई औषधि अगर इस सूची पत्र में न मिले तो कार्यालय से पत्र द्वारा पूछ कर आप इत्यादि विदित कर मंगा स कते है।

भवदीय -जनरल मेनेजर

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे [किश्तीनुमा] चिकने, खूबसूरत मय घोटनेका उत्तम मुसली स-हित तैयार रहते है,इनकी लम्बाई १५॥इंच चौड़ाई १०इंच ऊंचाई ५। इंच वजनमें २५ सेरके है इसेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जासकती है इसके सिवाय तत खर-लादि पारदीय सस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं, प्रत्येक खरल का मूल्य १०) हैखरल का आर्डर देते समय ५,रु० पेशगी अवश्य भेजे नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जावेगा पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के हो-ना चाहिये मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

शल्य शालाक्य विभाग की औषधियों का

सूची

आयुर्वेदीय टिंचर

यह टिंचर हमने आयुर्वेदीय औषधियों द्वारा मृत संजीवनी सुरा पर बनाया है जो कि "टिंचर आयाडिन" से भी अधिक गुणकारी साबित हुआ है इसके लगाने से चोट, सूजन, फोड़ा की सूजनादि सर्व विकार शान्त होते हैं कीमत फी शीशी ॥)

(स्वदेशी आइडो फार्म) व्रण पूरक

यह दवाई हमने आइडोफार्म की जगह स्तैमाल करनेको बनाई है इसके इस्तैमाल से दूषित घाव शुद्ध होकर भर आता है। मूल्य फी तोला ।)

मूर्च्छाप्रद रस

(स्वदेशी क्लिोरो फार्म)

वैद्य लोगों को बहुत दिनों से बड़ी आवश्यकता थी कि शल्य कर्म करते समय रोगी को बेहोश करने के लिये स्वदेशी औषधि जो क्लिरोफार्म की भांति असर दिखलावे तैय्यार होनी चाहिये मैंने बड़े परिश्रम के साथ बड़ी खोज के बाद इस औषधि को निर्माण करपाया है फर्क सिर्फ इतना रहा है कि यह दवाई खिलाई जाती है पर असर फौरन दिखलाती है कीमत २)

मूर्च्छान्तक विन्दु

इस दवाई से "मूर्च्छा प्रद रस" के सेवन से आई हुई बेहोशी कुछ बूंदे डालने से ही तत्काल होश में रोगी आजाता है कीमत १ शीशी १)

व्रण को बैठालने का लेप

(स्वदेशी विला डोना)

इस दवा को आग पर गर्म कर कपड़े पर लगाकर उठते हुये फोड़े पर प्रथमावस्था में अगाने से फोड़ा निश्चय बैठ जाता है। कीमत फी तोला ॥)

(व्रण पकाने का लेप)

कैसा भी कठोर व्रण हो इस के लेप से शीघ्रता से पकाव को प्राप्त होताहै कीमत ।) तोला

व्रण फोड़ने का लेप

इस लेप से बिना चीरा लगाये हुए व्रण फूट कर मवाद साफ होजाता है की० ।=) तोला

व्रण शोधक मल्हम

यह मलहम फूटे हुए फोड़े पर लगाई जाती है इससे व्रण का दूषित अंश छटकर साफ होजाता है कीमत ।) तोला इसके लगाने के बाद पूरक मलहम जो ऊपर लिख आये है स्तैमाल करो।

घाव धोने की दवा

यह सब प्रकार के घाव धोने की पानी में मिलाकर स्तेमाल करने की औषधि है कीमत ।) तोला

भगवत शक्ति रस

यह रस व्रणोत्पन्न दर्द आदि तथा अन्य समस्त प्रकार के दर्दों पर रामवांण है कीमत भी तोला

रक्त प्रवाहान्तक

इस औषधि को किसी स्थान से चोट लगकर निकलने वाले रक्त स्थान में लगानेसे रक्त उसी वक्त बन्द होजाता है कीमत फी शीशी ॥)

नेत्र रोहू नाशक औषधि

यह औषधि नेत्रोत्पन्न रोहू पर लगाने से सूजन तथा रोहू को शमन करती है कीमत ।) तोला ।

आई हुई आंख की दवा

यह औषधि आने वाली तथा आई हुई आंखमें डालने से आंख की खुजलीलालामी दर्द, सूजन को लाभ पहुंचाती है मू०॥)शी०

नेत्र परवाल की औषधि

यह दवा नेत्रों के कटाव, खुजलाहट, आदि को दूरकर परवाल रोग को समूल नष्ट करती है कीमत फी तो० ॥)

माड़ा, फूला नाशक अंजन

इस अञ्जन के लगाने से माड़ा, फूला, करकर मनुष्य की ज्योति शक्ति बढ़ाती है कीमत फी डिब्बी १)

नेत्र के फोड़ा की दवा

नेत्रों के कोये में यह फोड़ा उत्पन्न होता है कभी २ यह भयंकर होजाता है पीव देता रहता है पेस्तर इसे गुहेरी कहते हैं हमारी इस दवाई को इस पर लगाने से यह शीघ्र शमन होजाती है। कीमत ॥) शीशी

मोतिया विन्दु की दवा

अल्प दोष का मोतिया विन्दु इसके सेवन से विना शस्त्र क्रिया के नष्ट होकर नेत्र ज्योति प्राप्त हो सकती है। कीमत २) तोला

रतौंध की दवा

यह रोग अक्सर देखने में आता है दिन में दिखाई देता है रात को अन्धा बनाता है इस दवा के अञ्जन से ७ दिन में रतौंध हमेशा को विदा होजाती है की०।-)

दिनौंध की दवा

यह मनुष्य को उल्लू की प्रकृति का बनाता है जैसे उल्लू रात में दीखता है वैसे ही इस मर्ज वाले दिन में देख नहीं सकते हैं पर रात में बखूबी देख सकते हैं दवाई को नेत्रों पर अञ्जन से यह सब शिकायतें दूर होती हैं। कीमत ॥)

कान का फोड़ा की दवा

कान में फोड़े की यह दवा पहिले तो बैठा देती है यदि पकजावे तो शीघ्र फोड़ कर मवाद बाहर निकाल देती है कान का दर्द व भारी पन दूर होता है। कीमत फी शीशी ॥)

बहिरेपन की दवा

इस दवा के कुछ काल के सेवन करने ही से बहरा पन नष्ट हो जाता है कीमत फी शीशी १)

करवाई की दवा

यह भी बड़ा दुखदाई रोग होता है बाज २ के पांच २ सात २ निकल कर कष्ट देती है यह बगल के नीचे पैदा होती हैं हमारे लेप से कखवाई बैठ जाती है अथवा शीघ्र पका देती है कीमत ॥)

स्त्री के स्तनव्रण की दवा

इस व्रणको निकलते ही बैठाना चाहिये नहीं तो बड़ा दुखदाई होकर स्तन को कम जोर बना देती है हमारी इस औषधि को स्तन व्रण पर रूमाल करने से तत्काल फायदा होता है की० ॥)

गंजरोग नाशक दवा

इस दवाई से सूखी व तर हर प्रकार की गंजरोग की शिकायत दूर होजाती है कीमत फी शीशी १।)

कंठमाला नाशक दवा

यह रोग बुरा है पेस्तर यह ग्रंथि व्रण रूप में होता है बाद में समस्त शरीर में फैलता जाताहै इसमें पेस्तर दस्त व वमन की औषधि सेवन कर इस दवाई को कंठमाला पर लगावे आराम होगा कीमत २)

भगन्दर व्रणनाशक मलहम

इस मलहम के लगान से भगन्दर का पीव आना बन्द होकर घाव भर जाता है कीमत १।)

अग्नि दग्धि हर औषधि

किसी भी प्रकार से जले हुए स्थान इस औषधि को लगाने से जलन शान्त होकर घाव भर जाता है। कीमत फी शीशी १॥)

नासूर की दवा

कैसा ही पुराना नासूर हो इस दवाई के लगाने से चन्द ही दिनों में नासूर आराम होजाता है कीमत २)

सूचना

आगे लिखी बनस्पतियों तथा वनौषधियों का मूल्य प्रायः घटता बढ़ता रहता है शायद किसी सज्जन के किसी बीजक में या पत्रमें कम ज्यादा मूल्य लिखा हो तो यही कारण समझना चाहिये, इस सूचीमें केवल सूखी बनौषधियों का मूल्य लिखागया है। हरी बूटियां भी यथा सम्भव भेजी जा सकती हैं, इस सूची मे लिखा हुई बनौषधियों के अतिरिक्त अगर आपको किसी बनौषधि की आवश्यकता हो तो लिखिये।

नोट—इस बनौषधि की सूची में केवल १ सेर का भाव दिया गया है. जो सज्जन थोक भाव से खरीदेंगे यानी २५) का माल एक साथ मंगावेंगे उन्हें २०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

मैनेजर—बनौषधि विभाग।

बनौषधि विभाग की सूची

नाम औषधि	तौल	मूल्य
[आ]		
अतिबला [कंघी]	१ सेर	॥)
अखरोट छाल [अक्षोट]	,,	१)
असगंध [अश्वगंध]	,,	१)
अंकोला	,,	१)
अर्जुन छाल	,,	१)
अनंतमूल [श्वेत सारिवा]	,,	१॥)
अनंतमूल [कृष्ण सारिवा]	,,	२)
पीपल छाल [अश्वत्थ छाल]	,,	।)
अपामार्ग [चिरचिटा बीज]	,,	॥)
अरिष्टक [रीठा छाल]	,,	।=)
अम्लिका [इमली छाल]	,,	।)
आक की जड़ [अर्क मूल]	,,	॥)
आक पुष्प	,,	१)
अशोक छाल	,,	२)
अतीस मीठी	,,	२)
अतीसगढ	,,	५)
अरणी छाल	,,	॥)
अमर बल्ली [आकाश बेल]	,,	।)
अमृता [गिलोय]	,,	।)
आरग्वध [अमलतास फली]	,,	॥।)
आमला	,,	॥)
आकरकरा	,,	५)
आम्रातक [अम्बाड़ा]	,,	१)
[ई]		
इरमेद [दुर्गन्धित खैर छाल]	,,	१)
इन्द्रायण की छाल	,,	१।)
इन्द्रायण फल	,,	१)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
इन्द्रजव	एक सेर	॥।)
ईश्वर लिंगी [शिवलिंगा बीज]	,,	१६)
[उ]		
उष्ट्रकंटक [ऊंटकटारा]	१ सेर	॥)
उलटकंबल [कुड़वल]	,,	॥)
उदुम्बर [गूलर छाल]	,,	।)
उशीर [खस मूल]	,,	॥।)
[ए]		
एरण्ड मूल छाल	,,	॥।)
एरण्डबीज	,,	॥)
[ओ]		
ओड्र पुष्पी [सुदर्शन के फूल]	,,	१।)
[क]		
कनक [निर्मली बीज]	,,	१)
कंटकारी छोटी	,,	॥)
कपाला [कम्पिल्ल]	,,	२)
कपि कच्छु [कौंचकी जड़]	,,	२)
कौंच के बीज	,,	१)
करमर्दक [करौंदा]	,,	॥)
कर्कट शृंगी [काकरा सिंगी]	,,	१)
कैथफल [कपित्थ]	,,	।=)
कृष्ण [मिरचिया गंध]	,,	१)
कसेरू	,,	॥।)
करंजबीज	,,	॥)
कोल तीनों प्रकार की	,,	१)
कालादाना	,,	१)
कांकिलाक्ष [चाल मखाना]	,,	१॥)
कांशातली [बलतोड़ई]	,,	१)
कुंकुम [केसर]	,,	२॥)

नाम औषधि	तोल	मूल्य
कुलत्थ [कुत्थी]	एक सेर	॥)
कूठ मीठा	,,	५)
कुटज [कुड़ाकी छाल]	,,	॥)
किंशुक [टेसू के फूल]	,,	।–)
काक जंघा	,,	।॥)
काक नासा [कौआ ठोड़ी]	,,	१)
कासमर्द [कसौंदी बीज]	,,	१)
काकमाची [मकोय]	,,	॥)
कचनार [छाल]	,,	।॥)
(ख)		
खदिर छाल [खैर छाल]	,,	॥
खदिर सार [खैरसार]	,,	३)
[ग]		
गज पिप्पली [गज पीपर]	,,	१॥)
गोखरू बड़ा	,,	१)
गोखरू छोटा	,,	।॥)
गुंजा मूल [घुंघची की जड़]	,,	२)
ग्रन्थ पर्ण	,,	३)
गुग्गुल उत्तम	,,	१॥)
गुडूची सत्व	,,	१६)
गम्भारी छाल[खम्भारी]	,,	॥≠
गंध प्रसारिणी	,,	≠)
[घ]		
घृतकुमारी [घी कुवार]	,,	।≠)
[च]		
चविका —चव्य	,,	।॥)
चन्द्रशूर —हाला	,,	।॥)
चोरक —चोर	,,	२)
चोक	,,	२
चित्रयता	,,	१)
चित्रक —चीता मूल छाल	,,	३)

नाम औषधि	तोल	मूल्य
[छ]		
छिक्कनी —नकछिकनी	१सेर	१)
[ज]		
ज्योतिष्मती—मालकांगनी	,,	१)
जीवन्ती पीतरंग की	,,	३॥)
जटामांसी	,,	१)
जल निम्ब	,,	॥)
जल पिप्पली	,,	२)
[त]		
तगर	,,	१)
तेजबल	,,	।॥)
तेजपलपत्र	,,	।॥)
त्रिधारा = थूहर	,,	॥)
त्रायमाण	,,	५)
तालीस पत्र	,,	२)
तंदुलीयक—चौलाईमूल	,,	॥)
[द]		
द्रोणपुष्पी—गूमा	,,	।॥)
देवदाली —बंदाल डोंडे	,,	१)
दुरालभा —धमासा	,,	॥)
दुग्धिका — दुद्धी तीनोंप्रकार	,,	।॥)
दारु हरिद्रा —दारु हल्दी	,,	॥)
वृ० दन्ती मूल	,,	१॥)
(ध)		
धव पुष्प —धायके फूल	,,	॥)
धतूर पंचांग	,,	१)
[न]		
नागकेसरि असली १तोला	॥)१सेर	१६)
नील कंठी.....	१ सेर	२)
नीलोत्पल — नीलोफर	१ सेर	१॥)
नीम छाल	१ सेर	।)
निगुण्डी —सम्भालू	१ सेर	।॥)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
निर्विषी	१ सेर	४)
नागदौन	,,	१॥)
नाग बला —गगेरन पंचांग	,,	१)
नाकुली	,,	१)
(प)		
पृष्ट पर्णी	,,	१)
प्रसारिणी [खोप]	,,	१॥)
प्रयुन्नाट [पवांड़ बीज]	,,	।≈)
पुनर्नवा [सांठमूल]	,,	१)
पीपला मूल	,,	२)
पाटला [पाढ़ल छाल]	,,	॥)
पतिजटा [ममीरा)	,,	३)
पारिजात [हरि सिंगार]	,,	२॥)
पाखान भेद	,,	॥)
पारीश [पारस पीपलछाल]	,,	॥)
पारस पीपलफल	,,	१॥)
पाठा पंचांग	,,	१)
पटोल पत्र [परवल पत्ते]	,,	१॥)
पलांण्डु [जंगली प्याज]	,,	१)
पनस [कटहल छाल]	,,	॥)
(ब)		
बिल्व [बिल्व फल छाल]	,,	॥)
बालक [सुगध बाला]	,,	१)
बृहदंडी [पंचांग]	,,	२)
बन जीरक [काला जीरी)	,,	॥)
बब्बूल [कीकर छाल]	,,	।)
बौफली [बहुफली]	,,	१)
बकुल (मौल सिरी छाल)	,,	१)
बला (खरैटी पंचाग)	,,	॥)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
(भ)		
भल्लातक —भिलावा	१ सेर	१)
भोजपत्र	,,	१॥)
भूमि आँवला	,,	२)
भृंग राज	,,	१)
भारंगी	,,	१)
(म)		
मंजिष्टा —मंजीठ	,,	१)
मृणाल —भिस	,,	१)
मेथिका —मेथी पत्र	,,	२)
मूरवा —मौरबा	,,	२)
मूषा कर्णी —मूसाकन्नी	,,	२)
मुस्तक —नागर मोथा	,,	॥)
मुग्द पर्णी —मूंग पर्णी	,,	१)
मुंडी —गोरखमुंडी	,,	॥।)
मुचकुंद फूल	,,	॥।)
महा बला	,,	॥।)
महा निम्ब —बकायन छाल	,,	॥।)
मयूर शिखा —मोर शिखा	,,	४)
मछेछी -मत्स्याक्षी	,,	॥।)
मधु -बढ़िया शहद	,,	२)
मधुक -महुआ पुष्प	,,	१)
मास रोहिणी	,,	२)
मैनफल	,,	॥।)
माष पर्णी	,,	१)
मृग मद —कस्तूरी असली	१ तोला	३६)
(य)		
यवतिक्ता —हिरन खुरी	१सेर	१)
यवक्षार —गौरवार	,,	१६)
यवासक -जवासा	,,	।)

नाम औषधि	तौल	मूल्य
रोहितक छाल –रोहेड़ाछाल	१ सेर	२
रेणुका –सम्भालू बीज	”	।।।)
रुद्रवंती बूटी	”	४)
रत्न ज्योति	”	१)
रास्ना–रायसन	”	।।।)
रसाजन –शुद्ध रसौत	”	२।)

(ल)

लोध पठानी	एक सेर	।।।)
लांगली –कीलहारी	एक सेर	५)
लाक्षा –पीपर या बेरी लाख	”	३)
लक्ष्मणा –सफेद कटेली	एक सेर	४)
लता कस्तूरी –मुश्कदाना	एक सेर	६)
लज्जालु –लजवती बीज	एक सेर	२।)
लजवंती पंचाग	एक सेर	१।)

(व)

वच –दूधिया वच	एक सेर	५)
वृद्ध दारु बीज	एक सेर	५)
वृद्धदारु –विधारा	एक सेर	२।)
वृहती –बड़ी कटेरी	एक सेर	।।)
वृश्चिका –विछु आबूटी	एक सेर	।।)
विष्णु क्रान्ता	एक सेर	१)
विदारी कंद	एक सेर	१)
विभीतक –बहेड़ा	एक सेर	।।।)
विजय सार	एक सेर	१)
वासा मूल तथा पंचाग	एक सेर	१)
वासा पुष्प	एक सेर	२।)
वराही कंद	एक सेर	२।)
वरुण –बरुना छाल	एक सेर	।।।)

(श)

नाम औषधि	तोल	मूल्य
शण पुष्पी –जंगली सण	१ सेर	।।।)
शंख पुष्पी –शंखाहुली	एक सेर	१।।)
शूरण कंद –जिमी कंदहरा	एक सेर	।)
श्रीवास –शु० बहरोजा	एक सेर	२)
श्यामालु –अरलू छाल	एक सेर	।।)
शोभांजन –सहिजना बीज	एक सेर	३)
शिंशा पुष्प –छीला	एक सेर	।।)
शिरीष –सिरस छाल	एक सेर	।।)
शिलारस	एक सेर	३)
शिलाजीत शुद्ध सूर्य तापी	एक सेर	२४)
शालनिर्यास –राल	एक सेर	१)
श्याम लता –कृष्णा सारिवा	”	१)
शाल्मली –सेमर छाल	एक सेर	।॥)
शाल्मली मूल –मूसला सेमल	,,	२।)
शाल पर्णी –सरिवन	,,	१)
शर पुंखा –सरफोका	,,	।।)
शतावरी –सतावर	,,	१।)

(स)

सप्त पर्णी –सतौना छाल	एक सेर	२)
स्वर्ण क्षीरी –सत्यानासी बीज	एक सेर	२)
स्वर्ण क्षीरी –सत्यानासी पंचाग	,,	।।)
सहदेवी –सहदेई	,,	२)

(ह)

हंसपदी –हंसराज	,,	।।।)
हिज्जल –समुद्र फल	,,	१)
हिंगु असली –हींग	,,	१४)
हस्ति शुंडी –हाथी सुड़ा	,,	।।।)
हरीतकी –हर्र छाल	,,	।॥)
हरड़ बड़ी –हरीतकी	,,	१]

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बगलोकपुर इटावा -यू० पी०

भारत सारकार से रजिस्टर्ड—

कतिपय शतशोनभूत पेटेन्ट औषधियां

रजिस्टर्ड

इन्द्रसुधा।



यह अनुपम गुण मय अमृत समान अद्वितीय सैकड़ों बार की अनुभव सिद्ध महौषधि है, जो सर्व स्वदेशी औषधियों के मिश्रण से तैयार हुई है नीचे रोगों पर "इन्द्रसुधा,, रामबाण ही है—

अजीर्ण, कै, दस्त, हैजा, [विशूचिका] शिरदर्द, प्रतिश्याय, दांत व डाढ़ का दर्द. बर्र, बिच्छू विष, बायुगोला का दर्द, ज्वर फसली, व हिचकी का बढ़ना, आदि रोगों पर विधि वत सेवन करने से चमत्कारिक गुण करती है, कीमत फी शीशी ॥) ६ शीशी का २॥) दर्जन का ४)

बच्चों को मोटा ताजा तन्दुरुस्त बनाने वाली

स्वादिष्ट तथा मीठी दवा

रजिष्टर्ड

बाल पाल।



इस 'बाल पाल, के सामने सब बालामृत मात हैं, बच्चों के लिये आजकल ब सियों प्रकार के बालामृत, बालानंद, जन्म घुट्टी और सब तरह के लाल पीले शरबत बाजारों में बिकते हैं परन्तु वह अधिक तर अंगरेजी तेज दवाइयों द्वारा तैयार किये हुये मिलते हैं जिनसे लाभ के बदले हानि होती है, कारण कि बच्चे उन औषधियों के पीने के अभ्यासी हो जावे हैं फिर इस दवा के छुड़ाते ही उन बच्चों का

हाजमा पहिले से भी ज्यादा खराब होजाता है, परन्तु "बालपाल"में यह एक भी दोष नहीं है, 'बालपाल' बच्चों की बदहजमी, कब्ज़, दूध का पटक देना हरे, पीले दस्त, खांसी सुखटी रोग डब्बारोग बुखार सर्दी आदि रोगों को दूर करने में रामबांण है मीठे २ औषधि होने के कारण बच्चे स्वयं मांग २ कर पीते हैं फ़ी शी० ॥।) ३ शीशी का २) दर्जन का ६) डाक खर्च जुदा

रजिस्टर्ड—

महिला जीवन

❋ स्त्रियों को अमृत समान उपयोगी है ❋



इस 'महिला जीवन' के स्तैमाल से औरतों की सब प्रकार की शरीर सम्बन्धी बीमारियां दूर होती हैं जैसे प्रदर। गुप्त भागसे श्वेत अथवा लालपानी जाना। ऋतु हो मासिक धर्म ठीक २ न होना। सर्वदा कन्या प्रसवही होना आदि बांझपन बंध्यत्व हिष्ट्रीया रोग दूर होकर आरोग्यता मय स्वर्गीय सुख मिलता है।

सगर्भा स्त्रियों को सेवन करने से, धीर, वीर साहसी, बुद्धिमान सुन्दर युवारत्न पैदा करने में इसके समान और कोई उपयोगी औषधि ही नहींहै लिखे अनुसार गुण न करे तो दाम वापिस देंगे, परीक्षा प्रार्थनीय है मू० फी बोतल ४)

रजिस्टर्ड—

पारद गुटिका

यह पारद गुटिका विशुद्ध पारद तथा स्वर्ण रौप्य एवं वनौषधियों के संयोग से बनाई जाती है प्रमेह रोग पर विचित्र गुण करती है उपदंश रोग की वजह से हुआ रक्त दोष इसके निरंतर सेवन करने से कुछ काल में शरीर निरोग्य होता है, सर्व साधारण के लाभार्थ सिर्फ १ मास तक १) में ही दी जावेगी, ताकि इसके गुणागुण सभी सज्जन जान कार हो जावें



वृहत कामेश्वर तिला

इस तिला के सेवन से कैसी ही हस्त मैथुनादि कुटेवों से उत्पन्न हुई नसों की कमजोरी ढोलापन अशक्तिता हो २१ दिनमें दूर करके नामर्द को मर्द बनाकर रति कार्य में पूर्ण कुशलबना देती है, हताश बन्धुओं को परीक्षा प्रार्थनीय है लिखे अनुसार गुण न करे तो दाम वापिस देते हैं कीमत फी तोला २)



❋ तिजारी की हुक्मी दवा ❋

अगर तिजारी आप को या आप के किसी संम्बन्धी को दुखित कर रही है तो आजही 'तिजारी की हुक्मी दवा, की शीशी मंगाकर पिलाइये उसी रोज तिजारी दुम दवा कर भाग जायगी तिजारी न जावे तो दाम वापिस मू० फी शीशी ॥)



❋ तिल्ली की शर्तिया दवा ❋

यह रोग बड़ा ही दुखदाई है, और यथेष्ट उत्तम औषधि प्राप्त होने पर ही दूर होती है, इस लिये आप अगर तिल्ली का इलाज करते करते हताश हो गये हैं तो तिल्ली की शर्तिया दवा सेवन कीजियेगा साथही तिल्ली नाशक अद्भुत लेप भी लगाइयेगा यह लेप तब छूटेगा जब तिल्ली नष्ट हो जायगी कीमत पीनेकी दवा की दो रुपया। लेप की दवा की कीमत १॥)

❋ ज्वर हर वटिका ❋

हर प्रकार के फसली ज्वर, इकतरा दुजारी तिजारी चौथिया ज्वर की शर्तिया बटी हैं। धर्मार्थ बांटने वालों के लिये बड़ी काम की चीज है मू० १०० गोली का १)

❋ दन्तपौष्टिक मंजन ❋

इस मंजन से दांतो की सब प्रकार की पीड़ा जैसे मैलापन, टीसन, हिलना कीड़ा लगना जरा सा दांत मांजनेपर खून आना आदि शिकायतें दूर होकर दांत मोती जैसे चमकदार होजाते हैं मूल्य फी डिब्बी ।)

❋ काश्मीर केश विहार तैल ❋

शिर की समस्त शिकायतोंको दूरकर तबियतको अजहद खुश करता है इसके निरन्तर स्तैमाल करने से बाल सफेद नहीं होते, अगर थोड़े बहुत बाल सफेद हो भी गये हों तो इसके लगाने से फिर काले होजाते हैं खुशबू इतनी मन मोहक हैकि लगाते लगाते दिल बाग बाग होजाता है मूल्य फी शी० १)



❋ आतशक (गर्मी) की दवा ❋

यह अनमोल दवा इस दुष्ट रोग [गर्मी]को समूल नष्ट करने में एक मात्र अव्यर्थ सिद्ध औषधि है, अगर इन्द्री पर घाव है तो उपदंश मलहम लगाइयेगा। अगर समस्त शरीर में गर्म फूट निकली हो तो खदिरा रिष्ट के साथ इस दवा को खाइये अवश्य ही आप रोग मुक्त होंगे आतशक की दवा कोमल ४ खुराक का २) उपदंशारि मलहम ५ तोला का १) खदिरारिष्ट की बोतल २) डाक व्यय अलग,

❋ प्रदर नाशक सुधा ❋



किसी भी प्रकार का स्त्रियों का प्रदर जैसे लाल सफेद पीले इससे दूर होता है और कटि पीड़ा सोम रोग आदि रोगों को दूर कर मासिक धर्म कीपीड़ा या कम ज्यादा वक्त पर होना आदि सब शिकायतें रफा होती है मू० की बोतल का १)

❋ रजः प्रवृतनी वटी ❋

स्त्रियों के रुके हुये आर्तव को जारी करने में एक मात्र अव्यर्थ महौषधि है, साथ ही इसके 'रजः स्रावक पोटली' भी वर्तने से शीघ्र लाभ होता है रजः प्रवर्तनी बड़ी फी तोला १) रजस्रावक पोटली कीमत १॥)

❋ अंड वृद्धि हर लेप ❋

किसी भी कारण से बढ़े अंडकोष को ठीक करने में यह लेप आश्चर्य मय गुण करता है जिन रोगियों को किसी भी औषधि से लाभ नहीं हुआ वह कृपा कर एक बार इस लेपको इस्तैमाल कर रोगसे मुक्त होकर सुखमय जीवन बनावें मू० २० तोला का २)

❋ अर्शहर वटिका ❋

सब प्रकार की बवासीर को अगर दूर करना है तो अर्शहर वटिका सेवन को-जियेगा मू० ४० दिवस की औषधि सेवन का ४)

❋ अर्शोघ्न तैल ❋

बवासीर के मस्से दूर करने के वास्ते अर्शहर वटिका सेवन काल में इस अर्शो घ्न तैल को लगाना चाहिये बवासीर शांतिया दूर होगी मू० १० तोला का २)

❋ नेत्र संजीवन सलाई ❋

यह सलाई शास्त्रोक्त विधि अनुसार जड़ी बूटियों के बुझाव देकर तैयार की जाती है इसको प्रति दिन आंखों में फेरने से नेत्रों में होने वाले कोई रोग पैदा नहीं हो सकते, नेत्रों की ज्योति बढ़ानेमें अद्वितीय है मू० फी सलाई ॥) डा० ख० अलग

चन्द्र कांती लेप (खूब सूरतकी जान)

इसको मुख पर लगाने से, मुख की झांई, फुंसी, चेचक के भद्दे दाग मुहांसा खुश्की खाल का फटना, इत्यादि सर्व चेहरे की खूबसूरती दूर कर पूर्ण सौंदर्य प्राप्त होता है, कैसा ही बद सूरत चेहरा हो, इस के लगाने से गुलाब के फूल जैसा मनोहर हो जाता है, अगर आपको अपनी धर्मपत्नी सहित पूर्ण सौंदर्यका आनन्द प्राप्त करना है, इसे अवश्य ही काम में लागाइयेगा खुशबू इतनी मस्त है कि लगाते २ तबि-यत मस्त हो जाती हैं, मू० फी डि० ११) डा० ख० अलग।



लोग कहते हैं कि "दमा दम के साथ जाता है,, इस कहावत को पूर्ण रूप से दमन करने में यह "दवा" अद्वितीय है, पांचों प्रकार की खांसी तथा श्वांस, दमारोग समूल नष्ट होता है अगर आप को दमा से पीछा छुड़ाना है तो आज ही १ शीशी का आर्डर दीजियेगा। मू० फी शीशी १।) डा० ख० अलग

❋ दद्रुहर लेप ❋

कैसा भी दाद हो इस दवाई के लेप करने से नष्ट हो जाती है न लगती है न धब्बे ही डालती है कीमत फी डि० ।)

खारिष्ट नाशक तैल

शरीर में किसी प्रकार के चर्म दोष से उत्पन्न खुजली हो हमारी इस दवाई के लगाते २ ही शान्त होजाती है कीमत फी शीशी १)

सांप काटे की दवा

काल की तो दवा नहीं पर सर्प काटने पर हमारी बनाई हुई दवाको विधिवत इस्तैमाल कराने से रोगी निश्चय जी जाता है सर्प के काटने ही "विषनाशक पाउडर,, को दंश स्थान पर चीरा देकर लगादे ऊपर से 'सर्पारि चूर्ण' खिलादे वमन व दस्त होकर विष शान्त होगा डाट पड़ने पर 'मूर्छाहर रस' मस्तिष्क शिरामें चीरा दे लगादे डाट खुल कर होश आजावेगा की० 'विष नाषक पावडर' १) 'सर्पारि चूर्ण १।) मूर्छाहर रस २) तोला



कैसा भी नया व पुराना सुजाक हो इस औषधि के सेवन से सिर्फ २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है अधिक विकार वाले रोगी को साथमें इन्द्रो जुलाब तथा पिचकारी के पीने की दवा भी सेवन करना पड़ेगी मू० २॥) शीशी इन्द्रोजुलाब व पिचकारा की दवा का मू० सिर्फ १॥) रु० है।



❋ एजेन्सी नियम ❋

१—जो सज्जन हमारे यहांसे २५) रु०का माल एक साथ खरीदग उन को हम एजेन्ट करार देंगे।

२—फुटकर कईबारमें २५)के मूल्य या अधिकका माल मंगाने पर वह शख्स एजेन्ट नहीं माने जावेंगे।

३—एजेन्टको फार्मेसीके थोक भावके सूचीके अनुसार माल मंगाने पर =) प्रति रुपया तथा खैरिज भावके सूचीपर २५) सैकड़ा क मीशन दिया जावेगा।

४—मार्ग व्यय एजेन्ट ही को देना होगा पर पेकिंग खर्च फार्मेसी से माफ रहेगा।

५—एजेन्ट करार दिये जानेके बाद २५) से कमकी भी औषधियां म गा सकता है पर ५) की कम की औषधियों पर पेकिंग भी ए-जेन्ट को देना होगा। कमीशन बराबर मिलेगा।

६—आर्डर के साथ एजेन्ट को चौथाई रुपया पेशगी भेजना पड़ेगा व्यौहार पड़ने पर बिना पेशगी भी भेजा जावेगा पर उधार देन लेन का नियम नहीं है।

७—एजेन्टकी विख्यातिके लिये फार्मेसी अपने खर्चासे खुशनुमा सा इनवोर्ड तथा नोटिस बांटने को भेजेगी।

८—तरल पदार्थ तथा भारी पार्सल भेजने के वास्ते पास की रेलवे स्टेशन का पूरा साफ २ पता अवश्य लिखना चाहिये।

९—हमारे पेकिंग के अनुसार एजेन्ट को ६ महीने के माल न बिकने पर और माल बदले में भेजा जा सकेगा।

❀ सोलऐजेन्सी के नियम ❀

१—जो सज्जन एक साथ २५०) का माल खरीदेंगे उन्हें स्थानीय तथा प्रान्तीय सोल एजेन्सी दी जावेगी ।

२—सोल एजेन्ट को एजेन्टों तथा शहर और प्रांत की मांगों को पूरी करना । होगा सोल एजेन्टके प्रान्त के आये हुये फार्मेसी सेपूरित आर्डरों पर सोल एजेन्ट को अपने कमीशन का अधिकार होगा

३—खैरीज भाव के सूची के अनुसार माल मंगाने पर ३३) रु सैकड़ा तथा थोक भाव के सूची के अनुसार माल पर २०) सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ।

४—मार्ग व्यय तथा पैकिंग खर्च फार्मेसी के जिम्मे होगा पर सोल एजेन्ट को ५०)रु० से कम कामाल मगाने पर मार्गव्यय देने होगा

५—सोल एजेन्ट का माल रेलवे पार्सल से ही भेजा जावेगा अतः पास की स्टेशन का पूरा पता तथा आर्डर के साथ पेशगी चौथाई रुपया भेजना आवश्यकीय होगा ।

६—सोल एजेन्ट का माल हमारे यहां से पैकिंग के अनुसार सालभर तक न बिकने पर उसकी इच्छा तथा आवश्यकतानुसार और सोल उतने ही मूल्य का भेजा जा सकेगा ।

७—सोल एजेन्ट के नाम के प्रचार को फार्मेसी अपने खर्च से खुश नुमा साइनबोर्ड नोटिस हैन्डबिल तथा पोस्टर समय २ पर एजेन्ट के पास भेजती रहेगी ।

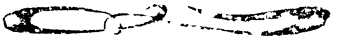
८---उधार देने का नियम नहीं-लिखा पढ़ी इसके बारे में वृथा है ।

नोट हमारे यहांसे वैद्यक संसार में नई जान डालने वाला "राकेश,, नामक उच्च कोटि का वैद्यक मासिक पत्र वार्षिक मूल्य २) में प्रकाशित होता है उस के भी ग्राहक बनानेवालों को कमीशन तथा पत्र एजेन्सी दी जाती है इसके लिये पत्र द्वारा नियम ले कर लीजिये । हर शहर व प्रान्त में एजेन्ट हो रहे हैं शीघ्रता कीजिये धन व यश कमाकर आयुर्वेद प्रचार में हाथ बटाइये । आपका—जनरल मेनेजर



१–आयुर्वेद सन्देश - यह डिमाई साइजका श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेद कालिज लाहौरकी छात्र सभा का त्रयासिक पत्र है जो कि प्रिन्सिपल आयुर्वेदाचार्य पं० सुरेन्द्रमोहनजी बी० ए० के सम्पादकत्व में लाहौर से निकलता है सहायक सम्पादक प्रो० पं० हरदयालजी वैद्य वाचस्पतिजी के पत्र विद्वत्तापूर्ण आयुर्वेदीय विषयों पर सम्पादन किया जाता है। शल्य तन्त्रादिक विषय पर सचित्र लेख भी रहते हैं, सभी आयुर्वेदीय प्रेमी तथा छात्रगण इसको लाभ उठा सकते हैं हम सहयोगी की उन्नति चाहते हैं। वार्षिक मूल्य १।) है।

२–प्रश्न पत्र संग्रह– यह संग्रह श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेदिक कालिज की गत परीक्षाओं के प्रश्नों को डबल काउन के ८७ पृष्ठों में किया गया है आयुर्वेदीय छात्रों की परीक्षाओं में सरलता प्राप्त होना इसी सम्प्राप्तव्य है कारण कि इसमें अनुभवी परीक्षकों ही के प्रश्नों का संग्रह है और निदान चिकित्सादि विषय के जो समग्र प्रश्न एकत्रित कर उसी विषय के साथ रख दिये गये हैं। मू० ।=) है।



"राकेश" वैद्यक पत्र

का

दी राकेश प्रिंटिंग प्रेस

खुल गया

अब राकेश निजी प्रेस में ही छापा जाया करेगा।

मैनेजर—दी राकेश प्रिंटिंग वर्क्स

बरालोकपुर–इटावा यू० पी०

राकेश के नियम ।

१—राकेश का नवीन वर्ष ३० सितम्बर से आरम्भ होता है ।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों मे प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य २) रु० है

३—ग्राहक होने वाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें ।

४—जिनके पास पत्र १५ तारीख तक न पहुचे पोष्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें फौरन सूचना देवें ।

५ पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये ।

६—ग्राहकों व सर्वसाधारण रोगियोंका एक प्रश्न मुफ्त छपेगा। अधिक छपाने के लिये ।) प्रश्न देना होगा ।

लेखकों के प्रति ।

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें ।

२ आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रयोग प्रश्न नहीं छापे जाते है ।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषणा पूर्ण लेखो को पत्र मे प्रथम स्थान मिलेगा ।

४ श्रेष्ठ लेखो पर पुरस्कार मिलेगा ।

५ लेखो के घटाने बढाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा ।

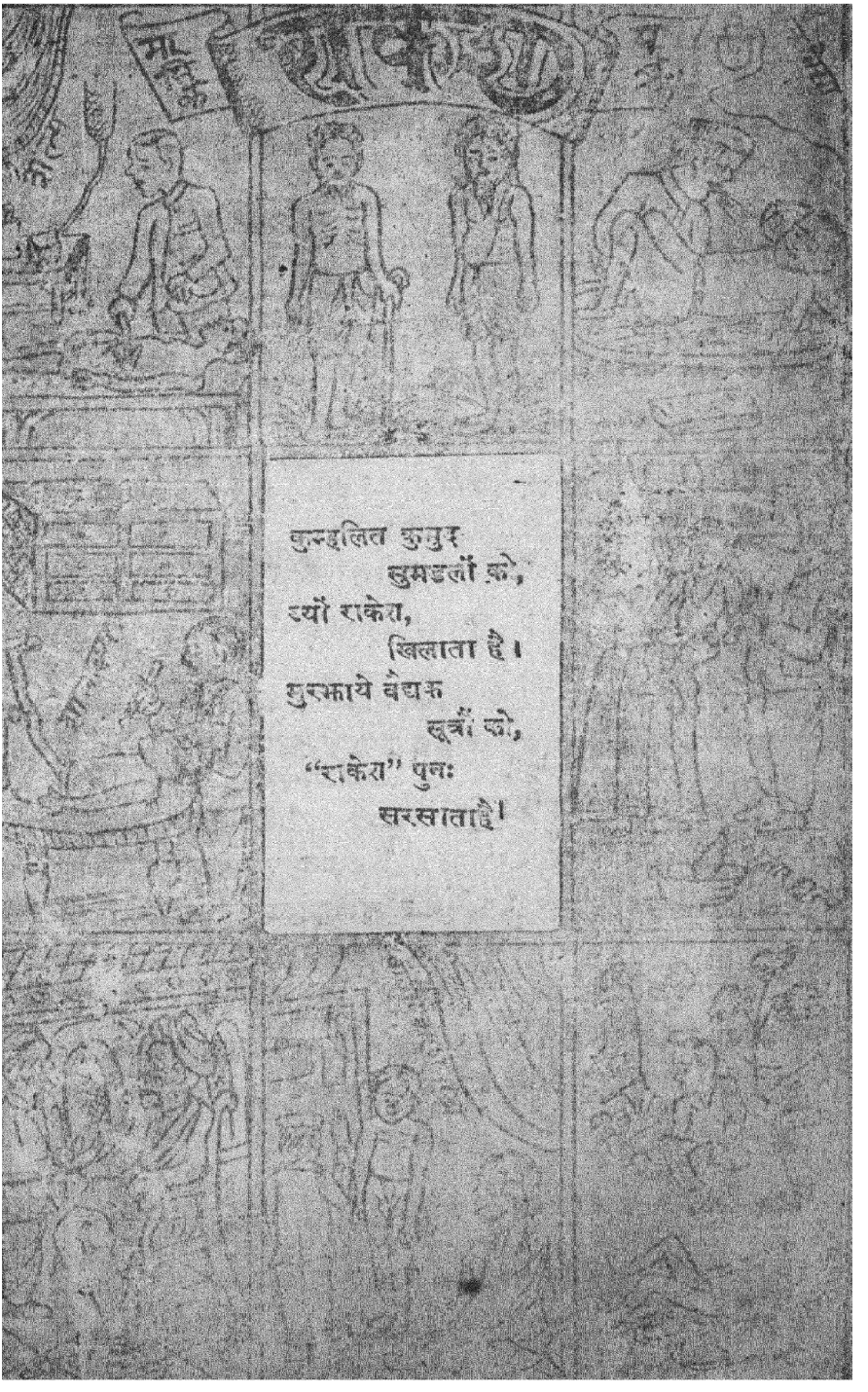
६—प्रयोगात्मक सज्जन अनुभवी प्रयोग ही भेजने की कृपा करें मिश्रा प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे ।

राकेश का विशेषांक

कलीबताँक

अप्रैल मास में नपुँसकता के विषय पर अनुभवी वैद्यों के सचित्र लेख मय निदान, लक्षण तथा उसके दूर करने के पूर्ण उपायों सहित विशेष सज धज के साथ प्रकाशित होगा जिसका मूल्य १) रु० होगा परन्तु प्राचीन तथ मार्च तक के नवीन बनने वाले ग्राहकों को मुफ्त ही में दिया जावेगा ।

—मैनेजर


कुन्दलित कुवुद
लुभ्रमरों को,
त्यों राकेश,
खिलाता है।
मुरझाये बेचक
सूर्य को,
"राकेश" पुनः
सरसाताहै।

[illegible] आप भी मंगवा है?

यू० पी० में सबसे अधिक विश्वस्त आयुर्वेदिक औषधियों का सब से बड़ा औषधालय कहां है?

—: नोट कर लीजिये :—

पं० चन्द्रशेखर वैद्य शास्त्री का ब्राह्मी औषधालय अलीगढ़

जहां कि हर प्रकार के रस, भस्म, आसव, अरिष्ट चूर्ण और सिद्ध घृत तैल आदि आपके उपयोग के वास्ते सस्ते मिलेंगे। थोक भावका सूचीपत्र मंगा देखिये।

दर्शनशाला में प्रत्येक दवा बनती हुई प्रत्येक भाई आकर देख सकते हैं।

पं० [illegible] शास्त्री की बनाई हुई प्रसिद्ध

चंद्र चटनी

अगर आप खाते ही वाह वाह न कहने लगें तो चौगुना मूल्य वापिस। और इसी अखबार में शिकायत छपवाइये

खाते ही तबियत खुश करनेवाली, निहायत जायकेदार फौरन डकार लानेवाली, मन्दाग्नि नाशक, भूख बढ़ाने में लासानी, बुखार वगैरः चले जाने के बाद हाजमा दुरुस्त करने में रामबाण, नित्य भोजन के साथ खाइये जितना भोजन खाया जायगा और हजम हो जायगा या वैसे ही दिन में कभी कभी चाटा कीजिये तबियत खुश रहेगी दस्त साफ होगा। मूल्य १ सेर के डिब्बे का २।) आध सेर का १।) पाव भर का ॥=) आठ तोले के डिब्बे का ।) डा० म० अलग।

पता—पं० चन्द्रशेखर वैद्य शास्त्री ब्राह्मी औषधालय (नं० २ अलीगढ़)

बाबूराम शर्मा के प्रबन्ध से 'श्री राकेश फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस आर० के० डी० [illegible] बरालोकपुर इटावा में मुद्रित तथा प्रकाशित।

॥ श्री धन्वन्तरि जयति: ॥

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण परीक्षित ऐसी।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ की क्रिया जहां करते वैदेशिक सारे।
करते हैं आरोग्य वहां जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २	फरवरी सन् ३०	उदय ६

बिना औषधीश मांहि मन सरसाये ते।

[रचयिता आयुर्वेद शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा मु० पो० कछवा जि० मिर्जापुर]

जैसे अरुणोदय में तारागण लुप्त होत।
लुप्त होत मीन ज्यों सलिल अति पाये ते॥
लुप्त सतनारी व्यभिचारी को विरखत ही।
लुप्त होत मोर मास फागुन के आये ते॥
कृपाकर ! मांहि लुप्त तस्कर व्यभिचारी ज्यों।
होत पुरुषार्थ लुप्त आलस सताये ते॥
तैसे सब वैद्यन को रही औषधादि लुप्त।
बिना * औषधीश मांहि मन सरसाये ते॥

दो०—देखि दशा संसार की, कहता बारम्बार।
हो चकोर 'राकेश' का, होवे जीवन सार॥

! रात्रि * राकेश।

भगंदर

[ले०-डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य स्वर्ण पदक प्राप्त जलालाबाद मुजफ्फरनगर]

परिभाषा ।

भगं परि समन्ताच्चर्म गुदं बस्ति तथैवच ।
भगवद्दारण्येद्यस्मा तस्मादेष भगन्दरः ॥

शब्दार्थ ।

भजन्त्य नेनेति भगो मेहनम् । भजन्त्य स्मिन्नेतभागार्थनः अत्र भग शब्देन द्वय मौपक यते । भगवद्योनिवत् ।

चूंकि यह गुदा को और मूत्राशय को चारों ओरसे योनिके समान फोड़ देता है इसका कारण यह भगन्दर कहाता है ।

निदान ।

गुदस्यत्रयं गुलेत्रे पार्श्वतः पिटकीर्तिकृत् ।
भिन्ना भगन्दरो ज्ञेयः सत्र पञ्चविधोमतः ॥
गूढमूलां ससंरम्भा रुगाढ्यां रूढकोषिनी ।
भगन्दर तरीं विद्यात् पिटिका तत्वतोऽन्यथ ॥
भगंपरि समन्ताच्च गुदं वस्ति तथैवच ॥
कटी कपाल निस्तोद दाह कण्डरू जादयः ।
भवंति पूर्व रूपाणि भविष्यति भगंदरे ।
शतपोनस्तु पवना दुष्टश्चविच्च पित्तजः ॥
परिस्रावीकफात्रज्ञेयः ऋजुर्वात कफोद्भवः ।
परिक्षेपी भवेत्तिसादशोजः कफपित्तवः ॥
आगन्तु जातश्चत्वमार्गी शस्त्रावर्तस्त्रिदोषजः
कषायरूक्षरतिकोपितो निलस्त्ययान देशे
उपेक्षणात् पाकमुपैतिदारुणं रुजांच भिन्ना
बहुकेन शिनो ।

तत्रागमोमूत्र पुरीषरेतसां व्रणेनकैः शतपोनकंलक्षेत् । प्रकोपणैः पित्तमतिप्रकोपितं करोति रक्तां पिटिकांगुदाश्रिताम् ॥ ततश्च पाकाधिमपूयवाहिनीं भगंदर तृष्णरुजांधरं वदेत् ।

कण्डूयनो घनस्रावी कठिनो भद वेदनः ।
श्वेत आभासः कफजः परिस्रावी भगन्दरः ॥
यु तस्मूलरुणोवात कफयोः ऋजुर्भायेच्च ।
सरलश्च व्रणोयस्य ऋजुर्वाति परिचक्षते ॥
वातपित्तोद्भवो यस्तु तल्लक्षण परिप्लुतः ।
परिक्षेपी तुतं विद्यात् परिक्षेपात् भगन्दरः ॥
अर्शोभूले ततः शोथः कण्डूदाहातिमान्रुवेत्
सरुजं पक्वभिन्नोऽस्य फलेदयन् मूलमर्शसः
सृवत्यज सगंतोभिन्नः मर्शोभगंदरः ।
बहुवणरुजास्रावा पिटिकागोस्तनोपमाः ॥
शम्बूका वर्तते तावत् शम्बूका वर्तयेत्ततः ।
क्षतोष्मपित्तः पाकुगतो विवर्धते ह्यपेक्षणात्
स्युःकृमयो विदार्यते प्रकुर्वते मार्गमनेकधा
मुखैः व्रणैस्तदुन्मार्गि भगन्दर वदेत् ।
घोरा साधयितुं दुःखा सर्वे ते भगन्दराः
तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थः क्षतजश्चोपशेषतः ।

साध्यांश ।

गुदा के चारों तरफ दो २ अंगुल स्थल में जब एक खास प्रकार की पीड़ा युक्त फुन्सी फटकर सूखने लगती है उसे भगन्दर कहते हैं ।

वह फुन्सी गम्भीर मूल वाली, शोथ युक्त, अत्यन्त पीड़ायुक्त, और उत्पन्न होते ही शीघ्रता से बढ़नेवाली होती है।

उपरोक्त लक्षणयुक्त फुन्सी भगन्दर को उत्पन्न करनेवाली होती है यदि ये लक्षण न हों तो भगन्दर की उत्पत्ति का संदेह न करना चाहिये।

भगन्दर होने से प्रथम गुदा के चारों तरफ तथा कटि प्रदेश में पीड़ा, जलन, कण्डू आदि चिन्ह होते हैं।

भगन्दर आठ प्रकार का होता है।

(१) शतपोनक (शतम् करोति, रूखे (वात कोपी) खान, पान, विहार से कुपित हुआ गुदा के चारों तरफ गुदा प्रदेश में एक प्रकार की फुन्सी को उत्पन्न करता है। यदि इस फुन्सी की प्रथम ही भली प्रकार चिकित्सा न की गई हो तो इसमें अत्यन्त पीड़ा हो जाती है और वह दारुण शीघ्र ही पकता है, फट जाने पर लाल रंग का झाग बहता है और उसमें रक्त मिश्रित तथा वीर्य निकलता है, फिर बढ़ते २ उसमें बहुत छोटे २ आस पास अनेक छोटे २ मुख वाले व्रण हो जाते हैं। उस प्रदेश की त्वचा छलनी के समान दिखाई देने लगती है, इसी कारण इसको शतपोनक कहते हैं, क्योंकि संस्कृत में छलनी को कहते हैं।

उष्ट्रग्रीव (पित्तज) पित्त को कुपित करने वाले पदार्थों से कोपको प्राप्त हुआ पित्त गुदा के आस पास लाल रंग की फुन्सियों को उत्पन्न करता है, वे फुन्सियां शीघ्र पक जाती हैं और उनमें से गरम दुर्गन्ध युक्त पीप बहती है। इन फुन्सियों का गला ऊंट की गर्दन के समान होता है इसी से इनको उष्ट्रग्रीव कहते हैं।

(३) परिस्रावी (कफज) कफके कोप से उत्पन्न हुए भगन्दर की फुन्सी कड़ी होती है, खुजली चलती है और उसमें गाढ़ा स्राव होता है, पीड़ा कुछ कम रहती है, निरन्तर राध बहती रहती है, इसी कारण से इसे परिस्रावी कहते हैं कफके भगन्दर की फुन्सी का वर्ण श्वेत होता है।

(४) ऋजु (वात श्लेष्मज) प्रायः वात तथा कफके लक्षणों से युक्त रहता है। थोड़ा २ स्राव होता रहता है इसको व्रण मार्ग सीधा होता है।

(५) परिक्षेपी (वात पित्तज) गुदा के चारों तरफ होता है। वात पित्त के लक्षण मिले हुए होते हैं।

(६) अर्शोज-बवासीर के मस्से के मूल में पहले कण्डू, स्राव, पीड़ा युक्त शोथ प्रारम्भ होता है। यह शोथ शीघ्र ही पक कर फट जाता है और मस्से को कुछ गीला सा कर देता है। जैसे ही अर्श से उत्पन्न होकर भगन्दर का रूप धारण कर लेता है यह अर्शोज भगन्दर पित्त श्लेष्मज है।

(७) शम्बूकावर्त या शंखावर्त (त्रिदोषज) अति प्रकुपित दोषों वाली, शीघ्र

प्रकार के स्राव वाली, गाय के स्तन के समान फुन्सी उत्पन्न होती है और उसका स्राव मार्ग शंख के आवर्त के समान होता है, तथा शंख को शम्बूक भी कहते हैं। इसलिये इसको शंखावर्त या शम्बूकावर्त कहते हैं।

(७) उन्मार्गी–गुदा में किसी बाह्य क्षत वा अन्तः क्षत के कारण नाड़ी व्रण हो जाने पर यदि चिकित्सा उचित न होवे तो वहां पर फोड़ा होकर उसमें पीप पड़ जाता है, यहां तक कि उसमें कीड़े पड़ जाते हैं, अनेक व्रण हो जाते हैं और व्रण अनेक मुखों से स्रवता है। चूंकि इन व्रणों के सिरके मार्गों से विष्ठा आदि निकलती है इसी से इसका नाम उन्मार्गी है।

भगन्दर का साध्यासाध्य विवेचन सम्पूर्ण भगन्दर कष्ट साध्य हैं। त्रिदोषज (शम्बूकावर्त) तथा क्षतज (उन्मार्गी) भगन्दर असाध्य हैं।

सामान्यतः भगन्दर पांच प्रकार का आयुर्वेद तन्त्रों में परिगणित है परन्तु कई तन्त्रों से परिगणित है। परन्तु कई तन्त्रों आठ प्रकार के भेदों का उल्लेख है।

चिकित्सा–भगन्दर की फुन्सी उत्पन्न होते ही इस प्रकार यत्न करें कि कि जिस से फुन्सी पके नहीं (शोधन, शोषण, रुधिर निकलवाना इत्यादि उपचार करें तो फुंसी पकती नहीं)

बड़के पत्ते, ईंट, खौंट, निसोथ, पुनर्नवा इनको अच्छे प्रकार से पीसकर जहां तक भगंदर की फुंसी हो लेप करें उत्तम है। यदि शुरू में ही यह लेप कराया जावे तो फुंसी पकने नहीं पाती हमारा परीक्षा किया हुआ है।

साथ में यदि लंघन से लेकर विरेचन तक की क्रियायें भी करा दी जावें तो और भी उत्तम रहती है।

शोधनीय कषाय–तिल, मालकंगनी कूट, कलिहारी, कृष्णकांता, सोया, निसोत दन्ती नीम के पत्ते बकुल एक २ तोला लेकर अधकुट करके एक सेर पानी में पकावे जब आधा जल शेष रह जावे तब नीचे उतार कर गरम २ ही वस्त्र से छान ले इसी गुन गुने पानी से भगंदर का घाव धोकर साफ करे तो वह बिगड़ता नहीं वरन् शुद्ध होकर शीघ्र भरता है।

करबीरादि तेल–कनेर की पत्ती, गुगुल हलदी, इन्द्र जौ, सज्जी नमक, आकका दूध कलिहारी, चीता, बिजोरा, नीबू का रस, प्रत्येक दो दो तोला, तिल के तेल तीन पाव काष्टादि औषधियों को सिलपर पानीसे महीन पीस तेल में मिलाकर पकावें सिद्ध हो जाने पर छानकर रक्खें और काम में लावें। या चित्रकादि तेल, लाक्षल्यादि तेल लगावें।

नोट–प्रति दिन शोधनीय कषायों से व्रणों को अच्छी तरह धोकर और शुद्ध वस्त्र से पोंछकर पानी सुखा डालें उसपर दिन में तीन चार बार उपरोक्त तेलोंमें से किसी एक को ही लगाने से व्रण सुख जाते हैं। (क्रमशः)

प्राचीन भारत और शल्य तंत्र

(लेo-प्रोo रामदेव गुप्त वर्मा बीo एo बीo एलo एलo बीo एसo एसo एसo)

यथा वेष्टयेदुदरं महता वाससा तथा न तस्य वायु रुदरे विकृतिमा पादयति।

(आत्रेय)

इसी तरह से भगवान बुद्ध ने यह वाग्भ में खुजली की चिकित्सा बताते व्रण की चिकित्सा में यही बांधना बताया है सिर पर औषधि लगाने के लिये केशों को भी बांध दिया जाता था।

चर्म बंध।

इसका बंधन वस्त्र की अपेक्षा दृढ और उष्ण होता था अतः गुद भ्रंश रोग में इसका बंधन किया जाता था इसी प्रकार शाखाओं के संधि भंग या अस्थि भंग की अवस्था में चर्म का बंधन किया जाता था इसके अतिरिक्त चर्म पर औषधि लगाकर व्रण पर भी रखते थे और इससे व्रण भी सिया जाता था और विष की अवस्था में बंधन प्रयुक्त किया जाता था यथा-गुद भ्रंशे गुदस्विन्नं स्नेहाभक्तं प्रवेशयेत् तथाच। कारयेद् गोफणाबन्धं छिद्रेण चर्मणा (चक्रवत्त) युञ्जेत् रात्रौ दिवावद्धं चर्म भिस्त्र सुखोष्णभिः (सुश्रुत)

यंत्रण शाटिका।

अर्श एवं अश्मरी निकालते समय रोगों को यंत्रित किया जाता था जिसके लिये शाटिका व्यौहार करते हैं ब्राह्मणबाध मानीवस्त्र पट्ट चर्म-प्रान्तवल्कल लतामां अन्य तमेन यंत्र यित्वा (सुश्रुत) यथाच तंत्र यित्र शिरं पुरुषं यंत्रण शाटकं गोवाया मुष्टयो परि। (सुश्रुत)

दूति।

इसका वर्णन वेदों में सोमरस को एकत्र करने में आता है वेद में अगस्त ने इससे विष निकालने का आदेश किया है मनुस्मृति में बुद्धि के नष्ट होने की उपमा मश्क से पानी गिरनेके रूपमें दिया है इसके द्वारा कूपादि से पानी निकाला जाता है ब्राह्मण ग्रंथ में चर्म के अनेक उपयोग पाये गये हैं यह चर्म का एक वेग है यथा-दृते रिवते ऽवृकमस्तु सख्यं अच्छिद्रस्य दधनत्वः तथाच। यो हया मधुनोदृतिराहतोरथचर्षणी ततः पिवत मश्विना-ऋग्वेद। सूर्येविषया सृजामि दृतिः सुरुडतोगृहे। ततोऽस्य क्षरति प्रज्ञादृते यात्रादिवोदकम् ॥ मनुः ॥ तथाच परिशुद्ध जीर्णचर्म कुरंडकैव अभ्युक्षधृता चर्मकुण्डः चर्मपुट तथाच। रौरवे वा चर्मे कृष्णाजिनम्।

(शेष फिर)

औषधि विज्ञान

तुलसी

[लेखक—डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य आर्य फार्मेसी जलालाबाद मुजफ्फरनगर]

प्रायः इस पौधे को कोई ऐसा अनुभव न होगा। जो न जानता हो, खासकर हिन्दुओं में तो यह सर्वश्रेष्ठ ही माना गया है और प्रायः हिंदू लोग इसकी पूजा करते हुए शायद ऐसा कोई ही देवालय होवे जहांपर इसका खुप विराजमान न हो।

प्राचीन ऋषियोंने जिस वस्तुमें अधिक गुण देखे अथवा जो वस्तु बहुत ही लाभ दायक होती पाई उसको अपने रखने के लाने कोई न कोई बात ऐसी रखदी है कि वह किसी प्रकार से भूली न जा सके इसी तरह से तुलसी को भी इतनी अधिक महत्ता दी गई है कि इसकी पूजा की जाती है।

मैंने अपनी परीक्षा में जो २ लाभ गुण इस वृक्ष के देखे हैं वह आप लोगों के सामने प्रगट करता हूं और इस पौधे के बारे में ही खास २ जानकारी बातें लिखी जाती हैं ताकि मेरे इस परिश्रम से जनता लाभ उठावे।

(१) मंदिरों में दिई जानेवाली तुलसी दो प्रकार की होती है श्याम तथा कृष्ण प्रथम इसी के नाम दिखाये जाते हैं।

संस्कृत—तुलसी, सुरसा, ग्रामया, सुलभा बहुमंजरी, अतितुलसी गौरी, श्यामली, देवदुंदभी, वैष्णवी, वृंदा, सुरसा, सुरभि, हारिणी, अमृता, पवित्रपत्रा, गौरता, खरी, रक्तभा, तोया, पावनी, विष्णुवल्लभा सुरेष्टा, कायस्था, सुरदुंदुभी, दुरभी, बहुमंजरी, मंजरी हरिप्रिया, श्यामा, त्रिदशा मञ्जरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, वर्षासु, कठिञ्जर कुठेरक, कृष्णा बाधवी, सुरवल्लभी, प्रेत राक्षसी, दुःखहा, दिव्यपत्री, माला, श्रेष्ठा पापघ्नी, लाक्षी, कृष्णवल्लभा, आदि।

हिंदी—तुलसी,

अंग्रेजी—स्वीट बेसिल

बं०—वै० तुलसी,

गु०—काली तथा धोली तुलसी

परशियन—रेहान बेसिल

म०—तुलस, तुलसी

क०—एरेतुलसी

तै०—अडविमोलिगा आकरा

फा०—रिहा ओसमम बेकरम्।

अ०—उलसी बदरुल

अ०—बरबरी, जङ्गली, अग्नि प्रदीपक, हृदय को हितकारी, गरमदाह, तथा पित्त को करनेवाली और कृष्ण, मलकृच्छ्र रक्त विकार पसली पीड़ा, कफ नाशक वातको नष्ट करती है। सफेद तथा काली तुलसी दोनों गुणों में समान कही हैं परन्तु हमारी परीक्षा में काली तुलसी में सफेद से अधिक गुण पाये गये हैं तथा कृष्ण शीघ्र प्रभाव करती है।

इसे तुलसी का पौदा एक गज ऊंचाई तक का हो जाता है, तथा गृहस्थी लोग पूजा के लिये अपने २ घरों, बालयों मंदिरों आदि में लगा लेते हैं। इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते हैं। और उनमें सुगंधि भी आती है।

उसकी डाल २ में बाल निकलती है, उसको मंजरी कहते हैं।

दूसरी श्याम पत्तों की श्याम तुलसी होती है परन्तु आकृति दोनों की एक ही प्रकार की है।

(२) वनतुलसी।

संस्कृत नाम—बबरी, तुबरी, तुङ्गी, खर पुष्पा, अजगंधिका, एणस, बबरी, खरपुष्पिका प्रस्तुरसा, बर्बा, अजगंधा, बबरा, सुरभि, सुरसा, तुलसीद्वेषा आदि।

हिंदी—बबरी, वनतुलसी, बबई

बंगला—बाबुई, तुलसी, बनबाबुई, तुलसी

मरहटी—रानतुलस

गुजराती—रानतुलसी भटे

कटिया—बगोरले, बरीयगोरले

तैलगी—कारु तुलसी

अरबी—परंजमुश्क

फारसी—रतंगमुश्क

लेटिन—ओसिमम् गैंग्टिसिमम्

यह तुलसी तीन प्रकार की होती है। काली बबरी को कस्तूरी तुलसी और कटेरक सफेद बबरी को अर्जक और तीसरी जाति की बबरी को बट पत्र कहते हैं।

(शेष फिर)

खुल गया ! खुल गया !! खुल गया !!!

दी राकेश फाइन आर्ट प्रीटिंग प्रेस,

उत्तम व सस्ती छपाई के लिये

दी राकेश प्रीटिंग प्रेस

आर० बी० डी० कालकटर गंज

बराजोकपुर इटावा में पधारिये।

२० वें वैद्य सम्मेलनावसरपर स्वागत संगीत

पधारे वैद्यगण प्यारे तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ टेक ॥
अखिल भारत वर्ष भर के सुवैद्यों की सभा प्यारी।
है विंशतिम् यह अधिवेशन तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ १ ॥
नमूना प्रेम का यह है पधारे दूर देशों से।
भयंकर शीत में भाई तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ २ ॥
कृपा कर आप सी० पी० और यू० पी० से पधारे हैं।
समझ शुभ काम निज घरका तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ३ ॥
सुभट महाराष्ट्र के बांधव निकट मद्रास के वासी।
पधारे वैद्य बोम्बे से तुम्हें स्वीकार स्वागत हो॥ ४ ॥
समासद कच्छ के सज्जन और गुजरात के भाई।
प्रांत पंजाब के वासी तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ५ ॥
भाई बंगाल के आये पधारे वैद्य राजपूताना।
विशेषिस्तान सिंधीजन तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ६ ॥
हमारी पर्ण कुटिया में भमर युत राम आये हैं।
जो कुछ यह बेर मिलने के तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ७ ॥
प्रमुख पद पर विराजे 'राम' आयुर्वेद के रक्षक।
सकुल है यह महोनित का तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ८ ॥
कृपा धन्वंतरी भगवान की हम पर सदा यह हो।
मिले बांधव परस्पर में तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥ ९ ॥
नहीं है आपके अनुरक्त सारी यह व्यवस्थायें।
सुदामा के समान संतुष्ट तुम्हें स्वीकार स्वागत हो ॥१०॥
करांची के जनवासी हम नहीं आतथ्य की हमने।
त्रुटी की हो क्षमा करना तुम्हें स्वीकार स्वागत हो
दयासी का यह स्वप्नेश्वर कटे सब रोग दुःखों के ॥
पुष्पस्वांती की दृष्टि से तुम्हें स्वीकार स्वागत है ॥१२॥

[आरोग्य सिंधु से उद्धृत]

*

अनुभवसार

पञ्चकर्म पर प्रलेप।

उत्तम पीले चने ५१ सेर लेकर आधसेर जल में भिगोवे जब सब जल सूख जाय तब भीगे चने कपरोटी की हुई आतसी शीशी में भर दे और मुखोपर थोड़े के बाल लगा दें और उबट कर के १ नांद में धरें जिसमें बाल में छेद हो मुख नीचे निकालले और नांद चूल्हे पर चढ़ा दे नीचे एक कांच की प्यालो धरें और ऊपर नाद में बालू भरे उसके ऊपर अग्नि जलावे। नीचे काले रंग का तैल प्यालो में इकत्तर होगा। यदि वह मिश्री मिलाकर खाया जायगा तो धातु पुष्ट करेगा और आमाशयके मुख (घांटी) पर जो लगाया जायगा तो वमन होगा। नाभी पर लेप करने से दस्त जारी होंगे। वस्ति पर लगाने से बंद मूत्र खुलेगा और जघन देश में लेप करने से स्त्रियोंका रज जारी होगा। आलेप को जबतक धोया न जायगा तबतक असर करेगा जब बंद करना हो तब धो डाले।

कब्ज पर प्रलेप

पीली हरड़ का चूर्ण। ३ तो० रेड रूपवृजा के बीज ३ तो० बारीक पीसकर थूहर के दूध, १० तो० में घोटकर नाभी पर चपका दे तो दस्त जारी होंगे जबतक कपड़ा चिपका रहे बराबर दस्त आते रहेंगे। जब बंद करना हो तो फाहा निकाल कर गर्म जलसे धो देवें, एक महाशयने थूहर के दूध के बजाय चौगड़ा का दूध बताते थे परन्तु वह मेरा अनुभूत नहीं है।

समस्त नेत्र रोगों पर तथा अन्य

समस्त रोगों पर

दारु हल्दी १, तो० आंवला, १ नींबकी पत्ती १, गुरुचका सत १, मिरचस्याह ५, सोंठि मेंदा १, नागरमोथा १, हरड छोटी, १, बायबिडंग १, कूट मीठा १, पीपर छोटी १, सेंधवलवण १, पुनर्नवा सफेद १, उपरोक्त औषधियों को कूट पीसकर बकरीके मूत्र में १२ पहर घोटे चना समान बटी बनाले यथोचित अनुपान से आंजे तो समस्त रोग जांय। ताजे जलसे नेत्र के समस्त रोगमें लगावे परन्तु निम्नांकित रोगों में उक्त वस्तुओं के साथ लगावे तो विशेष लाभ होगा। शहत से परवार में धुन्धमें बकरी के दूध से फूली में, गोदुग्धसे क्षिप चिपाहट में, तिल तैल से रतौंध में केलाके स्वरस से ढरका में, सरसों तैलसे कंडूमें, स्त्री दुग्ध से अर्बुद में, और ज्वरके रोगों में, बेला ज्वर, तथा अजीर्ण ज्वरमें १। १ गोली खाय, अतरा ज्वर में २ तृतीयक ज्वर में ३, विशूचिका तथा चातुर्थिक ज्वर में ४ प्रयुत ज्वर में ५ सर्पक्षिप्त ज्वरमें

७ अन्य सब विषयों में १२ सन्निपात ज्वर में १३ और विषमज्वर (बारधीबर) में १४ बटी खिलाने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त समस्त रोगों में वैद्य अपनी बुद्ध्यानुसार अनुपान के संग दे तो अवश्य लाभ होगा (नास्तिरोगो भुविमानवानां मर्यबटी जन्तु जयतप्रसह्यः) यह बटी सदैव हमारे औषधालय में तैयार रहती है और रोगियों को मुफ्त दी जाती है। पाठकगण एक बार अवश्य बनावें और लाभ उठावें गुणागुण राकेश में प्रकाशित करें।

त्रिदोषपर प्रलेप।

बिडंग काबुली, करेलाका स्वरस, सुखाया हुआ ६। ३ माशा कुटकी सफेद, मुरादसंख ४। ४ मासा अरबी बकरी मोम १। १ तोला तेल जैतून या सरसों ३। ३ तोला सब पकाकर मरहम बना लेवे आमाशय पर लेप करे तो समस्त दूषित वात 'दस्त' होकर साफ हो जाय और दोनों पार्श्व (बगल) पर लगावे तो समस्त दूषित पित्त 'दस्त' होकर निकल जाय, और शिरःस्थान (दोनों चूतड़ के मध्य पीठ की ओर) पर लगावे तो समस्त दूषित कफ 'दस्त' होकर शांत हो जायगा परन्तु उक्त मरहम जब तक लगा रहेगा तबतक बराबर दस्त जारी रहेंगे जब बन्द करना चाहे तो धो डाले।

विश्वसेवक—
आ. डा. पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
गौलोना

'एक पन्थ दो काज'

दैनिक सत्य

वार्षिक मूल्य डाक व्यय सहित ६) एक प्रतिका एक पैसा

ग्राहक [एकबार अवश्य पढ़िये] बनिये

नामक पत्र जबलपुर से निकल रहा है इसका आकार सम्प्रति क्राउन साइज ६ पृष्ठ का है पर शीघ्र ही इसकी पृष्ठ संख्या ८ होनेवाली है पत्रका ध्येय राजनीतिक एवं साम्प्रदायिक दल बन्दियों से अलग रहकर शिक्षा तथा धार्मिक सामाजिक, नैतिक आर्थिक, औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी विषयों पर विवेचना कर प्राणि मात्रकी सेवा एवं स्वार्थ रहित सेवा करना है। इसके [illegible] आय का सदुपयोग किया जाता है। अतः शीघ्र ग्राहक बनिये।

कृपया स्वामी सम्पादक 'सत्य'
जबलपुर सी० पी०

व्यायाम मासिक पत्र

कुश्ती, लाठी, वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देनेवाला हिन्दी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥) रु० है। पता—व्यायाम कार्यालय रावपुर बड़ौदा

पाठकों से प्रश्न

प्रश्न नं० २९–प्रिय महोदय वैद्य समाज से सविनय प्रार्थना है कि मेरे भाईके लड़के के सब अङ्ग में सफेद २ दाग से हैं जिसे बहुत से लोग दूगी दीप व भूत छाई कहते हैं कृपा करके कोई अनुभूत योग प्रकाशित कर लिखें और दाद की औषधी भी लिखने की कृपा करें जो सैकड़ों वक आजमाई हो।

आपका नम्र बाला सांबला
जमादार वाइमीकिया
मराठी हाई स्कूल
अमरावती सी० पी० बरार

प्रश्न नं० ३०–मुझे एक नपुंसक रोगी मिला जिसके पहिले रोग खांसी का था एक वैद्य को १०) रुपये देने कहा था मगर खांसी रफा होनेपर उसने न दिया उस वैद्य ने कोई दवा खिला दी जिससे नपुंसक हो गया। मेरे पास आया और कहने लगा कि मेरी दवा करो मैंने कहा उसी वैद्य के पास जाओ जिसको १०) रुपये देने कहा था उसने रुपया देना मंजूर किया और रुपया दिया मगर उससे दवा कोई न कराई एक पुस्तक में नुसखा लिखा था कि हरदी और तेन्दू को चूर्ण कर बकरे के मूत्र की भावना देवे बाद जिस पुरुष को खाने को दिया जायगा वह नपुंसक हो जायेगा बाद तिल गोखरू बकरी के दूध में औटाकर शक्कर डालकर पीने को अच्छा हो जायगा मैंने उसको काले तिल १) तो० बड़ी गोखरू १) तो० पीसकर ½ भर बकरी के दूधमें औटाकर आधा रहने पर एक तोला शक्कर डालकर २१ रोज खिलाया वह बिलकुल अच्छा हो गया प्रिय महाशय इस लेख पर ध्यान देवें और यह भी अनुभव अपना लिखें कि वह कौनसी वस्तु खिलाई है जिससे नपुंसक हो गया राकेश द्वारा सूचित करें।

प्रश्न नं० ३१–मुझे एक दवा की जरूरत है कि कमजोर से कमजोर से कमजोरको पुरुष एकबार दवा खानेसे एक घंटा तक रति कर्म में वीर्य स्खलित न हो अगर अफीम न हो तो बहुत अच्छा है

वैद्य महादेवप्रसाद
मु० पिड़खर पो० बिसंडा (बांदा)

प्रश्न नं० ३२–किसी वैद्य, सज्जन तथा अनुभवी सज्जन के पास 'लज्जावती' के बीज हों या पता मालूम हो कि कहां मिलते हैं उसका पूरा २ पता लिखने की कृपा करें। लज्जावती ऐसी हो कि मनुष्य की परछाई से मुरझा जावे। साथ ही यह भी लिखें कि उसमें फूल कैसा आता है।

अगर यह बूंटी किसी स्थान में होती हो तो उसका भी पता लिखें।

प्रश्न नं० ३३—क्या कोई महाशय ऐसी क्रिया जानते हैं कि जिससे आकका दूध फटकर पानी बिलकुल अलग हो जाय? कृपया राकेश में अपना पूरा २ पता या किया प्रकाशित करा दें।

प्रश्न नं० ३४—एक बूंटी का नाम 'कत्ली नगद' है। उसकी शकल कृष्ण सर्प के माफिक होती है। बिल्कुल काला वर्ण पत्र फणाकार और फूला जिह्वा के माफिक होती है। तराई की जगह पहाड़ी भूमि वा ककरीली जगह एक हाथ लम्बी तक होती है। कोई सज्जन उसे पहचानते हों या उसकी जगह का पता जानते हों तो राकेश में प्रकाशित करें। इसका उप योग बहुतसे राज रोगों पर होना है उसका विवरण अगले अङ्क में दिया जायगा।

रा० वै० चन्द्रशेखर
ब्रह्मचारी वृन्दावन

प्रश्न नं० ३५—वृन्दावन (मथुरा)

मेरे एक मित्र की इन्द्रिय में तथा अण्डकोष में सुबह ४ बजे से सूजन होती है सूर्यास्त तक रहती है फिर रातको कम पड़ जाती है इसके सिवाय कोई शिकायत नहीं है इस रोगका क्या नाम है वैद्य वर्य लिखें साथ ही दवा भी लिखें मगर पेटेन्ट हो।

ब्र० चन्द्रशेखर वैद्यराज वृन्दावन

प्रश्न नं० ३६—क्या दुनियां में ऐसा कोई हकीम वैद्य, डाक्टर है जो बहते कान को अच्छा कर सके। अथवा आयुर्वेद में ऐसी कोई औषधि नहीं है जो कानों का बहना बन्द करे। कान दोनों बहते हैं बहने की वजह से कम भी सुनाई देता है कान बहते आज करीब ८ साल हो चुके डाक्टर देख देख कर तमाम दवाएं लगाई यहां तक कि लगाते २ करीब १२५) खर्च हो चुका तो भी कान बहना बन्द न हुआ। मालूम होता है कि इस दुनियां में न तो कोई ऐसा वैद्य है न ऐसा दवा है जिससे कान बहना अच्छा हो अब आप साहबों से बिनती है अगर कोई दवा ऐसी पेटेन्ट हो जो छपा न सके हो तो नीचे लिखे पते से बातचीत करें। असल बात यह है कि जिस साहब की दवा से बहना बन्द होगा उन्हें दवा के दाम के अलावा यथाशक्ति पुरस्कार दिया जायगा।

कुंवर रघुवीरसिंह वर्मा वैद्य
मु० गोलोरा पो० भरतमा
जिला भिंड (ग्वालियर)

प्रश्न नं० ३७—क्या कोई महाशय स्वर्ण को द्रव रूप में लाने की क्रिया लिखें वह लीजर अर्क बनाया जा सके जिसको फ्रांसी चिकित्सा वाले 'माउल जुहब' से पुकारते हैं जो खांसी को मिटाता है और शरीर में बल और पुरुषार्थ बढ़ाने के साथ काममें लाया जाता है या वह पुस्तक जिसमें द्रव्यों को द्रव रूपमें लानेकी विधि लिखे उसके मिलने का पता और नाम बता देने

बता इस की अवश्य कृपा करें।

भवदीय उत्तराभिलाषी—

गंगाप्रसाद (वैद्य) उदैपुर।

सेवा में उत्तर—

प्रश्न नं० २८—सबसे बड़ी बात जो मैं आपसे कहना चाहता हूँ वह यह है कि आप लोग अपने इस [illegible] और कि मुझको अपना [illegible] निश्चय (विश्वास) है सैकड़ों प्रसिद्ध वैद्यराज डाक्टरों और अनेक विख्यात हकीमों की दवा सेवन की और लाखों रुपये व्यर्थ बरबाद किये मगर कोई लाभ नहीं हुआ अब हालत यह है कि तिल्ली आधे पेट में है। आंखें इतनी पीली हो गई हैं कि सफेदी नहीं रही है उम्र ४३ साल की है अब साधारण है। कमजोरी हो जाती है और [illegible] आप [illegible] अपने [illegible] है [illegible] बड़ी [illegible] है।

[illegible]

मु० पो० [illegible]

प्रश्न नं० ४९—एक [illegible] पढ़ा [illegible] कि [illegible] हैं कोई [illegible] नाम तथा मिलने का पता [illegible] जाने का कष्ट करेंगे प्रकाशित करने का करें।

वैद्य आत्माराम [illegible]

लायलपुर

आयुर्वेद फार्मेसी के [illegible] का

नवीन आविष्कार

मिश्रित अफीमची	[illegible]	हिमालयजड़ीबूटी	२।) सेर
जोफक	४०) "	विधारा	१॥) "
मूषाफक	३०) "	वंशलोचन	२०) "
मूर्छि	२९) "	लालती	।) "
वृद्धि	२५) "	वंशलोचन	१) "
मेदा	६) "	भंगबीज	।) "
महामेदा	६) "	हरताल पतारंग	२०) "
काकोली	१२) "	केसर	[illegible] तोला
क्षीर काकोली	१६) "	दूर्वातोली सिद्धाशीम	१) "
पुष्करमूल अश्वत्ती	५) "	कस्तूरी उत्तम	५) "
क्षीरविदारी	४) "	अम्बर	१०) "
नागकेशर नेपाली	२०) "		

नोट:—यथार्थ तथा शुद्ध जड़ी बूटीके जो व्यापारी हों अवश्य हमसे सम्बन्ध [illegible] चाहिये

पता—आर्य्यन फार्मेसी देवरोड़ा

वैद्यवरों को उत्तर

उत्तर प्रश्न नं० २७—आपको रक्तदोष है मल भी दूषित हो विकार युक्त हो पाचन नहीं शुक्र रक्तका कुन्दहै बननाइत्यादि से आपका स्वाद भी नष्ट हो गया है आप निम्न चिकित्सा शैली द्वारा औषधि सेवन कीजिये अवश्य शरीर शुद्ध हो रोग दूर होवेगा। प्रथम आप ३-४ दिवस मूंगकी खिचड़ी घृत युक्त सेवन कीजिये बाद को निम्न विरेचक प्रयोग बनाकर ६ मा० गर्म दुग्ध से सुबह शाम उतारें।

प्रयोग—गुलाब का फूल ६ तो० ४ मा० इलायची २ तो० अमलतास २ तो० हरड़ बड़ी १ तो० हर्र छोटा २ तो० हर्र जर्द २ तो० पीपल २ तो० सोंठ २ तो० मिर्च २ तो० नेसोथ ३ तो० ४ मा० शुद्ध जमालगोटा १ तो० ८ मा० छोटी इलायची १ तो० रेवन चीनी १ तो० २ मा० शहद ऽ१ मिश्री ऽ॥ अर्क गुलाब ऽ-।

विधि—सब दवा कूट छान अर्क गुलाब शहद में मिलाकर आध घन्टे घोटे मात्रा ६ मा० इस प्रकार करीब ८ दिवस तक इक विरेचक को इस्तेमाल करें और शरीर की फुन्सियों में महा भरिंगादि तैल की मालिश करें तथा ८ दिवस रेचक योग सेवन के बाद खाना खाने के बाद १ तो० खदिरारिष्ट बराबर जल मिलाकर करीब १५ दिवस तक पीवें। इस क्रियासे आपका रक्तव मल शुद्ध हो शरीर निरोग होगा और स्वाद भी प्रतीत होने लगेगा।

उत्तर प्रश्न नं० २८—महाशयजी आप अपने रोग के लिये निम्न औषधि सेवन कीजिये अवश्य लाभ होगा औषधि जब आराम फिर छोड़ा हो उसी समय सेवन कीजिये और बराबर ४० दिन इस्तेमाल करें रोग निर्मूल होगा।

शुद्ध कुचिला १ रत्ती असल चन्द्रोदय १ रत्ती की खुराक मिलाकर मलाई युक्त सुबह शाम सेवन कर १५ मिनट बाद गो गुग्ध पी लावें और गांठपर व दर्द स्थानपर रोजाना विषगर्भ तैल की मालिश करें।

राकेश का विशेषाङ्क

क्लीवताङ्क

अप्रैल मास में नपुंसकता के विषय पर अनुभवी वैद्यों के सचित्र लेख मय निदान, लक्षण व उसके दूर करने के पूर्ण उपायों सहित विशेष सज धज के साथ प्रकाशित होगा जिसका मूल्य १) रु० होगा परन्तु प्राहीज तथा मार्च तक के बननेवाले ग्राहकों को मुफ्त दी में दिया जायगा। —मैनेजर

निखिल भारतवर्षीय विंशतितम [२० वां] वैद्यसम्मेलन

के

स्वीकृत प्रस्ताव

प्रथम प्रस्ताव

यह सम्मेलन गत वर्ष में परलोकवासी निम्न लिखित आयुर्वेदज्ञ एवं आयुर्वेद प्रेमियों की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रदर्शित करता हुआ उनके कुटुम्बीजनों के लिये समवेदना प्रगट करता है।

१ आनरेबिल जस्टिस श्रीयुत पं० कर्णनाथजी मिश्र चेयरमैन इण्डियन ला लखनऊ।

२ श्रीयुत पं० क्षमापतिजी बाजपेयी आयुर्वेद भूषण लखनऊ।

३ वैद्य पं० परशुराम शास्त्री विद्यासागर अम्बाला।

४ केप्टन श्रीनिवासाचार्य मदरास।

५ वैद्य पं० जयकृष्णइन्द्रजी कच्छभुज

६ वैद्य पं० विश्वभानु शास्त्री लाहौर

७ वैद्य पं० जयनारायणजी, देहली।

८ वैद्य पं० मयाराम सुन्दरजी, लेनपुर

९ वैद्य पं० रामदत्तजी, आगरा।

१० वैद्य पं० सत्येन्द्रदत्त ठाकुरदत्त मुलतानी लाहौर।

प्रस्तावक सभागति

द्वितीय प्रस्ताव

यह सम्मेलन विद्यापीठ को निर्देश करता है कि निम्न लिखित विषयों की अलग २ योजना कर आगामी वैद्य सम्मेलन में उन्हे उपस्थित करें।

१ आयुर्वेद विद्यापीठ के पाठयक्रमका पुनरावलोकन कर उसमें उचित संशोधन करना।

२ उप वैद्य (कमाउण्डर) परीक्षा की संयोजना और उनका पाठयक्रम तय्यार करना।

३ धात्री शिक्षा और परीक्षा की संयोजना और उनका पाठयक्रम तैयार करना

४ प्रत्यारक वैद्य श्रेणी के निर्माणपर विचार तथा उसके लिये पाठयक्रम और परीक्षा की संयोजना करना।

प्रस्तावक पं० जगन्नाथप्रसाद बाजपेयी आयुर्वेदाचार्य काशी

समर्थक पं० रामेश्वरजी शुक्ल आ० आ० गवालियर

तृतीय प्रस्ताव

यह सम्मेलन म्युनिसिपल और लोकल बोर्ड के अधिकारियों से अनुरोध करता है कि वे अपने नियमानुसार स्थानीय वैद्यों की एक समिति बनाकर अधिकार देवे कि वह औषधियों के उपयोगी द्रव्यों की जांच करें। एवं उस की सम्मतिके अनुसार मिश्रित एवं मिथ्या द्रव्यों के बिकने में रुकावट डालें।

प्रस्तावक – रायबहादुर श्री सेठ शिवरतन जी मोहता करांची

समर्थक – प्रोफेसर गिरधारी कविराज

[illegible] पं० [illegible] शुक्ल आचार्य
[illegible] प्रसाद

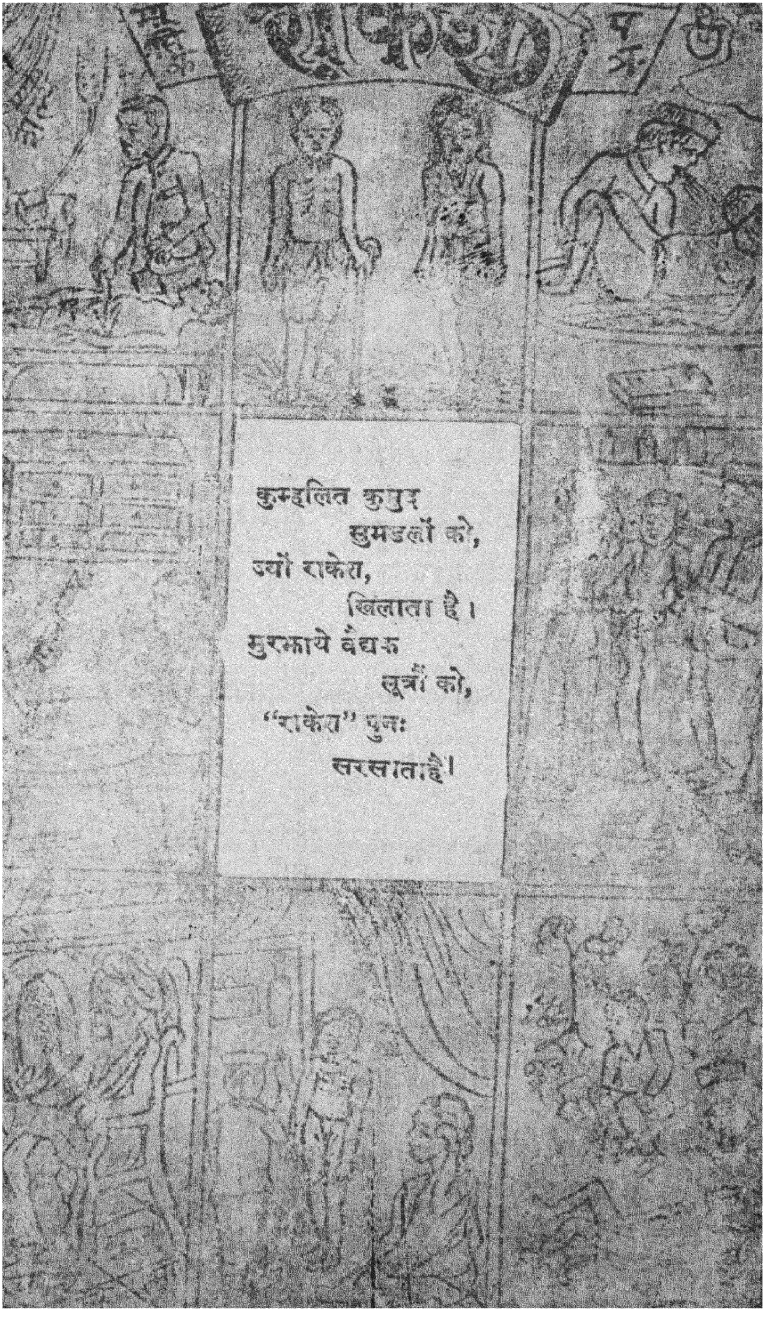
यह [illegible] सर्वसाधारण को [illegible] करना है कि [illegible] वैद्यक [illegible] संस्था [illegible] करने [illegible] नियम [illegible] समझने के लिये [illegible] संख्या की [illegible] भेजने [illegible]

१ जयपुर राजकीय आयुर्वेदीय विद्यालय जयपुर
२ डी० ए० वी० कालेज आयुर्वेदीय पाठशाला लाहौर
३ आयुर्वेदीय एण्ड यूनानी तिब्बी कालेज देहली
४ आयुर्वेदीय विद्यालय देहरा
५ गौड़ ब्राह्मण सभा कलकत्ता आयुर्वेदीय विद्यालय [illegible]
६ आयुर्वेद विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी
७ लक्ष्मी इन्दिरा आयुर्वेदीय कालेज पीलीभीत
८ आयुर्वेदीय विद्यालय कलकत्ता
९ गवर्नमेंट राजकीय आयुर्वेदीय विद्यालय पालियर
१० गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालेज, पैपूर
११ [illegible] आयुर्वेदीय कालेज लिमिटेड
१२ पटियाला आयुर्वेदीय विभाग पटियाला
१३ हिन्दू बनारस विद्यालय आयुर्वेदविद्यालय बनारस
१४ बिहार उलमाए सल्फाए समिति पटना
१५ बड़ौदा राज्य पाठशाला आयुर्वेदीय विभाग बड़ौदा
१६ धन्वन्तरि आयुर्वेदीय कालेज बम्बई।
१७ आयुर्वेद [illegible] प्रचारिणी सभा लाहौर।
१८ जयपालदास आयुर्वेदीय विद्यालय देहली
१९ वैद्य सम्मेलन सभा पूना
२० धन्वन्तरि औषधालय कलकत्ता
२१ उमरखाना पातालम्बर आयुर्वेदीय वि० पाटण गुजरात
२२ बड़ौदा राज्य आयुर्वेदिक परीक्षा पाटण, गुजरात)
२३ तिलक महाविद्यालय पूना
२४ आयुर्वेद [illegible] विद्यालय खारा
२५ आयुर्वेद विद्यालय अहमदनगर
२६ आयुर्वेदिकल कालेज ऑफ इण्डियन मेडिसिन मद्रास
२७ गवर्नमेंट आयुर्वेदीय स्कूल पटना
२८ गोविन्द सुन्दरी आयुर्वेद विद्यालय कलकत्ता
२९ आयुर्वेदिक [illegible] पूना
३० धन्वन्तरि आयुर्वेदीय पाठशाला बम्बई

परमात्मा कल्याणार्थी

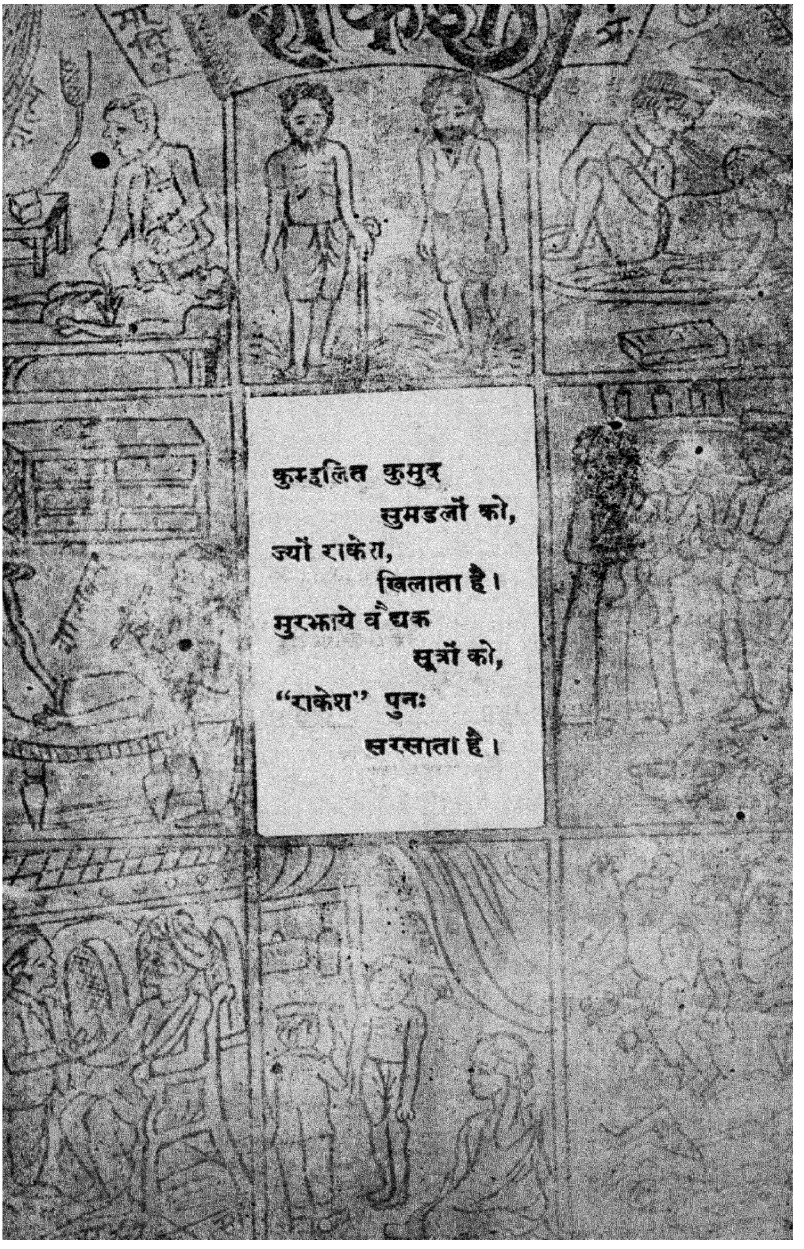
(क्रमशः)

*



कुम्हलित कुसुम
सुमडलों को,
ज्यों राकेश,
खिलाता है।
मुरझाये वैद्यक
सूत्रों को,
"राकेश" पुनः
सरसाता है।

रजिस्टर्ड नं० ए० १८७०



सम्पादक द्विवेदी पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री

राकेश के नियम

१—प्रवेश का समय वर्ष १० सितम्बर से प्रारम्भ होता है।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीख में प्रकाशित होता है।

३—लेखक को अपना पूरा पता एवं नाम स्पष्ट भाषा में लिखना चाहिये।

४—जिन लेखों का पारिश्रमिक तत्काल न देना हो उनके साथ डाक टिकट नहीं भेजने चाहिये।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये।

६—अप्रकाशित रचनायें लौटाई जाती हैं यदि उनके लिये डाक टिकट भेजा जाय।

लेखकों के प्रति

१—पत्र तथा पुस्तकें आदि केवल राकेश के नाम भेजी जायँ।

२—अप्रकाशित लिखने वाले की लेख प्रथम प्रश्न की ओर आवे।

३—अप्रकाशित रचनाओं के सम्बन्ध में किसी प्रकार का पत्र व्यवहार नहीं किया जायगा।

४—लेख लौटाने का उत्तरदायित्व लेखक के ऊपर होगा।

५—लेखों के अक्षर सुन्दर, स्पष्ट तथा पृष्ठ के एक ओर लिखे हुए होने चाहिये।

६—पत्र प्रेषक को अपने पूरे पते के साथ पोस्टेज भेजना चाहिये अन्यथा उत्तर नहीं प्राप्त होगा।

यदि आपके पास राकेश की पूरी फाइल न हो तो निम्नलिखित

राकेश के विशेषांक "रत्नाङ्क" को पढ़िये।

जो प्रत्येक सम्मान्य व्यक्ति के विषय में जानने के अभिलाषी हैं उनकी सभी शंकाओं के समाधान होंगे, मूल्य केवल, डाक व्यय के दूने टिकट के अन्य उपायों के लिए विशेष सहायता के साथ प्रकाशित हुआ है। मूल्य सिर्फ मात्र १) रु० होगा परन्तु ग्राहकों तथा १) अग्रिम भेजने वालों को राकेश की ओर से भेंट किया जायगा।

भूल सुधार

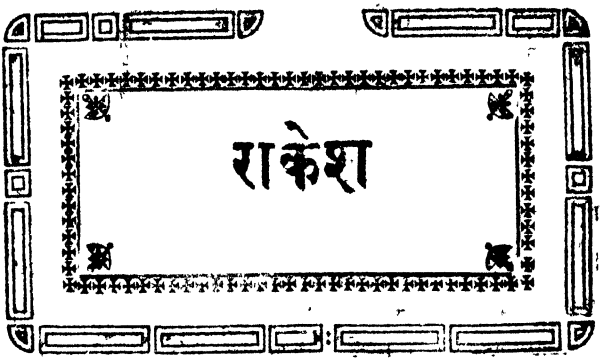
राकेश वर्ष २ अंक ६ में पृष्ठ सं० ३५ के प्रेषक कुंवर रणधीरसिंह वर्मा वैद्य मु० लाहौरी पो० मेहगांव जिला भिण्ड (ग्वालियर) भूल से छपा है वहां गुलाम लाहौरी के बजाय बाजौर, मुद्रित है।

सूचना

एतदर्थ कुछ काल के लिये पं० मुरारीलाल को राकेश कार्यालय में रख लिया गया था। कई कारणोंसे गत १८ फरवरी से ही उन्हें अलग कर देना पड़ा। अतः सूचनार्थ निवेदन है।

मैनेजर

* श्री धन्वन्तरि जयतिः *



ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण परीक्षित ऐसी।
अन्य चिकित्स सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ की क्रिया जहां करते वैदेशिक सारे।
करते हैं आरोग्य वहां जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २	मार्च सन् ३०	उदय सात

*

अपील।

[ले०—राजकिशोर वाजपेयी, दौलतपुर रायबरेली]

'राकेश' के उदय से अंधियाला मिट गयो।
रवि से जो आतप हुआ वह नाश हो गया॥
राकेश का उत्थान हो यह राज का कहना।
राकेश के प्रति ईर्षकों का गर्व घट गया॥
जनता से मेरी आरजू राकेश के ग्राहक बनें।
यह पत्र सस्ता और उत्तम तुमको मिल गया॥
संरक्षक हैं 'राकेश' के रूपेन्द्रनाथ जी।
जिन पर कृपा हो वैद्यों की निज प्रेस खुल गया।
दोहा—राकेश प्रिंटिङ्ग वर्कस है, बरालोकपुर धाम।
पता यही राकेश का प्रान्त इटावा नाम॥

शुक्रमेह

[ले०-प्रो० बालकराम शुक्ल शास्त्री शास्त्राचार्य एच० एम० बी०]

निरुक्ति—कामोद्दीपन, कामतृप्ति, और लिङ्ग का समुत्थान न होकर के जो वीर्यपात होता है। उसको शुक्रमेह (स्पर्मे टोरिया) कहते हैं। जितेन्द्रिय, निर्मल स्वभाववाले व्यक्तियों का भी मध्य २ में स्वप्नावस्था में वीर्यपात हो जाता है। इस भांति एकवार इसी रूप में वीर्यपात हो जानेपर उसको रोग में नहीं गिनते हैं। यदि दो चार वार भी इसी रूपमें वीर्यपात हो जावे और किसी प्रकार की अस्वस्थता उपस्थित न होवे तो उसकी भी रोग के मध्य में गणना नहीं करते हैं किन्तु निस्तेजता, निरुत्साह, और आलस्ययुक्त रोगी मालूम होवे तो रोग के मध्य में गणना करना चाहिये, अजीर्ण और कोष्ठकाठिन्य गुरुत्व, उदराध्मानयुक्त, और आलसी व्यक्तियों का वार २ वीर्य पतित हो जाता है। कामोद्दीपनकारी चिन्ता, गलत उपन्यास आदि पढने पर वार २ स्वप्नदोष हो जाता है। यदि रात्रि में एकवार अथवा सप्ताह में तीन चार वार स्वप्नदोष हो जाता है अथवा यदि लिङ्गोत्थान व काम उपस्थित न होकर के दिनमें वीर्य गिर जाता है तो उसको रोग कहते हैं अनेक स्थलपर मूत्र में फास्फेट (फास्फेट) निकलता है। रोगी उसको वीर्य समझ करके बहुत चिन्तित हो जाता है। और किसी २ स्थलमें लिङ्ग नाली के मुख से रुका २ अथवा लगातार अण्डद्युमिन के तुल्य स्वच्छ पदार्थ निकलता है। यह पौरुष ग्रन्थि प्रभृति से निकला हुआ रस होता है। इसलिये इसमें कोई चिन्ता का कारण नहीं है। अथवा मानसिक रूप से वीर्य पतित होनेपर रोगी उद्यम रहित हो जाता है और रोगीका मन भङ्ग हो जाता है। किसी काम को नहीं कर सकता है। और दुर्बलता इतनी बढ जाती है कि जीवन में भी शङ्का उपस्थित होजाती है और क्षार गुण विशिष्ट मूत्र निकलता है और उसकी गुरुता बढ जाती है और इसमें ओक्जैलेटस नीचे बैठ जाता है।

कारण

रति सम्भोगकी अधिकता, हस्तमैथुन अस्वाभाविक मैथुन, मुस्फकरङ्कपन आमाशय युक्त अतिसार अन्त्रकृमि, अर्श भगंदर मलाशयावरोध, स्वाभाविक परिवर्तिकार (फाइमोसिस मूत्रनाली का अवरोध वेरिकोसिल (अण्डकोष की शिरा लुनी) मूत्र नाली, अण्ड वा पौरुष ग्रन्थि प्रदाह, मूत्राशय प्रदाह, और अनेक प्रकार की कुत्सित वासनायें इस रोग का प्रधान कारण हैं।

लक्षण

निद्रित अवस्था में, अथवा दिन में, मल या मलात्याग के समय वीर्यपात हो जावे और कभी पेशाब करने के बाद, अथवा पाखाना जाने के बाद वीर्य गिर जावे। अथवा घोड़े की सवारी करनेपर वा किसी प्रकार सवारी पर चढ़ने के समय अथवा अधिक समय तक बैठे रहने पर वीर्य पतित हो जावे और रोग की अति प्रबलता होने पर जननेन्द्रिय में अल्प मात्रासे ही उत्तेजना होनेपर वा अवर्णनमात्र से ही अनैच्छिक वीर्य क्षीण हो जाता है और शारीरिक सब लक्षण प्रबल दिखलाई पड़ते हैं। रोगी अजीर्ण आध्मान और अम्ल उद्गीरण (डकार) से अधिक कष्ट पाता है। रात्रिमें बहुत बेचैनी हो जाती है और स्वप्नसे शून्य और भय से विह्वल हो जाता है और दिन में अत्यन्त निराश होकर के पड़ा रहता है मुख लाल दिखलाई पड़ता है और शिर में पीड़ा होती रहती है। तन्द्रा के लक्षण मालूम होते हैं, कानों में शब्द सुनाई पड़ता है। विकृत वृश्यों का दर्शन और खराब स्वप्न भी दिखलाई पड़ते हैं और मस्तिष्क में रक्त संगृह के अन्यान्य विविध लक्षण दिखलाई पड़ते हैं और आंख की पुतली अधिकतर प्रसारित देखी जाती है। हृदय स्पन्दन और श्वास की शमता देखी जाती है। और अल्प शब्द सुनते ही रोगी चौंक उठता है और रोगी का उग्र स्वभाव हो जाता है। और अनेक प्रकारका स्नायु सम्बन्धी वैषम्य उपस्थित हो जाता है। और रोगी को पृष्ठ देशमें ऐसा मालूम पड़ता है कि मानो शीतल जलको सेचन हो रहा होवे अथवा उसको मालूम होता है कि मानो त्वचा के ऊपर चींटी चल रही होवे और दोनों बाहु दुर्बल शिथिल हो जाते हैं। स्मरण शक्ति का लोप हो जाता है। मेधा क्षीण हो जाती है और रोगी निर्जन शब्द शून्य स्थान में रहता है और चित्त में सब विरक्तता के चिन्ह मालूम मालूम होते हैं। और उसको ऐसा मालूम होता है कि हमारे लिये सब लोग अन्याय की चेष्टा कर रहे हैं और उसको जीवन धारण भार सा प्रतीत होता है और यहां तक कि कभी २ रोगी आत्मघात भी कर लेता है। अथवा अन्त में यकृत एकाश्रयो स्नायु (मलेमेनिया) वा बुद्धिनाश (डिमेनशिया) रोग से आक्रान्त हो जाता है।

इस रोग में कभी २ निम्न लिखित फल और लक्षण प्रकाशित हो जाते हैं अङ्गभंग हाथ पैरों में द्रुत संकोच सकम्प पक्षाघात मृगी हिस्टीरिया स्नायवीयवक्ष्मा एप्रोरो सिस प्रभृति हो जावे हैं।

रोग निर्णय

मूत्र नाली से रस का निकलना और शुक्रमेह इन दोनोंके मध्यमें प्रादाहिक चिन्ह देखे जाते हैं। पूर्वोक्त रोगमें अविरल कफोद निकलता है प्रोष्टेटिक (पौरुषगन्थीय) रसके निकलने की अपेक्षा शुक्रमेह (स्पर्मेटोरिया) रोग में निःसरण परिमाण से अधिक होता

। मूत्रनाली का क्लेद मूत्र के पहिले निक लता है। और अन्य लक्षणों के देखने पर इस रोग का अन्य रोग से प्रभेद किया जा सकता है। निर्गत क्लेद की अणुवीक्षण यन्त्र के द्वारा परीक्षा करने पर रोगके निर्णय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं होता है।

चिकित्सा

इस रोग की चिकित्सा के लिये आवश्यकीय है कि प्रथम रोग को पैदा करने वाली किसी प्रकार की यदि स्थानिक उग्रता हो तो उसका निवारण करना चाहिये और शुक्रमेह ग्रस्त रोगी को विशुद्ध वायु संचालित स्थान में नियमित रूपसे किसी कार्य में व्याप्त रखना चाहिये। और अनुलोमक पथ्य, नियमित व्यायाम स्नान और नियमित समय में निद्रा की व्यवस्था करनी चाहिये। स्वप्नदोष अर्थात् रात्रिमें स्वप्न के योग में रति संभोग होता है। ऐसा अनुमान करके वीर्यपतन रोग में क्षुधोद्दीपक कुचिलायें और निन्दित कर्म आदि को छोड़ देवे। कठिन शय्यापर लेटना चाहिये। और अधिक उष्ण वस्त्रोंसे अङ्गों को नहीं ढकना चाहिये। और चित् होकर के शयन नहीं करना चाहिये इस उद्देश्यकी सिद्धि के लिये रोगी के शरीर में एक कपड़ा लपेट करके पृष्ठवंश के ऊपर एक बड़ी गांठी बांध देवे। जैसे कि भारतीय ब्रह्मचारीगण गांती बांधकर पीछे गांठी बांधते हैं। रोगी का कोष्ठ परिष्कृत रखे और सोने के कुछ पहिले एकबार और मध्य रात्रि में एकबार पेशाब करने के लिये जाने का उपदेश रोगी को देवे और कुछ रात्रिके अवशिष्ट रहने पर नींद के भंग हो जानेपर शय्या को छोड़ देना चाहिये। फिर नहीं सोना चाहिये। परिवर्तिका वर्तमान होनेपर उसको काट देना चाहिये। और मूत्रनाली में अवरोध वर्तमान होनेपर उसकी चिकित्सा करनी चाहिये। मलद्वार के समीप में कोई कोई रोग—जैसे अर्श, भगन्दर, प्रभृति और अण्डकोष और मलाशय प्रभृति स्थानोंमें पीड़ा होनेपर उसकी शांन्ति के उपाय करे।

शुक्र मेह की चिकित्सा में

कशेरुको मज्जा के ऊपर और सीवन प्रदेश (पेरिनियम) के ऊपर प्रयुक्त साधक औषध का प्रयोग करनेपर लाभ होता है। और दूब, करंज, कायफल, मोथा अमलतास, त्रिफला दाख इनका क्वाथ बना शहद मिलाकर पिलाने से शुक्रमेह में आशा जनक लाभ होता है। रक्ताल्पता (एनीमिया ष्ट्रूमा और विषमज्वर (मलेरिया) के वर्तमान रहने पर नियमानुकूल इनकी चिकित्सा करें।

अधिकांश में शुक्रमेह ग्रस्त रोगी पीत वर्ण के दिखलाई पड़ते हैं। इसलिये उनको लोहा और संखिया (आर्सनिक) उपयुक्त रीति से देवें। और रस सिन्दूर मकरध्वज आदि मलाई युक्त दिन रात में दो बार १ रत्ती की मात्रा से खिलावे और खोले

समय नाभि पर कस्तूरी सोरा व माजूफल को पानी में पीसकर लेप करे इस क्रियासे वीर्य नहीं निकलता है।

रोग के अत्यन्त प्रबल हो जानेपर जिस समय दिन रात्रि में कई वार वीर्य निकल जाता है और लिङ्ग की उत्थान क्रिया में सामर्थ्य कम हो जाती है या बिलकुल नहीं रहती है। और लगातार वीर्य निकलता रहता है ऐसे स्थल पर व्यवनप्राशावलेह ६ मा० में १ रत्ती मकरध्वज १ रत्ती स्वर्ण वङ्ग भिश्रित खाकर दूध मिश्री युक्त सुबह शाम पीना चाहिये। अथवा मकरध्वजवटी दिन रात्रि में दो वार सेवन करे। स्नायवीय क्षणिता के वर्तमान होनेपर पौष्टिक औषधि के सेवन के साथ ही साथ बदन पर श्री गोपाल तैल की मालिश करना श्रेष्ठ है और इन्द्री पर कपि शिश्नादि अथवा अन्य कोई उत्तम तिला स्तैमाल करें यदि लिङ्ग स्थान के लक्षण होनेपर बार २ वीर्यपात होवे तो धातु के पतला होने का कारण समझना चाहिये ऐसी दशामें धातु पौष्टिक औषधि जो सप्त धातु वृद्धि कर रसायन हो सेवन करावे।

यदि केवल वीर्यपात हो और मैथुन की इच्छा न होवे तो उत्तेजक औषधि कौंच पाक भिलावा पाकादि सेवन और तिला स्तैमाल करावे।

शुक्र कोषकी क्षीणता और स्थिलता पर शुक्र की कमी को पूरित व दोषके शय नार्थ चिकित्सा करे। (अपूर्ण)

अष्टवर्ग फार्मेसी देहरादून का

नवीन आविष्कार

मिश्रित अष्टवर्ग	२०) सेर	हिमालयनब्राह्मी	२॥) सेर
जीवक	४०) "	विधारा	१॥) "
ऋषभक	३०) "	वैक्रान्त	२०) "
ऋद्धि	२५) "	लागली	५) "
वृद्धि	२५) "	दशमूल	१) "
मेदा	६) "	भंगबीज	४) "
महामेदा	६) "	हरताल पत्राख्य	२०) "
काकोली	१२) "	केशर	३) तोला
क्षीर काकोली	१६) "	सूर्यतापी शिलाजीत	१) "
मुञ्जरमूल असली	५) "	कस्तूरी उत्तम	४०) "
क्षीरविदारीकन्द	४) "	अंबर	६०) "
नागकेशर नैपाली	२०) "		

नोटः-यथार्थ तथा शुद्धजड़ी बूटीके खरीदारों को अवश्य हमसे सम्बन्ध रखना चाहिये

पता-अष्टवर्ग फार्मेसी, देहरादून

वनस्पति विज्ञान

अपामार्ग ।

संस्कृत नाम–अपामार्ग, धामार्गव, शुख, प्रत्यकपर्णी, खरमञ्जरी, आधःशल्य शिखरी आदि ।

हिन्दी नाम–चिरचिरा, लटजीरा, ओंगा ।

मराठी नाम–अधाड़ा ।

गुजराती नाम–आंधेड़ो ।

बंगाली नाम–आपांग ।

फारसी नाम–खारयास ।

कर्णाटकी नाम–उलरणे, चिरचिरा ।

तैलंगी नाम–दुच्चीणी ।

वर्णन–अपामार्ग प्रायः सब प्रांतों में प्राप्त होता है इसकी दो प्रकार की जाति होती है। एक श्वेत, तथा दूसरा रक्त, इसका पौधा ढाई तीन हाथ ऊंचा होता है इसके पत्ते छोटे तथा किंचित लम्बे से होते हैं, पत्ते की बीच में एक लम्बी सींक निकलती है, इसमें मृदु और सूक्ष्म कांटा वाला बीज होता है और इसके फूल और फल लम्बी डाली में लगे रहते हैं, और इस में कांटा ऐसी अणी होती है, जिससे वस्त्र में चिपक जाता है, कई समय इसके पौधों में से गुजरने से इसके बीज पैर में चुभ जाते हैं। अपामार्ग की निरुक्ति व्याकरण से "अपमृज्यते व्याधिरनेनेति अपामार्गः" अर्थात् जिससे व्याधि दूर की जाती है उसको अपामार्ग कहते हैं, हमारे प्राचीन ज्ञान वृद्ध तेज वृ० मेधावी महर्षियों ने कितना विज्ञान हमारे कार्य व्यवहार भर रखा है इसी कारण श्रावणी उपाकर्म के समय अपामार्ग द्वारा शरीर परिमार्जित किया जाता है (यही विज्ञान है) अपामार्ग का क्षारभी निकाला जाता है इसके क्षारसे मूत्र रेचन होता है इसके क्षार में पोटाश नामका क्षार भाग अधिक होता अपामार्ग का सर्वांङ्ग (पत्तेमें) औषधि व्यवहार के उपयोग में आता है ।

अपामार्ग के गुण–त्रिदोषरा, क्षारक, उष्ण, मूत्रज, कफघ्न, तीक्ष्ण, दीपन, पाचन तिक्त, रुचिकारक, वमन, कफ, रक्तविकार मेदरोग, वातरोग, हृदय रोग, श्वासकास आध्मान, अर्श, (बवासीर) शूल उदररोग रक्तातिसार, को पृथक २ उपयोग एवं व्यवहार से नष्ट करता है ।

प्रबल उपयोग ।

१–वात्विक विष पर–अपामार्ग के फूल तथा मूल पत्थरपर पीसकर वांछित स्थानपर लेप लगाने से तत्काल तीव्र पीड़ा नष्ट होती है ।

२ रक्तार्श–अपामार्ग के बीज पीसकर चावल के धावन (मांड) के साथ पीनेसे

रक्तार्श (खूनी बवासीर) में लाभ करता है।

३–शिरोरोग पर–अपामार्ग के बीजको दूध के साथ खीर बनाकर पीने से सिर का शूल नष्ट होता है, अपामार्ग की नस्य लेने से मस्तक कृमि नष्ट होते हैं।

४ कफ ज्वर पर–अपामार्ग पञ्चांगका का क्वाथ तीन मास निरन्तर पीने से कफज्वर नष्ट होता है।

कासपर–अपामार्ग का चूर्ण १ माशा काली मिरच १ माशा शहद के साथ चाटने से कास (खांसी) नष्ट होती है।

उदर पीड़ा पर–अपामार्ग के क्षार पांच पत्ते जवाखार रस उतारने से उदर रोग नष्ट होती है।

७–रक्तार्श–अपामार्ग के बीजको दूधके साथ खीर बनाकर पीने से रक्त बन्द होता है।

८ पागल कुत्ते के विष पर–अपामार्ग का मूल (जड़) १ तो० पीसकर शहद के साथ चाटने से अलर्क विष नष्ट होता है, तथा घृत कुमारी और सेंधा नमक मिला कर दंश (काटा हुआ स्थान) पर बांधने से विष नष्ट होता है।

९ बर्र, मधु–मक्षी के दंश पर अपामार्ग के क्षार के साथ तेल को मिलाकर लगाने से दंश की वेदना आराम होना आदि नष्ट होता है।

१० अर्श–अपामार्ग क्षार सेंधा हरताल के साथ पीसकर मस्से पर लगाने से मस्से गिर जाते हैं परन्तु दाह अधिक होता है।

११ कास–अपामार्ग क्षार शहद के साथ चाटने से खांसी, श्वास, कफ, तथा छातीके कफका विद्रावण करता है।

और भी इसके चमत्कृत योग हैं विस्तृत भयात् नहीं लिख सकेंगे आगामी अङ्क में लिखूंगा, प्रत्येक सुयोग्य वैद्य का कर्त्तव्य है कि अपने २ प्रांत की प्रचुरता में प्राप्त–भूत होनेवाली वनौषधियों का वर्णन तथा विशेष गुणों का परिचय प्राप्त कर विविध सद्गुणों से विकसित होते हुए इस 'राकेश' को परिवर्धित एवं अपनी ओजस्वी सिद्ध हस्त लेखनी द्वारा सिंचन करते हुए दीर्घायुषी बनावें। ऐसी आशा है। आरोग्य मस्तु।

अपामार्ग के अन्य प्रयोग।

१ आंख की फूली पर इसकी जड़ को पत्थर में घिस कर लगाना चाहिये।

(२)-सूखे पत्तों को चिलम में रखकर धूम्रपान करने से नवीन श्वास जाती है।

(३) इसके पत्ते और बीज खाने से वमन शीघ्र होता है।

(४) दांत की पीड़ा पर इसका रस लगाना चाहिये।

(५) चौथिया पर इसके पत्ते ७ गुण मिलाकर तीन गोली बनावे और आने के डेढ घन्टा पूर्व आध २ घटे में एक गोल खिलावे तो चौथिया दूर हो।

(६) इसकी मंजरी के रसको बिच्छू और बर्र के डंक पर लगाने से बिष उतर जाता है।

(७) कुमारी कन्या के हाथ से कते हुए सूत से जड़ को रविवार के दिन बांधने से तिजारी और चौथिया ज्वर दूर हो जाते हैं।

(८) बच्चों के पेट की पीड़ापर इस की जड़ का चूर्ण और भुनी हुई हींग मिला कर खिलाने से पीड़ा दूर हो जाती है।

(९) पेट की पीड़ा पर इसके पत्ते खाना चाहिये।

(१०) रतौंधी पर इसकी जड़ का चूर्ण १ तोला शाम को खाने के पश्चात खानेसे रतौंधी दूर हो जाती है।

(११) इसकी क्षार को शहदके साथ मिलाकर चाटने से स्वास, कास, खांसी दूर होती है और पेशाब साफ होता है भूख लगती है मात्रा ३ या ४ रत्ती शहद के साथ।

(१२) इसकी जड़ को मट्ठा के साथ पीसकर खाने से पाण्डु (कामला) रोग दूर होता है और शहद के साथ खाने से कुत्ते का बिष उतर जाता है।

(१३) भूख कम करने पर इस का तंडुल उपयोग में लाना चाहिये।

(१४) पत्तों का चूर्ण कर खाने से मूत्र कृच्छ मिटता है॥

(१५) बीजों को सिलपर पीस कर खिलाने से छाती की पीड़ा दूर होती है॥

(१६) अपामार्ग की क्षार–

अपामार्ग की झाड़ को उखाड कर सुखा ले और फिर जलाकर राखको पानी में घोले और उसका पानी टपकाले जब तक नमक का अंश रहे तब तक उक्त क्रिया करता रहे फिर कड़ाही में डालकर मंद अग्नि से काढा करे, जब सूख जावे तब खुरचकर रख ले शहद के साथ ३ या ४ रत्ती खाने से कास, स्वास, खांसी आदि रोग दूर होते हैं॥

नोट यह सब अनुभूत हैं॥

राजकिशोर वाजपेयी
दौलतपुर रायबरेली

व्यायाम मासिक पत्र।

कुश्ती, लाठी, वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देनेवाला हिन्दी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥) रु० है।

पता—व्यायाम कार्यालय रावपुरा बड़ोदा

आपसी वार्तालाप

सम्पादक महाशय जी !

कृपा करके एक बात ध्यानमें न आनेपर राकेश सं० १९२९ का शंका रूपी पत्र भेजता हूं जिसका उत्तर देनेकी यारा केशमें प्रकाशित करनेकी कृपाकरें जिन महानुभावों के लेख हैं उन्हें कई बार लिखा पर उत्तर नहीं मिला आपसे और राकेश के उत्तर दाता वैद्य वरों से मेरी प्रार्थना है कि लेख राकेश पत्र में ऐसे आवें जो हर एक की समझ में आ जावें।

जो लोग राकेश में प्रश्न करते हैं या फायदे के लिये कि हमारा रोग सरल और सहज में आराम हो परन्तु उत्तरदाता वैद्य ऐसा पाठ बतलाते हैं कि उसकी औषधियां ही समझ में नहीं आतीं न मिलती हैं। यहां तक लिख मारते हैं कि फलाने ग्रन्थ का फलाना पाठ सेवन करो, जरा सोचो तो इससे क्या उपकार हुआ घर २ ढोलो कि आप के पास अमुक ग्रन्थ है तो बतलाइये जब ग्रन्थ ही देखना होता तो आप लोगों की शरण क्यों लेते। कई वैद्य महाशय अपनी नामवरी को पत्रों में बड़े २ लेख देते हैं पर विचार नहीं करते अट सट जो मन आया लिख मारते हैं जून १९२९ के दिसम्बर मास उदय १ में वैद्य रविशंकर अम्बाशंकर शास्त्री (घाट कोपर) का लेख करंज पर छपा है जिसमें करजादि वटी बनाना बतलाई है शास्त्रीजी ने यह विचार तो न किया कि मैं लेख किस करंज का करता हूं और करजादि वटी किस करंज की बनती है अब ऐसे लेखों से जनता को क्या फायदा होगा।

अब सम्पादक महाशय से मेरी कर विनय है कि इस अपील को राकेश में शंका पत्र सहित ज्यों का त्यों प्रकाशित करें तो बड़ी कृपा होगी।

शंकायें।

१९२९ उदय से पृष्ठ १०७ में मिस्री के प्रलेप पर—कौहर फल यह कैसा होता है और इसके दूसरे नाम क्या हैं फारसीमें क्या कहते हैं।

पृष्ठ ११० में दांत दाढ दर्द पर—नीली फूलनी (बुसटिया) यह क्या है दूसरे नाम और आकार कैसा होता है।

प्र० ११३ में कामिनी दंतधावन वटी पर मुश्क तरामसीह हमामा हुर कुल अनेसून सालफ फारसी जाबशीर इनके दूसरे नाम हिन्दी में क्या हैं यह सब फारसीके हैं पृष्ठ ११४ में कहवां समई इसका दूसरा नाम और यह क्या चीज है।

पृष्ठ ६३ में–धार हरमल परसयाओसा

पृष्ठ १४० में–घेर पत्थर।

पृष्ठ १४४ में–धन्वतर बीज।

पृष्ठ ११२ में–आवरेसम।

पृष्ठ २२१ में फूलावेल।

नाड़ी के बीज टंकहर निगंदवाखरी यह क्या चीज है।

विनय प्रार्थी।

स्वरूपचन्द जैन मुनीम

छुई खदान रायपुर सी० पी०

(२)

पं० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी गोतोना जो आपने मुझ से पत्र द्वारा अंजन का योग राकेश के अगले अङ्क में छपाने को कहा है वह योग तो आपने ही राकेश में अंक ४–५ प्र० उ० २२ में लिख दिया है किन्तु फर्क इतना है कि आप इसको रुमी की शकल में रखते हैं और हम नोसादर के रस में गोली बांध नीबू के ही रस में घिस आंख में लगाते हैं पर इसको मैंने ज्वर उतारने के अनुभव में नहीं किया था इससे मैंने लिख दिया था कि ज्वर तो नहीं उतरता पर कष्ट अवश्य हो जाता है इस कारण अब फिरसे योग लिखना व्यर्थ है क्योंकि यही योग मैं जानता था वह आपने खुद ही प्रकाशित कर दिया है।

प्र० नं० १० वर्ष २ में जो रामेश्वर प्रसादजीने प्रश्न किया था वह इसी कारण किया गया था कि पं० मुन्शीरामजी अपना विचित्र तैल का योग लिखते हैं कि नहीं और मैंने भी लिखा था कि मुन्शीरामजी अपने विचित्र तेल का योग लिख दें किन्तु मुझे अफसोस होता है कि आप इतना लाभ व्यय करते हैं तब कैसे अनुभवी की कीर्ति बढ़ेगी पं० मुन्शीरामजी आप अपने योगों को क्या आपने साथ ले जायेंगे किन्तु योग तो कहीं न कहीं जाहिर हो ही जायगा पर आप इसके फल व यश से वंचित ही रहेंगे देखिये पं० रामेश्वरजी द्विवेदी लिखते हैं कि मैंने खुद ही प्रश्न नं० १० के उत्तरमें २ योग भेजे हैं जो अगले अंक में प्रकाशित हो जायेंगे पं० रामेश्वरप्रसादजी को हम धन्यवाद देते हैं जो खुद ही ऐसे कठिन २ बातें जो होती हैं उसे पाठकों को हर पूर्वक खुद ही बतला रहे हैं और हम भी आशा करते हैं कि आप इसी तरह राकेश में अपने योगों को प्रकाशित करते रहने की दया करेंगे जिससे आयुर्वेद की कीर्ति बढ़े न कि मुन्शीरामजी की तरह आयुर्वेद का ह्रास वा कीर्ति को लुप्त करेंगे आप तो सज्जन हैं

(३)

सम्पादकजी महोदय मैं विनय आपसे करता हूँ कि उस पत्र में यदि कुछ २ आम घरों के रोगों का वर्णन वा चिकित्सा आदि के कुछ २ थोड़ा हर एक अंक में एक दो पृष्ठ में निकला करे तो अच्छा हो।

पं० दुर्गाप्रसादजी मिश्र वैद्य स्नेह

पो० हटा जि० दमोह सी० पी०

सर्प मृत्यु का आविष्कार

विगत महायुद्ध में विज्ञान ने जहाँ मनुष्य नर संहार करने में अपनी इति श्री समझकर अपनी २ रसायन शालाओं में बैठकर गैसों का आविष्कार करते थे जिन गैसों की बदौलत संहार होकर के महा समर के बाद में भी लाखों बरस से इन्फ्लुएंजा और विसूचिका ने पैर बढ़ाकर इनका संहार किया कि जितना उनकी अवस्था भर में न कर सका होगा यह बात विचार कर मनुष्यों का प्रयत्न सर्पों को समूल नष्ट करने के लिये उपाय खोजा गया था परन्तु अनेक औषधियों के मिलाने से तथा सर्प विष नाशक शक्ति कम होकर और बढ़ाकर सब कुछ जहाँ महोदय ने जोड़ों को प्रकट करके बिजली के द्वारा प्रत्यक्ष कर दिया, जिसका आविष्कार लगभग चार वर्ष प्रथम किया गया था परन्तु उसका फायदा जा रहा था अब उस का गुण जब परिपूर्ण रूप से ज्ञात हो गया तब जन समूह में प्रकाशित किया जाता है इस दवा से १०० फीसदी सर्प बिना मरे नहीं बच सकते हैं अगर सर्प को सुंघा दे या पिचकारी द्वारा उसपर फेंक दे किसी प्रकार से पड़ जाने पर सर्प मर जायगा हाथोंमें दबा लगा कर सर्पको पकड़ ले तो वह काट नहीं सकेगा पर दवा का असर लगने से बाद में सर्प मर जाता है इसी प्रकार से सर्प दंशित व्यक्ति को सुंघाने से या लगाने या खिलाने या इंजेक्ट करने से किसी प्रकार से दवा पहुँचा दी जाय तो मिनटों में विष नाश हो जाता है संसार में जितने जहरीले कृमि या पशु हैं सब का विष इसे नष्ट हो जाता है यदि सर्प के समान उनके ऊपर भी प्रयोग कर दिया जाय तो वे तुरन्त मर जाते हैं अगर इस दवा से मंडल खींचकर बीच में सर्प डाल दिया जाय तो उसकी शक्ति नहीं है कि वह मंडल लांघ कर चला जा सके किसी व्यक्ति को एक पाव सर्प विष खिलाया हो और उतनी ही दवा खिला दो कुछ भी असर न होगा इसी प्रकार प्रत्येक बिलैले कृमि पर प्रयोग होगा कप जहर वाले पर लगाने मात्र से और सर्प आदि पर खिलाने इंजेक्शन लगाने से आराम होगा कोई भी दवा दी जावे कि दवा शीघ्र प्राप्त हो जावे अगर सर्प भगाना हो तो उस स्थान में छिड़क दो गंध उठते ही भाग जायगा सर्प से दंशित व्यक्ति यदि मूर्छित अवस्था में हो जिसको मरा हुआ समझ लिया जाता है यदि दवा इंजेक्ट कर दी जावे

तो चन्द मिनट में आराम हो जाता है इसकी परीक्षा यह है कि आंखके सामने प्रकाश रखने से मृत्यु मनुष्य की पुतली में प्रकाश दीखेगा पर जो एकदम मर जाता है उसके प्रकाश नहीं दीखता है। इससे बढ़कर संसार में सर्प मृत्यु दारक उपाय नहीं है इसके सिवा सम्पूर्ण द्रव चर्म रोग उपदंश कीलयांव उदरामय और सिर चकर ना पाकस्थली वा शून्य दोष नाग विष प्रलाप दंत शूल दंत कृमि लाल उधर, कुष्ट वातरक्त, सम्पूर्ण अंगज विष बवासीर, सुजाकः प्लेग, पीनस, पारबकल दिसारा फोड़ा आदि भी जड़ आरोग्य हो जाते हैं इनकी भी अचूक दवा है आप रेखन करते वक्त पर मामूली आपरेशन में स्थानीय शून्यता के लिये इसका प्रयोग कोकेन के समान है अर्बुद में इंजेक्ट करने से पक कर अच्छा हो जाता है।

उक्त प्रोफेसर महोदय ने इस दवाको प्रथम निर्माण किया था जिसका व्यौहार अमरीका यूरुप तक चिकित्सकों ने किया और फायदा उठाया अंग्रेजी समाचार पत्रों में इसके कारण से अधिक कुतूहल मचा हुआ है। अतः वैद्यों के लिये इसे प्रकाशित किया कि इससे फायदा उठावें और देखें कि सर्प का भी दुश्मन तैयार हो गया।

इस को शत्रु के उद्धार हेत भार अब एक दमेठी के सपुर्द किया गया है जो इसे बेचकर उसका द्रव्य आयुर्वेद के शत्रु के कार्यों में खर्च होगा यह पेटेन्ट भी नहीं है गा जो चाहे वह ही अपना लेबिल नाम आदि लगाकर बेच सकता है और नाम भर कोनों प्राप्त कर सकता है सिर्फ नाम यही अवश्य रहेगा मूल्य भी बहुत कम है एक शीशी सर्प दंशित व्यक्ति ४०–५० के लिये के लाने के लिये पर्याप्त है अर्थात जिनको अपने यहां पर बेचने का प्रबन्ध करना हो वह यहां पत्र द्वारा कम्पनी से ठीक कर लेवें।

बेचनेवाले कैसन के भाव से ले तो मूल्य से चौथा हिस्सा लाभ होगा।

मूल्य इस प्रकार है—

१ शीशी का दाम १)

१ दर्जन का दाम ६)

१ पौंड का दाम ८)

डाक व्यय अलग

अभी स्थान रियत न होने से इस पता से मिलती है फिर अन्य स्थान पर कार्यालय चला जायगा जहां पर सुविधा होगी।

सर्प मृत्यु कार्यालय

जयरामां फतेपुर

प्राचीन भारत और शल्य तंत्र

[ले०-प्रो० रामकृष्णजी वर्मा बी० ए० बी० एल० सी० एल० एम० एस०]

(गताङ्क से आगे)

कुश और अन्तर्वल्कल

यह वृक्षों की निचली त्वचा होती है इसका उपयोग फलक के अभाव में किया जाता है इस कार्य के लिये बांस या फट्टियां भी व्यौहार में लाई जाती थीं वाग्भट में लिखा है कि फलक चिकने चौड़े पतले दृढ साफ होना चाहिये।

इसे उत्तेजना देने में या बन्धन में उपयोग किया जाता है सर्पकी चिकित्सा में यदि लता प्रहारसे भी हरा या रक्त वर्णन हो तो इसे शस्त्र साध्य समझे इसके द्वारा रक्त संचार का बन्द होना परिज्ञात होता है।

पत्थर

इसका उपयोग नवजात शिशुकी श्रवण शक्ति को जागृत करने के अतिरिक्त दृढ संलग्न शल्य को ढीला करने में होता था इसके अतिरिक्त उंगलियों के संधि भंगके ठीक होनेपर उसमें बल लाने के लिये भी इसका उपयोग था कामदेकोय नीति में पत्थर विषहर मणि राजा को पास रखना लिखा है यूनानी चिकित्सा ग्रन्थोंमें कई विशेष पत्थर धारण करने से रोग नाशक शक्ति बतलाई गई है।

मुद्गर

इसका आकार लोहे के हथोड़े के समान होता है इसे भी शल्य ढीला करने का कार्य होता है 'शो तुल्यत्व मष्ठीलाघ्म मुद्गराणामन्य तमस्य प्रहरणे।

(सुश्रुत)

अंगुली यन्त्र

सब यन्त्रों में हाथ ही प्रधान है इससे इसके अभाव में कोई अन्य यन्त्र प्रयुक्त नहीं होता है यथा-

१ थोड़ी सूजन को हटाने के लिये धीर २ अंगुली से प्रतिलोम मर्दन करते हैं जिस से संचित रक्त पीछे लौट जाता है संस्वेद्य बहुशो ग्रन्थि विमृदनीयात पुनः पुनः। विमर्दयेत् भिषक् प्राज्ञतलेनांगुष्टकेनवा।

(सुश्रुत)

२ ग्रास शल्य में यदि भोजन कंठ में रुद्ध हो जाय तो गले पर धीरे धीरे प्रहार करे।

३ नवजात शिशु के मुख में श्लेष्माको अंगुली पर रुई लपेट करके साफ करे अंगुल्या सुपरि लिखित नखया।

४ अधोदन्तैरधो ओष्ठं संदश्य दाढ़ों को दबाकर कनिष्ठा से चिबुक को दबावे यथा–

(१) व्यासाभ्यां हनुसन्धिभ्यां शंखौ षष्ठाभ्यां प्रदेशिनीभ्यांचौष्ठ्य चिबुकोन्नमनं हितम्।

(४) तथाच ॥ स्पर्शेन्द्रिय विज्ञेयाः– शीतोष्ण श्लक्ष्ण कर्कश मृदु कठिनत्वादयो ज्वरशोकादिषु।

५ रोग की परीक्षा के लिये सुश्रुत ने छः उपाय बताये हैं इनमें हाथके स्पर्श से शरीर की रूक्षता चिक्कणता मृदुता ज्वर आदि जाना जाता है।

६ शल्य यदि अस्थि में फंसा हो तो अस्थि को पांव से दबाकर दोनों हाथों से लकड़ी में फंसी कील की भांति उसे नीचे खींचे।

७ गर्भाशय से कमल को निकालने के लिये परिचारिका स्त्री अपने दक्षिण हाथ से गर्भाशय को दबावे और वाम हाथ से हिलावे, पसलियों से नख को दबाये रखे जिससे वह लड़ न सके।

बाल

दांतों में प्रायः हाथी दांत का विशेष उपयोग होता है। इसे यन्त्र बनाने के अतिरिक्त औषध में भी व्यौहार करते हैं। यथा १ हस्तिदंत मसीं कृत्वा मुक्त्यञ्चैव रसाञ्जन ॥ २ ॥ नेलाकहस्तिदन्तस्य मसीं वा नौषधं वरम्।

नख

शल्य कर्म में एक ओर जहांपर नखों को हानिकारक बताया है वहांपर सिंहादि के नख शल्योद्धार के कार्य में प्रयुक्त होते थे यथा–तथा नीच नख लोम्न भवितव्यम्। तत्कस्यहेतो हिंसा विहारांणि महावीर्याणि (सुश्रुत) तथाच आहार्य्यज्ञेयभद्येषु नखं शल्येषु याजयेत्।

मुख

इसका प्रयोग प्रायः आभूषणमें किया जाता था सर्पदंश की अवस्था में जौ या रेत को मुख में भर कर चूषण करते थे सर्प दंश की अवस्था में सर्प को बीच में से काटने की चिकित्सा भी सुश्रुतने बताई है जिससे उसका पित्त प्रतिविषका कार्य करता है यथा–

१ निष्कृष्टेऽस्थानुगे वा वायौ पाणि मंथेन वारयेत्। गाढत्वादस्थीनियष्क चूषयेत् पवनंबली (सुश्रुत) तथाच २ दंश वा चूषयेन्मुखेन यव चूर्ण पांशु पूर्णेन चरक ॥३॥ दष्टव्यः सोऽहिः (सुश्रुत)

बाल

यह प्रायः मनुष्य या अश्व की पुच्छ के बाल होते थे इनका उपयोग अर्शादि के मस्से बांधने में सिर में से शल्य निकाल कर उसका उण्डुक प्रयुक्त करने में जिससे मस्तुलुंग का स्राव न हो) केशों डुक के रूप में वमन कराने में और मुख्यतः सीने में होता है।

विपोलिका

यह सीने का कार्य देती है विशेषतः आंतों में इसे कटवा करके सिर बहीर छोड़ कर शेष भाग निकाल लेते हैं फिर सिलका कार्य देता है इसी को विपोलिका उत्तम है।

सूत्र

इसके अतिरिक्त कई प्रकार के रूक्ष या बहुकाल स्थायु सूत्र भी सीने के काम में आते थे।

सीना

इसके लिये सुई को न तो अति समीप से न बहुत दूर से ले जाना चाहिये एवं न सुई आधत्त प्रविष्ट करे और न उपरिष्ट म रहने चाहे॥ यथा॥ सीव्येत् सूत्रमत शस्त्रेण वक्त्रानन्तरयवा। पक्वशोभ सूत्रस्यां स्थापयोत्तरा वा पुनः॥ तथाच॥ सीव्येन्नातूरे नातिस्थूल दूरसमीपतो वा बुधः।

यह सीना चार प्रकार का होता है परन्तु इस का परिमाण नियत नहीं है न स्थान ही नियत है जो जहांपर उपयुक्त हो वह वहांपर प्रयुक्तकर लेना चाहिये।

वेल्लित

यह लता के समान चक्राकार होते हैं टांका पास पास लगाये जाते हैं और प्रत्येक टांका में से पुनः सूत्र निकाला जाता है प्रायः भुजा सीने में कार्य देता है। यथा

अल्पान्तरन्तु कुटिलं संसीव्येत् बहु वेष्टितम्। यतद्वेल्लितकं नाम शाखा दौ पुज्यते बुधैः।

गोफणिका

इसका आकार स्थाल गोफणिका पट्टी के समान होता है। यथा

पाटितं योनिशुक्रांत्रगर्भादा तथाविधम् देशं त्यूतं यथा यत्र पुनस्तत्रैव शंसया। ना त स्थूले नाति दूरे श्लक्ष्णे वैद्य निपातयेत्। तदा सिलेन सूत्रेण सवेष्टय सेवनी [इता ॥२॥ नाम्ना गोफणिका षष्ठः दुष्करा मंद बुद्धिभः।

तुन्न

यह सीवन प्रायः उस स्थान पर होती है जहां पर दलामय तन्तु या दला नहीं होती है यथा अण्डकोष एवक शिरन इत्यादि यथा॥ पृथक् २ तु सङ्क्षिप्ता सीवनी तुन्न सेवनीम् या योनि या यक्ष्म योनादौ।

ऋजु ग्रंथि

यह प्रायः मांस भरे अवयवों में किया जाता है जैसे ओष्ठ आदि यथा पार्श्वा त्पार्श्वान्तर यावत् ऋजुसूत्रौ निपात्यच। सवेष्ट्या कृष्ण सूत्रेण ग्रंथिर्या संधि हेतवे क्रियते सा ऋजुग्रंथिः ओष्ठादिषु विधीयते (सुश्रुत)

आंत्र

यह भी सीने के काम में आती है इस के लिये मेषी की आंत प्रायः व्यौहार में लाई जाती है यथा मेषीत्र शुक्लांत्राणि [illegible] वंधनार्थेषु युज्यते।

अश्ववक्त्र

यह यंत्र तीव्र गंभीर प्रविष्ट शल्य को निकालने में प्रयुक्त करते थे इसको घोड़े की

काठी में फंसा दिया जाता है शल्यको इससे बांधकर घोड़े को सहसा चलाया जाता था जिसके झटके से शल्य बाहर हो जाता था यथा अश्ववल्गु कर्षके वा वल्गीयादर्थेन कर्षया तार्क्ष्येणयोक्त्रायत्त शिरो वेगो शल्य मुद्धरति (सुश्रुत)

शलाका

गंभीर शल्य को निकालने के लिये इसे धनुष की कोटि में अथवा झुकाकर डोरा में फंसा देते थे और उसे छोड़ देते थे इससे झटका लगकर शल्य बाहर हो जाता था।

प्रसव के समय यदि गर्भ शल्य अवरुद्ध हो जाता है तो अङ्गुष्ठा के नुख जो असभ्य हैं प्रसूता की भुज की शाखा पकड़ते हैं और उसके झटका से शल्य बाहर करते हैं वाग्भट्ट ने दोनों उपायों का वर्णन किया है।

अयस्कान्त

यह व्रण अथवा आंख में से लोह निकालने का काम आता है रस ग्रंथ में इसके चार भेद हैं इसे भस्म भी किया जाता है।

क्षार

शास्त्रों और अनुशास्त्रों में क्षार सब से श्रेष्ठ बताया गया है इसके द्वारा छेदन भेदन लेखन रूपी शल्य कर्म स्वयं हो जाता है यह भीरु दुर्बल व्यक्तियों में कार्य देता है इसके बनाने की विधि सुश्रुत में विस्तार सहित वर्णित है इसे अन्तः और बाह्य दोनों कार्यों में व्यवहार करते थे।

——— (शेष फिर)

'रत्नाकर'

-:*:-

आगामी श्री रामनवमी से 'रत्नाकर' नाम का वैद्यक विषयक उच्च कोटि का मासिक पत्र आयुर्वेदाचार्य श्री छोटेलाल जैन वैद्य के सम्पादकत्व में बड़ी सजधज से प्रकाशित होगा वार्षिक मूल्य केवल २) होगा पर रामनवमी से पहिले ग्राहक बनेवालों से १) और नमूना मुफ्त।

—व्यवस्थापक 'रत्नाकर'

इटावा

भगंदर

[ले०—डा० इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य जलालाबाद]

(गताङ्क से आगे)

अन्तर्मुख भगंदर में यथा विधि अभ्यङ्ग को गुदा में देकर रोगी को कुंथन को कहे। जब रोगी कुंथन करे तब भगन्दर के मुख को छूकर उसमें एषणी प्रवेश करदे और शस्त्र से भगन्दर के नाड़ी व्रण को यथा विधि काट दे और भगन्दर को अग्नि या क्षार से दाह दें। परन्तु यह काम उसी कुशल वैद्य या डाक्टर से कराना चाहिये जिसको इसकी पूर्णतया प्रेक्टिस हो।

अग्नि या क्षार से दाह करने के स्थान पर छेदन शस्त्र से छेदन करे। पश्चात रोपण क्रिया प्रारम्भ कर दे।

इस चिकित्सा को करते हुए यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि व्रणौष्ठ आपस में संयुक्त न हो जावें।

यह हम प्रथम ही बता चुके हैं कि सम्पूर्ण भगन्दर कष्ट साध्य होते हैं अतः धैर्य धैर्य से निरन्तर चिकित्सा करने से ही आरोग्य हो सकता है अन्यथा आरोग्य होकर पुनः व्याधि का प्रकोप होना सम्भव है।

शस्त्र से चीरने से व्यथा होवे तो तत्काल गरम २ तेलसे सेचन करें।

यदि इस बाहरी चिकित्सा के साथ साथ रोगी को नवकार्षिक गुग्गुल (भाव प्रकाशोक्त) सेवन कराया जावे तो अति उत्तम है और शीघ्र लाभ होता है।

भगन्दर में व्रण स्थान पर अत्यधिक वेदना, पूयनिर्गमन [illegible] उष्णता हो तो सप्तविंशति गुग्गुल का सेवन करावें

यदि ज्वर तथा अङ्गमर्द आदि उपद्रव भी हो तो व्रण गजांकुश का प्रयोग श्रेष्ट है। उसको साथ २ सेवन करावे।

यदि इन उपद्रवों के साथ २ कोष्ठ बद्धता भी होवे तो [illegible] या भगंदर हर रसका सेवन करावें।

नाड़ी व्रण के स्थान से तो नाड़ी व्रणकी चिकित्सा करें। जैसेघोण्टा फलादि वर्ति आदि।

घोण्टा फलात्वक मदनाफलानि पुराण च त्वक लशुनं चमुख्यम् स्नुक्क्षिरपूर्णेन सहैपकल्कोवर्तिःकृतो हन्ति विरेकनाड़ी चूर्ण दारु हरिद्रायास्तोलकं मितंहरेत्। मासार्धंपेयपेद्धाता निदाघेक्लशोशयेत्। समांशिके सुधादुग्धे रविदुग्धे चतांशिते॥ निक्षिप्य खल्वेत्य पेयपेदति थलतः।

विशाय वर्तिका योग्यं रततन्त्र विशारदः ॥
दीर्घारोषाणिकाकारा वर्तिका कारयेत्ततः।
वर्तिकेयं सुविन्यस्ता प्रयत्नेन भगन्दरे।
नाड़ी व्रणान्तरालेच खलुशोधतिद्रवम्
(रस तरङ्गिणी)

यदि भगंदर दीर्घकाल से हो कोष्ट बद्धता हो, रक्त दूषित हो, क्षत शुष्क न हो तो पञ्चतिक्त घृत गुग्गुल आधतोले से १ तोले तक प्रातःकाल उष्ण दुग्धके अनुपान से सेवन करावें।

यदि अजीर्ण और कब्जियत इत्यादि से लक्षण न हो तो उक्त औषधि सेवन कराने से भी लाभ होता देखा गया है।

जमूकया निर्बिषु का प्रकारे र्वर्बजनादिभिः
अजीर्णे वर्जी मासेन मुच्यतेतु भगन्दरात्

पथ्यापथ्य—पुराने चावल, मूंगकी दाल, जंगली मांस, उपरोक्त, पटोल, शोभाञ्जन, कर्च्चीमूली आदि का शाक, तिल तथा सरसों का तेल, घृत, मधु, आदि बलानुसार सेवन कराना हितकर है।

व्यायाम, सवारी, मैथुन, गुरू भोजन त्याग देना चाहिये जब व्रण रोपण हो जाय उसके बाद एक साल तक इनका प्रयोग हानिकर है और पुनः भगन्दर होने की सम्भावना हो सकती है।

वाकी विज्ञान बन्धु इस भयंकर रोग पर अपनी २ सम्मति तथा परीक्षित प्रयोग राकेश द्वारा प्रगट करें।

---

* निराश लोगो ! ध्यान पूर्वक सुनो *

क्या आप बेरोजगारी से या गुलामी की जिन्दगी से बेजार हैं। यदि हैं तो डाक द्वारा पब्लिक व्यापारी वर्गों से व्यवहार कर घर बैठे बिना झांड़वलके दर माह ५०) रु० तक उपार्जन करते हुए स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कीजिये।

आयुर्वेद का महात्माप्रदत्त अपूर्व चिकित्सा चमत्कार, स्त्री पुरुषो के गुप्त रोगों का शर्तिया इलाज। रोग आराम का ठेका कर टिकट लगवा शर्त लिख देते हैं अब भी जो नामर्द व बीमार हों वह सख्त बद किस्मत हैं। शुभस्य शीघ्रम्।

नोट—हम आपके स्वास्थ्य वो बेहतरी के लिये हर तरह से ख्वाहिश मन्द हैं। पता नोट करो।

शुभेच्छुक—
श्रीमान् वैद्य भूषण एस० पी० क्षत्रीय
पो० आर्य हितैषी कार्यालय
बरोद ज० फतिहपुर

अनुभव सार

१—कासश्वास पर

करीले का पंचांग २ तो०, अपामार्ग, लौंग काला नमक १-१ तोले। कूट पीस हांडी में रखकर कपड़ मिट कर गजपुट की विधि से भस्म कर लें। फिर बारीक पीस रख लें। पान या अदरख के रससे २-२ रत्ती देने से पुरानी से पुरानी कास व श्वास क्षतिया दूर हो जाती है।

२—रक्त शोधक अर्क।

उसवा, चोबचीनी, मुलेठी, सौंफ, नीलोफर, शहतरा, मेंहदी, नीमकी पत्ती नीमकी फूल, बकाइन के छाल, बकाइनके फूल, सरफोंका [illegible] चा[illegible], [illegible], [illegible] को दूध ता सेर, जल आठ सेर। जौकुट कर अर्क विधि से प्रातःसाय एक २ छटांक थोड़ा मिश्री डाल कर सेवन करने से विकार शीघ्र दूर होकर पूर्ण तन्दुरुस्त व नव जीवन प्राप्त करता है।

३—चर्म रोग पर तैल।

नीम की छाल, चिरायता, हल्दी, दारु हल्दी, रक्त चन्दन, त्रिफला, अरूसे के पत्ते, समभाग बारीक पीसकर लुगदी बना ले। लुगदी का चौगुना तिलका तैल तिलका तैल, तैलसे चौगुना गंगाजल वा स्वच्छ जल। तैल सिद्ध करले। नित्य मालिश करने से दाद खाज खेंह, इत्यादि चर्म सम्बन्धी सभी विकार शीघ्र दूर हो जाते हैं।

नोट—उपर्युक्त सभी प्रयोग हमारे हजारों बार के परीक्षित अव्यर्थ हैं। जो सज्जन न बना सकें हम शुद्ध रूप में तैयार कर भेज सकते हैं।

वैद्यराज पं० श्यामनारायण शर्मा

तीर्थराज औषधालय दारागंज, प्रयाग

४—सब प्रकार के रक्त विकारपर शतशो भूत योग शरबत।

नीम की पत्ती १ छटांक, बायची एक पैसे भर, काली मिर्च सवा तोला इन दवाओं को कूट छान कर आधपाव पानी में डालकर पीसें २ बेर तो सब प्रकार के रक्त विकार फोड़ा फुन्सी दाद खाज खेरी आदि विकारों को नाश करने में शतशोभूत है अब इसके खाने का मौका आ गया है जो महाशय एक माह बराबर पियेंगे उनको १ साल तक कोई भी रक्त विकार की बीमारी न होगी और जिस बालक को रोग लगा हो उसे थोड़ा नीम का तेल पिलाते जाइये करीब तीन २ बूंद के अन्दाजन में शर्त लगाकर कहता हूं कि पन्द्रह दिन इसी तरह पिलानेसे बालकका सूखा रोग नाश होता है।

दुर्गाप्रसाद मिश्र वैद्य

मु० स्नेह जि० दमोह

वैद्यवरों को उत्तर

उ० प्रश्न नं० ३१—भंग ४ माशे, जावित्री १ माशे, अस्तगीकली ४ रत्ती, पानीमें पीस गोली बनाकर सम्भोग करने से ४ घन्टे पेश्तर खालें, इसके बाद कुछ न खावे वा पीवे यदि आवश्यकता होवे तो मीठा मिला हुआ दूध पी सकते हैं। अगर भंग की तीक्ष्ण ज्यादा प्रतीत होवे तो कम कर सकते हैं।

प्रश्न नं० ३४—काली नगद मारवाड़ी भाषा में नागदौन को कहते हैं। यह यहां नहीं मिलती, अतः (१) इसका क्वाथ मधु मिलाकर पिलाने से रुधिर शुद्ध हो जाता है (२) शिलाजीत के साथ इसका क्वाथ पिलाने से बल की वृद्धि होती है। (३) छोड़ २ कर आनेवाले ज्वर मिटाने के लिये इसका क्वाथ पिलाना चाहिये। (४) बच्चों का कम्प वायु मिटानेके लिये इसका अर्क सिरपर चुपड़ना चाहिये यह बड़ी उग्र सरपगी होती है इसको लेटिन में (आर्टीमिसिया-वलगेरिस) और अंग्रेजी में (फलीवेन कहते हैं यह पहाड़ों में होती है।

प्रश्न नं० ३६—यह सब शिकायतें दूर हो सकती हैं अगर दवा एक अठवाड़ा यानी ४८ दिन तक बराबर सेवन की जाय मवाद कान से नहीं आता है पर दिमाग से आता है कान में दवा डालते रहिये कभी भी फायदा नहीं होगा इसलिये खाने की दवा होनी आवश्यक है कानमें डालने की दवा यहां लिखी जाती है शायद कानमें डालने से कुछ फायदा पहुँचावे।

खुम्भ वाली गराज के ऊपर का गोल मांस लेकर बरस में घोट गोली बना ले बना बराबर फिर कांच की पिचकारी से कान को भीम के गर्म जलसे साफ करके एक गोली पीसकर कान में भर दो वां 'हीरिका' को सरसों के तेल में पका उस तेल की पांच २ बूंद कान में डालना चाहिये खाने की दवा फारमेसी से मंगाना चाहिये।

प्रश्न नं० ३८—पलीहा तिल्ली, (स्प्लीन) और यकृत जिगर इन दोनों के एक साथ में पांडु अग्निमान्द्य अरुचि खट्टा ज्वर हो जाता है तो थोड़े से इलाज से अच्छा नहीं हो सकता अनुभूत प्रयोग यह है-हेमवल्क की छाल, पीपल, मोथा, पटवार, कालमेघ किराततिक्त शुंठी विषः अमृताः हीराकसीस सब समान भाग ले पीस चूर्ण करे। २ २ माशे सवा ४ माशे असके साथ खावे यदि आप न बना सके तो फारमेसी से मंगवा लेवें।

प्रश्न नं० ४१—महाशयजीका बताया हुआ प्रयोग यदि आप राकेशमें प्रकाशित करना नहीं चाहते तो कृपा लिफाफे में पूरी तौर से लिख भेजने की कृपा कीजिये प्रयोग लिख भेजनेपर प्रसंगानुसार (उसटी अरोंह) के प्रश्नद्वय तथा आपान्तर नाम बता दिये जावेंगे क्योंकि लिखनेमें कोई ऐसा नाम नहीं लिखेगा यदि अनुमान से लगाया जाय तो खिचखिटा हो सकता है।

गंगाप्रसाद (वत्स) त्रिवेदी
संचालक कलियुग फार्मेसी देहली

उत्तर प्र० नं० २४ महाशयजी को आपने लिखा कि एक नुसखा ऐसा चाहिये जिससे बाल जन्मभर न उगें तो इसके लिये हम एक ऐसा सरल नुसखा बताते हैं कि जिसके बनाने में आपको बिलकुल भी श्रम वा द्रव्य न लगे और आपकी मुराद को सार्थता पूरा करे इसके लिये आप जोंक पकड़ कर ले आवें और तीस दिन घोड़े की लीद में रक्खो बाद निकाल आप इस जोंक को जिस जगह मलोगे उसी जगह के बाल गिर जांयगे और आपको कुछ तक-लीफ नहीं होगी और कभी भी बाल न उगेंगे।

उत्तर प्र० नं० २३—महाशयजी आप राकेश अङ्क ११-१२ सन्मां में पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र लेख नं० पृष्ठ २५२ का प्रयोग बना कर खावें और इसी अङ्क के उत्तर नं० ५७ का तैल इन्द्री में लगावें आपको जरूरकी आराम होगा यदि आप न बना सकें तो श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा को अपना कुल हाल लिख कर मंगावें रु० ४ ही इन्द्री के लिये उपदंश का मजन भी मंगाकर लगावें आपकी आशा पूर्ण होगी।

पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र वैद्य राकेश
ब० ओ० इटा जि० इमोह

प्रश्न ब० नं० २६—प्रिय महाशयजी आप वह औषधि बनाकर इस्तेमाल कीजिये मेरी सैकड़ों बार की आजमाई हुई है।

पारा अशुद्ध १) गंधक आंवलासार १) मनशिल १) लौंगाथोथा १) संखिया अशुद्ध १) सुहागा भुना १) अफीम १) घृत १) सेंदुर १) कपीला १) सुरासानी अजवायन १) पहिले परांगधक की कजली कर बाद दवा पीसकर घोंटे भांगरा (भंगरा) के रस से गोली बना लेवे निम्बके रससे गोली मिलकर लगावे तो द्वीप भूतछाहीं सुरतों की दाद जड़से चली जावेगी।

महावीरप्रसाद वैद्य विशारद बांदा

प्र० ४० नं०—३६ श्रीयुत कुंवर रणवीर सिंहजी वर्मा। आप विश्वास पूर्वक सज्जी (सर्जिका) बारीक चूर्ण को लगभग ५ रत्ती भरकर ऊपर से बिजौरा नीबू (बीज पुर मातुलुंग) के रसको निचोड़कर लीजियेगा इससे उफान झाग आवेगा तथा ३।४ दिन यह प्रयोग करने से कामका वहना बन्द हो जावेगा कानमें लगानेसे बर कर लिखा होगा।

यह ऋषि प्रयोग 'हाइड्रोजन पेरोक्साइड' से भी अच्छा है सो जानना तथा फायदा सूचित करना। प्रथम कान को साफ कर लेना आवश्यक है। परन्तु राकेश उसकली के सम्पादक जैसा न लिख लिखा करें कि

क्या कोई ऐसा वीर क्षत्री नहीं में है ही नहीं जो धनुष को तोड़े। प्रिय क्षत्रिय बन्धु इसी प्रयोग से रियासत सिमथर निवासी पं० गौरीशंकर पुजारी मंदिर श्रीरामलला के वर्ष १२ के बहते दोनों कान अच्छे किये गये थे। आगे भाग्य आपका।

पाठक गौरीशंकर
वैद्य रमल शास्त्री,
सागर सी० पी०

उत्तर प्रश्न नं० २६–२८ फरवरी सन १६३० के राकेश के प्रश्न नं० २६ के उत्तर में निवेदन है कि अंजीर की जड़को दागों पर घिसके सुबह शाम लगावें और साथ में गर्म दूध में डालकर ५ से ७ घिस या पीसकर लेप करें यह सब तकलीफ दूर होगी दवा आजमाई है।

पं० राजाराम वैद्य भूषण बरई
पं० पनिहार गवालियर

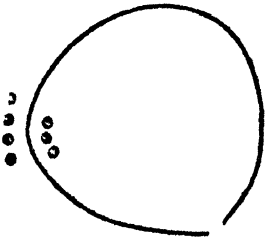
राकेश वर्ष २ अङ्क २ के प्रश्नका उत्तर ऐसी कोई चेतकी हरड नहीं है कि जिसको हाथ में लेने से विरेचन होता हो अङ्क ३ में पं० धरणीधर शास्त्री ने लिखा था कि विरेचन अवश्य होता है। और स्वामी हरिशरणानन्दजी (अमृतसर पंजाब) के यहां से प्राप्त होगी मैंने पत्र द्वारा दरियाफ्त किया तो उन्होंने यह उत्तर दिया कि षटऽगुंलप्रमाण अवश्य होती है किन्तु ऐसी कोई चेतकी हरड नहीं है कि जिसे हाथमें लेने से दस्त होता हो इससे सिद्ध है कि ऐसी चेतकी हरड कोई नहीं है।

राजर्षि और राजर्षी दौलतपुर

ए. दम मुफ्त

अपूर्व लाभ [रमल शास्त्र द्वारा]

मन चिन्तित कार्यों का विचित्र फलादेश भाग्योदय, राजगार सन्तान, विवाह बीमारी, मृत्यु, जीत हार, प्रीति परीक्षाफल, स्वप्नफल, वर्षफल आदि भावी सुख दुख और उनके उपाय जानने की रुचि हो तो:—



इस माफिक चक्र में ईश्वर और अपने कामों का सुमिरन कर एक ही सांस में जितने शून्य रख सको रेखा के बाहर रखो, जगह भर जाने पर अन्दर भी बिन्दुपात कर सकते हैं। साथ में जन्मपत्र की नकल हो तो और भी अच्छा।

मुफ्त प्रश्न उन्हीं को बतलाया जावेगा जो 'राकेश' के ग्राहक होंगे—या औषधियों के स्थायी ग्राहक हैं या पूर्व में मुफ्त प्रश्न भूत में जिन्होंने नहीं किया है। उत्तरार्थ एक आने का टिकट तथा ग्राहक नंबर लिखियेगा।

अनेकों स्थानों से प्रशंसा पत्र प्राप्त

पता—पाठक गौरीशंकर वैद्य बड़ा बाजार, सागर सी० पी०

वैद्यवरोंसे प्रश्न

प्रश्न नं० ४२—अरकोक्त श्रभयामल की (ब्राह्मरसायन) का नुस्खा वैद्यवर 'राकेश' द्वारा बतलाने की कृपा करें।

प्रश्न नं० ४३—असली ब्राह्मी, असली शुद्ध शिलाजीत की कीमत और मिलनेका ठीक २ पूरा पता—वैद्यवर 'राकेश' द्वारा बतलाने की कृपा करें।

राजकिशोर बाजपेयी बीजतपुर

प्रश्न नं० ४४—मैं एक निर्धन और अभागी पुरुष हूं। उम्र लगभग ४५ वर्षकी है। इस उम्र में भगवान ने पुत्र रत्न दिया तो भी उसके पीछे एक ऐसी व्याधि लगा दी जो "गंजी मूड़ में फोड़े" की कहावत चरितार्थ करती है। पुत्र की उम्र ३ वर्ष की है। लगभग १॥ वर्ष से उसे गुदभ्रंश है। उसमें किसी प्रकार की भी पीड़ा नहीं है। टट्टी के समय काच बाहर निकल आती है फिर पैच होने समय हथेलीसे दबा देने से भीतर हो जाती है। अनेक प्रकार के बाह्य उपचार किये पर सब व्यर्थ। परोपकारी धर्मात्मा वैद्य बन्धुओंसे सादर करबद्ध प्रार्थना है कि अनुभूत प्रयोगोंद्वारा मुझे शीघ्रातिशीघ्र कृतार्थ कर असीम पुण्य लाभ करें। लाभ होनेपर मैं यथाशक्ति सेवा करने की प्रतिज्ञा करता हूं।

आपका क्षुद्र सेवक—
पन्नालाल जैन बुधवारी बाजार
बिजनौर यू० पी०

प्रश्न नं० ४५—अखिल वैद्य समाज से सविनय प्रार्थना है कि इस प्रश्नका उत्तर देने की कृपा करें। मेरे एक मित्रकी पहिली शादी सन १९१९ में हुई थी और पहिली स्त्री उसके घर में ५ वर्ष रही मगर कोई संतान नहीं हुई इसी कारण उसने उस स्त्री को त्याग दिया मगर वह स्त्री दूसरे के गई वहां उसके संतान हुई अभी हाल मौजूद है फिर उस मनुष्य ने दूसरा विवाह किया परन्तु फिर भी उस दूसरी स्त्री के भी दो वर्ष हुए कोई संतान नहीं हुई सो क्या कारण है। सन्तान क्यों नहीं होती उस मनुष्य को पहिले खुजाक व प्रमेह हुआ था अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई क्या वीर्य में जो जन्तु रहते हैं सो क्या नष्ट हो गये क्या किसी कारणसे फिर से जीवित हो सकते हैं ? इ.। तो किस औषधि से।

प्रश्न नं० ४६—मेरे दोनों पैरोंकी नलकी व पिंडरी पर कुछ दाद सा मालूम होता है आज करीब ४ माह से कभी कम हो जाता है कभी ज्यादा खुजलाता है कोई दाद की निशानी तक नहीं है रोग निश्चय कर औषधि लिखनेकी दया करें। गा० नं० ३१३

प्रश्न नं० ४७—सुज्ञ जानकार महाशयों से मेरा सविनय निवेदन है कि मेरी

नीचे किसी बातों का उत्तर ठीक २ देने की कृपा करेंगे और उत्तर वही महानुभाव दें जिन्हें जिस बातों का पूरा ज्ञान हो क्योंकि गौण आदत अच्छा है।

कोई महानुभाव चूक प्रश्न वाली हुस्त प्रश्न बनाने की कृपा कर उत्तर दें जिससे प्रश्न का पूरा ज्ञान हो सके। जो महानुभाव मेरी इस आशा को पूरा करेंगे तो मैं उनके इस दान का बदला कभी न भूलूंगा आदर्श गुरु दिखाना नहीं।

प्रश्न नं० ४८—कोई वैद्य बेंट वृक्ष तथा करील वृक्ष का हर भाषा में नाम तथा स्थान व फूल फल पत्ते आदि पूरी २ पहिचान लिखने की कृपा करेंगे।

प्रश्न नं० ४९—हर प्रकार के सिरदर्द को आध घंटा में दूर करनेवाली दवा का सरल नुसखा लिखने की कृपा करेंगे सिर दर्द चाहे कोमल मनुष्य को चाहे कैसे रोगी या निरोगी को किसी भी प्रकार से सिर दर्द हो दवा देने या लगाने से फौरन आराम हो पर नुसखा सरल हो पेन बाम आदि सब अलग लिये हैं इनके अलावा और दवा लिखें।

पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र स्नेह

प्रश्न नं० ५०—मुझे कई वर्षसे मूत्राक की बीमारी थी सब प्रकार का इलाज किया परन्तु रोग समूल नष्ट न हुआ। अधिक इलाज करने से पीप का गिरना तो बन्द हो गया परन्तु पेशाब की जलन और छिछड़ों का आना नहीं बन्द हुआ छिछड़े इस कदर आते थे कि एक हिस्सा छिछड़ा और दो हिस्सा पेशाब यदि किसी बीसी में पेशाब रक्खा जाये तो घुली हुई दही की तरह नीचे जमा हो जाते थे यह हालत कई वर्ष रही और अभी है परन्तु किसी प्रकार की भी लिंगेन्द्री में कमजोरी नहीं थी पेशाब मार से नहीं होता था यदि मार से भी हुआ तो पहली २ दो धारें हो जाती थीं पेशाब करते समय तकलीफ के कारण प्राण निकलने लगते थे। २ वर्ष व्यतीत हुआ मेरे मूत्र व अण्डकोषों के बीच में कुछ सूजन व दर्द लिये दर्द पैदा हुआ और यहां तक रोग बढ़ा कि अण्ड कोष लौका समान व इन्द्री लौकी समान फूल कर हो गई पेशाब कष्ट सहित खून मिली बूंदों से होने लगा यहां तक कि बन्द हो गया बाद को एक सिविल सर्जन ने जीवन की आशा न समझ कर औपरेशन किया १३ स्थानों पर अण्डकोष आदि का मांस भी निकाल दिया सलाई पास करने पर जब पास न हुई तब मूत्रनली चीरकर गांठ का बड़ा मांस चीर डाला तब से बराबर डाक्टर साहब का इलाज रहा और हालत ठीक हुई पर नली के नीचे दो छिद्र रह गये उन्हीं द्वारा मूत्र तथा वीर्य निकलता है यदि छिद्र बन्दकर लिये जाते हैं तो इन्द्री द्वारा मूत्र वीर्य निकलता है अण्डकोषों का मांस यथावत हो आया है परन्तु इन्द्री लिंगेन्द्री नहीं हो गई है। अतः वैद्य समाज से प्रार्थना है कि ऐसा रोग जिसमें को पुनर्जीवन प्राप्त हो। एक ग्राहक

निखिल भारतवर्षीय विंशतितम [२० वां] वैद्य सम्मेलन को स्वीकृत प्रस्ताव ।

[गताङ्क से आगे]

पञ्चम प्रस्ताव

इस सम्मेलन की अनुमति में आयुर्वेद की उन्नतिके लिये रिसर्च (अन्वेषण) की आवश्यकता है इसलिये यह सम्मेलन विशेष भारतीय आयुर्वेदीय संस्थाओं के संचालकों से अनुरोध करता है कि वे अपनी अपनी संस्थाओं में किसी भी आयुर्वेदीय विषय पर एक 'रिसर्च चेयर' स्थापित [illegible] के अनुसंधान की रिपोर्ट सम्मेलन के अवसर पर भेजा करें

प्रस्तावक—वैद्य पं० किशोरीदत्तजी शास्त्री कानपुर

अनुमोदक—[illegible] भारतीय आयुर्वेदाचार्य

षष्ठम प्रस्ताव

[illegible] बड़े दुःख के साथ [illegible] राज्य व्यक्ति और [illegible] य केवल द्रव्य लेकर आयु- [illegible] बेचते हैं और आयुर्वेदको [illegible] करते ऐसे मनुष्यों को और ऐसी संस्थाओं को यह सम्मेलन घृणा की दृष्टि से देखता है और पदवी देनेवालों को सूचित करता है कि इन उपाधियों में भारतवर्ष में मान के स्थान पर अपमान होता है इसलिये इस प्रकार के उपाधि प्रदान करने की उपेक्षा कर उन्हें बन्द करें।

प्रस्तावक—वैद्य चुन्नीलाल रेवाशंकर बड़ोदा

अनुमोदक-कविराज प्रतापसिंहजी रसायनाचार्य काशी

समर्थक-पं० ठाकुरदत्तजी मुलतानी लाहौर

सप्तम प्रस्ताव

यह सम्मेलन भारतीय सरकार से प्रार्थना करता है कि वह निकट भविष्य में स्थापित होनेवाली केन्द्रीय चिकित्साम्वेषण संस्था ( ) में आयुर्वेद संबंधी अन्वेषण को स्थान दे तथा इस कार्य को सुवैद्यों के तत्वावधान में प्राच्य एवं प्रतीच्य वैज्ञानिक सरणिका अनुसरण करते हुए संचालित करे ।

प्रस्तावक पं०—धर्मानन्द जी आ० आ

समर्थक—कविराज प्रतापसिंह जी रस०

अष्टम प्रस्ताव

इस सम्मेलन देश के लोकल बोर्ड और म्युनिसिपैलटियों को अनुरोध करता है कि वे अपने अधिकार में सुयोग्य वैद्योंके तत्वावधान में आयुर्वेदीय औषधालयों की स्थापना करे जिससे प्रजाका अधिकाधिक सुख साधन होवे और आजतक जिन लोकल बोर्ड और म्युनिसिपैलटियोंने आयुर्वेदीय औषधालय स्थापन किये हैं उसका

और सहायता देनेवाले मेम्बरों का अभिनन्दन करता है और अधिक संख्या में इस कार्य के विस्तृत होने की आशा करता है।

प्रस्तावक-महाराज श्री पं० दीपचन्दजी ओझा करांची

समर्थक--कविराज हरिरंजन मजूमदार एम० ए० देहली

नवम प्रस्ताव

यह सम्मेलन कालेजों और स्कूलों के संचालकों से प्रार्थना करता है कि वह अपने २ स्कूलों और कालेजों में सुयोग्य वैद्यों द्वारा स्वास्थ्य रक्षा पर भाषण का प्रबन्ध करे।

प्रस्तावक-पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य लाहौर

अनुमोदक-कविराज भानुदत्तजी।

दशम प्रस्ताव

यह सम्मेलन रेलवे बोर्डका ध्यान आकर्षित करता है कि स्टेशनोंपर पानी पिलाने के प्रबन्ध में ऐसी सुधारणा करे कि जिसमें पानी पिलाने वाले का हस्त-स्पर्श जलको न होने पावे क्योंकि उससे अनेक बीमारियों के उत्पन्न होनेका भय होता है ऐसे ही स्टेशनों पर मिठाई बेचने वाले छपे या लिखे कागज को व्यवहार न करें।

प्रस्तावक--पं० ठाकुरदत्तजी वैद्य लाहौर

समर्थक-पं० युगलकिशोर आयुर्वेदाचार्य कानपुर

एकादश प्रस्ताव

यह सम्मेलन वैद्य समाज से अनुरोध करता है कि वह कौन्सिल असेम्बली और म्युनिसिपल कमेटियों में ऐसे सभ्यों का ही निर्वाचन किया करे जो वहां जाकर आयुर्वेदोन्नति में सहायक हो सकें।

प्रस्तावक-गोपालजी ठक्कुर करांची,

समर्थक-पं० भागीरथ स्वामी आयुर्वेदाचार्य कलकत्ता

द्वादश प्रस्ताव

यह सम्मेलन राष्ट्रीय महासभा से अनुरोध करता है कि स्वदेशी औषधियों को उत्तेजन देवे तथा विदेशी औषधियोंके कारण जो करोड़ों रुपये विदेशों में जा रहे हैं उनमें रुकावट डालने के लिये कोई ऐसी योजना करे और महा मंडल को सहायता दे जिसमें देशमें स्वदेशी वस्तुओंका प्रचार बढ़े और विदेशी औषधियोंकी आमदनी में रुकावट डाली जा सके।

प्रस्तावक-स्वामी हरिशरणानन्द अमृतसर

अनुमोदक-कविराज प्रतापसिंहजी रसायनाचार्य

समर्थक-आयुर्वेदाचार्य युगलकिशोर कानपुर

आ० आ० पं० लालचन्द लाहौर

त्रियोदश प्रस्ताव

इस सम्मेलन को बड़े कष्ट से पता लगा है कि पंजाब कौंसिल में रायबहादुर लाला मोहनलालजी ने जो प्रस्ताय आयुर्वेद के सहायतार्थ रु० ६०००) के रु०

२०००) करने का पेश किया था उसको पंजाब गवर्नमेंट ने अस्वीकार कर दिया यह सम्मेलन पंजाब गवर्नमेंट के इस कार्य पर असंतोष प्रकट करता है और आशा करता है कि शीघ्र ही पंजाब गवर्नमेंट दूसरे प्रांतों की भांति आयुर्वेद संस्थाओं को पर्याप्त सहायता देगी।

प्रस्तावक-पं० ठाकुरदत्तजी

समर्थक-डा० शंकरदास

चतुर्थ प्रस्ताव

यह सम्मेलन देश के वैद्यों से अनुरोध करता है कि वे समय २ पर स्वास्थ्य रक्षा पर छोटे २ ट्रैक्ट्स और हैण्डबिल वितरण किया करें और स्वास्थ्य रक्षा पर व्याख्यानों का प्रबन्ध करें।

प्रस्तावक—भिकाजी विनायक डेग्वेकर एम० ए० एम० एस० सी० एलएल बी० जबलपुर

समर्थक-डा० शंकरलालजी लाहौर।

आ० आ० युगलकिशोर शास्त्री कानपुर

पंचदश प्रस्ताव

सर्वेषां विष द्रव्याणां अगदोत्पादक द्रव्याणांच वैद्यभ्यः आयुर्वेदीय औषधि निर्माण अप्रति बन्धेन प्राप्ति विषये तथा औषधि निर्माण विषये च स्थायिसमिति तत्तत्प्रान्तीय समिति द्वाराधत्तो विधेय। पेश करनेवाले-वैद्य पंचानन हस्तराम शास्त्री

समर्थक—श्रीकान्त शर्मा पटना

अनुमोदक—पं० युगलकिशोर कानपुर

षोडष

यह सम्मेलन प्रांतीय सरकारों और तत्तत्प्रान्तीय धारा सभाओं के सदस्यों से अनुरोध करता है कि युक्तप्रांतकी तरह अपने २ प्रांत में 'बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसन' की थापना करें।

प्रेषक—पं० भिकाजी विनायक डेग्वेकर जबलपुर एम० ए० एम० एस० सी० एलएल० एल० बी०

समर्थक—पं० शिवशर्मा जी आ० आ० पटियाला

सप्तदश

यह सम्मेलन बम्बई गवर्नमेण्ट तथा कौंसिल के मेम्बरों से प्रार्थना करता है कि सिन्धु प्रान्त में तथा गुजरात प्रान्तमें एक २ वृहदायुर्वेदीय विद्यालय थापनाकी योजना करे जिससे वर्तमान समयोपयोगी सुयोग्य वैद्य तैयार हो सकें।

प्रेषक—वैद्य शास्त्री नारायणशंकर देव-शंकर अहमदाबाद

अनुमोदक—पं० छोटेलाल विश्वनाथ करांची

अष्टादश

गत छः वर्षों में आयुर्वेद प्रचार और उसकी वृद्धि के लिये इम्पीरियल गवर्नमेंट और प्रोविंशियल गवरमेंट देशी राज्यों तथा स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के विषय में जो प्रस्ताव भि० भा० वैद्य सम्मेलनों से पास किये गये हैं उनको संगृहीत कर उनपर तब तक लिखा पढ़ी की जाय जब तक अपनी अभीष्ट

सिद्ध न हो जाय एवं तब तक इस विषय में की गई प्रवृत्ति का समाचार समय २ पर बारम्बार सदस्यों को सम्मेलनपत्रिका द्वारा एवं अधिवेशन कमेटी प्रति वर्ष रिपोर्ट द्वारा सम्मेलन में समीक्षा और समालोचनार्थ उपस्थित किया करे।

प्रेषक-सुन्दरलाल नाथालाल जोशी

अनुमोदक—पं० रामप्रिय त्रिवेदी कानपुर

समर्थक—पं० युगलकिशोर शास्त्री

ऊनविंश

यह सम्मेलन निश्चित करता है कि आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षा के उत्तर पुस्तकों की पुनः संशोधन फी प्रति विषय रु० ४) के रु० २) कर दिया जाय

पे०—वैद्य पंचानन श्रीकृष्ण कवड़े बी० ए पूना

अनुमोदक-वैद्य युगलकिशोरजी कानपुर

विंश

१ यह सम्मेलन निश्चित करता है कि आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षा में अनुत्तीर्ण छात्रों को आठ आना फीस देने से कार्यालय गुणांक भेज दिये जाया करें।

२ आयुर्वेद विशारद परीक्षा में सांख्य कारिका का जो विषय निश्चित हुआ है वह १९३१ में बैठनेवाले विद्यार्थियोंके लिये लागू हो।

पेश०—वैद्य पं० कृष्ण शास्त्री कवड़े

समर्थक—वैद्य पं० युगलकिशोर [illegible] आ।

एक विंश

यह सम्मेलन देशी इण्डोरेन्स कम्पनियों से अनुरोध करता है कि वे अपने सदस्यों को शारीरिक परीक्षा देशी वैद्योंसे कराया करें।

पेश-पण्डित ठाकुरदत्त शर्मा लाहौर

समर्थक-पण्डित नानकचन्दजी

द्वाविंश

इदं सम्मेलनं हिन्दू [illegible] विद्यालये एकतया पठनक्रमस्य [illegible] निर्माणञ्च [illegible] युर्वेद विद्यापीठोपाधि [illegible] पाश्चात्य विज्ञान शिक्षाप्राप्तं पश्येयुः।

पेश करनेवाले-आयुर्वेदाचार्य पण्डित जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी

अनुमोदक-पण्डित सत्यदेव पांडेय कानपुर

समर्थक-पण्डित युगलकिशोरायुर्वेदाचार्य

तेईसवां

गवर्नमेंट से सम्बन्ध रखनेवाले जिन जिन पसतावों में वैद्य या आयुर्वेदका नाम आया है वहां देशी चिकित्सक या देशी चिकित्सा शब्द कर दिया जाय।

प्रस्तावक—प० ठाकुरदत्त शर्मा

समर्थक—प० मस्तराम शास्त्री

२४ प्रस्ताव

महा मंडल के पदाधिकारियों में जो कोषाध्यक्ष का पद है उसे हटाकर उसके स्थानपर अर्थ मन्त्री का पद किया जाय

सभापति द्वारा

प्रस्ताव २५

महामंडलान्तगत जी। उपसमितिय

स्थापित की गई हैं उनको अपने कार्य को सुचारु रूपेण चलाने के लिये यह अधिकार दिया जाता है कि आवश्यकता पड़ने पर वे वर्तमान सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सदस्य को भी प्रविष्ट कर सकती हैं।

सभापति द्वारा

प्रस्ताव २६

लक्ष्मिसम्भाषा परिषद के नियम जो वै० सं० पत्रिका के नवम्बर सन २९ के अङ्क में प्रकाशित हो चुके हैं पढ़े गये और स्वीकृत हुए।

सभापति द्वारा

प्रस्ताव २७

इस सम्मेलन के सामने आगामी वर्ष के लिये दो निमन्त्रण आये हुए हैं एक ग्वालियर राज्य की ओर से दूसरा कर्नाटक प्रांत की ओर से। सम्मेलनकी राय में नासिक सम्मेलन की प्रतीज्ञानुसार मैसोर का निमन्त्रण स्वीकृत किया जाता है, सम्मेलन का विश्वास है कि मैसोर के पश्चात ग्वालियर में सम्मेलन सफलता पूर्वक होगा।

सभापति द्वारा

नोट—सम्मेलन के आवश्यकीय प्रस्ताव यहां तक दिये गये हैं कुछ प्रस्ताव जिनमें विशेष कर समितियों के पदाधिकारियों के नाम वर्णित थे स्थानाभावसे नहीं दिये गये हैं।

सम्पादक—

लोक—धर्म का कुम्भाङ्क

कुम्भाङ्क नामक विशेषाङ्क गत कुम्भ पर्व के उपलक्ष में डाकोर जिला खेड़ा से निकलने वाले "लोक—धर्म" पत्रका निकाला गया है यह विशेष नम्बर अच्छे कागजपर सुन्दर साफ छपाई से ११२ पृष्ठोंमें कुम्भ महत्व की वर्णना तथा साधु महाधीशों को सत्य पथ पर आरूढ करने व मानव समाज को भगवत भक्ति तथा प्रेम बढाने वाले उपयोग व शिक्षाप्रद लेखों, गल्पों द्वारा वैष्णव देवदास जी देव के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ है—भारत के प्रायः सभी प्रसिद्ध २ साधुवाद महाधीशों के सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं जिससे यह अङ्क और भी विशेष शोभा को प्राप्त हुआ है। सम्पादक के प्रबल परिश्रम तथा प्रखर बुद्धि की हम बार २ सराहना करते हैं और दैवी व आर्थिक स्थिति के कष्ट का सामना व साहस धैर्य पूर्वक करते हुए जो निश्चित कार्य परित किया उस उत्साह पर बधाई है। समस्त मानव समाज से अनुरोध है कि ऐसे उपयोगी पत्र के ग्राहक बन सम्पादक के आर्थिक कष्ट को दूर करने में सहायक हो। इस अङ्क का मूल्य १) है और पत्र का वार्षिक मूल्य ३) रु० है।

मिलनेका पता—

मैनेजर—'लोक—धर्म'

डाकोर, जि० खेड़ा

सम्पादकीय विचार

आयुर्वेद प्रचार में एक बड़ी कमी।

अभी गत वैद्य सम्मेलनकी धूम कानोंसे सुनाई ही पड़ रही थी। उसके लम्बे चौड़े उपयोगी प्रस्ताव अभी हमारी दृष्टि में आये ही थे सम्मेलन के मनोनीत सभापति की विद्वत्ता पूर्ण प्रभावोत्पादक अभिभाषण कार्य रूप में क्यों जनतामें भी पूर्ण रूपसे प्रकाशित नहीं हो सकी थी १९ वें सम्मेलन की जिम्मेवारी का समूचा भार अभी यथावत ही पड़ा था कि २० वां वैद्य सम्मेलन भी विविध प्रस्तावों तथा गत वर्षीय प्रस्तावों द्वारा पास होकर समाप्त हो गया।

यह नाटकीय दृश्य इतनी शीघ्रता में क्यों दिखलाया गया? सम्मेलन की आयु इतनी शीघ्र क्यों बढ़ाई गई आदि २ विचार उत्पन्न हो मनमें प्रश्न उठते हैं पर उत्तर पा शान्त होजाते हैं कि यह सब प्रयत्न आयुर्वेद को वृहत प्रचार एवं जागृति ही के लिये किये जा रहे हैं। परन्तु दृष्टि फैला कर जब हम अन्य प्रचारक समाजों की तरफ देखते हैं तो पूर्ण शान्ति नहीं होती। उदाहरणकेलिये स्वराज्य आंदोलन लीजिये जबतक केवल सभा सोसाइटियां कांग्रेस उत्सवादि द्वारा प्रान्तीय रूपमें कार्य होता रहा देश में न तो उत्थलि के चिन्ह ही प्रगट हुए न जागृति का रूप ही दिखलाई पड़ा-पर साथ ही साथ जैसे जैसे स्वार्थ संघटना का भाव हो विचार परिवर्तित हुए और इने गिने ही व्यक्ति कर्तव्य परायण हो अग्रसर हुये भविष्यके आशाप्रद चिन्ह दृष्टि गोचर होने लगे विपक्षी दहलाने लगे एक ही महान आत्मा ने स्वार्थ त्याग को अन्तिम सीमा पर पहुँचाकर जन समूह को अपने प्रति आकर्षित कर एक शक्तिशाली राष्ट्र को भ्रम में डाल दिया।

बस यही एक कमी हमारे प्रचार विभाग में है जो कि पूर्ण आयुर्वेदोन्नति में बाधक रूप है। हालांकि वैद्यक प्रचार के लिये यत्र तत्र प्रांतीय सम्मेलनादि होने लगे हैं। पर होकर के कुछ कालके लिये एक दम शांति। वर्ष अनन्तर वही किसी पर्व की भांति लकीर सी पीटने मात्रके भाव में। जिससे क्षणिक जागृति हो फिर वही सुप्तावस्था का चिन्ह। कारण कि केवल प्रस्ताव बाजी ही से कार्य सिद्ध होता नहीं दिखाई देता जबतक हमारे वैद्यक समाज में निःस्वार्थता की लहर

पैदा हो स्वार्थ का भाव छोड़ कर्तव्य परायण न बनेंगे तबतक अपेक्षाकृत इस का मुंह तोड़ उत्तर देनमें समर्थ न होंगे। अतः आवश्यकता है कि हम अपने वैद्यक प्रस्तावों तथा सम्मेलनों का भारत के कोने २ में सुनावें। बहु पत्रों में प्रकाशित कराकर प्रचार करें। भ्रमण कर अपने समुदाय के हालात का समझ उनकी कमी को पूरा कर सुसंगठित बनावें। ताकि एकमत हो अपने स्वत्वों की रक्षा को यदि चीख भी लगावें तो किसी के कर्ण गोचर तो हो। यदि इस कर्तव्य परायणता व निःस्वार्थता की कमी को पूरा करने की सच्ची लगनसे एक भी व्यक्ति हमारे वैद्य समुदायसे प्रकट हो जावे तो बस प्राची समान भाग्य में वैद्यक झंडा लहराने लगे।

राकेश और पशु चिकित्सा

कई ग्राहक तथा राकेश के प्रेमियोंने हमारे पास राकेश में "पशु चिकित्सा" प्रणाली का स्तम्भ बढ़ाने हेतु पत्र द्वारा परामर्श दिया-हमारा भी विचार पहिले से इस विषय को प्रकाशित करने का हो चुका था। परन्तु इस महत्वपूर्ण कार्य के प्रचार में सहायता देने का वचन दे और ना होने के कारण हम [illegible] आयुर्वेद के अनुसार होने वाली पशु-चिकित्सा प्रणाली' अब तक मूल प्रायः सी थी। अंग्रेजी पशुचिकित्सालय तो अवश्य हो देखने में आते हैं परन्तु तो कहीं देशी पशु रोग चिकित्सक हो है न पशु चिकित्सालय ही है—इस कारण प्रचार का लेख राकेश पूर्णतया कर्तव्यबद्ध है।

परन्तु कतिपय महाशयोंने इसी वर्ष इस स्तम्भ को स्थान देनेका अनुरोध किया है। उनके प्रति सान्त्वनार्थ यही निवेदन है कि इस वर्ष तो राकेश [illegible] पूर्ण करने का तत्पर हो सकेगा। हां! राकेश के [illegible] आरम्भ से पशु चिकित्सा के स्तम्भको अवश्यमेव का हम पूर्ण वचन देते हैं और साथ ही सूचना भी देते हैं कि राकेश तृतीय वर्ष से मासिक रूप से आपके समक्ष प्रकटित हुआ करेगा पशु चिकित्सा संबन्धी शतांगशः अनुरोध है कि वह इस विषय के अपने २ लेख संचय कर भेजें तथा प्राचीन पुस्तकें जिनके पास हों हमारे पास भेजने की कृपा करें ताकि प्रचार करने में सुविधा हो सके।

३८ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी आगरा की बनायी हुई यह अमूल्य दवायें केवल समस्त भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ साल से प्रसिद्ध है इनकी अपूर्व गुणकारिता का यही सबसे बड़ा सबूत है कि इतने दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है—इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है!

सुधासिंधु।

सभी बीमारियों के लिये कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, आंव, खून के दस्त, पेट की सभी बीमारियां, बच्चों का दांत, हरे पीले दस्त, कुछ पटकना ऐंठा, गठिया आदि के लिये सुधासिंधु रामबाण है। तुरन्त फायदा पहुंचाता है। सुधासिन्धु सुगन्धित है सुस्वादु है और सर्व सुलभ है। मूल्य की शीशी केवल आठ आना।

बाल सुधा

बच्चोंके सभी रोगों के लिये इससे दुबले बच्चे मोटे होते हैं निरोग लड़के ताकतवर होते हैं। निरोग लड़के बीमार होने से चते हैं मीठा है बच्चे खुशी से पीते हैं कीमत फी शी० ॥)

दद्रु गज केशरी

[illegible] प्रकार का दाद है, इसके [illegible] है बच्चे के लिये ऐसा अचूक औषधि दवा दूसरी नहीं है। जलन खुजलाहट वगैरह कुछ नहीं होता मूल्य ।)

यह दवाइयां भारत सरकार से [illegible]

हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं। यदि [illegible] न मिले तो इस पतेपर पत्र लिखकर मंगवाइये।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये,

मंगाने का पता—[illegible]

व्यायाम मासिक पत्र

कुश्ती, लाठी वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देने वाला हिन्दी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥) रु० है।

पता—व्यायाम कार्यालय रावपुर बड़ौदा

५ ० ० ०] की चीज ५] में

मुफ्त देखिये। [illegible] मंगाकर अनुभव कमाइये।

मैस्मेरिज्म के सच्चे द्वारा आप दूसरों के [illegible] की गई चीज का जल्द आकर्षण लगा सकते हैं। इसी विद्या के द्वारा मुर्दों का परिणाम जान लेना, मृत पुरुषों की आत्माओं को बुलाकर वार्तालाप करना, बिछुड़े हुए मनुष्यों का पता लेना, पीड़ा से रोते हुए रोगी को तत्काल भला चंगा कर देना, केवल दृष्टि मात्र से ही स्त्री पुरुष आदि सब जीवों को मोहित एवं वशीकरण करके मनमाना काम कर लेना आदि आश्चर्य-प्रद शक्तियां आ जाती हैं। हमने स्वयं इस विद्या के अभ्यास से लाखों रुपये प्राप्त किये और अब के अतीव २ चमत्कारिक विचार २ सभाओं को चकित कर दिया। हमारी 'मैस्मेरिज्म विद्या' नामक पुस्तक मंगाकर आप भी घर बैठे इस अनुपम विद्या को सीखकर धन व यश कमाइये। मू० सिर्फ ५) डाक महसूल सहित। [illegible] डाक महसूल १२)

हजारों प्रशंसा पत्रों में से एक।

बाबू सीताराममजी [illegible] लिखते हैं—मैंने आपकी मैस्मेरिज्म विद्या पुस्तक के जरिये [illegible] धन कमाने का मेरी [illegible] किया। [illegible] मैं [illegible] के [illegible] का प्रयोग किया [illegible] ईश्वरकृपा से मुझे [illegible]।"

[illegible] मिलने [illegible] मैं [illegible]। [illegible] मेला [illegible] था। एक [illegible] में सैकड़ों [illegible] में गिनियां कमाये। आपकी पुस्तक [illegible] तथा मुफ्त [illegible]।

मैनेजर—मैसिरेजम हाउस नं० इठारह अलीगढ

दो रु० में दस रु० रोज कमाइये।

साइनबोर्ड लटकाने के शुभ समाचार सुनाते हैं। यदि कोई इससे फायदा नहीं या माइनस हो तो [illegible] पुस्तक [illegible] के घर में उपलब्ध लिखा है जो कि [illegible] से १०) रु० रोज हल साइनबोर्ड लटकाकर कमाते हैं। यह एक [illegible] दस्तकारी है, जिसे सिर्फ तीसरे दर्जे तक [illegible] जानने वाला हर भाई [illegible] में सीखकर २५) रुपये [illegible] में १०) रोज [illegible] है और आजन्मदी से रुपये कमा सकता है। [illegible] में २०० से ऊपर चित्र हैं। पब्लिक ने इसे [illegible] है। मू० २) रु० म० ।३)

[illegible] का पता—मैनेजर [illegible] नं० ५ अलीगढ

ग्रन्थ [illegible] माला [illegible]

यू० पी० में सबसे अधिक विश्वस्त आयुर्वेदिक औषधियों का सब से बड़ा औषध[illegible] है ?

[illegible]

पं० चन्द्र [illegible] [illegible]

जहां कि हर प्रकार के रस [illegible] [illegible] [illegible] आदि आपको सर्वोत्तम और स[illegible] [illegible] [illegible] मालका सुयोग्य

रसायन शाला में प्रत्येक औ[illegible] [illegible] आकर देख सकते हैं।

पं० चन्द्रशेखरदत्त [illegible] भाई जगत्प्रसाद

चांदकलानी

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] यापिस

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

कल्याण-

Regd. No A. 1870

श्रियं मदद्यादवनां पुरारिर्यद्भ्रतेज. प्रसरं भवानी। विराजतं निर्मल चन्द्रिकायां महौषधीवज्वलितो दियादा ॥

सब स्वर्ग अपवर्ग की, नंक नहीं अभिलाष। केवल चाहत नाथ यं, आरत जन दुःख नाश ॥

आयुर्वेदीय ॐ मासिकपत्र

राकेश

कुम्हलित कुवृद सुमडलां को,
ज्यों राकेश खिलाता है।
मुरझाये वैद्यक सूत्रों को,
'राकेश' पुनः सरसाताहै ॥



सम्पादक—द्विवेदि पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री

वार्षिक मूल्य २)] अप्रैल सन् ३० [विदेशवालोंसे ३)

टाइटिल दी. बी. एन. फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स इटावा में छपा।

राकेश के नियम ।

१—राकेश का नवीन वर्ष ३० सितम्बर से प्रारम्भ होता है।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों मे प्रकाशित होता है।

३—ग्राहक होने वाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें।

४—जिनके पास पत्र १५ तारीख तक न पहुँचे, पोष्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें फौरन सूचना देवें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये।

६—ग्राहकों व गरीब रोगियों का एक प्रश्न मुफ्त छपेगा। अधिक छपाने के लिये ।) प्रश्न देना होगा।

लेखकों के प्रति ।

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

२—आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रयोग प्रश्न नहीं छापे जाते हैं।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषण पूर्ण लेखों को पत्रमें प्रथम स्थान मिलेगा।

४—श्रेष्ठ लेखों पर पुरस्कार मिलेगा।

५—लेखों के घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

६—प्रयोग प्रेषक सज्जन अनुभवी प्रयोग ही भेजने की कृपा करें मिथ्या प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे।

लेखकों को स्वर्ण-पदक ।

लेखक महानुभावों से निवेदन है कि आगामी ३१ अगस्त सन १९३० तक "छूहा रोग" पर निबन्ध भेजने की कृपा करें-जिनका लेख विशेषतापूर्ण एवं उत्तम होगा उन्हें स्वर्ण-पदक भेंट किया जायगा। आशा है लेखक अन्वेषणपूर्ण लेख भेज कर मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

—मैनेजर।

विधाता की रेख में रेख मारने वाला——

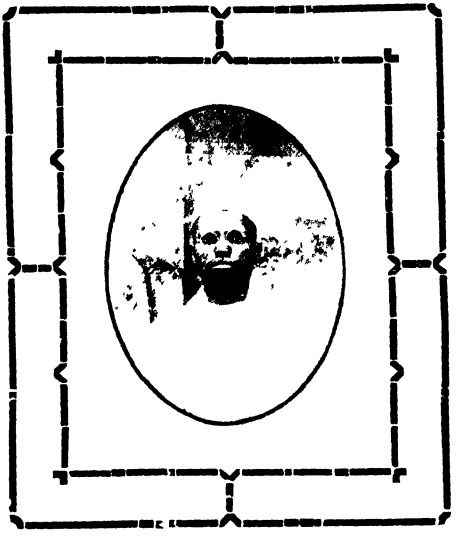
कुमार संजीवन प्रयोग ।

जिन सज्जनों के कन्या ही कन्या प्रसव होती हों, उनके अवश्य ही पुत्ररत्न पैदा होगा। कीमत १०) रु० है, यदि लिखे अनुसार अपना काम न करे तो दूना दाम वापिस देंगे।

३० जून सन् १९३० तक जो सज्जन "राकेश" के ५ ग्राहक बनाकर उनका रुपया "राकेश" आफिस को भिजवायेंगे तो उन्हें यही "कुमार संजीवन प्रयोग" मुफ्त ही भेंट किया जायगा;

पता—मैनेजर एस. बी. ए. फार्मेसी,
बरालोकपुर (इटावा)

राकेश



श्रीमान्-प्रोफेसर डा० रामकृष्ण जी वर्मा B A ,B. Sc. L. M. S.

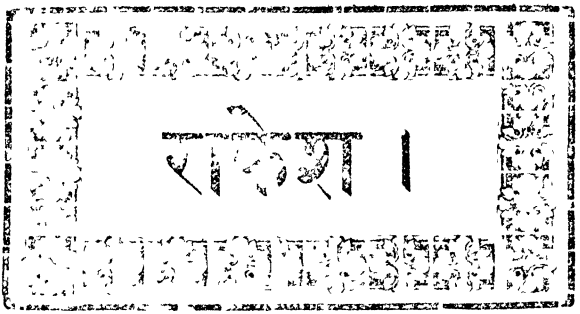
जमरावां, फतेहपुर।

आपका विशेष परिचय हम गताङ्क में देचुके हैं अभी हाल ही में आपने अपनी विचित्र वैज्ञानिक विधि द्वारा अद्वितीय "सर्प मृत्यु" नामी औषध जो कि सर्पदंश पर शत प्रतिशत काम करती है, निर्माण की है, यह अनुपम औषध प्रत्येक घर मे रहना विशेष आवश्कीय है और श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा से भी उसी भाव में मिल सकती है जिस भाव मे कि सर्पमृत्यु कार्यालय (जमरावां) से प्राप्त होती है।

वी. एन. प्रेस इटावा में छपा।

*

* श्री सच्चिदानन्दाय नमः *



पूर्ण प्रणीत विधानित विधि से पूर्ण परीक्षित नेमी ।
आत्म विशुद्धि साम्य भावना में और न कोई जैसी ॥
पर उपकृति हित जाने करते देशिक सारे ।
करते २ आगेत्य यहां चढ़िये मे वैद्य हमारे ॥

वर्ष २ | अप्रैल सन् १९२० ई० | उदय ८

विशेषांकोदय

उदय हुआ राकेश, व्याधि गण, ताप विहाने ।
उदय हुआ राकेश, विपत्ती विरह बहाने ॥
उदय हुआ राकेश, रतीपति कुमुद खिलाने ।
उदय हुआ राकेश, मोह-निशि-तिमिर विलाने ॥
जिस प्रकार भागीरथी, नाशक है पापत्व को ।
उसी तरह समरत्थ यह 'जीवताङ्क' जीवत्व को ॥

आधुनिक क्लीवता और भारतवर्ष

भारत के अधिकांश युवक समूह के इस भयंकर व्याधि क्लीवता के चुंगलमें फँसने के कारण से तथा सैकड़ों विद्यार्थियों के गुप्त पत्रों द्वारा हस्तमैथुन, गुदा मैथुन जन्य क्लीवता के वर्णन का पढ़नेसे और उससे छुटकारा न पाकर अन्त में प्राणघात करने के समाचारों से, हजारों युवतियों का नपुंसक पतियों से संयोग होकर काम वासना तृप्त न हो फाँसी लगा लेने से, तथा नीच धूर्तों के साथ भगाने से, यही विचार उत्पन्न हुआ कि "राकेश" इस भयंकर व्याधि समूह की बढ़ती को रोकनेके लिये, भारत के प्रसिद्ध २ वैद्यरत्नोंके अनुभवों को एकत्रित कर उनके शिक्षा प्रद उपदेशों तथा औषधि प्रयोगों द्वारा "क्लीवताङ्क" रूप विशेष ङ्क हो जनता के समक्ष प्रगट हो प्रचार करे।

इसी विचार की पुष्टी के लिये भारत के कई एक वैद्यवरों ने इस क्लीवताङ्क में अपने निदान, मय अनुभवी लेखों, तथा शास्त्रीय विचारों द्वारा प्रकट कर निज उदारता का परिचय दिया है।

तोभी यही आवश्यकता प्रतीत हुई, कि पाठकों के समक्ष आधुनिक क्लीवता और भारतवर्ष" शीर्षक द्वारा वर्तमान कुरेवों तथा उनसे हानियों का दिग्दर्शन कराने का उद्योग करूं।

पाठको! इस महारोगने अपना प्रचार इतना विस्तृत कर लिया है कि शायद ही कोई व्यक्ति शेषहो, जो इसका किसी रूप में शिकार न हुआ हो। कोई स्वप्न दोष से पीड़ित है, तो कोई स्तम्भन शक्ति हीन है कहीं प्रमेह से धोती तर है, तो कहीं उपदंश से शरीर वर्र, का छत्तावन रहा है इस प्रकार से अनेक मार्गों से अनेक क्लीवता रूप में भारत का अधिक मानव समाज ग्रसित है जिसका खुलासा विवरण यों है।

क्लीवता का सामयिक रूप।

१ गुदा मैथुन, २-हस्त मैथुन, ३-बहुस्त्री (जिसमें परस्त्री, स्वस्त्री, एवं वेश्या) मैथुन ४-पशु मैथुन आदि और भी ऐसे कुपंथ हैं; परन्तु उपरोक्त प्रकार ऐसे हैं, जिनका प्रचार बहुतायत से है। जिनमें से-

हस्त मैथुन गुदा मैथुन के अनुयायी उस स्थान में पाये जाते हैं, जो कि शिक्षालय, विद्यालय नाम से प्रख्यात है। और वह व्यक्ति इसके ऐजेन्ट हैं जिन पर कि भारत के होनहार युवकों के जीवन का सुधार निर्भर है।

परन्तु शोक! उस शिक्षित समाज के कारनामों पर, उनकी शिक्षा दशा तथा उनकी विवेक बुद्धिपर, एक वह समय था जब हमारे शिक्षालयों में व्यायाम, ब्रह्मचर्य व्रत पालन की शिक्षा दी जाती थी स्वास्थ्य सम्पादन को वीर्य रक्षा का महत्व भली भांति समझाया जाता था, आज उसके विपरीत शिक्षालय गुदा मैथुनालय में परिणित हो गये और शिक्षक स्वयं गुदा मैथुन हस्त मैथुन के अनुयायी है साथ ही विद्यार्थियों को भी इसका पाठ पढ़ा कर विज्ञ बना देते हैं।

विद्यार्थी जिनका कि शुक्र अभी कच्चा है, हस्त मैथुन, या गुदा मैथुन द्वारा वीर्य नष्ट कर पूर्ण नपुंसक बन जाते हैं।

विवाहित होने पर जब अपनी स्त्री की कामवासना की तृप्ति न कर सके, तो लगे इधर उधर के पौष्टिक प्रयोग तथा तिलाओं की खोज करने,

हा भारतवर्ष ! आज तेरे इन होनहार सपूतों की यह दशा, जिनके पूर्वजों के ब्रह्मचर्य के प्रताप के इतिहासों को पढ़कर रोमाञ्च होता है।

खेद है कि उन्हीं की संताने आज निष्काम, वीर्यहीन, तथा नपुन्सकता बनी बैठी है शेष जो कुछ है भी वह नपुसक बनने के साधन कर रहे हैं।

बहुमैथुन का अन्तिम परिणाम

इस विषय के अनुयायी, परस्त्री, वेश्या गमन, पशुमैथुन आदि बहुमैथुन द्वारा वीर्य को वृथा नष्ट कर, उपदंश, सुजाक, आदि घृणित रोगों का अड्डा अपने शरीर को बना लेतेहैं, जिससे वीर्य सर्वनाश हो प्रमेह शीघ्रपतन आदि विकार उत्पन्न हो स्त्री के निकट जाकर लज्जा के पात्र बनते हैं। और फिर प्राण हनन करनेपर उतारू हो जाते हैं। तथा उनकी स्त्रियां उनसे तृप्ति नहीं पा तो गलेमें रस्सी डाल कर प्राण घात करती है अथवा विष आदि खाकर शरीर को नष्ट कर डालती हैं।

यही तक नहीं बल्कि ऐसे २ नीच कर्म करने को उद्यत हो जाती हैं जिससे कुल, धर्म, ईमान, लज्जा सब रसातलको चला जाता है।

आज कल बहुधा समाचार पत्रों में आप देखेंगे कि फलाँ मनुष्य की बेटी अथवा बधू मेहतर, चमार, मुसलमान के साथ भाग गई, इसका कारण आपकी क्लीवता नहीं तो और क्या है ?

नपुंसकवर्ग ! बेशक ! आपही इसके दोषी हैं, इसलिये कि प्राचीन इतिहासोंसे सिद्ध है कि जब हमारे पूर्वज वीर्य रक्षक तथा बलिष्ठ थे, तभी हमारी पूर्वज आदर्श स्त्रियां, पतिव्रता थी, पति को देव समान पूजती थी, पतिका चर्णोदक पान करती थी।

क्लीवो ! यह आपही के कुकर्मों का सार है कि आज वही आपको निस्तेज समझ चरण प्रहार करता हैं, उस पर भी आप उनको प्रसन्न करनेको चरण चापन करते हैं।

क्लीवत्व के सहायक अन्य कारण

आज कल की नपुंसकता को उपरोक्त लिखे अनुसार मैथुन करने वालों पुरुषों को शीघ्र नपुसक बना देने में एक कारण और भी सहायक है वह है सात्विक भोजन, दुग्धादि का उपयोग न कर तमोगुणी पदार्थों का बहु सेवन। पूर्व काल में जब दुग्धादि पौष्टिक पदार्थों की बहुतायत थी।

तभी अष्ट गुणशक्ति युक्त वनिताओं को रति समर में जीत बलिष्ठ होनेका दावा रखते थे।

परन्तु आज कल उसके विपरीत आज गो वध प्रचार से दुग्धादि पदार्थ न मिलनेसे, मनुष्य हीन वीर्य तो हैं ही, तिस पर भी अतिरिक्त विषय भोग कर तमोगुणी पदार्थ तथा तीक्ष्ण चाट आदि एवं मद्य का सेवन कर वीर्य को क्षीण प्रायः करने में और भी सहायक बनते हैं।

वीर्य ही पुंसत्व शक्ति है।

वर्तमान समय में भी आपके समक्ष वीर्य रक्षा और उसके चमत्कार का जा-

ज्वलंत प्रमाण श्री प्रोफेसर राममूर्ति एवं ताराबाई के अद्भुत कृत्य सामने हैं।

जिसने आपके पूर्ण विश्वास होना चाहिये; कि वीर्य ही मनुष्य में अद्वितीय पुंसत्व शक्ति है। और समस्त शरीर का पोषक है।

अतः इस अमूल्य अमृत मयी प्रकृति के रत्न को नष्ट न कीजिये, जिससे कि आपको कृत्रिम चूर्ण, पाक, तिला आदि को कहीं भटकना न पड़े।

शरीर में वीर्य संचय रूप।

जिस पदार्थ को नष्ट करने के लिये विभिन्न प्रकार के मार्ग खोज रक्खे हैं। तथा जितने काल में आप अनेक पतित कर देते हैं। उतने अधिक काल में कितने उच्च रूप में कितने भोज्य पदार्थों से आपको यह शक्ति प्राप्त होती है यह भी भली भांति विदित हो जाना आपको अत्यावश्यकीय है।

स्वस्थ मनुष्य का जो आध सेर अन्न का भोजन करता है उसका अन्न ८ दिनमास के पर्यन्त क्रमशः रस रक्त मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, आदि धातुओं के तप्त तथा अग्नि तथा वायु की प्रेरणा से अन्तिम परिणाम वीर्य को १॥ या २ रत्ती के रूप में प्राप्त होता है। फिर भी ऐसी दुर्लभ्य पदार्थ को जिस पर शरीर तथा बुद्धि के अंग तथा बुद्धि का कारण निर्भर है दुरुपयोग करने में नहीं हिचकिचाते और मदान्ध हो पशु प्रकृति से भी गिरी अवस्था में हो अन्तिम परिणाम क्लीवत्व को प्राप्त होते हैं।

अन्य कारण जन्यनपुंसकता।

आज कल स्वास्थ के तरफ ध्यान न देने से दिन रात मस्तमजी गद्दा पर सुबह से शाम तक बैठे रहने वाले मुनीमों साहूकारों में भी बिना अंगुल किये हुये ही क्लीवता का रूप धारण हो गया है पेट पर लालाओं का पेट बड़ शरीर मोटा होता है अंड वृद्धि भी है जिससे काम शक्ति या तो नष्ट होगई है इन्द्री लघु आकार को व्याप्त होगई अथवा शैथ होजेपर भी अति मोटापे से संभुग तोंदूर आनंदरूप लेने की भी स्वयं शक्ति नहीं है। सर्व काम नौकरों द्वारा पूर्ति कराये जाते हैं।

सर्व व्यापक क्लीवता।

यह क्लीवता प्रायः भारत के अधिकांश व्यक्तियों में विराजमान होती है जिनका प्रत्यक्ष शीघ्र पतन है जो कि स्वाभाविक कहा जा सकता है जिसका ज्ञान न हो सकता है तब कि युवाकाल में ही हानि को जानते हैं। जीवन अथवा रत्न जिसका कुमार्ग द्वारा परिचय कर दिया जाने अन्य का अवश्यं पतनी न हि जिस प्रकार उत्कृष्ट गुणवती युक्त स्त्रीसे सहवास कर उसकी काम वासना की तृप्ति की जा सकती है।

और यह बात यूनानी, वैद्यक आदि सभी सिद्धान्तों से सिद्ध हो चुकी है कि पुरुष से स्त्री में कामवासना अधिक है और स्त्री पुरुष से देर में स्खलित होती है। आज कल पुरुष सहवास हो स्त्री से शीघ्र स्खलित कर अपनी अग्नि मिटा लेते हैं, और समझ लेते हैं कि हमने परास्त कर दिया, पर यह भूल है, स्त्री की कामेच्छा शीघ्र उच्छा या स्पर्श मात्र से ही उत्तेजित नहीं होती है न शीघ्र शान्त ही हो जाती है, पुरुष के प्रथम सम्भोग के समय कामेच्छा शीघ्रकारी होने से वीर्य-

पात शीघ्र होकर कामेच्छा भी शीघ्र ही शमन हो जाती है परन्तु अगले बार के सम्भोग में विपरीत होता है, कामवासना तो कम हो जाती है परन्तु स्तम्भन विशेष होता है, परन्तु इसके विपरीत स्त्रियों की प्रकृत्ति होती है, उनका कामवेग मन्द होता है, जो कि धीरे २ जाग्रण होता है और देर में पूरित होता है, साथ ही ज्यों ज्यों अधिक विषय किया जावे स्त्रियों की कामवासना उत्तरोत्तर बलवान् ही होती जाती है, और बाद में स्खलित होने पर कन्दु के शान्त होने पर स्वयं शान्त हो जाती है, अतः यह बात सिद्ध हो चुकी कि पुरुष को कामेच्छा प्रगट होते ही बिना आलिंगन चुम्बन आदि कर्मों द्वारा स्त्री की इच्छा के विरुद्ध बिना रति जागृति किये विषय न करना चाहिये, कारण कि ऐसा करने से स्त्री की कंदु शान्त नहीं होती है और पुरुष स्खलित हो जाते हैं, तब वह नपुंसक समझ घृणा करने लगती है, और तिरस्कार भरी दृष्टि से देखती है; और लात मार फटकारती है कि अरे दुष्ट तूने हमारा जीवन नष्ट किया, जाकर कहीं चुल्लू भर पानी में क्यों नहीं डूब मरता, ऐसी अनभ्यासे स्त्रीको कामका भूत ऐसा सवार होजाता है कि उसे नहीं सूझता कि पति-धर्म क्या वस्तु है, उस समय वह पतिके प्राण लेने को भी उतारू हो जाती है तथा अपने भी गवां देनेको नहीं हिचकती, यदि यह नहीं तो चोरी छिपे नौकर, नीच जाति के पुरुषों से मौका पाकर रति इच्छा की पूर्ति कराती है, और धन दौलत उन पर सर्वस्व निछावर करने को उद्यत होजाती है, धर्म, ईमान का कुछ भी ध्यान नहीं रहता, इस समय तो उसको वही प्यारा है जो उसके उत्तेजित कंदु को शान्त करने योग्य होता है।

अब हम यहां पर क्लीवता पर शास्त्रीय विचार तथा भेदों का वर्णन न कर क्लीवता के उत्पन्न न होने देने के साधन, नियम तथा क्लीवता ग्रसित पुरुषों के लाभार्थ कुछ चिकित्साक्रम ही दर्शाना चाहता हूँ, कारण कि इसी अङ्कमें आगे आप प्रसिद्ध प्रसिद्ध वैद्यों के पूर्ण निदान लक्षण सहित लेख तथा प्रयोग पायेंगे।

क्लीवता दूर करने के साधन।

क्लीवता दूर करने के लिये दो ही साधन उपयोग में लाये जा सकते हैं एक तो यह कि उस समाज में जो कि हस्तमैथुन गुदामैथुन आदि कुटैवों के अनुयायी हैं तथा उसके प्रचारक हैं, व्याख्यानों द्वारा उपदेश द्वारा उनको हानि समझा कर सुख मार्ग दिखाकर उसकी लीक न पड़ने देना, दूसरे यह कि उन व्यक्तियों को जो उपरोक्त तथा अन्य किसी कारणों में फंस कर क्लीवता के शिकार बन चुके हैं, उनके रोगानुसार उचित औषधियोंजना करना।

प्रथमसाधनका सफलीभूत बनाना

ऊपर हम दर्शा चुके हैं कि हस्त मैथुन गुदा मैथुन का अधिक प्रचार हमारे विद्या

र्थियों तथा शिक्षकों में वर्तमान है। इसकी गुप्त रिपोर्ट प्रत्येक औषधालय में आये हुये आर्डरों से सिद्ध हो सकती है। अतः वैद्यगणों का केवल यही कर्तव्य नहीं कि केवल औषधियां ही बनाई कर माला-माल बनने का उद्योग करे। वैद्यका प्रधान कर्तव्य है कि जिस सीमा में वह स्थित है वहां के मनुष्यों को जिस प्रकार हो सके स्वास्थ शिक्षा, व उपदेशों द्वारा हर प्रकार के रोगों के बचनेसे नियमोंका पाठ पढ़ावें बड़े शहरों में जहां वैद्यक सभा हो। सभा द्वारा ब्रह्मचर्य महिमा कुटेवों की हानियों का दिग्दर्शन (नोटिसो) व्याख्यानोंद्वारा कराया जावे स्थानीय डिसिक्टबोर्ड के मेम्बर द्वारा तथा कौंसिल के मेंम्बरों द्वारा शिक्षा सुधार कराया जावे विद्यार्थियों के ाति ऐसे कड़े नियम बनाये जावे कि वह स हस्त मैथुन क्रिया से सर्वथा अलग ो रहसके—इस में एक बार प्रत्येक विद्या ीं की शारीरिक परीक्षा कराई जावे।

साथ ही स्वास्थ शिक्षा का भी पाठ्य म रक्खा जावे, जिससे उनको ब्रह्मचर्य हिमा और वीर्य रक्षाफल का भी स्मरण ाता रहे, और सहसा इन कुटेवों में न ड़ सकें, माता पिताका भी प्रथन कर्त्तव्य कि पुत्र को ऐसी ही शुरू से शिक्षा देवे ार निगाह रक्खे कि वह कुसंगति में तो ीं पड़ गया है, साथ ही यहाँ पर हम ोसन बोर्ड, तथा वैद्य सम्मेलन सभा भी ध्यान आकर्षित करते हैं कि वह ाय २ पर विद्यालयों, विद्यार्थियों तथा जनता में स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी तथा कु टेवों से बचने तथा उनसे प्राप्त हानियों को भी ट्रैक्टों नोटिसों आदि द्वारा प्रचार करने का प्रबन्ध रक्खें।

वीर्योत्पादन समय।

अब हम यहां पर पाठकों को सूक्ष्म तया वीर्य व्यय करने का समय तथा नि-यम बतलाते हैं जिसके अनुसार चलने से सदा कामिनियों की विलासता को हरण करनेमें पूर्ण समर्थ होसकता है। आचार्यों का मत है कि केवल ऋतु समय के एक बार स्वस्त्री से सतानोत्पन्न करने हेतु ही सम्भोग कर वीर्य व्यय करना चाहिये इस प्रकार वीर्य का संचय करने से पराक्रम, बल, कान्ति, साहस, बुद्धि की वृद्धि होती है और इसी से गुण युक्त संतान भी पैदा होगी, परन्तु आज कल इतने अधिक काल तक स्थिर रहने वाले बहुत कम दृष्टिगोचर होंगे, अतः हम यहां पर स्वबुद्धि से सिर्फ़ माह में चार बार मैथुन करने का आदेश देते हैं, और विश्वास दिलाते हैं कि इतने समय में भी जो मनुष्य विषय करेंगे वह भी हमेशा सुख भोगेंगे तथा स्त्री को प्रसन्न रक्खेंगे, परन्तु यह नियम उन्हीं पर लागू होगा जो २५ या २० वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य रह सके हों।

कारण कि शरीर में परिपक्व हो २५ वर्षकी अवस्था तक वीर्य बढ़कर पुष्ट तथा शुद्ध होता है। २५ वर्ष से ४० वर्ष नक स-मगति रहती है और यही युवावस्था है—बाद ४० वर्ष से वीर्य की स्वभाविक हानि

होना शुरू हो जाती है। शक्ति भी घटना आरम्भ हो जाता है यह वृद्धावस्था का द्वार है। अत इस वीर्य क्रम के अनुसार किसी प्रकार मनुष्य २५ वर्ष नीचे रतिकर्म करने योग्य नहीं माना गया, परन्तु अव समय के प्रभाव से तथा मनुष्यों के स्वभाव से हम २० वर्ष की अवधि निश्चय करते हैं खेद का विषय है कि पशु पक्षी भी प्राकृतिक नियम का पालन कर नियमित समय पर विषय भोग करें और मानव समाज पशु से भी गिरकर दिन रात अनियमता से विचरें। अतः जो मनुष्य क्लीवता से बचकर सामर्थ्यवान रहना चाहते हैं वह उपरोक्त नियमों का पालन करें ऐसे मनुष्य को अद्भुत् सफलता तथा शक्ति प्राप्त होगी।

द्वितीय रोगदोषानुसार क्लीव चिकित्सा साधन।

अब हम पाठकों को चिकित्सा का दिग्दर्शन मात्र कराकर लेख को खतम करेंगे। क्लीव रोगी की चिकित्सा करते समय वैद्य का प्रधान कृतव्य होगा कि वह देशकाल वल, प्रकृति दोषानुसार रोगी को पञ्चकर्म द्वारा शरीर की शुद्धि करावे, कारण कि वीर्य विकार जन्य रोगों में रेचन वमन वस्ति आदि कर्म विशेष उपयोगी है इसका व्यवहार न कर केवल पौष्टिक पाकतथा चूर्ण या तिला सेवनही करा देनेसे लाभ तो नहीं वल्कि हानि ही दृष्टि गोचर होती है क्योंकि बिना शरीर शुद्ध के रसायन सेवन ऐसे हैं जैसे मैले कपड़े पर श्रेष्ट रंग का योग। यदि लाभभी हुआ तो क्षणिक अतः रोगी को भी चाहिये कि इधर उधर अन्टसन्ट ओषधियां अशुद्ध न खाकर विश्वासी अनुभव पूर्ण वैद्य का इलाज करवावे।

प्रथम दूषित वीर्य की चिकित्सा मुख्य है।

प्रायः सब प्रकार की क्लीवता में वीर्य ही दूषित तथा क्षीण होता है अतः वमन, रेचन के अतिरिक्त दूषित वीर्य की शुद्धि तथा वृद्धि के लिये स्नेहन वस्ति प्रयोग करना अति श्रेष्ठ होता है कारण कि वीर्य हीन पुरुष की स्नायूयें रुक्ष व बलहीन हो जाती है। अतः वृष्य वस्ति द्वारा गुदा में स्थित स्नायुयें स्नेह भाग को धारण कर सम्पूर्ण शरीर गत स्नायुयों को स्निग्ध कर देती है जिससे तत्काल वीर्य बढ़कर बल आ जाता है।

वात दूषित वीर्य की चिकित्सा।

जीवनीयघृत, अश्वगंधा घृतअस्वगंधा रिष्ट तथा बला गोक्षुरादि पाक द्वाराकरे।

पित्त दूषित वीर्य को

च्यवनप्राश कूष्माण्ड अवलेह कामदेवघृत त्रिफला रसायन आदिक पित्त शमनकारी तथा वीर्य वृद्धिकारक ओषधियों द्वारा करे

कफ दूषित वीर्य को।

शिलाजीत, कस्तूरी, चन्द्रोदय हरीत की आदि प्रयोग से जीते। अमृत भल्ला तक तथा दाक्षा रसायन का सेवन करावे

प्रायः सर्व प्रकार की नपुंसकता में वीर्य वृद्धि कारक तथा पौष्टिक प्रयोग को काम में लाने से सिद्धता प्रकट होती है।

हस्तमैथुन गुदा मैथुन जन्य क्लीवता चिकित्सा।

इन मैथुनों की क्लीवता में मनुष्य का वीर्य अति दूषित पथा क्षीण होजाता है वीर्य वाहिनी नसें कमजोर, ढिल; तथा मारी जाती हैं इन्द्रिय आकार लघु, टेड़ा होजाता है अतः रोगी को प्रथम वीर्य वर्धक औषधियां खिलाकर बाद को भग्न भङ्ग नाशक लेप तथा तिला स्तैमाल करा-ना उपयोगी होगा। साथ ही वदन में श्री गोपाल, तैल, कामेश्वर तैल, चन्दनादि तैल का अभ्यङ्ग होना भी आवश्यकीय है।

स्थानाभाव से अधिक न लिख लेख समाप्त कर पाठकों से क्षमा याचना हूँ।

—सम्पादक।

क्लीवताङ्क और हमारी विवशता।

यद्यपि क्लीवताङ्क को विशेष सजधज के साथ और भी भाव पूर्ण, तथा नियत समय पर ही निकल कर पाठकों के समक्ष भेंट करने का हमारा विचार था, परन्तु लेख मैटरादि ठीक समय पर न आसकनेसे व प्रेस मैनेजर की वृद्धामाता की इसी बीच में मृत्यु होजाने तथा देशके महान नेताओं की गिरफतारी पर हड़ताल हो प्रेस बन्द रहने से अङ्क छपने मे देर होने से ग्राहकों की सेवा में अङ्क पहुँचने में विलम्ब का कारण उत्पन्न हुआ साथ ही सम्पादक जी का अङ्क छपनेके मध्य ही में एक सन्निपात ग्रसित रोगीकी चिकित्सावश लगातार कुछ कालतक कर्यालय में उपस्थित न रह सकने से प्रूफ आदि ठीक सन्शोधन नही होसका इन्ही अड़चनों की विवशता पर ग्राहकों से क्षमा मागता हूँ।

सूचना।

उपरोक्त विवशता वस क्लीवताङ्क ही अप्रैल के मास में न छपकर मई तक छप सका अन्त मई के अङ्कमें भी देरी होने की सम्भावना देख हमे आगामी अङ्क मई जून का युगाङ्क रूपसे १५ जून तक निकालना पड़ेगा। अतः ग्राहक गण समय क्रम सुधार पर क्षमा करें। —मैनेजर।

शरीर में सप्त धातुओंकी वृद्धि करने वाली

क्लीवत्व नाशक अद्भुत च्यवनप्राश रसायन।

इस रसायन के गुण प्रायः भारत के सभी वैद्य यथा ग्रहस्थ गण जानते होंगे, इस शास्त्रोक्त औषधि का च्यवन ऋषि को वृद्धा अवस्था से पुनः युवावस्था में परिणित करने हेतु देवर्षि वैद्यअश्वनी कुमारों ने अविष्कार किया था जिसके सेवन से आज भी मनुष्य समस्त वीर्य दोषों से शरीर शुद्ध तथा धातु वृद्धि कर यौवन के सुख के आनन्द को लूटकर स्वस्थ रह सकता है इस औषधि में विशेष कर वीर्य दोषों के अतिरिक्त फुफ्फुस दोष तथा खांसी नाशक शक्ति विराजमान है, ऐसी औषधि का प्रचारार्थ मूल्य ३) रु० सेर रक्खा है ताकि सभी लाभ उठा सकें।

पता—मैनेजर श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावा यू० पी०

प्राचीन ऋषि शिक्षक तथा ब्रह्मचारी का आश्रम

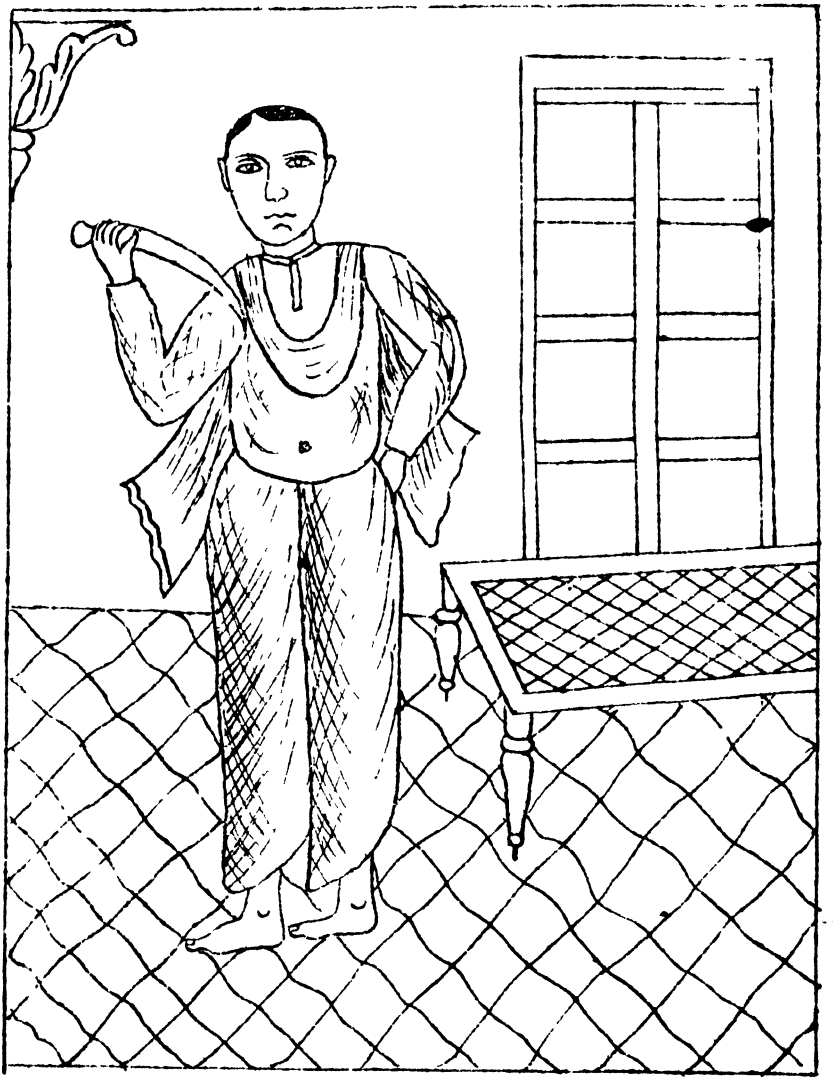


प्राचीन समय के शिक्षकगण ब्रह्मचर्य व्रत सिखलाते थे।
तब ही तो बालकधीर वीर बन अद्भुत कार्य दिखाते थे॥



देखो सन्मुख यह शिक्षक गण शिष्यों को शिक्षा देते हैं।
भोजन में बैंगन अथवा मछली की इच्छा करते हैं॥

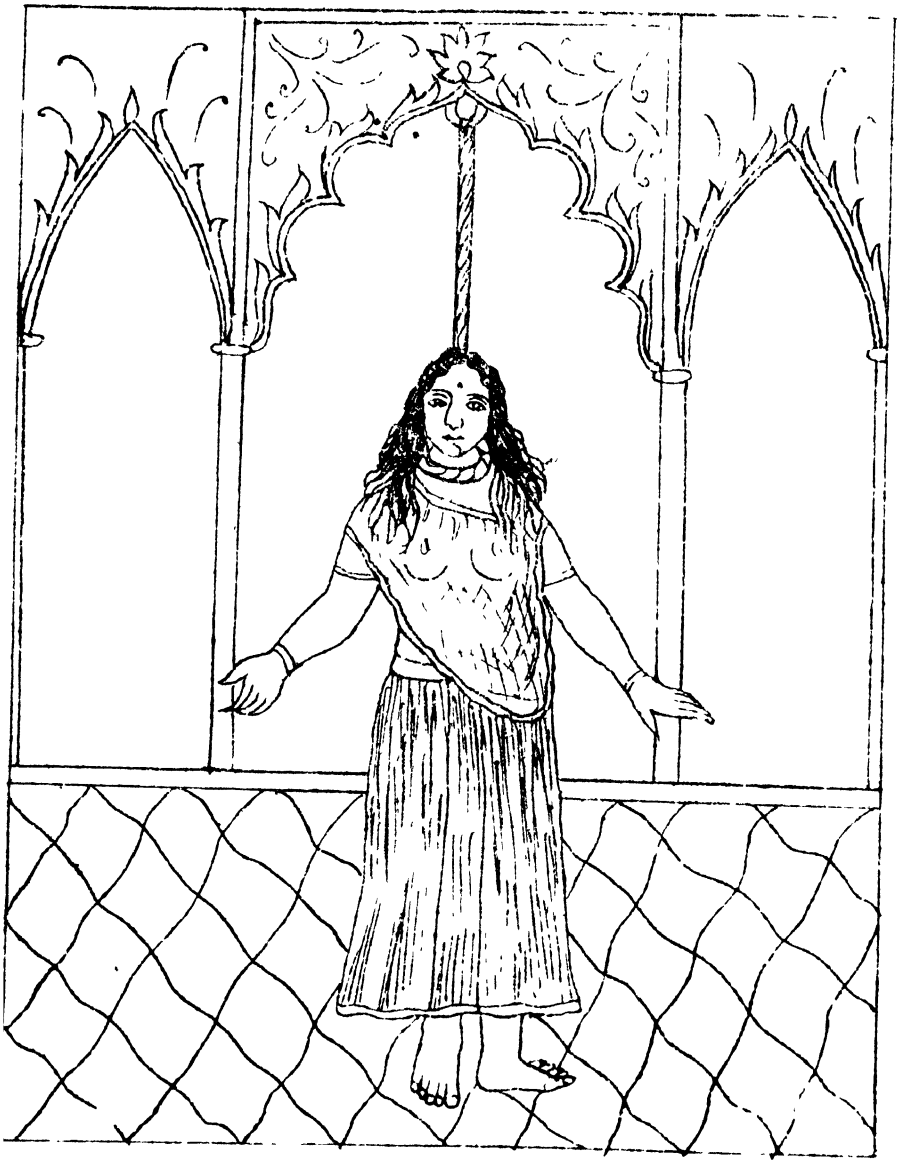
एक नपुसक पुरुष का प्राण हरन करने का उद्योग



(C. A. Press Elāwah.)

स्त्री सम्भोग वसलोलुप हो और हम मान दबाखाने से।
इंकार करके एक दिवस लेपाली करार सामने से॥

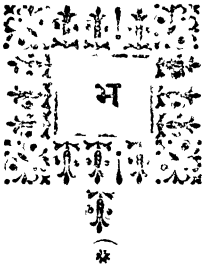
हस्त मैथुनजन्य मैथुन पक्ष की स्त्री का फांसी लटकना



हस्त मैथुन से इन्द्री जब पति की लघु आकार हुई।
काम च्छा प्रबल शान्त हो बस मरने को तैयार हुई॥

कलियुगी क्लीवता

[ले०—प्रोफेसर बालकराम शुक्ल आयुर्वेदाचार्य आनरेरी विद्यालय कलीकेता]



भगवान् कलि की असीम अनुकम्पा से आजकल इस समय में मनुष्य के शरीर में क्लीवता ने निवास कर लिया है। और उसकी सेवा मनसा, वाचा, कर्मणा, अर्थात् हस्त मैथुन, गुदामैथुन मुख मैथुन, पशु मैथुन, शिशीक्ष मैथुन, वेश्या मैथुन, रोगिणी स्त्री से मैथुन करना रजस्वला अवस्था में मैथुन करना, बहु मैथुन आदि से की जाती है। और भांग, गांजा, चरस, अफीम आदि मद्यकारी पदार्थों का सेवन करके भी सेवा की जाती है इसके अतिरिक्त, भारत, कीर्तन वेलि, प्रेक्षण, गुह्यमार्ग, सकार, अश्वदंशाय आदि से भी सहायता की जाती है। विचार कीजिये कि जिसके इतने सहायक होवें उनकी विजय ध्वजयष्टी क्यों न फहरावे। यह समय का प्रताप है कि जिस भारतवर्ष में शारीरिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक उन्नतियों का आधार सांक्रामक रोग जन्य नाना प्रकार की अकाल मृत्युओं को जीतनेवाली और कलि, तेज, बल को प्रकाशित करनेवाली परम शैवल, आश्विना का दुलभ, ब्रह्मचर्य के बल में वीर्य रक्षा का करना स्वीकार किया जाता था उसकी प्रतिनिधि में क्लीवता विराज रही है। अतः क्लीवता का वर्णन आगे लिखा जाता है।

क्लीवता विषयक पाश्चात्य सिद्धान्त

ध्वजभंग रोग

जिस पुरुष का शिश्न, स्त्री के साथ सहवास करने के समय नहीं उठता है, अर्थात् शिथिल हो करके पड़ा रहता है। उसको ध्वजभंग कहते हैं।

शब्दार्थ.—ध्वज. शिश्न स्तम्भ भंगो नाशः स्वकार्यासामर्थ्यम्।

कारणादि

यह रोग शारीरिक, और मानसिक इन दो कारणों से उत्पन्न होता है।

शारीरिक कारण—मूत्राङ्ग की दुर्बलता अभाव अथवा शिश्न के रोगों से अथवा आजन्म से हाइपरस्पेडियस और एपिस्पेडियस की अवस्थायें, और लिङ्ग की अतियोजित स्कीन, लिङ्ग के ऊपर किसी प्रकार का चर्मकील हो जावें उपदंश, उपदंश, अथवा कर्कटरोग. (कार्सिनोमा) अथवा किसी प्रकार से लिङ्ग में चोट

जाने पर उसका रक्ताभाधिक संगठन विकृत हो जाता है। और लिङ्कोकुथाम प्रभृति पीड़ा से मूत्रनली में प्रदाह और सङ्कीर्णता आदि [illegible] हो सकता है [illegible] रोगों का उल्लेख अभ्यास, जड़ता, दौर्बल्य, या उत्तेजना (हाइपर सिल) अथवा शीघ्र, कष्टसाध्य प्रदाह और अपूर्ण स्मृति रोग हो जाने से भी यह रोग ऐसा हो जाता है और अधिक हस्तमैथुन (मास्टर्बेशन) करने से और मेहोपजननि पीड़ा (वेनेरियल) स्नायुदौर्बल्य वृक्कामय मधुमेह (डायबिटीस) और कशेरुका मज्जा में पक्षाघात हो जाने से मूत्रबन्ध और मलावरोध के आक्रान्त होनेपर और किसी स्थानसे गिर जानेपर पश्चात् कपाल, और मेरुदण्ड के आहत हो जानेपर और सूजन होनेपर और किसी प्रकार के उत्कट रोग [illegible] हो जाने से हो जाती है।

[illegible]

किसी प्रकार से वियम के प्रतिकूल औषधि का चिरकाल तक सेवन किया जावे उससे भी क्लैब्य हो जाता है। और शराब, भांग, गांजा चरस, अफीम, तम्बाकू, चरस, हुक्का, बीड़ी चिलम, सुर्ती तम्बाकू चूर्ण करके खाना, चाय आदि चीजों के सेवन करने से रति शक्ति को क्षीणता होती है। और आवश्यक काल काल तक सोडा [illegible] और ब्रोमाइड, [illegible] ([illegible]) और काम

नाशक और अन्नोपहर के औषधियों संवरण करने से क्लैब्य हो जाता है। आजकल नवीन सभ्यता ने भारतीयों को नपुंसक बनाने का ही ठान सा लिया है किसी समय प्राचीनकाल स्वयंवर प्रथा हमारे समाज में प्रचलित थी तो स्वयंवर वाले दिन वधू को [illegible] आवश्यक समझते थे। और उसमें वीर्य, सिगरेट अवश्य होना चाहिये। किसी सज्जन ने कहा है कि सिगरेट वाहा है तू दिन भर सोचो फूंके, मैं फूंकूं लेय सिगार इसका कुछ भी विचार नहीं करते हैं वहां तो इसका ध्यान रहता है।

कोऽयं दृष्टं पतत्यग्रे कश्च,

[illegible] द्वितीयम्।

[illegible] ऐसा सभ्यताया:

[illegible] हैं।

[illegible] पुंस्त्व [illegible] चरकाचार्य [illegible] किया है कि कार, पुंस्त्वहरणाम तथा मनुष्यके पुंस्त्वको नाश करनेवाली वस्तुमें कार श्रेष्ठ है। अत: आवश्यकता के [illegible] आवश्यकता और पदार्थ [illegible] भी सेवन करना चाहिये ही है। [illegible] भग अवश्यंभव होगा। आजकल ब्रह्मचर्य होने में अधिक सहायता करते हैं। और जो पुरुष [illegible] अन्न मांसमें और घृत अधिक मात्रा में, और नमक अधिक मात्रा में खाते हैं उनके भी ब्रह्मचर्य हो जाता है। और तेज, गुण, गरममसाला अधिक मात्रा में सेवन करने से उनका

विष दूषित होकर के रक्त में गर्मी उत्पन्न कर देता है जिससे वीर्य पतला, उष्ण दुर्गन्धित हो जाता है, इससे पुरुष नपुंसक हो जाता है इसको सुश्रुताचार्य पित्तजन्य दुर्बलता माना है।

मानसिक कारण

शोक, दुःख, ईर्षा, लोभ, मोह, घृणा विरक्ति, भय, क्रोध आदि मानसिक विकारों से स्त्री सम्भोग में स्पृहा अत्यन्त कम हो जाती है। अथवा कुछ रोगी लिङ्गोद्रेक होते हैं जिससे स्त्री को सन्तुष्ट करने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसी अवस्था पर रोगी का मानसिक दुर्बलता बढ़ जाती है। और रोगी ऐसा विचार करता है कि हममें रति करने की शक्ति नहीं है इससे उसका चित्त उद्विग्न रहता है कभी २ रोगी अपने को साधारण रतिसे असमर्थ समझ लेता है। उस अवस्था में भी रोग का सूत्रपात हो जाता है ऐसी प्रकार अवस्थों में औषध के अलावा दवाओं से और भी धैर्य की कमी पड़ जाती है। इस भांति अन्यान्य रीतियों से लिंग के अशक्तार्थ होनेपर धीरे धीरे प्रकृत रोग को आश्रय मिल जाता है। और किसी २ स्थल पर विवेचना से शून्य होकर के अथवा स्त्री के साथ विषय भोग करने के लिये मनमें विचार करके वृथा वा सामान्य उत्तेजना के वश में आकर के वृथा ही स्त्रियों में आसक्त हो जाता है। इस अवस्था में, पाश्चिक शारीरिक और मानसिक दुर्बलता उपस्थित हो जाती है इससे धीरे २ प्रकृत रोग उपस्थित हो जाता है।

लक्षण

ध्वजभंग रोग में रोगी का मानसिक दुःख इतना बढ़ जाता है कि शारीरिक कष्ट उसकी तुलना नहीं कर सका है। असम्पूर्ण लिङ्गोद्रेक और सहवास के आरम्भ में ही उसका पतन हो जाना ये दो लक्षण इस रोग के प्रधान उपसर्ग हैं और रोग [illegible] बनी होनेपर भी [illegible] (क्लिटरिस) की उद्वासकारी शक्ति (इरेक्टाइल) की स्पर्शानुभवकारी शक्ति का ह्रास हो जाता है। और थोड़ी देर में वीर्य का पात हो जाता है यही रोग का प्रधान लक्षण है। और रोग के प्राचीन होनेपर लिङ्ग खड़ा भी नहीं हो सकता है।

पुरुष की वन्ध्यता

परिचय—स्वाभाविक वा स्वाभाविक वीर्य पात की शक्ति की हीनता वा लुप्तता के कारण से सन्तानोत्पादन की असामर्थ्य को वन्ध्यता कहते हैं और रति क्रिया के करने में सामर्थ्य होनेपर भी यदि वीर्यपात न होवे तो उसको नपुंसक कहते हैं यदि वीर्यपात होवे [illegible] उसमें वीर्यकी (स्पर्मेटोजोया) उत्पत्ति न होवे तो उस को एजुस्पार्मिया कहते हैं वन्ध्यत्व के साथ ध्वजभंग भी वर्तमान हो सकता है और नपुंसकों के और जिनके युवावस्था में दोनों अण्डकोष नष्ट प्राय हो गये होवें

उनके अप्रजस्का और वन्ध्यताके दोनों लक्षण साथ वर्तमान रहते हैं और अनेक स्थलमें यथेष्ट परिमाणमें वीर्य के निक्षिप्त होने पर भी और उसमें अनेक संख्यामें शुक्र कीटों (स्पर्मेटोजोआ) के रहनेपर यदि शुक्रकीट जीवित नहीं होते हैं तो उनसे कोई लाभ उत्पत्ति नहीं होती है और अण्वीक्षण यंत्र से स्वाभाविक शुक्र कीटकी परीक्षा करने पर वीर्यपात के बाद बारह घण्टा तक उसमें ये जीवाणु ऊर्मिके तुल्य गति करते हुए मालूम पड़ते हैं और वीर्यपात के बाद कुछ समय तक शुक्रकीट निश्चल रहते हैं किन्तु उसमें क्षार द्रव्य का संयोग करनेपर वे चलने लगते हैं यदि क्षार द्रव्य के संयोग होनेपर सकल कीट गति हीन मालूम होते हैं तो इस वीर्य परीक्षा द्वारा पुरुष को वन्ध्यता से युक्त जानना चाहिये और यदि वीर्यपात के किसी मार्ग से अथवा वीर्य निकलने के मार्ग के किसी स्थान में अस्वाभाविक छिद्र होने से या नियमित रूपसे वीर्य पात नहीं होता है तो ऐसा होनेपर उसको व्यय वीर्यपात (मिस एजिशन) कहते हैं

विविध कारणों से-"एजुस्पार्मिटिज्म' उत्पन्न हो सकता है जैसे-प्राइकोप, वा शुक्रनली का जन्म से अभाव, विकृति वा स्थान च्युति, अथवा दोनों तरफ के अण्ड और उपाण्ड का अपकर्ष प्रदाह, विद्रधि अथवा शुक्रलावक सम्पूर्ण ग्रंथि का ट्यूबरकुलर (घुणाकार श्वेतसर्षपसन्निभाक्ष्यजन्यपिडिका) अथवा उपदंशिक पीडा वा उपाण्ड (एपिडिडिमिस) वा वीर्यांशय (वासडिफरेन्स) का अवरोध इत्यादि इन सब स्थलों पर वीर्य में शुक्रकीट वर्तमान नहीं होते हैं इस के अतिरिक्त अत्यधिक मात्रा में रति क्रिया और अत्यन्त नाड़ी सम्बन्धी दौर्बल्य यक्ष्मा प्रभृति और अधिक मात्रा में सुरा वा अफीम, गांजा, चरस आदि के सेवन करने से यह रोग पैदा होता है अनेक कारणोंसे रति क्रियामें वीर्य पात नहीं होता है जैसे साधारण वीर्य प्रक्षेपक नाड़ीका अवरोध सुषुम्नपक्वशूकी के निकट में निदान सम्बन्धी परिवर्तन जीवित वीर्य के निकलने में प्रतिरोध मूत्र नली का अवरोध वा वीर्यनली का अवरोध कभी २ वीर्य प्रक्षेप पेशियों की शक्ति के लुप्त हो जाने से वीर्यपात रुक जाता है, और इसके अतिरिक्त लिङ्ग गुप्तेन्द्री वा पौरुष ग्रन्थीय नाड़ी (प्रोस्टेटिक प्लेक्सस) की चेतनता के लुप्त हो जाने से सङ्गमसुख मालूम नहीं होता है और वीर्यपात भी नहीं होता है किन्तु वन्ध्यता उत्पन्न हो जाती किसी २ स्थल पर मानसिक एक्सा-मेंटिज्म दिखलाई पड़ता है। इस स्थल में रोगी स्त्री के साथ सम्पूर्ण रति क्रिया करने में समर्थ नहीं होता है और वीर्य पात भी नहीं होता है।

क्लीवता (नपुंसकी) विषय प्रत्यय सिद्धान्त

इसके प्रधान चार कारण हैं मैं इन के नाम नीचे लिखे जाते हैं (१) वातजन्य वीर्य दोष, वीर्य क्षीणता वृद्धावस्थाजन्य।

सामान्य लक्षण

स्त्री के साथ विषय भोग करने की इच्छा होनेपर भी लिङ्ग की शिथिलता के कारण प्रिय प्रियतमा के साथ पुरुष सहवास नहीं कर सकता है यदि किसी प्रकार गमन भी करता है तो उस से चलते न बनता है पसीना निकलने लगता है उसका सकल व्यर्थ हो जाता है लिङ्ग ढीला पड़ जाता है और वीर्य रोग का आता है यह क्लीवता का सामान्य लक्षण है।

ध्वजभङ्ग का कारण

अधिक अम्ल पदार्थ, नमकीन, क्षार, विरुद्ध बोध वाले जैसे मछली दूध आदि पदार्थ) और दुष्पाच्य भोजन, अधिक मात्रा में जल का पीना, विषम भोजन लड्डू आदि गरिष्ट पदार्थ का भोजन, दूध, वही जल के सदृश रहनेवाले पशु पक्षियों का मांस अधिक मात्रा में सेवन करना, अथवा व्याधि से शरीर जब क्षीण हो जाता है और कम उमरवाली स्त्री से जो मैथुन करता है और पशुओं की योनिमें जो मैथुन करता है अथवा दीर्घ रोगपाल. वा चिरकाल से जिसने पुरुष के साथ सहवास न किया हो ऐसे स्त्री के साथ गमन करने से अथवा रजस्वला वा दुर्गन्ध से युक्त योनि में, वा दुष्ट योनि स्रावयुक्त योनि ऐसी स्त्री में, अज्ञानता अथवा हर्ष वश मैथुन करता है और ईश्वरके नियम के प्रतिकूल बालकों के साथ व्यभिचार करता है और जब लिङ्ग में किसी कारण से चोट लग जाती है और जो लिङ्ग को साफ नहीं करता है अथवा उस्तरा, दांत नाखून से लिङ्ग में क्षत हो जाता है किसी किसी स्थान में व्यभिचारी पुरुष दुख में भी मैथुन करते हैं उस समय कभी २ दांतों से लिङ्ग में क्षत हो जाता है अथवा जो पुरुष हस्तमैथुन (मास्टरबेशन) करता है कलि के प्रताप से आजकल इस अवस्था का प्रचार बालकों में अधिक देखा जाता है। प्रथम अज्ञानावस्था वा दुराचारी साथियों के साथ पड़कर इस कुवासना में पड़ जाते हैं। आजकल अधिकतर यही कारण क्लीवता के मुख्य समझना चाहिये पहला बालकों के साथ व्यभिचार दूसरा हस्तमैथुन है और लिङ्गादि वृद्धि के लिये शूकादि प्रयोगों का सेवन वीर्य नाश आदि ध्वजभंग के कारण हैं।

ध्वजभग का लक्षण

लिङ्ग में सूजन, वेदना और ललाई पैदा हो जाती है और लिङ्ग में बड़े २ फोड़े निकल आते हैं, लिङ्ग पक जाता है और लिङ्ग का मांस भी बढ़ जाता है और लिङ्ग में जहरी २ घाव पैदा हो जाते हैं और तुच्छ धान्यों के यवागू (पुलाक) से पकाये हुए जल के समान काला सफेद

रंग मिला हुआ कुछ लाल रंग का स्राव निकलता है लिङ्ग में टेढ़ापन आ जाता है कठिनता और जकड़ाहट भी आ जाती है और ज्वर तृष्णा भ्रम मूर्छा, कृमि से उद्भव उत्पन्न हो जाते हैं और पीला, काला मैला साथ निकलता है और अन्तियों जल जाने के समान भयङ्कर दाह होने लगत है और वेदना भी होती है ये वेदना मूत्राशय, अण्डकोष लीवन वृक्क तक फैल जाती है कभी २ बिल्कुल पीतु वर्ण का स्राव होता है ज्वर और धीरे २ फलनेवाली सूजन हो जाती है स्राव भी अल्प इस अवस्था में होता है और कभी २ चिरकाल में और कभी २ शीघ्र ही पाक आरम्भ हो जाता है, फफोले पड़ जाते हैं, सड़ी हुई दुर्गन्धि आने लगती है और अन्त अवस्था में लिङ्ग की मांसपेशि, अण्डकोष तक नष्ट हो जाते हैं ये वृजभग के लक्षण हैं।

बीजोपघात जन्य कृशोदता के कारण

शीतल, रूक्ष, मात्रा में अल्प, दूषित विरुद्ध वीर्य वाले, अजीर्णकारी पदार्थों के खाने से, और शोक, चिन्ता भय, त्रास, स्त्रियों के साथ अत्यन्त मैथुन करने से अभिचार, अविश्वास और रस आदि धातुओं के क्षीण हो जाने से, रक्त आदि धातुओं के क्षीण हो जाने से और सातों धातुओं का सारभूत ओज के क्षीण हो जाने से और उपवास परिश्रम आदि करने से मूढ़ स्त्री के साथ सहवास से और पञ्च कर्म में वमन, विरेचन, शिरोविरेचन (शिरोविरेचन) अनुवासनबस्ति पथ्य आहार विहार करने से बीजोपघात जन्य कृशोदता पैदा हो जाती है।

लक्षण

इसमें शरीर पीला पड़ जाता है, और अत्यन्त दुर्बल हो जाता है, और शक्तिहीन हो जाता है स्त्री में गमन करने की इच्छा नहीं होती है। इसके बाद, हृदयरोग पाण्डु रोग, श्वास, (दमक श्वास) कामला और ज्वर से पीड़ित हो जाता है। और खांसी उदर, प्लीहा, अतिसार, शूल से भी पीड़ित हो जाता है।

ओज जन्य कृशोदता

अधिकतर वृद्धावस्था में मनुष्यों का शुक्र प्रायः क्षीण हो जाता है। इसका कारण यह है कि शरीर की धातु क्षीण होने लगते हैं और पुष्टिकारक द्रव्य सेवन करने से वल, वर्ण और इन्द्रियों का पराक्रम क्रमशः क्षीण हो जाता है और आयु भी क्षीण हो जाती है। और आहार के पचाने की शक्ति क्षीण हो जाती है और श्रम क्लम आदि कारणोंसे अत्यन्त दुर्बलता पैदा होती है।

लक्षण

इसमें मनुष्य की धातु अत्यन्त क्षीण हो जाती है, और बलहीन हो जाता है शरीर का वर्ण मलीन, दीन, हीन होकर शीघ्र ही व्याधि से ग्रस्त हो जाता है। यह जरा-जन्य कृशोदता के लक्षण हैं।

क्षयजन्य कृशोदता

जो पुरुष अत्यन्त चिंता, शोक, श्रम, क्रोध ईर्ष्या (डाह) उत्कण्ठा, और विषय

सदा से युक्त रहता है और दुर्बल मनुष्य अथवा रक्त अल्पता और औषध सेवन करता है और उसको भी कुलनाशी युक्त है और उदास अधिक करता है, इसका मात्रा में रहता है असात्म्य भोजन करता है उसका हृदय में पहुंचेवाला प्रधान रस धातु शीघ्र ही क्षीण हो जाता है इसके बाद उस मनुष्य की रसादि समस्त धातुएं क्षीण हो जाती हैं इसलिये समस्त धातुओं का सारभाग तेज स्वरूप शुक्र भी क्षीण हो जाता है अथवा जो मनुष्य चिन्ता के अथवा हर्ष से मैथुन से प्रवृत्त होता है। इसलिये उसका शुक्र अत्यन्त क्षीण हो जाता है इससे भयंकर व्यसन और अन्य घोर व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है अंत में इस संसार से भी प्रस्थान कर देता है।

असात्म्य कलीवता का दर्शन

किसी २ विद्वान का सिद्धांत है कि यजमग अन्य क्लीवत्व असाध्य होते हैं और दूसरे आचार्यों का सिद्धांत है कि लिंग के नष्ट हो जाने से और अण्डकोषों के फटने से जो क्लीवत्व होती है वह असाध्य है।

अन्य क्लीवताओं की असाध्यता

यदि माता पिता का रज: शुक्र दूषित होता है और पूर्वज जन्म के अशुभ कर्म होते हैं तो गर्भ में दोष कृमि [illegible] शुक्र धातुओं को शुष्क कर देते हैं उनके नष्ट होने से शुक्र भी नष्ट हो जाता है तब पुरुष राज अङ्गों से युक्त होता हुआ क्लीव होता है यह क्लीवता असाध्य होती है।

नपुंसक वर्णन

आसेक्य - स्त्री का रज शुक्र और अग्नि का इत्यादि शोणित, इन दोनों के संयोग से जो संतान पैदा होती है उसको आसेक्य कहते हैं। यह अपने मुख में अन्य पुरुष के लिङ्ग से मैथुन करता है उससे जो शुक्र मुख में गिरता है उसका पी जाता है, ऐसा करने से उसका लिङ्ग उत्थित होता है। इसका दूसरा नाम मुखयोनि भी कहते हैं।

सांसर्गि—पूर्वोक्तषण्ढ योनि में जो संतान पैदा होती है उसको सांसर्गिक कहते हैं यह अपने सांसर्गिका द्वारा योनि और लिङ्ग को सर्वथा ग्रहण करके बहुत प्रीति होती है इसलिये इसका दूसरा नाम सांसर्गि भी है।

कुम्भीक—जो व्यक्ति [illegible] स्त्री के सहवास में प्रवृत्त होता है अथवा जो व्यक्ति स्त्री के गुह्य अंग में शिथिल शिश्न द्वारा उपमैथुन में प्रवृत्त होकर के ध्वजोच्छ्वास को प्राप्त होता है उसको कुम्भीक कहते हैं कुम्भीक का दूसरा नाम गुह्य योनि भी है।

ईर्ष्यक—अन्य व्यक्ति के मैथुन को देख करके जो निज रमण में प्रवृत्त होता है उस का नाम ईर्ष्यक है इसका दूसरा नाम ईर्ष्यि भी है।

स्त्री प्रकृति षण्ढ—स्त्री के ऋतुकाल में पुरुष भार्या के तुल्य अर्थात् विपरीत

भाव से मोहवश मैथुन करता है उसके जो संतान होती है उसका आकार और चेष्टा स्त्री के समान होता है। उसको स्त्री प्रकृति का पण्ड कहते हैं। अर्थात् क्लीव नपुंसक (हिजड़ा) कहते हैं।

पुरुष प्रकृतिका क्लीव—जो स्त्री ऋतु काल में स्वामी के ऊपर चढ़ करके विपरीत विहार में प्रवृत्त होती है ऐसा करने से यदि उसके कन्या होती है तो उस कन्या की क्रिया प्रवृत्ति पुरुष के तुल्य होती है। अर्थात् वह कन्या अपने स्वभाव के अनुसार दूसरी स्त्री के ऊपर चढ़ करके उसकी योनि में अपनी योनि का घर्षण करके रमण में प्रवृत्त होती है।

भिन्न २ प्रकार

अत्येक्ष्य, संमोधिक, क्षुम्भीक, और ईर्ष्यक—ये चार जाति वाले पुरुषों से शुक्र होता है किन्तु रज के शुक्र उत्पन्न नहीं होता है। प्रकृति के नियम के प्रतिकूल भाव से पूर्वोक्त रूप में मैथुन चरण कराके हर्ष जनय उनकी शुक्र वाहिनी सम्पूर्ण शिराये स्फुटित हो जाती हैं और लिङ्ग का समुत्थान हो जाता है।

दूषित वीर्य का वर्णन

क्लीवता का मुख्य कारण वीर्य का दूषित होना ही है। इसलिये दूषित वीर्य का वर्णन करना आवश्यक है। जिस प्रकार अकाल की वर्षा से और बीजे, जन्तु अथवा अग्नि से दूषित बीज अंकुरित नहीं होता है इसी भांति मनुष्य का दूषित वीर्य गर्भाधान के योग्य नहीं होता है।

वीर्य दूषित होने के कारण

अत्यन्त मैथुन, शारीरिक परिश्रम, प्रकृति के प्रतिकूल द्रव्यों का सेवन कुसमय में मैथुन अथवा अयोनि में मैथुन, अकरण योनि में मैथुन रक्त, लिक्, विसाय रसवाही द्रव्यों का अत्यत सेवन, लवण अम्ल रसवाली भी द्रव्यों का अधिक मात्रा में सेवन उष्ण वीर्य से युक्त अत्यन्त मधुर स्निग्ध और पुष्टिकारी द्रव्यों का सेवन करने से दूषित होता है और दुष्ट-दग्धाशित, शाक, आधरशास, क्षार, अग्नि इनका अयोग्य प्रयोग भय क्रोध विपरीत गंधों का जाप, व्याधिसे कर्षित शरीर, मलमूत्रादि चतुर्दश द्रव्यों का अवरोध धातुओं की क्षीणता और रस रक्तादि धातुओं के दूषित होने से सम्पूर्ण दोष मिलकर अथवा अलग २ दूषित होकर के वीर्यवाही शिराओं में पहुँच करके शीघ्र ही शुक्र को दूषित कर देते हैं।

दूषित शुक्र के भेद

दूषित वीर्य आठ प्रकार का होता है। जैसे—अरुण, पताका, रूक्ष विवर्ण दुर्गंधि पिच्छिल, फेनिल, क्षय धातुओं से मिश्रि

राकेश



काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्थायुर्वेद विभागीय प्रधानप्रमाणपत्र प्राप्तकर्ता, निखिलभारतवर्षीय आयुर्वेदसम्मेलनतः प्रधानप्रमाणपत्र प्राप्तकर्ता, विविध भारतीय संस्थातः सपदक प्रधानप्रमाणपत्र प्राप्तकर्ता, शल्यतंत्र, संक्रामकरोग-विज्ञान, उपदंशविज्ञान, प्रभृति ग्रन्थ प्रणेता प्रोफेसर डा० बालकराम शुक्ल शास्त्री, शास्त्राचार्य (H. M. B.) आयुर्वेदाचार्य M. D. H.

श्री १०८ बाबा काली कमली वाले हृषीकेश, श्री रामनाथ जी बाबा आयुर्वेदिक कालिज।

वी. एन. प्रेस इटावा में छपा।

और अवसादी, इस भांति आठ प्रकार दूषित वीर्य है।

वात दूषित शुक्र का लक्षण

वात के कारण झागदार, शुष्क, पिच्छिल, पतला, और कठिनता से बाहर निकलनेवाला शुक्र होता है, वात से दूषित शुक्र गर्भ के योग्य नहीं होता है।

पित्त दूषित शुक्र का लक्षण

पित्त से दूषित शुक्र कुछ नीला, पीला, अत्यन्त उष्ण और दुर्गन्धि से युक्त होता है। और बाहर निकलते समय बहुत जलन पैदा करता है।

[illegible]

अत्यन्त स्त्री के साथ संभोग करने से अथवा अभिघात से, अथवा क्षीण हो जाने से जो शुक्र निकलता है उसमें रुधिर मिला रहता है।

अवसादी शुक्र के लक्षण

मल मूत्रादि के उपस्थित वेगों को रोकने से वायु कुपित होकर के शुक्र को मार्ग में रोक देता है। इसलिये बड़ी कठिनता से गांठदार होकर के निकलता है। इसको अवसादी शुक्र कहते हैं।

शुद्ध शुक्र का लक्षण

चिकना, गाढा, पिच्छिल, मधुर, अविदाही और स्फटिक (बिल्लौरी पत्थर) के समान श्वेत शुक्र शुद्ध होता है।

श्लोकम्

स्निग्धं घनं पिच्छिलं च मधुराव्याविदाहिच
श्वेतं शुद्धं विजानीयाऽच्छस्फटिक सन्निभम्

ध्वजभंग चिकित्सा

मानसिक विकार जनित पीड़ा में रोगी को आश्वासन देना चाहिये और रोगी से कहना चाहिये कि तुम्हारा रोग बहुत सहज है और अल्प काल के अन्दर ही ठीक हो जायगा इसलिये रोगीको केवल पौष्टिक औषध और पथ्य देना चाहिये और शीतल जल से स्नान कराना चाहिये और कुछ काल तक स्त्री के साथ सहवास करने के लिये बंद कर देना चाहिये ऐसा करने से शीघ्र ही रोग से छुटकारा पा सकता है जननेन्द्रिय के अत्यधिक संचालन से रक्ति शक्ति की हीनता में भी ऐसी ही अवस्था उपयोगी है।

सर्वांङ्गीण चिकित्सा

यदि यान्त्रिक विकार होवे और अन्यान्य प्रकार आवश्यक न होवे तो सर्वांङ्गीण चिकित्सा के द्वारा रोग का प्रतिकार करने

की इच्छा, कुपथ्य खाद्य पेय किसी प्रकार की औषध को सेवन करने से रोग की उत्पत्ति होती अथवा अत्यधिक स्त्री के सहवास से इंद्रिय जन्य शैथिल्य उत्पन्न हो गया होवे तो उसको बंद कर देना चाहिये। वाजीकरण और रसायन औषधों के सेवन करने से समय २ पर सुख मिलता है किंतु इन औषधों के सेवन करने से जो अनेन्द्रिय में अधिक उत्तेजना होती है, इसके बाद अधिक शिथिलता आ जाती है एक पाश्चात्य चिकित्सक का मत है इस रोग में कामोद्दीपक औषध का अनेक स्थल में सफल नहीं देखा जाता है उनके मतसे स्त्रीसंग अथवा औषध से कोई विशेष उपकार नहीं होता है।

दूसरे पाश्चात्य चिकित्सक का मत है कि कामोद्दीपक औषध सेवन करके जो रति सम्भोग किया जाता है उसमें जो शक्ति उत्पन्न होती है उसकी पूर्ति किसी काल में होती है अजीर्ण जन्य डायबिटीज (मधु मेह) अथवा मस्तिष्क और मज्जा संघात पीड़ा में उक्त औषध का प्रयोग करने पर कुछ भी उपकार नहीं होता है। अतएव विशेष विवेचना पूर्वक कामोद्दीपक औषधों का प्रयोग न कर सर्वतोभद्र उपकार की अपेक्षा अपकार ही अधिक होने की सम्भावना है। मस्तिष्क और मेरुरज्जु की मज्जा के दौर्बल्य होनेपर उत्तेजक और बलवर्द्धक बल कारक औषधि का प्रयोग करना चाहिये। ये रोग पीड़ित के एक स्थान से दूसरे स्थान में शीघ्र वायु परिवर्तन करने के लिये जाना चाहिये और तत्रत्यनीय खाद्य द्रव्य सेवन करावे और प्रसंग सहवास विषयक कुचिन्ता उत्पन्न नाटक आदि नहीं पढ़ने देना चाहिये विशेष करके पीड़ितावस्था में और औषध के सेवन काल में स्त्री सहवास का बिलकुल निषेध कर देना चाहिये।

तड़ित प्रयोग

अनेक अभिज्ञ चिकित्सक तड़ित प्रयोग से स्थानिक दौर्बल्यता के कारण क्षयजन्य को उपशमन करने को उल्लेख करते हैं। मस्तिष्क और मेरुरज्जु की मज्जा में पीड़ा [illegible] प्रयोग करना चाहिये। [illegible] पीड़ा का [illegible] (मधु मेह) [illegible] मज्जा [illegible] रोग [illegible] तड़ित प्रयोग करने का उपदेश होने की सम्भावना है। और सुषुम्नार्ति (स्पाइनेलजिया) वा ओसीलेशन आफ लाइम के सम्बन्ध होकर जो क्षयजन्य उत्पन्न हो, उसमें वाजीकरण औषध वा तड़ित प्रयोग से उपकार होने की कम आशा है।

बन्ध्यता चिकित्सा

रोगोत्पादक कारणों के ऊपर इसकी चिकित्सा का निर्भर है। यदि अण्ड नष्ट हो जाने से वा वीर्यशिय के लुप्त हो जाने से बंध्यता उपस्थित हो जाती [illegible] ऐसी अवस्था में आरोग्य होना असम्भव है। यदि मूत्र नाली के अवरोध से वीर्य निकलना बंद हो जाता है तो अवरोध के दूर [illegible]

[illegible] तड़ित [illegible] ([illegible] आफ वाटर) द्रव (प्रतिदिन [illegible]) मालिश करके मूत्रनाली के मध्य में प्रवेश करे और प्रलाशय में पौरुष ग्रन्थि के अभिमुख में उष्ण वस्ति का प्रयोग करे और बल कारक [illegible] का प्रयोग करे और प्रदाह पुराना होनेपर मूत्रनाली के पौरुष ग्रंथीय अंश में फेरेडिकतड़ित का प्रयोग करे।

यदि लिङ्ग मुण्ड की चेतनता के लोप हो जाने से वीर्यपात नहीं होता है तो इस अवस्था में तड़ित का प्रयोग करना चाहिये अथवा लिङ्ग मुण्ड के ऊपर क्षालोत्पादक (क्लिप्टर) का प्रयोग करे और मानसिक कारणों से उत्पन्न हुए वीर्य पातके अवरोध में रोगी के मन में दृढ़ विश्वास उत्पन्न कर देना ही एक चिकित्सा है।

और मदिरा के प्रयोग से भी क्योंकि उत्तेजना के पैदा हो जानेपर कभी कभी स्थायी उपकार होता है।

यदि अण्डकोष के मध्य में अण्ड के अदलबदल न करने से प्रक्षिप्त बीर्य में शुक्र कीट के अभाव होने से बंध्यता उत्पन्न होती है तो रोगी को शैशवावस्था में भौतिक उपायों से अथवा अन्य चिकित्सा द्वारा अण्ड यथा स्थानपर स्थापित करना आवश्यक है।

और उपदंश होनेके बीर्य में शुक्र के कीटाणुओं का अभाव होनेपर पारद युक्त औषध का प्रयोग करना चाहिये। और मैथुन वा अधिक मैथुन करने से बंध्यता के उत्पन्न होनेपर बलकारक औषध का प्रयोग करना चाहिये और दोनों सरफा उपदंशी प्रदाह से नली का लोप हो जाता है इस कारण से इस रोग की तत्क्षणावस्था के कुछ काल के बाद ही उत्तेजक, शोधक और पारद के मलहम का प्रयोग करे इससे लाभ देखा जाता है।

और ट्यूबर्कलर (क्षय) प्रभृति रोग से उत्पन्न हुई बंध्यता में कुछ भी लाभ नहीं करता है।

प्राध्यमतानुकूल चिकित्सा का वर्णन

पहिले शुक्र दोष को दूर करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये। और क्षत की के लिये जो चिकित्सा लाभ दायक वह चिकित्सा क्लीवता को दूर करती है

रोगी का शरीर दोष, अग्नि, बल औषध और काल का विचार करके बस्ति घृत की दृश्ययोग रसायन योग प्रयोग करने चाहिये और व्यायाम हेतु से उत्पन्न हुआ और अभिघातजन्य कृशता को दैव व्यपाश्रय सम्बन्धी औषधों से दूर करना चाहिये।

व्यङ्गभंग में चिकित्सा

इसमें प्रदेह परिषेक, रक्तमोक्षण स्नेह, मुख विरेचन हितकारी है इसके बाद अनुवासन बस्ति और आस्थापन बस्ति का प्रयोग करके अन्य के तुल्य चिकित्सा

नीलोपवाह की चिकित्सा

कृशीय रोगी को पहिले स्निग्ध करके स्वेद देना चाहिये। इसके बाद स्नेह युक्त विरेचन देना चाहिये इसके बाद अनुवासन बस्ति देवे इसके बाद पलाश, परण्ड नागर गोखरू इनका क्वाथ बना करके निरूह बस्ति देवे फिर वाजीकरण प्रयोगोंका सेवन करे इससे लाभ होता है।

अस्थिजन्य स्नायुजन्य कृशीयता की चिकित्सा

अस्थिजन्य और स्नायुजन्य कृशीयता में स्नेह स्वेद का प्रयोग करके स्नेह युक्त विरेचन देवे दूध, घी, दृश्ययोग दीपनीय और रसायन प्रयोगों का सेवन करे। इनका वर्णन आगे किया जाता है।

दूषित शुक्र की चिकित्सा

दूषित शुक्र तीनों दोषों से दूषित होवे तो पहले स्नेह स्वेद आदि क्रिया करके विरेचन निरूह अनुवासन बस्ति का प्रयोग करने के बाद शिर द्वारा में उत्तर बस्तिका प्रयोग करे और वायु से दूषित शुक्र में निरूह और अनुवासन बस्ति देवे और पित्तान्वित शुक्र में दाक्ष रसायन और आमलकीय रसायन का प्रयोग करे।

[illegible]

पिप्पली [illegible]

[illegible]

[illegible] हरीतकी,

[illegible] पीपल का क्वाथ करके [illegible] के अनुकूल वैद्य चिकित्सा करे और शीतल घृत और शीतल जल का प्रयोग करावे; सम्पूर्ण दोषों को दूर करना है। साधारणतया शुक्र दोष में घी दूध मांसरस शाली चावल गेहूं जव साठी चावल हितकारी है और बस्ति कर्म विशेष करके उपयोगी है।

कुत्सितगन्ध शुक्र की चिकित्सा

धाई के फूल अहिरा अनार की छाल अर्जुन वृक्ष की छाल इन द्रव्यों के कल्क और क्वाथ से घृत पाक विधि से घृत सिद्ध करके देवे इससे लाभ होता है।

ग्रंथि युक्त शुक्र की चिकित्सा-कचूर का कल्क और क्वाथ लेकर घी पका करके देवे।

दुर्गन्धित शुक्र की चिकित्सा पलाश

(कालसा) आदि और वटादि गण की औषधों से भी पकाकर के देवे।

वीर्य शुक्र में—शुक्र वर्धक अश्व-गन्धादि घृत आदि देवे। यदि शुक्र में बिना मूत्र के समान दुर्गन्धि आती हो वे तो शिलाजीत (अजा) दूध इन द्रव्यों में घृत सिद्ध करके देवे। इससे बहुत शीघ्र लाभ होता है।

अभ्रक चिकित्सा प्रणाली

बंशलोचन १ तो०, कुसगंध १ तो० कमाला की जड़ १ तो० सतावर १ तो० शीतलची १ तो०, कांकला चूर्ण १ तो० दालचीनी का चूर्ण १ तो० तेजपत्र चूर्ण १ तो०, अंगरी के बीज १ तो० इन सब औषधियों का चूर्ण कर लेवे और इन सब औषधियों का चूर्ण १ तो० मिश्री मिला कर प्रातःकाल और रात्रि में सोने के पहले खा लेवे ऊपर से उष्ण गौ का दूध पाव पीवे। इससे सब शुक्र दोष नष्ट हो जाते हैं।

शिलाजीतु वटी

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, एक २ तोला ले करके इन्द्री बराबरी बनावे फिर कमल के पत्तों के रस में और कुटज के क्वाथ में दो दिन तक घोटना चाहिये, मिश्री ४ तो० बंश लोचन १ तो, पीपल १ तो०, आंवला १ तो०, काकड़ासिंगी १ तो० छोटी इलायची के फूल १ तो०, दालचीनी १ तो० तेजपत्र १ तो०, इलायची १ तो० मधु १ तो० इन सब औषधियों को एक में मिलावे और मर्दन करके गोली ४ रत्ती की बनावे। अनुपान, आंवला का स्वरस १ तो०, इन्द्री का चूर्ण ३ रत्ती मधु १ मासा इनमें गोली को पीसकर मिला लेवे और प्रातःकाल सायंकाल सेवन करे, दूध घी आदि पौष्टिक पदार्थ सेवन करे तेल, मिर्च खटाई इनसे सदा बचा रहे।

कर्पूरादि तिल्ल

सफेद चंदन (कपूर) की छाल १ तो० [illegible] १ तो०, गाजवांगी १ [illegible] अरबकरा १ तो०, [illegible], सफेद मुर्रा १ तो० [illegible], बीरबहोटी १ तो०, मुर्रा के अंडे के रस १ तो०, कुचला १ तो०, सोंठ १ तो० गन्धक १ तो०, जंगली सूअर की चर्बी १ तो०, शेर की चर्बी १ तो०, जमालगोटा १ तो०, सांड़ की चर्बी १ तो०, मनसिल १ तो०, इनमें जो काष्ठ औषधियां हैं उनको लेकर कुछ लेवे। फिर सब औषधियों को एक में मिला करके पाताल यंत्र से तेल निकाल लेवे।

उपयोग विधि—इन्द्री की सीवन और मणि को छोड़ करके शेष स्थान में धीरे २ अंगुलियों से लगावे मलने का समय १-२० मिनट तक है। इसके पश्चात् पान के पत्ते में चमेली का तेल लगाकर के अग्नि पर सेंक करके खावे इस भांति कमसे कम इक्कीस दिन तक व्यवहार करे।

रंग मिला हुआ कुछ लाल रंग का स्राव निकलता है लिङ्ग में टेढ़ापन आ जाता है कठिनता और जकड़ाहट भी आ जाती है और ज्वर तृष्णा भ्रम मूर्छा, वृद्धि से उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं और पीला, काला काला मैला स्राव निकलता है और अन्तियें जल जाने के समान भयङ्कर दाह शूल लगत है और वेदना भी होती है ये वेदना मूत्राशय, अण्डकोष लीवन वृक्क तक फैल जाती है कभी २ बिल्कुल पाण्डु वर्ण का स्राव होता है ज्वर और धीरे २ फलनेवाली सूजन हो जाती है स्राव भी अल्प इस अवस्था में होता है और कभी २ चिरकाल में और कभी २ शीघ्र ही पाक आरम्भ हो जाता है, फफोले पड़ जाते हैं, सड़ी हुई दुर्गन्धि आने लगता है और अन्त अवस्था में लिङ्ग की मज्जा शिरा, अण्डकोष तक नष्ट हो जाते हैं ये वृजभग के लक्षण हैं।

वीजोपघात जन्य क्षीणता के कारण

शीतल, रुक्ष, मात्रा में अल्प, दूषित विरुद्ध वीर्य वाले, अजीर्णकारी पदार्थों के खाने से, और शोक, चिन्ता भय, त्रास, स्त्रियों के साथ अत्यन्त मैथुन करने से अभिचार, अविश्वास और रस आदि धातुओं के क्षीण हो जाने से, रक्त आदि धातुओं के क्षीण हो जाने से और सातों धातुओं का सारभूत ओज के क्षीण हो जाने से और उपवास परिश्रम आदि करने से रूक्ष स्त्री के साथ सहवास से और पञ्च कर्म में वमन, विरेचन, निरूहवस्ति अनुवासनवस्ति निरोविरेचन) विरुद्ध आहार विहार करने से वीजोपघात जन्य क्षीणता पैदा हो जाती है।

लक्षण

इसमें शरीर पीला पड़ जाता है, और अत्यन्त दुर्बल हो जाता है, और शक्तिहीन हो जाता है स्त्री में गमन करने की इच्छा नहीं होती है। इसके बाद, हृदयरोग पाण्डु रोग, श्वास, (दमक श्वास) कामला और क्षय से पीड़ित हो जाता है। और खांसी ज्वर, वमन, अतिसार, मूत्र से भी पीड़ित हो जाता है।

ओज जन्य क्षीणता

अधिकतर वृद्धावस्था में मनुष्यों का मुख प्रायः क्षीण हो जाता है। इसका कारण यह है कि रस धातु क्षीण होने लगते हैं और पुष्टिकारक द्रव्य सेवन करने से बल, वर्ण और इन्द्रियों का पराक्रम क्रमशः क्षीण हो जाता है और आयु भी क्षीण हो जाती है। और आहार के पचाने की शक्ति क्षीण हो जाती है और श्रम क्लम आदि कारणोंसे अत्यन्त दुर्बलता पैदा होती है।

लक्षण

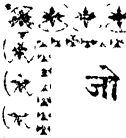
इसमें मनुष्य की धातु अत्यन्त क्षीण हो जाती है, और बलहीन हो जाता है शरीर का वर्ण मलीन, क्षीण, हीन होकर शीघ्र ही व्याधि से ग्रस्त हो जाता है। यह ओज-जन्य क्षीणता के लक्षण हैं।

क्षयजन्य क्षीणता

जो पुरुष अत्यन्त चिंता, शोक, भय, क्रोध ईर्ष्या (डाह) उत्कण्ठा, और विषम

वीर्य रक्षा हमारा प्रधान कर्त्तव्य है ?

[ले०—कुंवर रघुवीरसिंह वर्मा बय बघौरा, मेहगांव]



जो कुछ हम खाते पीते हैं उसमें कुछ शेष ७ धातुयें तैयार होती हैं यथा रस, रक्त, मांस मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, इन सातों धातुओं में उत्तम (वीर्य) प्रकृति है। इसी सातों धातुओं का हमारी काया स्थित है जैसा कि शरीर के अधिष्ठान स्थानके दूसरे अध्याय में लिखा है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वीर्य ही सच्चे अर्थों में हमारी [illegible] परिणाम है। [illegible] के क्षय होने से अनेक रोग ही नहीं बल्कि मृत्यु तक हो जाती है इस बातसे मनुष्य को वीर्य रक्षा करना अत्यावश्यक है।

वीर्य हमारे शरीर रूपी नगरका राजा है—वीर्य ही सब सुखों में प्रधान आरोग्यता, का मूल कारण है। वीर्य ही हमारी जिंदगी ताकत है। वीर्य ही शरीर में रोग शत्रुओं से हमारी रक्षा करने वाला है। वीर्य ही के बल से हमें वे कुमार बातें याद रहती हैं [illegible] जब तक हमारा वीर्य पुष्ट है तब तक रोग कभी हमारे और आँख भी नहीं उठा सकते परन्तु उसी वीर्य के क्षय या निर्बल होने से ये सब मिल शत्रुओं को बढ़ने का मौका [illegible] जाते हैं। फिर हमें चारों ओर से [illegible] घेरे पड़ा नजर आता है।

[illegible] से [illegible] के विराट [illegible] आदि कौरवों को [illegible] वीर्य रक्षा [illegible] गदा धारियों में [illegible] [illegible] इनके सिवाय बूढ़े भीष्म [illegible] विजयी अर्जुन भीम के [illegible] वीर्य रक्षा के प्रताप से ही लड़ाई में [illegible] राम बन्धु लक्ष्मण ने मेघनाथ हना था [illegible] वीर्य रक्षा का प्रताप था न कि [illegible] और।

परन्तु प्राचीन काल के लोग वीर्य रक्षा को अपना प्रधान कर्म समझते थे लेकिन आजकल के लोग वीर्य को कुछ समझते नहीं समझते हैं। बल्कि हर सूरत से [illegible] नाश करना उनका प्रधान कर्म है पहिले समय के लोग संतान पैदा करने के सिवाय इन्द्रियों की प्रसन्नता के लिये स्त्री प्रसंग

करना महा हानि कारक समझते थे परन्तु अभागे कलयुग—आजकल के मूर्ख स्त्री को अपनी इच्छा देवी समझते हैं।

सोते जागते खाते पीते उसीके ध्यानमें रहते हैं। वीर्य का स्वभाव है कि वह स्त्रियों की इच्छा वा ध्यान करने से वह अपने स्थान से अलग होने लगता है।

इस कलि काल में अति स्त्री प्रसंग ही तक ही नहीं। बल्कि आजकल के ना समझ नौ जवानों ने हस्त मैथुन, गुदामैथुन आदि कितनी ही वीर्य नाशक तहबीरें निकाली हैं। इन सब दुष्ट कर्मों द्वारा काम जो मानव जाति का [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible]

नपुन्सकता।

क्लीवस्य लक्षण संख्या निदानानी तथा क्रमानुसार चिकित्सादि

[लेखक—डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा रावबैद्य जलालाबाद]

क्लीबः स्यान्सुरता शक्तस्तद्भावः क्लैब्यमुच्यते

जो पुरुष मैथुन करने में असमर्थ हो उसको क्लीव कहते हैं। और उस क्लीव के धर्म को क्लैब्य कहते हैं। क्लीवता साधारणतया सात प्रकार की शास्त्रोंने कही है।

तैस्तैर्भावैरुपद्यैस्तु शिरसोमर्मसिक्षते।
ध्वजःक्लम्यतयोन्नूणां क्लैब्यस्तमुपजायते॥
द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैब्यंतन्मानसंस्मृतम्

मैथुन करने वाले पुरुष का मन भय, शोक तथा क्रोधादि दुख दायक विकारों से अस्वस्थ होकर अथवा जिसपर अरुचि होय ऐसी स्त्री के साथ प्रसंग होनेसे शिश्न झुक जाता है अर्थात गिर जाता है इसको मानसिक क्लैब्य कहते हैं।

कटुकाम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितैः।
पित्तच्छुक्रक्षयो दृष्टः क्लैब्यंतस्मात्प्रजायते

तीखे खट्टे, गरम और खारी पदार्थों को अत्यन्त सेवन करने से वृद्धि को प्राप्त हुए पित्त के कारण वीर्य का क्षय होने से जो क्लीवता होती है उसको पित्त जन्य कहते हैं।

अतिव्यवायशीलो यो न चवाजीक्रियारतः
ध्वजभङ्गमवाप्नोति स शुक्रक्षय हेतुकः॥

जो मनुष्य अत्यन्त मैथुन करता हो परन्तु वाजीकरण पदार्थों का सेवन न करता हो तो उसको क्लीवता हो जाती है इसको वीर्यक्षय जन्य क्लीवता कहते हैं।

महता मेढरोगेण चतुर्थी क्लीवता भवेत्।

शिश्न में किसी प्रकार के भयंकर रोग के होने से जो क्लीवता होती है उस को रोगजन्य क्लीवता कहते हैं।

वीर्यवाहि शिराच्छेदान्मेहतातुन्नतिर्भवेत्।

वीर्यवाहिनी नसों के छेदन होने से जो क्लीवता होती है उसको शिरोच्छेद जन्य क्लीवता कहते हैं।

बलिनक्षुब्धमनसोनिरोधाद्ब्रह्म चर्यतः।
षष्ठं क्लैब्यं भवेत्तेन शुक्रस्तम्भनिमित्तकम्

शरीर के पुष्ट होनेपर जिसका मन कामदेव से क्षोभित होकर वह पुरुष ब्रह्मचर्य को धारण करे और उसको वीर्य के रुकने से जो क्लीवता होती है उसको शुक्र स्तम्भ जन्य क्लीवता कहते हैं।

जन्म प्रभृति यत्क्लैब्यं सहजं तद्धि सप्तमम्

जो जन्म से ही क्लीव हो वह सहज क्लीव कहा जाता है।

इनमें पृथक और भी कई कारण क्लीवता के हैं जो कि आजकल अधिक प्रचलित हो रहे हैं और अक्सर इन्हीं कारणों से क्लीवता से ग्रस्त हुए रोगी अधिक देखने में आ रहे हैं जैसे अस्त मैथुन, गुदा मैथुन, उपदंश अथवा औपसर्गिक मेह का होना, वृद्ध अवस्था की क्षीण शक्ति होना, शरीर में रक्त की न्यूनता के साथ उत्पन्न होना, मद्यपान, मादक द्रव्यों का अधिक सेवन जैसे भंग, तम्बाकू, चरस, शराब आदि।

लक्षण—वाजीकरण शक्ति क्षीण हो जाती है, शिश्न में लम्बापन नहीं रहता, मैथुन करने को चित्त नहीं चाहता इच्छा मैथुन के प्रकट होते ही वीर्य का शीघ्र ही स्खलित हो जाना स्तम्भन शक्ति का लोप हो जाना आदि।

उपरोक्त सात प्रकार के क्लीवों में प्रायशः सहज क्लीव तथा शिरः क्षतज क्लीव असाध्य होते हैं।

चिकित्सा—क्लैब्यानामिह साध्यानां कार्श्यहेतु विपर्ययः। मुख्यं चिकित्सितं यस्माच्छिश्नस्य परिवर्जनम्॥

क्लीवता को दूर करने के वास्ते प्रथम जिन कारणों से वह उत्पन्न हुआ हो उन कारणों को दूर करें क्योंकि उन कारणों का त्याग करना ही मुख्य चिकित्सा है।

यदि कोई अन्य रोग उसका कारण हो तो प्रथम उस रोग की चिकित्सा करे। रोग रहित पुरुष को वमन विरेचनादि से अच्छे प्रकार से शुद्ध करके बाजी करणादि वस्तुओं का सेवन करावे। जिसको अपने जीवन की इच्छा होय वह पुरुष सोलह वर्ष की अवस्था से प्रथम और सत्तर वर्ष की अवस्था के पश्चात् स्त्री प्रसंग न करे। अवश्य प्रकार से स्त्री सेवन न करे क्योंकि अवश्य प्रकार से मैथुन करने से क्लीवता के अतिरिक्त क्षय, उपदंशादि रोग हो जाते हैं और अकाल मृत्यु भी होती है।

स्त्री प्रसंग करने की विधि तथा वाजिकरण औषधियों में कहे हुए नियमों का ध्यान रखने विस्तार भय से यहां नहीं दिया गया भाव प्रकाश आदि ग्रन्थों में भली प्रकार समझाया है देख लें।

अब मैं इस की रक्षा में कुछ परीक्षित प्रयोग अंकित करता हूं जो कि हमारे स्वयं के चिकित्सालय पर परीक्षा किये हुए हैं आप भी बनाकर लाभ उठावें।

(१) सिलूला फास्फोर	१०० ग्रेन
केफीरेडिस	५०० ग्रेन
एक्सट्रेक्ट नक्स वोमिका	१२ ग्रेन
एक्सट्रेक्ट डुमियाना	१०० ग्रेन
एक्सट्रेक्ट कोका	१०० ग्रेन

सब को अरक करके १०० गोली बनावे दो गोली बाजी बारे के खाकर दूध २ गोली दें।

(२) एक्सट्रेक्ट डुमियाना लिक्विड	३० बूंद
सिरपलेसरोफास्फेट कम्पोंड	३० बूंद
सिरपहाइपोफास्फेट कम्पोंड	३० बूंद
एकवा क्लोरो फार्मी	१ औंस

ऐसी एक २ मात्रा खाना खाने के बाद दें।

(३) एसिड आरसेनिक	६ ग्रेन
स्ट्रेकनीन सल्फ	१ ग्रेन
जिंक फास्फाइड	२ ग्रेन
एक्स्ट्रेक्ट कनाबिसइन्डिका	४ ग्रेन
फेरिसल्फ	४ ग्रेन
कोनेनसल्फ	४० ग्रेन

एक्स्ट्रेक्ट जेन्शन आवश्यकतानुसार (गोली बनाने योग्य) खरल करके ४० गोली बना ले एक २ गोली दिन में दो बार भोजन पश्चात दे।

(४) नकछिकनी ३ रत्ती, कायफल ६ रत्ती, लौंग ४ रत्ती, केशर कश्मीरी १ रत्ती, शुद्ध सिंगरफ ४ रत्ती, कस्तूरी १ माशा, माजूफल ५ रत्ती, अहिफेन शुद्ध ४ रत्ती, सोने के वरक ७ रत्ती, चांदी के वरक ७ रत्ती, (पान के अर्क में खरल किये हुए) कस्तूरी असली शुद्ध १ माशा, रेशमाबी १ माशा इन सब को छूट कपड़ छान करके चूर्ण बना लें।

मात्रा १ माशे प्रातः और १ माशा सायंकाल मिश्री युक्त उष्ण गऊ के दुग्ध के साथ सेवन करावें।

(५) कर्कीबान्तक हरि घृत—श्वेतगुञ्जा ५ तोले, सफेद कनेर की जड़ की छाल ५ तोला मालकंगनी ५ तोला, अकरकरहा ५ तोले, इलायची छोटी के बीज ५ तोला, सब औषधियों को जब कूट करके दो सेर जल में भिगो दे दूसरे दिन औटावे जब १ सेर जल रह जावे तब १० सेर दूध गटीला डालकर फिर औटावे जब ६ सेर रह जाय तब उतार छान कर थोड़ा दही मिला कर जमा दें। (मिट्टी के पात्र में) और दूसरे दिन मथ- कर अर्थात् बिलोकर लोनी घी निकाल लें फिर इसमें से घृत की गर्मी द्वारा घी अलग कर लें।

सेवन विधि—१॥ माशे प्रातः और १॥ माशे सायंकाल एक २ तोला मिश्री मिला कर खिलावें और ऊपर से मिश्री युक्त औटा हुआ गऊ का दूध पिलावें।

(६) कस्तूरी ६ माशे, मोती १ तोला, केशर काश्मीरी २ तोले, जायफल २ तोले, छोटी इलायची के बीज २ तोले, अकरकरहा २ तोले, अकोल गिरी २ तोले, जावित्री १॥ तोला, कुचला शुद्ध ६ माशे, स्वर्ण भस्म २ रत्ती, रौप्य भस्म ६ रत्ती, कपूर ६ माशे,

काष्ठादि औषधियों को कूट कपड़ छान कर लें मोती को गुलाब जल में खरल करे शेष सब को इकट्ठा में मिला खरल करके मटर प्रमाण गोली बना लें। एक २ गोली प्रातः और सायंकाल औटे और मिश्री मिले गऊ के दूध के साथ सेवन करें।

गुण—बल वर्द्धक, वाजीकरण, हृद्य, स्वप्नदोष, नपुंसकता नाशक है। शीत ऋतु में विशेष लाभ प्रद है।

(७) कामोत्पादक वटी—जायफल १ तोला, अकरकरहा, १ तोला, कंवला गट्टा १ तो, कंकोल मिर्च १ तो, [illegible] के बीज १ तो०, जावित्री १ तो०, केशर

कश्मीरी तो० अहिफेन शुद्ध १ तो०, सोंठ ६ माशे, तज ६ माशे, भांग धुली हुई ३ माशे, अभ्रक भस्म ३ माशे, सिंगरफ शुद्ध ३ माशे, कपूर ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ३ माशे, शुद्ध कस्तूरी २ माशे, शुद्ध कुचला सत्व २ रत्ती, (स्ट्रेकनीन)

प्रथम अफीम और सिंगरफ को वट वृक्ष के दूध में घोटकर छुहारों की गुठली निकाल उसमें भर दें और ऊपर डोरा लपेट दें पश्चात पावभर वट दुग्ध में औटावें जब दूध गाढ़ा हो जावे तब उतार कर सुखा लें। फिर ५ तोला पोस्तके डोढ़े को पाव सेर पानी में पकावें जब छटांक भर बाकी रहे उतार छानकर उपरोक्त छुहारों का चूर्ण तथा काष्ठादि औषधियों का कपड़ छान किया हुआ चूर्ण और भस्म कस्तूरी आदि मिलाकर खूब खरल करके काली मिर्च प्रमाण गोली बना लें और एक गोली प्रातः तथा १ गोली रात्री समय औटे और मिश्री युक्त गऊ के दूध के साथ सेवन करें।

गुण–हस्त मैथुन, गुदा मैथुन, से हुई नपुंसकता, प्रमेह, निर्बलता इसके सेवन से अवश्य नष्ट हो जाती है।

(८) जौहर संखिया शुद्ध हरताल बर्की, शुद्ध गंधक, शुद्ध सिंगरफ, प्रत्येक एक २ तोला लेकर १०० कागजी नीबुओं के अर्क में खरल करके मूंग प्रमाण गोली बना लें। एक २ गोली प्रातः सायं मिश्री युक्त दूध के साथ सेवन करें।

(९) माजून नक छिकनी–एक सेर नक छिकनी को ५ सेर दूध में पकावे जब खोया हो जावे तो १ सेर गाय के घी में भून लें फिर १ सेर मिश्री और १ सेर उत्तम मधु के साथ किवाम करके माजून बनावें और लौंग, दारचीनी, कुलंजन, कबाबचीनी प्रत्येक तीन २ माशे, कस्तूरी शुद्ध १ माशे कूट कपड़ छान करके मिला दें।

मात्रा १ तोला प्रातः और १ तोला रात्री समय औटाये हुए मिश्री युक्त दुग्ध के साथ सेवन करावें।

गुण–पौष्टिक, वीर्य वर्द्धक, नपुंसकता नाशक, स्तम्भक, कामशक्ति बढ़ानेवाली है।

(१०) शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला पीसकर कज्जली करें और शुद्ध कृष्ण धतूरे के बीजों का चूर्ण २ तोला धतूरे का तेल आवश्यकतानुसार मिला दो २ रत्ती की गोली बनावे उपरोक्त प्रकार से प्रातः साथ सेवन कर वें।

(११) शर्मा टोनिक पिल्स (हमारी पेटेन्ट औषधि है) इसका प्रयोग हम पहिले ही किसी अङ्क में आपकी सेवा में भेंटकर चुके हैं यह अत्यन्त वाजीकरण क्लीवता पर शर्तिया औषधि तथा स्वप्न दोष प्रमेह आदि नाशक है और अत्यन्त पुष्टि कारक है।

(१२) इन प्रयोगोंके अतिरिक्त शास्त्रोक्त प्रयोग च्यवन प्राश अवलेह मदन मंजरी बटी, रति वल्लभ पूग पाक, वाजीश्वर

पर हमारी परीक्षा में आई है कहीं २ उत्तम फल दिखाया है।

यदि शिश्न की शिरायें बहुत ही कमजोर हो गई हों और उनमें पानी आ गया हो अथवा शिश्न झुक कर टेढ़ा हो गया हो तो फिर निम्न प्रयोगों में किसी की मालिश सिकाई, बंदिश आदि साथ २ अवश्य करावें। क्योंकि साथ २ इस क्रिया द्वारा अति शीघ्र लाभ होता है।

(१) अकरकरहा, मिरच दखिनी कूट कडवा, माल कंगनी, काले धतूरे के बीज, सफेद कनेर की जड़ की छाल, नक-छिकनी, सफेद चौंटली, लौंग, जावित्री कुचला, बछ नाग, बीर बहोटी, हींग अ-असली प्रत्येक औषधि सम भाग लेकर कूटकर शेर की चरबी में मसलकर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकाल लें फिर इस तेलमें ८ भाग जुन्दबेदस्तर खरल करलें और रात्री समय सोवन, सुपारी का भाग छोड़ कर के रखकर बांध दिया करें।

(२) संखिया सफेद, संखिया काला प्रत्येक दो दो तोला, चौंटली सफेद १ तोला काले धतूरे के बीज १ तोला, सूखा केंचुआ बीर बहोटी, जायफल प्रत्येक दो २ तोले, अकरकरहा १ तोला, हींग १॥ तोला, सफेद कनेर की जड़ की छाल, माल कंगनी प्रत्येक एक २ तोला, अफीम ६ माशे जावित्री ६ माशे सब बारीक कूट छानकर असली खालिस सांड़े के तेल में मिलाकर गोलियां बना ले फिर इन गोलियोंको किसी आतशी शीशी में भर कर तेल निकाल ले

रात्री समय उपरोक्त प्रकारसे मल कर पान बांध दिया करें।

नोट—हमने बहुत से तिले बनाये और परीक्षा में लिये परन्तु उपरोक्त दोनों तिले अत्यन्त ही प्रभावशाली पाये गये।

(३) शीघ्र पानी निकालनेवाला तिला जमाल गोटे की गरी, अरंड की गरी कुचले का बुरादा, प्रत्येक एक २ तोले लेकर आधी बोतल ब्रांडी असली में मिलाकर खूब खरल करें और फिर इसमें थोड़ा आवश्यकतानुसार लेकर (सोवन, सुपारी छोड़ कर) मल दें तथा ऊपर से गरम किया हुआ बंगला पान बांधकर थोड़ी उघर पिसी हुई साफ रुई रख कर डोरे से बांध दें। जब आबले पड़ जावे तो उनको चीर कर पानी निकाल दें और मक्खन लगा दें दो या तीन सप्ताह पश्चात फिर एक बार उपरोक्त क्रिया करें। इसके पश्चात जब सब पानी साफ हो जावे और आंवले भी ठीक हो जावें तो निम्न लिखित लेप कमसे कम ४० दिन तक अवश्य करा दें।

स्याह लेप—एक पका हुआ पीला बैंगन लेकर उसमें ५६ अदद पीपल बड़ी चीर कर भर दें और ऊपर से खूब कसकर डोरा बांध दे तथा इसको छाया में सुखा कर कपड़ छान चूर्ण कर लें। फिर एक कढ़ाई में आध सेर तिलों का तेल चढ़ा कर उपरोक्त बैंगनका चूर्ण दस तोले केंचुआ सूखा, तीन तोले शोंक, तीन तोले बीर

बहेड़ा व. लोले पोथिया लहसन, डालकर अग्नि पर पकावें थोड़ी देर पकाने के पश्चात नीचे उतार कर किसी लोहे के लोटे से उसी कड़ाही में खूब खरल करें। जब खूब खरल हो जावे तो फिर किसी चौड़े मुख वाली शीशी में भर कर रख लें और रात्री समय ४० दिन तक शिश्न पर रोजाना मलवा दिया करें शिश्न पर ठण्डा पानी कदापि न लगे यह ध्यान रहे।

नोट—यह प्रयोग हमको एक यूनानी वृद्ध हकीम से प्राप्त हुआ था जो कि रोगी होकर चिकित्सार्थ हमारे चिकित्सालयमें आये चूंकि उनके एक ओपरेशन हुआ था इसलिये उनको कुछ दिन यहां ठहरना पड़ा तब उन्होंने यह औषधि हमारे कार्यालय में अपने सामने तैयार कराई थी वह इस प्रयोग को फलीभूत पर अपना खास प्रयोग बतलाते थे। हमने भी परीक्षा कराया उत्तम पाया और उपरोक्त सब तिलाओं से सस्ता तथा सुगम है। परन्तु कुछ कष्ट कारक अवश्य है। लाभ अवश्य करता है गरीबों के लिये अच्छा है। यदि हमारे उपरोक्त नं० १, २ वाले तिलाओंके मलने से प्रथम निम्न लिखित पोटलियोंसे शिश्न की टकोर कर दी जावे तो और भी उत्तम है और बहुत ही जल्दी लाभ होता है।

पोटली—असना हलदी, जमाल गोटे की गरी, माल कांगनी, हाथी दांतक बुरादा, सूखा केंचुआ, बिनोले की गरी चिलगोजे की गरी, कूट कड़वा बीरबहोटी चौंटली सफेद, जुन्द बेदस्तर प्रत्येक छः मासे लेकर कूट छानकर तीन पोटलियां बांधे और एक पोटली को पांच सेर भेड़के दूध में पकावे और फिर क्रमसे दम एक घंटे तक शिश्न पर इस पोटली सेटकोर करें इसके पश्चात तिला करें।

अब मैं कुछ कुपथ्य तथा पथ्य आदि बतलाकर इस लेख को समाप्त करता हूं। फिर कभी सेवा करूंगा। यदि कोई बात पूछनी हो या कोई वस्तु न मिले तो बिना संकोच हमको लिखें। वरीद २ उपरोक्त सब औषधियां हमारे कार्यालय में तैयार रहती हैं और उचित मूल्य पर मिल सकती हैं।

कुपथ्य तथा पथ्य-लाल मिर्च, खटाई, तेज की वस्तु, दही; स्त्री प्रसंग (जब तक निरोग न हो जावे तथा औषधियों के सेवन समय में) हानि कारक है। दूध, घृत पाचक शक्तिनुसार सेवन कराना हितकर है।

वैद्यों को सुभीता।

प्रायः अधिक औषधि निर्माण कार्य में आनेवाली अलभ्य दुष्प्राप्य औषधियां लहसुन कपूरकचरी वैद्यगणों के सुभीते के लिये हमारे यहां संग्रहीत रहती हैं बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर भाव देख सकते हैं। मैनेजर भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

बरालोकपुर—इटावा

ब्रह्मचर्य और उसका ह्रास

[लेखक— रामकिशोर बाजपेयी, दौलतपुर]

ब्रह्मचर्य बाल्यावस्थासे ही वीर्यरक्षा करते हुए विद्याध्ययन कर मैथुन एवं कामकुटेवों से अलग रहना ही ब्रह्मचर्य है।

पूर्व समयमें हमारे पूर्वज अपने लड़कों को गुरु के यहां पर भेज देते थे और उनके यहां पर २५ वर्ष तक बराबर ब्रह्मचर्य रहकर विद्याध्ययन करते थे। फिर २५ वर्ष के बाद विवाह होता था, तब कहीं गृहस्थ आश्रम में आते थे वे लोग सादे कपड़े पहनते थे और लाल मिर्च, खटाई तेल, मांस और मादक वस्तुओंका व्यौहार नहीं करते थे। दूध और घी का सेवन अधिक करते थे। १५०, २०० वर्ष तककी आयु होती थी, जो लोग १०० वर्षसे कम की आयु में मर जाते थे, उनको लोग व्यभिचारी, कुकर्मी और पातकी कहते थे। वीर्यकी रक्षा हीरे जवाहरातोंसेभीअधिक करते थे। यहां तक कि अपनी खास स्त्री से एक या दो बार से अधिक संतान के लिये योग को भ्रष्ट नहीं करते थे। आज आज तो सारी उम्र ब्रह्मचर्य रहना पाखण्ड करते थे। और ब्रह्मचर्य ही को सब कुछ समझते थे।

देखो! इसी ब्रह्मचर्य ही की बदौलत संसार में अखण्ड व्रत धारी महात्मा भीष्म पितामह कहलाये। पुनः इसी ब्रह्मचर्य ही की बदौलत भीम अर्जुनादि महा योद्धाओंने महाभारत युद्धके बड़े बड़े योद्धाओंको जीता और आज भी देखिये कलियुगी भीम प्रोफेसर राममूर्ति इसी ब्रह्मचर्य की बदौलत अनोखे अनोखे चमत्कार दिखला रहे हैं जिन को देखकर मनुष्योंको दङ्ग रह जाना पड़ता है।

यह वीर्य ही शरीर का सत्व, ओज एवं राजा है यही जवानी का सूरज और जौहर है। इसी के होने से मर्द मर्द कहलाता है। इसमें यदि कमी या खराबी हुई तो पुरुष नामर्द (नपुंसक) कहलाने लगता है। यदि यह वीर्य शुद्ध एवं पुष्ट रहे तो आज हम लोगों को मकरध्वज रसायन एवं सिलाजीत की आवश्यकता कदापि न रहे। आजकल नपुंसकता (नामर्दी) इतनी क्यों बढ़ी हुई है इस का यह भी कारण है कि लोग ब्रह्मचर्य रहते ही नहीं, और वीर्य को अधःपतन

सत्यानाश करते हैं। वीर्य जिसको लोग शरीर का राजा कहते हैं। यदि इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या क्षीणता हुई तो समझ लीजिये कि जीवन का ह्रास शुरू हो रहा है। सदैव यह बात ध्यानमें रक्खो ब्रह्मचर्य ही मनुष्य का जीवन है।

ब्रह्मचर्य नाश होने का कारण यही है-

१—जो व्यक्ति २५ वर्ष के पूर्व ही वीर्य को नष्ट कर देते हैं।

(२) वह व्यक्ति हैं जो स्त्री मैथुन गुदा मैथुन, पशु मैथुन, हस्त मैथुन, मुख मैथुन एवं अनेक उत्कट आसनोंसे मैथुन करते हैं औरइसके बाद मादक वस्तुओं का व्यवहार करते हैं और इन्हीं कारणोंसे वीर्य नाश हो जाता है। इसके बदलेमें सुजाक गर्मीप्रमेह,शीघ्र पतन इत्यादि उपहारमें पाते हैं। और अन्त में मनुष्य नपुंसक हो जाता है। यहां तक कि बहुतों को देखा गया है कि आत्म हत्या करने पर भी तत्पर हो जाते हैं और फिर, विलाओं एवं दवाओं की ओर दौड़ते हैं। अहा!

अब पछिताये होत क्या,
जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

उक्त लोकोक्ति आज कल के नवयुवकों की है॥

शरीर में मुख्य चीज वीर्य ही है जो कुछ सौन्दर्यता और कान्ति है वह सब ब्रह्मचर्य ही का कारण है, सदैव ब्रह्मचर्य रहना चाहिये वीर्य को बेकार कभी न नष्ट करना चाहिये, जैसे कृपण धनवान अनेक का परिश्रम से संचित किया धन बड़ा कठिनता से खर्च होता है उसी प्रकार वीर्य रूपी धन को न खर्च करो यदि तुम वीर्य को बेकार नष्ट कर दोगे तो वही हालत होगी कि जैसे एक धनवान आदमी का खजाना धन से परिपूर्ण है, यदि वह अधाधुन्ध खर्च करेगा तो अन्त मे क्या होगा, उसका दिवाला निकल जायगा और दर दर मारा मारा फिरना पड़ेगा और उसकी दशा अत्यन्त शोचनीय हो जायगी॥

उसी प्रकार शरीर रूपी खजाना से यदि वीर्य रूपी धन निकल जायगा तो क्या होगा आरोग्यता रूपी दिवाला निकल जायगा इस से मनुष्य को सदैव ब्रह्मचर्य रहना चाहिये यदि लोग ब्रह्मचर्य नहीं रहेंगे और वीर्य को अंध धुंध नष्ट करेंगे तो भारत की यही दशा होगी कि लोग नपुंसकता (क्लीवता) के चंगुल में फस जायंगे॥

अतः हे प्यारे पाठको ब्रह्मचर्य व्रतको सदैव पालन करो।

नपुन्सकता।

[ले०—दुर्गाप्रसाद मिश्र वैद्य स्नेह त० हटा जि० दमोह]

नपुंसकता यह प्रायः भारत में ज्यादा तर खुल सा रहा है क्योंकि ऐसा कोई पत्र पत्रिका नहीं कि इस विषय के दो चार प्रश्न न निकलें यह प्रायः अनिक व्यभिचार आदि का ही फल है और हमारे माधव वा शारंगधर आदि में इसके पांच भेद बताये हैं जैसे पुंस्त्वन्तु दोषस्तुपंचैव प्रोक्तास्तत्यैरकस्मृता। आत्येऽतिस्त्रैवकुंभीकः सुगन्धीरुग्डसंगितः

पर सुश्रुत आदि ग्रन्थों में इसके बहुत लक्षण वर्णन किये हैं हम सम्पादकजी को धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने अप्रैल का अंक नपुंसकता पर निकालने का विचार किया अतः धन्यवाद! साथ ही माफी मांगता हूं क्योंकि कुछ मैं भी अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार थोड़ा सा जो जानता हूं मामूली लिखता हूं क्योंकि इसके बारे में कई बड़े २ वैद्य भी लिखेंगे इससे मेरी ऐसी बुद्धि नहीं है जो इसके बारे में लेख लिख सकूं। अतः अब जानना चाहिये कि कामदेव की प्रबलता कई प्रकार से जाती रहती है एक तो यह है कि मनुष्य हथरस करके नपुंसकवत बैठता है जिससे इसके भी कई भेद हैं जैसे एक तो यह कि जाड़े के दिनों में सोते समय रात्रि को यह काम करते हैं दूसरे बाजे २ मनुष्य पाषाण में या किसी मैदान में हथरस करा करते हैं। अब देखिये हथरस करना ही बुरा है दूसरे ये पूर्व इस काम को कर के उसी वक्त धो डालते हैं गरम नसों पर जो शीतल जल पड़ा और उसमें ऊपर से हवा लगी इस सबब से नसें नष्ट ही जाती हैं तिस पर भी कई मूर्ख पुरुष नित्य नियम बांधकर हथरस किया करते हैं और कोई २ आठवें नवें दिन करते हैं जबतक दो चार वर्ष तरुणता का बल रहा तब तक ये किया करते हैं और इस दुष्ट कर्म से रुकते नहीं अन्त को रत्न हीन होकर पछताते हैं और वैद्यों से वा हकीमों से दवा पूंछते फिरते हैं ऐसी दशा में अनेकों प्रकार के रोग उत्पन्न हो आ घेरते हैं और इन्द्री आदि में भी नपुंसकता प्राप्त हो जाती है यदि इसके बारे में कुल एक २ बात मिलाकर लिखी जाती है तो लेख बहुत बढ़ने को हो जायगा इससे संक्षेप में ही थोड़ा २ लिखे देता हूं। कई २ लोग लौंडेबाजी करने से भी नपुंसक हो जाते हैं और स्त्री से संभोग न कर सकने ऐसी दशा में उनकी स्त्री अन्य पुरुषों से आनन्द प्राप्त करती हैं और अ

अर्थात् दवा पूंछते फिरते हैं ऐसे लौंडे-बाज मनुष्य की दवा न करे क्योंकि यदि दवा करने पर अच्छे हो जायंगे तो फिर भी लौंडे बाजी करेंगे अगर इनकी दवा करनी ही हो तो पहिले ऐसी दवा करें कि जिससे उनके लिंग की हुलाल उड़ जावे क्योंकि जब इसको कष्ट से आराम होगा तं फिर ये ऐसा काम न करेंगे।

कई लोग प्रायः बालकपन में गुदा भंजन करा वा इन्द्री को मलवा नपुंसक बन बैठते हैं और बहुत से मनुष्य योवनावस्था में स्त्री से संभोग करते हैं उस संभोग करते समय यदि घर में कंई आ गया और वह सम्भोग करने से खड़ा हो गया और वीर्य स्खलित न हुआ और फिर थोड़ी देर में फिर सम्भोग करने लगे ऐसी दशा में इन्द्री को हवा लगने से इन्द्री की नसें ढीली हो जाती हैं इस दशा में भी नपुंसकता हो जाती है और बहुतसे मनुष्य स्त्री को इन्द्री पर बिठा कर खड़े हो जाते हैं बहुत से मनुष्य आप नीचे हो जाते है और स्त्री को ऊपर रख कर काम विलास करते हैं इस प्रकार सभोग करने में भी नपुंसकता हो जाती है क्योंकि कुछ लिंग में दृढ़ता नहीं होती न जाने मनुष्य क्या समझ कर ऐसा अयोग्य काम करता है। ऐसा बातें बहुत से मनुष्यों को देखकर ज्ञात होता है कि मनुष्य युवावस्था में कामदेव की प्रबलता से अन्धा हो जाता है जिससे नपुंसक बन बैठता बहुत है।

(१) मनुष्य जब माता के गर्भ से उत्पन्न होता है तब उसका लिंग स्थान सब सपाट होता है यानी किसी प्रकार का कुछ भी चिन्ह नहीं होता दूसरा यह कि कुछ लिंग होता है और उसे स्त्री भोग की इच्छा भी होती है और इसके संतान आदि भी होती हैं। तीसरे यह कि लिंग तो पूरा होता है मगर उसमें तेजी नहीं होती ये हिजड़ा हिजड़ा जो ये तीन नपुंसक होते हैं ये जन्म से ही होते हैं इससे इनके वास्ते कोई इलाज नहीं है कई पत्र और पत्रिकाओं से मालूम होता है कि ऐसे मनुष्य कुछ न कुछ इलाज भीतर २ करते ही रहते हैं और उनको जब कोई सफलता न मिली तो प्रश्न को छपवा दिया वैद्यों ने नुकसा बता दिया उन्होंने किया और दूसरे अङ्क में लिख दिया कि जो फलाने वैद्य ने नुकसा बताया था वह मैंने लिखे अनुसार बनाया इतना खर्च पड़ा करीब इतने दिन में तैयार हुआ बाद सेवन किया तो कुछ भी फायदा नहीं बिलकुल बेकार है और जब से ये दवा सेवन की तब से ये २ हालत हो गई ठीक है आप को कुछ दोष नहीं यह सब दोष है वैद्यों का ही क्योंकि वह प्रकृतिका विचार नहीं करते दवा जभी गुण करेगी जब दवा की प्रकृति व रोगी की प्रकृति एक ही मिल जायगी अतः यह बात प्रत्यक्ष ही है कि वैद्य प्रकृतिकी क्रिया के अनुसार दवा करें बस अब इतना लिख जो ऊपर लिखे नपुंसक बताये हैं उनको नीचे लिखी दवा करनी चाहिये।

इथरस से हुई नपुंसकता पर-पोटली हाथी दांत का चूर्ण १ तो०, मछली के दांतों का चूर्ण १ तो०, लौंग ॥) भर जायफर १ तो०, नग नरगिसकी जड़ १ तो० इन सब को महीन पीस दो पोटली बनावे १ हांडी में भेड़ का दूध भर औटावे जब दूध में से भाप उठने लगे तब उस भाप पर इन पोटलियों को गरम करके जांघ लिंग को सेंके बाद लिंग पर बंगला पान बांधे नज़र न लगने पावे और ये औषधि खिलावे। खिलगोजे की मिंगी, सफेद पुस्ता, स्याम मूसरी, कुलंजन, फूलदार लौंग, खालम मिश्री, जावित्री, भौंफली तालमखाने, बीज बन्द, कतावर इक्षुदण्डी तज, ये सब चार २ तोले महीन पीस घृत में मिला आध सेर सहद की चासनी में खिलावे इसमें से २ माश दोनों वक्त खाय चालीस दिन तो इथरस से हुई नपुंसकता नष्ट होय।

वीर्य पतला पड़ जाने के कारण यदि कामोद्दीपन न हो तो ये दवा करे।

तालमखाने १० तो०, ईसबगोल १० तो० इनको बरगद के दूध में तर कर छाया में सुखावे बाद चालीस छुहारों की गुठली निकाल ऊपर की दवा इनमें भरदे बाद गौ के १ सेर दूध में औटे जब खोवे के सदृश हो जाय तब उतार चिकने बासन में धर एक छुहारा रोज ४० दिन तक खाय और इस दवा को लगावे तो नपुंसकता जाय।

लगाने की दवा—अकरकरा ४ तो० लौंग फूलदार बीर बहूटी निबिसी इन के चुरा सब एक २ तोले ले पाव भर मीठे तेल में मिला मट्टी के बासन में धर मुंह बन्द कर चूल्हे में गड्ढा खोद इस हांडी को डाल कर रख दे ऊपर से सात दिन बराबर रात दिन आगी जलावे फिर आठवें दिन निकाल इसमें से १ बूंद लिंग पर मज़ ऊपर से बंगला पान बांधे गरम कर बस पानी न लगने दे ऐसा करनेसे बीर्य गाढ़ा होकर इन्द्री की नपुंसकता नष्ट होती है।

काम वर्द्धक घृत-सफेद कनेरकी जड़ १ पाव, गंदा पूरना की जड़ १ पाव मंटा की जड़ १ पाव, जायफल १ इन सब को कूट पांच सेर गाय के दूधमें डाल कर पकावे बाद दही जमावे और दही को भांकर मेनू निकाले बाद इसको गर्म कर रख ले रोज बंगला पान के बीड़े में रख खावे तो काम शक्ति बहुत शीघ्र तीव्र होय यह बहुत नामी घृत है इसे पाठक गण जरूर बनावें पर जरा इसके खाने से नशा होता है।

नामर्द नाशक तेल—बरसाती पानी में भिजो राखे बाद ऊपर छाल छालेचा ली धंव डाले बाद सुखा के मटुका में भरे नीचे छेद करे पाताल यन्त्र माफिक तेल निकाल ले बाद नारियल के पान पर चुपर के नामर्द इस पान को इन्द्री पर बांधे तो सर्व प्रकार की नपुंसकता जाय बहुत ही सरल परीक्षक है पाठक गण आजमाकर हमेश में सुखानुभव सूचित करेंगे।

नामर्दी को दूर करनेवाला तैल

एक बड़ी सी चमगादर पकड़ कर ले आवे तिसके दोनो तरफ दो जोंके लगावे यानी एक २ तरफ एक २ जोंक लगावे जब वे जोंके उसके खून को पीकर खूब भर जावें और छूट पड़ें तब इन्हें रख लो बाद आध पाव तैल अग्नि पर रख जोंकें डाल दे और जोश दे तेल में जोश देकर घोंट डारे फिर तेल उतार कर शीशी में रख ले नामर्द को एक रस्सी इन्द्री पर लगवावे और ऊपर से पान बांध पट्टी लगावे इसी तरह चौदह दिन नित्य इसी तरह लगावे और हर एक बात का बचाव रखे तो ५ प्रकार की नामर्दी दूर होती है।

नपुंसकता नाशक मिलाये क्रिया

पहले दो क्यारी खोदें जिनकी गहराई एक पुरुष हो और चौड़ाई सवा गज की और लम्बाई भी सवा गज की हो इस हिसाब की दो क्यारी बनावें जिनकी माटी निकाल डाले और खूब साफ करे तिसमें पीली मिट्टी यानी पोतनी छः के भरे बा० पानी डार के तर करे बाद फिर पीली मिट्टी भरे बाद फिर पानी डार तल करे इसी तरह मन २ खाद एक २ क्यारी में भरे बाद मिलावे अङ्क से नारियलका तेल लगावे मिलावे कूट डारे बाद तब क्यारियों में मिलावे और क्यारी बार ऊंची करे पीछे पानी भर देय जब पानी सूख जाय तब चौथे दिन पीछे आध सेर मैथी बोवे बाद चार चार दिन पीछे पानी से भर देय जब वह मैथी तीन २ या चार २ पत्ते की हो तब वह मैथी १ पाव काट लेय तिसके पीछे काली गाय का दूध ले ताको ओट कर दही जमावे बाद बिलोकर घी निकाले बाद इस घी में उपरोक्त मैथी साग भून लेय बाद यह साक चना या बेसन की रोटी के साथ सेवन करे चालीस दिन तो सर्व प्रकार की नामर्दी दूर हो और उस पुरुष में अधिक बल हो इससे भगभी खूब लगती है यदि इसी प्रकार इसका कोई सदैव ही सेवन करे तो काया कल्प का कार्य होता है और सकल कुष्ट स्वेद कुष्ट आदि को नष्ट करने में समर्थ है इससे [illegible] प्रकार के रो[illegible] हैं जिनका भुक्त भोगी सेवन करने वाला ही जानेगा।

शीतल ठंडाई।

इस शीतल ठंडाई को २ तोला वजन लेकर १ गिलास जलमें मिलाकर पी लीजिये इसमें किसी भी प्रकार की तैयार करने की झंझट नहीं सफर में भी आप बराबर इस ठंडाई को शीतल जल में मिलाकर पी सकते हैं। ठंडाई के अतिरिक्त यह बुद्धि वर्द्धक, धातुकाम, खांसी स्वर भंग लू लगने इत्यादि शिकायतों को रफा करती है। एक पाव डिब्बे का मूल्य ।) पता—मैनेजर एस० बी० फार्मेसी बरालोकपुर (इटावा)

हृदयस्थ सन्देश

[लेखक—रामनारायण श्रीवास्तव 'हृदयस्थ' मु० ननहड़ पो० गोरखी]

श्री

आदित्यदेव अस्ताचल निवास कर रहे हैं भारतवर्ष में घोर अन्धेरी लिये हुए निशा देवी का राज्य वर्तमान है प्राणहारी निश्चरों के अत्याचार से हम क्लेशित हैं परन्तु हम फिर भी अपनी निद्रादेवी की गोद में सुख मानकर लेटे हुए हैं और दुःख को ईश्वरीय प्रहार मानकर भोग रहे हैं। यथा सम्भव रक्षक भी अधिकांश इस सोच में पड़े हुए हैं कि हम इस घोर अन्धेरी रात्रि में क्या उपाय इन प्राणहारी निश्चरों से बचने के लिये रच सकें और वह उपाय एक रक्षक दूसरे रक्षक बन्धु को कस बता सकें। इसलिये वह भी अपने नीच आलस्य वश होकर दुपट्टा ओढ़े मुँह ढके पड़े हुए हैं।

संसार परिवर्तन शील है परब्रह्म परमेश्वर के निकट सब पर प्रेम विशेष है। उनको भारतवर्ष को पीड़ित देखते हुए परियाप्त समय हो चुका है अब उसकी महती दया दृकपात के प्रभावसे महामान्य दयालु 'इन्द्र' ने राकेश को उदय किया है यद्यपि 'राकेश' उदय हाल में ही हुआ है, उसने अपनी अमृतमयी किरणोंका विकाश संसार पर फैला दिया है। परन्तु फिर भी हमारे रक्षक बन्धु अधिकांश सुप्त दशा में पड़े हुए हैं अतः इस राकेश के प्रकाश द्वारा यह 'हृदयस्थ सन्देश' आप लोगों की सेवा में भेजता हूं आशा है कि पाठक वृन्द इसे पढ़कर स्वयं तथा औरों को सुनाकर अवश्य लाभान्वित होंगे।

भारतवर्ष के प्राचीन विद्वानों और महर्षियों ने व हाल में स्वास्थ्य साधन के नेताओं ने आरोग्य रहने के लिये जहां ब्रह्मचर्य प्रातः काल प्रति दिन ब्राह्ममुहूर्त में शय्या त्यागना कर खुली हुई शुद्ध पवित्र वायु में टहलना, व्यायाम, प्राणायाम करना आदि साधन हैं वहां पर ही उन्होंने अति आवश्यक और सर्वोत्तम सार सिद्धान्त यह भी बतलाया है कि मनुष्यके रोग ग्रसित होनेपर 'उसी देशकी उत्पन्न हुई औषधियां' जिस देशमें वह रोगी उत्पन्न हुआ हो और जिस देश की जल वायु से पोषित हुआ हो! सेवन करना चाहिये इसमें कोई सन्देह नहीं है यह एक उत्तम और ईश्वरीय नियम है।

जिस समय भारतवासी इस उपयोगी ईश्वरीय नियम पर अटल थे उस समय

भारत माता हर प्रान्त से सर सब्ज थी इस वाक्य का प्रमाण महाभारत आदि ग्रन्थों के देखने से आपको पूर्णतया स्पष्ट हो जावेगा इसके अतिरिक्त अन्य देशवासी भी दूर २ से आकर हमारे आयुर्वेदाचार्यों से शिक्षा लेते थे और यहां की औषधियों को अमृत रूप मानकर अपने साथ ले जाया करते थे देश भर में आरोग्यता ही का साम्राज्य था कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं था जो स्वास्थ्य जीवनसे हर्षित व प्रफुल्लित न हो।

किन्तु शोक है कि समय ने पलटा खाया और विदेशियों को सफलता प्राप्त हुई वही देश जो आरोग्यता का भन्डार और संसार भर का औषध क्षेत्र माना जाता था, वही आज दूसरों का याचक और मुहताज बन गया है कितने आश्चर्य की बात है कि जहां अपनी देशोत्पन्न औषधियों पर अटल श्रद्धा थी वहां आज यह कहा जाता है कि बिना अंग्रेजी दवाई के सेवन किये हुए मेरे शरीर के कुपित हुए दोष कदापि शमन नहीं होंगे, अथवा बिना डिप्लोमा प्राप्त डाक्टर, देशी वैद्य मुझे हर्गिज आराम नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि आप अनेक बातों में स्वतन्त्र नहीं हैं दूसरों के ताबेदार हैं देश पर विदेशियों का अधिकार है लेकिन महामान्य राजाधिराज गवर्नमैंट किसी को देशी औषधियों के बर्ताव पर नहीं रोकते हैं न विदेशी औषधियों के सेवन हेतु बाध्य करते हैं ता फिर क्या अभिप्राय है कि हमने आयुर्वेद के उच्च माननीय और सर्व हितकारी नियमको जो 'कम खर्च वाला नर्सा' स्वदेशी औषधियों को सेवन करके धर्म रक्षा करने की शिक्षा देता था, छोड़ दिया और आरोग्यता के बदले सरोग्यता के वशीभूत आवें। जिसको देखो वही किसी न किसी तरह स्वास्थ्य हीनता से दुखी है किसी तरुणावस्था ने अपनी अनुपम कृपा से ही वंचित कर दिया है। यानी तरुणावस्था ने ही अपनी अनुपम कृपा से वंचित कर दिया है, यानी तरुणावस्था आनेके प्रथम ही अपनी आशा रूपी पौधों को बांझ स्वर्ग यात्रा को प्रस्थान कर रहे हैं। इस मुख्य कारण एक देशी औषधियोंके प्रति अश्रद्धा कर ईश्वरीय नियम को भङ्ग करना है। इसलिये यह 'हृदयस्थ' आपसे सबद्ध प्रार्थना है कि विदेशी औषधियों का परित्याग कीजिये।

'राकेश' का उदय इस मास में क्लीव (नपुंसकों) को पुनः पुंसत्व शक्ति प्रदान करने तथा उसकी रक्षा करने को हुआ इसलिये पाठकगण शायद यह विचारें कि यह अनावश्यक विषय यहांपर क्यों लिखा। मित्रो! हमारी समझ में यह अत्यावश्यक विषय था अब नीचे लेखों के उत्थानुसार भी जो कुछ मेरी अल्पबुद्धि में आया है लिखता हूं।

यद्यपि इस विषय को पूर्णतया सुलझाने में बड़े २ विद्वानों की लेखनी असमर्थ हुई

तो भी मुझे कुछ सेवा आप लोगों की लेख द्वारा करना आवश्यकीय है इसलिये अब हम अन्य नपुंसकों का विषय बड़े २ विद्वानों पर छोड़कर उन नपुंसकोंके बाबत जो भिन्न कम से ही नपुंसक बन गये हैं लिखते हैं।

नपुंसकता किसे कहते हैं।

पुंस नाम संस्कृत में पुरुष (मर्द) का है पुरुष के लक्षणों और भावों को पुंस कहा जाता है इन्हीं लक्षणों युत पुरुष को पुरुष कहते हैं पुरुष के लक्षण तथा भाव जिस पुरुष में न हों वही नपुंसक है। स्पष्ट रूप में मर्द की मर्दानी इन्द्रिय शक्ति बल पुरुषार्थ, हिम्मत, तेजी, दबंगपन, नपुंसकता में नाम मात्र को नहीं रहते हैं और उसी रूप में पुरुष को नपुंसक कहते हैं।

नपुंसकता कैसे होती है।

बुरी आदत जैसी हस्त मैथुन करने से जवानी में जो जिस प्रकार न कर सकने-वाली कुरूप, दुष्टा कुमारिणी स्त्री से बिना इच्छा के प्रसंग करने से रजस्वला (जिस स्त्री को माहवारी होती हो) अथवा जिस स्त्री के विशेष रोग के कारण पीड़ा होती हो, और सूजन खुजली का रोग हो, जिस स्त्री को मासिक ठीक २ न होकर कभी कम कभी ज्यादा दिनों बाद थोड़ा २ कष्ट से अधिक अधिक काला होता हो, जिस स्त्री को गर्भ की गरमी या अतिशय की गर्मी हो ऐसी स्त्री विषय करने से रात दिन गुप्तेन्द्रिय को हाथ से मलने से रात्रि को सोते समय स्वप्न में प्रातःकाल सायंकाल दस्त जाते समय अथवा मूत्र में मिलकर अधिक दिनों तक धातु निकलने से लड़कों या बहुओं के साथ ईश्वरीय नियम विरुद्ध मैथुन करने से धातु विकार रहते हुए भी परहेज से न रहने से ठीक २ चिकित्सा न करने से मैथुन करने समय भय लगे रहने से, जवानी में अन्धा-धुन्धी से प्रति दिन एक बार या अनेकबार विषय करने से और आवश्यक खुराक आदि द्वारा अधिकाधिक वीर्य दूषित होने से इन्द्रियां अण्ड कोषों पर झटका या चोट लगने से, इन कारणों में एक या अनेक कारणों से इन्द्रिय की नसें फूलकर पिलपिली हलकी काली या पीली मोटी हो जाती हैं इन्द्रिय के स्नायु ढीली होकर उसको फैलाने स्फूर्ति होने और अधिक देर तक कठिन रहने की शक्ति नष्ट हो जाती है हमको इन कारणों से बचना चाहिये क्योंकि नपुंसकता के लक्षण बहुत शीघ्र नहीं खुलते ये धीरे २ बढ़ते जाते हैं।

नपुंसकता का आरम्भ

होते ही पहिले विषय की इच्छा प्रायः कम होने लगती है। कुछ मनुष्य पहिले इन लक्षणों पर ध्यान नहीं देते और अन्तो श्री महात्मा तुलसीदासजी की बलिहारी साफ़ स्पष्ट हो जाती है।

का अर्थ अब कुछ समझाने,

समय चूकि पुनि कह पछिताने ॥

जो लोग वक्त पर नहीं सोचते उनका निस्तार होना महा कठिन हो जाता है। नपुंसकता में वीर्य कमजोर हो जाता है। इसलिये वीर्य में वह गुण जो पुरुषमें होने चाहिये नहीं रहते वीर्यकी कमीसे अन्यान्य रोगों की उत्पत्ति होने लगता है पुंसक पुरुष को स्त्री व पुरुष में किसी तरह का भेद नहीं मालूम होता। प्रत्युत वीर्य नष्ट होने से जो पुरुष नपुंसक हो जाते हैं उन से वे नपुंसक कहीं भले हैं जो जन्म ही से नपुंसक हैं-क्योंकि इनमें वे मानसिक शारीरिक औत्पादिक दुःख नहीं होते हैं।

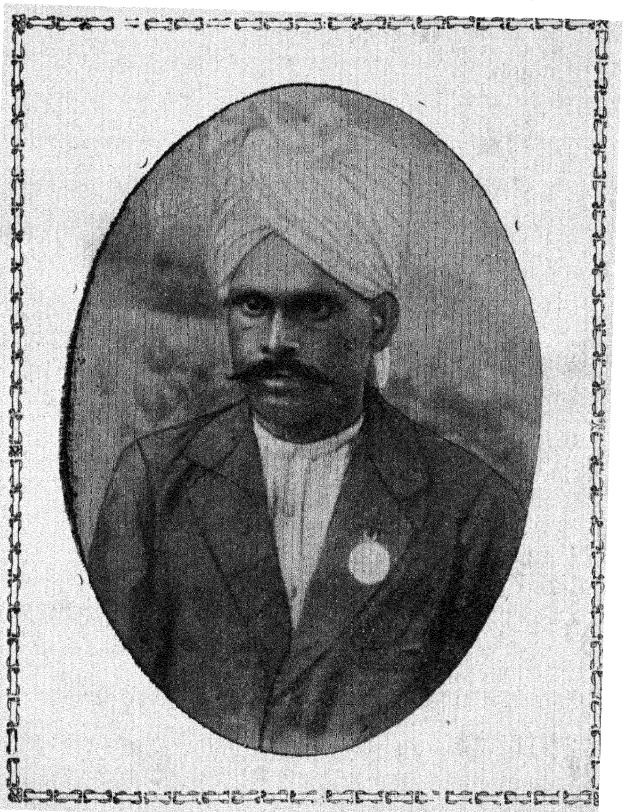
नपुंसकता विशेष कर जननेन्द्रिय को नष्ट करती है और प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रूप से नपुंसकता का असर इन्द्रीपर ही पड़ता है इससे इन्द्री का आगे का भाग स्थूल (मोटा) और पीछे का पतला हो जाता है। इस रोग में ग्रहस्थी के सुख व भोग और संतान पैदा कर कुछ दृढ़ करने का जो एकमात्र साधन ध्वजा (इन्द्री) है वही टूट जाती है इसी का भंग होना वैद्यक शास्त्र में ध्वजभंग नाम से लिखा है।

अब यह समझाने की कोई आवश्यकता नहीं है कि अपने कर्मों की शिक्षा का फल इस लोक और परलोक में नष्ट करनेवाला जीते जी मुर्दे से बनाने वाला जगत में एक नाम यह रोग है।

यह दूर कैसे हो।

जमाने की रफ्तार आप लोगोंसे छिपी नहीं है अपनापन दिनों दिन बढ़ता जाता है और यह रोग ऐसा है कि जिस से आदमी चने की भांति रोग रूपी घुन से घुन घुन कर खोखला हो जाता है, परन्तु वह लाज शरम के मारे किसी से इस विषय की जिकर भी नहीं करता। यदि कुछ किसीसे कहा भी तो बहुत परदे में छिपकर इससे रोगी को कुछ लाभ नहीं होता, और कभी कभी उलटे रोगों के झंझट में पड़ना पड़ता है, आज आपके पास यह 'हृदयग्रन्थ सन्देश' इस बात का ज्ञान कराने के लिये भेजा है कि आप ही आप मनुष्य साधारण सी बात से, जरा लापरवाही व गफलत करने से उसे कितने शारीरिक व मानसिक कष्ट उठाने पड़ते हैं, यह रोग जैसा दृष्ट है उसकी चिकित्सार्थ भी वैसे ही विचार शील मनुष्य की जरूरत है अतः इस विषय के रोगियों को चाहिये कि वह किसी २ मूर्ख वैद्योंसे अन्टसन्ट [illegible] वह सीधे राकेश के प्रकाश [illegible] सेवन करें तथा उत्तर के लिये एक आने का टिकट जरूर भेजें।

राकेश



आयुर्वेदाचार्य—

डा० पं० रामेश्वरप्रसाद जी द्विवेदी.

आप श्री गणेशदातव्यऔषधालय गोतोला के अध्यक्ष हैं आपके अनुभवसिद्ध प्रयोग व लेखादि प्रायः "राकेश" में प्रकाशित होते रहते हैं।

• बी. एन. प्रेस इटावा में छपा।

पुरुषत्व हीनता

[लेo—आयुर्वेदाचार्य डाo पंo रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी]

राकेश के पाठकों की सेवा में आज क्लीवता का चिकित्सा अर्पण कर रहे हैं अतः प्रथम क्लीवता का निदान कहकर पुनः चिकित्सा करेंगे:—

वैद्यक शास्त्र में क्लीवताके उत्पादक मुख्य चार कारण लिखे हैं यथा—

"वरञ्च बहवो लोके दुःखिता नित्य दुर्बलाः। ब्रह्मचर्यविहीनास्ते श्वयंक्लीवत्वदूषणात् मातृपित्रोस्तु दोषाच्च, तथैव प्रमादतः। अन्यैरपि महारोगैः, नाक्लीवत्वमाप्नुयात्

अर्थात् प्रकृति विरुद्ध मैथुन तथा हस्तक्रियादि द्वारा अपने दोष से अथवा माता पिता के दोष तथा किसी देव के प्रभाव से और चौथे किसी भयंकर व्याधि से नपुंसकता उत्पन्न होती है। परन्तु नपुंसकता के सात भेद होते हैं:—

"क्लीवःस्यात्सप्तधाशक्तः तद्भावः क्लेव मुच्यते। सप्तधाप्रविधंप्रोक्तं निदानंतस्य कथ्यते—

मैथुन करने में जो असमर्थ हो उसे क्लीव (नपुंसक) कहते हैं और उसके सात भेद कहे हैं जिनका निदान क्रमशः लिखता हूं।

१-मन्मथैर्विकृतैर्यस्तु निरंसोमनीषयते। धैर्यःपतत्यनोनूणां क्लैव्यात्सप्तपजायते॥ द्वेषस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लीवंनरकवासंलभेत्।

अर्थात् भय शोक क्रोध अथवा अन्य किसी कारण मैथुन करने में जो न समर्थ हो वह प्रथम नपुंसक है।

२-कटु काम्लो सलवणै रतिमात्रेःपसेवितैः। पितास्रशुक्रलसयोदुष्टःकुर्व्यंतरमाक्रजायते॥ अति व्यवायशीलोपो नष्टलोकि पायतः। ध्वजभंग मवाप्नोति सशुक्रक्षय हेतुतः॥

अर्थात कटुकादि पदार्थों का अधिक सेवन से पित्त दूषित होकर दूसरी नपुंसकता होती है तथा अधिक रति शील होकर जो बाजीकरण दवा नहीं सेवन करते वे तीसरे प्रकार के नपुंसक कहे जाते हैं।

३-लिंगवृष्किराण्योगान सेवतेयःप्रमादतः महतामेढ्यरोगेन क्लीवंक्लीवताहटेत्।

जो मूर्खता वस इंद्रिय बढ़ानेवाली औषधि अधिक सेवन करते है वे अन्तमें नपुंसक हो जाते हैं। यह चौथी नपुंसकता है।

४-पंचमी क्लीवताख्या शिराच्छेदादि कारणात्।

वीर्यवाही नसोंके कट जाने तथा प्रमेहादि रोग के बढ़ जाने पर भी नपुंसकता होती है। यह पांचवीं नपुंसकता है।

५-क्लिष्ट दृढ़मनसो निरीक्षणात्प्रत्यवेक्षणात्

षष्ठन्त्वेतत्पुनर्नपुंसकं वीर्यं स्तम्भनिमित्तकम् ॥

जो पुरुष कामेच्छा प्रबल होनेपर उसे रोक ले तो अन्त में वह भी नपुंसक हो जाता है यह षष्ठी नपुंसकता कही है।

जन्मप्रभृत यत्क्लैब्यंसहजं तद्धिसप्तमम्।

जो माता पिता के दोष से होते हैं वह जन्म नपुंसक सहज कहाते है यह सातवीं नपुंसकता है और असाध्य है।

उक्त सात प्रकार के नपुंसकोंके अतिरिक्त पांच प्रकार के और नपुंसक होते हैं जो निम्नाङ्कित हैं।

१-आलेक्य जो वीर्य को पान न के मैथुन की इच्छा करे।

२-सौगन्धिकः-जो स्त्री की बोलि सूंघने से मैथुन में समर्थ हो।

३-कुम्भिक-जो दूसरे से जब गुजरा मैथुन में प्रवृत्त होता है तब उसे मैथुन की इच्छा होती है।

४-ईर्ष्यक-अथवा वृक्षयोनि। अर्थात् जो दूसरे को देखकर मैथुन की इच्छा करे

५-षंढ-जिस को किसी भी प्रकार उत्तेजना न हो।

इन में प्रथम ४ प्रकार के वीर्य होता है परन्तु षण्ढ नपुंसक के वीर्य नहीं होता और असाध्य जानो। शेष चारों भी कष्ट साध्य हैं।

उपरोक्त कहे हुए समस्त नपुंसकों में षंढ व सहज किसी को असाध्य जानो और आलेक्य-सौगंधिक व कुम्भिक तथा ईर्ष्यक को विशेष कष्ट साध्य जानो शेष सुसाध्य हैं जिनकी चिकित्सा निम्नाङ्कित है।

तैल विधान।

१-आकाशबेल, श्वेत कनेर, मूल चमेली के पत्ते, तिल तैल (कलके तैल चतुर्गुण तथा तैल से चतुर्गुण जल मिलाकर तैल विधान से तैल तैयार करे २१ रोज तक इन्द्रिय पर मालिश करे।

२-बड़ी कटेली (वनभंटा) का मूलक को कूट बकरी के दूध की ३ भावना दे गोली बना पातालयन्त्र से तैल पातनकर २१ रोज इन्द्री पर मालिश करे।

३-अर्क के दूध में कपड़ा ७ बार भिगोकर गो घृत मिलाय बत्ती बनाकर घृत जलाकर हपकी ले तो इसे २१ रोज इन्द्री पर मालिश कर ऊपर एरंड पत्र बांध लिया करे।

४-सफेद आक की जड़ा २० तो०, लोबान १० तो० सफेद दा १ ३० तो०, लौंग १० तो०, सब को बकरी के दूध में खरल कर पातालयन्त्र से तैल टपकाले २१ रोज तक इन्द्री पर मालिश करे।

५-१ तोला तैल जमालगोटा १ तोला तैल चमेली एक में मिलाकर २१ रोज तक इन्द्री में मालिश करे।

लेप विधान।

१-भटकटैया का फल, बड़ी पीपर मिर्च तगर, सेंधा नमक, लटजीरा, कूट, उरद काले तिल, जौ, पीली सरसों, अक-

गंध, समभाग लेकर शहद से बटी बनावे भेड़ दूध में घिस कर ४० दिन तक लेप करे।

२—अकरकरा ६ मासा, कूट ६ मासा, जायफर ६॥ मा० जावित्री ६, अरंडबीज १ तो० पुराना गुड़ १ तो०, बिलौरेकी मिश्री १ तो०, काले तिल १ तो०, शहद २ तो० कूट छानकर शहद मिला मुलभेड़के दूध मिला अरल कर गर्म कर लेप करे २१ दिन तक बराबर करता रहे।

३-अकरकरा पीडा, भालकंगनी, सफेद कनेर की जड़ कूट पीसकर वनभांटा में स्वरस में अरल कर गर्मकर इन्द्री पर लेप करके बकुला पान बांध दे इस प्रकार २१ रोज करें।

खाने के लिये

१—तेज, संखिया, १ सींक बोर पान पर लगाकर खाय ७ दिन तक।

२—केवांच की गूदी घी में भून कर नित्य ऽ- शहद से खाय ४० दिन तक।

३-असगंध नागौरी ऽ- नित्य गो दुग्ध के संग पीवे।

४—आंवला को आंवला के स्वरस की २१ भावना देकर १ तोला तिल खाय २१ दिन ऊपर दूध पीवे।

५—बिदारीकंद के चूर्ण को बिदारीकंद के स्वरस की २१ भावना देकर २१ रोज तक १ तोला नित्य सेवन करे ऊपर दुग्ध पीवे।

६—सिद्ध मकरध्वज २ रत्ती नित्य बगला पान में खाय ऽ। गो दुग्ध पीवे।

७—स्वर्ण बंगेश्वर २ रत्ती नित्य शहद सों खाय।

सावधानी—दवा लगाते समय अग्र भाग तथा सीवन बचाकर लगावे।

खाने तथा लगाने की दवा साथ २ करे।

मैथुन, मिर्चा, तेज, खटाई, गुड़का परहेज करे।

अवश्य लाभ होगा उपरोक्त सभी योग मेरे अनुभूत हैं इनसे कई रोगियों ने कीमदान पाया है। यह सब योग रसिराज ग्रन्थ में लिखे है।



नपुंसकता और उसकी चिकित्सा

[ले०-मिट्ठीलाल अध्यापक वै० शा० आयु० पाठशाला गढ़ी]

नपुंसकता प्रचार आजकल जितना बढ़ चला है कि इसका ठीक २ अन्दाज नहीं लगाया जा सकता घर २ में पुरुषों को प्रमेह शीघ्र पतन नपुंसकता और स्त्रियों के प्रदर गर्भ विकार सोम रोगों ने शरीर में अपना अड्डा ही बना लिया है। इसका मूल कारण क्या है पाठक विचार करें। इस पाञ्च भौतिक शरीर में अग्नि बल और वीर्य बल ये ही दो बल हैं। देव बल की तो कथा ही छोड़िये। अग्नि बल सात्विकी मिताहार पर निर्भर है और वीर्यबल ब्रह्मचर्यके ऊपर निर्भर है, ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं और इस व्रत के करने से क्या क्या लाभ होते हैं। प्रत्येक मनुष्य को जानना उचित है। ब्रह्मचर्य के गुण बहुत हैं। बाल्यावस्थामें वीर्य रक्षा करते हुए विद्याध्ययन करना यम-नियमों का पालन करना, अष्टाङ्ग मैथुन से अलग रह अखण्ड ब्रह्मचर्य धारण करना प्रथम आश्रम गिना जाता है। ब्रह्मचर्य बड़े २ महत्व की वस्तु है इसी ब्रह्मचर्य के प्रताप से जगद्गुरु शंकराचार्य ने अल्प वयस में ही दिग्विजय कर पाखण्ड मत का खंडन किया था। ब्रह्मचर्यके बल से ही संसार में अखण्ड व्रतधारी महात्मा भीष्म पितामह कहलाये। पुनः इसी ब्रह्मचर्य के प्रताप से भीम अर्जुनादि महा योद्धाओं ने महाभारत में बड़े २ योद्धाओं को जीत कर दिग्विजय किया। आज भी कलियुगी भीम की उपाधि धारण करने वाले प्रोफेसर राममूर्ति नायडू इसी ब्रह्मचर्य के बल से ही चमत्कार दिखा रहे हैं जिन के बल को देख मनुष्यों को दङ्ग रह जाना पड़ता है। यह वीर्य ही मनुष्यों में ब्रह्मस्वरूप है। यदि यह वीर्य शुद्ध है और और पुष्ट रहे तो आपको आज काबेश्वर तिला खोजना नहीं पड़े। अब आप विचार कर सकते हैं कि दिनों दिन इस दुष्ट रोग नपुंसकता की वृद्धि क्यों हो रही है इस का मूल कारण वीर्य का क्षय होना ही है वीर्य के नाश होने के प्रधान २ कारण उत्तम पौष्टिक भोजन, जो कुछ खाना चाहिये न मिलना दिलका प्रियतम आदि विरह चमकार आदि हैं।

क्लीवत्वपर शास्त्रीय विचार।

क्लीवःस्यात् सुरतासक्त,

स्तद्भावः बलेव मुच्यते।

तच्चसप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्य कथ्यते

अर्थ-जो प्राणी स्त्री से मैथुन करने की इच्छा करे परन्तु मैथुन न कर सके। उसको क्लैव (नपुंसक) कहते हैं। यह सात प्रकार का है उसका निदान कहते हैं।

तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तु विरंसोभ्यनसिद्धते।
भ्रंशः पनत्यनेनृणांकर्तव्य समुपजायते॥

अर्थ-तैस्तैर्भावैः शोक चिन्ता भय क्रोध दारिद्रादिभावैः।

रमण कर्ता पुरुष के हृदय को अप्रिय जिन से दिल को नफरत हो ऐसे भय रोग क्रोधादिकों के सेवन करने से मन (चित्त) दुखित होकर स्त्री की उपस्थेन्द्रिय गिर जाती है अर्थात मैथुन करने की शक्ति नष्ट हो जाय उसको नपुंसक कहते हैं।

प्रथम मानसिक क्लीवता

द्वेषस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैव्यंतन्मानसं मृतम्

अर्थ-जिन मनुष्यों को स्त्री रमण करने करने से द्वेष हो अर्थात मैथुन करना बुरा लगे उसे मानसिक क्लीवता कहते हैं इस क्लीवता का खास उपाय यही है जिससे उसका मन प्रसन्न हो और आनन्द की ओर बढ़े।

द्वितीय शिश्न क्लीवता

[illegible]
शिश्ना शुक्रक्षय दुष्ट धातु [illegible] जायते

अत्यन्त व्यवायशीलो [illegible] अत्यन्त, खटाई, नमक और [illegible] पदार्थों का सेवन करते हैं तथा अचार, खटाई, लाल मिर्च, अदरक, तैल गुड़, गर्म मसाला, ज्यादा खाते हैं उनके पित्त बिगड़ कर खूनमें गर्मी पैदा कर वीर्य को पतला व उष्ण दुर्गन्धित बना देता है जिससे वीर्य बिगड़कर क्लीवता (नपुंसकता) उत्पन्न करता है।

तृतीय शुक्रक्षय जनित क्लीवता

अतिव्ययायशीलो यो न च वाजिक्रियारतः
भ्रंशभंग मवाप्नोति स शुक्रक्षय हेतुकः॥

जो मनुष्य अधिक मैथुन करते हैं (जिस से वीर्य अधिक निकल जाय) और उस वीर्य के बढ़ाने वाले पदार्थ दुग्ध घृत व वीर्योत्पादक औषधी जो बाजीकरणाधिकार में कही गई हैं तथा जो अपनी प्रकृति के अनुकूल हों उनका सेवन नहीं करते बल्कि इसके विपरीत रूक्ष, तीक्ष्ण, अम्ल, कटु, पदार्थों का सेवन करते हैं उन पुरुषों को वीर्यक्षय जनित क्लीवता हो जाती है इस का उपाय यह है कि मैथुन को कुछ काल बन्द करके दुग्ध घृतादि वीर्योत्पादक द्रव्यों का सेवन करें। और ऐसे हीनवीर्य पुरुषों का वीर्य पुष्ट हो जाने पर भी मैथुनान्त में नित्य दुग्ध पीना चाहिये जिससे पुनः वीर्यक्षय न होने पावे और जाड़े के समय अपनी प्रकृति के अनुकूल पौष्टिक पाक जठराग्नि बल के अनुसार सेवन करें।

चतुर्थ प्रकार क्लीवता

महता मेढ्रयोगेन चतुर्थी क्लीवता भवेत्।

बहुत से अज्ञ पुरुष अपने लिंग को बड़ा बनाना चाहते हैं और पुष्ट मोटा करने की इच्छा से अनेक दुष्ट विधि से [illegible]

लिंग पोटलियों को काम में लाते हैं उससे उन्हें कुछ काल थोड़ी रक्त जना हो जाती है जिससे पुनः बल पूर्वक मैथुन करते हैं इसका फल यह होता है कि वीर्य अत्यन्त क्षय हो नपुंसकता आ जाती है मुंह में छाली पर दाना, आंवला, उपाड़ या घाव हो जाता है जिससे अधिक कष्ट सहते हैं।

पाठक गण ! स्मरण रक्खें कि जन्मसे जितने प्रमाण का अङ्ग होता है उतने ही प्रमाण का रहेगा, अधिक वृद्धि नहीं होगा लेकिन वीर्य पुष्ट रहने पर कलीवता जाती रहेगी। यदि कोई उग्र औषधि द्वारा वृद्धि या स्थूलीकरण हो भी जाय तो वह ठीक नहीं कारण उसमें और हानि की ही सम्भावना रहती है लाभ की नहीं। अतः इस तृष्णा में भूल कर भी न पड़ें, वां, वीर्य अत्यन्त पुष्ट करने की कोशिश करते रहें। जिससे इस कष्ट रोग के पंजेसे बचें। कम यानी थोड़ा क्षीण वीर्य से गर्भाधान द्वारा मनुष्य का मुखाङ्ग ८ अङ्गांगुल प्रमाण का होता है और यही प्रमाण सर्वत्र है।

कलिङ्ग २ स्वाभाविक दीर्घाङ्ग दीर्घोपाङ्ग मनुष्य के पुष्ट वीर्यसे द्वादशांगुल का मुखाङ्ग होता है ऐसे मनुष्य कम होते हैं इसलिये वाजीकरण द्वारा नपुंसकताका उपाय करना सबसे श्रेष्ठ है और कलीवता में सबसे प्रधान कारण वीर्य दोष ही विशेष कर से है।

पांचवीं कलीवता

वीर्यवाहि शिरःकण्डरा स्नेहनात्पुनर्भवेत्।

वीर्य के बहनेवाली नसों के कट जाने से लिङ्ग चैतन्य नहीं होता, यह पांचवीं कलीवता है। यह कलीवता अभिघात जनित है मेढ्र (लिङ्ग या अण्ड कोष) पर तीव्र चोट आ जाने से वीर्यवाहिनी शिरा में वीर्य का गमनागमन बन्द हो जाता है

छठी कलीवता।

वनिताः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः॥
षष्ठं कलैव्यं स्त्रीणां तनुकरणमनिमित्तजम्

बलात्कार पुरुष के मैथुन करनेके उत्साह को रोकने से उनका मन क्षुभित हो जानेसे शिथिलता आ जाती है यह छठी कलीवता है॥

सातवीं सहज कलीवता

जन्म प्रभृति यद् कीर्यं सहजं तद्धि स्त्रियाम्

जो प्राणी जन्म से ही नपुंसक हुआ है वह सम्भोग में असमर्थ रहता है। इसको कलीवता कहते हैं। जब वीर्य स्खलन भाव होने पर भी वीर्य नहीं रहता है वह जन्म से ही नपुंसक होता है॥ यह नपुंसक पुरुष चिन्ह और स्त्री चिन्ह युक्त दो प्रकार का होता है॥

साध्यासाध्य विचार।

असाध्यं सहजं कलीवं मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत्
सप्तानामपि विज्ञेयं कार्यं राजीकलैविधि

ऊपर कहे हुए सात प्रकार के कलीवों में एक सहज कलीव और दूसरा मर्मछेदी अर्थात् जिसका वीर्य बहनेवाली नस कट

गई हो ये दो असाध्य हैं। शेष पांच प्रकार के जो क्लीव हैं उनकी वाजीकरण विधि द्वारा नपुंसकता दूर करे।

महर्षि चरकाचार्य के मतसे चार प्रकार की क्लीवता है। यथा

बीजोपघातात्स्त्रीणां च त्रयाणां शुक्र संक्षयात्
क्लैब्यं चतुर्थमित्येतत् चतुर्धा षण्ढ लक्षणम्

अर्थात् नपुंसकता चार प्रकारके कारणों से होता है (१) वीर्य के उपघातसे (२) लिङ्गेन्द्रिय वीर्य मे किसी प्रकार की खोट लग जाने से (३) डरने से (४) वीर्य क्षय से।

नपुंसकता के सामान्य लक्षण

[illegible] तत्र यावत्स्त्रीषु नोपयाति तावन्निरर्थकम् मन [illegible] यथाकथञ्चित्स्त्रियं तेऽथवि धक्षाशयः स्वप्ने गमेऽपि च मोक्षः सकलश्चेष्टितः म्लानं शिरनश्च निर्बीजः स्यादेतत्क्लैब्यलक्षणम् सामान्यलक्षणं ह्येतदुविस्तरेण प्रवक्ष्यते॥

नपुंसकता के सामान्य लक्षण यह हैं- कि नित्य रमण करनेका विचार ही विचार किया करे, किन्तु गुप्तेन्द्रियकी शिथिलता के कारण अपनी वशीभूत प्यारी स्त्री के पास न जा, सके अथवा किसी प्रकार स्त्री गमन करने में प्रयास भी करे, तो श्वांस चढ़ जाय, अङ्गों में पसीना आ जाय संकल्प निष्फल हो जाय और चेष्टा हीन हो जाय लिंगेन्द्रिय शिथिल सकुड़ी हुई और निर्बीज हो ये नपुंसकता के सामान्य लक्षण हैं।

बीजोपघात क्लीवके हेतु और लक्षण

शीतरूक्षाम्लसंक्लिष्ट विरुद्धाजीर्णभोजनात्
शोकचिन्तामयत्रासात्स्त्रीणांचात्यर्थसेवनात्
अभिचाराद् विस्रम्भाद्वसादीनांच सङ्क्षयात्
वातादीनां च वैषम्यात्तथैवान शनाच्छुभात
नारीणामरसज्ञत्वात्पञ्च कर्मोप घाततः
बीजोपघाताद्भवति पांडुवर्णः सुदुर्बलः
अल्पप्राणोऽल्प हर्षश्च प्र [illegible] सुभवेन्नरः।
हृद्रोगं तमकश्वासं कामलाऽल्पथा थकावट, वमन, अतिसार, शूल, खांसी, और ज्वर से पीड़ित होता है यह बीजोपघात क्लीवता के लक्षण हैं लेख बढ़ जाने के कारण अब तक हम हर प्रकार की क्लीवता के हेतु और लक्षण अलग २ न' लिख केवल नाम ही लिखे हैं ऐसे हैं 'शोक

के विद्वान पाठक इसके लिये अवश्य क्षमा प्रदान करेंगे। अस्वस्थता के कारण तथा कवितांक का समय निकट जान क्षमा याचना करनी पड़ी।

इसके अलावा—भग्नभंग कवीवता, जरा संभव कवीवता, क्षय जन्य कवीवता आसेक्य कवीवता, सौगन्धिक कवीवना, कुम्भिक, ईर्ष्यक, महाषण्ड, नारीषण्ड, आदि के लक्षण हेतु शास्त्रोक्त पुस्तकों में देखे जा सकते हैं तथा जो सज्जन जानना चाहें पत्र द्वारा पूछ सकते हैं।

नपुंसकताका साध्यासाध्य निर्णय

केचित्क्लैव्यत्वसाध्येऽस्मिन् भग्नभंगक्षयं क्षये वदन्ति शेफसश्छेदादक्षुण्णत्पाटनेनवा ॥

कोई २ आचार्य भग्नभंग और क्षयसे उत्पन्न इन दो प्रकार के नपुंसकोंको असाध्य कहते हैं और कोई गुह्येंद्रिय के कट जाने से अथवा अण्डकोष के गल जानेसे या कट जाने से जो नपुंसक होवे वह असाध्य है ऐसा कहते हैं।

अन्य असाध्य होनेके कारण

मातापितोर्बीज दोषो दुष्कृतैश्च कृतात्मनः
गर्भस्थस्य यदा दोषाः प्राप्यरेतोवहा शिराः
शोषमेत्या शुतवाशा द्रुतश्चाप्युप हन्यते
तत्रसम्पूर्ण सर्वाङ्गः स भवत्यपुमानयुवान
क्लैव्यसाध्या काश्यादः संक्षिप्त समुच्छ्रयात

माता पिता के वीर्य दोष और अपने पूर्व जनम के किये हुए अशुभ (पाप) कर्मों से गर्भस्थ मनुष्यों को वीर्यवाही नसों में वातादि दोष प्राप्त होकर उनको नष्ट देता है। वीर्यवाही नसों के नष्ट होने से वीर्य भी नष्ट हो जाता है उससे वह मनुष्य स्त्री के साथ भोग करने पर भी गर्भोत्पत्ति होने देता है अर्थात् नपुंसक होता है।

ये सब लक्षण नपुंसकों की असाध्यता के कारण स्वरूप हैं।

चिकित्सा

अब थोड़ी चिकित्सा का दिग्दर्शन मात्र करा ग्रंथ समाप्त करेंगे। प्रथम देश, काल प्रकृति का विचार कर पञ्चकर्म द्वारा शरीर की शुद्धि करे॥ आजकल पञ्च कर्म कराने की प्रथा उठ सी गई है कोई २ सज्जनों कहीं २ करते हैं किंतु आजकल के रोगी अधैर्य चित्त होने के कारण सज्जनों को भी पञ्च कर्म कराने में भय लगता है॥ यदि धैर्य चित्त रोगी भी मिल जाय तो पञ्च कर्म करानेवाले निपुण सज्जनों का मिलना कठिन है इसलिये साधारण दुस्ले के कोष्ठ शुद्ध करें या साधारण कोष्ठबद्ध चूर्ण दे धीरे २ मल शुद्ध करे पश्चात वीर्य दोष को निश्चय कर उसके सुधारने की चेष्टा करे॥

वाजीकरण योगोक्तैरुदयोगैःसुखैहितैः॥
रक्त पित्त हरैर्योगैर्नित्यापदिकैस्तथा॥
दुष्टं यथा भवेद्रेतस्तत्तत्स्तत्समुपाचरेत्॥
घृतंच जीवनीयं यच्छ्यवनप्राशएवच॥
[illegible]

राकेश



"राकेश" के एक प्रसिद्ध लेखक—

श्री रविशंकर अम्बाशंकर जी शास्त्री,

अध्यक्ष श्रीकपिल आयुर्वेदिक फार्मेसी, घाटकोपर बम्बई।

दी. बी. एन. प्रेस इटावा में छपा।

दूषित हुए वीर्य (शुक्र)की चिकित्सा वातनाशक योगों से रक्त पित्त नाशक योगों से और योनि दोष नाशक योगों से करनी चाहिये ।जीवनीय घृत, च्यवनप्राश और शिलाजीत का प्रयोग करनेसे वीर्य के दोष दूर होते हैं यदि वीर्य वातसे दूषित हो तो वातनाशक वाजीकरणादि प्रयोगोंसे वीर्य शुद्ध करे । इसी प्रकार पित्त और कफ से दूषित हुए वीर्य को भी शुद्ध करे इसी प्रकार दोषों के अनुसार औषधि प्रयोग सर्वत्र करना चाहिये । अब यहां कुछ उदाहरण देते हैं । यथा—

वात दूषित वीर्य में जीवनीय घृत, अश्वगन्धा घृत, तथा बला के पांच बीज शुक्र शोधन वृष्यादिक आदिकों का पाक घृत अवलेह हितकारी है। पित्त दूषित वीर्य में-विल्वी रसायन, च्यवनप्राश, आमृतावलेह; त्रिफला रसायन, कामदेव घृत फलघृत तथा इक्षुरस, मूसली, सतावरी, विदारीकंद, तालमखाना, आमलक आदि योंका प्रयोग उत्तम है । कफ दूषित वीर्यमें शिलाजीत, हरीतकी, रसोन, वंशलोचनादिकों का योग हित है। इसमें मल्लातक प्रयोग भी श्रेष्ट है ।

सब प्रकार के शुक्र दोषों में घृत, दूध, शाली चावल, जौ, गेहूं, और शालीचावल हितकारक है । विशेष कर वीर्य विकारोंमें वस्ति कर्म का प्रयोग श्रेष्ट होता है शुक्रदोष की शान्ति के लिये जिन औषधियों का वर्णन हो चुका है उन्हीं औषधों का प्रयोग कर्तव्य दोष की शांति के लिये अ करना चाहिये । जो अत्यन्त मैथुन करने से नपुंसक हुआ हो उसको मैथुन का परित्याग करा वृष्य योगों का सेवन करावे ।

बीजोपघात नपुंसकता में वाजीकरण प्रयोग— ध्वजभंग में प्रलेप परिषेक, दुष्ट रुधिर का निकलना, स्नेह पान, स्नेह विरेचन आदि सम्पूर्ण व्रण नाशक क्रिया जरा स्राव और क्षय जन्य नपुंसकतामें भृङ्गिराज शोधन वृष्ययोगों से सिद्ध दूध घृत, वृष्य योग और वस्ति और रसायन प्रयोग करना चाहिये । अब संक्षेप से कुछ वाजीकरण और अनुभूत प्रयोग लिख निबन्ध समाप्त करते हैं ।

वाजीकरण प्रयोग

मूसल्यादि चूर्ण, अश्वगन्धा चूर्ण शतावर्यादि चूर्ण, लवंगादि चूर्ण, कामदेव घृत, बलाद्रव्य, मदन मंजरी, कामेश्वर गुटिका सब प्रकार की कमजोरी निर्मूल करने में अद्वितीय है स्थानाभाव समझकर से इन प्रयोगों का पाठ नहीं लिखा जिन सज्जनों को जिस औषधीके पाठ की आवश्यकता हो पत्र द्वारा पूछ लें ।

अनुभूत प्रयोग ।

१–उत्तम बङ्ग भस्म और असली जहर मोहरा खताई भस्म समान भाग मिला २ से ४ रत्ती की मात्रा ले कच्ची हल्दीका रस, आंवले का स्वरस और मधु मिला चाटा जाय । इसके ४० दिन सेवन से

कमीपना जाती रहती है। और प्रबल वीर्य पात को ३ दिन में ही रोक देता है।

२—स्वर्ण बङ्ग, मकरध्वज, स्वर्णभस्म तीनों को समभाग ले १ से २ रत्ती की मात्रा में मक्खन अथवा मलाईके साथ खाट ऊपर ऊपर से दूध पीवें। इसके कुछ दिन सेवन करने से और पथ्यमें खूब दूध अधिक पीने से वैसी ही कमीवला क्यों न हो आराम हो जाती है।

स्वर्ण बङ्ग ॥) भर छोटी इलायची के दाने ॥ चूर्ण आधी छटांक दोनों को मिला ४० मात्रा बनावे एक मात्रा प्रति मुबह मधु मिला खाट ऊपर से दूध पीवे परम पुष्टि कारक है।

३—निद्रा-सेर भर बढ़िया गोदन सफेदी को नीबू में एक छटांक वीरबहूटी डालकर धूप में पीड़ दे एक सप्ताह बाद तेल को छानकर खोवा, लोबान, दालचीनीका तेल लवङ्ग तैल और कपूर प्रत्येक आधा २ तोला डाल दें। सोने के वक्त इन्द्री पर मालिश करने से सदी की दुर्बलता शैथिल्य दूर होकर पुष्टि और मैथुन करने की शक्ति आती है।

४—आजकल के मौसम में एक तोला बराबर का दूध ६ माशा मिश्री मिलाकर पी जावे इस दवा के प्रभाव से घोर प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र पथरी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है बदन में तरावट और ताकत शीघ्र मालूम हो जाती है। आंखों वारका आजमाया है।

प्रमेहभानुश रस।

शुद्ध एक पल पारेको एक महीने पर्यन्त धतूरे के रस में घोटे फिर १० दिन आंकोट के रस में डाल कर एक दिन रात्रि औटावे दूसरे दिन निकाल जल से धो डाले फिर इसमें ४ तोले गन्धक डालकर कज्जली कर और ६ माशे स्वर्ण के वर्क इसी कज्जली में डाल कर घोटे। जब पारा और सुवर्ण ही रूप से बन्द हो जावें तब इस कज्जली को आतशी शीशी में भरके बालुका यन्त्र में स्थापन कर १२ पहर की अग्नि देकर स्वांग शीतल होकर शीशी निकाल लेवे। फिर इसको फोड़ रस को निकालें। फिर खरल में डाल के तीन दिन खरल करें तथा अरणी और चमेली के रस में एक २ दिन घोट, फिर एक दिन तालमखाने के रस में घोट इसका गोला बनाय लेवे। इस गोले पर कपड़ मिट्टी कर दो दो अंगुल मोटी मिट्टी चढ़ा दे और धूप में सुखा पांच सेर अरणी उपलों में धर कर फूंक देवे। परन्तु अधिक अग्नि न लगे, अग्नि २ अग्नि दे जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकाल इस रस के समान त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपल) वेदान्त की भस्म चमेली के फूल लेवे और लौंग तीन भाग मिलाकर रस २ भाग लेकर रूपा रस कान्त लोह की भस्म बिष काली मिर्च वङ्ग की भस्म प्रत्येक ३ ३ भाग लेवे अफीम स्वर्ण मक्षी की भस्म यह आधे २ भाग लेवे इन सब को खरल कर बाद।

बरा कपास के फूलों के रस से तथा सतावर विदारीकंद बांसा मान करेटी सेमर कौंच के रस की भावना देवे फिर सौंफ अजमोद, गोरखमुण्डी, नागबला, मुलहटी, हस्त कन्द इनके रस में इस रस को लटकाय दौला यन्त्र में औटावे फिर इसमें से निकाल समुद्र सोख के तेल की और धतूरे के बीजों के तेल की २-२ भावना देवे फिर इस पर मिट्टी का सम्पुट करके पूर्व प्रकार ३ बार अग्नि दे जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकाल कर खस के रसकी भावना देवे फिर गिलोय के रस और कस्तूरी के के जल की भावना देवे तथा आंवले के रस और सफेद कमल के रस की भावना देवे तो यह प्रमेहनांकुश रस बन कर तैयार हो इसमें चतुर्थांश भोलसेनी सूर मिलावे ४ या ६ रत्ती के अनुमान नित्य लोग मिश्री केसर के साथ सेवन करे और ऊपर से दूध पिये इस रस के सेवन करनेवाले को खटाई सर्वथा नहीं खाना चाहिये जो मनुष्य इसका सेवन करे तो स्त्री प्रसंग में उस प्राणी को कदापि वीर्य नहीं निकले भदोष नाशक बलवान स्त्रियों के गर्व का नाशक अत्यन्त स्तम्भन कर्ता स्त्रियों को वशी करण करने वाला है पुरुष का लिङ्ग सदा चैतन्य रहे दूसरे दिन स्खलित हो हीन बली अत्यन्त बली हो जो प्राणी इस रस को सेवन करके ३ दिन पर्यंत स्त्री प्रसंग न करे तो उसके नेत्र फटकर बड़े नेत्र सारे जावें तथा उसे शिथिलता कमर का दर्द पास न आवे सुवर्ण के समान कान्ति हो १८ प्रकार के प्रमेह नष्ट हों नष्ट वीर्य अपार वीर्यवान हों नपुंसक पुरुष भी इस रस के प्रताप से घोड़े के समान अत्यन्त मैथुन करे और बलवान रूपवान पुत्रों को प्राप्त करे यदि इस रस को स्त्री सेवन करे तो बुड्ढी भी कुमारी समान अवस्था वाली हो और भग ऐसी सकुचित हो जावे कि कुत्ता पुरुष भी गमन न कर सके। यह प्रमेह नांकुश नामक रस है यह बुद्धिनाथ सिद्ध ने कहा है इससे बढ़कर दूसरा रस नहीं है।

(नपुंसक संजीवनसे धृत)

कृष्ण सर्प वसाञ्जन

—☉*☉—

यह अञ्जन काले सांप की चर्बी तथा कई नेत्र रोग नाशक औषधियों के मिश्रण द्वारा तैयार शुदा अनुपम आयुर्वेदोक्त औषधि है। इसके सेवन से आंखोंका फूला मांड़ा, जाला, पटल रोग आदि सब नेत्र रोग दूर होते हैं। यहां तक कि अन्धा मनुष्य भी देखने में समर्थ हो सकता है। मूल्य फी तो० ४)

पता—मैनेजर श्री भगवत आयुर्वैदिक फार्मेसी दयालोकपुर (इटावा)

१— अनुभवसार

[लेखक—कविराज पं० शशिकान्त मिश्र वैद्यशास्त्री हलौर]

शम्भुस्वयंभु हरयो हरिणेक्षणानाम्।
ये चक्रुरन्त सततं गृहकर्मदासः।
बाचामगोचर चरित्र विचित्रिता।
तस्मै नम भगवते कुसुमायुधाय॥

जिसने अपने कर्त्तव्य से शिव, ब्रह्मा और विष्णु को भी स्त्रियों के गृहका कार्य करने के लिये दास बना रखा है। और और विचित्र चरित्र में परम चतुर और विलक्षण हैं जिसकी चतुरता का वर्णन नहीं हो सकता, ऐसे भगवान पञ्चशर कामदेव को बारम्बार नमस्कार है।

पाठकों के समक्ष आज हम ऐसी बात का वर्णन करेंगे जिसकी कि इच्छा धनीसे लेकर गरीब तक एक समान है। गरीब क्या अमीर क्या सब ही आनन्दके लिये इच्छुक हैं।

वर्तमान समय में कोई गृहस्थ ऐसा निकलेगा जो सुखी हो, सिर्फ रेशमी कपड़े या बढ़िया २ सूट पहनने से ही सुखी नहीं होते गृहस्थ का सुख या आनन्द दूसरा ही है। यदि स्त्री को गृहस्थ में पति सुख नहो तो वह अपने अच्छे २ आभूषण और कपड़ों के होने पर भी लात मार कर चल देती है या घर के अन्दर पड़े २ हिस्टिरिया और क्षय की शिकार हो जाती हैं। आज हमें भी उन दवाओं का वर्णन करना है जिससे वे सुखी हों।

जो मनुष्य अधिक स्त्री सहवास करें परन्तु वाजीकरण पदार्थों का सेवन नहीं करें उनको शुक्रक्षय, ध्वजभंग, शिथिलता हो जाती है। वास्तव में बात है भी ठीक इसी कारण से हम को चिकित्सा काल में ऐसे विचार बहुत मिलते हैं।

उनके लाभार्थ हम कुछ गिने चुने प्रयोग लिखते हैं।

मदन मंजरी गोली

अभ्रक ४ भाग, वङ्ग २ भाग, मकरध्वज १ भाग, इन तीनों के बराबर भाग चूर्ण ले फिर चातुर्जात मिर्च जायफल, पीपल, सोंठ, लौंग जावित्री ये सब २-२ भाग ले सब का चूर्ण कर सबसे दुगनी

मिश्री मिलाये तथा घृत, थोड़ा शहद मिला १ र ४ मा० के लड्डू बांधकर र लें १ लड्डू प्रतिदिन सेवन करो। वीर्य की वृद्धि होती है स्तम्भन होता है।

लक्ष्मी विलास रस

शु० कुचला, सुहागा भस्म, मिरच, जावित्री, जायफल, कौंच के बीज, प्रत्येक ६-६ मा० लौह भस्म २ तो०, गन्धक १ तो, शु० पारा १ तो०. सब को मिलाकर भांग, भूमिआमला, विदारीकंद सब की १-१ भावना देकर ३ २० की गोली बना लो यह वीर्य को पुष्ट करता है उत्तेजनाजनक है।

कामोदीपक गुटिका

शु० शिंगरफ, केशर, जायफल, सोंठ, लौंग तालमखाना, कौंच के बीज, वंशलोचन, अदरकरा जावित्री, सबको समान भाग लेकर कपड़ छन कर भांग के रसमें एक भावना देकर ४ रत्ती बना लो यह उत्तेजना पैदा करता है वीर्य बढ़ाता है।

रति प्रिया गोली

कस्तूरी दो माशा, लौंग ४ मा० जावित्री, जायफल, रस सिंदूर लौह भस्म सब ४-४ मा० लेकर गोली तैयार करे रति से १ घन्टा पहले दूध से खाय। स्तम्भन करती है। नित्य सेवन से लिंग शिथिलता नष्ट करता है।

कौंच पाक

कौंच जावित्री, एला, जायफल, अस-गन्ध, ये ८ पाव, इन को १८ सेर दूध में गेर मावा तैयार करे जब गाढ़ा होने को हो तब उतार ले आध सेर घी में भून ले।

कौंच १ सेर, असगन्ध १ सेर इनको चूर्ण और तीन सेर खांड पाक की विधीसे तैयार करे। चातुर्जात, त्रिकुट, जावित्री, जायफल, लौंग, दालचीनी, मूसली अकरकरा, धनियां, जीरा, सहदेवसोख, प्रत्येक का चूर्ण १२ तो०। वंशलोचन, तौड़, अभ्रक, वङ्ग प्रत्येक ८-८ तो०, चन्द्रोदय, ताम्रभस्म ४-४ तो० अफीम ४ तो० भांग ३२ तो०। उसमें डालकर पाक बनाये यह प्रातःकाल २ मा० शाम को १ मा० प्रति दिन सेवन दूध से करे। शरीर कान्तिमय हो जाता है, प्रमेह नष्ट करता है वीर्य की पुष्टि करता है। कास, शोथ, हिचकी आदि रोगों को दूर करता है।

द्राक्षा पाक

मुनक्का रस, ३२ तो० (या अंगूर का स्वरस ३२ तो०) दूध ३२ तो० मिश्री ५० तो० पाक तैयार बना लो। फिर इसमें नीचे की दवायां मिला दो।

दालचीनी, छोटी एला, नागकेशर, मिरच, सोंठ, ३-३ मा० पीपल ४ मा० केशर जायफल, जावित्री, बिनौला गिरी १-१ तो० लौहभस्म, १ तो० चांदी प्रवाल, अभ्रक, स्वर्णवङ्ग १-१ तो० स्वर्णभस्म १॥ मा० कस्तूरी १॥ मा०। सबों को मिला

पाक विधि से तैयार करके उतार लो। ३-४ मा० दूध से खाओ खाने से या कुछ दिन सेवन से मालूम हो जायगा कि शरीर में कहां से बल चला आ रहा है।

यह वीर्य को गाढ़ा करता है शरीर की जलन को भी फायदे मन्द है।

कूष्माण्ड पाक

छिला तथा बनाया हुआ पेठा ४०० तो० जल में उबाले जब गल जावे तब आध सेर शकर की चासनी कर उसमें गेर दे त्रिफला, चातुर्जात, शतावर त.ज्म-खाना, कौंच, मुलहटी, कचूर सैंजलमूसली जावित्री, जायफल, पीपरामूल, लौंग केसर, विदारीकंद, । मुसली सिंघाड़े, खरेटी, चिचक, असगंध सब ४-४ तो० घी १ सेर डालकर पाक विधि के अनुसार तैयार यह दिमाग को शक्ति देता है शरीर को पुष्ट करता है पांडु प्रमेह को नष्ट करता है खास कर रक्तपित्त को फायदा करता है।

स्तम्भन प्रयोग

पारद १ तो० को अफीम के पानी में खरल करे फिर धतूरा के रस में खरल करे। फिर खांड़ गेर कर खरल सेवन करे स्तम्भन करता है।

जायफलादि

जायफल, अकरकीजड़, अकरकरा, लौंग, कंकोल, के र सबके बराबर अफीम गेर गोली बनाले रति से पूर्व दूध से १ गोली फिर आनन्द सागर में मग्न हो।

सौभाग्य गुटिका

शु० पारा १ तो० शु० गन्धक १ तो० केशर, लौंग, अकरकरा, अजमोद, सहदेवी, जावित्री, जायफल, प्रत्येक १-१ तो०, अफीम २ भाग खरल कर दो ३ रत्ती की गोली बनावे रतभन करता है।

रूप मोहनी बटी

लौंग, जायफल, जावित्री, कंकोल, मखाना, केशर भाग और भांग आध भाग तथा भाग से आधा बरसनाभ और बरसनाभ से आधा अफीम लेवे सब इकट्ठा पीसकर भांगरे के रस में घोटे फिर १ र० की गोली बनावे। यह संमोहनी बटी प्रति दिन दूध के साथ सेवन करने से वीर्य का बन्धन करती है नपुंसकता को नष्ट करनेवाली है इसके सेवन से अपूर्व ही लाभ होगा कई बार अनुभूत है।

कनक सुन्दरबटी

धतूरे के बीज के रस में मर्दन किया पारा १ तो० शु० गंधक २ तो० अफीम ३ तो० जायफल ४ तो०।

इस को खस रस के क्वाथमें खरल कर १ र० की गोली बना ले रति से पूर्व एक गोली दूध से खावे फिर मजा देखे।

मदन गोली

अफीम विष, कपूर, कस्तूरी, पीपल समुद्र शोष धतूरे के बीज वंशलोचन, जायफल जावित्री।

सब को समान भाग लेकर भांग के रस में घोट कर गोली बना ले एक गोली

क्रीडा से पूर्व दूध से ले फिर आनन्द सागर में निमग्न हो जावे।

कुच मर्दन बटी

कटेहली के बीज-निगुन्डे के बीज सफेद शोप हुलहारा केशर जायफल धतूरेका बीज माजूफल अफीम (सबसे आधी) भांगके बीज के क्वाथ में भावना देकर १-१ रत्ती की गोली बनाकर इस्तेमाल करे रति से १ घन्टा पूर्व वीर्य को स्तम्भन करता है। उत्तम वाजीकरण है।

तिलायें

१—जायफल जावित्री मालकांगनी श्वेत गोरखी कनेर छाल १०-१० तो० कुष्ट १ तो० जायफल १ तो० इनको कूट कर दूध में पकावे फिर जमा दे घी निकाल ले इस को लिंग पर लगावे शिथिलता दूर हो।

२—शकर की चटनी मर्दन करने से उत्तेजना होती है मोटा पन बढ़ता है।

३—मालकांगनी कूट कनेर छाल इन का कल्क से तेल पका कर रखे फिर उसमें जावित्री कूट असगन्ध बड़ेली बीज जायफल सफेद गुंजा इन को पीसकर तेल में मिला दे थोड़ा सा मोम मिलाकर मर्दन करने से टेढ़ापन शिथिलतादि नष्ट होती है

४-सिंह की चरबी सांडकी वसा सूअर की वसा १-१ छटांक बन्दर की वसा २॥ तो० और बन्दर की इन्द्री १ जायफल लौंग बच कूट सबों को पीसकर वसा में गैर कर धूप में रखो बर्तन कुछ टेढ़ा कर के रखना चाहिये। धूप से एक तरफ तिघल बसा आ जायेगी उसको इन्द्री पर लगाना चाहिये यह लिंग को मोटा मजबूत करती है नपुंसकता को नष्ट करती है।

५—श्वेत कनेर मूल छाल आध सेर मदार की २ छ० दूध में उबाले जमाकर घी तैयार कर ले इस घृत में बच लौंग अकरकरा जायफल दालचीनी १-१ तो० पीसकर मिला दे यह लिङ्ग पर मर्दन करने से शिथिलता को नष्ट करता है।

लेप बटी

सफेद कनेर की जड़ की छाल अकरकरा अजमोद धतूरे के बीज जायफल सब को पीस वेर के बराबर गोलियां बनावे जब रति क्रिया करनी हो, इस गोली को घोड़े के मूत्र में या मनुष्य के मूत्र में घिस कर के लेप करे तो स्तम्भन करे।

१—सूअर की चरबी मर्दन करके स्त्री के पास जाय।

२-असगंध को धतूरे के रस में पीस कर के फिर भैंस का घी डालकर घोंटे। एक धतूरे का फल अन्दर से खाली करके उस पर भर दे फिर २० दिन बाद निकाल लेप करे इस से लिंग स्थूल हो जाता है।

३—कमल नीलोफर इन को दूध और घी के योग से गोली बना ले इस गोली को (यह वर्ती जैसी तैयार करे) योनि में रखने से योनीका संकोच हो जायेगा।

४-भांग की पोटली को योनिमें धारण करने से संकोच होता है।

५-जायफल दारुहली अफीम तीनों के बराबर भांग पीस कर बत्ती बनाने। इस बत्ती से योनि संकोचन होता है।

साधारण प्रयोग

मूसली चूर्ण को कन्या रसमें खरल करके नित्य प्रति ४-४ माशा खानेसे वीर्य की वृद्धि होती है।

२-गोखरू तालमखाना दोनोंको सम लेकर कूड़ छान चूर्ण करले दूनी खांड मिलाकर रोजाना ४-४ मा० दूध के साथ खायें तो वीर्य की वृद्धि होती है।

३-असगन्ध बांच दोनों को चूर्णकर ली पकते हुए दूध में ६ मा० घी डाल पहले पर इलायची कर पीलो इससे वीर्य की वृद्धि होती है।

४—कीकर के बीजों का चूर्ण २ मा० दुग्ध से प्रति दिन खाने से वीर्य वृद्धि पुष्ट होता है।

५-सफेद मूसली तालमखाना समुद्र शोष बांच के बीज मुलहठी समान भाग चूर्ण कर ४-४ मा० दूध से प्रातः खाये।

५-कैथर इलायची अजवाइन सफेद मूसली तालमखाना सफेद जीरा समान भाग दूध के साथ।

७-शतावर गोखरू बिदारीकंद सतगिलोय सूखली तालमखाना कौंच असगंध मिश्री बीजबन्द खरेटी के बीज सोंदरी काली मूसली बराबर जायफल लौंग इलायची गुंजा श्वेत भांग बीज ये सब समान भाग और वङ्ग भस्म सुवर्ण माक्षिक लौहभस्म अभ्रकभस्म ताम्रभस्म ये सब १-१ तो० सब को मिश्रित कर लो यह वीर्य को बढ़ाता है गाढ़ा करता है वैसा ही पतला क्यों न हो चेहरे पर रौनक लाता है वीर्य में रक्त स्तम्भन की शक्ति करता है।

---

* वैद्य *

सब से श्रेष्ठ सबसे सस्ता और सब से पुराना प्राचीन और अर्वाचीन वैद्य सम्बन्धी सर्वोत्तमोत्तम सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य १॥) वी० पी० से २) रु०

इसके १७ वें वर्ष की प्रथम संख्या विशेषाङ्क रूप में प्रकाशित हुई है जिसकी अनेक विद्वानों के बड़े महत्व पूर्ण लेखों तथा चित्रों से सुसज्जित किया गया है विशेषाङ्क देखने योग्य है मूल्य ॥) परन्तु एक वर्ष के लिये ग्राहक होनेवालों को वार्षिक मूल्य में ही दिया जायगा ॥ पता:- मैनेजर वैद्य आफिस मुरादाबाद

१२ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी मथुरा की बनायी हुई बहुमूल्य दवायें केवल समस्त भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी १२ साल से प्रसिद्ध हैं इनकी अपूर्व गुणकारिता का यही सबसे बड़ा सबूत है कि इतने दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है

सुधासिंधु

सभी प्रकारके के लिये कफ, खांसी, ज्वर, दमा, शूल, घाव, खून के दस्त, पेट की सभी बीमारियां, बच्चों की तीनों तरह के पेचिस दस्त, कै दूध पटकना, पेंडा, गठिया, बादी के लिये सुधासिंधु रामबाण है तुरन्त फायदा पहुँचाता है सुधासिंधु स्वादिष्ट है सुस्वादु है और सब सुलभ है मूल्य फी शीशी के अन्दर आठ आना।

बालसुधा

बच्चों के सभी रोगों के लिये इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं तिरोग लड़के तन्दुरुस्त होते हैं निर्बल लड़के बीमार होने लगते हैं बीमार बच्चे खुशी से पीते हैं कीमत फी शीशी ।।।)

दद्रुघ्न मलहम

नया पुराना चाहे जिस प्रकार का दाद हो इससे तुरन्त आराम होता है बाद के लिये ऐसी मूर्च्छक और शीतल दवा दूसरी नहीं है जलन तकलीफ वगैरह कुछ नहीं होती मूल्य ।)

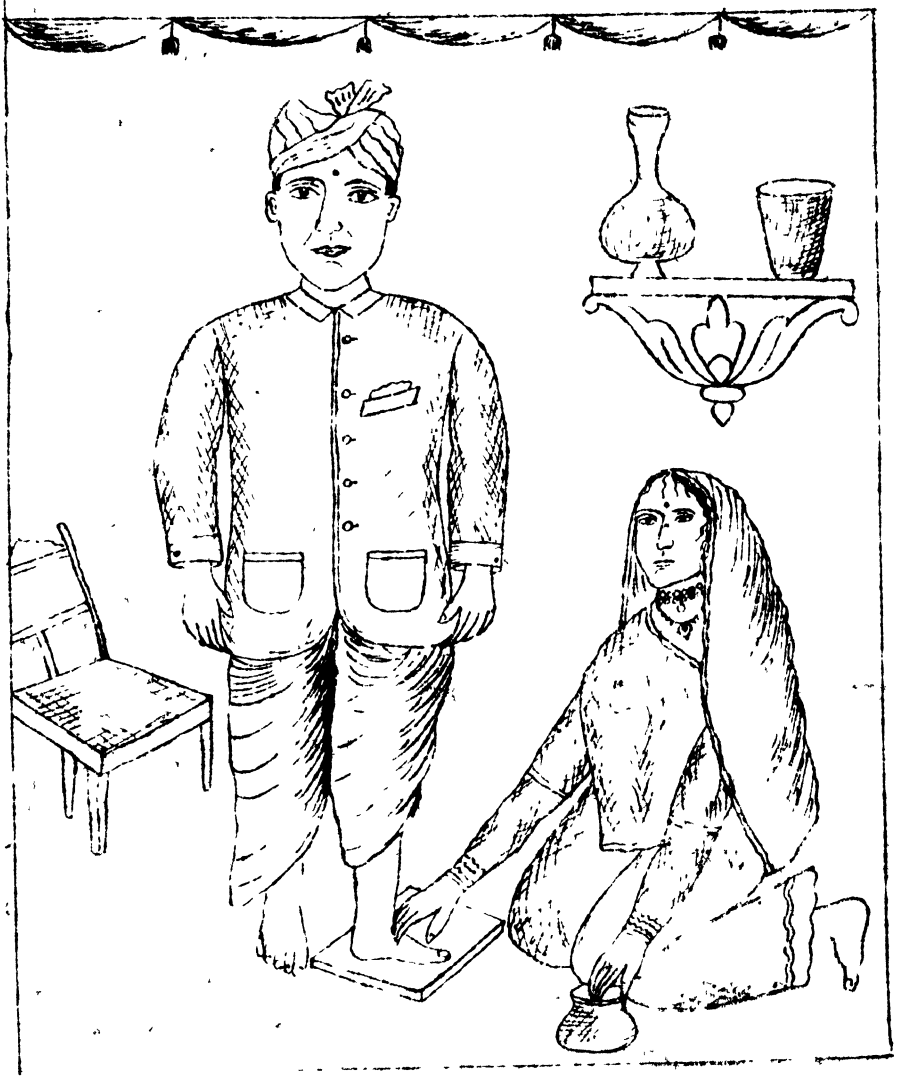
• यह दवाइयाँ भारत सरकार से भी रजिस्टर्ड है।

हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं। यदि आप के शहर कस्बा या गांव में न मिले तो इस पतेपर पत्र लिखकर मंगायें।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मँगवाइये)

मंगाने का पता- सुखसंचारक कम्पनी मथुरा।

प्राचीन ब्रह्मचर्य पुरुष स्त्री उन की पहचान स्त्री



पच्चीस वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य पूरी जवान हो जाती है।
स्त्री जवानी में पति पुरुष की पहचान है॥

नपुंसक पुरुष तथा यौवन मद स्त्री



(C. A. Press Etawah)

निष्काम नपुंसक पूरीबने क्यौंबैठे चरण दबैनि को ।
कामी ह्वैगे सब पूरी भई मरी लात जनैनि को ॥

एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब चीजें शास्त्रानुसार असली मिलेंगी नकली सिद्ध करने वालों को दोनों ओर के खर्च सहित दाम वापिस देंगे और उस का विज्ञापन हम लेंगे सबसे बड़ा स्टाक हमारे यहां है थोड़ा खरीदने वालों से भी हम मन के भाव से लेने वाले कम से कम २-३ सेर भर के अवश्य कम से कम १-१ पाव लेकर भी भाव करेंगे काम लेने पर दूना हम लेंगे। सब ही जड़ी बूटी मिलती है नाम लिखने का भाव रुपये। माल मंगाते समय कुछ दाम भेजने चाहियें दवामूल २०) की मन

दशमूल	२०) "
गोखरू	२०) "
अश्वगंधा छाल	४०) "
अतीस	८) प्रति सेर
शुद्ध मुलहटी	५) "
शुद्ध हरीतकी	८) "
शुद्ध शिलाजीत	४) "

पता:- मैनेजर बी० सी० गर्ग ए० डु को० ला० अरवाड़ देहरा दून

कृष्णवर्ग कोमर्सी देहरादून का
नवीन प्रभावप्रचार

मिश्रित अष्टवर्ग	२०) सेर	हिमालय मनन्नानी	२५) सेर
जीवक	४०) "	बिचपा	१५) "
ऋषभक	३०) "	वनकाकड़ा	२०) "
ऋद्धि	२५) "	लांगली	५) "
वृद्धि	२५) "	दूधमूल	५) "
मेदा	८) "	भांगबीज	५) "
महामेदा	६) "	सुदाल पत्राङ्ग	२०) "
काकोली	१२) "	कैसर	३) तोला
क्षीर काकोली	१८) "	पृथ्वीपी सिलाजीत	५) "
पुष्कर मूल-पसली	५) "	कस्तूरी उत्तम	६०) "
क्षीरविदारी कन्द	५) "	अम्बर	
नायकेशर नेपाली	२०) "		

नोट:- यथार्थ तथा शुद्ध जड़ी बूटी के खरीदारों को ग्राहक बनने के
लिये पत्र व्यवहार करना चाहिये पता:- कृष्णवर्ग कोमर्सी देहरादून

वैद्यक मनोरंजन.

क्लीवता प्रहसन।

क्लीवता रोग पर विचित्र प्रयोग।

प्रथम दृश्य.

धीरेन्द्र बाबू का बैठका।

(धीरेन्द्र बाबू व उनके सहचर व सहपाठी बैठे हुये हैं सामने उनकी युवावस्था को विशेष आनन्द देने वाले दलाल खड़े हुये हैं।)

धीरेन्द्र बाबू—मिस्टर मुनमुन बाबू (कान से लगकर) कल जिस वक्त मैं और आप बाजार में टहलने गये थे उस वक्त वह जो जोहरी का लड़का पान वाले की दूकान पर खड़ा था जिसको देखकर आपने यह संकेत किया था कि "अरे गज़ब के बिच्छू" और मुझसे आप कहने लगे थे चाहे कुछ भी खर्च होजाये मित्र परन्तु एकबार तो (प्रगट) बस जनाब बाजार से वापिस आकर फौरन ही उसका कुल पता बताकर अपनी जवानी की नौका के सहायक भोंदू कहार को भेजा था वह देखो आरहा है।

भोंदू कहार—बाबू साहब, अबकी बार माल करारा है, इसलिये इनाम भी करारी ही मिले हुज़ूर।

धीरेन्द्र—अरे भाई! इनाम की कोई बात नहीं खूब ही तुमको खुश किया जायगा। लेकिन उस कॉट की बाबत कहो, वह कैसे और कब मिलेगा।

भोंदू—बाबू साहब मैं बड़ा ही आपकी इस नायाब चीज़ के लिये हैरान हुआ हूँ, बाद को मैंने चन्द गुफ्तगू करने के बाद बाजार में टहलते २ दो आने के पान और ।।) आने की चाट खिलादी, तब कहीं उन्होंने मेरी तरफ मुखातिब हो कर सिर्फ इतना कहा कि जनाब आपका दौलतखाना कहाँ है मैंने कहा कि

मैं अमीनाबाद पार्क वाली गली के नुक्कड़ ही पर तो रहता हूँ, फिर मैंने भी पूंछा हुज़ूर यह फरमाइये कि आपका इस्ममुबारक कहां है और आप किस मुहल्ले में रहते हैं तब वह कहने लगा कि मेरा नाम जनाब राधेलाल है और नारायणगंज में रहता हूँ और गवर्नमेण्ट कालेज में पढ़ता हूँ, अहो भाग्य हैकि आप से मुलाक़ात हुई। तब मैंने बड़े ही मौके से बाबू साहब उस से सिर्फ इतना ठहराया कि कल आप अमीनाबाद पार्क में मिलें तब मैं भी अपने चन्द दोस्तों के साथ आपको पार्कमें ही मिलूंगा और तब टहलते२ इमामबाड़ा की तरफ़ गोमती की हवा खायेंगे, इस तरह पक्का बादा कराके अभी हाल ही आया हूँ, अब इनाम हुज़ूर।

धीरेन्द्र—(अपने दोस्त वृजकिशोर जी की तरफ इशारा करके) दोस्त ! इनको १) रु० अभी देदो जो कि इनका खर्च हो चुका है, बाद को मै घर जाऊँगा। अगर वालिद साहब घर न हुये तो मौक़ा मुनासिब कुछ रुपये लेआऊँगा, तब भोंदू को भी कुछ इनाम दूँगा; और आपका रुपया तभी दूंगा।

वृजकिशोर—बहुत अच्छा जनाब, (भोंदू से) भोंदू लो १) रुपया, और इनाम माल चखने के वक्त मिल जायगा।

भोंदू—(मुँह बनाकर) अच्छा साहब, लेकिन मेरा मंशा यह था कि कुछ रुपये और दे देते तो घर का जरूरियात सामान ले आता।

धीरेन्द्र—अजी भोंदू ! मैं वह इनाम दूंगा जिससे तुम खुश हो जाओगे, मगर मिहरबानी करके उस टायम पर आइयेगा जब मैं स्कूल से आ जाऊँ।

भोंदू—यह तो मैं पहिले ही जानता था हुजूर; इसी लिये तो शाम के चार बजे की कहदी है। (कहकर भोंदू जाता है।)

मुनमुन बाबू—(धीरेन्द्र और वृजकिशोर की तरफ इशारा करके) जनाब अगर यह पटाखा दस्तयाब होगया तो समझलो कि वहिश्त हासिल हुई।

वृजकिशोर—बेशक जनाब, है तो ऐसा ही। (सब अपने २ घर जाते हैं।)

दृश्य दूसरा.

स्थान—अमीनाबाद पार्क।

(भोंदू कहार को साथ में लिये हुये, धीरेन्द्र बाबू, वृजकिशोर टहल रहे हैं।)

धीरेन्द्र बाबू—(अधीर दृष्टिसे चारों तरफ देखकर) अरे मिस्टर भोंदू ! तुमने कैसा बादा कियाथा कि चार बज चुके और पटाख़ेकी अबतक इंतजारी है।

भोंदू—हुज़ूर आता होगा, मौक़ा पहिला ही तो है, (चारों ओर देखकर) वह देखो हुज़ूर जनाब आरहे हैं मगर उसके साथ में बुड्ढा कौन है, शायद उसका बालिद हो।

मुनमुन बाबू—ऐं क्या साथ में उसका बालिद है, तो मरे, आशा निराशा में परिणत होगई।

वृजकिशोर—चलो मित्र उसी तरफ़ चलें और बात करें कि यह बुड्ढा व्यक्ति मेरे माशूक़ राधेलाल के साथ में कौन है (सब उसके पीछे २ जाते हैं।)

राधेलाल—(अपने पीछे वालों को न देखकर) पिताजी ! श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर इटावासे आपने जोमेरे लिये 'स्वर्ण घटित सारस्वतारिष्ट' मंगाया था उससे मेरी स्मरणशक्ति बहुत ही तीव्र होगई है,मेरी समझमें यदि आप उन्हें ५१ सेर सारस्वतारिष्ट का आर्डर और देदें तो बड़ा ही उत्तम हो, कारण कि मुझे सारस्वत बड़ी मुश्किल से याद होता था, जब से मैंने स्वर्ण घटित सारस्वतारिष्ट का सेवन किया है तब से मेरी बुद्धि कुशाग्र होगई समझिये।

पिता—बेटा ! श्रीभगवत आयुर्वेदीक फारमेसी की तो समस्त औषधियाँ बड़ी ही गुणकारी हैं जभी तो मैं हर प्रकार की औषधियां वहीं से मंगाया करता हूँ, उसी फारमेसीके विज्ञ संस्थापकने एक आयुर्वेदीय उच्चकोटीका मासिक पत्र निकाला है उसे भी आज ही आर्डर देकर मंगाता हूँ जिसे पढ़कर तुम्हें चिकित्सा शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान हो जायगा। वास्तव में वह आयुर्वेद का अद्वितीय पत्र है—

धीरेन्द्र बाबू—(रुक कर) (भोंदू तथा दोनों मित्रों को इंगित करके) बस आज तो यह नायाब मिठाई मिलने से रही, अब इस मोतके मारे बुड्ढे का साथ छोड़ो।

सब—हां हाँ चलिये आज का मामला तो घिस पिस ही रहा, चलो बाड़े की तरफ से होते हुये गोमती के किनारे २ हवा खाते हुये रेलवे पुल होते हुये घर पहुँच जांयगे।

मुनमुन बाबू—तो अब जल्द चलिये, और भोंदू से कहदो कि शाम तक मौक़ा पाकर उस जहरीले से मिलें और अपनी बादाखिलाफी का तक़ाज़ा करें।

वृजकिशोर—ठीक है, (भोंदू को बुलाकर) अरे भोंदू तुम जाओ और मौक़ा पाकर बादाखिलाफी का कारण पूंछ कर कल को ठीक कर लेना, कारण कि

हमारे अधीर मित्र वृजकिशोरजी उसकी ब्यूटीको देखकर धोतीमें अच्छा साहब कह कर (भोंदू जाता है।)

धीरेन्द्र—और आप अपनी तो कहिये, जो सोते वक्त तक उसकी खूबसूरती को दिल पर नक्श कर उसके नाम पर करीब २ तीन बार हाथरस का टिकट कटाकर आनन्द लोगे—(तीनों कहकहा लगाकर हंसते हैं)

वृजकिशोर—(हंसकर) और आप क्या हाथरस के टिकटानन्द से रहित हैं।

धीरेन्द्र—मैंने तो दोस्त इल्म कसम १ महीनेसे बिलकुल ही हाथरस की सैर नहीं की वजह यह कि मेरी इन्द्रिय शक्ति पहिले के मुताबिक नहीं रही और मित्र क्या कहूँ मेरी मूत्रेन्द्रिय की जड़ (पिछला हिस्सा) बिलकुल पतली पड़ गयी है और अगला हिस्सा बहुत मोटा हो गया है।

मुनमुन बाबू—अजी यह कुछ नहीं मेरी इन्द्री की तो अर्सेसे ऐसी हालत है। लेकिन यहां तो जनाब वह गुपचुप की मिठाई अक्सर उड़ा करती है।

वृजकिशोर—भई इस किस्म की बातों में क्या रक्खा है चलो इमाम बाड़ा अर्से से क्या बल्कि पारसाल मुहर्रम के दिनों में देखा था—(कुछ रुक कर) हां और आप अपने अगले पिछले हिस्से का पतले मोटे का जिक्र कर रहे हैं और जनाब मेरा औजार तो जैसा का तैसा है न मोटा है और न पतला है जब मैं पारसाल नाइन्थ क्लास में फेल हो गया था उन्हीं दिनों से कुछ नीली २ नसें उभर आई हैं उनसे मेरी तो इन्द्रिय शक्ति में कुछ फर्क नहीं है हाँ इतनी बात जरूर है कि बहुधा सिगनल डाउन ही रहता है—इससे मुझे क्या।

धीरेन्द्र—अच्छा दोस्त चलो तो चलो वरना रात हुई जाती है—फिर पिता जी नाखुश होंगे कारण कि कल गौना की तैयारी करना है।

दृश्य तीसरा।

धीरेन्द्र बाबू की उम्र १६ साल की भी पूर्ण नहीं होने पाई इसी जीवन मध्य में गुदा मैथुन, हस्त मैथुनादि कुटेवों द्वारा कच्चे वीर्य को नष्ट कर इन्द्रिय शक्ति से रहित हो स्त्रीकी कामवासना को तृप्त करनेकी शक्ति क्या साहस तक नहीं रहा परन्तु इस विषय की परीक्षा अभीतक स्वयं न हो सकी—आज गौना होकर आया है, सुहागरात आज ही होने को है—पूर्व मित्रमंडली एकत्रित है।

वृजकिशोर—कहिये मिस्टर धीरेन्द्र आज तो आपको अमीनाबाद पार्क तथा जहरीले

बिच्छू की कुछ भी चिन्ता नहीं कारण कि आज तो आपको जहरीली नागिन से महुअर (सपेरे का बाजा) बजाना पड़ेगी।

धीरेन्द्र—हां दोस्त बात तो दुरुस्त है पर न मालूम आज हमारा हृदय स्त्री के नाम लेने से क्यों कम्पित हो जाता है।

मुनमुन बाबू—कम्पित क्योंकर न हो अभीतक तो आप चमड़े के जहाज (गुदामैथुन) की सवारी द्वारा तथा स्वयं हस्तक्रिया कुशलता द्वारा कामविलास रूपी समुद्र की लहरों को तै करते रहे—अब आपको कठिन लकड़ी की नौका (८ गुनी कामवासनायुक्त स्त्री) द्वारा अथाह समुद्र को तय करना है।

धीरेन्द्र—अरे यार तुम लोग तो मुझे विशेष लज्जित करते हो—इतने में भोंदू आकर पिता की आज्ञा को सूचित करता है कि अधिक रात व्यतीत न करें धीरेन्द्र को सोने को मकान में भेज दो—

धीरेन्द्र मित्रगणों से Good Night कर अन्दर सुस्त हृदय से जाता है।

धीरेन्द्र की भाभी—लल्ला ऊपर तिछत्ता पर जाकर लेटना वहीं आज सोने का प्रबन्ध किया गया है कारण कि.....आज तुम्हारी सुहागरात है—धीरेन्द्र और भी संकुचित होकर उत्तर देते हैं कि; नहीं, हम यहीं लेटेंगे।

भाभी—जबरदस्ती पकड़ कर ऊपर ले जाती है-जहां पर नववधू को लेकर एक दासी पहिले से विराजमान है—

धीरेन्द्र के पहुँचते ही दासी तथा भाभी जीने की जंजीर बन्दकर चम्पत होती हैं—

धीरेन्द्र की हृदय की धड़कन और भी बढ़ गई वह सोचता है क्या कारण है विषय तो वही उपस्थित है जिसके लिये हम नित्य पहिले अमीनाबाद आदि पार्क की धूल छानते थे—पर यहाँ पर फूलों की सेज सामने होते हुये हमारी यह दशा, कारण का पता दृष्टिगोचर नहीं होता—आखिर बहुत हिम्मत बांध स्त्री के पास जाता है परन्तु आलिङ्गन आदि सर्व क्रियायें करने पर भी इन्द्रिय शक्ति में चैतन्यता नहीं प्रकट होती। हार कर लज्जित होकर एक करवट लेकर विचारता है कि यह शायद हमारे पिछले कुकर्मों का फल सामने दीखने लगा-कारण कि एक बार हमने "राकेश" मासिक पत्र में "वीर्यरक्षा" और सामाजिक "व्यवस्था" शीर्षक प्रोफेसर रामकृष्ण जो द्वारा लिखित लेख पढ़ा था उसमें उन्होंने इन्हीं कुटैवों का वर्णन करते हुये यही खाका खींचा था परन्तु उस नशे में हमें कब होश था।

ऐसी ही चिन्ताओं में व्याप्त सवेरा हो गया धीरेन्द्र चिन्ता तथा जागरण के कारण से सुस्त था मुर्झाये हुये से दीखते हैं-आज न खाना है न पीना है-मित्रगण निश्चित समय पर ८ बजे आ गये।

वृजकिशोर—कहिये धीरेन्द्र बाबू आज रात तो खूब..... ...अरे भाई सुस्त बहुत दीखते हो क्या गोता अधिक खा गये।

धीरेन्द्र—चुपचाप है-रात का दृश्य स्मरण कर रोने लगा।

वृजकिशोर—क्या बात है मित्रवर-ये क्या।

मुनमुन—अरे भाई क्या जहरीली नागिन ने डस लिया।

धीरेन्द्र—अरे भाई आप दिल्लगी में मस्त हैं यहाँ जीवन मरण की समस्या उपस्थित है-रात का सब किस्सा मित्रों को सुनाकर अपना निश्चय प्रकट करता है कि मित्रगण या तो इस रोग से निवृत्ति के लिये उपाय कीजिये वरना हमारा तो निश्चय किसी भांति प्राण देकर स्त्री के सन्मुख लज्जा से मुंह छिपाना ही है।

मित्रगण—धैर्य कीजिये-साहस कीजिये-आपकी उम्र अभी थोड़ी है-मामूली विकार होगा शीघ्र ही आप औषधियों द्वारा कामदेव समान जीवन व्यतीत करेंगे।

दृश्य चौथा।

धीरेन्द्र ने हस्त मैथुन तथा गुदा मैथुन इस विशेषता से किया था कि उसकी इन्द्री टेढ़ी-लघु-पतली तथा बिलकुल बेकाम हो गई थी कई वैद्यराजों की औषधियाँ ग्रहण की, कई कारखानों की V. P. P. Paid कर औषधि इस्तैमाल की परंतु कुछ लाभ प्रतीत न होता दीखा-इधर स्त्री दिन दूनी रात चौगुनी यौवनपूर्ण हो धीरेन्द्र को देख सिसकी भर कर्म ठोंक रह जाती-जिस दृश्य को देख धीरेन्द्र और भी चिन्तित होता था-कई बार उसने प्राण हतन करने का उद्योग किया पर प्राण प्यारे समझ कर हिम्मत नहीं पड़ती थी आज तेज चाकू खरीद कर लाया है-और एकान्तवास कर छाती में भोंकने को हाथ चलता है।

इतने ही में किवाड़ पर धक्के की आवाज होती है और मित्र वृजकिशोर किवाड़ खोलने को आवाज देता है—चाकू छिपा कर रख देता है।

वृजकिशोर—यार आज हमने एक बहुत ही नामी वैद्य का पता लगाया है वह बहुत ही अनुभवी पुरुष हैं-आप एक बार अवश्य उनके पास जाकर सब

रोग विवरण सुना कर औषधि ग्रहण करें-मुझे पूर्ण विश्वास होता है कि अब की वार तुमको अवश्य लाभ होगा।

धीरेन्द्र--मित्र की वार्ता सुन धैर्य उत्पन्न हो चला वैद्य जी के पास जाने को मान लिया-और वैद्य जी का पता पूछने लगे।

वृजकिशोर--वैद्य जी का नाम जीवनलाल जी मिश्र है।

धीरेन्द्र—वैद्य जी के पास जाकर सब आदि से अन्त का कारण सहित रोगोत्पत्ति बतलाई।

वैद्य जी—रे दुष्ट प्रकृति के नियम के विरुद्ध इतना दुष्कर्म करने पर इस अवस्था को प्राप्त हो-अबतक तू मुंह दिखाने को जिन्दा ही है-जा हट हमारे सामने से "संखिया घोर कर क्यों नहीं पी लेता।"

धीरेन्द्र—वहां से चल कर घर पर आता है रास्ते में ही से संखिया खरीद कर साथ लाया है और दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह हमारे लिये सिवा इसके कि संखिया खाकर प्राण दे दूं-अन्य कोई शान्ति का साधन नहीं।

दृश्य पांचवां।

धीरेन्द्र ने अभी तक अपनी स्त्री से अपनी बीमारी का गुप्तरहस्य नहीं खोला था न उसको ही ज्ञात हो सका था कि यह नपुन्सक है कारण कि उससे तो धीरेन्द्र बराबर यही कहता रहा था कि मैं ब्रह्मचारी हूँ जब तक पढ़ूंगा-प्रिये तुमसे मैथुन नहीं करूंगा कारण कि बुद्धि तथा स्मरणशक्ति न रही तो इम्तहानमें फेल होजाऊंगा स्त्री विचारी इसी में सन्तुष्ट होकर रहती है—

परन्तु आज धीरेन्द्र ने संखिया घोलकर रख ली और साथ ही एक पत्र अपनी प्रिया को लिखकर रख दिया-जिसका मजमून यह था—

"प्राणप्रिये! आज तुम्हारा दर्शनमात्र का पति तुम को धोके में डालकर इस संसार से अपने कुकर्मों के फल से दुखित हो तुमसे अलग हो रहा है। अबतक गुप्त रीति से हजारों प्रयत्न कर छोड़े कि किसी भाँति तुमको मुंह दिखाने योग्य हो सकूं परन्तु सब व्यर्थ-आज आखिरी औषधि एक वैद्यकी बताई "संखिया" खाकर सदा को सोता हूँ।"

पत्र लिखकर छातीपर रख लेता है और संखिया पीकर लेट रहता है थोड़ी देर में एकदम बेहोशी-व्याकुलता प्रकट होती है-प्यास विदित होती है स्त्री को पुकार कर "मूर्छित अवस्था में अर्द्धस्वर से पानि-पानि कहता है स्त्री यह समझकर कि

पान मांगता है पान लगाने को दौड़ती है परन्तु पानदान में चूना न पाकर दुःखित होती है पर बुद्धिमती होने के कारण फौरन युक्ति सोचकर अपनी बालियों से मुक्ता निकाल कर चूना तैयार करती है और बराबर पति की हर मांग पर पान उसी मुक्ता चूना का बनाकर देती है-जैसे ही पान तथा मुक्ता का असर शरीर पर हुआ संखिया का विष "विचित्र अनुपान योग" से शान्त हो जाता है और शरीरमें अद्भुत शक्ति का प्रकाश हो जाता है।

सुबह धीरेन्द्र जागता है और अपनी इन्द्रियशक्ति तथा आकार प्रकार को देखकर दङ्ग हो जाता है और अपनी काया पलट देखकर प्रफुल्लित होता है—स्त्री भी उसको रात के पान खाने पर चूना न होने पर मुक्ता का प्रयोग करना वर्णन करती है।

धीरेन्द्र—मन में विचारता है कि अवश्य ही वृजकिशोर का कथन सत्य था कि उक्त वैद्य विशेष अनुभवी हैं—अवश्य ही उन्होंने मुझको संखिया का प्रयोग करने को बतलाया होगा—सुबह होते ही वैद्य जी के पास सहस्रमुद्रा लेकर पहुँचता है और पैरों पड़ सब औषधि सेवनविधि बतलाता है—

घर आकर धीरेन्द्र अपने कुकर्मों की ईश्वर से क्षमा चाहता हुआ भविष्य में सिवा निज स्त्री सम्भोग के अन्य मैथुनों से बचने की प्रतिज्ञा करता है।

वैद्य जी मन ही मन विस्मित हो संखिया तथा पान और मुक्ता अनुपान को ही "विचित्र नपुन्सकता नामक" योग समझकर सिद्ध प्रयोग पा प्रसन्न होते हैं और अनुभवी डायरी में नोट कर लेते हैं।

उपसंहार.

प्रिय युवको! उपरोक्त प्रहसन से आपको पूर्ण पता चल गया कि बचपन की कुसंगत से हस्त मैथुन, गुदा मैथुन आदि कुटेवों से मनुष्य पुरुषत्व से कितना हीन हो स्त्री के सन्मुख लज्जित हो प्राण नष्ट करने को उद्यत हो जाता है अतः ऐसी आदतों से सदा बचकर वीर्य की रक्षा करना चाहिये।

वैद्यगण! आपको भी उपरोक्त घटना से भली भांति विदित ही हो गया होगा कि संखिया के प्रयोग से तथा पान व मुक्ता के अनुपान से क्या ही विचित्र शक्ति नपुन्सकता हरण की प्राप्त हुई।



नपुंसकता वज्रभंग नाशक पेटेन्ट योग।

(ले०—सी० एल० वी० सिनगौड़ी कटनी सी० पी०)

शिलाजीत असली १ तो० केशर मोगरा १ तो० भीमसेनी कपूर ३ मा० पारद भस्म असली ६ मा० वङ्ग भस्म २ तोला स्वर्ण वर्क २५ अदद, शत यष्टी १। तोला शत गुरिच १। तो० असगन्ध १ तो० वृद्ध दारुक बीज १ तोला अकरकरा १ तोला इलायची दाना १ तो० सुमन यत्रिका १ तो० गंधेरन १ तो० सतावर १ तो० ताल मूली १ तो० गोखरू १ तो० लाल कमल बीज १ तो० कौंच बीज १ तो० खिरेंटी बीज १ तो० मदन मस्त बूटी बीज १ तो० प्रत्येक औषधियों को अलग २ चूर्ण करके फिर तोल २ कर खलदृष्टे में इकट्ठे कर कुमारी रस की एक भावना देवे और एक भावना शंखपुष्पी की देकर अर्क माशे की गोलियां बनाय छाया में सुखा लेवे अगर रोगी का मिजाज गर्म है तो किसमिस ६ मा० मिश्री १ तो० (विदारीकन्द, मूसली, मुलैठी तीनों सम भाग का चूर्ण) दो माशा, दूध ८॥ तो० और एक गोली सब अच्छी तरह सिल से रगड़ कर खिला देवे और ऊपर थोड़ा मीठा मिला हुआ एक पाव दूध पी जावे। और जो मिजाज साधारण (न सर्द है न गर्म है) उसे शहत ३ मा० दूध २॥ तो० उपरोक्त चूर्ण २ मा० और १ गोली सब को अच्छी तरह मिलाकर खिला देवे, इसी तरह प्रकृति के मुताबिक अनुपान से दोनों वक्त दवाका सेवन करावे। यह सब प्रकार की नपुंसकता वज्रभंग आदि रोगों को नष्ट करने में रामबाण है।

तिला विधि—

कुचिला, शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध मीठा तेलिया, कनक बीज, गन्धक, माल कांगिनी, केशर, जायफल, जावित्री, दालचीनी, लौंग, अकरकरा, असगंध, ढाक बीज, शामा हल्दी, रेंडी की गरी, प्रत्येक वस्तुएं सम भाग लेकर महीन कर अर्क दुग्ध की १ भावना देवे और एक भावना चमेली के तेल की देवे फिर आतशी शीशी में रख पातालयन्त्र द्वारा तेल निकाल शीशियों में रख लेवे और लिंगेन्द्रिय में सीवन और सुपारी को बचाकर धीरे २ मल देवे ऊपर धतूर पत्र या बंगला पान को थोड़ा गरम कर कच्चे धागे से बांध देवे सुबह खोल गुनगुने जल से धो डाले शीतल जल और वायु न लगने पावे। इस तिले से नामर्दी इन्द्री की शिथलता कमजोर होना नसौंका उभड़ आना बांकपन टेढ़ी होना प्रसंग के समय सुस्ती शीघ्र तेजी न आना आदि नसों की कमजोरियों को नष्ट कर लिंग का

मजबूत करता है प्रसंग के बाद तक कड़ाई बनी रहती है।

लेप विधि—

शुद्ध वत्स नाभ, शुद्ध ओपियम, स्वर्ण बीज, जायफल चारों को सम भाग ले महीन गो घृत से घोंट लिंगेन्द्रिय में लेप करे तो शिथिलता नष्ट कामदेव उत्पन्न होता है और वृद्धि को प्राप्त होता है यह लेप सर्वोत्तम चमत्कारिक है।

अनुभूत पाक और तिला।

प्रिय मान्यवर! यह पाक और तिला नपुंसकताके वास्ते बहुत ही मुफीद है मेरे सैकड़ों वार का आजमाया हुआ १५ वर्ष वर्ष से काम में ला रहा हूँ—

तालमखाना ३ तो० जावित्री २ तो०
जायफर २ तो० गोखरू बड़ी २ तो०
अकरकरा २ तो० सोंठ बड़ी २ तो०
कौंचके बीज २ तो० खरेंटी २ तो०
मुलहटो २ तो० उटंगनके बीज २ तो०
बंगेश्वर २ तो० सहत २० तो०
घी २० तो० मिश्री २ सेर
गाय का दूध ६ सेर

बनाने की विधि=

एक बड़ा नारियल का गोला (गरी) लेकर ऐसा काटे कि उसी में बैठ जावे फिर तालमखाना पीसकर उसमें भर देवे फिर बड़ का दूध उसी गोला में भर भर देवे सूत से लपेट दे, फिर कड़ाही में दूध डालकर उस गाले को छोड़ दे और औटे जब दूध गाढ़ा खोया हो जावे तब निकाल कर उस गोले को पीस डाले फिर घी कड़ाही में डालकर भूने, बादामी रङ्ग आने पर उतार ले बाकी दवा पीसकर रक्खे कौंच के बीज दूध में उबाल कर बकला दूर कर डाले मिश्री को चाशनी बनाकर कुल औषधियां और शहत डाल दे चार तोले के करीब लड्डू बनाकर खावें ऊपर से दूध पियें तो नामर्दी मिटे ताकत को करे है उत्तम बाजीकरन है इससे बढ़िया दवा बहुत सी होंगी मगर जिन्होंने खाया उसी को मालूम है कि कितना फायदा करता है। इस प्रयोग में जो बंगेश्वर डाला जाता है उसकी विधि यह है।

शुद्ध पारा ऽ- भर रांगा शुद्ध ऽ= लेकर रांगा गलाकर पारा डाल दें ठंडा होने पर छोटे २ टुकड़े कर रक्खे दो कंडे गोबर के ऐसे बनवावे, बड़े २ गोल चपटे दो दो पसेरी के यानी दस २ सेर के सूखने पर उसमें मेहदी की पत्ती सेर भर के करीब बिछावें फिर कसेरू ऽ२ सेर लेकर कूटकर आधी बिछा देवे फिर तीन २ अंगुल का बीच कर वह राँगे के टुकड़े रख दें ऊपर से कसेरू का चूर्ण डाल दें फिर दूसरा कंडा रख दें और आधा मन कंडा लगाकर फूंक दें और ठंडा होने पर निकालें बिलकुल सफेद फूल निकलेगा पीस कर रख छोड़े यही बंगेश्वर डालना चाहिये।

तिला—

बीर बहूटी २ तो० हाथी दांत २ तो० लौंग २ तो० जायफर २ तो० तेलिया मीठा

२ तो० रेहू मछली का पित्ता २ तो० सफेद गुञ्जा बीज २ तो० लाल गुञ्जा बीज २ तो० सुअर की चरबी २ तो० ऊसरसांडा ७ नग

कुल औषधियों का पाताल यन्त्र से तेल निकाल कर लिंग में लगावे ऊपर से बंगला पान बांधे २१ रोज तक तो हस्त मैथुनसे नपुंसकता या टूटी नसें आदि ठीक होवें लिंग को कठिन कर बाजीकरण है।

नामर्दी का तिला।

सफेद कनेर की जड़ लेकर २ सेर दूध में औटावे सेरभर बाकी रहने पर जमा देवे फिर घी निकाल कर उस घी में लौंग जायफल जाबित्री प्रत्येक चार २ तोला डाल पीसकर २१ दिन मिट्टीके बर्तनमें रख छोड़े फिर पातालयंत्र से तेल निकाल लेवे यह तेल लिंगमें मर्दन कर बंगलापान में भी यह तैल लगाकर आग में सेंककर लिंग पर बांध देवें ऊपर से कपड़ा बांध दें दोनों वक्त लगावें हस्तकर्म से टूटी हुई नसें जुड़ जाती हैं कामोद्दीपन बाजीकरण है कमी छाले फुन्सियां नहीं पड़तीं २१ रोज लगाने से सब शिकायतें रफा होंगी॥

वैद्य महावीरप्रसाद मु० पिंडखर
पो० बिसड़ा (बांदा)

सरल लेप तथा तिला।

(ले० रविशंकर अम्बाशंकर शास्त्री)

जायफल, छरीला, जावित्री, नर, (आदमी) का कान का मैल प्रत्येक छे माशे गधे का और बंदरका अंडकोष का रुधिर चार तोला लेकर शराब के साथ इतना खरल करे कि पावभर शराब उसमें सूख जावे फिर पट्टीपर लगाकर बांध देवे।

सफेद घुघची, अकरकरा, प्रत्येक छे माशे, कड़वे घिया तुरई की मींगी दो तोला, तेजबल,पीपरामुल प्रत्येक तीन माशे तीन दिन कपिला गाय के घृतमें खरल कर के लगावें और ऊपर से पान नागर वेल का बाँधें।

प्रमेह पर योग।

(प्रेषक—कुवर रन्धीर सिंह वर्मा वैद्य बाघौरा गवालियर)

अगर मोचरस ल्याय के, श्याम मूसरी संग।
सेत मूसरी सुघड़ लखि, बहुफरी अनि रंग॥
छोटी दुधी ले देखि, सूखी लसौड़ ले आइयो।
कौंच बीज मंगाइकें, फिर बीजबन्द मगाइयो॥
ल्याय मस्तंगी करो, चूरण बराबर सब रहें।
अर्ध सबसे मिले मिश्री, सूख सबताकों कहें॥
सुबह चूरण खाय के, फिर गाय पय कों पीजिये।
बीज बाढे अति घनों, इक्कीस दिन यों कीजिये॥

वैद्यकरों के उत्तर

उत्तर नं० ३६

कुंवर रनधीर सिंह वैद्य जी !

आप के मुंह से ऐसी अयोग्य बात निकलना शोभा नहीं देती है क्योंकि आप आयुर्वेद प्रेमी होते हुये भी यदि आप यह कहते है कि आयुर्वेद में कोई ऐसी दवाही नहीं है तथा दुनियां में कोई वैद्य, डाक्टर तथा हकीम भी नहीं है जो कि बहते हुये कान को बंद कर सके। ठीक है जब कि आप आयुर्वेद ही पर आक्षेप देते हैं तब अन्य लोगों की क्या कही जाय ! अजी साहब ! वैद्य, डाक्टर आदिको आप भले ही कहें किन्तु आयुर्वेद को ऐसा कहना केवल भ्रम मात्र है क्योंकि आयुर्वेदमें एक से एक बढ़कर अनेकों महत्व पूर्ण औषधियां प्रस्तुत हैं किन्तु क्या किया जाय कुछ दिनों केलिये प्रायः लुप्तसी होगई थीं तथा इधर कुछ जनता का विश्वास भी कम हो गया था इसका खास कारण एक तो अपनी अज्ञानता और दूसरी इन्हीं विज्ञापन वालों की काली करतूत ! किन्तु अब न तो यही कारण रह गये न तो वही, अब दोनों बात क्रमशः दूर होती जारही हैं यदि श्री धन्वन्तरि भगवान् की कृपा रही तो यह आयुर्वेद पुनः अपना सितारा उसी उच्च कोटि में चमकायगा। हां इतना तो अवश्य है कि अब भी विज्ञापन वाले अपनी कूट नीतिसे वंचित नहीं होतेहैं जिससे कि आपने भी आवेशित होकर ऐसा कहने का साहस किया है यदि ईश्वर की कृपा होगी तो अवश्य वंचित होवेंगे। आप मुझसे पत्र व्यवहार करें, मैं आपको दवाबनाकर केवल डाकव्यय लेकर सुख भेज दूँगा आप परीक्षाकर गुणावगुण यदि "राकेश" में सूचित करेंगे तो मैं उस योग को भी प्रकाशित करा दूँगा। मैं आशा रखता हूँ कि यदि ईश्वरेच्छा हुई तो २ सप्ताह में कान का बहना अवश्य निर्मूल होगा।

उत्तर नं० ३८

आप कुछ दिन निरन्तर निम्नोक्त औषधियों का सेवन करें यदि ईश्वरेच्छा हुई तो आप अवश्य स्वस्थ होगें किन्तु आपका रोग कष्ट साध्य तो अवश्य प्रतीत होता है परन्तु श्रीधन्वन्तरि भगवान् का स्मरण कर आप औषधि अवश्य करें।

नाम औषधी	मात्रा	अनुपान	समय
कुमार्यासव	१-१ तोला	पानी	प्रातः सायं
श्रीहरि रस	२-२ रत्ती	कुमार्यासव के साथ	"
शंख द्राव	१०-१५ बूंद	२॥तोला पानीमें	१२बजे दिन एवं ६बजेरात

मधुवाट ऊपर से ९वजे रात सोते समय

पञ्च लौह २-२ रत्ती शंखद्राव पीवे

नोट-यदि कोई कारण वश आप के यहां समस्त औषधियां न मिल सकें तो आप "राकेश" कार्यालय अर्थात् श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी से मंगा लेवें यहां से आप को अत्युत्तम वस्तु मिलेगा।

उत्तर नं० २६

आपने अपने भाई के लड़के का रोग परिचय (ठीक २ लक्षण) नहीं लिखा है केवल सफेद दाग हैं इतना ही लिखा है इससे यथार्थ में नहीं मालूम होता है क्यों कि सफेद दाग तो श्वित्र (श्वेत कुष्ट) सिध्म, दद्रु आदिमें भी होता है अतः ठीक २ लक्षण लिखें कि वह कैसा दाग है तथा उसमें कुछ खुजली आदि होती है अथवा नहीं तदुपरान्त आप को यथोचित उत्तर दिया जायगा। हाँ! यदि आप चाहें तो मुझ से निम्नोक्त पते से पत्र व्यवहार भी कर सकते हैं अथवा "राकेश" ही द्वारा। यह तो आप के इच्छा पर निर्भर है।

भवदीय-धरणीधर शर्मा

वैद्यवरों से प्रश्न

प्रश्न नं० ५१

समस्त आयुर्वेदज्ञ महाशयों से प्रार्थना है कि एक ऐसा योग बतावें जो अर्क रूप में तैयार होकर साल छै महीने रक्खा रहे जो नेत्रोंके सर्व रोगों को शमन करे। जैसे आख आना, सूजना, दर्द करना, लाली, रतौंधी आदि। ग्राहक नम्बर ३७३

प्रश्न नम्बर ५२

अन्त्र वृद्धि (अंतड़ियों का ऊपर चढ़ना तथा नीचे उतरना) का कोई सज्जन शतशोऽनुभूत चिकित्सा लिखें।

नोट-ध्यान रहे वही सज्जन लिखने का साहस करें जो स्वयं परीक्षा कर चुके हों अन्यथा व्यर्थ का समय नष्ट न करें।

भवदीय—आयुर्वेद शास्त्री धरणीधर शर्मा

प्रश्न नं० ५३—

मेरे एक मित्र की स्त्री जिसकी आयु १८ वर्ष रंग गोरा कद पतला रजोधर्म कभी कभी ४।६ रोजकी कमी वेशीसे होता है अनेक रंग की धोने से साफ होजाता रजोधर्म के समय दर्द अधिक होता है।

पहिले से कुछ दर्द पैदा होकर २। ३ दिन पीछे तक बनारहता है। (१)कुछ ज्वरकी हरारत रहतीहै। कभी २ गांठ दार काले रंग का भी रजोधर्म होता है। तमाम शरीर में हड़ फूटन पीड़ा तथा बेचैनी रहती है। कभी २ कुछ लसदार पदार्थ भी गिरता है शिर में पीड़ा चक्कर दिल धड़क तथा आं-

(१) मध्य में तीन दिन २-२ ३-३ घन्टे पर दर्द घोर होता है जो कि लेख से बाहर है।

खों में जलन होती है। कुछ न कुछ दर्द सदा रहता है। कभी कभी श्वेत प्रदर के लक्षण प्रकट होते हैं। नाखून सुर्ख हैं बायें तरफ पेटमें(३)दवानेसे गांठसी (२)नाभिके नीचे कुछ कड़ापन है। उपरोक्त हालत करीब ८ वर्ष से है। तभीसे औषधियां बराबर हो रही हैं करीब १०० दवायें पेटेन्ट १०० हकीमी तथा १०० डाक्टरी ३०० के लगभग आयुर्वेदीय परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ इस समय दशमूलासव का सेवन हो रहा है करीब १००) रुपया व्यय हो चुका है अब राकेश के पाठकों से सविनय निवेदन है कि आयुर्वेद का कोई सुलभ प्रयोग बताने का कष्ट करें जिसकी सब औषधियां प्राप्त हो सकें योग बनानेमें सरल हो कीमत चाहे जो लगे इसपर संपादकीय मन्तव्य भी होना जरूरी है। जिसके प्रयोग से लाभ होगा उसे १००) इनाम तथा १ पदक दिया जायगा यदि किसीको इनाम में संदेह हो तो रुपिया बैंक में जमा कर दिया जायगा परन्तु आप उठा तभी सकेंगे जब पूर्ण लाभ हो जायगा। यदि कोई वैद्यराज बीमार को देखकर औषधि करना चाहे तो आकर सहर्ष देख सकते हैं परन्तु स्त्री चिकित्सा में जिन्हें पूर्ण ज्ञान हो उन्ही को आना चाहिये अन्यथा लज्जित होना पड़ेगा।

५४–सफेद कटेली क्या गर्भ प्रद है यदि है तो कहां से किस मूल्य में प्राप्त हो सकेगी जिन महाशय के पास हो सूचित करें।

५५–चेत की हर्र यदि किसी के पास हो तो वह मूल्य से सूचित करें।

भवदीय० डा० रामेश्वरप्रसाद
द्विवेदी आयुवेदा चार्य।
गोंडोना–

नोटः—

(२) मालूम होता है वह जब दर्द होता है तब अपनी जगह से चलित होती है लेकिन जब अपनी जगह फिर आजाती है तब दर्द बंद हो जाता है करीब २०-२५ मिनट चलित रहती है।

(३) टोड़ई से करीब मिलती हुई है

क्लीवतांक और धन्यवाद.

[ले० सी० एल० वी० सिनगौड़ी कटनी सी० पी०]

रुज क्लीव प्रमेह प्रबल शत्रू ये भारतीयों का संहार किया।
यह त्रास मिटावन को जग की राकेश वीर तय्यार हुआ॥
उदय हुआ क्लीवतांक सूर्य सम अंधकार रुज नष्ट किया।
सुधा समान योग बहु लेकर रोगिन भोगिन तृप्त किया॥
धनिकर्ता राकेश को धन्य ठाम धनि ग्राम।
धन्य धुरंधर लेखकन धाय २ पुनि···नाम॥

रमल शास्त्र (द्वारा)

मूक प्रश्न तथा भूत वर्तमान भविष्य फल [पुरुष नहीं बलवान है, दुशा-पुरुष बलवान]

ऋषियों की मस्तिष्क शक्ति का प्रादुर्भाव तथा अविश्वासियों को विश्वास दिलाने का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते हो तो-इधर ध्यान दीजियेगा।

आप रोजगार, भाग्योदय संतान विवाह मुकद्दमा आदि के ऋण शुभाशुभ परिणामों के जानने की यदि उत्कण्ठा रखते हो। किसी काम की कोशिश करने के आरम्भ में आप अपनी शुभाशुभ सिद्धि परिणाम का पता चाहते हैं तब एक गोलचक में रेखा के वाहिर वाहिर ठीक १ ही श्वास में [कुम्भक में] अपने इष्टदेव व मनोरथ को स्मरण कर जितने गोल शून्य रखते बनें सो रखियेगा। यदि जन्मपत्री हो तो नकल भी भेजें।

परीक्षा के लिये १ आने का टिकट भेजकर प्रश्न मुफ़्त कर सकते है। वशर्त्ते कि "राकेश" का ग्राहक होना आवश्यक और ग्रा० नं० देना योग्य है। अब तक में हजारों प्रश्न आ चुके व अनेकों प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं। मुफ्त लाभ उठाइये!

सर्व साधारण प्रश्न मूक प्रश्न वर्षफल फीस प्रति १) है।

पता—पाठक गौरीशंकर वैद्य रमल शास्त्री बड़ा बाजार सागर [सी० पी०]

प्रशंसा पत्र।

उपरोक्त विज्ञापन दाता श्रीयुत पाठक गौरीशङ्कर जी रमल शास्त्री को हर्ष पूर्वक मैं प्रशंसापत्र देता हूँ कि आप मूक प्रश्नोत्तर देनेका व रमल शास्त्रद्वारा भविष्यफल रचने में तथा वर्षफल बनाने में सिद्ध, रमल शास्त्री है। अर्सा करीब १॥ माह हुआ मैंने स्वयं आपसे मूक प्रश्न किया जो सत्य निकला तथा वर्ष फल भी अभी तक प्रतिमास लिखित फलानुसार सत्य ही सिद्ध होता जा रहा है। समस्त पाठक गणों से अनुरोध है कि वह अपने २ विचित्र फला देश शास्त्री जी द्वारा प्राप्त कर लाभ उठावें—विशेष कर "राकेश" के ग्राहकों को मुफ्त ही में प्रश्नोत्तर दे लाभ उठाने का पाठक जी ने अवसर दे जो मुझे कृतार्थ किया उसके लिये आपको धन्यवाद है।

शुभेच्छु—
रूपेन्द्रनाथ शास्त्री।

समालोचना।

वैद्य सम्मेलनाङ्क—

मुरादाबाद से श्री शंकरलाल जी वैद्य के सम्पादकत्व में १७ वर्षसे निकलने वाले मासिक वैद्यक पत्र वैद्य का जनवरी, फरवरी मास के युग्माङ्क रूप यह सम्मेलनाङ्क नामक विशेषाँक है—इस में मुरादाबादी प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन, युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन, आगरा तथा अखिल भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलन करांची के उपयोगी विस्तृत विवरण के अतिरिक्त अष्टाङ्ग आयुर्वेद पर विषय पूर्ण तथा अन्वेषण पूर्ण लेख प्रसिद्ध वैद्यवरों द्वारा संग्रहीत हैं। तथा अनेक वैद्य महानुभावों के चित्र भी दर्जहैं, छपाई सफाई उत्तम है। वर्त्तमान समयके पत्रोंकी गतिको देखते हुये ऐसे समय में सम्पादक जी का साहस तथा परिश्रम सराहनीय हैं। प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमीको देखना आवश्यकीय है। इस अङ्क का मूल्य ॥) आना है। स्थायी ग्राहक वार्षिक चन्दा १॥।) है पता—वैद्य आफिस मुरादाबाद।

लम्बे लोह खरल।

यह खरल लम्बे (किस्ती नुमा) चिकने, खूबसूरत मय घोटने की उत्तम मुसली सहित रहते हैं, इनकी लम्बाई १५॥ इंच चौ० १० इंच ऊंचाई ५। इंच वजन में २५ सेर के हैं। २ सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जासकती है इसके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं, प्रत्येक खरल का मूल्य १०) इन्हीं खरलों के आधे साइज व वजन के भी खरल तैय्यार किये गये हैं जिनका मूल्य ५) रु० है खरलका आर्डर देते समय पेशगी अवश्य भेजें, नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जायगा, पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के होना चाहिये।

मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर।

५०००) की चीज़ ५) में।

मेस्मरेजिम विद्या सीखकर धन व यश कमाइये।

मेस्मरेजिम के साधनों द्वारा आप पृथ्वी में गड़े धन व चोरी गई चीज का क्षण मात्र में पता लगा सकते हैं। इसी विद्या के द्वारा मुकद्दमों का परिणाम जान लेना, मृत पुरुषों की आत्माओं को बुलाकर वार्तालाप करना, बिछुड़े हुए सनेही का पता लेना, पीड़ा से रोते हुये रोगी का तत्काल भला चगा कर देना, केवल दृष्टिमात्र से ही स्त्री पुरुष आदि सब जीवों को मोहित एवं वशीकरण करके मनमाना काम कर लेना आदि आश्चर्य-प्रद शक्तियां आ जाती हैं। हमने स्वयं इस विद्या के जरिये लाखों रुपये प्राप्त किये और इसके अजीब २ करिश्मे दिखाकर बड़ी २ सभाओं को चकित कर दिया हमारी 'मेस्मरेजिम विद्या' नामक पुस्तक मंगाकर आप भी घर बैठे इस अद्भुत विद्या को सीखकर धन व यश कमाइये। मूल्य सिर्फ ५) डाक महसूल सहित, तीन का मूल्य मय डाक महसूल १६)

हजारों प्रशंसा पत्रों में से एक।

बाबू सीताराम जी बी० ए० बड़ा बाजार से लिखते हैं, मैंने आपकी मेस्मरेजिम विद्या पुस्तक के जरिये मेस्मरेजिम का खास अभ्यास कर लिया है। मुझे मेरे घर में धन गड़े होने का मेरी माता द्वारा दिखाया हुआ बहुत दिनों का संदेह था। आज मैंने पवित्रता के साथ बैठकर अपने पितामह की आत्मा का आवाहन किया और गड़े धन का प्रश्न किया। "ईंधन वाली कोठरी में २ गज गहरा गढ़ा है।" आत्मा का विसर्जन करके मैं स्वयं खुदाई में जुट गया। ठीक दो गज की गहराई पर दो कलसे निकले। दोनों पर एक सर्प बैठा हुआ था। एक कलसे में सोने, चाँदी के जेवर तथा दूसरे में गिन्नियां व रुपये थे। आपकी पुस्तक यथा नामः तथा गुणः सिद्ध हुई।

मैनेजर—मेस्मरेजिम हाउस नं० १८ अलीगढ़।

---

२) रु० में १०) रु० रोज कमाइये।

साइनबोर्ड के बनाने वाले खूब रुपया कमाते हैं, यही देखकर हमने 'फनऐन्ड्री साइनबोर्ड साजा' नाम की पुस्तक इस इल्म के एक ऐसे उस्ताद से लिखवाई है जो कि २५) से ५०) रु० रोज तक साइनबोर्ड बनाकर पैदा कर रहे हैं यह एक हाथ की दस्तकारी है, जिसे सिर्फ तीसरे चौथे दर्जे तक हिन्दी या उर्दू जानने वाला हर भाई आसानी से सीखकर २५) नहीं तो पाँच से १०) रोज तो पैदा कर ही सकता है और आजादी से रुपये कमा सकता है। पुस्तकमें ३०० से ऊपर चित्र हैं। पब्लिक ने इसे पसन्द भी खूब किया है। मूल्य २) डाक महसूल ।=)

मंगाने का पता—मैनेजर शारदा कम्पनी नं० ५ अलीगढ़।

क्या आपको मालूम है

यू० पी० में सबसे अधिक विश्वस्त आयुर्वेदिक औषधियों का—

सब से बड़ा औषधालय कहां है।

☞ नोट कर लीजिये ☜

पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री का ब्राह्मी औषधालय अलीगढ़।

जहां कि हर प्रकार के रस, भस्म, आसव, अरिष्ट चूर्ण और सिद्ध घृत तैल आदि आपको सर्वोत्तम और सबसे सस्ते मिलेंगे, थोक मालका सूचीपत्र मंगा देखिये।

रसायनशाला में प्रत्येक औषधि बनती हुई प्रत्येक भाई आकर देख सकते हैं।

पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री की बनाई जगत्प्रसिद्ध,

चंद्रचटनी।

अगर आप चाखते ही वाह २ न करने लगें तो चौगुना मूल्य वापिस और इसी अखबार में शिकायत छपवाइये।

चखते ही तबियत खुश करने वाली, निहायत जायकेदार फौरन डकार लाने वाली, मन्दाग्नि नाशक, भूख बढ़ाने में लासानी, बुखार वगैरः चले जाने के बाद हाजमा दुरुस्त करने में रामबाण, नित्य भोजन के साथ खाइये डयौढ़ा भोजन खाया जायगा और हजम हो जायगा या वैसे ही दिन में कभी २, चाटा कीजिये तबियत खुश रहेगी, दस्त साफ होगा। मूल्य १ सेर के डिब्बे का २॥) आधसेर का १।) पाव भर का ॥=) आठ तोले के डिब्बे का ।) डाक महसूल अलग।

पता—पं० चन्द्रशेखर वैद्यशास्त्री ब्राह्मी औषधालय नं० २ (अलीगढ़)

बाबूराम शर्मा के प्रबन्ध से 'दी राकेश प्रेस' आर० के० डी० कलक्टर गंज बरालोकपुर इटावा में मुद्रित तथा प्रकाशित।

राकेश रजिस्टर्ड नं० ए० १८७०

श्रेष्ठ स्वदेशी औषधियों की, नेक नहीं अभिलाष। केवल चाहत आपसे, अपना सहज सहाय॥

राकेश के नियम

१ राकेश का नवीन वर्ष ३० सितम्बर से प्रारम्भ होता है।

२—राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों में प्रकाशित होता है।

३—ग्राहक होनेवाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें।

४—जिनके पास पत्र १५ तारीख तक न पहुँचे वीष्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें फौरन सूचना देवें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये।

६—ग्राहकों व गरीब रोगियों का एक प्रश्न मुफ्त छपेगा। अधिक छपाने के लिये ।) प्रति प्रश्न देना होगा।

लेखकों के प्रति

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

२—आजकल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रयोग प्रश्न नहीं छप सकेंगे।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषण पूर्ण लेखों को पत्र में प्रथम स्थान मिलेगा।

४ श्रेष्ठ लेखों पर पुरस्कार मिलेगा।

५—लेखों के घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

६—प्रयोग प्रेषक सज्जन अनुभवी प्रयोग ही भेजने की कृपा करें मिथ्या प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे।



विषय	पृष्ठ
"वि राकेश के"	२४६
ग्रहणी (रोग विज्ञान)	२५० से २५३
'प्राचीनाभ रता और शल्यतन्त्र'	२५४-२६०
बनौषधि विज्ञान (तुलसी)	२६१ से २६३
अनुभवसार	२६५ से २६७
वैद्यवरों से प्रश्न	२६८
वैद्यवरों के उत्तर	२६९
आपसी बातालाप	२७० से २७१
प्राप्ति स्वीकार	२७२
'राकेश वैभव' और बधाई	२७३
वैद्य समाज समाचार	२७४-२७५
सम्पादकीय	२७६ से २७८

संभाल कर पढ़िये

पृष्ठ २५५ के स्थान पर २५६ पृष्ठ का मैटर छप गया है पाठक गण पढ़ते समय ध्यान रक्खें मैनेजर

श्रीधन्वन्तरि प्रसन्न

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण परीक्षित ऐसी।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कहीं जैसी॥
चीर फाड़ की क्रिया जहां करते वर्देशक सारे।
करते हैं आरोग्य वहां जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २ | वरालोकपुर—मई, जून, १९३० | उदय ९-१०

बिना राकेश के !

[रचयिता आयुर्वेदशास्त्री प० धरणीधर शर्मा]

क्षमा बिनु विप्र अस तपा बिनु क्षत्री अरु,
वैश्य धन समा बिनु सेवा दास देशके।
गृही ज्यों गृहिणी बिनु ब्रह्मचर्य ब्रह्मचारी,
तपी तन ता बिनु ज्ञान यति भेषके॥
यज्ञ जस फल बिनु दक्षिण के याग जस,
जैसो अनुराग लहि गुरु लोभ लेश के।
कहत धरणी धर विशेषर सुनो तैसे सोहें,
नहिं भिषगवर बिना 'राकेश' के॥

सो०—मैं मन दीखि विचारि, बढ़न औषधी सिंधु विस्तर।
चाहे कोउ नर नारि, 'राकेश' अविचल लखहि॥

पहरणी

[ले०—आयुर्वेद शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा राज वैद्य]

[गत ङ्क से आगे]

तीक्ष्णाग्नि के रोग

यह अधिक भोजन करने पर भी अन्न को शीघ्र पचा देती है इसीसे यह तीक्ष्णाग्नि कहलाती है तथा यह तीक्ष्णाग्नि जब किसी कारण बढ़ जाती है तब इसे अत्याग्नि (मस्मक) रोग माना जाता है जो कि बारम्बार आवक भोजन किये हुए को भी अत्यन्त शीघ्र पचा देती है तथा क्षुधा भी नहीं बन्द होती किन्तु पाक के अन्तिम अवस्था में, गला तालू, ओष्ठ, हृत में शुष्कता, एवं दाह तथा सतापादि को उत्पन्न करती है। यथा—

यः प्रभूतमप्युपयुक्तमन्नं माशु पचति स वीक्षणः स पुनरग्नि वर्द्धनानीत्यग्निवत्या भाव्यते स मुहुर्मुहुः प्रभूतमप्युपयुक्तमाशु तत् पचति पाश्चान्नेव च गल तालवोष्ठ शोषदाह संतापान जनयति ॥ सु० ॥

मन्दाग्नि के रोग

इस से अन्न बहुत देर में पचता है और थोड़े भोजन किये हुए पर भी यह पेट एवं शिर में भारीपन तथा खांसी, श्वांस, मुंह में पानी छुटना, वमन (उबकाई) अङ्गों में थकावट आदि उपद्रवों को उत्पन्न कर देती है। यथा स्वल्प मप्युक्त मुदर शिरो गौरव कास श्वांस, प्रसेकच्छर्दि गात्र सदनानि कृत्वा महता कालेन पचति स मन्दः ॥ सु० ॥

इन में से ४ चीजों जो सामग्रि है इस की रक्षा हर एक को अवश्य करनी चाहिये क्योंकि मेरे अनुभव से संसार में प्रत्येक व्यक्ति को यह रक्षित है कि दो बातों का ध्यान देना ही इस जीवन का मूल है एक तो जठराग्नि का रक्षा एवं दूसरी ब्रह्मचर्य (वीर्य रक्षा) बल का मूल कारण जठराग्नि तथा जीवन का कारण वीर्य, देखिये योग रत्नाकर में कैसा यथार्थ दर्शाया है—

यथा—वह्नि मूलं बलं पुंसां देहे मूलं च जीवनम्, तस्मात्तस्य प्रयत्नेन वह्नि शुक्रं च रक्षयेत् ॥ योग र० ॥

अर्थात् बल का कारण जठराग्नि एवं वीर्य जीवन का कारण (मूल) है अतः जठराग्नि तथा वीर्य की रक्षा जिस प्रकार हो करनी चाहिये।

नोट—किसी समय मुझे ब्रह्मचर्य की प्रशंसा आप लोगों के समक्ष उपस्थित करने की अभिलाषा है आशा रखता हूं कि यह अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगा। जिस प्रकार केवल वीर्य ही के आश्रित यह पञ्च भौतिक शरीर की स्थिति है उसी प्रकार

इस शरीर के आश्रित जो आयु, वर्ण, बल, स्वास्थ्य उत्साह, पुष्टि, कांति, ओज, तेज, क्षुधा, तथा प्राण इत्यादि जो हैं वे समस्त केवल अग्नि के ही अधीन हैं इसीके शांत होने से ही सम्पूर्ण प्राणियों की मृत्यु हो जाती है यदि जठराग्नि उत्तम होवे तो प्राणी मात्र सर्वदा नैरोग्य तथा दीर्घायु रह सकता है एवं केवल यही रोग नहीं ? किन्तु अन्य रोग भी होना असम्भव है-यथा-'दीप्ताग्नेः विरुद्धं विषमं भवेत्' सु०

जठराग्नि दूषित होनेका कारण

यह मिथ्या हार विहारादि अर्थात् आहार न करने से, अजीर्ण में भोजन करना, अत्यन्त भोजन अथवा विषम भोजन अस्वास्थ्य, भारी, शीतल अति रूक्ष, विष आदिकों से दूषित भोजनादि तथा वमन विरेचन, स्नेहनादि के अति योग अथवा मिथ्या योग से, तथा रोगादिकोंसे शरीर अत्यन्त कृश होने से देश, काल और ऋतु के विपरीत भाव से एवं मल, मूत्रादिकों के वेग धारण करने से दूषित हो जाती है तब यह दूषित जठराग्नि रस के रक्तादि को भी परिपक्व करने में असमर्थ हो जाती है।

ग्रहणी निदानम्

'दुष्यति ग्रहणी जन्तोरग्नि सादन हेतुभिः'

अर्थात् अग्नि मंद करनेवाले कारणों से ही प्राणियों की ग्रहणी दूषित हो जाती है अतः इसी से ग्रहणी रोग प्रकट हो जाता है यथा-'अतिसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहि ताशिनः। भूयः संदूषितो वह्निर्ग्रहणीमभि दुषयेत्॥ सु०॥

अतिसार में अथवा उसके निवृत्त होने पर भी यदि मनुष्य कुपथ्य करे तो मन्दाग्नि होकर इस महान भयंकर रोग को उत्पन्न करता है एवं 'अपि शब्दात् निवृत्ते ऽप्यतीसारे इति व्याख्यातं' अर्थात इस श्लोक में 'अपि' शब्द से यह ज्ञात होता है कि अतिसार यदि न भी हुआ होवे तो भी पूर्वोक्त दोषों से ग्रहणी दूषित होकर यह रोग हो जाया करता है तथा मन्दाग्नेः चिरभोजनेऽपि दीप्ताग्नेरिवाशनमपि न विदाहकारीति बोधयति' अर्थात् मन्दाग्नि शब्द यह सूचित करता है कि जिस व्यक्ति को अग्नि तीक्ष्ण होती है उसे कुपथ्य करने पर भी यह रोग नहीं होता जैसा कि पूर्वोक्त कहा गया है।

ग्रहणी अतिसार भेद

अतिसार (अतिरत्यर्थं क्षरते सरतीति च कर्मणि। तस्माद् त्वंत सरणादतीसार इति स्मृतः इति उल्लणः) तथा ग्रहणी में किंचित मात्र का भेद प्रतीत होता है अर्थात अतिसार में द्रव धातु निकलता है तथा ग्रहणी में द्रव एवं बंधा हुआ मल निकलता है यद्यपि अतिसार तथा ग्रहणी दोष युक्त अनेक भेदों से भिन्न २ प्रकार से होते हैं किन्तु आचार्यों ने केवल तीन ही भेद माना (१) आमाशय में द्रव भाग बढ़कर जठराग्नि दब जावे (२)

ग्रहणी कला तदाश्रित अग्नि के विकार से (२) पक्वाशय के विकार से होता है। (१) जो आमाशय में द्रव भाग बढ़कर जठराग्नि विषम हो जाने से होता है उसे 'अतिसार' कहते हैं। (२) जो ग्रहणी कला तदाश्रित अग्नि दूषित होनेसे होता है उसे 'संग्रहणी' कहते हैं (३) जो पक्वाशय के विकारों से होता है उसे 'प्रवाहिका' कहते हैं इसमें जिन २ कारणों के बिगड़ने से (वातादि दोषों से) जो होते हैं उनमें उन्हीं दोषों से ही अनेक भेद हो जाते हैं। देखिये पाश्चात्य चिकित्सकों ने भी ३ ही भेद माना है।

डाक्टरी मतानुसार नाम

ये लोग अतिसार को (डायरिया) तथा संग्रहणी को (इंडिनल डायरिया) तथा (इंडियन स्प्रू) भी कहते हैं तथा प्रवाहिका को (डिसेन्टरी) कहते हैं इसी बात को यूनानियों ने भी माना है।

यूनानी नाम

अतिसार को "इसहाल" तथा संग्रहणी को 'जय' एवं 'मगस' प्रवाहिका को कहते हैं यद्यपि इसका भेद इन्होंने १४ प्रकार का दिखाया है जैसे 'इसहाल जिगरी' (जिससे रक्त पीव आदि के दस्त होवें) 'इस हाल मेदा' (जिसमें कच्ची पक्की गिजा दस्त में आवे) 'इस हाल अमया' (जिससे गिजा आंतड़ियों में न ठहरे और दस्त अधिक आवे) आदि हैं किन्तु मुझे इनसे अन्यान्य से कोई प्रयोजन भी नहीं है हमें तो केवल आयुर्वेद से ही प्रयोजन है अतः हमें और सबों को यहां उद्धृत न कर पुनः अपने ही मार्ग पर आ जाना है।

ग्रहणी भेद

'ग्रहणी पंचधा मता ग्रहणी ५ प्रकार का माना गया है यथा-'पृथग्दोषैः सन्निपाता तथा चामेन पंचमी' शार्ङ्ग०॥

अर्थात् पृथग्दोष (वातज, पित्तज, कफज) सन्निपात (त्रिदोषज) तथा तथा पांचवीं आम जन्य, किन्तु आचार्यों ने केवल चार ही भेद दर्शाया है-

यथा-'सा-चतुर्थ पृथग्दोषैःसन्निपतात्। ऊचजायते' वाग० ऐसा चरकादि ने भी माना है--

पूर्व रूप

तस्यं तृष्णो विदाहान्ने, सदनालस्यतृटकलमा बलक्षयोऽरुचिः कासः कर्णक्ष्वेडोऽतिकूजनम् ॥ सु०॥

इसके उत्पत्ति के प्रथम ही प्रायः निराले लक्षण प्रगट हो जाते हैं यथा-भोजनोपरांत दाह, थकावट, आलस्य, तृषा, ग्लानि, बलक्षय, अरुचि, खांसी कानों में शब्द होना तथा आंतों का कुड़गुड़ाहट होना तथा इसी को चरकने भी माना है यथा-पूर्वरूप तु तस्येदं, तृष्णा तस्यं बलक्षयः। विदाहोनस्य पाकश्च चिराद्गौरवम् ॥ चरक०॥

अर्थ यद्येपि वही है किन्तु अन्य ऋषियों ने इसके अतिरिक्त जो कुछ और भी दिखाया है जिसे कि इसके रूप में दिखाया

जायगा, मैं कुछ आपके समक्ष ग्रहणी निदान ज्योतिष मतानुसार दर्शाना चाहता हूं तथा समय पड़ने पर प्रत्येक रोग का निदान इसी मत से दर्शाकर उसका प्रतीकार वेदों द्वारा उपस्थित करता रहूंगा, किन्तु यह बात अवश्य है कि यदि आप लोग इसे स्वीकार करेंगे तब अन्यथा नहीं

सप्तधातुओं के स्वामी

स्नायु, हड्डी, यकृत, त्वचा, शुक्र रक्त मज्जा, सप्त धातुओंके अधिष्ठाता (स्वामी) क्रमशः शनि, सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, बृहस्पति, मंगल हैं।

ग्रहणी कर्त्ता योग

शनि-शुक्रौ सप्तमस्थौ, निर्बलौ लग्न पुत्र पौ। बिड बंध ग्रहणी चित्त वैकल्यार्ति कष्ट दौ ॥ अर्थात् शनि तथा शुक्र ये सप्तम में स्थित हों तथा लग्नेश तथा पंचमेश निर्बल होवें तो बिड़बंध (मल का न होना) संग्रहणी, चित्त में वैकल्यता होकर अति कष्ट होवे तथा रोगेश छठे घर का स्वामी) छठवें घर में अर्थात रोग घर में स्थित होवे अथवा अन्य स्थान में बैठा हो किन्तु रोग घर को पूर्ण दृष्टि से देखता होय तथा चन्द्रमा जिसका लाभ होय तो कष्ट कारक सग्रहणी रोग उत्पन्न होय यथा-यदेश गश्चराशिस्थे गद भाव निरीक्षिते। दीण चन्द्रो भवेत्तस्य ग्रहणी दुःखकारिणी ॥ तथाच लग्नेशौ क्षीण शीतांशौ शनि भौम र्कै युतै। ग्रहणी रोग वान जात अथवा कृमि शूलवान। अर्थात् जन्म लग्न में क्षीण चन्द्रमा बैठा होय तथा शनि और मंगल तथा राहु संयुक्त होय तो उस प्राणी को सग्रहणी अथवा कृमि शूल होता है यद्यपि चारों ग्रहणीका निदान इसी मतानुसार पृथक २ दिखाया जा सकता है किन्तु लेख बढ़ जाने के डरसे नहीं लिखा जाता है केवल मृत्यु योग दर्शा कर यहां समाप्त करता हूं हां! इतना अवश्य है कि इसका प्रतीकार लेख के अंत में वेदोक्त लिख दिया जायगा।

मृत्यु योगः

'रोग धीशा मृत्यु भावे, रोग सप्तमेश्वर स्तनौ ॥ ग्रहणी गदतो मृत्यु र्जायते नात्र संशयः ॥ अर्थात रोगाधीश्वर अष्टम घर में स्थित होय तथा लग्न में षष्टम घर में मालिक बैठा होय तो उस मनुष्य को मृत्यु निसंदेह संग्रहणी से होवे इसे यहीं समाप्त कर पुनः अपने मार्ग पर चलता हूं।

(क्रमशः)

प्राचीन भारत और शल्यतन्त्र

[ले०—प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० एम० एस० सी० एल० एम० एस]

[गताङ्क सात से आगे]

इसकी तीव्रता के कारण इसके तीन भेद थे—मृदु, मध्य, तीव्र, क्षार का उपयोग तीन उपायों द्वारा किया जाता था १-दार्वी द्वारा। यह लकड़ी का श्रुवा होता था इसमें क्षार भर कर उचित स्थान पर डालते थे। २—शलाका—यह एषणी की भांति की होती थी इसके सिरे पर तीन अंगुलियों के समान चम्मच होते थे यथा अनीनिका मध्यमा, अनामिका के समान —कर्ची जो बुरुश के समान होती थी क्षार प्रयोग में अन्य स्थान की रक्षा हित आदि के लेपों से की जाती थी यथा—

शस्त्रानुशस्त्रेभ्यः क्षारः प्रधान तमः। यद्यपि लेखन कारणात् त्रिदोषजत्वात् गदेभ्यः। तथाच॥ आस्वाद्य च दर्वी कूर्च-शलाका नामन्यतमेन क्षार चारयेत्॥

(सुश्रुत)

अग्नि

यह क्षार एवं सब यत्रों तथा शस्त्रों में श्रेष्ठ है कारण इससे नष्ट किये हुए रोग फिर उत्पन्न नहीं होते हैं एवं उनके द्वारा जो रोग असाध्य हैं वे साध्य होते हैं इस दाह कर्म में निम्न उपकरण व्यौहार में लाये जाते हैं यथा—

१—त्वचा का दाह करने में— पिप्पली अजसकृत्, गोदंत कार, शलाका,।

२—मांस दाह करने में—जांबोष्ठ अन्य लोह।

३—रक्त प्रणाली संधि के दाह में। क्षौद्र गुण स्नेह इत्यादि।

सुश्रुत ने रक्तावरोध पर भी अन्तिम उपाय दाह बताया है यथा—

बहूदग्धानां रोगाणाम पुनर्भवात्। दाहोऽग्निनिर्मरीयान्। तदसाध्यानां (रोगाणां) तत् साध्यत्वा (सुश्रुत)

अर्शो भगंदर ग्रंथि नाडी पृष्ठ व्रणादिषु। मांस दाहो मधु स्नेह जाम्बवोष्ठ गुडादिभिः। तत्तैर्वा विविधैर्लोहदंहेदुदाह विशेष वित्।

३—अग्नि तप्तेन शास्त्रेण छिन्द्यान्मधु समायुतम्।

४—दहन्ति तद्देहमन्य तप्तहेम शलाकया। यद्यत रोगे पुनर्नैव कदाचिद्रोग संभवः।

इसके अतिरिक्त पक्ष्म कोप रोग में बालों की जड़ों तथा आंतों की भित्ती के अर्शस के दाह का विधान किया गया है।

चिमटी अनिग्रह है इसकी लम्बाई प्रायः १६ अंगुल या ८ अंगुल तथा क्रमानुसार कम अधिक भी होती है सन्निग्रह के अग्र भाग में और अनिग्रह के पिछले सिरे पर कील या जोड़ होता है इससे भी त्वचा शिरा, स्नायु और मांस में घुसे हुए शल्य इत्यादि निकाले जाते हैं संडासी को अंग्रेजी में फारसेप्स कहते हैं यह संडासी जिस कार्य के लिये बनाई जाती है उसीके अनुसार नाम भी होते हैं, जैसे धमना संदृश इत्यादि इसके सैकड़ों भेद हैं जहां पर जैसी आवश्यकता पड़े व्यौहार बनाकर किये जाते हैं और चिमटी को भी फारसेप्स कहा जाता है इसके भी तमाम भेद हैं इनकी भी रचना प्राचीन और आधुनिक समय में समान है।

यन्त्र प्रायः उत्तम लोहे के बनाये जाते हैं कोई २ यन्त्र जर्मन सिलवर अथवा अन्य किसी धातु के भी बनते हैं, उनकी मोटाई लम्बाई चौड़ाई उनके कार्य की उपयोगिता पर निर्भर है पर सब सुचिकन सुन्दर दृढ़ पैने, सुघड़ बनाये जाते हैं मुख में ऐसी पकड़ रखी जाती है कि पकड़ी वस्तु फिर नहीं छूट सकती है।

कर्तरी शस्त्राणि

इसका वर्णन शास्त्रों के स्थान में रह गया है इससे यहां पर किया जाता है यह अनेकों प्रकार की होती है जिनसे नख सूत्र, जर्म केशों के काटने में उपयोग किया जाता है इनको भी जिस कार्य के लिये उपयोग किया जाता है वैसी ही बनाई जाती हैं इनमें भी प्राच्य पर पाश्चात्य मत में भेद नहीं है कार्य निर्भर है। यथा-स्नायु सूत्र कर्तनेषु कर्तरीकर्तरीनिभा।

इतने यंत्रों का आधुनिक वैद्यक के ग्रन्थों में वर्णन है पर यह ठीक नहीं है कि सिर्फ इतने ही से कार्य चलाया जाता था क्योंकि उस समय का ज्ञान अद्भुत उन्नति पर था जैसे दक्ष, शिव प्राप्ति के बड़े सिर जोड़ना, देवासुर संग्रामके वीरों की शल्य चिकित्सा आदि कौतूहल जनक कार्य आज नहीं होते पर यंत्र शास्त्र के तमाम हैं, इसलिये प्रथम भी रहे होंगे परंतु पुस्तकें न होने से और उपयोग न करने से पता निश्चित नहीं लगता यंत्रों की कोई संख्या नहीं है और यंत्रोंसे अधिक हाथ की सफाई को प्रधान माना गया है, इनकी आकृति और कार्य पृथक २ होते हैं बुद्धिमान शल्य ज्ञाता अपनी विचार शक्ति की सहायता से जैसा अस्त्र शस्त्र जहां पर उपयोगी जाने उससे काम ले लिया जाता है. इसी विचार से नाना प्रकार के शस्त्र यंत्र हो गये हैं और अभी बनते चले जाते हैं, यंत्रों के यथार्थ में ६ भेद हैं जिनको प्रथम सब वर्णन कर दिया है भेद उसके इस प्रकार हैं।

स्वास्तिक यंत्र, संदंश यंत्र, ताल यंत्र नाड़ी यंत्र, शलाका यंत्र, उपयंत्र, इन्हीं भेदों के अंतर्गत सब निर्मित होते हैं।

शस्त्र चाहे प्राचीन हो अथवा अर्वाचीन अपने कार्य के अनुकूल बनाकर

भेषज्य

व्रण चिकित्सा में बताये हुए स्नान लेपों की पूर्ति के लिये औषध का उपयोग होता था इसके द्वारा व्रण की शुद्धि रोपण पाक, अवसेचन और पाटन कार्य किया जाता है और व्रणकृमि रक्षित करने के लिये धूम्र दिया जाता है। यथा—

आदौ विस्रावणं कार्यं द्वितीयमव सेचनम्। तृतीयमुपनाहं च चतुर्थी पाटन क्रियते। पञ्चमं शोधनं प्रोक्तं षष्ठं रोपण मिष्यते। एतेक्रमाः व्रणस्योक्ता सप्तमं दूषितापहम्। [सुश्रुत]

रक्तावरोध के उपाय

सुश्रुत ने आवश्यकता से अधिक रक्त रोकने के लिये चार उपाय बताये हैं उनमें से प्रथम तीन ही उपाय करने चाहिये। परन्तु असाध्यावस्था में चतुर्थ उपाय का भी आश्रय लेना चाहिये वाग्भट ने रक्त दोष का एक और उपाय शिरावेध बताया है। यथा—

सन्धामे स्कंदनं चैव पाचनं दहनं तथा।
अस्कन्दमाने रुधिरे संधानादि प्रयोजयेत्॥
२ व्रण कषायः सन्धते रक्तं स्कन्दयते विषम्
तथा सम्यक्चयेद् मम्म दाहः सकोचयेत शिरा
३ तामेव तां शिरां विध्येद्। व्यध वागन्तरं शिरा मुखं वा त्वरितं वहेत् तत शलाकया॥ वाग्भट॥

स्वस्तिक यन्त्र

इसके भेद आयुर्वेद में २४ कहे गये हैं अगर स्वस्तिक शब्द का अर्थ लिया जाय तो साथिया होता है इसलिये यह यन्त्र भी साथिया के स्वरूप के प्रायः अठारह अंगुल लम्बे होते हैं इनके मुखों की आकृति गोश, सिंह, बाघ, चीता, रीछ भेड़िया शृंगाल, गिद्ध, चील, बगुला, खंजन, कील, तोता, बक, हुदहुद इत्यादि पक्षियों की चोंच समान बनाई जाती है सबकी बनावट में थोड़ा २ भेद रहता है। बुद्धिमान आदमी स्वयं बना सकते हैं। इन यन्त्रों के दो टुकड़े होते हैं जो एक दूसरे के साथ एक कील के द्वारा जिसकी घुंडी मसूर के दाल के समान होती है मिलाये जाते हैं। इन यन्त्रों से हड्डी और उसके टूटे हुए टुकड़े और बाण आदि निकाले जाते हैं। तथा दांत भी उखाड़े जाते हैं। अबुल कासिम शल्य चिकित्सक के समय में इसके २८ भेद हो गये थे और अंग्रेजी समय में ३२ भेद हैं और सब को टूथ कारसेप्स के नाम से पुकारे जाते हैं इनसे दांतों के उखाड़ने का काम अधिक लिया जाता है और भी कार्य होते हैं इन की बनावट प्रायः पाश्चात्य ढंग से एक ही प्रकार है कोई भेद नहीं हो सका।

शंदश यन्त्र

इस यंत्र को सिंडासी या चिमटी समझना चाहिये यह दो प्रकार के होते हैं एक सन्निग्रह और दूसरा अनिग्रह जिसमें

या खरीद कर उपयोग करना चाहिये, जिससे चतुरता पूर्वक उत्तम कार्य हो सके पक्षपात पर न रहना चाहिये, यह दृष्टि सब है ज्यों २ बदलता है उसमें विभेद पड़ता जाता है जैसे प्राचीन काल में नाखून बढ़ाकर, पत्थर लकड़ी से चीरने का काम करते थे जो आज भी नमूनाके लिये अजायब घर में रखे हैं यदि पक्षपात करें तो हमारे लिये हसिया, गड़ासा, खुरपा, चाकू, नहन्नी छुरा, कुल्हाड़ी आदि सब व्यर्थ हैं, पर इनके बिना अब मामूली से मामूली व्यक्ति का कार्य रुक जाता है इससे सब व्योहार करते ही हैं साधारण रीति से जो व्यक्ति शस्त्र कर्म करना चाहें वह इन अस्त्र शस्त्रों को व्योहार में हमेशा पास रखें यथा—

सामान्य सलाई

यह चांदी के तार की एक सलाई होती है जो लचक सकती है इससे व्रण की गहराई और उसके भीतर यदि कोई विकार युक्त मवाद आदि हो देखे जाते हैं यह आठ अंगुल छः पांच इञ्चों की होती है जैसा जहां पर काम पड़े।

रहनुमा सलाई

यह भी चांदी की नालीदार मोटी सलाई होती है जो नासूर में डालकर उस नाली के बीच में नश्तर की नोक रखकर नासूर चीरा जाता है इसे प्रोब कहते हैं।

खमदार चाकू

इस चाकू से गहरे नासूर और इस्त्र इत्यादि चीरे जाते हैं नालीदार सलाई की नाली में इसकी नोक रखकर चीरना प्रारंभ करते हैं। इसका फल टेढ़ा होता है परन्तु आधुनिक काल में जो बन करके आता है कोई एक फल का सिर्फ टेढ़ा ही होता है और दूसरा सीधा है और कोई भी में दोनों फल होते है इस के दो फल वाले को डबल कह करके उच्चारण करते हैं।

मसूढ़ा के नश्तर

इसके द्वारा मसूढ़ा चीरे जाते हैं यह भी जो आज कल मिलता है कभी अलग होता है जिसको अंग्रेजी में गम लैनसिट कहने से मिल जाता है और जब फोड़ा के चाकू के साथ में होता है तब उस को एपसस नाइफ और गम लैनसिट के नाम से पुकारते हैं इस में अलग दो फल होते हैं और इसके ले लेने से दोनों काम चल जाते हैं या अलग लिया जावे तो मसूड़ों का ही काम देगा।

फोड़ा चीरने के नश्तर

इसमें दोनों तरफ तेज धार होती है इससे फोड़ा चीरे जाते हैं इसे 'एवसस नाइफ' कहा जाता है से जब ओलालिया जाता है तो एक ही काम देता है इससे अकेला भी रहता है और दो फलको हटाके भी आता है जिसमें दूसरा चाकूके समान होता है उससे भी शल्य के चीड़ने फाड़ने काम होता है उस को 'सीम्स नाइफ' कहते हैं यह भी अलग मिलता है या साथ में लेने से दोनों काम होते हैं और आसानी

से फोड़ा चीरा जाता है, इस प्रकार से या तीन नस्तर अवश्य शल्य चिकित्सक को रखना चाहिये—

शिराभेद के नस्तर

इसके द्वारा रक्त खोला जाता है और टीका भी लगाया जाता है यह अलग मिलते हैं और एक भी लेने से दोनों काम निकल जाते हैं जिसमें एक को वीनसोट ब्लीडिङ्ग और दूसरे को वेकसीनेशन कहा जाता है।

सर्प डसने का नस्तर

इसके द्वारा सर्प विष अलग चीर कर निकाला जाता है इसीसे इसे स्नेक नाइट लेकेन्सिट कहते हैं इसे सर्प चिकित्सा करने वालों को रखना चाहिये।

हुक

यह लोहे के तार से बनाये जाते हैं और टेढ़े होते हैं जब किसी रग से रक्त निकलता है तो इसके द्वारा उस रग या शिरा को पकड़ लेते हैं रक्त आना बन्द हो जाता है।

चिमटी

यह फला, हार या बिना फलावाले दो तीन प्रकार की होती हैं व्रणसे दूषित वस्तुओं को निकालने और ड्रेसिंग को व्रण से उतारने के काम आती हैं अपनी इच्छानुकूल लेना चाहिये।

सुई

इस को व्रण बांधने के लिये रखना अति आवश्यक है यह भी कई प्रकार की होती हैं।

कैंची

चमड़ा इत्यादि के काटने का काम देती है इच्छानुरूप यह भी ली जाती है।

लिंट और प्लास्टर

लिंट व्रण को साफ करने और उस पर गद्दियां रखने के लिये या मरहमकी पट्टियां बनाकर लगाने के लिये या व्रणों को ढकने के लिये व्यौहार होती और प्लास्टर भी ऐसे ही कामों के लिये व्यवहार में आता है।

स्पंज

चोट के स्थान पर पानी डालने या इस कोने के काम में लाया जाता है।

मोटी छुरी

इससे मलहम या प्लास्टर फलावा जाता है।

और तागा रेशम सीने के लिये दई, कपड़ा की पट्टियां इत्यादि से साधारण काम चल जाता है।

पट्टी बांधना

पट्टी बांधना भी सीखा जाता है तब काम मालूम होता है अन्यथा पट्टी ही बंधी देखकर शल्य चिकित्सक की शिक्षा का ज्ञान कर लिया होता है इससे पट्टी बांधना अवश्य सीखना चाहिये, पट्टी का उद्देश्य यह है कि जो मरहम या औषध छोटे फूटे

अंगों पर दी जाती है वह स्थिर रहे जिसके नसें, जोड़ और अंगों को आराम मिले और उसका हिलना चलना बन्द रहे अर्थात् में कोई बाहरी वस्तु न लग सके जोड़ी हुई अस्थियां और बैठाई हुई २ नाड़ियां अपनी असली अवस्था पर आ जाय—

पट्टी सदा साफ और नरम कपड़े की बनाना चाहिये, कपड़े को धोकर सुखा कर इस्तरी कर लेना चाहिये या धोबी से करवा लेना चाहिये जिससे उसकी सिकुड़न मिट जाया करती है, सिर, हाथ, कलाई, पांव पर लपेटने के लिये दो इंच चौड़ा और बाजू टांग के लिये ढाई इंच चौड़ी जंघा के लिये २ इंच चौड़ा, छाती की पट्टी १० इंच से ६ इंच तक चौड़ी होती है। तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई चौड़ाई रक्खी जाती है-यह चिकित्सककी सम्मति पर है।

साधारणतया पट्टी कमसे कम तीन इंच चौड़ा और सात गज लम्बी अवश्य होना चाहिये उसको बांधने से प्रथम लपेट लेना चाहिये लपेटते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि पट्टी के किनारे एक से रहें और उसकी लपेट ढीली न हो, और सब से आवश्यक बात यह है कि उसे ऐसे स्थान से बांधना प्रारम्भ किया जाय जहांसे वह सरक न सके नहीं तो पट्टी का बन्धन ढीला होकर बिगड़ जाया करता है

पट्टी बांधते समय पर उसका रुख भीतर से बाहर की तरफ और नीचे से ऊपर की ओर होना चाहिये और लपेट के बीच में स्थान कोई किसी स्थान का चाहिये-जिस अङ्ग पर पट्टी बांधना हो अगर वह बालक का हो तो उस पर पट्टी के सीधे पेंच लगाते जांय और जहांपर अङ्ग की मोटाई आदि में फर्क हो वहांपर बल-दार पेंच लगाना आवश्यक है बल देने का नियम इस प्रकार से है कि जिस स्थान पर बल देना हो उस स्थान के ऊपरी मुंह पर अपना बांया अंगूठा रखकर दायें हाथ से पट्टी को उलटा दे और फिर लपेटे जोड़ों के स्थान पर पट्टी स्वस्तिक विधि से बांधना चाहिये अर्थात् इस प्रकार से लपेटे कि आंकड़ी का ८ बनकर बन जाय इससे उस स्थान की पट्टी ठीक रहती है जैसे घुटना, कोहनी, कंधा, कूल्हा इत्यादि में जोड़ है।

जब पट्टी बदली जाय या जिस अंग पर बंधी रही हो उसे निकाले तो उसे उष्ण पानी और साबुन से अच्छी प्रकार से धोकर सुखा देनी चाहिये यदि सिर में पट्टी बांधना हो तो प्रथम बालोंमें कंघी कर लेना चाहिये नहीं तो बाल रुककर बदसूरत लगते होते हैं और पट्टी भी इधर उधर खिसक जाती है जब पट्टी इस अभिप्रायसे बांधी जाती है कि अभीष्ट अंग को सहारा मिले और उस पर दबाव पड़े तो इस बात की बड़ी सावधानी रखना चाहिये कि पट्टी

बहुत कस कर न बांधें जा। ...यांकि बहुत अवरोध होकर वह अंग मुरदार हो जाता कम कर पट्टी बांधने से रक्त संचालनका (क्रमशः)

एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब चीजें शास्त्रानुसार असली मिलेंगी नकली सिद्ध करने वालों को दोनों ओर का खर्च सहित दाम वापिस देंगे और उसका विज्ञापन हम देंगे सबसे बड़ा स्टाक हमारे यहां है यह सब थोक भाव है मन के भाव से लेने वाले कमसे कम ५-५ सेर और सेर के भाव वाले कम से कम १-१ पाव लेने पर निम्न भावपर देंगे कम लेने पर दूना दाम लगेगा सब ही जड़ी बूटी मिलती हैं नाम लिखकर भाव पूछें माल मंगाते समय कुछ दाम पेशगी भेजें।

दशमूल २०) फी मन	ब्राह्मी ३५) फी मन
नकछिकनी २०) "	अशोक छाल ४) "
अतीस ८) प्रति सेर	प्रियंग मूल ८) प्रति सेर
शिवलिङ्गी बीज ८) "	सत गिलोय ८) "
शुद्ध शिलाजीत २५) "	

पता-मैनेजर बी० सी० गर्ग बराड कोठी
पो० अखाड़ा देहरादून

कृष्ण सर्प वसाञ्जन

—:o:—

यह अञ्जन काले सांप की चर्बी तथा कई नेत्र रोग नाशक औषधियोंके मिश्रण द्वारा तैयार शुदा अनुपम आयुर्वेदोक्त औषधि है। इसके सेवन से आंखों का फूला मांड़ा, जाला, पटल रोग आदि सब नेत्र रोग दूर होते है। यहां तक कि अन्धा मनुष्य भी देखने में समर्थ हो सकता है। मूल्य फी तोला ४)

मैनेजर श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर (इटावा)

वनौषधि विज्ञान

तुलसी

[ले०—डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा राजवैद्य]

(गताङ्क से आगे)

तीनों प्रकार की बर्बरी, रूक्षी, शीत ल, खरपरी, दाहकारक, तीक्ष्ण, रुचि को उत्पन्न करनेवाली, हृदय को हितकारी, अग्नि प्रदीपक, पाक मेहलकी, पित्तकारक और कफ, वात, रुधिर विकार, खुजली कृमि तथा विष विनाशक है।

वन तुलसी जंगलों और वनोंमें अधिक होती है पत्ते पियाबांस के पत्तोंके समान छोटे होते है, उनमे नीम के पत्तोंके समान कगूरे होते है, फूल पीलापन लिये होते है, सुगन्धि भी बहुत आती है।

हमारे परीक्षित प्रयोग

(१) काली मिर्चों को पीसकर तुलसी के पत्तों के स्वरस में भिगोकर छाया में सुखा लें और इसी प्रकार स्वरस की सात बार भावना देकर खरल करके चने प्रमाण गोली बना लें और छाया में सुखाकर सुरक्षित करके रक्खें किसी को ज्वर पारी से आता हो तो ज्वर आने के तीन घंटा पूर्व से एक २ गोली प्रति घंटा उष्ण जल से दें अथवा १ तोला तुलसी का स्वरस २ तोले उष्ण जल में मिलाकर

(२) जीर्ण ज्वर में यह गोलियां प्रात मध्याह्न सायं जल के साथ दें।

(३) यह गोलियां मलेरिया ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर, इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि पर अत्यन्त प्रभावशाली पाई गई है तथ गुण में कुनेन आदि से अधिक है।

(४) बच्चों के पेट में पीड़ा होवे तो अवस्थानुसार तुलसी के पत्तों के स्वरस में अद्रक का रस सम भाग मिलाकर गरम करके पिला दें।

(५) यदि कानमें पीड़ा हो तो तुलसी के पत्तों का स्वरस गरम करके पिलावें।

(६) पेट फूलना तथा अफरा आदि में तुलसी के पत्तों का स्वरस गरम करके पिलावें।

(७) खांसी में तुलसी की मंजरी अद्रक के स्वरस में पीसकर शहद मिला कर चटावें।

(८) गले की पीड़ा में तुलसी के पत्तों का रस शहद मिलाकर चटावें।

(९) सांप के काटे में तुलसी का

बीरा देकर जख्म में इसकी पट्टी भर दें।

(१०) दाद पर तुलसी के पत्तों का रस लगावें।

(११) खुजली में तुलसी के पत्तों का रस चार भाग सरसों के तेलके साथ फेंट कर मालिस करें।

(१२) शिर पीड़ा में—तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर पीस कर रख छोड़ें एवं किसी के सिर में पीड़ा हो तो इसकी नस्य देवें।

(१३) पेट के कृमियों पर तुलसी के पत्तों का स्वरस गरम करके पिलावें।

(१४) कफ की अधिकता में तुलसी के पत्तों के स्वरस में बड़ी इलायचीके दाने पीसकर शहद के साथ चटावें।

रक्तविकार तथा गलित कुष्ट आदि पर

तुलसादि अरिष्ट

(सारसंपरीलों का दादा)

तुलसी के गीले ताजे पत्ते १ सेर रजीठ, कूड़े की छाल, गिलोय, कूट मीठा, सोंठ, भारंगी, कटहली पंचांग, बकुल, दूधिया नीम की छाल, हल्दी, दारु हल्दी, हरड़ बहेड़ा, आंवला, पटोलपत्र, कुटकी, मूर्वा गायबेड़ग, बिजयसार, चाते की जड़की छाल, शतावर, त्रायमाण, पीपल, इन्द्र जौ, मीठा, बांसे के पत्ते, कृष्ण भांगरा देवकाक, पाढ़, खैर सार, खाल, चन्दन नेत्रवाला, बकायन, बरना की छाल, चिरायता बावची अमलतास का गूदा, सहंडा की छाल, कबाबचीनी, किरजवा, इलीप्स, तेजपात, इन्द्रायन की जड़, धमासा, सारिवा, शाहतरा प्रत्येक आधा २ पाव बटमार की छाल, कीकर का छाल, सरफोंका प्रत्येक पाव २ सेर इन सब को मीसा सेर पानी में भिगोकर आग पर पकावे जब दस सेर पानी फुक जावे बाकी २० सेर बाकी रहे तो नीचे उतार कर खांड देशी २ सेर शहद असली ५ सेर मिलाकर किसी चिकने पात्र में भर कर मुद्रा बन्द करके पृथ्वी में गाड़ दे और १० दिन पश्चात निकालकर छानकर बोतलों में भर कर डाट लगाकर रख ले तथा समय पर काम में लावे।

मात्रा एक औंस (ढाई तोले) स्वच्छ जल, ५ तोले में मिलाकर पिलावे।

गुण—आजकल के जितने सरसापेरेल चल रहे हैं उन सबसे उत्तम है क्योंकि यह खून को साफ भी करता है और नया शुद्ध रक्त भी उत्पन्न करता है हर मौसम में सेवन किया जा सकता है हर प्रकृति के रोगी को दिया जा सकता है किसी समय में भी किसी प्रकार से कोई अवगुण देखने में नहीं आया। अठारह प्रकार के कुष्ठ रोग, रक्त रक्त, उपदंश अर्थात् गर्मी का रोग, श्लीपद रोग अंग शोथ होना, पक्षाघात, वायु भेद रोग अथवा नेत्रों के रोगों पर अत्यन्त ही लाभदायक हमारी परीक्षा में आया है।

हमारे विचार में रस आयुर्वेदीय

सालसा की बराबरी कोई भी विलायती सालसा कदापि नहीं कर सकता, इसके कुछ दिन सेवन करने से सचित दूषित रक्तशुद्ध होकर नवीन रक्त बढ़ता है जिस से शरीर हृष्ट पुष्ट हो कांति जनक हो जाता है।

नोट—इसक सेवन कराने से प्रथम विरेचन (जुलाब) यदि दे दिया जावे तो अति उत्तम है।

हमने मंदिरों आदि में बोई जानेवाली कृष्ण तुलसी को परीक्षा में लिया है जिस का बयान पहिले किया गया है। मैं आशा करता हूं कि दूसरे प्रिय बन्धु वैद्यवर्य भी इस को परीक्षा में लेकर देखेंगे कि इस अरिष्ट (आयुर्वेदीय सालसा) में गलित कुष्टादिकों पर भी तथा रक्त शोधन आदि में कैसे २ प्रभावशाली चमत्कारिक गुण हैं और राकश द्वारा ही जनता को प्रकट करने का कष्ट प्रगण करेंगे ताकि रुग्ण जनता लाभ उठावें।

मेरी परीक्षा में भी इससे विशेष गुण जो २ ज्ञात होंगे सेवा में अर्पण करता रहूंगा।

सिलामिली बूटी

यह बूटी प्रायः सर्व जगह पाई जाती है और प्रत्यक्ष यह सब ही मनुष्य इसको जानता है इससे इसका जादा वर्णन न कर हम वही थोड़ा सा वर्णन करते हैं जो हमने किया है ज्यादा पृष्ठ काले न कर जो थोड़ा सा अनुभव किया वह यह है—सिलामिली के कोमल पत्र लेकर घृत में भूने भूजने में ही थोड़ा अन्दाज से सेंधा नमक डारे बाद इसको नीचे लिखे यत्र से सात रात्री खावे तो जो सिर पिताता रहता हो सो मिटे बात जाय गुल्म जाय हीक जाय श्वास स्वास जाय सर्व रोग जांय जो इसको खावे तो इस मंत्र को जपे।

"ओं३म् नमो भगवती जुक्त शुभगतेज त्रिनी अमृतं स्वाहा" इस मन्त्र से सात रात्रि खावे सर्प काटे पर सिलामिली के पत्र वा बीज बांटकर लगा देव तो सर्प विष नाश हो मुझे आशा है कि पाठक गण उपरोक्त गुणों को अजमाकर राकेश में गुणागुण से सूचित करेंगे।

नोट— एक तोला पत्ती में ।) भर सेंधा नमक डालना घृत बना इतनी दो खुराक बनाना रात्री और बिना दिन निकले सात रात्री बराबर सेवन करना।

व्यायाम मासिक पत्र।

कुश्ती लाठी वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देनेवाला हिन्दी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥) रु० है। पता—मैनेजर व्यायाम कार्यालय रावपुर बड़ौदा

अनुभवसार

नमक सुलेमानी—

संधा नमक ½- सांभर नमक ½- काला नमक ½- सो॰ नम ½- नीबू ½- सोसादर १ तो०, काला जीरा १ तो०, जवाखार १ तो०, काली मिर्च १ तो०, सोंठ १ तो० सुहागा १ तो०, दाल चीनी ॥) भर सतमूली १॥) भर सत पुदीना ॥) भर सत अजवायन) भर।

विधि—चारों नमकों को नीबू के रस में घोलकर साथा में सुखा दो। सुहागा आगपर भून दो। पिर सब को कूट पीस कपड़ छन कर शीशी में भर लो आला दर्जे का नमक सुलेमानी तैयार हो गया।

खुशबूदार केशराज तेल—

तिल का तेल ½ कपूर कचरी १ तो०, बाल छड़ १ तो०, चूरा सफेद चदन १, तो०, गोरन बाहु १ तो०, सुर्ख पानडी १ तो०, पूत गुलाब १ तो०, पहाड़ी रतन जोत १ तो०, इत्र गुलाब १५ बूंद।

विधि तेल व इत्र को छोड़कर सब को जौ कुट करके तेल में डाल दो कुछ दिन बाद इनको छान दो फिर ८ रोज बाद काम में लाओ इससे बाल झरना कम उम्र में सफेद होना, सिर दर्द आदि मस्तक सम्बन्धी रोग दूर होते हैं और खुशबू से दिल प्रसन्न हो जाता है।

सौन्दर्य बर्द्धक उबटन

बादाम की गिरी ३ तो०, लाध ३ मासे तज ४ रत्ती, रस कपूर ३ रत्ती गुलाब जल हस्ब जरूरत।

विधि—बादाम की गिरी को पानी में भिगोकर छिलका दूर करो फिर सब को गुलाब जल में पीस लो और डब्बी में भर कर रख लो इससे मुंहासे, झांई, काले २ मुंह के धब्बे फुंसिया आदि दूर होकर मुख चन्द्र सरीखा दमकने लगता है।

कुत्ता काटे पर योग

(श्वान विष हर मलहम)

आकरा दूध १ तो०, तिल तेल १ तो० गुण १ तो०।

विधि—सब को बराबर २ लेकर घोंट लो उत्तम मलहम बनेगा। इससे पागल कुत्ते, मृगाल आदि का विष होता है।

कुंवर रन्धीरसिंह बमा बैद्य

विशूचिकाअन—

सोंठ, मिर्च, पीपर, दारु हल्दी हल्दी करंज बीज, चिरोंजी की उड़द, सम भाग लेकर पीस गोली करे अंजन करने से विशूचिका छूटे।

लेप से जुलाब

शुद्ध जमालगोटा, शुद्ध सुहागा चौकिया, शुद्ध नालाथोथा, परडबीज सम भाग ले संहुंड क्वाथ में भावना दे कपड़े पर लगाकर आमाशयपर चिपका देा दस्त बंद जारी होंगे जब कपड़ा हटाकर छुटाले सब दस्त होंगे कोई २ वैद्यराज इसे बिना शुद्ध किये ही सब पदार्थ मिला प्रलेप लगाते हैं हमारी राय में शुद्ध होना चाहिये।

उदरारि अर्क—

फिटकरी, यवक्षार, शोरा, नवशादर समान भाग का तेजाब बनावे ५ बूंद ठंडे जल में पिलाने से १ सप्ताह में समस्त उदर रोग शांत होंगे।

निर्लोमी करन—

सीप, घोंघा, शंख पीलापाठा, श्वेत पाषाण की भस्मको जल में घोल का क्षार जल बनालें उस जल से अठगुना सर्षेका पेशाव व चौथाई कटु तैल मिलाकर पकाले तैल मात्र रहने पर छान ले उक्त तैल जहां लगेगा वहां फिर बाल न पैदा होंगे।

नेतरामसिंह वद्य बघौरा

कर्ण बिन्दु तैल—

शहत असली १ तो०, घी १ तो०, नीब की पत्ती का रस १ तो०, तीनों वस्तुओंको कटोरी में मिला कर थोड़ा सा आंच दे जिसमें रस जलने न पाये गुनगुना २ कान में डालने से सब कीड़े मर जाते है किसी हालत में कीड़े के पास दवा न पहुँची तो दुबारा सिंचारा डालना चाहिये।

प्रमेह धातुपुष्ट पर—यह औषधि रामबान है सकड़ा बार की आजमाई है बरगद की बरारोह ½= सोंठ बड़ी १ तो०, हरड़ा १ तो०, तज १ तो० बाजबन्द १ तो० मेदालकड़ी १ तो०, मीठे इन्द्रजो १ तो०, मिश्री ½= सब पीसकर १ सो० गायके दूध सग पीवे तो प्रमेह जाता रहे बलवीर्य बढ़े।

निरगुंडी गुण—

पुष्य इतवार आने वाला है जेठ शुक्ल पंचमी रविवार के रोज दो घड़ी रात के यानी सूर्य उगने के पहिले पुष्य इतवार को निरगुंडी जड़ को ले आवे छाया में सुखा कर सूक्ष्म कपड़छान कर जल के जोगरो गुटका बनावे आंवला प्रमान १ गोली १ महीना तक रोज खावे दूध भातका भोजन करे कुवारी कन्या को रोज भोजन करावे तो जैसी वांछा करे मनोर्थ सिद्ध होय।

(२) दूध सों गुटका खाय और सत्य बोले तो देह ब्रह्मचारी होय बीस स्त्री भोग करने में समर्थ होय तीन महीना दोनों बखत खाय परहेज से रहे।

(३) गायमूत्र सों गुटका खाय ३ महीना पथ्य चने की रोटी खावे तो अठारह प्रकार के कुष्ठ आराम हों।

(४) हेरी के दूध सों खाय तो एक महीने में सफेद बाल उखड़ जांय।

(५) तीन महीने खाय तो नये केश होंय।

(६) चार महीना खाय तो अन्तर

ध्यान होय आगी में न जरे पानी में न डूबे वातु पर मूते तो कचन होय।

(७) करुए तेल यानी सरसों के तेल सों गुटका खाय तो ८४ प्रकारकी वात जाय।

औषधी खाने में सबसे पहिले पथ्य लिया गया है वमन विरेचन से कोठा साफ कर हर एक औषधी खाना आरम्भ करे।

इन औषधियों के गुण बहुत प्राचीन पुस्तक से प्राप्त हुए हैं गुणागुण राकेश द्वारा सूचित करना जिससे उत्साह वृद्धि हो।

(८) पुष्य इतवार को न्योता शनीचर के रोज पीले चावल से कर इन्द्रायन (इन्द्रावन) को पुष्य इतवार को सूर्य निकलने के कपड़े रहित होकर जड़ उखाड़ लेवे सम-भाग सोंठ, मिर्च पीपल मिलाकर गौ के दूध से गोली बना लेवे बेर प्रमान रतिकर्म के पहिले गोली खावे तो बीय स्तम्भन होय।

(९) उपरो विधिसे सफेद आक की जड़ लाकर कमर में बांधकर स्त्री रमण करने से वह स्त्री दूसरे पती के पास नहीं जा सकती।

(१०)बाज २ वक्त रोगीको नींद नहीं आती तो रोग लदी नहीं जाता उपरोक्त विधी से काकजंघा की जड़ लाकर मस्तक में धारन करने से निद्रा आ जाती है।

(११) उपरोक्त विधीसे आम का बांदा लाकर रखे अन्न की राशि में गाड़ देवे तो भाग्यना निकले या अन्न की कोठा में तो अन्न की बढ़ती हो या भंडार में रखे तो भंडार बढ़े या जिस स्त्रीको गर्भ गिरता हो उसे पानी में पीस पिलावे तो गर्भ गिरना रुके आबकारी के दूध सों सात रोज पिये तो जगत का प्यारा होय।

उपरोक्त विधी से हत्था जोड़ी बूटी, बन्ध्या ककर्टं बूटी, बहेरा फूल लावे हत्था जोड़ी ७ भाग बन्ध्या कर्कोरी तीन भाग शिवलिंगी दस भाग, बहेरा नव भाग ले कर जल से पीसकर हाथों में लेपकर द्यूत खेलने आदि अनेक खेल खेलने से जीत होती है मगर यह मन्त्र खेलते व सात बेर पढ़ लेना चाहिये 'ॐ नमो विश्व रूपाय अमुकेन विजाय कुरु २ स्वाहा।' अगर ग्रहण पर्व में १०००० जपकर सिद्ध करले तो क्या कहना है ? अनुभूत है।

महावीरप्रसाद वैद्य सिंहस्थ बांदो

शीतला पर प्रयोग—

परवर के पत्ता, २ गुर्च ३ नागरमोथा अडूसा का रस, जवासा, चिरायता, नीम के मुलायम पत्ते, कुटकी, पित्त पापड़ा इमली के बीज, हल्दी सेमर का रस, चंदन श्वेत ब्राह्मी, चमेली का रस, मौरेठी धना इन सब वस्तुओं को बराबर २ लेकर या तो इनका काढ़ा पिये या इनकी गोली गुर्च या ब्राह्मी के रस में भरबेरी के बेर बराबर बनावे और बच्चों को १ गोली और पांच [illegible] उम्र वालों को दो २ गोली [illegible] पानी से खिलावे। यह नु-सखा शीतला माता मसूरिका को

को अच्छा करता है और उसके प्रकोप से बचाता है। जिन स्थानों में शीतला प्रकोप हो वहां के १६ वर्ष तक के सभी बालकों को इसका प्रयोग कराना चाहिये जिनके शीतला न निकली होगी और वह इसका सेवन करेंगे उनको फिर शीतला निकलने का भय बिलकुल न रहेगा और जिनके निकल आई हों वह इन गोलियोंका सेवन करेंगे तो शीतलाका प्रबल वेग रुक जावेगा और अवश्य अच्छा हो जावेगा। शीतला के प्रबल वेग को रोकने के लिये इससे उत्तम दूसरी औषधी नहीं है इसको सेवन करनेवालों को टीका लगवाने की आवश्यकता नहीं है। हमारा यह नुसखा शतशो-भूत है। इसके प्रयोग से दाह, ज्वर जलन बिसर्प, व्रण और पित्त व्रण भी शीघ्र अच्छे हो जाते हैं। सब शक्तिमान और सम्पन्न आदमियों को यह औषधि मुफ्त बांटना चाहिये।

जो यह दवा न बना सकें वह केवल डाकखर्च भेजकर हमारे औषधालय से मुफ्त मंगालें वा जो कुछ पूछना हो इस पते से पूछें।

विश्वनाथ बाबू वैद्य
अवध आयुर्वेदीय फार्मेसी
फफूंद जि० इटावा

अष्टवर्ग फार्मेसी देहरादून का-

नवीन आविष्कार

मिश्रित अष्टवर्ग	२०) सेर	हिमालयन ब्राह्मी	२॥) सेर
जीवक	४०) "	बिधारा	१॥) "
ऋषभक	६०) "	वैकान्त	२५) "
ऋद्धि	२५) "	लागली	५) "
वृद्धि	२५) "	दशमूल	१) "
मेदा	८) "	भंगबीज	४) "
महामेदा	६) "	हरताल पत्राख्य	२०) "
काकोली	१२) "	केशर	३) तोला
क्षीर काकोली	१६) "	सूर्यतापी शिलाजीत	१) "
पुष्कर मूल असली	५) "	कस्तूरी उत्तम	४०) "
क्षीर विदारीकन्द	४) "	अम्बर	६०) "
नागकेशर नैपाली	२०) "		

नोटः—यथार्थ तथा शुद्ध जड़ी बूटी के खरीदारों को अवश्य इससे सम्बन्ध रखना चाहिये। पता—अष्टवर्ग फार्मेसी देहरादून

वैद्यवरों से प्रश्न

प्रश्न नं० ५५—अर्शांकुर नष्ट करनेकी सरल क्रिया कोई अनुभवी वैद्य महाशय बतानेकी कृपा करें—प्रश्न हल करने का भी सज्जन कष्ट करें जो इस विषय में विज्ञ या विशेषज्ञ हों।

आ० नं० ६६

प्रश्न नं० ५६—भोफली के अन्य नाम विवरण, तथा प्रयोग क्या २ है (२) पाना चूरी, दिमाजरी, खूब कलां ये शब्द निघंटु में नहीं मिलते इनका पूरा हाल प्रयोग सहित वैद्य गण बताने की कृपा करें (३) यदि कोई महानुभाव मा उल जुहब (स्वर्ण-द्रव) बनाने की क्रिया जानते हों तो बताने की कृपा करें। (४) इटंगन के बीज किस वनस्पतिके बीज है और कहां पर पैदा होते हैं विवरण सहित बताने की कृपा करें।

नोट—इन ४ प्र० के उत्तरों की अत्यावश्यकता है वैद्य महोदय शीघ्रता करें।

गंगाप्रसाद द्विवेदी वत्स

प्रश्न नं० ५७—अखिल वैद्य समाज से प्रार्थना है कि मेरे मित्र १ ब्राह्मण जिन्हें आज ७ वर्ष से निम्न लिखित बीमारी है कृपाकर अनुभूत योग प्रकाशित करें या तैयार हो तो लिखें आज ७ वर्ष से खूनी बवासीर है और मस्सों से खून गिरता है आंत भी बाहर आ गई है कृपाकर अनुभूत योग प्रकाशित करें और कृपाकर नकसीरी का योग प्रकाशित करें नाक में हमेशा से खून गिरता है सो किस कारणसे

मालासाविला जमादार

प्रश्न—नं० ५८—वैद्यराजों की सेवा में निवेदन है कि मेरी उमर करीब २० साल के है। मुझे २ साल से स्वप्न दोष की बीमारी है। पेशाब के साथ वीर्य आता है आंखों के सामने सरसों सी फूल जाती हैं थोड़ी ही मेहनत से थकावट मालूम होने लगती है। भूख खुलकर नहीं लगती न दस्त ही साफ होता है उमर के माफिक शरीर में बल नहीं है शरीर अत्यन्त ही दुर्बल है स्त्री प्रसंग में वीर्य शीघ्र पतन हो जाता है। आप से इस गरीब की अर्ज है कि कोई ऐसा नुस्खा बताया जाय जो समस्त शिकायतें रफा कर और वीर्य को पुष्ट कर स्तम्भन शक्ति प्रदान करे। योग अफीम आदि मादकपदार्थों से रहित हो तो बहुत ही अच्छा होगा।

आप लोगों का तुच्छ सेवक—

रामदीन श्रीवास्तव
मु० रेंका पो० मेंहगांव
जि० भिण्ड
गवालियर

वैद्यों के उत्तर

उत्तर प्रश्न नं० ५१—अर्क मुंडा, तीन बार का खिंचा, अर्क गुलाब तीनबार का खिंचा दोनों को १-१ सेर वजनमें लेकर कलई पात्र में रख निम्न औषधियां कुचल-कर ८ घंटे भिगो दबें रसौत असली ६ माशा, आमा हल्दी १ तो० दूर्व छोटी ६ मा०, त्रिफला १॥ तो० नमक लाहौरी ६ मा० गोबी बूंटी १ तोला० शहद असली २॥ तोला इन भींगी हुई औषधियों को भबका द्वारा पुनः अर्क खींच ले, बाद को केशर असली ३ मा०, अफीम ६ मा० कपूर भीमसनी ३ मा० डालकर हिल कर दें बस आद्वितीय आयुर्वेदीय नेत्र बिन्दु (आई-लोशन) तैयार है। जाला, माड़ा छोड़ नेत्र के प्रायः सभी विकारों पर शत प्रति शत गुणकारी है।

उत्तर प्रश्न नं० ५४—हास्फेर कटेली (लक्ष्मणा) गर्म प्रदेश है और श्रीभगवत आ० फार्मेसी बरेलीकपुर (अवध) से ५) फी सेर के हिसाब से मिल सकती है।

उत्तर नं० ५५ [illegible] की हरड़ स्वामी हरिशरणानन्दजी अमृतसर पंजाबसे षट अंगुल प्रमाण मूल्य १ हरड़ का २) और ५ तोले का ३॥) है अवश्य मिलती हैं किंतु इसमें यह गुण नहीं है कि हाथमें लेने से विरेचन होता हो। स्वामी ह० न० जी दूसरी चेतकी नाम हरीतकी का पता लगा रहे हैं जो कि गुण में (हाथ में लेने से विरेचन होता हो। उन्हीं से दरियाफ्त करने पर ज्ञात होगा। किन्तु उनके यहां पर ऐसे गुणवाली हरीतकी नहीं है।

वैद्यों को सुभीता।

प्रायः अधिक औषधि निर्माण कार्य में आनेवाली अलभ्य दुष्प्राप्य वनौषधियों लक्ष्मणा अष्टवर्गादि वैद्यगणों के सुभीते के लिये हमारे यहां सग्रहीत रहती है बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर भाव देख सकते हैं।

मैनेजर श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी

बरालोकपुर—इटावा यू० पी०

आपसी वार्तालाप

श्रीयुत पं० धरणीधर शर्मा मु० पो० कछवा जिला मिर्जापुर के तथा समस्त विद्वानों व कवियों को सादर सप्रेम जै श्री जी की—अत्र कुशलं तत्रास्तु:-सप्रेम निवेदन है कि उक्त पं० जी ने 'राकेश उदय ६ वर्ष २ में 'बिना औषधीश मांहि मन, सदा धाये ते" नामक कविता प्रकाशित कर राकेश के प्रति जो श्रद्धा प्रकट की है उससे 'राकेश' के प्रेमी जन प्रायः सभी परिचित होंगे अतः उक्त महोदयजी को धन्यवाद है और निवेदन है कि समर्थ महानुभाव ऐसी ही भाव पूर्ण कवितायें लिखकर 'राकेश' के प्रति श्रद्धा प्रकट कर आयुर्वेद के शिक्षण में पूर्ण सहायक होंगे।

गुणागुण

राकेश वर्ष २ उदय २ में सर्व व्रण नाशक मलहम-राजवैद्य विश्वनाथ वाजपेयी फफूंद द्वारा प्रकाशित तथा राकेश वर्ष २ उदय ३ में योग नं० ३ वात मर्दन तेल पं० श्यामनारायण शर्मा प्रयाग द्वारा प्रकाशित दोनों योग आशातीत गुणकारी साबित हुये।

भवदीय-आयुर्वेदादि जिज्ञासु
रामनारायण वैद्य
मु० नुनहट पो० मोरमी ग्वालियर

परामर्श

डाक्टर पं० रामेश्वरप्रसादजी त्रिवेदी गोतोना उन्नाव हैं।

पञ्चकर्म पर प्रलेप

१—शीर्षक मुंह में घोड़े के बालके अतिरिक्त क्या लोहे का तार नहीं लगा सकते।

२—बालुका यन्त्र के ताड़ बालुका गर्भ पातालयंत्र से निकालना क्या गुण न्यून होगा।

३—चना तो यही न जो सब जगह पाया जाता है अथवा पीला चना दूसरा भी होता है।

४—वमन विरेचन के लिये कितना लेप किया जाय धातु पुष्ट के लिये कितनी मात्रा से खिलावें।

५—जिस प्रकार अन्य अनुभवसारका मात्रा, गुण, अनुपान, रोग लिखा इसका क्यों नहीं लिखा क्या अनुभवसार इसी प्रकार लिखना चाहिये।

आयुर्वेदशास्त्री-
धरणीधर शर्मा वैद्य
मु० पो० कछवा जि० मिर्जापुर

श्रीमान् सम्पादक 'राकेश'

सादर वन्दे!

'राकेश' के विशेषाङ्क स्वीकृताङ्क को

देखकर अति ही प्रसन्नता हुई वास्तव में विशेषाङ्क अति ही सुन्दर और मनोहर है। इस के एक एक लेख अति ही महत्वपूर्ण और सुन्दर हैं। कई चित्र दिये हुए हैं जिनमें व्यंग चित्रों ने कमाल हांसिल किया है। सम्पादक महोदय के इस परिश्रम को देखकर मैं हृदयसे धन्यवाद देता हूं। ऐसे सर्व श्रेष्ठ सस्ते और सर्व साधारण व उपयोगी आयुर्वेदीय मासिक पत्र का ग्राहक होना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

आ० के० बाजपेयी दौलतपुर

श्रीमान पं० धरणीधर जी—आपने मेरे भाई के लड़के के रोग के विषय में प्रश्न नं० २८ के उत्तर में लिखा रोग के लक्षण लिखो सो नीचे लक्षण लिखता हूं सो कृपाकर अनुभूत योग राकेश में प्रकाशित करने की कृपा करगे। रोग यह है जिसे बहुत से लोग छींप छांई, झिमूनी और कितने ही श्वेत कुष्ठ कहते हैं और यह रोग करीब ५-६ या ७ वर्ष हो गये पहले शुरू हृदय पर १ या दो दागों से हुआ था परन्तु बढ़ते २ सर्व शरीर पर हो गया है मामूली खुजली होती है पानी वगैरह कुछ नहीं निकलता है इस रोग पर श्रीमान पं० गौरीशंकर पाठक वैद्य शास्त्रीजी ने औषधि दी थी परन्तु कोई काम नहीं हुआ और इस लड़के की उम्र १६ वर्ष की है बोलते वक्त सकता है जिसे हकलापन कहते हैं इसके लिये भी कोई अनुभूत योग प्रकाशित करें।

आपका नम्र—

माला सांवलदास जमादार

---

* वैद्य *

सब से श्रेष्ठ सबसे सस्ता और सबसे पुराना प्राचीन और अर्वाचीन वैद्यक सम्बन्धी सर्वोपयोगी सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य १॥) वी० पी० से २) रु०

इसके १७ वें वर्ष की प्रथम संख्या विशेषाङ्क रूप में प्रकाशित हुई है जिसकी अनेक विद्वानों के बड़े महत्वपूर्ण लेखों तथा चित्रों से सुसज्जित किया गया है विशेषाङ्क देखने योग्य है मूल्य ॥) परन्तु एक वर्ष के लिये ग्राहक होनेवाले को वार्षिक मूल्य में ही दिया जायगा।

पता—मैनेजर वैद्य आफिस मुरादाबाद



वैद्यक शब्द निधि—

यह वैद्यक शब्दों का हिन्दी, संस्कृत गुजराती, मराठी और यूनानी कोष है। जिसको वैद्य गोपीनाथजी भिषगरत्न ने बड़े परिश्रम से अनेक कोषों और निघन्टु ग्रन्थों से सार ले आयुर्वेद शिक्षार्थियों के लाभार्थ तैयार किया है पुस्तक ४८ पृष्ठों में साफ सुन्दर कागज व छपाईसे डबल क्राउन साइज में रचित है जो कि उंका आयुर्वेदिक फार्मेसी अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित की गई है।

बन्ध्या दोष निवारण

इस पुस्तक के संग्रहकर्ता व प्रकाशक पं० गंगासहायजी बाजपेयी औरैय। निवासी हैं-अनेक विधि यंत्र तंत्र मन्त्रौषधोपचार सहित १५ पृष्ठों में लिखी गई है

मिलने का पता—
मैनेजर सनातनधर्म पुस्तकालय
इटावा

पुत्रामृत बलली—

इस पुस्तक में मनुष्य के वीर्य दोष दूर करने के उपाय तथा बाजीकरण प्रयोग व वन्ध्या स्त्रियों के दोष निवारण हेतु विधि पूर्वक देव पूजनादि संकेतों तथा औषधि प्रयोगों का वर्णन किया है जिसके द्वारा स्त्री पुरुष नियमानुसार चलकर सन्तानोत्पन्न करने योग्य हो सकते हैं साथ ही बालकों के गर्भावस्था से लेकर जन्म होने के बाद तक के भी होनेवाले रोगों से आरोग्य होने के पूर्ण साधन उत्पन्न की संग्रहीत हैं-संग्रह उपयोगी तथा परिश्रम सराहनीय है-प्रत्येक ग्रहस्थ को पढ़ना आवश्यकीय है—

मिलनेका पता—
मैनेजर सनातनधर्म पुस्तकालय
इटावा

लेखकों को [illegible]

लेखक महानुभावों से निवेदन है। [illegible] 31 अगस्त सन १९३० तक "प्लीहा रोग" पर निबन्ध भेजने की कृ[illegible] का लेख विशेषतापूर्ण व उत्तम होगा उन्हें स्वर्ण पदक भेंट किया जायगा। [illegible] लेखक अन्वेषण पूर्ण लेख भेज कर मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

—मैनेजर

राकेश वैभव

[ले०—वैद्य वर्मा "बुकाड़"]

रूप गुण आगर औ अमराधीश इन्द्र कहें।
याही ते "रूप इन्द्र" जग में कहाये हौ)
विप्र वंश छिवेदी जाति माहि जन्म ले।
यश के प्रकाशिये को वरालोक आये हौ॥
सम्वादन नेम-प्रेम, 'राकेश' सुयोग्य पत्र।
करत सानंद श्रम वैद्यन मन भाये हौ॥
वैद्यक प्रचारन को गुण के प्रकाशन को।
यथारथ भाषन को रूप धरि आये हो॥
बालयकाल राकेश को अब लौ रह्यौ है तात।
वैद्य विद्या सिखावन को पुर याहि आयो है॥
महान प्रतापी गुणी, शक्तिवान, ज्ञानवान।
होन को किशोर आयु चरण को बढ़ायो है॥
आनंद जब होइ है, यौवन प्रवेश करे।
मैंटे रोग व्याधिन को अति ही हुलसायो है॥
प्रबल रोगान्धकार मेंटि, मिथ्या वैद्य राजन मेंटि।
झूठे प्रयोगन मेंटि, चन्द्रिका छिटकायो है॥

राकेश और बधाई।

[ले०—सी० एल० बी० सिन गौड़ी कटनी सी० पी०]

रा—घटु वैद्यन लाज, सब पत्रन सिर मौर हो।
सिद्ध करन को काज, यह वैद्यन में शोर हो॥
के—वल विन्ती है प्रभु, दीर्घायु राकेश हो।
मासिक से पाक्षिक होवे, टाल दो इस भेष को॥
श—त योगों से सदा राकेश को बल दीजिये।
बधाई है राकेश की रुज रहित सब को कीजिये॥
कियो अमित उपकार उभय वर्ष की आयु में।
मेटो बहु अन्धकार राकेश बालापनहि में॥



यू० पी० इण्डियन मेडिसन बोर्ड का बैठक

तारीख २३-२-३० को दिन के ८ बजे लखनऊ, ए बजीर मंजिल कोठी पर श्रीमान रॉ० जस्टिस ब्रजोरिया सन साहब के सभापतित्व में इंडियन मेडिसन बोर्ड की बैठक हुई।

सब प्रथम चीफ जस्टिस चेयरमैन सा० को उनके चीफ जस्टिस हो जाने पर बधाई दी गई तथा गवर्नमेंट को धन्यवाद दिया गया तत्पश्चात् सब कमेटियों द्वारा स्वीकृत हुए प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए जिनमें निम्न लिखित मुख्य है।

२८,७५) रुपये वैद्यक संस्थाओं के लिये तथा १८७।) रुपया यूनानी संस्थाओं के लिये स्वीकृत हुआ जिसमें ५००) रुपया श्री आयुर्वेद विद्यालय कानपुर को, २००) मुस्लिम कालेज हरद्वार को तथा २००) तिब्बिया स्कूल लखनऊ आदि के लिये थे, म्यूनिसिपल बोर्ड तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड सर्विस के लिये जयपुर आ० वा० ब० विद्यापीठ, पीलीभीत वैद्यक वि० , मुरादाबाद कालेज, गुरुकुल कांगड़ी यूनानी तिब्बिया कालेज में उत्तीर्ण [illegible] तथा हकीम लेना स्वीकृत हुआ।

डाक्टर बोस सा० ने बोर्ड द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं की स्वीकृत [illegible] सु ई। स्कूल की परीक्षा शुल्क ५) तथा कालेजों की परीक्षा शुल्क ७॥) रु० रखे गये। इसी प्रकार परीक्षाओं की फीस और परीक्षाओं के सम्बन्धित का विवरण भी सुनाया गया जो सर्व सम्मतिसे पास हुआ।

चन्द्रावत् टस्ट वैद्यक विद्यालय जगदीशपुर जिला गोरखपुर तथा वैद्यक विद्यालय कानपुर भी बोर्ड से सम्बन्धित संस्था स्वीकृत हुई। इत्यादि प्रस्ताव स्वीकृत होने के पश्चात् मीटिंग ३ बजे समाप्त हो गई जिसका विशेष विवरण फिर प्रकाशित किया जायगा।

—बनवैयालाल जैन वैद्य कानपुर

दयानन्द आयुर्वेदिक कालेज लाहौरमेंशव छेदनकार्य आरम्भ

आखिरकार छात्रों की चिरवांछित कामना पूर्ण हुई, छेदनालय में शव चीरा गया। छेदनाध्यापक ने एक एक अंग को खूब सावधानी से दिखाया। आज छात्रों को पता लगा कि जिस शरीर की बावत हम इतना ढूंढते रहते हैं, उसमें ईश्वर ने कैसे कैसे विचित्र कला यंत्र स्थापित किये हुए हैं, जिन्हें बिना चीरे कोई प्रत्यक्ष नहीं कर सकता।

विलायती औषधियोंका बहिष्कार

देहली के डाक्टरों ने अपनी एक सभा में यह प्रस्ताव पास किया है कि विलायत से किसी प्रकार की औषधियें न मंगाई जाय, और जो विलायत को औषधियें मंगाने के लिये पहिले आर्डर दिये जा चुके हैं वह अब कैंसल करा दिये जांय अब वे लोग भारत में उत्पन्न होने वाली देशी औषधियों को ही चिकित्सा के काम में लाने का विचार कर रहे हैं।

यूरोप में विचित्र रोगोत्पत्ति

न्यूयार्क के गत ६ फरवरी के एक समाचार पत्र से मालूम हुआ है कि यूरोप में तोतों के द्वारा एक विचित्र रोग उत्पन्न हुआ है। जिसके कारण अनेक मनुष्य मृत्यु के ग्रास हो रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के आरोग्य रक्षा विभाग की प्रयोगशाला के एक कर्मचारी को वाशिंगटन में जाकर इस रोग के अन्वेषण का कार्य भार सौंपा गया किंतु वह तोतों के स्पर्श से वहां जाकर शीघ्र ही मर गया। प्रयोगशाला की विज्ञप्ति से पता चला है कि अब तक दो सौ से अधिक तोतों की परीक्षा की गयी है किंतु तोतों के किस अङ्ग अथवा किन रसायनों से इस रोग का प्रादुर्भाव हुआ। यह ठीक नहीं जान पड़ा॥

कृष्ण सर्प वसाञ्जन

यह अञ्जन काले सांप की चर्बी तथा कई नेत्र रोग नाशक औषधियों के मिश्रण द्वारा तैयार किया अनुपम आयुर्वेदोक्त औषधि है। इसके सेवन से आंखों का फूला माड़ा, जाला, पटल रोग आदि सब नेत्र रोग दूर होते हैं। यहां तक कि अन्धा मनुष्य भी देखने में समर्थ हो सकता है। मू० फी तो० ४) डाक खर्च अलग।

पता—श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी गंगालोधपुर (इटावा)



डा० वोरनौफ का ग्रन्थी व नली प्रयोग और हमारी कायाकल्प क्रिया

कुछ काल से पत्रों द्वारा यह सुनाई पड़ रहा था कि पेरिस के एक डाक्टर ने ऐसी नवीन विधि का आविष्कार किया जिसके द्वारा 'बिलकुल काम शक्ति हीन पुरुष को युवा अवस्था की शक्ति सुख का पुनः शरीर में संचार हो सकेगा।"

उक्त डाक्टर महोदय बन्दर की ग्रन्थियों को निकाल मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर अपनी कार्य कुशलता का परिचय अमरीका आदि देशों में दे चुके हैं। सुना है कि अब कुछ रूसें ने भारत में भी पधारे हैं। और अपने आविष्कार का प्रयोग इस देश के कई सेठ साहूकारों पर भी कर दिखाया है। उनमें से एक नामी सेठ इन्दौर निवासी श्रीमान हुकमचन्दजी हैं।

इन्होंने अपनी वृद्धावस्था में सपत्नीक अपने शरीर को ग्रन्थी प्रवेशादिक द्वारा पुनः युवा काम शक्तिशाली बनवाया है। और भेंट स्वरूप डाक्टर साहब को दो लाख दस हजार रुपये प्रदान किये हैं।

जिन मनुष्यों ने इस आविष्कार के समाचार को पढ़ा होगा। तथा अब पढ़ेंगे तो अवश्य ही इस नूतन चमत्कार पर चकित होंगे,—परन्तु वह व्यक्ति जिन्होंने किंचित भी आयुर्वेदाध्ययन कर स्वदेश चिकित्सा रहस्य को समझा है, वे रोक टोक बिना कहे न रहेंगे कि इससे भी चमत्कारिक चिरस्थाई आविष्कार आयुर्वेद विज्ञान में वर्णित हैं। जिन्हींके आधार पर यह सब नवीन आविष्कार दिखाये जा रहे हैं।

हमारे वैद्यक शास्त्र में अनेक प्रलेप तैल विद्यमान हैं। जिन में मगर नाभि, बाराह सिंह की चर्बी कपि तथा भालू शिश्न आदि का बाह्य ही प्रयोग कर वृद्धों को भी काम विषयक चैतन्यता दी जाती है। और भी बुद्धि को विस्मित करनेवाले ऋषियों के बताये रसायन प्रयोग हैं जिन के द्वारा वृद्ध पुरुष केवल युवा शक्ति को ही नहीं बल्कि रंग, रूप, नख, त्वचा लोमादि को भी नवीन उगाकर कायापलट कर सकता है। इन रसायन प्रयोगोंका वर्णन हमारे सुश्रुतादि ग्रन्थों में पाया जाता है।

जिसमें से सुश्रुतोक्त एक रसायन प्रयोग पाठकों के अवलोकनार्थ यहां पर उद्धृत कर हैं।

विडंगकी उत्कृष्ट कायाकल्प विधि

बायविडंग की मींगी निकाल कर एक द्रोण भर लेवे और उसे कड़ाही या

टोकरी में डालकर उबाले और फिर इस को दलिये की तरह सिजावे जब पानी जल जावे और बिड़ंग सीज जावे तब उतार ले और पत्थर पर डालकर पिट्ठी की तरह पीस लेवे फिर इसे लोहे के दृढ मड़े में भर देवे और शहत पानी भर देवे और ऊपर शहत पानी भर देवे फिर (मुंह बद कर) वर्षा ऋतु में राख के ढेर में छाया युक्त मकान में गाड दे और चार महीने तक गड़ा रहने दे फिर वर्षा के व्यतीत होनेपर उखाड़ लेवे और पश्चात् तरा खिलाना-दि से शरीर का संस्कार करके सहस्र संपाद्या-ध्यायोक्त रोग नाशक मंत्रोंसे हवन करके नित्य प्रातःकाल बल के अनुसार उपयोग करे। जब यह पच जावे तब मूग और आंवलों के अलोने, कम चिकने यूष के साथ घृत युक्त भात खावे और छाग दुग्ध रेड़ के बिछौना पर सोवे।

ऐसा करने से एक महीने के पीछे सारा शरीर में से कीड़े निकलते हैं इन पर अणु तैल (जो सुश्रुत में कहा गया है) मर्दन करे और बांस की पट्ट से या बांस की चिमटी से उन कीड़ों को (उस का परिचारक) हटाता रहे फिर दूसरे महीने में चींटियां और तीसरे महीने में जूं समस्त शरीर से निकलते हैं इन्हें भी पूर्वोक्त प्रकार से दूर करे। चौथे महीने में दांत नख और रोम (बाल) सब गिर जाते हैं फिर पांचवें महीने में श्रेष्ठ गुण वाले लक्षणवाले नये दांत नख और रोम (बाल) पैदा होते हैं अमानुष (दिव्य) और सूर्य के प्रकाशवाला सुन्दर नवीन शरीर हो जाता है और दूर की वार्ता सुनने तथा दूर की वस्तु देखने की शक्ति उसे प्राप्त हो जाती है रजोगुण और तमोगुण दूर होकर सत्वगुण उपस्थित हो जाता है, वेद वक्ता तथा पूर्व का उत्पन्नकर्ता हो जाता है, हाथीकासा बल और घोड़ेकासा वेग हो जाता है, फिर तरुण अवस्था (जवानी) आ जाती है आठ सौ ८०० वर्ष की अवस्था) उमर प्राप्त हो जाती है।

उपरोक्त आयुर्वेदीय रसायन सिद्धि कायापलट क्रिया को पढ़कर अधिकांश व्यक्ति तो ठट्ठा देंगे। और मिथ्या समझेंगे परन्तु यह दोष उनका नहीं—इस अविश्वास के कारण हमी (आयुर्वेदाभिमानी) वैद्य समाज हैं।

जिसने कि अपने अष्टाङ्ग आयुर्वेद के अद्वितीय चिकित्सा चमत्कार को पूर्ण रीति से जनता के समक्ष प्रत्यक्ष रूप में विकसाने का उद्योग नहीं किया आज हम पूर्ण शक्ति रखते हुए भी अपने ऋषि विज्ञान का प्रयोग न कर शारीरिक रक्षा हेतु दूसरों का मुंह ताक रहे हैं।

और हम अपने नवीन आविष्कार को तो जाने दें—ऋषियों के अनुभूत संचित प्रयोगों को पुनः समयानुसार अनुभव करने में भी आलसी बने बैठे हैं। और विशेष कर ऐसे समय में जब कि संसार

के सभी चिकित्सा पद्धति के अनुयायी उन्नति शिखर की तरफ दौड़े जा रहे हैं और हमें अपनी बिल्कुल खोज का ही सुचारू रूप से काम में न लाना कितनी बड़ी अकर्मण्यता है।

प्रत्येक वैद्य मात्र का कर्तव्य है कि अपने २ प्रसार को बढ़ावें और प्रांतीय वैद्य सम्मेलनों को आवश्यकता है कि वह अपने प्रांत की अन्तर्गत पाठ शालाओं में अन्वेषण विभाग द्वारा ऐसे प्राचीन ऋषि वर्णित प्रयोगों का अनुभव कर अपने आयुर्वेद का मस्तक ऊंचा कर संसार को लाभ पहुँचाने के साथ २ चकित कर दें।

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे (किस्ती नुमा) चिकने, खूब सुरत मय घोटने की उत्तम मुसली सहित रहते हैं, इनकी लम्बाई १½ इञ्च चौ० १० इञ्च ऊंचाई पूरा इञ्च वजन में २५ सेर के हैं। २ सेर औषध सरलता पूर्वक घोटी कूटी जा सकता है इसके सिवाय तमाम खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं, प्रत्येक खरल का मूल्य १०) इन्हीं खरलों के आधे साइज व वजन के भी खरल तैयार किये गये हैं जिनका मूल्य ५) रु० है खरल का आर्डर देते समय ऐशगी अवश्य भेजें, नहीं तो आर्डर नहीं समझा जायगा, पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के होना चाहिये।

मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

प्रकाशित हो गया ! चित्रण हो गया !! कुछ शेष है !!!

नपुंसकों का पूर्ण सहायक ! बलावता का कट्टर शत्रु

राकेश चलचित्रांक

—:o:—

राकेश मासिक पत्र के अप्रेल मा[illegible] प्रकाशित [illegible] विशेषांक 'कलाचित्रांक' को [illegible] नथा [illegible] से [illegible] है कुछ [illegible] से प्रशंसक बधाई तार के [illegible] उस प[illegible] ध हो रही आज्ञा करने की [illegible] सूचनायें [illegible] इससे पाठकगण [illegible] ज्ञात होते हैं कि यह विशेषांक कितना [illegible] द्ध हुआ है तथा [illegible] किस प्रकार रोगियों तथा [illegible] स्यों की [illegible] कर रहा है जिस [illegible] पूर्ण इसी पत्र में तथा और भी पत्रों में विद्वानों सम्मतियों तथा स[illegible] चित्रों से प्रकाशित हो चुकी हैं। (पर राकेश के ग्राहक बनने पर मुफ्त ही [illegible] मिलगा) संतोषित हो सकेंगे कलाचित्रांक १०९ पृष्ठ में भारत के प्रसिद्ध वैद्यकों के सचित्र अनुभवी लेखों तथा प्रयोगों द्वारा सुसज्जित है—विशेषतया शिक्षाप्रद कार्टून तथा चलचित्र संग्रह भी किया गया है वैद्य तथा गृहस्थ विद्यार्थियों को विशेष उपयोगी होगा आशा है कि आप हमारे कलाचित्रांक को मंगा और उससे शिक्षा तथा औषधि लाभ प्राप्त कर श्रम को सफल करेंगे ताकि हम राकेश को और भी उन्नत शील बनाने का उद्योग करें—क्योंकि हमने राकेश के तृतीय वर्षमें पदार्पण करने पर मासिक से पाक्षिक रूप में परिवर्तन करने का तथा उस के पशुचिकित्सादि विशेष उपयोगी स्तम्भ बढ़ाने का सकल्प कर लिया है तथा राकेश पाक्षिक पत्र को वृद्धियों के सचित्र लेखों तथा और भी चित्रों से सुसज्जित करने का आयोजन कर रहे हैं अतः प्रार्थना है कि आप अभी से ग्राहक बन श्रद्धा उत्पन्न कर हमारे उत्साह को और भी वृद्धि करेंगे।

—मैनेजर

३८ साल से प्रसिद्ध

सुप्रसिद्ध सुख संचारक कम्पनी मथुरा की बनाई हुई यह अमूल्य दवायें केवल समस्त भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि बाहर भी ३८ साल से प्रसिद्ध हैं इन की अपूर्व गुणकारिता का यह सबसे बड़ा सबूत है कि इतने दिनों से इनकी बिक्री दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है इससे बढ़कर दूसरा प्रमाण और क्या हो सकता है।

सुधासिन्धु

सभी बीमारियों के लिये कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, आंव, खून के दस्त पेट की सभी बीमारियों, बच्चों का रोना, हरे पीले दस्त, के. दूध पड़ना ऐंठा गठिया आदि के लिये सुधासिन्धु रामबाण है तुरत फायदा होता है सुधासिन्धु सुगन्धित सुस्वाद है और सर्व सुलभ है मूल्य फी शीशी केवल आठ आना।

बाल सुधा

बच्चों के सभी रोगों के लिये इससे दुर्बल बच्चे मोटे होते हैं निरोग लड़के ताकतवर होते हैं। निरोग लड़के बीमार होनेसे बचते हैं मीठा है बच्चे खुशी से पीते हैं कीमत फी शी० ॥)

दद्रु गज केशरी

नया पुराना चाहे जिस प्रकार का दाद हो इससे तुरत आराम होता है दाद के लिये ऐसी अचूक और शर्तिया दवा दूसरी नहीं है जलन तकलीफ वगैरा कुछ नहीं होती मू० ।)

यह दवाइयां भारत सरकार से भी रजिस्टर्ड हैं।

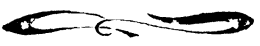
हमारी दवायें सब जगह मिलती हैं, यदि आप के शहर कस्बे या गांव में न मिले तो इस पते पर पत्र लिखकर मंगायें।

(बड़ा नया सूचीपत्र मुफ्त मंगवाइये)

मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा

स्वर्ण अवसर

लाभ के साथ २ नाम की ख्याति पैदा कीजियेगा



१—जो सज्जन "राकेश" के कम से कम दो ग्राहक बनायेंगे। उनका नाम धन्यवाद सहित राकेश के शुभचिन्तकों में प्रकाशित किया जायगा।

२—जो सज्जन राकेश के कमसे कम ५ ग्राहक बनावेंगे उनका नाम धन्यवाद सहित राकेश में छापनेके साथ २ 'पूयमेह विज्ञान' अर्थात सुजाक चिकित्सा ग्रन्थ मूल्य २) का भेंट स्वरूप रजिष्ट्री द्वारा भेज दिया जायगा। यदि उनकी इच्छा हो तो 'राकेश' का एक वर्ष तक बराबर हर एक अङ्क उनकी सेवा में पहुँचता रहेगा चाहे या तो सहायक रजत पदक भी भेंट दिया जावेगा।

३—जो सज्जन राकेश के २५ ग्राहक बना देवें। उनका नाम रथाई ग्राहक श्रेणी में लिखा जावेगा। और 'राकेश' बिना चन्दा के प्रति वर्ष उनकी सेवा में पहुँचता रहेगा इसके अतिरिक्त उनकी इच्छा हो तो धन्यवाद पूर्वक सहायक स्वर्ण पदक भेंट भी किया जा सकता है।

इस वर्ष के धन्यवाद पात्र

इस वर्ष राकेश के ग्राहक वृद्धि करने में हम श्री राजाकिशोरजी बाजपेई मु० पो० दौलतपुर रायबरेली तथा रविशङ्कर अम्बाशङ्करजी शास्त्री घाटकोपर बम्बई निवासी व श्रीरामनारायणजी श्रीवास्तव नूनहड के शुभ नाम धन्यवाद सहित प्रकाशित करते हैं और उनकी कृतज्ञता तथा परिश्रम पर सदा आभारी हैं। आशा है इसी भांति अन्य सज्जन भी ग्राहक वृद्धि कर मुझे अनुग्रहीत करेंगे।

इनसे सचेत रहिये

(१) कविराज एन० दत्त शर्मा बहजोई (२) वनौषधि भंडार बेहटा बुजुर्ग जि० हरदोई यह व्यक्ति अविश्वासनीय और धोखा देने वाले है॥

मैनेजर

राकेश के तृतीय वर्ष का भविष्य।

ग्राहक अनुग्रहकों को विराट उपहार

प्रिय पाठकगण ! 'राकेश' का द्वितीय वर्ष प्रथम की भांति आगामी ३१ अगस्त को समाप्त होता है। तृतीय वर्षारम्भ से 'राकेश' पाक्षिक होकर प्रत्येक शरीरावयव चित्रों सिवा अन्य वैद्योपयोगी चित्रों सहित सचित्र प्रकाशित होगा। और वर्तमान विषयों के साथ ही साथ दो स्तम्भ समाचार स्तम्भ, पशु चिकित्सा स्तम्भ और बढ़ा दिये जायेंगे।

इन सब उपयोगी विषयों के साथ ही नाना प्रकारकी बूटियों के सुन्दर रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे। इतनी विशेषता पूर्ण होते हुए तृतीय वर्षारम्भ की प्रसन्नता में प्रोफेसर प० बालकरामजी शुक्ल आयुर्वेदाचार्य द्वारा रचित— "विराट उपहार"

पूर्णमेह विज्ञान

अर्थात सुजाक चिकित्सा का बृहत बड़ा ग्रन्थ जिसका मू० २) रु० है 'राकेश' के तृतीय वर्ष के पुराने व नवीन बनने वाले ग्राहक महोदयों को सादर भेंट किया जावेगा, इतनी बड़ी विशेषता के साथ २ 'राकेश' के प्रकाशन में और भी विशेष प्रबन्ध किया जाकर और प्रति मास दो बार प्रकाशित होने पर भी वार्षिक चन्दा सिर्फ ३) रु० ही रक्खा जावेगा।

निवेदक:—जनरल मैनेजर

पं० बालकराम शर्मा के प्रबन्ध से राकेश प्रेस बरालोकपुर (इटावा) में छपा

राकेश रजिस्टर्ड नं० ए० १८७०

राज स्वर्ग इन्द्रवर्ग की, नेक नहीं अभिलाष। केवल चाहत नाथ में, आरत जन दुःख नाश॥

श्रियं सद्ग्राहभवतां पुरयिष्यन्नेजः प्रतरं भवानी। विराजते निर्मल चन्द्रकायां महौषधीवज्रिलतामिमद्रो॥

सम्पादक--द्विवेदि पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री
वार्षिक मूल्य २)] जौलाई ३१ [विदेशवालोंसे ३)

*

राकेश के नियम

--केश का नवीन वर्ष ३० सितम्बर से प्रारम्भ होता है।

राकेश प्रत्येक मास की अन्तिम तारीखों में प्रकाशित होता है।

ग्राहक होनेवाले सज्जन अपना पता साफ भाषा में लिखें।

हमारे पास पत्र १५ तारीख तक न पहुँचे पोष्ट आफिस से उत्तर लेकर हमें फौरन सूचना देवें।

पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये।

ग्राहकों के गरीब रोगियों का एक प्रश्न मुफ्त छपेगा। अधिक छपाने के लिये) प्रति प्रश्न देना होगा।

लेखकों के प्रति

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह सम्पादक के नाम आवें।

२—आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रायः प्रश्न नहीं छाप सकेंगे।

३—आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक अन्वेषण पूर्ण लेखों को पत्र में प्रथम स्थान मिलगा।

४ अच्छे लेखों पर पुरस्कार दिया जायगा।

५ लेखों के घटाने बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक को होगा।

६ प्रयोग प्रेषक सज्जन अनुभवी प्रयोग ही भेजने की कृपा करें अन्यथा प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे।



विषय	पृष्ठ
सद्भावना	२८१
वर्षा ऋतु	२८२-२८६
प्राचीन भारत और शल्य तन्त्र	२८७-२९०
हैजा या कालरा	२९१- ९४
व्यय और सामाजिक व्यवस्था	२९५-३००
वनस्पति विज्ञान (अगस्त्य)	३०१-३०२
आपसी बातचीत	३०३-३०६
प्रयोग परीक्षा फल	३०६-३०७
अनुभवसार	३०८
वैद्यवरों से प्रश्न	३०९
वैद्यवरों के उत्तर	३१०-३१

+—* श्री [illegible] जयतिः *—+



ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण परीक्षित ऐसी
अन्य चिकित्सा सब भूतल में और न कोई जैसी ॥
चीर फाड़ की क्रिया जहां करते पदेशिक सारे
करते हैं आरोग्य वहां जड़िये ये वैद्य हमारे ॥

वर्ष २ | बरौलीकपुर जोखाई सन् १९३० | संख्या ११

सद्भावना.

हे भानु बृन्द ! इच्छा यह हो यदि, देश भक्ति की।
आयुर्वेदोत्थान और संगठन शक्ति की ॥
तन मन धन अरु, धर्म सभी की रक्षा होवे।
आंगल अरु यूनान, नहीं सम कक्षा जोवे ॥
तो भरसक सामर्थ से, वैदेशिता भगाइये।
आयुर्वेदी पत्र जे, तिन सब को अपनाइये ॥

ले०—पाठक गौरीशंकर वैद्य

वर्षा ऋतु

[ले०—श्रीयुत वैद्य शंकरलालजी सम्पादक "वैद्य" मुरादाबाद]

वर्षा ऋतु का प्राकृतिक सौन्दर्य चाहे जितना चित्तरंजक हो परन्तु वैद्यक संसार में वर्षा ऋतु की बड़ी निन्दा है। कवि लोग इसके विषय में कुछ भी कहें पर वैद्यक दृष्टि से यह सम्पूर्ण ऋतुओं से अधम समझी जाती है। इसमें हजारों रोगों की उत्पत्ति होती है, इस कारण वैद्य लोग इस को रोगों का घर कहते हैं। इस देश में रोगों की दो फसल होती हैं। एक बसन्त ऋतु में प्लेग, माता शीतला, सन्निपात आदि रोग उत्पन्न होते हैं और वर्षा ऋतु में हैजा, मलेरिया, अजीर्ण, अतिसार प्रभृति रोग प्रकट होते हैं। परन्तु वर्षा ऋतु में जितने रोग होते हैं, उतने बसन्त ऋतु में नहीं होते। इस कारण यह बसन्त ऋतु की अपेक्षा अधिक भयंकर है, इसके सिवा बसंत ऋतु में जो विकार पैदा होते हैं वह शीघ्र ही शमन हो जाते हैं परन्तु वर्षा ऋतु के उत्पन्न हुए विकार बहुत दिनों तक भी शांत नहीं होते।

वर्षा ऋतु का सभी मनुष्यों पर असर होता है, जो लोग बिलकुल स्वस्थ हैं। उन के कभी किसी प्रकार का रोग उत्पन्न नहीं होता वर्षा ऋतु में उनके भी कुछ न कुछ थोड़ी बहुत शिकायत अवश्य देखी जाती है, अतएव वर्षा ऋतु में खूब सावधान रहना चाहिये, हमारे पूर्वाचार्यों ने हमारी स्वास्थ्य रक्षा के लिये जो ऋतुचर्या सम्बन्धी नियम निर्धारित किये हैं उनका पालन कर प्रत्येक मनुष्य ऋतु के रोगों से बचकर अपनी अच्छे प्रकार स्वास्थ्य रक्षा कर सकता है, परन्तु दुःख का विषय है कि ऋतुचर्या के नियमों को सब लोग नहीं जानते, इसीलिये उनका पालन भी नहीं कर सकते। क्या ही अच्छा हो यदि वैद्य लोग प्रत्येक ऋतु के नियमों को उसके परिवर्तन से पहिले सर्व साधारण में प्रचार कर दिया करें, क्योंकि महर्षि लोगों ने संसार के उपकार के लिये ही आयुर्वेद शास्त्र की रचना की है उनका आरोग्य शास्त्र बनाने का खास उद्देश्य यही था कि आरोग्य शास्त्र के नियमों का सर्व साधारण में प्रचार होकर सब लोग रोगों से बचे रहें, उनका यह कतई कभी नहीं था कि वैद्यक ज्ञान पुस्तकों में पड़ा पड़ा सड़ा करे अथवा उसके द्वारा केवल वैद्य लोग ही लाभ उठावें, वैद्यक विद्या किसी

की निज की जागीर नहीं है, इसलिये उस के द्वारा सर्व साधारण को लाभ पहुँचाना प्रत्येक वैद्य का परम कर्त्तव्य है। परन्तु आजकल तो अनेक चिकित्सक रोग की फसल को रोजगार की फसल समझते हैं, हमने कई चिकित्सकों को कहते सुना है कि भाई अबकी बार मलेरिया की फसल नहीं हुई, न कालरा ही हुआ इस वर्ष और कोई बीमारी भी वैसी नहीं हुई, यह साल चिकित्सा के लिये बहुत ही बुरा है, इत्यादि। समय की बड़ी विचित्र लीला है कहां तो उन पूर्वज लोगों की वह पवित्र परोपकार वृत्ति और कहां आजकल के धन लोलुपी चिकित्सकों की वह अधम स्वार्थ कामना!

आदान काल अर्थात् शिशिर (माघ, फाल्गुन) वसत (चैत वैसाख) और ग्रीष्म (ज्येष्ठ आषाढ़) रितु में सूर्य की गति उत्तरायण होती है, इस कारण उक्त समय पृथिवी में रस की कमी हो जाने से संसार में गर्मी खुश्की और वायुकी अधिक वृद्धि हो जाती है, उससे मनुष्य शरीर में भी गरमी खुश्की और वायु अधिक बढ़ जाती है। शरीर का बल घट जाता है और जठराग्नि एक दम मंद हो जाती है, वर्षा रितु में मेघों के बरसने से पृथ्वी में आद्रता के होने से, दूषित भाफ के उठने से जल और वायु के दूषित होने से मनुष्यों के वातादि तीनों दोष एक साथ खराब होने के कारण आदान काल की दुर्बल अग्नि और भी दुर्बल हो जाती है तथा वायु की अधिक वृद्धि होती है। इस समय प्रायः जितने रोग उत्पन्न होते हैं, उन सब में ही वायु की अधिकता देखी जाती है, ग्रीष्म रितु में शरीर का जितना बल घटता है, वर्षा रितु में उतनी ही वायु की अधिक वृद्धि होती है यद्यपि रितु परिवर्त्तन का असर साधारणतः सभी मनुष्यों के ऊपर होता है परंतु जो सदैव रितुचर्या के नियमों का पालन करते हैं जो नित्य प्रति हितकारक आहार और विहारों का सेवन करते हैं उनको रितुका परिवर्तन कुछ विशेष बाध्य उपस्थित नहीं करता।

वर्षा रितु में अजीर्ण, आम, अतिसार, पेचिस, वमन, विशूचिका, और ज्वरादि ऐसे ही रोग विशेष कर उत्पन्न होते हैं कि जिनका सम्बन्ध पाचकाग्नि से होता है क्योंकि इसमें सबसे पहिले अग्नि ही खराब होती है इसी कारण अनेक प्रकार के व्रतों का विधान कहा है यद्यपि बहुत लोग इस समय भी व्रत वगैरह करते परन्तु व्रत को वास्तविक प्रयोजन क्या है यह बात बहुत थोड़े मनुष्य जानते हैं

वर्षा रितु में पालने योग्य नियम—

महर्षि कहते हैं कि—

वर्षा सानि बले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः
तस्मात्साधारणः सर्वो विधिर्वर्षा सुचेष्यते

अर्थात वर्षा रितु में अग्निका बल क्षीण होकर वातादि दोष दुषित होते हैं

इसलिये इस ऋतु में साधारण विधि का ही अवलम्बन करना चाहिये। इस मौसम में सर्व प्रकार के आहार विहार सामान्य रूप से सेवन करने चाहिये, किसी पदार्थ का बिलकुल त्याग करना या किसी पदार्थ का अधिक उपयोग करना दोनों ही ठीक नहीं। हां जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाले और वात नाशक हैं वे अधिक सेवन करने चाहिये। परन्तु जो पदार्थ स्वाभाविक रीति से सब को हानि कारक हैं वे कभी नहीं सेवन करने चाहिये।

वर्षासु व्याकुले वन्हौ,
भोज्यं मक्षेदविदाहजित्।
परिशुष्कं लघु स्निग्धं,
मृष्टाम्ल लवणञ्चयत्॥

अर्थात् वर्षा ऋतु में पेट की अग्नि अत्यन्त मंद हो जाती है, इस लिये इस ऋतु में क्लेद रहित (ग्लानि रहित शुष्क जिसमें जल का भाग अधिक न हो) वात नाशक स्वच्छ, हल्का चिकना, गरम, (ताजा) और शीघ्र पचनेवाला, सादा भोजन अत्यंत लाभप्रद होता है। भोजन में नमकीन पदार्थ, मधुर पदार्थ, खट्टे पदार्थ चरपरे पदार्थ आदि सभी रसवाले पदार्थ होने चाहिये, क्योंकि महर्षि कहते हैं कि-

वर्षासु प्रबला वायु स्तस्मात्मिष्टादयस्त्रयः।
रसास्तस्य विशेषेण पवनस्योप शांतये॥

अर्थात् वर्षा ऋतु में वायु की प्रबलता होने के कारण मधुर रसवाले [मीठे] पदार्थ अम्लरस वाले [खट्टे] पदार्थ और लवण रस वाले [नमकीन] पदार्थ वायु की शांति के लिये विशेष कर सेवन करने चाहिये। बहुत लोगों का कहना है कि वर्षा ऋतु में खट्टे पदार्थों का सेवन हानि कारक है, सो यह बात ठीक नहीं। खट्टा रस वायु को शांत करता है, इसी प्रकार मधुर और लवण रस भी वायुको शांत करते हैं, यहां यह जो कहा है कि मधुर रस वाले और खट्टे रसवाले पदार्थ विशेष कर खाने चाहिये, इसका मतलब यह नहीं है कि खूब मिठाई उड़ानी चाहिये या खूब खटाई खाना चाहिये बल्कि इस का यह अर्थ है कि वर्षाती मौसममें वादी बढ़ जाने के सबब भोजन के पदार्थों में मधुर रसवाले पदार्थ और अनुपान के माफिक खट्टे पदार्थ भी कभी कभी खाने चाहिये। इसमें तीनों दोषों का प्रकोप होता है इस कारण तीनों रसवाले पदार्थ सेवन करने चाहिये। अतएव कटु (चरपरे) तिक्त [कड़वे] और कसैले रस वाले पदार्थ भी सेवन करने उचित हैं। महर्षि कहते हैं—

शरेद्वर्षासु विपुलः किन्त्वयं यद्विशेषतः।
आर्द्रत्वात् शातये तस्य अपि कट्वादयस्त्रयः॥

अर्थात् वर्षा ऋतु में शरीर क्लेदयुक्त (आर्द्र) होने के कारण शरीर में रस की विशेष वृद्धि होती है। इस कारण रस की शांति के लिये कड़वे, चरपरे और कसैले रसवाले पदार्थ भी सेवन करने चाहिये, इस प्रकार वर्षा ऋतु में वात और

क्लेद की शांति के लिये रूक्ष रसों का सेवन करना उचित है, भोजन के पदार्थों में गेहूं, जौ, पुराने चावल, मूंग मसूर अरहर चना आदि अन्न दूध, दही मट्ठा घी तेल आदि पदार्थ पटोल (परवल) करेला ककोड़ा तोरई गलका, झिमनी चिचिंडे मेथी आदि शाक, और अंगूर अनार नासपाती नींबू आदि फल विशेष पथ्य हैं। इसके सिवा इस ऋतु में शहद का सेवन भी बहुत अच्छा है। शहद जल के साथ या भोजन के पदार्थों के साथ खाना चाहिये। आसव भी वायुको तत्काल शमन करता है और अग्नि को खूब दीपन करता है, इसलिये इस मौसम में द्राक्षासव मध्वासव या अन्य किसी प्रकारका आसव जो अपने स्वभाव के अनुकूल हो थोड़ा २ भोजन के बाद पीना उत्तम है। मट्ठा भी ऐसा सेवन करना चाहिये कि जो बिना पानी डालकर मथा गया हो अथवा जिसमें बहुत थोड़ा पानी डाला गया हो मट्ठे में काला नमक या सेंधा नमक अवश्य मिला लेना चाहिये। अथवा मट्ठेको मूंग की दाल के यूष में मिलाकर पीना चाहिये परंतु मट्ठा, दही अचार नींबू आदि खट्टे पदार्थ खाने हों तो जिस दिन आकाश में बादल छा रहे हों अर्थात अभ्र हो रहा हो उस दिन खाने चाहिये। आसव और शहद का सेवन भी बादलों वाले दिन उपादेय लाभ कारक है। यदि स्वभाव के अनुकूल पड़ें तो पापड़, चटनी खाट दाल मौंट आदि चटपटे मसालेदार पदार्थ भी थोड़े थोड़े खाने चाहिये। इस ऋतुमें भोजन करने से पहिले नमक के साथ अद्रख खाने से रुचि की वृद्धि होती है और अग्नि दीपन होती है बहुत से लोगों की यह राय है कि इस मौसममें नमक अधिक सेवन करना चाहिये।

वर्षा ऋतु में जल बहुत खराब हो जाता है इस कारण इस ऋतु में शरद शीतल जल अर्थात् पकाकर ठण्डा किया हुआ जल पान करना चाहिये अथवा वर्षा का जल कुए का जल बावड़ी का जल और सरोवर का जल भी पीना चाहिये। परंतु वर्षा आदि के जल भी शुद्ध करके ही पीने चाहिये।

वर्षा की विषैली हवा स्वास्थ्य के लिये बड़ी हानि कारक है इसलिये वर्षाकी हवा में भी बहुत देर तक रहना ठीक नहीं इस मौसम में प्रति दिन शरीर का मर्दन मलना सुगन्धित पदार्थों का शरीर पर लगाना उबटन करना, शुद्ध जल के द्वारा स्नान करना चन्दन अगर आदि सुगंधित पदार्थों का लेप जुही चमेली मोतिया गन्धराज आदि सुगंधित पुष्पोंकी माला का धारण करना हलके बारीक और स्वच्छ वस्त्रों का पहरना सडक और सूखे घर में रहना अत्यंत हितकारी है। इस ऋतु में रूखा भोजन बासी या बासी भोजन सत्तू अधिक जल मिला मट्ठा अधिक पानी मिला भोजन अधिक जल पीना रात्रि में

लपान, पुरवाई हवा सर्दी अधिक शारीरक परिश्रम दह या कसरत नदीका जल देन में सोना नित्य स्त्री प्रसंग पानी में जिना और नंगे पैरों कीचड़ कांदा अथवा र्षा के पानी में फिरना यह सब छोड़ ने चाहिये वर्षा रितु बड़ी ही रोगोत्पाक है कारण इसके नियमों का बहुत दिनों तक पालन करना चाहिये यदि हो के तो वर्षा रितु के प्रारम्भ में ही विधि पूर्वक वमन विरेचनादि के द्वारा शरीर को शुद्ध करना चाहिये। नहीं तो एक हल्का सा जुलाब लेकर कोठे को अवश्य साफ कर लेना चाहिये।

लम्बे लोह खरल

:o:

यह खरल लम्बे (किस्ली नुमा) चिकने खूब सूरत मय घोटने की उत्तम मुसली सहित रहते हैं इनकी लम्बाई १५॥ इञ्च चौ० १० इञ्च कंचाई ५। इञ्च वजन में २५ सेर के है। २ सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जा सकती है इसके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय सत्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं प्रत्येक खरल का मूल्य १०) इन्हीं खरलों के आधे साइज व वजन के भी खरल तैयार किये गये है जिनका मूल्य ५) रु० है खरल का आर्डर देते समय पेशगी अवश्य भेजें नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जायगा पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के होना चाहिये ॥

मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

इटावा यू० पी०

प्राचीन भारत और शल्यतन्त्र

[ले०- प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० ओ० एस० एम० एस०]

(गताङ्क से आगे)

इनके उपरांत कुछ यंत्रों की भी साधारण तथा आवश्यकता पड़ती है जो कठिन वक्त पर उचित शल्य ज्ञाता न प्राप्त हो सकने पर काम देकर प्राण रक्षा करते हैं यथा-

कैथेटर (मूत्र निष्काशन यंत्र)

यह पुरुषों और स्त्रियों के लिये अलग २ होते हैं स्त्रियों के लिये सिर्फ एक ही है जिसको फीमेल कैथेटर कहते हैं इसे स्त्रियों के मूत्र की नाली में प्राप्त करते हैं जब वह यथा स्थान पर प्राप्त हो जाता है तब उसके अन्दर एक तार पड़ा रहता है जिसे निकाल लिया जाता है तब मूत्र प्रा रम्भ हो जाता है, स्त्रियों के मूत्र की नली मुखाक रोग से [illegible] है या अन्य कारण से मूत्र [illegible] ता है मूत्र निकल जाने पर नली को बाहर निकाल लिया जाता है इसे उष्ण जल से धोकर साफ करके पोंछ कर रखना चाहिये पुरुषों के लिये जो यन्त्र व्यौहार होता है कैथेटर कहते हैं यह सलाई १० होती हैं और अन्दर से पोली होकर उनमें एक २ तार पड़ा होता है यह सलाई चार वस्तुओं से तयार होती है, १ जरमन सिलवर २ चांदी ३ गमएलास्टिक ४ रबड़ आदि इन का जो टेढ़ा हिस्सा होता है उसे मूत्र नली में प्रवेश करते हैं यहां तक कि वह मूत्राशय के अन्दर चला जाता है फिर उसमें जो तार पड़ा होता है उसे निकाल लेते हैं जो मूत्र मूत्राशय में रुका होता है वह इस नली के छिद्र से बाहर निकल जाता है मूत्र रुकने का कारण बहुत है पर विशेष कर कुजाक जन्य रोग में मूत्र नली में मांस पैदा होकर नाली को बंद कर देता है और वह मांस इसी नली द्वारा हट जाता है और मूत्र बाहर आ जाता है, मांस के बढ़ने से जो मूत्र रुकता है वह औषधियों के खिलाने से नहीं निकल सकता है उस समय पर इसका प्रयोग करना अत्यन्त आवश्यक है, पेशाब निकल जाने के पश्चात् सलाई बाहर निकाल ली जाती है इसके लगाने में रोगी को कोई कष्ट नहीं होता है-बारह सलाई रहने का यह मतलब है कि मूत्र नली छेद सब व्यक्तियों में और सब वय में समान नहीं

रहते इससे जिस व्यक्ति की जिस नम्बर की सलाई लगे व्यौहार की जावे इसी से मोटी पतली कई तरह की होती हैं इनका एक हिस्सा टेढ़ा है और सम्पूर्ण शेष अंग सीधा है, परन्तु रबड़ की सलाई जो इस समय पर बनाई गई है यह बिलकुल सीधी होती हैं इनको दबा २ कर भीतर प्रवेश करते हैं। जिस समय पर सलाई लगाई जाती है तब सलाई को प्रथम तैल लगाकर चिकनी कर लेना तब अन्दर प्रवेश करें नहीं तो कष्ट होता है—कभी २ इनके लग जाने से मूत्र नली की झिल्ली या मूत्राशय का कोई हिस्सा छिल कर रक्त आ जाता है इससे चिकनी करके धीरे प्रवेश करना चाहिये कि कष्ट न होवे।

जल निष्कासन यन्त्र

इस को अंग्रेजी में ट्रोकार एन्ड कैन्युला कहते हैं यह भी कई प्रकार का होता है जिस स्थान पर जैसा यंत्र व्यौहार करना होता है उसी के अनुसार व्यौहार किया जाता है, यह यंत्र लोहेका नोकदार होता है इसमें पीछे एक दस्ता लगा होता है और नोकदार सिरे पर एक पोगली लगी होती है जिसे कैन्यूला कहा जाता है यह यंत्र अण्डकोष में भरा हुआ पानी निकालने के काम में लाया जाता है इसके नोकदार हिस्से को दोनों अण्डके बीच की सीवन से कुछ हट कर अण्डकोषमें प्राप्त कर देते हैं अर्थात् जब मालूम हो जाय कि अण्डकोष में जल संचय हो गया है तब रुग्ण को एक कुरसी में बैठा दे और दोनों पैर में अण्ड कोष नीचे लटके रहें और आराम से बैठा रहे तब जिस अण्डकोषमें पानी हो अपने बायें हाथ से चिकित्सक ऊपर से एकड़ के दबावे कि ऊपर हाथ कसकर नीचे का हिस्सा तनक सम तन जावे, उस समय पर सीवन बचा कर यंत्र को प्रवेश करे इसमें इतनी सावधानी रखे कि अण्ड न छिदने पावे सिर्फ यंत्र थैली के अंदर प्राप्त हो जाय तब उसके भीतर की नोकदार सुई जिसको ट्रोकार कहते हैं बाहर निकाल ली जाती है और कैन्यूला घुसा हुआ रहता है जो पोला है उसमे जल निकलने लगता है इसके लिये एक पात्र रखना चाहिये कि जल उसी में गिरे ज्यो २ जल निकला जाय अपने हाथ को दूध दुहने की तरह से धीरे धीरे नीचे दबाता चला आवे जब पानी निकल जाय तब कैन्यूला निकाल लेवे और उस स्थान पर कि जहां पर छिद्र हो गया है कीटाणु नाशक मरहम रोपक दवा लगा देवे यंत्र प्रवेश के समय भी कीटाणु नाशक किया कर लेना चाहिये इस तरह से जितना जल भरा होता है बाहर निकल जाता है इस यंत्र से जल अण्डकोषका निकलता है इसको हाइड्रोसील-ट्रोकर एण्ड कैन्यूला कहा जाता है इस यंत्र से और भी कई काम लिये जाते हैं जलोदर

का पानी भी इसी के द्वारा निकाला जाता है, और एक रोग पीलूरिसी होता है जिस में फुफ्फुस की झिल्ली में पानी भर जाया करता है वह पानी भी इसी यंत्र के द्वारा निकालते हैं एक झिल्ली दिल के ऊपर भी होती है जिसको पेरी कार्डियम कहते हैं इस झिल्ली में भी कभी २ पानी भर जाता है उस समय पर इस रोग को हाइड्रो पेरी कार्डियम कहते हैं इस पर पानी को भी इसी से निकालते हैं अन्य प्रकार से संचित जल भी इसीसे निकलता है इससे यह यंत्र अधिक उपयोगी है

हाईपोडरमिक पिचकारी

इसे प्रायः अधिक लोग जानते होंगे कि आजकल इंजेक्शन चिकित्सा का दौर दौरा है प्रायः छोटे से बड़े चिकित्सक तक इसका व्योपार करते हैं यदि नहीं करते तो अपने रोगियों को उपदेश अवश्य देते हैं कि इंजेक्शन कराओ, यह एक पिचकारी और सुइयां हैं पिचकारी में औषधि के बूंदों के नाप के निशान बने हुए होते हैं जिसमें योग्य औषधि योग्य मात्रा भर ली जाती है फिर इसके सिरेपर सुई लगा लेते हैं उस सुई को जिस स्थान पर लगाना हो चर्म के नीचे चुभा देते हैं जितनी बूंदे औषधि की पहुँचाना हो उसमें पहुँचाई जाती हैं फिर खाल को अंगुली से दबाकर सुई को बाहर निकाल लेते हैं यह पिचकारी अनेक प्रकार के वर्णों में अनेक औषधियां पहुँचाने के काम में लाई जाती हैं सिर दर्द, गठिया, वातशूल यकृतशूल, आंत्रशूल इत्यादि सम्पूर्ण दर्द में उपयोग किया जाता है, और कभी २ बहुत कष्ट की अवस्था में रोगी को नींद लाने और अचेत करने के लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है तमाम रोगों के नाशने की दवा मुख में न दे इससे पहुँचा कर रक्त में मिलाई जाती है और उसका फल तुरन्त होता है।

यह पिचकारियां छोटी बड़ी की हिसाब से कई प्रकार की होती हैं जैसी दवाइयां प्रवेश करना हो उस प्रकार की ली जाती है जैसे सीरम प्रवेश करने को सिरम सिरिंज मेंडसिन सिरिंज टूबुलर कुलीन सिरिंज इत्यादि हैं।

स्टमक पैम्प

यह भी कई प्रकार का होता है परंतु जो रबड़का होता है वह बहुत सरल है यह एक रबड़ की लम्बी नली है जिसका एक सिरा प्यालाकार बना हुआ है यह नली पोली होती है जिस समय पर मनुष्य जहर इत्यादि खा लेता है और आमाशय साफ करने की आवश्यकता होती है तब इनकी लम्बी नली को रोगी के मुंह में प्रवेश करके इतना पहुँचाते हैं कि अन्न नली के द्वारा वह नली आमाशयमें प्रवेश हो जाती है तब चौड़े शिरा होकर वमन कारक द्रव्य या विष नाशक द्रव्य का

द्रावण बनाकर भरते हैं और निकालते हैं इस प्रकार से कई बार करने से आमाशय बिलकुल साफ होता है यह बहुत ही मामूली साधारण क्रिया है सिर्फ बुद्धि रखने वाला व्यक्ति बिना सीखे कर सकता है।

एसपिरेटर

यह उपरोक्त वर्णित सब यंत्रों से अधिक कष्ट हर यंत्र है इसे सीख लेना आवश्यक है इसके द्वारा जलोदर रोगी के पेट से संचित तरल निकाला जाता है इसमें जो बोतल है उसमें रबड़ नली के द्वारा जल आकर परिपूर्ण होता है उसमें नापके निशान बने रहते हैं जितना पानी लेना होता है उतना लेकर जो पेंच बोतल के सिर के दाहिनी तरफ लगा है उसको घुमाने से पानी लेना बन्द कर दिया जाता है, यदि बोतल भर जाय और पानी लेने की आवश्यकता हो तो नीचे की पिचकारी द्वारा जल बाहर फेंक दिया जा सकता है इस यंत्र से एक सुई और उसके नीचे लम्बी रबड़ की नली लगी है जो बोतलके दाहिनी तरफ जोड़ी है यह सुई पोली होता है उस को नाभि के दो अंगुल नीचे से पेट के अन्दर प्रति कर देते हैं उसीके द्वारा पेट का जल रबड़ की नली में होकर बोतल में भर जाता है जब जल का निकलना बंद हो जाता है तो सुई को बाहर निकाल लेते हैं, लगाने के प्रथम बोतल को पिचकारी के द्वारा वायु शून्य कर देना चाहिये नहीं तो बोतल में जल भर कर उसकी वायु फैल कर उदर के अन्दर जाने का भय है यह यंत्र भी कई प्रकार के होते हैं साधारण यंत्रों में बोतल और नापक निशान इत्यादि नहीं होते हैं जैसी इच्छा हो वैसा लेकर व्यौहार किया जायगा।

एनीमा पिचकारी

यह दो तीन फुट लम्बी एक मोटी नली है जिसके बीच का हिस्सा अधिक मोटा और गोलाकार होता है इसी को चर्म दंड कह सकते हैं क्योंकि इसी के दबाने से तरल किसी तरफ फेंका जा सकता है— पिचुला हिस्सा सिर्फ लोहे का बना हुआ मुख है जिस के भीतर एक कील पड़ी रहती है यह हिस्सा पानी में डुबाया जा सकता है और चर्म दंड के दबाने से इसी के द्वारा तरल द्रव्य अन्दर प्रवेश करता है और दूसरा हिस्सा गुंडाकार उभार चढ़ाव का होता है उसका मुंह अस्थि या धातु का होता है इसका छिद्र मटर या मटर प्रमाण है इसी से द्रव्य बाहर निकलता है जब व्रण को धोना या कहीं पर तरल पहुँचाना होता है तब इसका एक हिस्सा पानी में डालकर बीच को दबाने से ज्यों ही यह स्थान वायु शून्य हुआ कि जल तुरत भर आता है फिर दबाते जाइये जल से रीता न होगा।

(शेष फिर)

हैजा या कालरा

[ले०- प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस०]

(गताङ्क ३ से आगे)

ऋषि प्रणीत मार्गका अनुसरण करो तब यह व्याधियां किसी प्रकार से आक्रमण न कर सकेंगी पर हैजा जो यहांपर पाया जाता है उसमें तो लक्षण जिस रोगी में अधिक पाया जावे उसका रोग उसी लक्षण के नाम से पुकारा जाता है जैसे बालरेक डायरिया इसमें गर्मी के दिनों में जब कि हैजा फैला रहता है किसी २ को हैजे की तरह से दस्त आ जाते हैं और उसके पश्चात ज्वर चढ़ जाता है।

२-डायरियाक कालरा-इस प्रकारके हैजामें दस्तों का आना बहुत कष्ट कारक होता है और आंतों में गड़गड़ाहट का शब्द सुनाई देता है।

३-गैस्ट्रिक कालरा-इसमें मुख्य लक्षण कै आना है।

४-स्पैज्मोडिक कालरा-इसमें पेशियों में ऐंठन और अकड़न एक मुख्य लक्षण है प्रथम तो मरोड़ या ऐंठन हाथ पैर की उंगलियों और हाथ के ऊपरी भाग में और फिर बढ़कर छाती गला और जबड़ों तक पहुँचती है।

५ डाई कालरा-इसमें न कै आते हैं और न दस्त ही आते हैं रोगी का पेशाब रुक जाता है और अंगुलियों के पौरुवा, चेहरा, जिह्वा, हाथ पैर नीले पड़ जाते हैं

६ डिसेन्ट्रिक कालरा—इसमें दस्त के साथ आंव और रक्त मिलकर आता है जिस से अत्यंत तेज अवस्था जल्द हो जाती है।

७ फेब्राइल कालरा-इसमें कै और दस्त के साथ ज्वर और मतली हुआ करती है और जिह्वा का स्वाद फीका हो जाता है।

८ गोस्ट्रोइन्टिक कालरा—इसमें दस्त और कै दोनों शीघ्रता के साथ २ समय २ पर होते हैं इस रोग का परिणाम यों तो बहुत बुरा है परंतु यह सब अच्छे हो जाते हैं यह आठ लक्षण एशियाटिक कालरा के होते हैं।

इसका इतिहास पाश्चात्य पुस्तकों में मुझे पढ़ते वक्त पर मिला था वह इस प्रकार है कि केवल १५० वर्ष से यह व्याधि यूरुप और अमरीका में पहुँची है इसी

आर्यावर्त निवासी प्रत्येक देशों में आते जाते थे और अन्य देशके यात्री यहांपर आते जाते थे सन् १८३२ ई० में यह रोग न्यूयार्क नामी स्थान में जा पहुँचा और उसी साल न्यूयार्क होकर के अमरीका के यूनाइटेड-स्टेट्स में प्राप्त हो गया फिर सन् १८४५ तक सीन वार फैला और १८५४ ई७ में सारे मुल्क में फैल गया और १८८४ ई० में सारे यूरप में फैल गया यही इसका इतिहास है अब आंख खोलकर इस हिस्ट्री देखने से यही विदित होता है जब १५० वर्ष से यहां पर हैजा फैला तो आर्यावर्तीय लगभग २०० वर्ष से वहां जाते होंगे जिससे यह व्याधि गई, यह लिखने कुछ भी पश्चात्ताप वालियों को शर्म नहीं लगी है, करोड़ों वर्षों के निशान आज भी हिंदुओं के पाश्चात्य देशों में पड़े हैं जिस से लगाव सम्बन्ध वहांपर आने जाने का मालूम देता है और यह व्याधि तब तक न थी परंतु अब फैल गई, इससे यह मत सब है कि आर्य लोग इतने अशुद्ध नहीं होते कि इनके साथ कीटाणु चले आयंगे बल्कि लगभग ३०० वर्ष से यूरोपीय यहां पर आये हैं उनकी रहन सहन या ढंग यहां से भिन्न है इससे यह कीटाणु भी उन्हीं के साथ लिपट कर गये होंगे जिससे १५० वर्ष से फैलाव हुआ है पर में यहां का दोष नहीं है बल्कि उन्हींका दोष है ... वृथा दोषारोपण करते हैं।

... साहब लिखते हैं कि ... में सुंड के द्वारा इन कीड़ों के जाने से हैजा नहीं हो सकता है लेकिन अगर आमाशय की तेजी को किसी एक लाईन गमक (सोडा) से मार कर फिर हौज के कीड़े पेट में प्राप्त किये जायें तो अपना जहर पैदा कर सकते हैं इससे हैजा के दिनों में यदि खाली पानी पिया जाय तो १०-१५ बूंद पतले गंधक के तेजाबको मिलाकर पीने से हैजा कभी नहीं हो सकता है इससे खाली पेट कभी हैजा के समय न रहना चाहिये।

यह बात जो ऊपर लिखी गई है यह विदेश वासियों के लिये ही उपयोगी है क्योंकि उनका पेट बार बार खाने से भरा ही रहता है वह चाहे जैसा करें परंतु यहां के वासियोंपर कभी उपयोगी नहीं हो सकती है अक्सर हमने सैकड़ों रोगी देखे होंगे और शल्य करके परीक्षा तो निश्चय हो गया कि यहांपर जो इस व्याधि में मरते हैं वह अक्सर पेट भरे वाले ही मरते हैं। भूखे रहने वाले कभी नहीं मरते हैं न उन को हैजा ही होता है मरने की संख्या नवयुवकों की अधिक होती है क्योंकि उनकी विषमाग्नि होती है इसीसे इनपर तत्काल असर होता है, उपरोक्त बात यद्यपि कुछ ठीक है कि गष्टिक जूस (आमाशयिक रस जब निकलता रहेगा तब यह कीड़े जाकर उसमें मर जायंगे, परंतु जब स्पष्टिक कालरा होगा तब पानी क्या करेगा उससे उलटा रोग और बढ़ेगा सूख ... आवेगी और जल्दी प्राणांत होगा, क्या

इस रोगी का भी शरद करके देख लिया जाता तो कभी एकदम यह ऊटपटांग नियम बांधा जाता, दूसरे भारतवासियोंकी प्रति दिन की कमाई ११ पाई है वह बेचारे इतने द्रव्य में क्या क्या लेंगे आहार भी तो मिलना कठिन है फिर दिन रात पेट भरे रहने का सामान कहां से मिले अगर इनको स्वाभाविक रीति से साग-पात आदि जो कुछ मिला जाय उसके खाने से उन्हें हैजा कभी होगा नहीं देखे बहुत से ग्राम देखे गये हैं जिनमें विदेशी सभ्यता नहीं गई वहांपर हैजा का पदार्पण भी नहीं हुआ है और जहांपर यह सभ्यता देवी के पैर गये तो सैकड़ों व्याधियां आवेंगी, एक दो की तो बात ही दूर है, यद्यपि इस प्रसंग में यूथा झंझट बढ़ाने की आवश्यकता नहीं पर निश्चित है कि कीटाणु जन्य बीमारी है वह कीटाणु चाहे उस समय पर ही अधिक हो जाते हों तब होती हो या मनुष्य के शरीर में ही आहार विहार दोष से प्रथम पैदा होकर फिर इधर उधर फैलते हों क्योंकि मक्खियों के शरीर में भी तीन दिनसे अधिक यह कीटाणु नहीं रह सकते हैं इसको आज कल फालरा विबरियो कहा जाता है इसकी अकसीर दवा ऐलोपैथिक में अभी कोई नहीं है पर आयुर्वेद में है—जब कै या दस्त शुरू हों तो उस समय पर अर्क कपूर, पिपरमेन्ट तथा अर्क पोदीना की २ बूंद पानी के साथ घंटा २ भर में देना चाहिये। मधक का तेजाब या शोरा का तेजाब १० से २० बूंद तक और एक बूंद पिपरमिन्ट आइस पानी के साथ २-२ घंटा पर तीन चार बार देना चाहिये।

या भांग का सत आध रत्ती देना चाहिये या अहिफेनासव जल से पिलाना उत्तम है।

परंतु इस अवस्था में पेशाब रुकनेका खयाल अवश्य रखना चाहिये अगर दवा उपरोक्तमें से जिस दवा एकको पिलाया जाय और पेट में ठहरे तो पेट पर राई का प्लास्टर १५ मिनट तक रखना चाहिये रोगी को लिटाकर उसके कुल शरीर को उष्ण रखना चाहिये, अगर मिल सके तो बर्फ के टुकड़ा पानी के स्थान में देना उत्तम है, बारली का जल नीबू के अर्कके साथ या मधक के डाइलयूट तेजाब की १०-१५ बूंद के साथ देना लाभ दायक है।

जब नाड़ी गायब होने लगे उस समय पर अर्क कपूर देना चाहिये इससे कै रुक कर नाड़ी आ जाती है, पर अफीमका इस समय पर व्योहार कदापि न करना चाहिये इससे पेशाब रुककर फिर पतनावस्था हो रोगी मर जाता है, रोगी को चारपाई से उठने नहीं देना चाहिये और आहार को भी देना ठीक नहीं है क्योंकि पेट में कुछ रुक नहीं सकता है, अगर कै रुक जाय तो थोड़ा २ दूध और प्यास के लिये थोड़ा २ जल और नाड़ी कमजोर

होनेपर सञ्जीवनी सुरा दी जा सकती है।

हाथ पैर मे ऐंठन होनेपर गरमपानीमें पानी से भर कर फेरना चाहिये गरम वस्त्र हमेशा ओढ़ने रहना चाहिये।

जब कभी २ बड़ी खराब कै आती है उस समय पर अर्क कपूर से भी रुक जाती है, और शीत की दशा में जब आखें बैठ जाती हैं तो मृतसंजीवनी सुरा, मृगमदासव दे देना ठीक है। जब नाड़ी नहीं मिलती है और जीने की आस नहीं जानी है उस समय पर नमक पानी में घोलकर पिचकारियों के द्वारा प्रवेश करने से। ही लाभ होते हैं १ १ रत्ती और कहीं २ देने से कस्तूरी मिश्रित शक्ति आ जाती है, पेशाब रुक जाने से ज्वर बढ़कर रोगी प्रायः नहीं बचता है रोगी धीरे धीरे बेहोश हो जाता है और अफीम सेवन से दुगुना काम करती है इससे नहीं देना चाहिये।

पीठ पर वृक्क के स्थान को सेकना और उस पर अलसी का पुलटिस लगाना चाहिये और इन्द्री पर कपूर पानीमें घोल कर फाहा रखने से कभी पेशाब हो जाता है।

हैजा के आरंभ में खीरा, ककड़ी, मूली सड़े केले पत्थर की मिट्टी या दूध कच्चा ठंडा, पान खाना, जल पीना इत्यादि बन्द कर देना चाहिये अगर प्रतिदिन नीबू तथा प्याज का सेवन किया जावे तो भी हैजा का प्रभाव नहीं पड़ता है और सब स्वस्थ रहते हैं, कपूर के भी सूघनेसे या थोड़ा थोड़ा खाने से हैजा का डर जाता रहता है, हैजा के आगमन में फिटकरी भुनी खार कलई भुना पड़ा हुआ कुओं का पानी लाभ दायक है। (असमाप्त)

देखें

सबसे श्रेष्ठ, सबसे सस्ता, और सबसे पुराना प्राचीन और अर्वाचीन वैद्यक सम्बन्धी

सर्वोपयोगी सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३) वी० पी०से ३।।) रु०

इसके १७ वें वर्ष की प्रथम [illegible] विशेषाङ्क रूप में प्रकाशित हुई है जिसको अनेक विद्वानों के बड़े ही परिश्रम से सुसज्जित किया गया है विशेषाङ्क देने योग्य है मूल्य ॥) परन्तु ग्राहकों के लिये ग्राहक होनेवाले को वार्षिक मूल्य में ही दिया जायगा।

पता—वैद्यक बैद्य आफिस मुरादाबाद

वीर्य और सामाजिक व्यवस्था

[ले०—प्रो० रामकृष्ण वर्मा बी० ए० (ऑ०) एल० सी० एस० एम० एस०]

(गताङ्क दो से आगे)

और उसके करोड़ों भाग कर डालें और उसमें भी फिर एक के करोड़ों भाग करें तो आगे चलकर ऐसे बारीक सूक्ष्म हिस्से रह जावेंगे जिसके और कोई भाग न हो सकें इस को प्रमाणु कहा जाता है या इतना बारीक टुकड़ा है जो नेत्र के सामने दिखाई न दे सके पस इन्हीं प्रमाणुओं से पूरी सम्पूर्ण संसार की वस्तुएं निर्मित हैं सिर्फ एक चेतन को छोड़कर इस सारे कार्य रूप संसार का कारण प्रकृति अथवा प्रमाणु है। अब इस के कार्य का विचार पैदा होता है तो मालूम होता है कि प्रत्येक प्रमाणु में कोई एक चेतन शक्ति पैदा होकर काम कर रही है इसे ही परमात्मा कहा जाता है जो संपूर्ण ब्रह्माण्डों को धारण करके नियमानुसार चलाता है वेदों की न्याय विद्या बता रही है कि प्रमाणु के आपस में मिलने से एक नवीन वस्तु बन जाती है इसी कारण यह संसार नई रंगतोंवाली वस्तुओंसे भरा हुआ है यह बात प्रथम बतला दी गई है कि जड़ वस्तु कभी इच्छा पूर्वक कार्य नहीं कर सकती है क्योंकि उसे बुद्धि और ज्ञान नहीं होता है जैसे अग्नि जल के संयोग से एक नवीन वस्तु पैदा होती है जो अंजन चलाने की शक्ति है परन्तु उसमें बुद्धि और ज्ञान नहीं है अंजन के ठीक चाल पर चलाना और रोकना आदि के लिये एक चैतन्य शक्ति की आवश्यकता है जो कार्य करती है जिसे ईश्वर कहा जाता है इसी प्रकार से तमाम वस्तुओं के अन्दर एक चैतन्य शक्ति कार्य कर रही है यह परमात्मा के चैतन्य और ज्ञान वान होने का भेद है, जब सारे संसार में नवीन नवीन कार्य हो रहे हैं तो अवश्य एक चैतन्य बुद्धिमान शक्ति की आवश्यकता है इसलिये शरीर में हर एक स्थान पर एक छिपी हुई चेतन शक्ति कार्य करती है जिसे परमात्मा कहा जाता है।

इस तरहसे परमात्मा कोई मूरतवाली वस्तु नहीं है न कार्य रूप है इसलिये उस का कारण भी कोई नहीं है वह अपना कारण स्वयं आप है अब वह आप ही कारण रूप है और कारण का नाश नहीं होता तो वह निरंकार हो कर के नित्य है अगर कहा जाय परमात्मा सदैव से नहीं है तो सुनो जो वस्तु या उसका कारण प्रथम से नहीं होता वह वस्तु उत्पन्न नहीं

हो सकती है जैसा हम किसी व्यक्ति के शरीर को जला डालें तो सबके प्रमाणु नष्ट होंगे—अग्नि के अग्नि में जलके जलमें पृथ्वी के पृथ्वी में मिल जायगे अर्थात् कार्य रूप बिगड़ कर हमारे नेत्रों के सामने से हट जायगी परंतु उसके प्रमाणु का नाश नहीं होगा हर एक प्रमाणु अपने कारण में मिलकर रहेगा यह सभी जानते हैं कि कारण का नाश कभी नहीं होता है इस प्रकार से निश्चित हो गया कि सर्व सृष्टि या मनुष्य शरीर प्रमाणु द्वारा रचित है जिसमें चेतन शक्ति भरी हुई है परंतु ध्यान करके देखने में रक्त में सूक्ष्म और सफेद रंग की मिली वस्तु पाई जाती है उसके द्वारा हड्डियां और शरीर के परमाणु पुष्ट होते हैं उस सफेदी को ही वीर्य कहा जाता है उसकी रक्षा करने से मनुष्य का शरीर पुष्ट और सुन्दर बन जाता है जिससे वह व्यक्ति शूरवीर रह कर आनंद के साथ बड़ी आयु भोगता है यद्यपि यह बात उत्तम है परंतु इस का प्रचार भारत से जाता रहा है। कारण पाश्चात्य देशवासियों के संसर्ग से उनकी चित्त वृत्तियां बदल गई हैं और दिन प्रति दिन और उसका ह्रास होता जा रहा है बहुत बार मैंने जांच किया कि मनुष्य के भीतर एक वस्तु वीर्य ही ऐसी है जो हड्डियों को पुष्ट बनाता है इसलिये उस की रक्षा करने से आयु बढ़ जाना और शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति हो जाना कुछ भी कठिन नहीं है क्योंकि प्राचीन समय में इसकी रक्षा जब मनुष्य करते थे उस समय परवह देश शरीर बल और धन और आत्म ज्ञान में सब देशों का शिरोमणि था परंतु अब भारतवासियों में ने इसे त्यागकर अपने धर्म विद्या की तरफ न जाकर शक्ति हीन और निर्धन होने से पेट विद्या में चित्त लगाया सो अब वह अपने आत्मिक और शारीरिक बल को खोकर महा कष्ट उठा रहे हैं क्योंकि देखा जाता है कि अब सत वर्ष की भी आयुवाले मुश्किल से कोई व्यक्ति पहुँचता है अन्यथा ३०-४० वर्ष में ही संसार से चल बसते हैं।

यह सब अकाल मृत्यु कही जाती है इसमें बीमारी आदि कारणों से अब अथवा अकारण शत वर्ष के बीच के बीच में जो मर जावे उस को समझना चाहिये कि अकाल मृत्यु से मर गया है-कारण यह है कि मनुष्य १०० वर्ष से लेकर ४०० वर्ष के अन्तर अपनी पूरी अवस्था से मरता है मनुष्य की अवस्था ४०० वर्ष से अधिक और १०० वर्ष से कम नहीं होती है उसके उल्लास सिर्फ यही छोड़ कर अन्य नहीं पहुँच सकता है यह हाल बहुत ही सरल उपाय द्वारा जाना जा सकता है। मनुष्य के शरीर की दशा दीपक जैसी है अगर चौबीस घन्टा तक जलने के लिये तैल भर दें तो [illegible] घंटा

तक बराबर जलता रहेगा। अगर ६ घंटा के बाद इसमें से तैल कम कर देवें तो दीपक पूरा देर तक न जल कर बुझ जायगा-यदि कोई आंधी या झोंका दीपक की लौ पर लगे तो भी वह बीचमें बुझ जायगा इसी प्रकार से मनुष्य के शरीर में ईश्वरीय तेज इतना होता है कि चार सौ वर्ष की आयु के लिये पूरा होवे परन्तु जो मनुष्य निर्बल वीर्य से हो उन में भी कमसे कम १॥ सौ वर्ष के लिये काफी सामान होता है इसमें प्रायः जो व्याधि हो जाता है वह रोग कुकर्म द्वारा दि कोई आंधी के झोंके से शरीर रूपी दीपक को बुझा देता है और रोग उसके तैल को चाट जाते हैं यह मनुष्य की गलती और नियमानुसार न चलने से हो जाती है इसीलिये बीमारी में मर जाने वाले अपने हाथ से जोर खंते हैं यह ईश्वरीय नौत नहीं है-हमारे चिकित्सक लोग इस विषय में चक्कर काटते हैं और अपनी भूल नहीं प्रकट करते हैं कि हममें शिक्षा नहीं है न वैसी योग्यता प्राप्त है तुरत यह कह देते हैं कि रोग असाध्य है और रोगी को छोड़ देते हैं-इनको सोचना चाहिये कि चिकित्सक नहीं पेशा एक व्यवसाय सीख लिया है वह भी अपूर्ण है।

वैद्य के लिये असाध्य कहने का दावा नहीं है और सब रोगों के निवारण का कर्तव्य है यथा—

न जन्तु कश्चित्व क्रम एष्टव्यो नोक्तिः अतो मृत्यु प्रयार्थनानां तुलनाधिरायेत्

शाङ्गधर संहिता

अतः वैद्यों को चाहिये-वैद्य का कर्तव्य है कि रोगी रोगावस्था में न मरना चाहिये-रोग अच्छा हो जाना चाहिये न हो फिर मर जाय पर वहां पर कोई व्याधि सिर्फ साधन साध्यम् से रोग है-रोगी रोग दोनों मर में जाय।

वैद्यक और डाक्टरी से अच्छा परीक्षा करने से पता लगता है कि प्रत्येक के शरीर के अन्दर एक ईश्वरीय शक्ति रहती है जो रोग और दुःखदायी सब कष्ट भीतर ही भीतर शांति की तरह दूर कर देती है कितना ऐसा भी होता है कई खराबी इसमें पैदा हो जाती है यह शरीर इतना सुन्दर बना हुआ है जो रोग अधिक कष्ट दायी है या उसको दूर कर देती है कष्ट उस को औषधि उपचार की सहायता देती है और इसको या कोई मनुष्य ईश्वरीय शक्ति को सहायता देता है तब रोग कष्ट जाता है और ईश्वरीय शक्ति फिर काम कर जाती है अब वैद्यक और डाक्टरी की सहायता भी कुछ आवश्यक नहीं रहती है अब तक कि एतद्वीय शक्ति में यथार्थ रूप से काम न किया जाये। उसी समय में मृत्यु हो जाती है। इस खराबी

को बढ़ानेवाला मनुष्य ही है जो अज्ञानता वश हेजी व्यभिचार और ईश्वरीय नियम के अनुसार न चलने से रोग बढ़ा लेता है-सब वैद्य, डाक्टर नैमंत्रिक बीमारी के रोगों को ईश्वरीय मौत नहीं कहते हैं इसी कारण यह बड़ी २ बीमारी और मार डालने वाले रोगों के भेद और उनके दूर करने के लिये औषधी और रीतियों की छान बीन में लगे रहते हैं। ईश्वरीय मौत उस समय पर होती है जब पूरी अवस्था पर पहुँच कर शनैः ईश्वरीय शक्ति कमजोर पड़ जाती है-मनुष्य के शरीर में बारीक २ थैलियां ऐसी हैं जिसमें सौ वर्ष से प्रथम किसी प्रकार से भी शक्ति कम नहीं होती जो रोग से मरने वाले मनुष्य का शरीर जांच करके देखा जावे तो बहुतसे शरीर के अन्दर ऐसे हिस्से मिलेंगे जिसमें सजीवन शक्ति मौजूद होती है जिससे मालूम पड़ता है कि इस व्यक्ति की मृत्यु बे समय पर हुई है।

संसार भर के पशु पक्षी और मनुष्यों पर विचार करो इनमें से जो पूर्ण आयु तक पहुँच जाते हैं उनकी मृत्यु सहज रीति से हो जाया करती है, इससे सबसे उत्तम बात यह है कि जो बीमारी की मृत्यु होती तो वैद्य डाक्टरकी शरीर को निरोगी रखने की रीतियां, ब्रह्मचर्य ऋषियों के उपदेश, स्वस्थता और सफाईके उपाय आदि रीतियां सब वृथा और बेकार जाती इससे स्पष्ट प्रगट है कि रोगसे मर जाना मनुष्य की मूर्खता का कारण है।

ईश्वरीय नियमानुसार चलनेवाले मनुष्य का शरीर चार सौ वर्ष तक काम दे सकता है परंतु योग साधनवाले इससे अधिक अवस्था पर पहुँच सकते हैं योगसाधन और ब्रह्मचर्य यह आत्मिक उन्नति का एक मार्ग है जिससे कि शरीर में ईश्वरीय शक्ति निर्बल नहीं होने पाती और शरीर के प्रमाणुओं में बल पहुँचता है जिससे मनुष्य बहुत समय तक जीवित रह सकता है।

मैं अच्छी प्रकार से बतलाता हूं कि जो हम किसी खेत में बीज बोवें तो प्रथम उस खेत की मिट्टी और पृथ्वी की जांच पूर्णतया कर लेना चाहिये जिससे उस को बीज बोने योग्य बना सकते हैं फिर बीज बोने से अधिक और उत्तम बीज पैदा होगा जो ऐसा न करें तो सब मेहनत वृथा जायगी ऐसी ही चिकित्सकों की औषधि उस समय पर फल दायक होगी जिस समय पर वह रोगी और पूरे रोग का पूर्ण निर्णय कर लेंगे और फिर उसी के अनुसार औषधी देंगे ऐसे ही धर्म, ब्रह्मचर्य और योग का बीज बोने के लिये आत्मिक और मानसिक रोग दूर करना पड़ेगा।

मैंने अनेकों स्थानों पर भ्रमण करके देखा है कि इस देश में स्त्रियों का विद्या हीन होना स्त्रीयों के स्थानसे लाखों कुटुम्बों का बरबाद होना, बालपटी साधुओं से

महान दुःख प्राप्त होगा, और उत्तम विषयों के अर्थ उलटे फैल जाना आचार्य अध्यापकों में योग्यता न होना, जन समूह में सौन्दर्य की अधिकता, अनमाने धर्म ग्रन्थों का बढ़ते जाना इत्यादि इस देश के नष्ट होने के कारण प्राप्त किये हैं।

जिस समय विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहा था, मेरे सम्बन्धी जो मेरे पास थे उनको शिक्षा विशेष फारसी थी कुरान आदि ग्रन्थों को कभी २ पढ़ते थे और मुझे उसका मतलब समझाते थे और उनके विचार कार्य सामाजिक होनेसे उसे पढ़ते थे एक समय पर मुझसे कहने लगे कि देखो इस आयत में पौराणिक मतलब ले लिया गया है मुझे याद नहीं पर मतलब यह है।

मैंने पूंछा उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति बिहिश्त अर्थात् स्वर्ग में जायगा उसके लिये वहांपर तहरत कराबें, हूरें और गिलयान मिलेंगे, यह सुनना ही था कि वहां बुद्धि से प्रश्न करना शुरू किया।

मैं०—शराब क्यों मिलेगी।

सम्बन्धी-पीने के लिये।

मैं०-हूरें क्यों मिलेंगी।

सम्बन्धी—स्त्रीवत कार्यके लिये।

मैं०-तो उनके लड़के बच्चे इत्यादि भी होंगे ब्याह शादी भी होगी तो एक प्रकार का ऐसा ही देश होगा तो रहना वहां का अति उत्तम है-पर गिल्मियान क्योंकर मिलेंगे।

सम्बन्धी-जरूर होना होगा कि यान का मतलब खूब सूरत कोई है सेवा करने को मिलेंगे।

मैं०—सेवा करने में खूब सूरती वह सूरती की आवश्यकता नहीं उत्तम होना चाहिये परंतु गिलयान से कुछ अन्य मतलब अवश्य होवेगा आप मुझे बताना नहीं चाहते।

सम्बन्धी क्रोध से-तुम बच्चे हो कर अपना कार्य करो व्यर्थ बातें बनाओ।

इतने में मैं लाचार रह गया और पाई पर पड़े २ सोचता रहा कि मैं ऐसा धर्म शास्त्र फेंकना आतंक एंक में डुबेगा, यह सब वहांपर आने से पूर्ण मालूम हो अब विद्यार्थी लोग शाम को पाठ से निकलते हैं तो प्रायः कभी २ "दिल बहुत बेचैन है ऐ देवका इत्यादि तो भला वह प्राचीन प्रसार पा सकता है जबतक और किताबों का नाम संसार आये तबतक अपने शरीर को बलवान कर चारों दिशाओं में सत्य उत्तम विद्या प्रचार करना कठिन है विचार करके देखो शारीरिक विद्या दो ही वस्तु कर्म यह दोनों ब्रह्मचर्याश्रम द्वारा पूर्ण होते हैं, बिना किये और मन आदि

का ज्ञान समाधि कई वर्ष तक संसार में सिद्ध नहीं हो सकता और शरीर इन्द्रियों का निग्रह करना आत्मा की ओजस्विता का नाश करना है।

यह कार्य गृहस्थ अथवा अपने घर पर ही रह करके पूर्ण हो सकता है जगह २ पर या तीर्थ इत्यादि में जाकर अज्ञानी पुरुषों का उपदेश सुनकर अपने जीवन को बरबाद करना दूरन्देशी है, जिसकी बुद्धि ठीक से काम कर चुकी है वह मनुष्य सदा आनन्द में रह कर संसार को थोड़े समय रहने का स्थान समझते हैं और माया मोह से रहित रहकर शांति से सब कार्यों को करते हुए आनंद में मग्न रहते हैं वह दुःख उत्पन्न करनेवाली बातों को याद करके सदा प्रसन्न चित्त रहते हैं केवल अज्ञानी व्यक्ति यह समझकर कि हमारा जीव संसार में हमेशा रहेगा माया मोह में फंस कर दुःखी और प्रकृति के नशे में लिप्त रहते हैं।

(शेष फिर)

आयुर्वेदीय औषधालय देहरादून की—

नवीन आविष्कार

मिश्रित अमृतधारा	२८) सेर	हिमालय द्राक्षी	२॥) सेर
अरिष्ट	१०) "	विदारी	१॥) "
आसव	३०) "	वासावलेह	२५) "
ऋद्धि	२५) "	कामली	५) "
वृद्ध	२५) "	दशमूल	१) "
मधु	४) "	मकरध्वज	४) "
महामेघ	६) "	हरताल चन्द्रोदय	२०) "
कामाग्नि	१०) "	केसर	३) तोला
हीरा भस्मोत्तम	१५) "	सुवर्णमाक्षी सिन्दूरजीत	१) "
एकदन्त अमृत	५) "	कस्तूरी उत्तम	४०) "
जीरा बिडालिक	४) "	अम्बर	६०) "
नागकेसर तैलादी	४) "		

नोट—यथार्थ तथा शुद्ध जड़ी बूटी के खरीदारों को आश्रय इससे सम्बन्ध रखना चाहिये।

पता—आयुर्वेदीय औषधालय देहरादून

वनस्पति विज्ञान

अगस्त्य

[वै०—वासुदेव वैद्य शास्त्री चिकित्सक]

संस्कृत नाम—अगस्त्य, वंगसेन, मुनि-पुष्प, अगारि, वकपुष्प।

हिंदी नाम—अगस्तिया, हथिया, हदगा।

गुजराती नाम—अगथियो।

बंगाली नाम—वक,

मराठा नाम—अगस्ता, हदगा।

कर्णाटकी नाम—अगसे, यमरानु।

तैलगु नाम—अतीसे।

तामील नाम—अगति।

अंग्रेजी नाम—स्कार्लेटफ्लावर्डअगेती

गुण—अगस्तिया शीतल, रूक्ष, व्रण-कारक, कडुआ, तथा पित्त कफ और चातुर्थिक ज्वर तथा प्रतिश्याय विनाशक है।

फूल—अगस्त्य के फूल शीतल, चातुर्थिक ज्वर त्रिदोष नाशक कडुवा रसेका विपाक में कटु, पीनस, कफ, पित्त तथा वात नाशक है।

पत्र—अगस्तिया के पत्र तिक्त, कटु, भारी, मधुर, किंचित उष्ण, कृमि, कफ, पित्त और रक्तपित्त नाशक है।

फल—अगस्तिया के फल, सारक कुछ दीपक, कोष्ठशुद्धिकर, लघु, विपाक में मधुर, तिक्त, स्मरण शक्ति वर्द्धक तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पांडुरोग, विष शोष तथा गुल्म विनाशक है।

शाक—अगस्तिया का शाक, रूक्ष तथा पित्त कारक है और इसकी लकडी हलकी पोली तथा अग्नि शीघ्र लग जाती है।

विवरण—अगस्तिया हरेक स्थानों में उत्पन्न होता है इसके वृक्ष १०-२० फीट ऊंचे सोंटा के समान होते हैं।

उसके ऊपर नागरबेल चढ़ जाती है, उसके पास उत्तम १ फुट लम्बे पुष्प लाल और श्वेत कलरदार होते हैं और उसके फल अत्यन्त कोमल तथा जब अगस्ति माघ के तारक का उदय होता है तब अगस्त्य के फूल खिलते हैं, अगस्तिया स्वल्प तथा लाल होता है, इसके फूलका शाक भी बनता है, पत्र चिकने लम्बे गोल आमली के पास के समान सम्मिलित फीके नाल रंग के होते हैं।

प्रथक प्रयोग

१—मस्तक शूल—अगस्त्य के फूलका रस नाक में डालने से मस्तक शूल नष्ट

होता है, नाक से तमाम पानी झर जाता है और मस्तक हलका हो जाता है।

२—आतुर्थिक ज्वर—अगस्त के पत्र का नस्य लेने से लाभ होता है, तथा प्रति श्याय (जुकाम) नष्ट होता है।

३—तिमिर—अगस्त्य के फूल का शाक खाने से दृष्टि रोग दूर होता है।

४—दन्त शूल—अगस्त्य के गोंद को दांत के नीचे दबाने से दन्त पीड़ा दूर होती है, दाढ़ दुखने पर दाढ़ में गोंद दाबने से दाढ़ की पीड़ा नष्ट होती है।

५—प्रमेह—अगस्त्य के फूल शकर के साथ पीने से प्रमेह नष्ट होता है।

व्रण—अगस्त्य के पत्र का रस शरीर पर मलने से खाज तथा व्रण नष्ट होते हैं।

शोथ तथा संधि वात—अगस्त्य का मूल जल में पीसकर संधिवात तथा शोथ पर लेप करने से नष्ट होता है।

अर्धावभेद—जिस तरफ को मस्तक शूल होता है उसके विपरीत तरफ अगस्त के पत्र का रस तथा फूल का रस नाकमें डालने से कफ निकल कर आधा शीर्ष कम हो जाता है।

जिस भ्रम वायु—अगस्तिया के पत्र का रस में गुड़, सोंठ, तथा पीपल मिला कर सुंघाने से मिटता है।

अपस्मार—अगस्त्य के पत्र का रस गोमूत्र तथा काली मिर्च डालकर पिलाने से अपस्मार (मृगी) नष्ट होती है।

बालक के कफ विकार—अगस्त के पान का रस दो बिंदु निकाल कर और रसमें थोड़ा सा मधु मिलाकर मिला कर अंगुली से तालु में चुपड़ने से सब कफ निकल जाता है।

इस प्रकार इन औषधियोंका प्रत्यक्ष २ प्रयोग स्वानुभव में लाकर तत्सबंधि गुणा-गुण सूचना 'राकेश' में प्रकाशित करने से अधिक लाभ हो सकता है।

मुफ्त धर्मार्थ

—:o:—

राकेश के प्रेमी दीन, हताश, रोगी बन्धुओ ! सर्व रोगों की दवायें तथा सिद्ध प्रयोग और गुप्त रोगों पर गुप्त रायें सिर्फ पत्र व्यवहार कर घर बैठे मुफ्त प्राप्त कीजिये।

लेखक—सत्य भक्ति भंडार
दातव्य औषधालय सोनहो, पो० अपहर (सारन)

आपसी वार्तालाप

कलीमतासू में दुर्गाप्रसादजी वैद्य २१० पृ० पर लिखते हैं कि–

१—मनुष्य जब माता के गर्भ से उत्पन्न होता है तब उसका लिंग स्थान सब सपाट होता है यानी किसी प्रकार का कोई भी चिन्ह नहीं होता है।

लेखक की इन पंक्तियों से क्या मतलब समझेंगे।

मतलब साफ है कि कुछ नपुंसक ऐसे पैदा होते हैं कि उनके मूत्रेन्द्रिय का नामोनिशान तक नहीं होता, हमने जितने नपुंसक देखे उपरोक्त लक्षणवाला कोई नहीं मिला सब के मूत्रेन्द्रिय थी सिर्फ उस अंग से मूत्र के अलावा वे लोग और कुछ कार्य नहीं कर सकते।

सम्भव हो ऐसे नपुंसक रहे हों, हटा दमोह में ही पैदा होते होंगे या यों कहिये कि वैद्य दुर्गाप्रसादजी शलाकायें लेकर तैयार रहते होंगे पेशाब उतारने को?

लेखकों में नाम करने की अभिलाषा से सृष्टीक्रम से विरुद्ध कैसी २ झूठी बातें लिखते हैं न जाने लिखते समय अक्ल से काम लेते हैं या नहीं जैसा किसीने कहा लिखा उस पर सोचते नहीं विचार नहीं करते कि यह लिखनेवाली है या नहीं उनको क्या? वह इस बात को तो सोचते ही नहीं पत्र बड़े २ वैद्यों के हाथ में जायेगा ऐसी अनर्गल बातें पढ़कर राकेश के प्रति क्या भाव बैठा होंगे इस प्रकार जो बुराई या घाटा होगा 'पत्र' को ही सहना पड़ता है।

दुर्गाप्रसादजी के प्रयोगों की भी छानबीन देखिये 'पहले दो क्यारियां खोदें जिसकी गहराई एक मनुष्य की हो और चौड़ाई सवागज हो, ऐसे गड्ढे में पीली मिट्टी भर दें और पानी भी इसी तरह दो बार भरें फिर नारियल का तेल सिलावें भर दे फिर आध सेर मेथी बो दें इत्यादि।

इस मेथी का शाक घी में भून कर १० दिन खाने से नामर्दी दूर हो सदा इस्तेमाल से काया कल्प तक हो जाती हैं खैर इसके कुछ गुण हों?

हम वैद्यजी से पूंछते हैं कि क्या यह प्रयोग अनुभव करके लिखा है? या नहीं या किसी से सुनकर ही लिख दिया है अगर वैद्यजी यह लिख देते कि अनुभूत नहीं है वैद्यवर करके देख लें तब ठीक था, पर वैद्यजी तो बिना अनुभव किये ही कायाकल्प तक का ठेका ले रहे हैं

ऐसे दिमाग वालों पर तरस भी आता है पर वैद्यजी ने यह कभी नहीं सोचा कि पत्र की इस में बड़ाई होगी या बुराई, जरा स्थिर बुद्धि करके लिखें तो सही।

एक और भी मजेदार बात लिखते हैं 'बहुत से मनुष्य स्त्री को इस्त्री पर बिठा कर खड़े हो जाते हैं।'

मालूम पड़ता है वैद्यजी लिखते समय होश में नहीं थे या स्नेह में ऐसे मनुष्य होंगे! सिंह है या हाथी का सूड है? जिस पर स्त्री को बिठाकर लाचित्रना चित्र खींचते हैं. वैद्यजी ने तो अपने दिमाग का दिवाला निकाल दिया।

वैद्यजी से सविनय सलाह लेते हैं इस प्रकार की असभ्यता या अश्लीलता की बातें न लिखा करें-इस प्रकार पत्र की बदनामी होती है और आप भी बदनामी हाता है और आप की योग्यता मालूम होती है कि आप कितने पानी में हैं। मेरे से यदि कोई बात ऐसी लिखी गई हो माफ करना वैद्यजी आइन्दा की ख्याल रखेंगे।

कविराज पं० शशिकांत वैद्यशास्त्री

हल्दौर

श्रीयुत धरणीधरजी शर्मा,

सादर वन्दे!

यद्यपि आप सरीखे योग्य विद्वानों के ऐसे सामान्य प्रश्न करना शोभा नहीं देता फिर भी आप उत्तर चाहते हैं अस्तु उत्तर निम्नांकित हैं।

१--बालों के बजाय तो हलायता खस और कोई पदार्थ लगाइये हानि न होगी।

२--बालुका यंत्र पाताल यंत्र से भी बना सकते हो कोई हानि नहीं। गुण कुछ भी न होगा।

३--हां यही बना जो आगे लम्बा बनाने के काम आता है लम्बा जाड़ मिलेगा उसी से पीछे पुर लिये जावें।

४-लेप के लिये माशा का अनुपात १ बोर में ६ मासा है, परन्तु क्रूर कोष्ट होने से दुबारा लिपाई भी लगाना पड़ता है और माशा १ तोला तक हो सकती है। कारण यह आयुर्वेदीय लुधाब है बालुक मिजाज वालों का यों तो कभी २ जमालगोटा तक हजम हो जाता है परन्तु मेरे अनुभव में यह प्रतिशत ७५ अवश्य लाभ करता है।

धातु पुष्ट में ३-३ माशा सायं प्रातः सेवन कराइये बतासा में डालकर ४२ रोज हानिकर वस्तुओं का परहेज कराइये।

५-लेख बढ़ जाने के भय से संक्षिप्त लिखा गया था परन्तु गुण तो हमने लिख ही दिया हैं माशा अनुपान योग्य वैद्यवर स्वयं कल्पित कर सकते हैं।

पं० रामेश्वरप्रसाद

हमने इस वर्ष राकेश में कुछ आवश्यक प्रश्न दिये थे जिनके उत्तर अभी तक किसी ने नहीं दिया। उन प्रश्नों के नम्बर तथा संक्षिप्त वृत्तांत दे समस्त राकेश

के पाठकों तथा सम्पादकजी का ध्यान आकर्षित कर आशा करते हैं कि आगामी अङ्कों में आप की शुभ सम्मति सहित इन प्रश्नों को स्थान दे दास को अनुग्रहीत करेंगे। तथा आई हुई सम्मतियां भी प्रकाशित करने की कृपा करेंगे।

१—प्रश्न नं० ४—राकेश वर्ष २ उदय अङ्क १ में कुनख रोग की निदान चिकित्सा

२—प्रश्न नं० १६ रा० भा० १ उदय ३ में-सत्वपति कर्पूर का प्रयोग विधि तथा प्राप्ति स्थान मूल्य आदि।

३—प्रश्न ५३ रा० भा० १ अङ्क ८ विशेषाङ्क में १ रोगिणी स्त्री का करुण कहानी।

नोट—विशेष गताङ्कों में विस्तार पूर्वक देखिये।

भवदीय—
पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
आयुर्वेदाचार्य

* राकेश भाग २ अङ्क ८ फ्लीवत ढूंढें

* अवश्य ही यह प्रयोग राकेश के नियम विरुद्ध प्रकाशित हो गये, डा० साहब के बहुधा अधिकांश लेखोंमें आङ्गिल प्रयोग आते रहे जिनको हम राकेश में प्रकाशित न कर अलग करते रहे, और श्रीमान् डाक्टर साहब को सूचना द्वारा सूचित भी करते रहे कि राकेश आङ्गिल प्रयोगों के प्रकाशित करने में विवश है—सदा की भांति इस बार भी डा० सा० के लेखों में आङ्गिल प्रयोग आये जिनको कडा० इन्द्रदत्तजी जलालाबाद ने राकेश उद्देश्य नियम विरुद्ध आङ्गिल चिकित्सा प्रयोग लिख भेजे थे परन्तु सम्पादकजी ने नियम विरुद्ध होनेपर भी स्थान दिया।

उक्त टिप्पणी से हमारा विशेष प्रयोजन नहीं किंतु मुझे इस बात का भय है कि कहीं इस अंकुरित पत्र को क्षति न पहुँचे।

भवदीय—
डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी
आयुर्वेदाचार्य

म्पोज करने को देते समय काट दिये थे परन्तु कम्पोजीटर ने अंग्रेजी का कटा हुआ विषय तो छोड़ दिया परन्तु वही प्रयोग जो हिंदी में भी दर्ज थे कम्पोज कर दिये इस बीच में मैं कारणवश बाहर गया हुआ था स्थानापन्न महोदयों भी यथावत् प्रूफ संशोधन किया—इस विषय के छप जाने से राकेश के पवित्र कलेवर पर जो धक्का लग गया है इसका हमें महान् खेद है उस हम किसी भांति नहीं घटा सकते हैं सिवा इसके कि पाठकों से भूल की क्षमा याचना करूं और अनुरोध करूं कि वह छपे हुए आंगिल प्रयोगोंपर किंचित दृष्टि न डाल कर मान्यवर डा० साहब के शेष उपयोगी अनुभवपूर्ण लेख पर भ्रमर की भांति रसास्वादन लें।

सम्पादक

बैद्यवर उत्तर देने की कृपा करें—

राकेश वर्ष २ उदय दो में डा० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी ने 'सुधानिधि' में यह विशेषता दिखाई है कि इसकी छाल काटकर नीचे की ओर खींचने से विरेचन और ऊपर की ओर खींचने से वमन होता है, किंतु 'सुधा निधि' (प्रयाग) वर्ष ३ उदय ९ [पृष्ठ सं० २९२] में पुराने 'राकेश' के किसी लेख से जो कि विशेषकर अम्बाशंकर जी शास्त्रीने लिखा है (सुधानिधि से ज्ञात होता है क्योंकि हमारे पास प्रथम वर्ष की फायल नहीं है) कि इसकी छाल काट के यदि भीतर का हिस्सा काम में लाया जाय तो विरेचन और यदि छाल का काम में लाया जाय तो वमन होगा तो इसका क्या भेद है।

बैद्यवर राकेश वर्ष दो उ० ७ के प्रश्न नं० ४५-४६ के उत्तर देने की कृपा करें।

भवदीय—

राजकिशोर वाजपेयी धौलपुर

हमने अनमोल बूटी के लिये रामगोपाल अग्रवाल कटरारोड अमरोहा को पत्र लिखा कि उक्त पुस्तक भेजें। जिसका दाम ।)॥ छपा है रामगोपाल महाशयका उत्तर मिला ॥) के टिकट भेजो उनके पत्र आने पर टिकट आठ आने के ता० १५-५-३० को भेजे पर पुस्तक आज तक नहीं भेजी मान लिया जावे कि टिकट नहीं मिलेंगे तो तीन बार जवाबी कार्ड भेजे कि अगर टिकट वाला पत्र न मिला हो तो लिखें फिर दुबारा टिकट भेजूं उत्तर के नाम से जै सीताराम है जा। ध्यान दें कि राकेश के सहारे कैसा अच्छा औषधि बेचने का प्रयत्न हुआ है मैं तो समझता हूं कि उक्त महाशय के नाम से राकेश में सूचना निकाल दी जावे ताकि ऐसे ईमानदार विज्ञापन दाता से लोग बचें।

मार्च मास उदय ७ में जो अश्लील मेरे नामसे छपे है हालतक कुछ भी खयाल न सज्जनों ने किया न आप ने।

आपका कृपा प्रार्थी
सरूपचन्द जैन मुरैना

* श्रीयुत सम्पादक महोदय ध्यान दें!

राकेश वर्ष दो अङ्क दो में प्रश्न १ का उत्तर तथा प्रश्न दो के दो उत्तर तथा वर्ष दो अङ्क ४-५ में प्रश्न १८ तथा ३ को उत्तर हमारे नाम से छपे प्रकाशित है, परन्तु उक्त उत्तरों के नीचे हमारा नाम नहीं है।

२-राकेश भाग दो अङ्क ४-५ में अनुभूत प्रयोग 'विशूचिकारोग' लेख से सुलाब, उदरशिरःशूल, विसूचिकारोग, हमारे प्रेषित है परन्तु हमारा नाम नहीं है किंतु लेखकमोहनसिंह बैद्य बघौरा लिखा है।

* श्रीयुत श्रीमान् का नाम प्रश्नोत्तर के नीचे नहीं दिया गया तथा ३ अनुभवसार भी आप ही के भेजे हुए थे परन्तु मेहरचन्द सिंहका नाम भूल से छप गया क्षमा करें तथा कृपाकर पाठक महोदय भी ध्यान आकर्षित करलें कि उपरोक्त उत्तर तथा प्रयोग डा० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी मैनपुरी निवासी ही के प्रेषित थे। सम०

श्रीयुत सज्जनचन्दजी जैन!

आप की शंका समाधान निम्न प्रकार से है।

१—कौंहर फल—इसकी बेल हिमालय में बहुतायत से जंगल में झाड़ियोंपर फैल जाती है और फल सेव के बराबर लगते हैं पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं परन्तु बच्चे दस्त बन्द ही होते हैं यदि आप को आवश्यकता हो तो मैं भेज सकता हूँ।

२—[illegible]—तथा तुरमुल अरेबिक (बिलायती कीकर) बासर फारसी (पोदीना की किस्म है) केरसाइमर्ड (एक किस्म का सुगंधित) हरमल, पारिजिया वल्गा (हंसराज) और पत्थर (हज लजहद) अलसलिनि (लजवंती बीज) आलबेजम (जंगली रेशम के बीज) फुला बेल (बेल के पुष्प हैं) नाड़ी शाक के बीज जो (कि जलाशयों में अधिकता से मिलते हैं) निर्बद बाबची इत्यादि औषधियां आप को अशोक के यहां से प्राप्त हो सकेंगी। अगर आप को वहां न मिल सकें तो हम यहां से भेजकर भेज सकते हैं।

वैद्य रामलाल यश श्रीवास्तव
पो० लश्कर पो० गोरखी
जि० गिंड (ग्वालियर)

प्रयोग परीक्षा फल

मैंने जो 'राकेश' के द्वितीय वर्ष के छठवें अङ्क में प्रश्न नं० ३६ का किया था उसका उत्तर श्रीयुत पं० गौरीशङ्कर जी पाठक वैद्य व रमल शास्त्री सागर निवासी ने अङ्क ६ में दिया। प्रयोग यह है कि रूजी (खटिका) का बारीक चूर्ण ५ रत्ती चार आना कर दोने में भर दो छाके बाद निम्बोरा तीन का रस कान में निचोड़ दो, उसका झाग सावेगा और कान बहना ४-५ दिन में बन्द होगा। दिनेश बाबू मैं अलबत्ता से बनाकर एरंडोल, इलाज १५ दिन किया मगर लाभ किंचित् मात्र भी नहीं।

इसके अलावा उसी अङ्क में पं० गंगाप्रसादजी त्रिवेदी देहली का उत्तर छपा है। अतएव यह प्रयोग किया खटिका सफेदी के लेख में पं० ऊपर १५ दिन तक डाला। परन्तु लाभ कि कुछ नहीं। इसके अलावा आपका १ आर्डर आया आपने लिखा था ७॥-) मनीआर्डर द्वारा मोलके पार्सल को तथा हम बराबर अब तक दान ठीक न होगा भेजेंगे। महाशयजी आप पहिले ८ रोज के लिये दवा वी० पी० द्वारा भेजिये बाद फायदा होने पर ७॥-) भेजे जावेंगे रोग निर्मूल होनेपर २५) पुरस्कार दिया जावेगा।

पंडितजी अगर दवा आप की ताजमुद हो और आप के रोगियों का कान ठीक हो गया हो तो वी० पी० भेजना बस इतनी लिख उठाने की कोई जरूरत नहीं

समस्त आयुर्वेदज्ञ महाशयों से कर बद्ध प्रार्थना है कि इस रोग की कोई अनुभवानुभूत दवा बतलाने की कृपा करें रोग निर्मूल होने पर ५) सेवा में भेंट किये जावेंगे जो सज्जन प्रतिज्ञा पत्र लिखाना चाहें वह लिखा सकते हैं।

विनीत—

कुंवर रन्धीरसिंह बर्मा वैद्य

मु० बाघौरा पो० मेडगांव

ग्वालियर स्टेट

राकेश वर्ष दो उदय १ के अनुभवसार नं० २ में इमली वृक्ष की ऊपर की छाल की खाक व्रणों पर बुरकने का जो योग आयुर्वेदाचार्य डां० रामेश्वरप्रसाद जी त्रिवेदी ने प्रकाशित कराया था वह योग आशातीत एवं गुणकारी प्रतीत हुआ धन्य वाद है।

भवदीय—राजकिशोर वाजपेयी

दौलतपुर (रायबरेली)

अनुभवसार

त्रिदोष पर प्रलेप

१—भटवांस काली ५- दूध में मिलाकर उबाल ले पुनः पीस कर पोटी बना घृत में भून ले यह पुलटिस कपड़ा पर लगाकर घांटी पर लगावे सो बात जाय दोनों बगल में लगावे तो पित्त जाय कन्धे पर लगावे तो कफ जाय परन्तु अलसी का कपड़ा हो तो विशेष अच्छा है अन्यथा कोई भी वस्त्र हो वही काम में लावे।

२- खुशबू दार उत्तम केश रञ्जक तैल

माशा	
६	मेंहदी के पत्ते
४॥	हंसराज
४॥	बालछड़
४॥	कचूर
४॥	नागरमोथा
४॥	लोंग
३	फूला गुलाब
३	धनियां
३	चन्दन सफेद
३	तेजपात
३	रतनजोत
३	बिल्ली लोटन

५ तिल तैल विधिः—

उक्त औषधियां कूटकर तैलमें मिला कर २ सप्ताह घाममें धर कर छान ले छान कों ले तो कपूर ३ माशा पिपरमेंट मिला दे तथा १ मा० इत्र चंदन मिला रख छोड़े तैल तैयार है। शिर सम्बन्धी समस्त रोगों को फायदे मंद है।

डा० प० रामेश्वरप्रसाद त्रि०

वैद्यवरों से प्रश्न

प्र० नं० ५६–मेरी समस्त वैद्यराजोंकी सेवामें विनीत प्रार्थना है कि मैं निम्न लिखित रोगसे बहुत दिनोंसे पीड़ित हूं और अपने जीवन को केवल भार रूप समझता हूं। मैंने यहां के और बाहर के बड़े २ नामी चिकित्सकों के बहुतेरे इलाज किये पर कुछ लाभ न हुआ, जो महानुभाव मेरे रोग का ठीक २ निदान और औषध लिखने की कृपा करेंगे उनका मैं आजन्म कृतज्ञ रहूंगा।

मेरे अब से पांच वर्ष पहले हाथ और पैरों के जोड़ों में दर्द हुआ करता था इस से किसी तरह छुटकारा मिला कि दूसरी आफत लगी, मैं नहीं जान सकता कि यह क्या रोग है, इसके लक्षण यह है—मेरे पेट में हर वक्त खिचावट रहती है और खाना खाने के बाद भी पेट कमरमें को खिचा करता है सदा आलस्य और भारी पन रहता है, पाखाना खुलासा नहीं आता है जलन भी होती है, पाखाने से आकर भी हाजत बनी रहती है, अपान वायु अधिक संचार करती है खाना खानेसे पहिले पेटमें से दब दब की आवाज सी होती है डकार आने से थोड़ी देर को बंद हो जाती है शुरू ही से डकारें गरम चली हुई आती हैं कानों और आंखों में गरमी है मेरा उम्र इस समय ५५ वर्ष की है नजर कमजोर नाक मुंह से कफ बहुत कम निकलता है सिर और गले में हर वक्त कफ रुका हुआ मालूम होता है, दांतों से खून बहुत निकलता है नाकपर चिकनाई सुबह को मुंह का जायका बुरा और उसमें पीला मैल भरा होता है, पेशाब के बाद फुरेरी २ का आना और हाजत का बना रहना शरीर में बोझ और चक्कर आना दिमाग की कमजोरी और दिलकी धड़कन वीर्य बहुत गाढ़ा नहीं है फोते की दोनों गोलों में से एक में दर्द है, बदन में चींके या जी भर सी निकलती हैं पाखाना खुश्क रंग मैला, पेशाब का रंग पीला होता है और थोड़ी देर रखा रहने से हलका लाल रंग का रेता सा उसमें होता है।

लच्छूमल फोटोग्राफर

प्रश्न नं० ६०–महावीरप्रसाद 'वीर' कोड निवासी कृत रसराज महोदधि पुस्तक में सन्निपातक ऊपर एक योग दिया है। उसमें 'घघर बरुआ' ना की औषधि आई है विज्ञ पाठक लिखें कि यह कौन औषधि है। हिंदी और संस्कृत नाम लिखने की कृपा करें।

भवदीय—

रामनारायण श्रीवास्तव

नु हड़गवालियर स्टेट

वैद्यों के उत्तर

उ० प्रश्न नं० ५७ कलीवनाशु—एकाकी तथा नजमीर का अनुभूत योग नकरीर का रोग एक की उपेक्षा से जाता है अन्तु उक्त दोनों रोगों की एक ही दवा है जो शतप्रतिशत है सेवन में प्रयोग सम्बन्धित है वाह न पेशा एक का मुकाबला कर मगाओ अवश्य लाभ होगा।

मात्रा—	(१)	
२ पत्तजी जड़		
२ मौलसी की छाल		
२ मूंगा की छाल		
२ बहेड़ा छिलका		
२ आंवले के छिलके		
बराबर चूर्ण	(२)	१ तोला
ईसबगोल की भूसी		१ ”
अड़ अंजबार		१ ”
सफेद चूरा		१ ”
मिश्री		½

अर्क केवड़ा २ तोला

प्रथम नं० १ की दवायें अर्क केवड़ा में पीसकर सुखा लेना तब नं० २ की दवायें कूट पीस छानकर मिला लेना फिर मिश्री मिलाकर ४-५ माशा सायं [illegible] जल या एक गिलास दूध के साथ दे ४० दिन तक लाल मिर्च, गुड़, खटाई तेल आदि गर्म व खरदरी चीजों से परहेज करना चाहिये लाभ होगा।

उ० प्र० नं० ७७—नकड़ी के नश्तर को पहली बार पुराने जमाने में चलाती थी कहीं २ अब भी इस्तेमाल होता है वही पुरानी चलती का चलता जमाकर रख बस लो इसी नश्तर को लगाओ दो तीन बार के प्रयोग से अच्छा हो जा- [illegible]

डा० पं० रामनरेशप्रसाद त्रिवेदी

प्रश्न नं० ५१— प्रिय महाशय जी आप ने अपने लिख की कमी का निदान लिखा है और लिखते हैं कि हमने अनेकों दवा की कोई लाभ न हुआ एक सुलभ फकीरी लिखता हूं पढ़ लेना। रक्त आजमाया हुआ है आप इसे अवश्य इस्तेमाल करेंगे उन्मत्तरि की कृपा से अवश्य लाभ होगा उक्त लिख की रुखी के साथ २ होने पर सब लिखा यें दूर हो जायगी।

पहिले नमकीन मुदरेचन द्वारा कोठा साफ हो जाना चाहिये पीछे औषधि सेवन की जावे।

(१) ऋतु धर्म के चौथे दिन शिर-

हिंदी जरी संस्कृत में (पत्थल गन्डूरा) कहते हैं जिसका पत्तों से पानी जल जाता है।

१ तोला को करीब आधी ही एक्की लेकर गाय के ताजे १० तोला एक बरस गाय के दूध में पीसे छान के पीवे।

२—शाम के वक्त सेमलका बड़ा भारी दरख्त होता है जिसकी मूसली अनुभूत चूर्णमें पड़ती है उसीका ताजी हरी छिली २ अंगुल बराबर मोटी प्रमाण खाते अंगुल की लेकर कुचलकर लुआब पानीमें निकाल दस तोला के करीब दूध के साथ पीवे।

पथ्य—हलका भोजन मूंगकी दाल चावल—किसी साहबका आदमी के बने फुलके।

अगर कहीं २ कुछ ख्याल अलग मालूम हो तो दस्त की कब्जियत हो तो शाम के वक्त वाली पौष्टी बन्द कर अगर कोई कहता है कैंथुड़ा (घुण्डी) जिसका दरख्त होता है आंध्र के से पत्ते कुछ मोटे होते हैं दूध बहुत निकलता है और छोटे २ कांटे पेड़ पर में होते हैं उसके चार नए पत्ते लेकर कुछ आमों गरम कर ठंडा होनेपर निचोड़ पिला देवे इससे दस्त साफ होकर पीड़ा शांत कर देता है यह औषधि एक अनुभूत [illegible] चाहिये यहीं [illegible] है।

[illegible] कर [illegible] एक ही [illegible] होता है।

जिस वक्त पुराना पानी तब एक बत्ती [illegible] की तरह मुलो की बराबर मोटी बनावे [illegible] के स्थान में लिंगों देवे और मूंग के बाद तुरन्त ही योनि में प्रवेश कर दे करीब ६ अंगुल की लम्बी बत्ती बनाना चाहिये और नाभि पर कपूर देशी पीसकर रख देवे १५ बूंद पानी छान देवे परन्तु भोग ही के बाद तुरन्त ही ये औषधि करना चाहिये।

[illegible] लिखते हैं कि इन वृक्षों में बड़ा बहुत सा द्रव्य कच्चा है और [illegible] यथा लिखें गये हैं के खाने द्रव्य नुकसान कुछ नहीं है।

प्रश्न पत्र के उत्तर पत्र तो ठीक ही है परन्तु सभी कन्या माताओं के लिये बहुत ही मुफीद है।

भवदीय—
वैद्य महादीनप्रसाद स्वर्णकार
मु० पिडखर पो० बिसंड़ा
(बांदा)

कौन ऐसा है जिसे फायदा नहीं हुआ

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयां

सुधासिंधु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, सन्निपात, अतिसार, पेट दर्द, कै, दस्त जाड़े का बुखार, (इन्फ्लूएञ्जा) बालकों के हरे पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़बड़ से उत्पन्न होनेवाले रोगों की अकसीर दवा इसके सेवन में किसी अनुपान की जरूरत न होने से मुसाफिरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं कीमत ॥) आना सब दवा बेचनेवालों के पास मिलता है . डा० ख० १ से २ के ।=)

बाल सुधा

बच्चों को बलवान, सुन्दर और सुखी बनाने के लिये सुख संचारक कम्पनी मथुरा का मीठा 'बाल सुधा' पिलाइये सब दुकानदारों के पास मिलता है । फी० ॥) डा० ख० ॥)

दद्रु गजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है दाद चाहे पुराना हो या नया एकने वाला इसके लगाने से अच्छा होता है कीमत फी शीशी 1) आना १ से २ के डा० ख० ।=)

द्राक्षासव

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाला कब्ज, बदहजमी, कमजोरी, खांसी, और नींद न आना दूर करता है बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है पीने में मीठा स्वादिष्ट है कीमत तीन पाव की बोतल २) छोटी १) रुपया डाक खर्च बड़ी ११) छोटी के ॥।=)

धोखे से नकली दवा न खरीदिये

मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा

आवश्यकीय सूचना

वर्ष क्रम सुधार

प्रथम वर्ष ही से ग्राहकों तथा राकेश प्रेमियों का बराबर परामर्श आता रहा कि राकेश का नव वर्ष जनवरी मास से प्रारम्भ किया जावे इसी अनुरोध के प्रति फल स्वयं मुझे भी यही विचार निश्चय करना पड़ रहा है कि राकेश का तृतीय वर्ष पौष शुक्ला संवत १९३१ से ही प्रारम्भ हो– एवं रहा सितम्बर के मास

स व्यतीत होने के बाद के अंकों का प्रकाशन–उनका क्रम इस प्रकार रहेगा– अक्टूबर–नवम्बर का 'अविश्विष्यांक' [illegible] रहेगा जिसमें द्वितीय वर्ष के शेष [illegible] दिसम्बर मासकी [illegible] भारत के अनुरोध से [illegible] मास के [illegible] विदित हुई होगी [illegible] अंक का [illegible] रहेगा [illegible] रहेगा [illegible] "उपहार" [illegible] सकेंगे आशा है [illegible] गण सन्तुष्ट हो [illegible]

उपयोगी उपहार।

१ जो सज्जन [illegible] के ग्राहक बनेंगे उनको पं० [illegible] वर्मा द्वारा लिखित "उत्कृष्ट प्रहसन" नामी पुस्तक जो कि १२५ पृष्ठ की है मुफ्त देंगे।

२ तीन ३ ग्राहक बनानेवाले सज्जनों को पं० ठाकुरदत्तजी श्रोत्रिय द्वारा 'अमृतधारा द्वारा स्वास्थ्य' मूल्य ।।) की पुस्तक मुफ्त देंगे। उक्त सज्जन का पता आनेपर या 'राकेश' कार्यालय द्वारा ज्ञात होनेपर भेजी जावेगी।

राजेन्द्र शेर माहेश्वरी
दौलतपुर (रायबरेली)

राकेश के तृतीय वर्ष का भविष्य।

ग्राहक अनुग्राहकों को विराट उपहार



प्रिय पाठकगण ! 'राकेश' का द्वितीय वर्ष प्रथम की भांति आगामी ३१ अगस्त को समाप्त होता है। तृतीय वर्षारम्भ से 'राकेश' पाक्षिक होकर प्रत्येक शरीरावयव चित्रोंसे व अन्य वैद्योपयोगी चित्रों सहित सचित्र प्रकाशित होगा। और वर्तमान विषयों के साथ ही साथ दो स्तम्भ समाचार स्तम्भ, पशु चिकित्सा स्तम्भ और बढ़ा दिये जांयगे।

इन सब उपयोगी विषयों के साथ ही नाना प्रकारकी बूटियों के सुन्दर रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे। इतनी विशेषता पूर्ण होते हुए तृतीय वर्षारम्भ की प्रसन्नता में प्रोफेसर पं० बालकरामजी शुक्ल ऋषीकेश कालेज द्वारा रचित— "विराट उपहार"-

पूयमेह विज्ञान

अर्थात् सुजाक चिकित्सा का बहुत बड़ा ग्रन्थ जिसका मू० २) रु० है 'राकेश' के तृतीय वर्ष के पुराने व नवीन बनने वाले ग्राहक महोदयों को सादर भेंट किया जावेगा, इतनी बड़ी विशेषता के साथ २ 'राकेश' के प्रकाशन में और भी विशेष प्रबन्ध किया जाकर और प्रति मास दो बार प्रकाशित होने पर भी वार्षिक चन्दा सिर्फ ३) रु० ही रक्खा जावेगा।

निवेदकः—जनरल मैनेजर

पं० बाबूराम शर्मा के प्रबन्ध से राकेश प्रेस बरालोकपुर (इटावा) में छपा

राकेश रजिस्टर्ड नं० ए० १८७०

आयुर्वेदीय ॐ मासिक पत्र

राकेश

कुम्हलित कुमुद समूहों को,
ज्यों राकेश खिलाता है।
मुरझाये वैद्यक सूत्रों को
'राकेश' पुनः सरसाता है॥



सम्पादक--द्विवेदि पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री
वार्षिक मूल्य ॥) | अगस्त ३१ [विदेशवालोंसे ३)

श्रेयं सदयाद्भवतां पुरारिदङ्गेजः प्रसरेत्प्रभावती। विराजते निर्मल चन्द्रकला महौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ॥

राज सर्व शुभकामनाओं सह प्रेषक। मेसर्स मोहन मार्का प्रा. लि. कोटा

नियम

१ - अबतक [illegible] का नवीन वर्ष [illegible] सितम्बरसे [illegible] तृतीय वर्षसे [illegible]

२ - [illegible] विज्ञापन [illegible] शीर्षों में [illegible]

३ - [illegible] अपना पता साफ [illegible]

४ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लेखकों के प्रति

१ [illegible] समालोचनार्थ [illegible] आवे [illegible] के नाम आवें।

२ [illegible] होना [illegible] करें।

३ [illegible] लेखों [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]



[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

श्री धन्वन्तरि जयति

राकेश

ऋषि प्रणीत वैज्ञानिक विधि से पूर्ण परीक्षित पत्र।
आर्य चिकित्सा सम भूतल में और न कोई जैसी॥
चीर फाड़ की क्रिया जहां करते वैद्यक सारे
करते हैं आरोग्य वहां जड़ियों से वैद्य हमारे॥

वर्ष २ | बरोलोकपुर अगस्त सन् १९३० | संख्या १२

नम्र निवेदन

सुधामई कर वृष्टि सहुँदिश ज्योति प्रकाशे।
भेद भाव की दृष्टि परस्पर द्वेष विनाशे॥
सहकारी जो मित्र पत्र सम्पादक जेते।
नित नव उन्नति करें भाग्य वश सब मिलि लेते॥

'पाठक' की यह प्रार्थना छुटो न इर्षा लूट में।
कहो कौन को भव भलो इस आपस की फूट में॥

'पाठक'

राकेश पंचक.

(लेखकः—रामकर्ण शर्मा वैद्यरत्न, जमुआ पो० कछुवा)

समस्या—'राकेश मंगाइये'

छन्द सवैया—

१—बिनती सब वैद्य प्रवीण सुनो, पढ़ि वैद्यक शास्त्र विचार बढ़ाइये।
भाव अनेक कुरोग लखे बिन, औषध ना करनो चित लाइये॥
जो करियो हठ जाने बिना, बनि मूर्ख जहान सदा सरमाइये।
ताते निदान सुधारिबे को, अति शीघ्र सु पत्र 'राकेश' मंगाइये॥

२—बिन वैद्यक शास्त्र विचार किये, गुण औषधि की कबहूं नहिं पाइबे।
मूर्ख जहान अनेकन वैद्य न भूलि कबौं उनके ढिग जाइये॥
जाने न रूप कुरोगन को ठग हैं तिन सौं नहिं आप ठगाइये॥
मानि सिखावन मेरो भरो गुन अमृत पत्र 'राकेश' मंगाइये॥

३—शुभ सीख सुवैद्यन धारि हिये जग में जस सुन्दर नाम कमाइये।
औ तजि साथ सदा धुर्त बाजन वैद्यक शास्त्रन में चित लाइये॥
औषधि रोग अनेकन को बिन रोग लखे नहिं हाथ लगाइये।
मान सिखावन मेरो भरो गुन अमृत पत्र 'राकेश' मंगाइये॥

४—करिये न गुमान गरूर भरे तज द्रोह सुवैद्यन के ढिग जाइये।
वैद्यक शास्त्रन की चर्चा तिन सों करि गौरवता जस पाइये॥
सुश्रुत भाव प्रकाश निदान को सीख सदा हिय भीतर लाइये।
मानि सिखावन मेरो भरो, गुन अमृत पत्र 'राकेश' मंगाइये॥

५—सुख सागर सो प्रगट्यो जगमें गुन आगर है शुभ भेष बनाइये।
सेवक वैद्य विभूषण है हिल जानि हिये हित सों अपनाइये॥
पाक्षिक हो गया मासिक से अब धार्षिक मूल्य जू तीन पठाइये।
मानि सिखावन मेरो भरो गुन अमृत पत्र 'राकेश' मंगाइये॥

प्राचीन भारत और शल्यतंत्र

[लेo-प्रोo रामकृष्ण वर्मा बीo एo बीo एसo सीo एसo एमo एसo]

(गताङ्क से आगे)

उसे ऊंचाई पर टांग दिया जाता है फिर लेट कर नली लगाकर पानी चढ़ा दिया जाता है जब उचित मात्रा में पानी चढ़ जाता है तब उसे घुमाकर बंद कर के नली निकाल डालते हैं-साधारण यंत्र में किसी प्रकार के निशान आदि नहीं पाये जाते हैं इसमें नाप कर पानी भरा जाता है अस्पतालों में अधिकतर इसीका उपयोग किया जाता है इसमें यह दोष है कि अधिक पानी चढ़ाना हो तो एक व्यक्ति सब पीपा के पास खड़ा रहे और उसे देखता जाय कि पानी कम होते पूरा करता जाय तब काम चलेगा अधिक पानी भरा नहीं जा सकता है पर एनीमा में तालाब में सिरा लगाकर उलचा जाय तो निकाल दिया जा सकता है, इस पिचकारी का उपयोग व्रणों के साफ करने धोने इत्यादि में होता है पर कार्य एनिमा से साधारण है इसके टांगने के लिये एक खूटी होना चाहिये या दूसरा व्यक्ति रुग्ण व्यक्ति से कुछ ऊंचे पर उठाये रहे तब द्रव जा सकता है दवाखानों के लिये उत्तम सामान है।

कपिङ्ग ग्लास

यह क्रिया भारतवर्षीय बहुत ही प्राचीन है अब भी इस को नापित (नाईनी) की स्त्रियां देशी दाइयां करती हैं इस क्रिया के दो भेद हैं एक सरक्त और दूसरी निरक्त अर्थात् एक क्रिया द्वारा रक्त निकाला जाता है और दूसरी क्रिया द्वारा नाड़ियां मांस पेशियों के विकार नाश करके ठीक किया जाता है विष क्रिमि-दूषित स्थान से रक्त निकालने के अंग्रेजी प्रकृया से कपिंग ग्लास का उपयोग किया जाता है यह तीन कांच के प्याला एक सेट में बंद रहते है जब आवश्यकता होती है तब इन को तैयार करते हैं पर हमारे देशी लोग लोटा गिलास किसी भी वस्तु से कर लेते हैं पर इसका नाम न जानने से इसे वह लोग निरक्त क्रिया को बारा लगाना कहते हैं, पेट की आंतें इधर उधर हो जाने नाडियों के बिगड़ने गर्भाशय या योनि या अन्य प्रत्यंग के स्थानसे हट जाने पर निरक्त क्रिया का प्रयोग किया

जाता है, इसमें लगाने के लिये तो पात्र होना चाहिये वह चौड़े मुंह का तो अति उत्तम है क्योंकि छोटे मुंह का पात्र लगाने से तकलीफ अधिक होती है अंतमें पात्र कठिनता से निकलता है, पात्रके मुंह का किनारा पतला न हो न पतला कटा फटा हो नहीं तो मांस चर्म में प्रवेश हो जायगा, पेट या जिस स्थान पर लगाना हो और निश्चित हो कि इसमें अंग खिंचकर फिर यथावस्थित ठीक हो जायगे तो प्रथम पेट या स्थान को तैल लगाकर मालिश करो कि स्थान पर नर्माहट आ जाये फिर कच्चे आटा को सान कर एक पतली रोटी बनाओ जो पात्र के मुंह से छोटी हो फिर रोगी को इस रीति से बैठाओ या लिटाओ कि जिससे स्थान ढीला और फैला रहे जैसे पेट में लगाना है तो लेटा हो इस प्रकार से स्थान पर वह कच्ची रोटी रखकर इसे पकाना न चाहिये सिर्फ आटा सानकर बनाओ उस रोटी पर थोड़े से तृण जो जल कर जल्द बुझ जाय रख कर आग लगा दो और बर्तन को मुख के बल रख दो कि आग अन्दर हो जाय ज्यों ही आग का उष्णता बढ़कर वायु अलग होगी थोड़ा स्थान खाली होनेपर पास के अंग खिंचकर उसके अन्दर चले जायगे फिर इसमें बर्तन इतना कड़ा बैठेगा कि बर्तन ही को पकड़कर रोगी को टांग सकते हो ४-५ मिनट में या २-१ मिनट में धीरे २ अंग को दबाकर निकाल लो तब बर्तन अलग हो जायगा रोटी पर आग जलाने का मतलब यह है कि आग अंगपर न जले कि जिससे जल जांय और इस क्रिया से आग का प्रभाव अंग पर कोई नहीं होता है।

यदि किसी स्थान से रक्त निकालने की क्रिया करना है जो उस स्थान पर जिस प्रकार से बने खींगी लगानेवाला छेद चर्म पर करता है उसी प्रकार से कई छिद्र कर देना चाहिये, फिर रोटी पर जलाकर बर्तन लगा दो जब अंग में खिंचाव होगा तब रक्त निकलकर पात्र में भर जायगा इस क्रिया को आयुर्वेद में अलाबू और घटि यंत्र के द्वारा सम्पादन करना कहा गया है और तुम्बी की क्रिया के नाम से प्रचलित है बहुत से स्थानोंपर इनका उपयोग होता है जो प्रथम लिखा भी गया है और कपिङ्ग ग्लास को आज कल इसी कार्यों के लिये बनाया गया है उसको जिस स्थानपर लगाना हो वहा पर छेद कर देने चाहिये, जिससे रक्त बह निकले तब तृण आदि न जलाकर किसी तीव्र मृतसञ्जीवनी सुरा जो जलाने की शराब है लेकर के वहांपर डालकर जला दे और कपिङ्ग लगा दे यह निर्वात होनेपर तुरत अंगों को खींचेगा पर खिचावट के साथ ही साथ छिद्रों द्वारा रक्त आकर भरा हो जायगा जिसको यह पात्र शीशे का होने से आसानी के साथ देखा जाता है कि रक्त आ गया है और रक्त का वर्ण कैसा

यदि अभी दूषित है तो निकाल कर फिर दूसरा फिर तीसरा इसी प्रकारसे सर्प दंश से ग्रसित रक्त निकाल देना चाहिये तो रुग्ण बच जाता है या जहांपर प्रयोग करना हो किया जाय, इसमें किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है आसानी से किया जाता है, निरक्त क्रिया जो वर्णन की गई है बहुत से स्थानों पर दर्द शूल अङ्ग प्रत्यग बैठाने में की जाती है, जिसे वारा कहा जाता है, देशी दाइयां इस क्रिया को अधिक करती हैं जिससे गर्भाशय यथा स्थान ठीक हो जाता है, योनि का ढीलापन मिटता है, इस वारा क्रिया को जिस औरत ने कराया है और जो करती है वह छुपा नहीं सकती है क्योंकि स्त्रियों मे यह क्रिया ऐसे ही स्थानों पर की जाती है जब गर्भाशय या यानि का रोग कोई होता है जिसे वह छिपाना चाहती है चतुर दाइया गर्भ गिराने के लिये भी इसे प्रयोग करती हैं हाल का गर्भ तो इससे जल्द ही स्राव हो जाता है इससे बच्चा मर जाता है तब उसे को हाथ डालकर खींच लेती हैं या इसे लगाकर व गर्भ को बिगाड़ डालती हैं फिर गर्भ स्रावक दवा देकर निकाल देती हैं, और पेट दर्द आदि का बहाना औरतें करती रहती हैं कि जिससे उनके कौटुम्बी न जानने पावें।

जन समूह में एक बात पैदा हो गई है कि जो लड़की बेचते हैं वह अपनी दीनावस्था से बेचते हैं जिसको ८ प्रकार के विवाहों के अन्तर्गत माना गया है, पर अब लड़का बेचने का रिवाज है जिसका वर्णन किसी भी स्थान पर नहीं लोक वेद सभी निंदा करते हैं पर वह बात आज धर्म मानी जाती है ऐसी उलटी चाल है इससे द्रव्य हीन अपनी लड़कियों का ब्याह नहीं कर सकता इस कारणसे दहेज के भय से लोग लड़कियां मार डालते हैं यह जिस प्रकारसे मारते हैं उसको परीक्षा बड़े २ डाक्टर कर ही लेते हैं इससे लोगों में भ्रम छा गया, तब यह दुष्टा दाइयां तुरत उत्पन्न बच्चा की नाभी परसे खरक क्रिया द्वारा रक्त निकाल कर मार डालती हैं जिसमें एक तो अंग प्रत्यङ्गों की कोमलता और दूसरे रक्त निकलने से तुरत मर जाता है तीसरी परीक्षा डाक्टर कर ही नहीं सकते न कोई परीक्षा है बड़े २ डाक्टर हैरान हो जाते हैं पर यह खरक विधि से जाना जाता है और ऐसी असभ्यता से इस क्रिया का व्यौहार हो चला है, पर सब दाइयां इस को नहीं जानती न इसका उपयोग ही करती हैं विशेषज्ञ दूसरी ही होती है, जिसका पता औरतों से ही चलता है, चिकित्सकों के लिये यह प्रयोग करना बहुत उत्तम है।

वक्ष परीक्षण यंत्र

यह यंत्र भी कई प्रकार का होता है इसके द्वारा वक्षकी ध्वनियां सुनी जाती हैं

वह परीक्षा की प्रणाली है इसे व्यौहार करना चाहिये चिलमदार बड़े हिस्से को बक्ष पर रखते हैं और पतले हिस्से को कान में लगाया जाता है यह दो नली या एक नली का रबड़ का होता है जिसे चाहो लेकर व्यौहार करो या लकड़ी का भी प्रमाण क्रमानुसार बना मिलता है उसे ही व्यौहार किया जा सकता है इन सब से एक ही कार्य चलता है यह श्वास सम्बन्धी रोगों का हाल जानने के लिये उपयोगी है जिसे जानकर उचित चिकित्सा की जाती है।

थर्मामीटर (तापमापक यंत्र)

इसके द्वारा ताप प्रमाण जाना जाता है, साधारण डिग्री इससे देख सकते हैं कि इतना ताप हो गया है जिस से उचित उपाय किया जा सकता है।

कर्ण संदंश

इसका भी एक रखना अपने पास अति आवश्यक है जिस समय पर कर्ण के अन्दर कई वस्तु चली जाती है तब उसका निकालना कठिन हो जाता है उस समय पर इसके द्वारा दाबकर निकाला जा सकता है इसी के द्वारा नाक के अन्दर से गई वस्तु निकाली जाती है एकसे दोनों काम चल जाते बहुत समय पर छोटे बच्चे अपने नाक कान में मटर दाना खाने के भर लेते हैं उस समय पर तथा और कुछ से कामों पर इसका उपयोग होता है।

कर्ण धोने की पिचकारी

इससे भी कई काम निकलते हैं य पीतल की होता है इससे कान भी सा किये हैं नाक भी धोये जाते हैं नाक क सफाई होती है, कर्ण के रोग हमेशा हो ही रहते हैं इससे अवश्य चिकित्सकों व रखना चाहिये।

आंख धोने का प्याला

यह हरे रंग का प्याला है इससे आ साबी के साथ आंख धोई जाती है इस जल या द्रव वस्तु भर कर आंखमें लगा और आंख खोलिये बन्द कीजिये द्रव गिरेगा और आंख धो जायगी तथा जि दशा से आंख तर रखना हो भर कर आं में लगाइये इसलिये इस प्याला को आवश्यक रखना पड़ता हैं।

उष्ण जलीय बोतल

यह भी उपयोगी द्रव्य है बहुतसे रो में और बहुत से स्थान में उष्ण जल या उष्णता से सेक करने की आवश कता पड़ती है अगर गरम पानी डा जाता है तो चर्म जलता है, उष्ण अश है तो आग से सेका नहीं जाता इसलि इस बोतल की आवश्यकता पड़ती है इस गर्म पानी भर कर अंगोंपर फिराने उष्णता प्राप्त हो जाती है और अपनी इच्छानुसार कार्य किया जाता है इस रोगी को कष्ट भी नहीं होता है जैसे है आदि में जब पैर ऐंठने लगते हैं दर्द

कम हो जाता है इसके व्यौहार से वह बच्चा जाता रहता है।

बर्फ थैला

जिस समय पर रोगी के किसी स्थान पर शीत देने की आवश्यकता आकर प्राप्त होती है तब शीत के लिये बर्फ का व्यौहार किया जाता है, वह बर्फ यों ही रक्खा नहीं जा सकता है क्योंकि जल होकर चारों तरफ बहेगा जिससे कपड़ा बिस्तरा आदि भीग जाने का भय है इसलिये बर्फ के टुकड़े करके इस थैले में भर देते हैं और बंद करके उचित स्थानपर रख कर कार्य परिपूर्ण करते हैं [illegible] अच्छी प्रकार पहुंचती रहती है को [illegible] प्रकार की हानि नहीं होती ऐसा समय चिकित्सामें सैकड़ों बार आ जाता है अर्थात् चिकित्सक इसको अपने पास प्रथम से अवश्य बनाये रखे जिससे समय पर कार्य लिया जाय।

गल संदंश

इसकी भी बहुत आवश्यकता है जब कोई बड़ी बड़ी वस्तु गले में अटक जाती है और नली पतली होने से नीचे नहीं जा सकती न ऊपर आ सकती है उस समय पर प्राण अन्त होने में देर नहीं लगती इसके रखने से जल्द ही वह वस्तु दबाकर बाहर करली जाती है और व्यक्ति बच जाता है ऐसी अवस्था प्रायः बच्चों में अक्सर आ जाती है इसके उपरांत और भी तमाम स्थानों पर प्रयोग किया जाता है।

इसके उपरांत २-१ शीशे की पिचकारी अवश्य रखना चाहिये जिससे अन्य काम होकर सुजाक इत्यादि व्याधियों में दवा की पिचकारी भी लगाई जाती है स्त्रियों के लिये फीमेल कुरेश और पुरुषों के लिये मेल कुरेश नाम से मिलती है और कुछ दवा नापने के गिलास भी रखना चाहिये आखवादि के बिना नापके पीना भी उचित नहीं है इस गिलास को मेजर ग्लास कहते हैं इन यंत्रों से सम्पूर्ण चिकित्सा [illegible] कार्य पूर्ण हो जाता है और [illegible] चिकित्सकों के [illegible] यंत्र।

इन यंत्रों को जब बतला दिया जावे तब अच्छी प्रकार से यथा योग्य जल से धोकर के साफ करके रखना चाहिये इससे उनमें रुकावट अवयवों की नहीं रहती है और अधिक दिन तक रह सकते हैं यदि धातु के यंत्र हैं तो उष्ण जल से धोकर पोंछ कर फिर सुखाकर तेल लगा देना चाहिये जिससे उसमें जंग आदि न लग सके।

रुई पट्टी आदि को प्रथम से ही साफ करके रखना चाहिये समय पर यह कार्य तुरन्त नहीं हो सकता है उनमें किसी प्रकार के अशुद्ध कण न रहें तो व्रणों के लिये हानि कारक हो बहुत से देशी वैद्य गीली पट्टी बांध देते हैं पर यह बहुत ही तुच्छ

बाल है इससे पट्टी सूखने पर होली हो जाती है, दूसरे पानी का अंश चर्म पर बंधा रहने से उसके सड़ने का काम करता है जिससे चर्म में गढ़ा पड़ जाता है यह कमी न करना चाहिये।

सम्पूर्ण यंत्र शस्त्र ऐसे रखना चाहिये कि उन पर धूल गर्द आदि न पड़े न बिल्कुल अपविघ्न अन्धेरे स्थान में रखे जांय कि कीटाणु जमा हो जांय, इस बात का ध्यान अवश्य रखे, शल्य करने वाले शस्त्रों को गरम पानी में औटा कर पानी सूखा के रखना चाहिये, इनको गीला हवा जिस में आक्सिजन अधिक है बचाना चाहिये नहीं यह धातु से मिलकर उसमें मुर्चा डाल देगी और शल्य के योग्य नहीं रहेगा अन्य सब बातों को अपनी बुद्धि अनुसार समझ कर तब बर्ताव करना चाहिये अब प्राचीन भारत और शल्यतंत्रका लेख समाप्त किया गया है।

लम्बे लोह खरल

—o—

यह खरल लम्बे (किस्ती नुमा) चिकने खूब सूरत मय घोटने की उत्तम मुखली सहित रहते हैं इनकी लम्बाई १५॥ इञ्च चौ० १० इञ्च ऊंचाई ५। इञ्च वजन में ९५ सेर के हैं। २ सेर औषध सरलता पूर्वक घोटा कूटा जा सकती है इसके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं प्रत्येक खरल का मूल्य १०) इन्हीं खरलों के आधे साइज व वजन के भी खरल तैयार किये गये हैं जिनका मूल्य ५) रु० है खरल का आर्डर देते समय पेशगी अवश्य भेजें नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जायगा पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के होना चाहिये।

मंगाने का पता—

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

इटावा यू० पी०

अनुभवसार

रक्तपित्त और हमारा अनुभव

[ले०—वैद्य भूषण कविराज पं० शशिकांत मिश्र वैद्यशास्त्री इलहौर]

यह गर्म देशों में होनेवाली व्याधी है, प्रायः आप देख ले हैं गर्मियों के दिनों में बालकों को और युवकों को नासिका द्वारा रक्त बहने लगता है।

कारण—

धूप में अधिक चलने या कार्य करने से, गर्मियों के दिनों में भट्टियों के सामने अधिक समय तक लगातार कार्य करनेसे, मैथुन में अधिक रत रहने से, खरपरा और खट्टी कांजी अथवा शूकर, भैंसा मेंढा, मछली, गौ मांस, बिडाल, लहसन, मूली, सरसों आदि अधिक सेवन करने से, सुरा बेर और खट्टे पदार्थ अधिक सेवन करने आदि कारणों से पित्त कुपित होकर रक्त से मिलकर इस रोग को पैदा करता है।

रक्तपित्त इस कारण से कहते हैं कि रक्त के साथ पित्त के इस प्रकार मिलाप से तथा शरीर के अन्दर रक्त को दूषित करने से रक्तपित्त कहते हैं।

अन्न के करने की इच्छा न होना, अन्न का पाचन विदाह भली प्रकार न होना डकारें खट्टी और कांजी कैसी आवें वमन की प्रबलता, स्वरभंग विकृत होना, गलेमें धूम्र का अनुभव होना, मुखका लालवर्ण होना आदि पूर्व रूप हैं।

लक्षण स्वयं ही मालूम पड़ जाते हैं, जब रक्त किसी अंग विशेष (मुख नासिका, कर्ण, आंखें गुदा मूत्र लिंगी) से निकलना शुरू हो जाये तो उस समय दो बातों का ख्याल होता है।

१—अन्दर विद्रधि का होना।

अन्दर फोड़ा तो नहीं हो गया है वा पेट में व्रण तो नहीं है। फोड़ा जब अन्दर होगा तो उसको किसी विशेष स्थान पर उभरा हुआ कड़ी गांठ सी होगी रोगी को तकलीफ अधिक होगी, हाथसे दबाने पर दर्द मालूम होगा और कड़ा होगा जब पाक होना शुरू होगा तो दर्द स्थान विशेष पर बढ़ जावेगा और भी व्रणके लक्षण उपस्थित होंगे।

जब व्रण फट जायेगा तब पीप और रक्त मिश्रित निकलेंगे।

२—पेट में व्रण (जख्म) किसी अन्य

रोग का परिणाम स्वरूप हो जाते हैं तब रक्त गुदा द्वारा जाने लगता है। जैसे प्रवाहिका (डाईसेन्ट्री) टाईफाईड पुराना अजीर्ण।

प्रवाहिका—

इसका कारण एक प्रकार का जीवाणु होता है जो अन्दर जाकर आंत्र में शोथ कर देता है शोथ का स्थान फट जाता है फिर व्रण बन जाता है आंत्र में से व्रण के कारण प्रवाहिका के साथ रक्त भी आना आरम्भ हो जाता है जैसे २ रोग बढ़ता जाता है वैसे ही व्रण जीर्ण होता जाता है।

यह बहुत काल तक रहता है इस में ज्वर नहीं होता यू० पी० सी० पी० और बम्बई आदि में बहुत होती है।

टाईफाईड

इस रोग को विशेष प्रकार के दण्डाकार कीटाणु उत्पन्न करते हैं। कीटाणु रोग के समय आंतों के व्रणों में और दूसरे सप्ताह में रक्त के अन्दर रहता है।

किसी न किसी प्रकार कीटाणु जब अन्दर चला जाता है तब आंत्रकी लसी का समूह में शोथ पैदा करता है जिससे वहांपर व्रण बन जाते हैं। वही व्रण रोग का मूल कारण है।

यह सिर्फ दिखाने के विचारसे थोड़ा सा लिखा गया है फिर कभी 'टाईफाईड' पर चिकित्सा सहित लेख लिखने का विचार है।

दोनों रोगों की थोड़ी प्रतीकें दी हैं जिससे भली प्रकार समझ में आ सकता है यदि प्रवाहिका के कारण गुदा द्वारा रक्त जा रहा है तो प्रवाहिका के लक्षण साथ में होंगे पेट में दर्द हर समय रहेगा अफारा होगा, पेट पर दबानेपर (विशेष स्थान पर) दर्द मालूम होगा। इन सब बातो से रक्तपित्त का निश्चय कर सकते हैं—टाईफाईड का स्वयं ही भेद हो जाता है भेद करने की आवश्यकता ही नहीं रहता है।

पेट में व्रण होने के दो कारण रहें अक्सर डाक्टर लोग कह देते हैं कि पेट में जख्म हो गया है आप इन बातो से पृथक कर सकते हो।

अन्य रोग भी जैसे 'आंत्र क्षय' इस में भी व्रण हो जाते हैं।

रक्तपित्त प्रधानतया दो प्रकार का होता है। १-ऊर्ध्व गामी २-अधोगामी। ऊर्ध्वगामी का रक्त ऊपर से बहता है। अर्थात् मुख नासिका नेत्र, कान, द्वारा रक्त स्राव होने को ऊर्ध्वगामी रक्तपित्त समझना चाहिये। अधोगामी का रक्त स्राव नीचे को बहता है अर्थात् गुदा, योनि लिंग, दोषों के अधिक कुपित होनेपर सारे रोम कूपों से रक्त बहने लगता है।

ऊर्ध्वगामी का आमाशय से सम्बन्ध होता है और अधोगामी का पक्वाशयसे जब दोनों से सम्बन्ध हो तो उभय होगा।

कफ का रक्त पित्त-रक्त वमा हो

पीलापन कुछ हो चिपकड़ हो पिच्छड़ हो तो समझना चाहिये कफ प्रधान है।

काला, झाग, फेनवाला, पतला रक्त वातिक होता है। गो मूत्र जैसा, काले रंग की लकीरों की सी आभा हो अंजन जैसा हो वैतिक समझना। पित्त ही प्रधान रोग है।

दोषों से भेद—

ऊर्ध्वगं कफ संसृष्ट मधोगम् पवनानुगम्। द्विमार्गं कफवाताभ्या मुभाभ्यामनुवर्तते॥

ऊर्ध्वगत रक्तपित्त कफसंसृष्ट अधोगत रक्तपित्त वातानुग द्विमार्गगामी रक्तपित्त कफ और वात संसृष्ट जानना।

उपद्रव

ज्वर, कास, श्वास, कमजोरी पाण्डु दाह अन्दर अनुभव होती है, रक्त अधिक निकल जानेपर मूर्छा हो जाती है अन्त में मृत्यु भी हो सकती है, भोजन करने पर विदाह होती है हमेशा हृदय में दर्द होता रहता है धड़कन हर समय रहती है, श्वास अतिसार, सिर दर्द सब उपद्रव होते हैं।

साध्यासाध्य निर्णय।

ऊर्ध्वभागी रक्तपित्त साध्य अधोगामी याप्य। एक मार्ग वाला बलवान, मन्दवेग वाला नया, हेमन्त, शिशिर ऋतु में उत्पन्न हुआ और उपद्रव से रहित रक्तपित्त साध्य है।

मांस धोवन के समान खड़े जैसी बू वाला, नीले रंग का प्रकृति वर्ण सांप की जामुन सा जो काला नीला और इन्द्र धनुष जैसा रंजित हो मुर्दे सी गंधवाला रक्त हो ऐसे रक्तपित्त को छोड़ दे।

मैं अभी एक रक्तपित्त रोगी का इलाज करने गया था रक्तपित्त बहुत पुराना हो गया था चिकित्सा डाक्टरी बहुत कराई आराम हो जाये परन्तु फिर रोग शुरू हो जाता कुछ काल के बाद एक वर्ष से चिकित्सा से भी कोई फर्क न पड़ा जब दवाई का भरा 'कैपस्यूल' रोगी निगलता १-२ मिनट के बाद ही वमन द्वारा बाहर दवाई आ जाती। आराम कुछ न होता एक के अधिक आने के कारण कमजोरी दिन प्रति दिन अधिक बढ़ने लगी ज्वर भी कुछ २ शुरू हो गया, ऐसी हालत में मेरे पास आया रोगी को अधोगामी रक्त पित्त था डाक्टर ने। पेट में व्रण बताये थे।

रोगी की हालत देखने के बाद मैंने कहा इनको अधोगामी रक्तपित्त है। पेट में व्रण नहीं है न तो पेचिश थी पेटमें दबाने पर भी दर्द नहीं अनुभव होता था, न कोई फोड़ा था तथा और कोई भी विशेष कारण न था। जिन औषधियों से आराम हुआ वह आगे प्रगट करूंगा।

इसी ही कारण से प्रवाहिकाधिका ऊपर जिक्र किया है चिकित्सा समय में इस प्रकार के डाक्टरों से संघर्ष अकसर होता है।

चिकित्सा

सबसे पहले बढ़ते हुए उष्ण रक्त को शांत करना चाहिये यदि ऊर्ध्वगामी है तो आमाशय में कुपित हुए पित्त को शांत करे यदि अधोगामी है तो पक्वाशय में कुपित दोषों को शांत करे। जो रोगी बल युक्त है कमजोर नहीं है उसका रक्त एक दम बन्द न करे नहीं तो गलगृह, पूतिनस्य अरुचि, मूर्छा, ज्वर, गुल्म, आमाद प्लीहा किलास, खजाक, अर्श, विसर्प, वर्णनाश, अमन्दर, बुद्धिनाश और इन्द्रियरोध उपद्रव उत्पन्न हो जाने के कारण रोगी के बलाबल दोषों को निश्चय करके चिकित्सा करे।

ऊर्ध्वगामी रक्तपित्त में पूर्व विरेचन कराना चाहिये।

अधोगामी रक्तपित्त में वमन पहले कराना चाहिये यदि रोगी बहुत क्षीण हो तो वमन विरेचन के बिना ही शमन करना चाहिये।

विरेचन—निशोथ ६ मा० या मुनक्का ८ दा० गुलाब के फूल १ तो० गुलहठी ४ मा० अमलतास का गूदा १ तो० लोहेदार बर्तन में कषाय तैयार करके तुरंजबीन १ तो० उस कषाय में नीचे उतार कर शीरे दे ५ मिनट के बाद मल छान कर पिला दो। इससे भली प्रकार विरेचन होंगे।

२—अमलतास का गूदा १ तो० सौफ १ तो० मुनक्का ६ नग।

कषाय बनाकर मल छानकर गुलकंद १ तो० डालकर ऊपर से इस कषाय को पीले।

वमन—मैनफल १ तो० १ सेर पानी गर्म में शहद खांड मिलाकर पिला दो वमन से आमाशय साफ हो जायेगा।

२—मुलहटी १ तो० गर्म पानी १ सेर में शहद ८ तो० शीर पिला दो वमन होगा।

३—नागरमोथा, मैनफल, इन्द्रायन, मुलहटी ६-६ मा० लेकर १ सेर गर्म पानी शीर पिलाने से वमन होता है।

ऊर्ध्वगामी रक्त पित्त में तर्पण और अधोगामी में यवागू देना हितकर है।

ऊर्ध्वगेऽनुकोपस्थ तर्पणादि क्रमोहितः।
अधोवहेयवागूपादिर्नवेत्स्या न्मारुतोवली॥

अरक्त चिकित्सा

जो रक्तपित्त वाले क्षीण हैं शोक से, अधिक बोझ से, दिन भर घूमनेसे थक गये हों, सूर्य की गर्मी से सन्तापित हो या और किसी बीमारी से कमजोर हो गर्भिणी स्त्री, वृद्ध, बालक, या रक्तपित्त के साथ शोष का सम्बन्ध हो ऐसे रोगियों को वमन विरेचन न देकर संशमनी चिकित्सा करना आवश्यक है।

१—बांसा, दाख, निलोफर, हरड़ इनके कषाय को शक्कर शहद मिलाकर पीने से ऊर्ध्व रक्तपित्त का रक्त शांत होता है।

२—पलाशकाष्ठ, कमल, दूध, बबूआ नागकेशर, बांसा बराबर लेकर कषाय

तैयार करे मिश्री गेर पीने से रक्तपित्त शांत होता है।

६—नागरमोथा, कमलकेशर, खजूर, छोटी इलायची, सिंघाड़ा बराबर लेकर चूर्ण कर लो, ४ मा० शहद के साथ चाटने से रक्तपित्त नष्ट होता है।

७—प्रियंगु, लालचंदन, पठानी लोध, अनन्तमूल, मधूक पुष्प, नागरमोथा, आमले इनका चूर्ण शहद से चाटकर ऊपर से एक पाव मिश्री गेर बकरी के दूध में पीवे।

८—यदि रक्त मल द्वारा निकलता हो तो-मोचरस ६ मा० बड़की दाढ़ी १ तो० बड़की कली १ तो० बला, नील कमल पठानी लोध १-१ तो० चूर्ण कर ४ ६ मा० दुध से सेवन करे।

रक्त पित्त के साथ ज्वर हो या दस्त आ रहे हों तो यह क्वाथ दे—

गिलोय, धनियां, खश, पित्तपापड़ा, अतिस, पाठा लाल चंदन, इन्द्र जौ चिरायता, नागरमोथा, बेलेगिरी सम लेकर क्वाथ तैयार करके शहद या मिश्री गेर कर पिलाये रक्तपित्त ज्वर अतिसार युक्त नष्ट करता है।

वासादि क्वाथ

वासा० १ तो० द्राक्षा० १ तो० आमला १ तो० इनका क्वाथ शहद गेर कर पीने से रक्तपित्त नष्ट होता है।

केवल वांसा का ही क्वाथ शहद गेर कर पीने से रक्त पित्त नष्ट होगा।

लाक्षादि क्वाथ

फालसा, खजूर, द्राक्षा, महुवा ६-१ मा० क्वाथ बनाकर शहद गेर कर पीनेसे रक्तपित्त नष्ट होती है।

धनियां १ तो० १ छटांक जलमें भिगो दे प्रातः मल छान कर शकर मिला सेवन करने से रक्तपित्त अन्दर की दाह नष्ट होती है।

इस प्रकार बांसे का भी हिम बनाकर सेवन करने से रक्तपित्त नष्ट होता है।

धनियां, आमले, बांसा, द्राक्षा पित्त पापड़ा सम लेकर हिम तैयार करके सेवन से रक्तपित्त नष्ट होता है।

एलादि चूर्ण

छोटी इलायची, प्रियंगुफूल नागरमोथा धनियां पिप्पल सफेद चंदन नागकेशर आमले १-१ तोला चूर्ण कर शहद के साथ सेवन से रक्तपित्त नष्ट होता है।

सुधानिधि रस

पारा, गंधक, सोनामाखी भस्म, लौह भस्म १-१ तो० कंजली तैयार करके भस्में मिलाकर त्रिफला के क्वाथ की भावना दो-कमल, खश, आमला स्वरस १-१ भावना।

१ र० प्रातः शहद से चाटकर दूध पीवे।

उसीरादि चूर्ण

खश, सफेद और लाल चंदन, लौंग

सफेद इलायची; नागकेशर नागरमोथा मुलहटी वंशलोचन पिपल सोंठ कंकोल १-१ तो० कपूर १ तो० मिश्री आठ गुनी मिलाये १ तो० चूर्ण दुध साथ सेवन करे इससे रक्तपित्त शीघ्र नष्ट होता है।

वासा अवलेह

बांसा ५०० तो० अठगुने जलमें पकाये चतुर्थांश काढ़ा रहे उतार कर छान लो फिर ५०० तो० मिश्री गेरकर अवलेह तैयार करो शीतल होनेपर १६ तो० दूध मिला यह चूर्ण दालचीनी इलायची पत्रज नागकेशर लाल चंदन प्रत्येक ४-४ तोला मिला दो।

इस अवलेह को १ तो० प्रति दिन सेवन से उग्र रक्तपित्त नष्ट होता है।

बांसाघृत शतमुसल्यादि लेह पाठ्य देते हैं।

हमारी चिकित्सा विधि

ऊपर जिस रोगी का जिक्र किया है काफी पुराना था क्योंकि रोगी बहुत कम जोर था इस कारण संशमनी चिकित्सा की रोगी को उबर था इसलिये गुडूच्यादि क्वाथ (गिलोय धनियां) जो पूर्व लिखा है प्रात- देना शुरू किया और शाम को ५ बजे बसन्तमालती १ र० अनारकली के रसके साथ दी, इससे ५-६ दिनमें ज्वर नष्ट हो गया फिर कूष्माण्डावलेह १ तो० रक्तपित्त कुलकंडन रस १ रती मिलाकर दोनों समय दिया ऊपर से बकरी का दूध १ पाव और भोजन के बाद १ घंटे के उशीराशव १॥ तो० सम पानी मिलाकर दोनों समय प्रारम्भ किया बराबर २ मास यह क्रम चालू रहा अब रोगी बिलकुल निरोगी है।

कूष्माण्डावलेह

उत्तम और भारी १ पेठा लेकर छील लो और अन्दर का बीज अलग कर के कांटों से छेद दे मांडा पानी गेर कर उबाले जब आधा पक गया उतार कर पानी छान कर एक पात्र में अलग रख लो; पेठे के टुकड़ों को कपड़े से निचोड़ लें उस पेठे को घूए में गेद दो जब कुछ रूख सा जमे तब ताम्र के बर्तन में ३२ तो० घृत गेर कर भून लो जब भुन जाये मिश्री पेठे के बराबर गेर दो उस जलमें पेठे को तराशते समय जो निकला है वह भी इस में ही गेर दे और वह पेठा भी गेर दें जब पकले २ लेह बत हो जाये उतारकरयह चूर्ण को गेरें।

पीपल सोंठ जीरा २-२ पल धनियां छोटी इलायची काली मिरच दालचीनी पत्रज, (यह नो पुस्त की दवाई) मैंने ये और पिला दी थी, कमलगट्टे का चूर्ण सफेद चंदन, नागकेशर, खस, मुलहटी २-२ तो।

कपड़ छन चूर्ण पिला दो जब सम्यक नया मिल जाये शीतल होनेपर १६ तो० शहद मिला दो, पात्र में भर कर रख लो

इसकी मात्रा १ तो० यह रक्तपित्त की अव्यर्थ औषधि है।

रक्तपित्त कुष्ठकंडन रस

शुद्ध पारा, शु० गंधक, प्रवाल, सोनामोखी भस्म नागभस्म, वंगभस्म (चांदी भस्म, मुक्ता शुक्ति भस्म, यह और मैंने गेरी थी) सब बराबर लेकर चंदन कमल खसेली बांसा कांजी गजपीपल मिठी तुरंबी शतावर सेंथल बटजरा गिलोय मुलेटी प्रत्येक की ३-३ भावना दें।

१ र० मात्रा से प्रयोग करें यदि कषाय में बांसा और २ सेर गेर दिया जाय 'वासाकूष्माण्डावलेह' बन जावेगा।

उशीरासव

खश, कमल, गंभारी, नेत्रबाला कमल की जड़ प्रियगु पद्मकाष्ठ लोध मंजीठ धमासा पाठा चिरायता बड़ की छाल गूलर की छाल कचूर पित्तपापड़ा नीलोफर पटोलपत्र अनार की छाल जामुन की छाल मोचरस प्रत्येक ४-४ तो० द्राक्षा ८० तोला (१ सेर) धाय के फूल ६४ तो० खांड ५ सेर शहद २॥ सेर जल २ द्रोण (पाकार्थ) आसव विधि से बनावे पांडु रक्तपित्त कुष्ठ अर्श सभी शोथ को नष्ट करता है। रक्त पित्त की बहुत अच्छी दवा है।

१॥ तो० से २॥ तो० जल के साथ भोजन के १ घंटे बाद सेवन करे।

अनारदाने की चटनी सेवन करे या आमलों की चटनी।

यदि रक्त अधिक मात्रा में आ रहा है तो सोनागेरू ६ मा० इलची ६ मा० सुवर्ण माक्षिक भस्म १ र० दे।

नासिका से रक्त आ रहा है तो अनार कली का रस नाक में गेरे।

सफेद दूब का रस गेरे फटकरी का पानी नली से ऊपर को चढ़ाये पिंडोल मट्टी के डले को पानी में भिगोकर सूंघे।

रोगी को सीधा लिटाकर सिर पर शीतल जल की धार गेरे, बरफ रखे तौलिया भिगोकर सिर पर रखे रक्त बंद हो जायगा।

गुदा द्वारा रक्त बह रहा हो तो बरफ का प्रयोग करे।

रोगी को प्यास अधिक हो तो सफेद चंदन नीलोफल खस नागरमोथा इन से जल पकाकर कोरे घड़े में रखदे शीतल होने पर पीने को दे।

पथ्यापथ्य

मूँग, मसूर, चना, मोंठ, मटर, अरहर इनकी दाल गेहूं सांठी चावल आदि।

शाक पालक आमाहलदी के फूल कचनार के फूल का शाग कमल की जड़ (भिस) बथुआ लौकी पोईका शाक पेठा।

बकरी का दूध लघु शीत वीर्य भोजन करे तथा गुरु उष्णवीर्य पदार्थ छोड़ दे।

फल अनार फालसा आमला आदि खाये।

शर्बत नीलोफर चंदन केवड़ा खस फालसा इनका गर्मियों में शर्बत पीना लाभ देता है।

वनौषधि विज्ञान

[ले० महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य पकड़ला पो० किशनपुर]

बहुफली

यथा नाम है गुण तथा अमृत रूप लखाय।
गुण ग्राहक बेचन करे जग कीरति फहराय॥

वास्तव में बहु फलियां तथा बहु फलवती होने के कारण इसका नाम बहुफली सार्थक है यह परम वृष्य वाजीकरण नपुंसकता नाशक प्रमेह तथा प्रदर विनाशक है। यह बूटी चमत्कारिक व तेजोमय है रोगियों के कल्याणार्थ व वैद्य जगत के मनोरञ्जन व ज्ञान वर्द्धनार्थ निम्नाङ्कित पंक्तियां लिखी जाती हैं:

यह बूटी ककरीली भूमि में उत्पन्न होती है वर्षा में पनपती शरद ऋतु में फूलती व फलती है, बसन्त ऋतुके प्रारम्भ तक हरी भरी रहती उसके पश्चात् प्रायः सूख जाती है।

इसका चकता धरती में चिपटा रहता है पत्ती गोल छोटी और कुछ कटवां सी होती है फूल पीला तथा फली लम्बी किंतु छोटी और पतली होती है।

इस बूटी का प्रयोग अनेक वाजीकरण वृष्य तथा पौष्टिक प्रयोगों में आया है। बम्बई की छपी 'काम कौतूहल' नामक पुस्तक में 'कामिनी विलास गुटी' तथा बल्लभा गुटी में इसका प्रयोग है।

किंतु इन स्थलों में बहुफली का अर्थ बबूर के बीज लाला शालिग्रामजीने अपनी टीका में किया है जो कि अशुद्ध है 'बल्लभा गुटी' का पाठ इतना अच्छा है कि उसके देने का लोभ हम संवरण नहीं कर सकते।

(१) बहुफली मोचरसं मुसल्यौ करहाटकम्
तुगाचमर्कटी बीज कोकिलाक्ष मुरगणम्॥
गोक्षुराह्यमृता क्षत्वं तथा पुष्प लिसोदकम्
मस्तगी जातिकोश च लवगं वंश जात्मकम्
एतानि समभागानि सिता अष्टिगुणामवेत्
पाक कृत्वा गुटीं बद्धा कालमात्रां भक्षयेत्
सायकाले रतांतेच पिबेदुग्धं तदोपरि
नपुंसकत्व रोगघ्नं वीर्य वृद्धि कर नृणाम्
प्रमेह प्रदर कुन्छ्र शुक्र दोषं च मेदसि
एतत्सर्वं निहन्त्याशु वाजीकरण मेवच

अर्थ—बहुफली, मोचरस, मुसली काली मुसली, अकरकरा, बंशलोचन,

तालमखाना, उटंगण गोखरू मिलोय का सत जपा के फूल मस्तंगी जावित्री लवंग बंशलोचन यह सब समान भाग सबसे दुगुनी चीनी लेवे यथा विधि सब औषधियां मिला पाक बनावे और झड़बेरी के सेवन गोली बना सवेरा समय और रति के वक्त में दुग्ध के संग एक गोली सेवन करे यह नपुंसकता नाशक वीर्य वर्द्धक प्रमेह प्रदर मूत्रकृच्छ्र शुक्रदोष और मेद दोष को नष्ट करती है एवं उत्तम वाजीकरण है कवि सरल नामक पुस्तकमें एक अत्युत्तम प्रयोग है उसमें अन्य दिव्य औषधियों की श्रेणी में बहुफली भी दिखाई देती है प्रयोग यह है:—

नृप को अरु धनवान को यही औषधी साज
ताके गृह बनिता बहुत लाहीके यह काज

(२) सौ०-अर्क-करा मोखरस पाइ,
गुग्गुल मुसली देहु मिलाय।
सत मिलोय बहुफलियां आन
इन्द्रयव मीठे पान
गोखरू और लसूड़े जान,
कौंच उटंगण बीज प्रमाण॥
सतियारा बावची मिलान,
तालमखाना सालम आन॥

दो०-सबतें दूनी खांड ले चूरण करहु बनाय
टंक तीन गो दुग्ध सों नितप्रति जो नरखाय
बानर बल बीरज बढ़े नारी बीस रमाय
या सम औषधि और नहि कवि तरंगमनभाय

३-बहुफली की पत्ती ।) भर काली मिर्च पांच दाना जल में घोट छानकर थोड़ी सी मिश्री मिलाकर पीनेसे पुरुषों के प्रमेह और स्त्रियोंके प्रदर रोग नष्ट होते हैं अत्यन्त वीर्य बल और पुष्टता वर्द्धक है।

(४) सिंघाड़ा संगजराहत इलायची बड़ी ५ दाना नागकेशर तजकलमी बहुफलीकी पत्ती बट बरोह खस कुशाकी जड़ सबका बराबर मिश्री मिलाकर चूर्ण बनालें प्रातः सायं छः २ मासा चूर्ण गो दुग्धके संग सेवन करने से धातु विकार दूर होता है अग्नि बढ़ती तथा बहुमूत्र रोग शमन होता है स्त्रियों के प्रदर रोगके लिये रामबाण है॥

५-बहुफली की पत्ती बटबरोह बटदुग्ध अकरकरा अतिबला (कंघी) की जड़ ब्रह्मदंडा की जड़ सबका चूर्ण कर शहद से गोली झड़बेरी के बराबर बनाकर सेवन करने से स्वप्न दोष और शुक्र प्रमेह नष्ट होता है अनुभूत है॥

६—बहुफली की पत्ती सिंघाड़ा संगजराहत इलायची बड़ी के दाना नागकेशर कुशाकी जड़ बेड़ बरोह बट दुग्ध शुद्ध के बांझ के बीज कामराज सबके समान स्वदेशी मिश्री मिलाकर दुग्ध से ॥) भर से ॥।) भर तक प्रमेह रोगीके लिये परमोपयोगी है॥

७—बहुफली की पत्ती शतावर कवांच सोनी असली बंसलोचन बीजबन्दके बांझ के बीज श्वेत मुसली स्याह मुसली मिश्री

काली सोंठ पीपलचोब चीनी समान भाग ले सब के समान देशी मिश्री मिला प्रति दिन एक तोले गो दुग्ध संग सेवन करने से पतला वीर्य गाढ़ा होता है पेशाब में धातु का गिरना स्वप्नदोष होना इत्यादि समस्त वीर्य रोगोंके लिये अमोघ औषधि है।

८-इसकी बत्तीको मट्ठे के संग बांटकर पीनेसे अतीसार रोग नष्ट होता है॥

९-इसका एक प्रयोग तिजारी व चौथिया ज्वरमें बहुत बढ़िया व अनुभूत है हर प्रकार के ज्वर में भी यह लाभदायक सिद्ध हो चुकी है योग यह है: |

।) बहुफली ।) कुनेन ।) गुजराती के दाना ।) कबाब चीनी नीबू के चार फल॥

नोट—चारों औषधियों को नीबू के रसमें मिस्ल चंदन के घोटना चाहिये पश्चात् आध सेर जल में घोल कर बोतल में भर दे प्रातःकाल एक छटाँक रोज इस अर्क को खिलाना चाहिये॥

१०—ऽ- बहुफली ऽ- शंखपुष्पी दोनों को लेकर ऽ१ पानी में पचावे चौथाई शेष रहनेपर मिश्री की चासनी बना ले इस अवलेह के सेवन से मस्तिष्क शक्ति बढ़ती बबल वृद्धि होती है॥

११—बहुफली की पत्ती तथा १) मिर्च काली दोनों को घोटकर शहद से गोली बनावे इन गोलियों को प्रातः संध्या सेवन करने से प्रमेह तथा प्रदर रुज विनष्ट होता है॥

वैद्यवरों के उत्तर

उ० प्रश्न नं० १४—सज्जी अथवा सबुदफेन का बारीक चूर्ण कान में डाल उसमें बिजोरा नीबू डालने से उसी दवा के सदृश्य गुण मिलता जुलता है॥

उ० प्रश्न नं० १५—कोई दूसरा नाम आप को मालूम हो तो लिखें वा यही नाम है—

उ० प्रश्न नं० १६ लोग प्रायः योग यों ही (अपने नाम के निमित्त) छपा दिया करते हैं किंतु इस बात पर शोक अवश्य है ऐसा नहीं करना चाहिये॥

उ० प्रश्न नं० २५—ये सम्पूर्ण औषधें रूपलाल वैश्य बूटी प्रचारक कार्यालय चौखम्भा बनारस से प्राप्त हो सकती

उ० प्र० नं० २६—हिंगुल आदि खनिज पदार्थ मैं आप को दे सकता हूं॥

उ० प्रश्न नं० ३२-विशेष तो नहीं २-१ पेड़ मेरे यहां हैं बीज का पता मैं नहीं जानता॥

उ० प्रश्न नं० ४२—खरकोक्त ब्राह्म रसायन-पांचो प्रकारका पञ्च मूल १-शाल [illegible] पृष्टपर्णी दोनों कटकारी गोखुर में

लघु पञ्चमूल है २-बेल मूल अरणी सोनापाठा कुम्भेर पाढल थेवृ त् पञ्चमूल ३-पुनर्नवा मुद्गपर्णी माषपर्णी बला एरण्ड की जड़ ये पुनर्नवादि पञ्चमूल हैं। ४-जीवक ऋषभक मेदा जीवन्ती सतावर यह जीवकादि पञ्च मूल हैं ५-सरपत की जड ईख कुश कांस शालिधान की जड यह तृण पञ्चमूला हैं सबको मिलाने से २५ औषधें हुई इनमें से प्रत्येक औषधों का दो दो पला लेवे और उत्तम हरड १००० तथा परिपक्व आमले १००० लेने चाहिये। क्रिया प्रथम उन सब क्राष्ट औषधिवों को दस गुने जलमें डाल क्वाथ करे जब पानी ६ हिस्सा जलकर १ भाग शेष रहे तो उसे उतार कर पवित्र वस्त्रसे छान लेवे पश्चात आंवला और हरड़ के गुठलियों को निकाल बारीक चूर्ण करलेवे फिर उसी क्वाथ में मिला लेवे पुनः उसी में ब्राह्मी, पीपल, शंख पुष्पी फेकरी मोथा, नागरमोथा, बायविडंग, रक्त चन्दन, अगर मुलेठी, हरदी, बच, कमलबीज, (धतूर) लाचेना, दालचीनी, इन सब को ४-४ पल लेकर चूर्ण कर मिला लेवे तथा १ मन १५ सेर मिसरी लेवे तैल २ आढ़क (८ सेर) श्री देशी ३ आढ़क इन सब को एकत्र कर मंद २ आंच से ताम्र के पात्र में पकावे, जब गाढ़ा हो जाय तो उतार कर ठंडाकर २॥ आढ़क उत्तम शहद मिला सबको एक मेल कर के १५ दिन इसी प्रकार रक्खा रहने देवे ततपश्चात् समय पर उचित मात्रा से प्रयोग में लावे, मात्रा ६ मासेसे ४ तो० तक है किंतु इसे खाकर ऊपर से धारोष्ण गो दुग्ध पीना चाहिये गुण तो लेख से बाह्य है।

उ० प्र० नं० ४४—पुरानी चमड़े की चलनी अथवा पुराना जूता लेकर जलाय देवे इसी का राख जब २ कांच बाहर निकले तब २ इसी राखको हाथ तथा कांच में लगाकर ऊपर को दबा दिया करे अवश्य अच्छा होगा।

उ० प्र० नं० ४३—मैं आपको असली ब्राह्मी दे सकता हूं।

उ० प्र० नं० ४५—धैर्य पतला होकर कीटाणु अवश्य नष्ट हो गये हैं मुझसे पत्र व्यवहार करें।

उ० प्र० नं० ४६—बावची का तैल अथवा बावची बीज और कवीला गोमूत्र में पीस के लेपकर दिया करें ठीक हो जावेगा।

उ० प्र० नं० ४७ आप ज्योतिष शास्त्र देखें तब मनोर्थ पूर्ण होगा बिना मेहनत से मेवा नहीं मिल सकता।

उ० प्र० नं० ४८—संस्कृत-श्योनाक अरलू शुगटुक, (हिंदी में-सोना पाढ़ा अरलू, टेंटू, बंग में शोना, सोनालु, मराठी में-टेटू, गुजराती में-अडुसो, मरमरुव, कर्णाटकी में-शोगा, शोडिलभर, तैलङ्गी में पेद्दाभानु, ओरिसी में-फस्मफणा, पंजाबी में-मुलेन, नैपाली में-करुमकन्द, तामिली में-पत्र, लैटिन में-ओरोक्सिलं इण्डिकम् आप को हर एक भाषाओं के नाम दिया, इसका वृक्ष नीम वृक्ष के समान

हुए ऊंचे २ होते हैं फली तलवार के आकार का १॥ डेढ़ या दो दो फुट लम्बी होती है भीतर रुई और काले रंगके दाने निकलते हैं यह प्रायः पहाड़ों तथा थोहीभी पाये जाते हैं १ प्रकार का और भी भयानक शिमला प्रांत के तरफ होता है जिसे कि वहां वाले 'टाट मंडला कहते हैं।

करील

संस्कृत-करीर
हिंदी-करील
बंगला- "
मराठी-मेवती
गुजराती-केर
कर्णाटकी-तिप्पातेगे
तैलङ्ग-कवाकुराक
अंग्रेजी-केपर
लैटिन-(केपरिस स्याइनोस्य)
फारसी-कबार

इसके वृक्ष मारवाड़ प्रांत में अधिक तर पाये जाते हैं डंडी नीले रंग की एवं फूल गुलाबी रंगका होता है फल फूल फागुण चैत्र में आते हैं पत्ते न होने के कारण वृक्ष में फूल ही फूल दिखाता है मथुरा आदि प्रांतों में इसे 'कचड़ा' कहा करते हैं-आपको यदि विशेष गुण देखना हो तथा अनेकों वनौषधियों को देखना हो तो कोई निघण्ट अवलोकन करें ऐसे काम नहीं चलेगा।

उ० प्र० नं० ४६—जसादर, कपूरदेशी किसी एक शीशी में रख छोड़े समय पर काम में लाये इन्हें यों ही सुंघाने से शिर दर्द हर प्रकार के दूर हो जाते हैं इसके अतिरिक्त मूर्छा, अपस्मार, किसी तरह से बेहोश हुए व्यक्तिको दो-दो रत्ती लेकर किसी तरह नाक के दोनों नथुनों में खूब जोरों से फूंक देवे तो चेतन्यता आ जाती है।

उ० प्र० नं० ५०—आपके लिये 'क्लीवताङ्क' में अनेकों योग प्रस्तुत हैं आप उसे देखकर मनभवित योग बना लें।

उ० प्र० नं० ५३-आप उस स्त्री को निम्नाङ्कित औषधियां देवें अवश्य लाभ होगा।

प्रातः अशोक घृत ६ मा० या १ तो० गो दुग्ध के साथ पिलावें दोपहरको अशोकारिष्ट १ तो० बराबर पानी युक्त पिलावे ४ बजे शाम को फल घृत ६ मा० से १ तो० तक रहे वें रातको सोते समय कपयनप्राशावलेह ६ मा० से १ तो० तक स्वर्ण वसन्त मालती १ रत्ती सितोपलादि चूर्ण १॥ मा० मिला कर वें ऊपर से पाव भर गो दुग्ध मिश्री युक्त पिलावें। मैं आशा करता हूं कि इससे अवश्य अच्छी हो जायगी क्योंकि मैं इन औषधियों से अनेकों लाभ उठा चुका हूं, हां बीच में कोई मुजिस देकर कोष्ट शुद्धि अवश्य कर लिया करें।

उ० प्र० नं० २८—आप के भाईके लड़के

इसे अवश्य करें यह योग मेरे पूज्य गुरुवर पं० शीतलाप्रसादजी के लाभसे योगमाला में प्रकाशित हो चुका है-सत्यिया का हरी हो तो से तैल निकालने की विधि से शुद्ध हलदी ८ तो० सत्यिया-शंखा हरताल जिसका तैल निकाला [illegible] हुआ तथा मैनसिल तथा गंधक का भी निकाला है) ४ तो० लेकर किसी १ बोतल में भरकर (जो कि कपड़ मिट्टी किया हो) बालुका गर्भ पाताल यन्त्र से तैल निकाल लेवे।

नोट—बोतल के मुंह में बारीक तार को हाथ से मल कर गोली सा बनाकर डाट लगा देवे जिससे दवाइयों का चूर्ण भी न गिरे एवं तैल गिरने में प्रति बंधक भी न हो-हलदी को दुगने गो दुग्धमें शाम को भिगा देवे प्रातः निकाल कर धूप में सुखा दिया करें इसी प्रकार सात दिन करने से हलदी तैल निकालने के योग्य शुष्क हो जाती हैं जो दूध सवेरे बाकी रहता है उसे पी भी सकते हैं, तैल गुण यह बहुत तीव्र होता है, यह हर प्रकार के कुष्ठों को भी शीघ्र लाभ करता है मंडल कुष्ठ गलित कुष्ठ के लिये तो अमृत ही है।

खाने के लिये १ सेर दूध से चुपोकर पाव में चुपड़ कर खावे यदि सत्यिया का तैल खाया जाय तो नपुंसकता दूर होती है तथा हरताल का खानेसे रक्त दोष एवं कुष्ठ पर लाभ दायक होता है यदि खाने के लिये तैल निकाले तो उसे शुद्ध कर लेना चाहिये। योग खाने के लिये-मजीठ, [illegible] नागकेसर, कासनी, खजूर खार, बेलगरीमोली, खोपरा चीनी, छुहारा [illegible], दाख, तो० अफीम, सनाय, मुलहठी के फूल आध आध पाव छोटी इलायची ५-५ तो० मुलेठी अफीम ५-५ ये सम्पूर्ण वस्तुओं को बारीक चूर्ण कर रख लेवे मात्रा ६ मा० प्रातः सायं उष्ण जलसे (मात्रा कम भी कर सकते हैं दो तीन मा० तक) और दूध पीने को यही दवा सेवन कराइये तथा उस तैल को लगवाइये आशा है १५ दिन रोग निर्मूल हो जायगा।

नोट—यदि किसी सज्जन को बालुका गर्भ पाताल यन्त्र न मालूम हो तो मुझे पत्र द्वारा बता दिया जायगा यदि तैल भी न बना सकें तो मैं बना बनाया दे सकता हूं मैं कई रोगियों पर परीक्षा कर चुका हूं अवश्य लाभ होगा।

भवदीय—शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा

ब० प्र० नं० ४६—शास्त्रोक्त 'वज्रक्षार' जल संग प्रातः सायं मात्रा बलानुसार सेवन करे भोजनोपरांत खदिरादि चूर्ण ३) भर ॥) भर शहद संग खावे सम्पूर्ण शरीर में शास्त्रोक्त बलावह तैलका मर्दन करावें कुछ समय नियम पूर्वक सेवन करने से सफलता के दर्शन अवश्य होंगे।

महावीरप्रसाद शर्मा वैद्य

एकडला

वैद्यवरों से प्रश्न

प्रश्न न० ६१—एक नया आविष्कार अपूर्व चमत्कारी दवा पीनेकी (मरा भूखा) सुन्दर सुझार मथुरा ने निकाला है जिस का गुण वे इस प्रकार लिखते हैं कि आप ने जितना पेट भर भोजन किया हो या कैसा ही गरिष्ठ भोजन खाया हो और भूख न लगती हो किन्तु (मरा भूखों की) एक खुराक दवा खाते ही थोड़ी देर बाद इस जोर की भूख लगती है कि क्षण भर भी रहना मुश्किल हो जाता है और मन्दाग्नि अजीर्ण का नाश हो जाता है यदि कोई महानुभाव इस तरह की हुकमी दवा जानते हों तो अगले अङ्क राकेश में बताने की कृपा करेंगे।

प्रश्न न० ६२—कोई महोदय पिपरमेंट का सत तथा अजवायन का सत का प्रयोग लिखने की दया करेंगे।

प० दुर्गाप्रसादजी मिश्र वैद्य रनेह

नोट—चूंकि यह द्वितीय वर्षका अन्तिम १२ वां अङ्क है अतः इसमें नियम के अनुसार प्रश्न नहीं छापे गये फिर भी परिशिष्टाङ्क के प्रकाशित होनेसे सिर्फ यह दो प्रश्न पहिले के आये हुए ही छापे जाते हैं अतः प्रश्नोत्तर दाताओंसे निवेदन है कि इस वर्ष के शेष सभी गताङ्कों के प्रश्नों के उत्तर शीघ्र भेजने की दया करें। —सम्पादक

प्रयोग परीक्षा फल

जुलाई अगस्त सन् १९२९ अङ्क ११-१२ सफा २५७ रोहों को नष्ट करनेवाली दवा अति उत्तम लाभ दायक है जिन महानुभावों के यह उत्तर हैं वे कृपाकर ऐसे ही सत्य सरल प्रयोग राकेश द्वारा भेजते रहने का कृपा करेंगे।

प० दुर्गाप्रसादजी मिश्र वैद्य रनेह

प्रशंसा पत्र

पाठक गौरीशङ्करजी वैद्य रमल शास्त्री सागर सी० पी० का 'राकेश' लिखित विज्ञापन बिलकुल सच्चा है मैंने आज तक ऐसा चमत्कारिक फलादेश देनेवाला कोई भी रमल शास्त्री नहीं देखा पाठकोंसे मैं अनुरोध करता हूं कि हर एक अपना अपना अभीष्ट भेज कर लाभ उठावें ऐसे रमल शास्त्री को धन्यवाद है।

नोट—राकेश के ग्राहकों को प्रश्न मुफ्त बतलाते हैं।

राजकिशोर बाजपेयी दौलतपुर

आपसी वार्तालाप

श्रीयुत् डा० पं० रामेश्वरप्रसादजी !

सादर वन्दे !

पं० जी क्षमा करेंगे, मेरे प्रश्न करने के दो कारण हैं—(१) मैंने परीक्षा वमन एवं विरेचन पर की किंतु कुछ प्रभाव न पड़ा इसी कारणवश पूछा था कि शायद क्रिया में कोई त्रुटि हुई हो, किंतु [illegible] केवल इतना ही फर्क था कि घोड़ेके [illegible] के बदले तार लिया गया था बालुका यन्त्र के बदले बालुका गर्भ पाताल यन्त्र से निकाला गया था और सब आप ही के तरीके पर किया गया था (२) मान लिया जाय कि योग्य विद्वान मात्रा अनुपान कर सकता है किंतु 'राकेश' का उद्देश्य है देश सेवा। तात्पर्य यह कि ऐसा योग न प्रकाशित हो जिसे कि योग्य विद्वान ही समझें यह तो इस प्रकार होना चाहिये कि जो व्यक्ति उसे देखे उसे ही ज्ञात हर वस्तु एवं हर तरह से हो जाना चाहिये कि क्या वस्तु है कैसे प्रयोग किया जाय तथा कौन गुण होना आदि।

भवदीय प० धरणीधर शर्मा

राकेश परिवर्तन

प्रिय सज्जनो !

निवेदन है कि आज दोवर्षसे 'राकेश' किस प्रकार आप लोगों की सेवा करते चला आ रहा है अस्तु अब अत्यन्त हर्ष का विषय है कि यह मासिक से पाक्षिक हो गया तथा बहुत कुछ परिवर्तन भी हो गया सम्पादकजी ने इसमें १ स्तम्भ और भी (पशु चिकित्सा) रखने की योजना की है अब हो सकता है कि 'स्वर्ण सुगन्ध' को भी स्थान मिलेगा क्योंकि इसका पूर्ण आयोजन था, अस्तु एक बात हमें और भी कहना है कि 'राकेश' में बहुत से व्यक्ति अपने लाभार्थ ख्याति के निमित्त अण्ड बण्ड भी योग प्रकाशित किया करते हैं। व्यर्थ को वैद्य समाज एवं 'राकेश' को कीर्ति पर धब्बा पहुंचाते हैं। उनके लिये एक कमेटी नियुक्त हो जाय जिसमें ७ से ११ तक व्यक्ति रहें जिनका नाम भी 'राकेश' में प्रकाशित होना उचित होगा इस कमेटी को उचित होगा कि जितने भी अनुभवसार एवं उत्तरादि प्रकाशित हों उसे यह परीक्षा किया करें और 'राकेश' में प्रकाशित करा देवे ऐसा करने से जो दोषारोपण 'राकेश' के प्रति पैदा होनेकी सम्भावना होती है वह नहीं होगा सदैव निष्कलंक रहेगा इसके लिये सम्पादकजी को

उचित है कि कुछ अवश्य विचार करें।

भवदीय—शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा

प्रिय सज्जनो!

जिस प्रकार 'राकेश' बिलकुल निर्भीक एवं निष्कपट रूप से आयुर्वेद एवं देशकी सेवा में तत्पर हुआ चला आ रहा है और आशा भी यही है कि यदि आप लोग इस पर कुछ सहानुभूति रखेंगे तो यह और भी विशेष रूप से सर्वाङ्ग परिपूर्णित होकर एकबार पुनः हम लोगों का एवं आयुर्वेद के महत्वों का पुनरुत्थान करेगा मेरा तात्पर्य यह है कि यदि आप लोग ग्राहक होते हुए भी एक एक दो दो ग्राहक और भी बढ़ाने की कोशिश करें जिससे कि यह हताश न होकर अपने उद्देश्य से कभी विचलित न हो अस्तु हेलो यहाँ उत्तर दाताओं से मैं यह पूछता हूँ कि वे पत्र देने में इतना आलस्य क्या करते हैं। मैं जहांतक ख्याल करता हूँ कि उन्हें इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं होता। क्यों ना! उस बेचारे रोगी के तरफ ध्यान कुछ ध्यान नहीं है लाचार्य! [illegible] आप दो [illegible] शब्द से [illegible] अब वैसे रोगी तरफ [illegible] झलकती है तब [illegible] होता है किंतु इधर तो हम लोग कुछ भी ध्यान न देकर वे फिक्र रहते हैं 'पत्र' उठाया इधर उधर देख कर रख दिया, जाओजी! कहां के रोगी कहां के हम, किंतु नहीं कभी ख्याल आता है तो २-१ उत्तर भी लिख देते हैं, अजीभाइयो! ऐसे कार्य नहीं संचालित हो सकेगा इधर आप लोगों को अवश्य ध्यान देना ही होगा, सम्पादकजी से भी मैं यही कहूंगा कि आप भी अवश्य इधर दृष्टि रखें। आशा है कि आपका तथा अन्यान्य सज्जनों का कुछ ध्यान अवश्य आकृष्ट होगा।

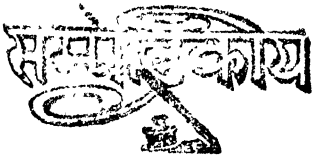
भवदीय—शास्त्री पं० धरणीधर शर्मा

सम्पादक महोदय एवं अन्य वैद्यवर ध्यान देने की कृपा करें

[illegible] पृष्ठ से ३८ में जो प्रश्न [illegible] ४५ के उत्तर [illegible] ने ने से ऐसा भूल से [illegible] है उसके बजाय ५-४५ होना चाहिये। पं० रामविशोरजी

२—[illegible] उपकारी उपहार राकेश के [illegible] सूची पृष्ठ पर छपा है वह [illegible] है मैंने [illegible] ३—[illegible] में लेखकों [illegible] के [illegible] उसके अन्तमें [illegible] था।

पं० राजकिशोर वाजपेयी



राकेश का वर्ष क्रम सुधार

पाठको ! सदा की भांति 'राकेश' का वर्ष सितम्बर से ही प्रारम्भ होता। परन्तु राकेश के प्रेमियों एवं ग्राहकों के बार बार लिखने पर कि 'राकेश' का वर्षारम्भ जनवरी मास से ही होकर पाक्षिक रूप से उदय हुआ करे। यह सम्मति अधिकांश में उचित समझ कर और लेख तथा प्रश्नोत्तरों के प्रकाशन में विलम्ब होने के कारण राकेश के पाक्षिक प्रकाशन का समय वर्ष क्रम सुधार करते हुए आगामी जनवरी मास से ही निर्धारित किया गया है।

अब चूंकि द्वितीय वर्ष तो ३१ अगस्त को ही समाप्त हो चुका है। जनवरी वाली तृतीय वर्ष आरम्भ तक अभी ४ अंक शेष हैं इन मासों में राकेश सितम्बर अक्टूबर का "परिशिष्टांक" रूप में शेष लेख व प्रश्नों सहित उदय होगा। और नवम्बर दिसम्बर का राकेश का विशेषांक 'प्लवांक' उदय होगा। जो कि आधुनिकीय पत्र संसार में प्रथम गण्य होगा।

उपरोक्त परिशिष्टांक द्वितीय वर्ष के ग्राहक महानुभावों को प्रसन्नता पूर्वक मुफ्त ही दिया जावेगा। किंतु 'प्लवांक' और योगीश्वर (पुष्पमेह विज्ञान) १५ अक्टूबर तक नवीन ग्राहकों को तृतीय वर्ष के लिये चन्दा आ जाने पर और पुराने ग्राहकों का तृतीय वर्ष का चन्दा आ जाने या पत्र द्वारा वी० पी० स्वीकारी का वचन आ जाने पर दिये जावेंगे

अस्तु १५ अक्टूबर की अवधि के बाद हम उपहार एवं प्लवांक देने में असमर्थ हैं। हम अवधि के बाद यदि ग्राहक महानुभाव उपहार और प्लवांक चाहेंगे तो उनकी आज्ञा पालन में हम विवश होंगे।

ध्यान रहे कि यह १५ अक्टूबर सन् ३० तक जो चन्दा आपका तृतीय वर्ष के लिये आ चुका है और आयेगा वह जनवरी सन् ३१ से शुरू समझा जावेगा और 'परिशिष्टांक' व 'प्लवांक' मुफ्त दी दिये जावेंगे।

पाठकों के समक्ष यह और निवेदन करना उचित है कि उपहार का ग्रन्थ २००० ही देना तीसरे वर्ष के ग्राहकों को निश्चय किया गया है। जिसमें करीब ५०० ग्राहक महानुभावों का चन्दा तृतीय वर्ष के लिये आ चुका है इसलिये शीघ्र ही चन्दा भेज कर तृतीय वर्ष की ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाकर उपहार का ग्रन्थ और प्लीहाङ्क सहित वर्ष भर 'राकेश' पाक्षिक लीजिये।

इस प्रकार जितना 'राकेश' का चन्दा है उतनी ही कीमत के बाकी २) का उपहार तथा १) प्लीहाङ्क मुफ्त ही मिल जायगा। और वर्ष भर 'राकेश' नियमित रूप से सेवा करेगा। आशा है कि इतना व्यय भार सहता हुआ। 'राकेश' जब आपकी सेवा करने को तत्पर है तो आप भी इस शिशु 'राकेश' को हृदय से अपनाकर सेवा कराते हुए। आयुर्वेद प्रचार में दृढ़ प्रतिज्ञ बना सहायक एवं पथ प्रदर्शक होंगे।

गणेश दातव्य औषधालय

(तोतला पो० हैदरगढ़) बाराबंकी में यह दातव्य औषधालय श्रीयुत पं० रामेश्वरप्रसादजी त्रिवेदी के प्रबन्ध से वहाँ की जनता की अपेक्षित सेवा कर रहा है। इसका कार्यक्षेत्र प्रति वर्ष उन्नति कर रहा है इस औषधालय को राजकीय सहायता १५०) रु० वार्षिक मिलती रही है।

खेद का विषय है कि इस वर्ष इसकी उन्नति के क्रम में सहायता घटाकर १००) रु० ही रक्खी गई है। यदि इस कमी करने का कोई कारण या त्रुटि न हो तो हम आदर पूर्वक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बाराबंकी का ध्यान इस दातव्य औषधालय की ओर आकर्षित करते हुए निवेदन करते हैं कि जो संस्था भली भाँति उत्साह पूर्वक काम कर रही है उसे जो राजकीय सहायता दे रहे हैं उसमें हानि न करें।

प्रश्नों में धृष्टता

प्रश्नकर्ता सज्जनों को आवश्यक विवरण संक्षेप रूप में प्रगट किया जाय उसके भाव के सहित प्रश्न होना चाहिये यदि कोई सज्जन अनेक प्रश्न हों उन प्रश्नों के साथ प्रश्नकर्ता सज्जन यदि अपना नाम देना उचित समझें तो पोस्ट कार्ड लिखकर दे दिया करें किंतु अपने घृणित रोग के प्रश्न को अन्य भले मानुष के नाम से देना बहुत ही बुरा और असभ्यता का द्योतक है 'राकेश' के गत वर्ष के अंक ६-१० में ग्राम खजौरी सिंहजी के एक प्रश्न सज्जनता के विरुद्ध अपना नाम न देकर [illegible] औजास्तंभ मु० देकर पो० मेहगाव ग्वालियर स्टेट के नाम से छपा दिया है सावधान ! यह शिकायत बिल्कुल ही नहीं है ठाकुर साहब को चाहिये कि भविष्य में ध्यान में रखें॥

सम्पादक



समस्त आयुर्वेदीय शिक्षा संस्थाओं के संचालकों को सूचना दी जाती है कि यह वर्ष अखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन कानपुर के संविधान के अनुसार सम्मेलन की परीक्षा संचालन, आयुर्वेदीय शिक्षालयों की एक सूत्र वैद्य करने का योजना है विद्यालय करना है अतएव इस उद्देश्य से आवश्यक है कि कृपया निम्न लिखित प्रश्नों के समाधान सहित शीघ्रातिशीघ्र ही विद्यालय की नियमावली तथा आर्थिक विवरण प्रधान मन्त्री अखिल भा० आयुर्वेद महासम्मेलन कानपुर के पते से शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

प्रश्न

१—विद्यालय किसके द्वारा कब स्थापित हुआ।

२—अध्ययन अध्यापन किस शैली पर प्रचलित है?

३—कौन कौन सी परीक्षायें होती हैं विद्यालय का सम्बन्ध किसी आयुर्वेद

४—पाठ्य क्रम क्या है?

५—विद्यालय के पास कोई मकान होगा है? विवरण है?

६—विद्यालय के कार्य संचालनार्थ कौन कौन से विभाग हैं?

७—क्या सरकार से भी कोई सहायता मिलती है?

विद्यालय में कितने छात्रोंके पढ़ाने का प्रबन्ध है? विद्यानारायण मिश्र प्रधान मन्त्री

प्रधान मन्त्रीका त्यागपत्र

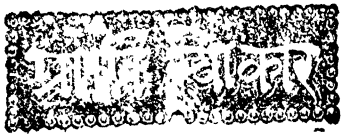
पं० शालिग्रामजी वैद्य एलवेद्यने २० वें वैद्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्रीपद का त्यागपत्र स्वागत समिति को भेजा उसके ऊपर स्वागत समिति एकत्रित हुई विचार कर त्यागपत्र स्वीकृत किया और उस पद पर संयुक्त मन्त्री प० छोटालाल विश्वनाथ पंड्या को प्रधान मन्त्री पद पर निर्वाचित किया।

सुखरामदास दीक्षा स्वागताध्यक्ष

पत्र छपते २ सूचना मिली कि कानपुर के अनुभवी प्रसिद्ध वैद्य तथा हकिमवर्य [illegible] श्रीयुत [illegible]

कन्हैयालालजी जैन वर्तमान राष्ट्र व्यापी स्वराज्य आंदोलन के पुण्य कार्यमें वीरता पूर्वक सरकार की दमन नीति के शिकार हो गिरफ्तार कर लिये गये हम बैद्य मित्र भाई के नाते हकीमजी के आहवान को

देते हैं और वैद्य समाज से प्रार्थना करते हैं कि वह थोड़े में अधिक समझ विदेशी वस्त्रों के साथ ही साथ विदेशी औषधियों के बहिष्कार में हाथ बटावें ॥



पारीक—साइज डिमाई, छपाई सफाई उत्तम सम्पादक व प्रकाशक श्री यशोदानन्दनाचार्य धूधूवाला मथुरा वार्षिक मूल्य २।) नमूना मुफ्त।

यह अखिल भारतवर्षीय पारीक महासभा का मुख पत्र है। पारीक ज्ञाति भाइयों को अवश्य देखना चाहिये।

आयुर्वेद सर्वस्व द्वितीय खण्ड—साइज डबल क्राउन १६ पेजी छपाई सफाई उत्तम संग्रहकर्ता पं० मटधरलाल जी चतुर्वेदी प्रजा वैद्य, मू० १)

इस पुस्तक में चतुर्वेदीजी ने विशेष योग्यता के साथ धातु, उपधातु, रस, उपरस, रत्न उपरत्न, क्षार, लवण, और बहुमूल्य पाषाणों का वर्णन भली भांति किया है। वास्तव में पुस्तक विशेष उत्तम है। हर एक वैद्य और आयुर्वेद प्रेमीको देखना चाहिये। पता मटधरलालजी चतुर्वेदी वृजविहारी औषधालय (मथुरा) से प्राप्त होगी।

फेफड़ों की परीक्षा तथा उसके रोग—लेखक क० शिवशर्माजी वर्मा भि० धन्वन्तरि पृष्ठ संख्या लगभग १८० छपाई सफाई उत्तम मू० १॥)

इस पुस्तक में फेफड़ों की परीक्षा सम्बन्धी विषय बड़ी ही उत्तमता से दिखाया गया है। यथा स्थान विषय को सुगम करने के लिये चरक सुश्रुतादि संहिताओं के प्रमाण भी दिये हैं। लेखक महोदयने एक बड़ी भारी कमीको पूरा करते हुए अपनी वास्तविक योग्यता को प्रकट किया है। प्रत्येक वैद्य एवं वैद्य विद्यार्थी को पढ़ना चाहिये। उपरोक्त पुस्तक आचार्य धन्वन्तरि मंडल फगवाड़ा से प्राप्त होती है।

क्लीवताङ्क

'राकेश' द्वितीय वर्ष का ८ वां उदय क्लीवताङ्क रूप में प्रकाशित हुआ है जिस में अनेक अनुभवी विद्वानों के क्लीवत्व रोगपर अन्वेषण पूर्ण लेख व नपुंसकता, स्वप्नप्रमेह नाशक अनेक पेटेण्ट अनुभूत योग तथा विद्वान वैद्यों और लेखकों के चित्रपूर्ण शिक्षाप्रद कार्टून दिये गये हैं। यह विशेषाङ्क हर एक व्यक्ति को देखने योग्य है। इस अङ्क का मूल्य १) रु०

'राकेश' क्लीवताङ्क के विषय में कुछ सुप्रसिद्ध पत्र एवं विद्वानों की सम्मतियां

मुरादाबाद का सुप्रसिद्ध आयुर्वेदीय मासिक पत्र 'वैद्य' १७ वें वर्ष की ४ थी संख्या में लिखता है कि—

बरालोकपुर (इटावा) से निकलने वाले सहयोगी 'राकेश' ने अपना विशेषाङ्क क्लीवताङ्क के नाम से विशेष समारोह के साथ निकाला है। राकेश का वार्षिक मूल्य २) रु० इस अङ्क का का मूल्य ज्ञात नहीं। सम्पादक और प्रकाशक वैद्यराज पं० रूपेनारायणजी शास्त्री। इस समय इस देश में क्लीवता, (नपुंसकता) धातु क्षीणता आदि रोगों की बाढ़ सी आ रही है, जिधर देखिये उधर ही ऐसे रोगों का नाम सुन पड़ता है प्रायः सभी समाचारपत्रों के मुख्य स्तम्भ ऐसे ही रोगों की दवाओं के बड़े बड़े विज्ञापनों से घिरे रहते हैं। जिनको देखने से यही प्रतीत होता है कि मानों सारा भारत आज पुरुषत्वहीन हो गया है। जो हो इस प्रकार के रोगों की वृद्धि का होना बड़े ही लज्जा का विषय है। क्लीवता के सम्बन्ध में अब तक कई स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं और वैद्यक पत्रों में कितने ही निबन्ध भी प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु प्रस्तुत अङ्क में उक्त रोग और उसकी औषधियों का बड़े अच्छे ढङ्ग से विवेचन किया गया है, उक्त रोग के उत्पन्न होने के विस्तृत कारण लक्षण और उसकी सरल योगों के द्वारा चिकित्सा लिखी गई है, इस रोग के कारणों में आजकल की शिक्षा प्रणाली का अच्छा खाका खींचा गया है। अङ्क उपयोगी हुआ है। जो लोग ऐसे रोगों की विज्ञापनी औषधियों के लिये सैकड़ों रुपये बरबाद करते हैं उनको यह अङ्क मंगाकर अवश्य पढ़ना चाहिये।

कराँची का मासी आयुर्वेदिक हिन्दी गुजराती मासिक पत्र सन् ३० की संख्या ५ व ६ में लिखता है कि—

कलीबताङ्क—इलाहाबाद से निकलनेवाले प्रसिद्ध राकेश पत्र का कलीबताङ्क नाम से प्रकाशित हुआ है।

इस अङ्क का विषय स्वप्नभंग यानी नपुंसकता व स्वप्नता से है। आजकल ब्रह्मचर्य के अभाव से, और इस मैथुन व अनिच्छा सृजन के परिणामसे युवक समाज में इस दुष्ट रोग ने जो कब्जा किया है उसको दूर करने के लिये सरल उपाय बताये हैं। ऐसे अनेक अङ्क निकालने की आवश्यकता है।

इस अङ्क में विद्वानों के कलमतोड़ लेख तथा उच्च कोटि के लेख तथा अनुभवी प्रयोगों का समावेश है। इसमें रोगोत्पत्ति कारण तथा उसके दूर करने के उपाय भली भांति बताये गये हैं।

आजकल का शिक्षक समाज से जो बुरा आक्षेप होता है उसका भलीभांति निराकरण किया गया है। इसके सिवा बहुत विषय के समझाने को कई एक लेखों के चित्र प्रकाशित हैं॥

* * * * * *

आयुर्वेद-[illegible] अधिष्ठाता श्रीयुत पण्डित अम्बिकादत्तजी शिवा, वैद्यशास्त्री हसतीर निवासी लिखते हैं—

जब कलीब[illegible] मेरे समक्ष आया तो स्वयं आश्चर्य में आ गया क्योंकि इस के सम्पादन में मुझे कई बातें नवीन मिलीं जो अभी तक किसी वैद्यक पत्रके विशेषाङ्क में नहीं हैं।

राकेश का यह विशेषाङ्क बहुत सफल हुआ है वैसे तो इसमें प्रसिद्ध अनुभवी वैद्यों के लेख हैं। लेखों से कहीं अधिक साधारण जनता को समझाने के लिये कार्टून सिद्ध होंगे उन कार्टूनों को साधारण मनुष्य भी कुटेवोंका दुष्परिणाम देखकर उन पाप-मय आदतों को छोड़ देंगे और वह पापमय अन्धकार से सदा के लिये मुक्त हो जायेंगे।

जो वैद्यक के विद्यार्थी अनुभूत योगों के लिये वैद्यों के पास १-१ वर्ष लगा देते हैं पर फिर भी उन विशेष योगों को प्राप्त नहीं कर सकते उनके लिये यह कलीबताङ्क बड़ी अमूल्य वस्तु है।

इस विशेषाङ्क में चार प्रसिद्ध लेखकों की तसवीरें तथा छः शिक्षा देनेवाले कार्टून हैं जिन्हों ने विशेषाङ्क की महत्ता बढ़ा दी है। और प्रहसन बहुत अच्छा

मेदो रोग की 'एकअजब बूटी'

[प्रो० रामप्रसाद बघेल महाशयपुर (पटना)]

सेठ रामलिंगमल चक्करपुर के एक बड़े भारी रईस हैं करोड़ों की आपकी जायदाद चारों तरफ फैली हुई है आपके कई गांव कई जेल कई मौजे और कारखाने हैं, आप हमेशा लाख २ रु० का [illegible] में मशगूल रहते हैं [illegible]

[illegible]

[illegible] वर्ष की उम्र में [illegible] शाली मनुष्य के नाम [illegible] छपा ही क्या है? नित्य कसरत, मालिश, जलधी, धोबन, फेंटी, मांसी खूरके मलना इत्यादि कतिपय कसरतों का अभ्यास होना है समेर और लाखकाजके खाथ बदामी हलुवा, खरबूजेकी, पाक तथा केसरिया सर्बत आदि नाना प्रकार के मर्बत एवं अवलेहादि आफिस वैद्यजनों के द्वारा बनवाकर आप सेवन किया करते हैं॥

व्यायाम के नाम से आप को बड़ी चिढ़ है। आप में एक स्थानसे दूसरे स्थान में जाना भी आप को नहीं भाता, पेशाब और टट्टी को जाना मानों बड़े पहाड़ का उठाना है। आप की क्षुधा मन्द मानों जर्मी है अजीर्ण की बढ़ती हो जाती है यह एक बड़ा विशेष बात है। शरीर स्थूल होते जा रहा है अब कुछ दिनोंमें ये एक हाथी के ही समान दिखलाई देने हैं किंतु नाथी के सदृश शक्ति उनमें नहीं इसके समय उनके अतल कूल-विलम्ब प्रदेश आदि [illegible] अंगों में अधिकतासे एक २ [illegible] नीचे पेट से सिरने [illegible] आप को [illegible] बड़ा करता है [illegible] आपको चैन [illegible]

[illegible] का अजब रुखाल [illegible] सब आपको भूख अन्न खाती है तब आप बद्यों से लोगवाकर सेवन कर लिया करते हैं पुत्र संतती आप के नहीं है आपकी स्त्री हमेशा परेशान रहती है कई फकीर पीर और दरगाहों का पूजा उसने की है कई तावीजों और गण्डों को उसने अपने गले और हाथों में बांध रक्खा है किंतु इन पीर पैगम्बरों और तावीजों से क्या हो सकता है जब कि सेठ जी स्त्री प्रसंग में बिलकुल असमर्थ एवं असक्त हैं, इस प्रकार ऐश आराम की वृद्धि के साथ ही साथ सेठजी की कमर व शरीर तो इस कदर ही बेडब

बढ़ गया है, सेठजी को स्वयं शरीर का बोझ अत्यन्त भारी हो गया है वस्त्र नहीं कर सकते उसके लिये भी एक नौकर रखना पड़ा है।

हाथ धुलाने के लिये, स्नान कराने के लिये तथा एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिये भी नौकर रक्खे गये हैं॥ मेदा वा चर्बी तमाम शरीर में खूब बढ़ गई है इस मेदा रोग के समनार्थ नाना प्रकार की औषधियां भी सेवन कराई जाती हैं किंतु उचित पथ्य के अभाव से सब व्यर्थ हो जाती हैं, वैद्य अपनी २ बड़ाई भर कर सेठजी से खूब द्रव्य सम्पादन करते हैं, कई वैद्य मालामाल हो गये किंतु जो कम्बख्त वैद्य कुछ भी पथ्य बताता है उसे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलती, अब सेठजी ने बहुत ही मस्त होकर सदुभाग्य से काशी सवनका विचार किया बड़ी मुश्किल से किसी प्रकार रेल के फर्स्ट क्लास में सवार होकर आपका सवारी काशीजी में आई मानो काशी वासी पराड़े पंडितों और ज्योतिषियों की दिवाली आई, बड़े मारू पेट वाले ऐश आराम युक्त नौकर चाकरों से घिरे हुए सेठजी को देख कर सर्व प्रथम सब पराड़ो ने उन्हें घेर लिया बड़ी कठिनाई से सेठजी के मुनीम ने एक पराड़ेको ठीक कर सेठजी तथा सब सामान को लाद फांद कर उक्त पराड़े के मकान में डेरा डाला, दूसरे ही दिन काशीके तमाम बड़े २ वैद्य बुलाये गये सेठजी के रोगकी चर्चा शुरू हुई अन्तमें काशीके नामांकित वैद्यने कड़क कर कहा—

"यह स्पष्ट मेदो रोग की पूर्णावस्था है और माधवकरजी का स्पष्ट कथन है कि—

मेदस्यातीव संवृद्धो सहसैवा निलादयः।
विकारान्दारुणान्कृत्वा नाशयन्त्याशुजीवितं॥

अर्थात् मेद के अत्यन्त बढ़ जाने से बड़े भयंकर वातादि विकार उत्पन्न होकर रोगी का अन्त शीघ्र ही कर देते हैं।

(क्रमशः)

व्यायाम मासिक पत्र

कुश्ती लाठी वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देनेवाला हिंदी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य ४)

पता—व्यायाम कार्यालय राजपुर बड़ौदा

कौन ऐसा है जिसे फायदा नहीं हुआ

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयां

सुधासिंधु

कफ, खांसी, हैजा, दमा, शूल, सरदर्द, अनिद्रा, पेट दर्द के, दस्त जाड़े का बुखार, (इन्फलुएञ्जा) बालकों के हरे पीले दस्त और पेस की पाकाशय की ० इनसे उत्पन्न होनेवाले रोगोंकी एकमात्र दवा है इसके सेवनमें किसी अनुपान की जरूरत न होने से मुख्तारकारी से लोग इसे ही साथ रखते हैं कीमत ॥) आना सब दवा बेचनेवालों के पास मिलता है डाक० स० १ से २ के ८)

बाल सुधा

बच्चों के [illegible] के लिये सुख संचारक कम्पनी मथुरा का मास्टर [illegible] बाल सुधा' [illegible] सब दुकानदारों के पास मिलता है कीमत ॥) डाक० खर्च [illegible]

दृष्टि उत्तेजकगुटी

यदि संसार में बिना [illegible] के दोष को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है [illegible] को [illegible] इसे रोज सबेरे लगाने से अच्छा होता है कीमत शीशी ।) आना [illegible] डाक खर्च [illegible]

ब्रह्मचारी

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाला [illegible] कमजोरी, कमजोरी [illegible] नींद न आना दूर करता है बुढ़ापे के [illegible] [illegible] से [illegible] पीने में मीठा स्वादिष्ट है कीमत तोला दूध की बोतल [illegible] डाक खर्च बड़ी १।) छोटी के ॥≡)

धोखे से सकती हुई [illegible]

मंगाने का पता—सुखसंचारक, कम्पनी मथुरा

परिशिष्टाङ्क के लिये

राकेश के लेखकों से प्रार्थना

लेखक महानुभावों से सादर प्रार्थना है कि वह इस सूचना को पढ़ते ही तिलीय वर्ष के गतांकों के शेष लेख जो कि क्रमशः प्रकाशित हो चुके हैं पूर्ण कर ३० सितम्बर तक भेजने की कृपा करें साथ ही प्रश्नोत्तर द्वारा भी अपने २ अनुभवी उत्तर शेष प्रश्नों के लिख भेजें कारण कि अगला अङ्क तो परिशिष्टाङ्क होगा उसमें सभी शेष विषय पूर्ण का वर्ष समाप्ति के नियम का पालन करना होगा। इस वर्ष के उत्तरार्थ

शेष प्रश्न नं० ३०-३३-३५-३६-३८-४०-४६-५४-५६ ५८-६०-६१-६२

प्लीहाङ्क और स्वर्ण पदक

सम्वत्सर में प्रकाशित होनेवाले राकेश के विशेषाङ्क "प्लीहाङ्क" के लिये आगामी ३१ अक्टूबर तक जो लेखक महोदय अन्वेषण पूर्ण अनुभवी सर्वोत्तम लेख भेजेंगे उन को सादर स्वर्ण पदक भेंट किया जायेगा।

सूचना

हम अपने पुराने राकेश के ग्राहकों से यह भी निवेदन करना ठीक समझते हैं कि जो महानुभाव राकेश के तीसरे वर्ष में ग्राहक किसी कारणवश न रहना चाहें वह पत्र द्वारा सूचित कर दें ताकि कार्यालय को वी० पी० भेज व्यर्थ हानि टिकट आदि की न उठानी पड़े। शेष पुराने ग्राहकों को जिनका चन्दा मनीआर्डर से नहीं आयेगा। उनको परिशिष्टाङ्क उपहार सहित ३) की वी० पी० से भेजा जायेगा। उन महानुभावों का यह चन्दे का रुपया जनवरी सन ३१ में आया समझा जायगा। इस प्रकार चन्दा आ जानेपर सभी ग्राहक अनुग्राहक महानुभाव प्लीहाङ्क तथा उपहार पाने के हकदार होते हुए सन १९३१ के सम्पूर्ण वर्ष के ग्राहक समझे जावेंगे।

—मैनेजर

* ॐ *

राकेश

आयुर्वेदीय सचित्र पाक्षिक पत्र

* विषय—सूची *

अभिलाषा	श्री धरणीधर शर्मा राजवैद्य	१
विचित्र रत्नबाला है'	श्री रामकर्ण शर्मा जमुआ	२
संग्रहणी (रोग विज्ञान)	श्रीधरणीधर शर्मा	३-१६
मू फटा खूब खाया करो	श्री प्रो० रामकृष्णजी वर्मा	१७-१९
अनुभवसार		२०-२३
नन्मधारी वैद्यराज		२३
अनुभव सिद्ध योग और—		
भारतीय वैद्यों की अनुदारता	श्रीवीरेन्द्रसिंह वर्मा	२६
वैद्यवर्गों के उत्तर		२७-३२
आपसी वार्तालाप		३३-३५
भगवान धन्वन्तरिका दिव्य दर्शन "प्रेमी इन्द्र"		३६-३७
प्रयोग परीक्षा फल		३८-३९
वैद्य संसार समाचार		४०
सम्पादकीय (द्वितीय वर्ष समाप्ति और भावी प्रो०		४१-४३
मनोरंजन		४४-४५

श्रियं सदयाद्भवतां पुरारियद्दृनेत्रजः प्रसरं भवानी ।

विराजते निर्मल चन्द्रकायां मद्दौषधीवज्रविवाहिमाद्रौ ॥

सम्पादक—द्विवेदि पं० रूपेन्द्रनाथ शास्त्री

वार्षिक मूल्य ३) सि० अक्टूबर सन् ३० विदेशवालों से ४)

पाक्षिक राकेश के नियम

१—राकेश का वर्षारम्भ प्रत्येक अंग्रेजी वर्ष के जनवरी मास से प्रारम्भ होता है।

२—राकेश प्रत्येक मास की १५ वीं व ३१ ता० को प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य ३) रु० है।

३—ग्राहक होनेवाले सज्जन अपना पता साफ अक्षरों में लिखें।

४—जिनके पास पत्र लिखित ता० के १० दिन बाद तक न पहुंचे वह आफिस से उत्तर लेकर सूचना दें।

५—पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें।

६—ग्राहकों से मासिक राशियों का एक अंश मुफ्त होगा। अधिक दूसरे के लिये प्रति अंक ।) लगेगा।

लेखकों के प्रति

१—पत्र तथा पुस्तकें समालोचनार्थ जो आवें वह ग्राहक के नाम आवें।

२ आङ्गिल चिकित्सा सम्बन्धी लेख प्रायः प्रकाशित नहीं हो सकेंगे।

३ आयुर्वेदीय सम्बन्धी वैज्ञानिक आवश्यक पूर्ण लेखों को पत्र में प्रथम स्थान मिलेगा।

४ श्रेष्ठ लेखों पर [illegible]

५ लेखों के [illegible] का [illegible]

६ प्रयोग प्रकाशित [illegible] प्रयोग हो जाने के [illegible] प्रयोग नहीं प्रकाशित होंगे।

१०३ पृष्ठों में आला ! रंग से निराला !! मनोहर चित्र वाला !!!

राकेश का विशेषाङ्क

'पत्नीङ्क'

आगामी १५ दिसम्बर को अनेकानेक नेत्र रंजक विपुल अन्वेषणा पूर्ण लेखों तथा चित्रों से समन्वित हुआ हा मनोहर चित्तावर्षक, प्रहसन योग नाशक साधनों एवं अनेक सिद्ध रामबाण प्रयोगों का विशाल संग्रह लेकर प्रहसन योग [illegible] हुआ उदय होगा। इस अङ्क का मूल्य १) होगा। परन्तु 'राकेश' के ता० १ वर्ष के ग्राहकों को मुफ्त ही दिया जायगा।

नोट—इस विशेषाङ्क में प्रत्येक सर्वोत्तम अन्वेषणा पूर्ण व रंजक लेखक को स्वर्ण पदक भी दिया जावेगा।

मैनेजर—राकेश आफिस

कराला कपूर, इटावा [illegible]



हैं हार जाते अन्य देशी वैद्यवर जिस रोग से।
हम भस्म करते हैं उसे बस भस्म के ही योग से॥

राकेश परिशिष्टाङ्क द्वय

अभिलाषा

ग्रीष्मे तुल्य गुड़ां सुसैंधवयुतां मेघा घनद्धाम्बरे।
तुल्या शर्करया शरद्यमलया शुंठ्या तुषारा गमे॥
पिपल्याम् शिशिरे वसंत समये क्षौद्रेण संयोज्यताम्।
ब्रह्मन् * प्राप्य हरीतकी मिवरुजो नश्यन्तु ते शत्रवः॥

* सम्पादकम्

धरणीधर शर्मा शास्त्रि २। प्रवेश

विचित्र रखवाला है

[लेखकः—श्रीयुत रामकर्ण शर्मा, सरस्वती औषधालय जमुआ]

(१)

अमृत खजाने ले सजित कुसुमासन पै,
बैठि शांति बाला ईश चन्द्र महिपाल है।
उषाकुल प्रेषित रोग दीन हीन भाख पै,
कृपाकोर करके प्रकाश एक डाला है॥
सोई राकेश हो विराजो बरालोकपुर में,
आयुर्वेद पथन में सबसे निराला है।
आवो राकेश कहँ उमंग भरो पूजें सब,
हिंदू हिंदी हिन्दका विचित्र रखवाला है॥

(२)

भव्यज्योतिबाला पूर्णचन्द्रसो वितानताने
डारो बरालोकपुर अपनो विसाला है।
श्रेष्ठ वैद्य विद्या विज्ञानिक बनायेउ सैन्य,
लेखके सुधार तें बनायो नीतिशाला है॥
लहरें हिलोरें दल्यो भारतके दसों दिशि,
विषु तसो व्यापो अहो धन्य प्रभावाला है
आवो राकेश कहँ उमंग भरो पूजें सब
हिंदू हिंदी हिंदका विचित्र रखवाला है॥

(३)

आदि काल ही से उपकारता को ध्येय मानि,
सुरचोला प्रसन्न चित्त धीर अली बाला है।
क्लीवतांक विशेषाङ्क किरणे विकाश कीन्हे।
रूप देख देश मयो अकथ निहाला है॥
अल्प मूल्य बाला योग लोगन सुपास दीन्हे,
कठिन कुरोगन को निकस्यो विषाला है।
आयो 'राकेश' कहँ उमङ्ग भरो पूजें सब,
हिंदू हिंदी हिंद को विचित्र रखवाला है॥

(४)

नूतन स्वरूप अरु नये नियमावली में,
वशुधीर सुनिवे को आवसु दे डाला है।
देश समाचारके प्रकाशको उठायोभार
चित्र देवे वूटियोंके शर्त लिखडाला है॥
'पृथमेह विज्ञान' दीन्हेउ उपहार सबै,
कोई इस देशमें न देखो दानवाला है।
आवो राकेश कहँ उमंगभरो पूजें सब,
हिंदू हिंदी हिंदका विचित्र रखवाला है॥

(५)

लेखक सुदृढ़ आदेशक पूर्ण सर्वोत्तम,
भेस्यो लेख लिख एक एकनते आला है।
आयुर्वेद शास्त्रके वैज्ञानिक लिखकड़ोंको,
पुरस्कार स्वर्ण पदक देत झांझिवाला है॥
'रामकर्ण' दृष्टि दौराय देख्यो चारों ओर,
कोऊ ना दिखायो जाको उपजो कसाला है।
आवो राकेश कहँ उमंग भरो पूजें सब,
हिंदू हिंदी हिंदका विचित्र रखवाला है॥

रोग विज्ञान

संग्रहणी

[ले०—शास्त्री पं० परमेश्वर शर्मा]

(गताङ्क ९-१० से आगे)

सज्जनो ! मैं कई कारण वश पूर्ण रूपसे लेखको नहीं लिख सका और अब वह वर्ष भी समाप्त हो गया अतः मेरी अभिलाषा है कि मैं इस लेख को विस्तृत न लिखकर संक्षेप ही में इसी वर्ष में समाप्त कर दूं, तात्पर्य यह कि निदानादि को पूर्ण नहीं लिखूंगा केवल चिकित्सा ही पर ध्यान देना है यदि निदानादि विशेष देखना चाहें वे "माधव निदानादि" ग्रन्थों को अवलोकन करें किंतु किंचित अवश्य ही लिखूंगा।

रूप एवं उपद्रव

उपरोक्त पूर्व रूप के अतिरिक्त जब वह पूर्ण रूप में हो जाती है तब निम्नोक्त लक्षण और भी हो जाते हैं मुख स्वाद हीन एवं शोथ रहे बहुत देर में कड़ी डकारें आना, भ्रम पेट तन जाना, वमन, कानमें शब्द, देह तथा मुख से धूएं से निकलना, तमक श्वांस, ज्वर, मूर्छा, मस्तक पीड़ा, अकठा, हाथ पांव पर शोथ, संधियों में दर्द, चित्त लोलुपता, तृषा, आदि लक्षण होते हैं यद्यपि ये तो रूप किंतु यह सब उपद्रव में गणना है।

संप्राप्तिः

वातज ग्रहणी में गुदा, हृदय, पार्श्व, पेट, शिर इन स्थानों में दर्द तथा कभी कच्चा कभी पक्का अथवा कुछ पक्का कुछ कच्चा मल निकलता है तथा पित्तज में उपरोक्त स्थानों में दाह रहता है तथा पका हुआ मल निकलता है एवं कफज ग्रहणी में इन्हीं स्थानों में भारीपन और सदा आम (कच्चा ही भोजन निकल देती है और त्रिदोषज में उपरोक्त तीनों के चिह्न पाये जाते हैं तथा जिस दोष की ग्रहणी होती है उसी दोषानुसार मल, मूत्र, नेत्र एवं मुख का वर्ण (रंग) हो जाता है जिसे यह रोग होता है उस व्यक्ति को हृद्रोग, पांडु, उदररोग, शूल

अर्श, इत्यादि रोगों के उत्पन्न हो जानेकी सम्भावना रहती है।

संग्रहणी आम वातज के लक्षण

द्रवं शीतं घनं स्निग्धं सकटीवेदनाशकृत्। आमं बहु सपिच्छित्वं सशब्दं मन्द वेदनम्॥ पक्वाम्माशो दशाहाद्वा नित्य वाप्यर्थ मुञ्चति अन्त्रकूजनमाल्स्यं दौर्बल्यं सदनं भवति॥ दिवा प्रकोपो भवति रात्रौ शांति व्रजेच्चसा दुर्विज्ञेया दुश्चिकित्स्या चिरकालानुबधिनी सामवेदनवातेन सग्रह ग्रहणी मता॥

यह १० दिन १५ दिन अथवा महीनोपरांत वा नित्य ही पतला, गाढ़ा, श्वेत किंचित स्निग्ध मल गिरता है तथा कटि वेदना युक्त हो, शब्द सहित अल्प वेदना हो, अति घुर २ बोले, आलस्य, दुर्बलता ग्लानि होता है इस आम और वात करके कहा गया है तथा मल को संग्रह करके पुनः छोड़ने लगता है इसीसे "सग्रहणी" रोग कहा है यह रात्रि में शांति तथा दिन में अधिक कुपित होता है यह बहुत कठिनता से जाना जाता है और कष्ट से निवारण भी होता है यदि चिरकालीन हो तो असाध्य ही है।

घटी यन्त्र संग्रहणी

*प्रसुप्तिः पार्श्ववोशूलं तथा जल घटीध्वनिः लक्षणान्तु निभः स्रावो तथा जल घटीध्वनिः सयद्रस्थित घटीयन्त्र मसाध्यं ग्रहणी गदम्

* स्वपतः पार्श्व योयस्य गल्लत्जलघटीध्वनिः

इति पाठ.न्तरम्

निद्रा अधिक आवे, पसलीमें शूल हो, जिस प्रकार जल से पूर्ण घड़े को औंधा करने से पानी गिरते समय शब्द होता है उसी प्रकार का शब्द होवे, यथा "अधोमुखी कृताधा जल घट्या जल निःसरणे यथा ध्वनिः तथा मल निर्गम समये भवति" यह घटीयंत्र संग्रहणी असाध्य ही है।

असाध्यत्व

वयोभेदेन ग्रहण्या साध्यासाध्य त्वादिविज्ञानम्। बालके ग्रहणी साध्यायूनिकृच्छ्रा समीरिता। वृद्धत्वेसाध्या विज्ञेया मतं धन्वन्तरे रिदम्॥ अर्थात् बालकों को यह साध्य तथा युवा को कष्ट साध्य एवं वृद्ध को असाध्य जानना ऐसा धन्वतरिजी ने कहा है।

अन्यच्च

लिंगेरसाध्या ग्रहणी विकारो येस्तैरतीसार गेदानसिध्येत्। वृद्धस्य नूनं ग्रहणी विकारो हत्वा तनू मेव निवर्तते च दोषं सामं निरामं च विद्यादतीसारवत् यथाऽतीसारे जलनिमज्जनादिना आमं तद्विपरीतेन निराम ज्ञायते। तथाऽत्रापि ज्ञेयम्। यैर्लिङ्गैरतीसार गंदे न सिध्येतै र्लिङ्गैर्ग्रहणी विकारोऽसाध्यः अतीसारस्य यान्य साध्य लिङ्गानि ग्रहण्या अपितानि

अर्थात् जिस प्रकार अतीसार में आम और निराम की परीक्षा की जाती है उसी प्रकार इसकी भी करे तथा जो असाध्य लक्षण और उपद्रव अतिसार में

कहे गये हैं उन्हीं २ को इसमें भी समझना क्योंकि आचार्यों ने 'अतीसारस्य निष्टानि ग्रहण्यामपि लक्षयेत्' को अटल सिद्धांत माना है।

असाध्यातिसार लक्षणम्

इसे आप लोग स्वयं देख सकते हैं। अतः विशेष न कह कर केवल अनुक्रमणिका भर दिखाया जाता है।

एवं जाम्ब वसंकाशं यकृत खण्ड निभंतनु (यकृत पिण्ड निभतनु इति पाठांतरम्) घृत तैल वसा मज्जा वेशवार पयोदधिः इत्यादि—

विशेष असाध्यत्व

असंवृत गुदं क्षीणं दुरात्मान मुपद्रुतम्। गुदेपक्वे गतोष्माण मतिसारिण मुत्सृजेत्-इत्यादि—

विशेष उपद्रव

शोथं शूलं ज्वर तृष्णा श्वास कासमरोचकम्
छर्दि मूर्छां च हिक्कांच दृष्टाऽतीसारिण त्यजेत्॥ अर्थ स्पष्ट ही है।

निवृति के लक्षण

यस्यो द्वार विना मूत्रं सम्यग्वायु श्चगच्छति। दीप्ताग्नेर्लघुकोष्टस्य स्थितस्यो दरामयः॥

जिसे मूत्र करते समय दस्त न हो तथा अपानवायु शुद्ध रीतिसे निःसरण हो और अग्नि देदीप्यमान होवे एवं कोष्ट हलका होवे तो उसे अतिसार अथवा ग्रहणी को निवृत्त हुआ जाने।

चिकित्सा

इसकी चिकित्सा जिस प्रकार अतिसार एवं अजीर्ण पर किया जाता है उसी प्रकार करें, यों तो जिन २ दोषोंका उद्भवता देखें उन्हीं२ दोषोंको शमन तो अवश्य ही करें किंतु मुख्यतः अग्नि उद्दीपन औषध एवं प्रथम आम (आम सहित) निराम (आम रहित) की परीक्षा करना उचित है यदि आम (आहारका सार भाग जो रस होता है वह अग्निके कम हो जाने से जो परिपक्व नहीं होता वह आम कहलाता है किसी२ ने औरभी अनेकों कारण कहे हैं किंतु वास्तव में अपक्व रसा ही आम है) अधिक होवे तो प्रथम आम का पाचन कर तत्पश्चात् चिकित्सा करे।

वातज ग्रहणी चिकित्सा क्रम

इस में पूर्वोक्त कथनानुसार आम परिपक्वोपरांत दीपन औषधियों युक्त घृत बलानुसार थोड़ा २ पिलावे यदि अग्नि चैतन्य होते हुए भी मल, मूत्र एवं अधोवायु की रुकावट प्रतीत होती होवे तो २-३ दिन तक स्नेहाभ्यङ्ग (शरीर पर तैल मर्दन) करे अथवा स्वेदन करके वा स्नेहन तथा स्वेदन दोनों ही करने के अनंतर निरूहण करे जब कि निरूहण से दोष स्थानाच्युत हो जाय तब क्षीर युक्त एरंड तैल (कहीं एरंड क्वाथ दूध में खरा कर पीना लिखा है) पिलावे अथवा

रेचक द्रव्यों से सिद्ध किया घृत एवं तैल द्वारा विरेचन करावे यदि इस संशोधनो उपरान्त रूक्षता पक्वाशय में होकर मल बद्ध हो जाय तब दीपनीय अम्लवात नाशक औषधियों युक्त तैल द्वारा अनुवासन करे जब कि पूर्ण रूप से उपरोक्त क्रिया कर चुके तब उसे हलके अन्न भोजन को देवे और निम्न औषधियों का प्रयोग करे प्रथम ही में आम नाशक उपाय लिखा जाता है क्योंकि पूर्वोक्त में आमका पहले ही शमन करना लिखा गया है।

आम पाचन योग

१—छोटी हर्र, सौंफ, समभाग लेकर इसमें चौथाई भाग सैंधव मिलाकर चूर्ण कर लेवे मात्रा ३ माशे से ६ मा० तक अनुपान मधु आवश्यकतानुसार दोनों समय सेवन करने से आमका नाश होता है उसी प्रकार सोंठ और हरड़ का चूर्ण भी गर्म जल से पीने से आम पाचन होकर अग्नि चैतन्य हो जाती है।

चित्रकादि गुटी

२—चित्रक, पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, पञ्चलवण, त्रिकुटा, हींग, अजमोद, जवक्षार, इन प्रत्येक वस्तुओं का समभाग चूर्ण ७ दिन बिजौरे के रस में एवं ७ दिन बड़े अनार के रस में खरल कर १-१ मा शे की वटी बनाकर १-१ गोली उष्ण जल के साथ सेवन कराने से आम पाचन द्वारा अग्नि चैतन्य हो जाती है।

वातज ग्रहणी चिकित्सा

१—शालपर्णादि क्वाथ, शालपर्णी बला, (खिरेटी) मूल, बेलगिरि, धनियां, सोंठ, का सम भाग चूर्ण कर ⅛ जल में १ तो० चूर्ण डाल क्वाथ कर दोनों समय पीने से पेट का फूलना, तथा शूल युक्त ग्रहणी दूर हो।

मरिचादि चूर्ण

२—काली मिर्च, स्याह जीरा, पाटला इमली प्रत्येक ⅛ आध २ पाव अम्लवेत ½ भर सौवर्चल, बिड़नून कांच नमक, सैंधव, जवाखार, पुष्करमूल, कचूर, हींग हींगुपत्रिका, प्रत्येक १-१ भर सम्पूर्ण वस्तुओं का चूर्ण कर दोनों समय ६ मा० से १ तो० तक सेवन करने से वातज ग्रहणी एवं अरुचि को दूर करता है।

हिंगुलाष्टक चूर्ण

३—सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, सैंधव स्याह जीरा, श्वेत जीरा, (तवेपर भूना) हींग उत्तम (घी से भुनी) सम भाग लेकर चूर्ण करे इसे भोजन के समय ही ३ मा० घृत से मिला खाने से ग्रहणी एवं अरुचि को दूर करता है तथा वक्ष के साथ भी लाभ दायक है।

दसमूलादि घृत

४—लघुपञ्च मूल (शालपर्णी, पृष्ठपर्णी दोनों कटेली गुरुखुर) बृहत पञ्चमूल (बेलगिरि, अरणी, सोनापाठा, कुम्भेरपाटला खरल सेहुण्ड, सौंफ पीपल पीपलामूल

गज पीपल, चित्रक मूल, सनी के बीज, (सनई) इन्द्रयव, बेर कुलथी रास्ना प्रत्येक ⅝ डेढ़ पाव लेकर यवकुट करे पुनः कांजी, दही, सौवीर आदि को सम भाग लेवे उपरोक्त औषधियों में चतुर्गुण लेकर चुरावे चतुर्थांश व शेष रहने पर उतार कर छान लेवे पश्चात् ½४ सेर उत्तम घृत तथा सज्जीखार जवाखार सैंधव, सांभर, सौवर्चल, सामुद्र लवण, बिड़नून खारी नून, रोमक लवण (यदि कोई न मिल सके तो अभावे सैंधव लेवे) इन प्रत्येक को ८-८ तो० ले सम्पूर्ण वस्तुओं को उसी क्वाथ में एकत्र कर पुनः पकावे घृत मात्र शेष रहने पर उतार कर छान लेवे इसको जठराग्नि की बलाबल विचार १ तो० से ४तो० पर्यंत सेवनकरनेसे ग्रहणी विकार एवं वायु का नाश आहार का उत्तम परिपाक होकर अग्नि बल वर्णकी वृद्धि होती है।

मधु पक्व हरीतकी

५—उत्तम बड़ी २ सौ १०० हरड़ों को लेकर १ पहर पर्यंत गो के गोबर के पानी में दोला वस्त्र के रीत्यानुसार चुरावे उतार कर किसी वस्तु में उसमेंका गुठली युक्तिपूर्वक निकाल लेने पश्चात घी के चिकने पात्र में रख ५ सेर उत्तम मधु डाल रख देवे और देखता जाय कि ज्यों ज्यों वह मधु जल रूप होता जाय त्यों ही त्यों उसमें नवीन मधु डालता जाय जब तक कि मधु जल रूप न होकर अपने रूप में जैसे का तैसे ही रहै तत्पश्चात् सोंठ मिर्च, पीपल, लौंग, चंदलाचन, ये प्रत्येक १-१ तो० ले चूर्णकर उसमें छोड़ देवे, इसे नित्य प्रति १-१ हर्र प्रातःकाल सेवन करने से अग्नि उद्दीपन, दुष्टवात, आमांश दुष्टरक्त, प्रतिश्याय वादी का शूल, एवं सशूल संग्रहणी प्रभृत रोगों को नष्ट करे—

पित्तज गृहणी चिकित्सा क्रम

जब कि पित्त दूषित होता है तभी जठराग्नि भी दूषित होती है अतः यदि यह पित्त अपने स्थान (ग्रहणी में) उत्क्लेशित हुआ प्रतीत होवे तो उसे प्रथम वमन अथवा विरेचन द्वारा निकाल पश्चात् हल्के, ग्राही, दीपनकर्ता, तथा जो दाह न करे ऐसा भोजन करना चाहिये तथा तिक्त चूर्णादि वा तिक्त द्रव्यों से सिद्ध किया हुआ घृत एवं अग्नि संदीपन चूर्णों से अग्नि चेतन्य करना चाहिये।

तिक्तादि क्वाथ

१—कुटकी, सोंठ, धायके फूल, रसोत इन्द्रयव, हरड़, नागरमोथा, कोरैयाका छाल, श्वेत अतीस, प्रत्येक सम भाग ले चूण करे ⅝ आध पाव पानी में १ तो० चूर्ण छोड़ क्वाथ कर दोनों समय पीने से गुदशूल पित्तज ग्रहणी दूर होवे।

भूनिम्बादि चूर्ण

२—चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, इन्द्रयव, प्रत्येक १-१ तो० चीते की छाल २ तो० कोरैया की छाल १६ तो० सब को एकत्र कर बारीक

चूर्ण कर ३-३ मा० से ६-६ मा० तक गुड़ मिला ठंडे जल के साथ दोनों समय सेवन से ग्रहणी, गुल्म, कामला, ज्वर, अरुचि आदि को नष्ट करता है।

चन्दनादि घृत

३—रक्त चन्दन, पद्मकाष्ठ, खस, मूर्वा पाढ़ा, केवटी, मोथा, वच, सोंठ, मिर्च, पीपल, खारिवा, धवक्षवकी, सप्तपर्णी, (सातवन) अडूसा, पटोलपत्र, गूलर, पीपर बड़, पिलखन (पाकर) कैथ, कुटकी, नागरमोथा, नीमकी छाल, प्रत्येक औषध ८-८ तो० ले जौकुट कर १६ सेर जल में क्वाथ करे चतुर्थांश शेष रहनेपर शुद्ध देशी घृत ५१ सेर और किरायता, इन्द्रयव, काकोली नीलोफर इन्हें १-१ भर ले कल्क करे इन सबों को उसी क्वाथ में छोड़ घृत सिद्ध कर लेवे यह घृत दाह पूर्वक पित्तज ग्रहणीको दूर करता है मात्रा १ तो० है किंतु बलानुसार कम तथा विशेष भी दिया जा सकता है।

कफज ग्रहणी चिकित्सा क्रम

ग्रहण्यांश्लेष्म दुष्टायां वामेतस्य यथाविधि
टुवलमलवणक्षारै स्तिक्तैश्चाग्निं विवर्द्धयेत्

अर्थात् इस रोगी को प्रथम विधिनुसार तीक्ष्ण वमन कारक औषधियों से वमन करावे पुनः कटु, अम्ल लवण क्षार तथा तिक्त द्रव्यों से अग्नि चैतन्य करे।

क्वाथ

पलाश चित्रक चव्य बिजौरा हरड़ पीपल पीपलामूल पाढ़ धनियां सोंठ प्रत्येक १ तो० लेकर जब कूट कर ५१ सेर पानी में क्वाथ करे अथवि शेष रहने पर उतार कर छान लेवे इसे दिन भर में (दिन में ३-४ बार) पिला देवें इस क्वाथसे कफज ग्रहणी नष्ट होती है अथवा इसी द्रव्यों से सिद्ध किया हुआ यवागू देवे।

रास्नादि चूर्ण

रास्ना हरड़ कचूर सोंठ मिर्च पीपल भूनीमोर जवाक्षार सज्जीखार सैंधव सोंचर बिड़नून पीपलामूल बिजौरे की केशर इनका चूर्ण ३ मा० से ६ मा० तक गर्म जल से सेवन करे तो कफज ग्रहणी को लाभ करता है।

क्षार घृत

यह अग्नि उद्दीपन करने में प्रसिद्ध ही है यथा इस प्रकार है—बिड़नून काला नून जवाक्षार सज्जीखार स्नुही कारण्ड (सांवला सेंहुड़ भेद) भस्म कटकारी भस्म चित्रक भस्म एक २ पाव लेकर ५८ सेर पानी में दो दिन घोलकर रखा रहने दे पश्चात् उसी पानी में १ कपड़ा डाल उसी कपड़े द्वारा सम्पूर्ण जल को निचोड़ लेवे यदि हो सके तो इसी प्रकार सात बार करे फिर जो क्षार बच जाय उसे सुखाकर रख देवे इसी क्षार को ५२ सेर लेकर ५१ सेर देशी घृत डालकर सिद्ध कर लेवे मात्रा १ तो० से २॥ तो० तक यह अग्नि चैतन्य कर कफ जनित ग्रहणी विकार को नष्ट करता है।

मध्वासव

महुआ के फूल १६ सेर, बायबिडंग ८ सेर, चित्रक ४ सेर मिलावां ४ सेर, मंजीठ ३ छ० सबको ४८ सेर जलमें कवाथ करे १६ सेर शेष रहे तो उसे उतार कर शीतल कर २ सेर मधु डाले पश्चात् अगर छोटी इलायची, खस, चन्दन श्वेत, कमल का जड़, इनका कल्क मिट्टी के घड़े में (जिस में कि पहले घृत रक्खा जा चुका हो) लेप कर उसी में उसे रख विधिवत् १ मास तक जमीन में गड़ा रहने देवे मात्रा बलाबल विचार कर १ तो० से २॥ तो० अथवा आवश्यकतानुसार दोनों समय सेवन से ग्रहणी विकार नष्ट होकर शरीर पुष्ट हो तथा कफ, एवं पित्त को नष्ट करत हुए अग्नि चैतन्य करती है इसके अतिरिक्त शोथ, कुष्ट, प्रमेह, आदि पर लाभ दायक है।

सन्निपातज ग्रहणी चिकित्साक्रम

त्रिदोषे विधिवद्वैद्यः पञ्चकर्माणिकारयेत् घृतक्षारासवारिष्टा न्द्याद्याग्नि विवर्धनात् च०

इसमें रोगी को प्रथम विधि पूर्वक पञ्चकर्म करावे (वमन, विरेचन, अनुवासन, निरूहण, नस्य ये ही पञ्चकर्म हैं) मुख्यतः अग्नि उद्दीपन औषधि देना तो आवश्यकीय है ही साथ ही ऐसा ही घृत, क्षार, आसव, अरिष्टादि को देवे यों तो चरक के इस कथनानुसार 'क्रिया या चा नला दीप्तां निर्दिष्टा ग्रहणीं प्रति। व्यत्यया सात्तां समस्ताश्च कुर्याद्दोष विशेषवित्' अर्थात् जिस दोष की विशेष उल्वणता हो प्रथम उसे ही शमन करना ही चाहिये और औषधियों की मात्रा तो अपने अधीन है अर्थात् जैसा देखे वैसा बलाबल विचार मात्रा अल्प तथा विशेष कर लेवे इस प्रकार अग्नि उद्दीपन औषधि विचार करने से अग्नि चैतन्य हो समान वायु स्वच्छ होकर अपने मार्ग में यथोचित कार्य करती हुई जठराग्नि तथा बल को बढ़ाती है अब मैं निम्नोक्त योग समस्त ग्रहणी पर प्रकाशित करता हूं जो कि हर हालत में लाभ दायक होंगी।

ग्रहणी रोग तथा तक्र

यह इस रोग के लिये तो अमृत ही है जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी ही है। जो कि अनेकों औषधियों द्वारा न शमन हुई हो उसे यह शीघ्र शांत करता है यहां तक कि बिना इसके ग्रहणी कदापि निमूल नहीं हो सकती यथा—'दुःसाध्यो ग्रहणी रोगो भेषजैर्नैव शाम्यति। सहस्रशोऽपि विहितैर्विनातक्रस्य सेवनात्' अतएव—दोष धातु बलापेक्षा ग्रहण्यां तक्र मापिबेत्' भा०

अर्थात् दोष, धातु, बल- इनके सामर्थ्य नुसार इसे बिना किसी रोग के सेवन करे क्योंकि—

न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्र दग्धा प्रसवन्ति रोगः। यथा सुराणाम मृतं सुखाय तथा नराणा भुवित क्रमाहुः।

तात्पर्य यह कि इसे सेवन करनेवाला

व्यक्ति सदैव निरोग रहता है कदापि रोगी नहीं होता उसी प्रकार जो रोग इससे शमन होंगे वे कदापि पुनः अंकुरित नहीं हो सकते देखिये इसका उपाय अमृत से दिया गया है अर्थात् स्वर्ग में अमृत जिस प्रकार देवताओं को सुख देता है उसी प्रकार पृथ्वीपर मनुष्यों के लिये तक्र है; अस्तु, कोई भी ग्रहणी वा अतिसार हो, इसे सेवन कराना अत्यन्त आवश्यकीय है क्योंकि यह दीपन, ग्राही, तथा हलका है, मधुर पाकी होने से पित्त को कुपित नहीं होने देता तथा अम्ल, एवं स्निग्ध होने से वायु को शमन करता है, तथा कषाय, उष्ण, विकासी एवं रूक्षता से कफ में भी लाभ दायक है तात्पर्य कि त्रिदोष नाशक है और यदि गौ का ताजा तक्र सेवन करे तो दाह का नाश करता है अतः उदर, अर्श, अतिसार, ग्रहणी, प्रभृति रोगों में अवश्य प्रयुक्त करे किंतु यह ४ प्रकार का होता है, कोई २ तो ५ पांच भी मानते हैं

नोट—लेख बढ़ जाने के भय वश पूर्ण व्यवस्था न लिख संक्षिप्त ही में लिखता हूं।

१—घोल (जो दही बिना पानी के मलाई सहित मथा गया हो।

२—मथित (जो कि मलाई रहित बिना जल में मथा हो)।

३—तक्र (इसे मठा भी कहते हैं इसमें चौथाई हिस्सा जल डालकर मथाया हो)

४—उदश्वित (यह आधा भाग जल मिलाकर मथा गया जाता है इसे दक्षिण में 'दगरा' कहते हैं)

५—छांछ (यह अधिक पानी से मथता है इसमें का मक्खन मथन करते २ बिलकुल निकाल लिया जाता है।

गुण

१—घोल (वात पित्त नाशक है)।

२—मथित (हृदय हितकारी तथा कफ पित्त को नाश करता है)।

३—तक्र (इसका गुण पूर्वोक्त कहा जा चुका है तथा कुछ अब शेष है उसे दर्शाते हैं यह ग्राही वात नाशक है, तथा ग्रहणी आदि रोगों में इसे ही देवे।

४—उदश्वित (कफ कारक, बल वर्द्धक, अत्यन्त आम नाशक है।

५—छांछ, शीतल, हलकी, पित्त, तृषा तथा वात नाशक एवं कफ कारक है, लवण युक्त सेवन से अग्नि प्रदीपक है।

पक्वापक्व तक्र गुणः

'तक्रं मामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च। पीनस श्वास कासादिं पक्व मेव प्रयुज्यते॥' भा०

कच्चा तक्र कोष्ट के कफ को शमन कर कण्ठ में कफ वर्द्धक होता है इसे पीनस, श्वास, कासादिमें पक्का औटाकर सेवन करावे।

निषेधः

नैवतक्रं क्षते दद्यान्नोष्ण काले न दुर्बले। न मूर्छा भ्रमदाहेषु न रोगे रक्त पित्तजे॥' भा० उष्ण काल में व्रणमें दुर्बलता, मूर्छा, भ्रम, दाह, एवं रक्तपित्त प्रभृतादि रोगों में कदापि न देवे—

सेवन क्रिया

इसमें सोंठ का चूर्ण क्रमशः ३ मा० तक अथवा हिंगुलाष्टक चूर्ण व जो २ चूर्ण निम्नोक्त लिखे जाते हैं। उन्हीं किसी एक को डालकर पीवे और नित्यशः तक बढ़ाता जाय और अन्न कम करता जाय इसी प्रकार करते २ केवल तक के ही आधार पर रह जाय तथा अन्न सर्वथा छोड़ देवे जब २ भूख प्यास लगे इसे ही पीवे जब इसे छोड़ना चाहे तब केवल मूंग का यूस (दाल रहित) १ तो० प्रथम दिन पीवे इसी रीत्यानुसार एवं पूर्वोक्त कथनानुसार क्रमशः यूस बढ़ावे और तक कम करता जाय जब यूस ⅝ भर तक पच जाय तब पश्चात् कुछ दाल भी एवं बहुत पुराना चावल खाय, इसी तरह तक छूट भी जाता है यदि रोग भी छूट जाय तब भी सेवन करे तो लाभ ही होगा।

चूर्ण प्रयोगम् (वृद्ध गंगाधर चूर्ण)

१—नागरमोथा, अरलू (टेंटू) सोंठ, धवपुष्प, लोध, नेत्रवाला, बेलगिरि, मोचरस, पाढ़, इन्द्रायन, कुड़ाकी छाल, आम की गुठली, अनीस, लजालू, प्रत्येक सम भाग ले चूर्ण कर ६ मा० से १ तो० तक चावल के धोवन ⅝ पाव से पीस ६ मा० मधु डालकर दोनों समय पीवे अथवा चूर्ण को यों ही खा कर तब केवल चावल का धोवन और मधु छोड़ा हुआ पानी को पी लेवे यह प्रवाहिका, अतिसार तथा ग्रहणी को शीघ्र नष्ट करता है।

वृद्ध दाडिमाष्टक चूर्ण

२—अनारदाना ८ पल, मिश्री ८ पल पीपल, पीपलामूल, स्याह मिर्च, अजमोद धनियां, जीरा, सोंठ, प्रत्येक १-१ पल वंशलोचन, १ तो० दालचीनी, पत्रज, इलायची, नागकेशर आठ २ मा० सब को चूर्ण कर ६ मा० से १ तो० तक सेवन से सम्पूर्ण अतिसार, संग्रहणी, तथा अरुचि आदि को नष्ट करता है।

लाई चूर्ण

३—शु० पारद, शु० गंधक, अभ्रक भस्म, चीता की छाल, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग, जीरा, स्याह जीरा, मिलावा, अजवायन, हींग, पचलवण, घरका धूवां, वच, कूट, नागरमोथा, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमोद, गजपीपर, इन सब को चूर्ण करें, चूर्ण के बराबर भांग अथवा इन्द्रयव मिला देवे इसे नित्य दोनों समय १ ता० से २ ता० तक सेवन करने से अतिसार, ग्रहणी, मन्दाग्नि आदि के अतिरिक्त यह अनेकों रोगोंको लाभ दायक है इसे सेवन करने पर ही इसका गुण ज्ञात होगा।

नोट—रस प्रयोग अथवा चूर्ण में जहां पारा गंधक हो तो वह शुद्ध होना चाहिये तथा प्रथम इसका कज्जली करके तब अन्यान्य औषधियों को मिलावे।

वृहल्लवंगादि चूर्ण

४—लौंग, लाची, तज, पत्रज, कमल गट्टा, खस जटामासी, तगर नेत्रबाला, कचूर काली अगर नागकेशर जायफल चन्दन श्वेत जावित्री स्याहजीरा श्वेत जीरा सोंठ मिर्च पीपल कचूर हरड़ बहेड़ा आंवला कूट बायबिडंग चित्ता तालीसपत्र देवदारु धनियां अजवायन मुलेठी खैरसार अश्वेत अजमोद वंशलोचन काकड़सिंगी अतीस पीपरामूल अरणी फूल प्रियंगु मोथा अतिविषा श्वेत शंखावर मिसोथ धमासा सत गुर्च कपूर अभ्रक प्रत्येक को सम भाग ले चूर्ण करे पुनः चूर्ण के बराबर मिश्री छोड़ नित्य दोनों समय १-१ तो० खाने से बल वीर्य की वृद्धिकर प्रमेह खांसी रक्तदोष हिचकी अतिसार ग्रहणी स्वरभंग प्रभृति को नष्ट कर और भी अनेक रोगों को नष्ट करता है।

मार्कण्डेय चूर्ण

५—शु० पारा गंधक हिंगुल अभ्रक भस्म सुहागा सोंठ मिर्च पीपल जायफल लौंग तेजपात जावित्री बीज चीता मोथा गजपीपर नेत्रबाला धाय पुष्प अतीस कहिजन मोचरस अफीम सम भाग ले चूर्ण कर १-१ भा० दोनों समय मिश्री के साथ खाने से अतिसार संग्रहणी को दूर कर मन्दाग्नि का नाश करता है।

मद्य खांडव चूर्ण

६—काली मिर्च मोचरस तालीस पत्र सैंधव बिड़नून जवारीनून प्रत्येक १-१ तो० पीपलामूल चित्रक दालचीनी पीपल जीरा इमली का छाल प्रत्येक २-२ तोले धनियां अमवेंत बड़ी इलायची के दाना छोटे बेर अजमोद नागरमोथा प्रत्येक ३-३ तो० सम्पूर्ण औषधियों के चतुर्थ भाग अनारदाना लेकर सबोंको बारीक चूर्ण कर लेवे पुनः अर्ध भाग मिश्री मिला ३ मा० से १ तो० तक खावे इससे अतिसार ग्रहणी मन्दाग्नि दूर होती है तथा हृद्रोग खांसी कंठरोग उदररोग मुखरोग अफरा विशूचिका अर्श गोला कृमि प्रभृति रोगों में लाभ दायक है।

रस प्रयोग ग्रहणी कपाट रस

१—चांदी मोती सोना लोहा प्रत्येक १-१ तो० भस्म लेवे तथा गंधक २ तो० पारा ३ तो० सब को एकत्र कर कैथ के रस में खरल कर मृग शृंग में भर कर मध्यम पुट में फूंक देवे क्वाथ शीतल होने पर ७ भावना बला के रस का देवे पुनः भांगा (अपामार्ग) लोध अतीस नागरमोथ धवई पुष्प इन्द्रयव गुर्च प्रत्येक का ३-३ भा० क्वाथ दे सुखाकर रख लेवे मात्रा २ रत्ती शहद और काली मिर्च २ रत्ती के साथ सेवन करे।

स्वर्ण सिंदूर वटी

स्वर्ण सिंदूर १ तो०, अहिफेन १ तो० दोनों को खरल कर मूंग प्रमाण वटी बना दोनों समय सेवन से उसी वक्त लाभ करता है तथा बहुत शीघ्र निर्मूल कर देता है।

लौह योग

४—२-२ रत्ती उत्तम लौह भस्म, पुराने बेल का गूदा १ ला० शहत अथवा मिश्री से खाके ऊपर से [illegible] पानी पीवे इससे भी बहुत शीघ्र शांत होता है।

लोकनाथ रस

५—१ तो० शु० पारद, शु० गंधक २ तो०, दोनों को कज्जली करके शोधी हुई पीली कौड़ी में भर देवे पु: [illegible] शुद्ध किया हुआ [illegible] से मुंह बंद कर सुखा देवे [illegible] हांडी में खूब बारीक शुद्ध [illegible] नीचे रख बीच में [illegible] कर हांडी को [illegible] देवे जब मुद्रा सूख जाय [illegible] फूंक देवे शीतल होने [illegible] शंख चूर्ण को छोड़ कर कौड़ियों को निकाल खरल कर रख लेवे, पुनः धाय के फूल, माथा, इन्द्रयव, मोचरस, बेलका गूदा, पठानी लोध प्रत्येक का सम भाग चूर्ण ६ मा० मात्रा २ रत्ती इस रस के साथ सेवन करे सम्पूर्ण आतसार, संग्रहणी को दूर करता है।

हिरण्यगर्भ पोटली

६—पारा १ तो०, स्वर्ण भस्म २ तो० शु० गंधक ३ तो० मोती भस्म ४ तो० कौड़ी भस्म ३ तो० शंख भस्म ६ तो० शु० सुहागा १ तो० इन्हें पक्के नीबू के रस में खरल कर कल्क बनाकर मूषा यंत्र में रख मुंह बन्द कर देवे पश्चात् गड्ढा खोदकर ३० उपलों में रख फूंक देवे शीतल होनेपर निकाल ले खरल कर रख लेवे इसे २ रत्ती से ४ रत्ती तक नित्य दोनों समय बेल के गूदा अथवा काली मिर्च व शहद से खावे यह अनेक रोगों को नष्ट करता है इसका गुण कहांतक लिखा जाय इसमें तो लाभ होगा ही।

स्वर्ण पर्पटी

७—शु० हिंगुलोत्थ पारद ८ तो० शु० आंवलासार गंधक तो० ८ (खाने के लिये जहां कहीं गंधक होगा यही लिया जायगा) उत्तम स्वर्ण भस्म १ तो० ३ तीनों को कज्जली करके लोह के कड़ाही में डाल मन्दाग्नि से चुलावे जब कज्जली द्रुत हो जाय तब गौ के गोबर पर केलाका पत्ता रखकर उसी पर उस द्रुत कज्जली को पतली २ फैला देवे ततपश्चात पुनः ऊपर से पत्ता रख ऊपर से गोबर बिछा देवे २ घंटे बाद दोनों पत्तों के बीचसे पापड़ सदृश स्वर्ण पर्पटी को निकाल क्रमशः दो रत्ती से १ मा० तक पानके रस और मधु से अथवा वही वा केवल मधु से सेवन

करे तो दुस्तर संग्रहणी अतिसार एवं क्षय को दूर करे।

विजय पर्पटी

८—आंवलासार गंधक को भांगरा के रस से ७ भावना देकर सुखा लेवे पश्चात् थोड़ा घृत में गलाकर भांगराके रस में बुझावे इसी प्रकार ७ वार करे इस शुद्ध गंधक ४ तो० शु० पारद (अष्टादश संस्कृत) २ तो० रौप्य भस्म १ तो० स्वर्ण भस्म ६ मा० सबो को उपरोक्त रीत्यानुसार पर्पटी डाल लेवे यह भी एक अपूर्व वस्तु है यह सम्पूर्ण ग्रहणी अतिसार के अतिरिक्त अनेक रोगों को नष्ट करता है मात्रा २ रत्ती से १ मा० तक धनियां चूर्ण २ रत्ती हींग आधी रत्ती जीरा चूर्ण २ रत्ती से सेवन करे (यह १ खुराक है)

कुंकुम बटी

९—अफीम, केशर, मोम, समभाग लेकर मूंग प्रमाण बटी बनावे इसे मधु से खाय यह हर प्रकार के दस्तों को तथा ग्रहणी एवं अतिसार को शीघ्र ही लाभ करता है इसी में १ भाग अभ्रक १००० पुटी मिलाने से और भी लाभ दायक होती है तथा यदि १ रत्ती या २ रत्ती उत्तम प्रवाल भस्म के साथ इस अभ्रक युक्त बटी की सेवन से अग्नि प्रदीप होकर बहुत लाभ करता है।

कर्पूर बटी

१०—शु० हिंगुल, अफीम, नागरमोथा इन्द्रयव, जायफल शु० कपूर प्रत्येक समभाग लेकर जल से घोंट २-२ रत्ती की बटी बना लेवे इसे अर्क पुदीना अथवा यों ही जल से सेवन करने से रक्तातिसार ज्वरातिसार अर्थात सम्पूर्ण अतिसार एवं संग्रहणी को दूर करता है।

ग्रहणी गजेन्द्र वटिका

११—शु० पारा, शु० गंधक लौहभस्म शंख भस्म, सुहागा भुना हुआ, उत्तम हींग, (घृत से भुनी) कचूर, तालीसपत्र नागरमोथा, घरका धूम, धनियां, जीरा, सेंधव, धोय पुष्प, अतीस, सोंठ, हरड़, बिलावा, तेजपात जायफल लौंग तज, बड़ी लाची, नेत्रवाला बेलगिरि मेथी प्रत्येक को समान लेकर चूर्ण करके इन्द्रायण के रस से खरल मटर प्रमाण गोली बना कर सेवन करे यह गोली ग्रहणी अतिसार ज्वर शूल गुल्म कृमि गुद भ्रंश आदि को दूर करता है।

विशेष वक्तव्य—यदि ग्रहणी का अतिसार से शरीर क्षीण हो गया हो तथा कुछ शोथ भी प्रतीत होवे तो "ग्रहणीमिहिर तैल" (योग नीचे दिया जाता है) दिन में ३ बार वा २ ही बार शरीर पर मर्दन कराना चाहिये एवं यदि दस्त होते हो वे गुद शुल, गुद पाक गुद दाह, तथा गुद भ्रंश आदि हो तो उसे नीचे लिखे हुए योगों से उसे शमन करे।

ग्रहणी मिहिर तैल

१२—तिल तैल ५१ सेर, मट्ठा ५४ सेर कुड़ा की छाल, धनियां, ५५ पांच २ सेर

सब को १६ सेर पानी में क्वाथ करे चतुर्थांश शेष रहने पर निम्नोक्त वस्तुओं का कल्क कर उसी में छोड़ तैल पाचन कर लेवे तब कार्य में बर्ते, कलक द्रव-धनियां, धायके फूल, लोध लज्जावन्ती, अतीस हर्रा, लौंग नेत्रवाला, सिंघाड़ा के पत्र (अभवि सिंघाड़ा) रसोत, नागकेशर, शरपुंखा मूल, मृंगराज, पुनर्नवा, आम जामुन, कदम्ब तीनों का वक्कल ये प्रत्येक १-१ तो० इस तैल के मर्दन से अनेकों रोग दूर भागते हैं इसे पेट पर विशेष मलना चाहिये।

गुद पाकादि चिकित्सा

यद्यपि गुदपाकादि [illegible] प्रायः प्रवाहिका वा आमा[illegible] है तथापि मैं यहां कुछ [illegible] देना ही उचित समझता हूं

गुद पाक

यह प्रायः पित्त के कुपितसे होता है अतः इस में अजा दुग्ध से मधु डाल प्रक्षालन करे वा पीवे अथवा दोनों ही करे, वा पटोल पत्र, मुलेठी, महुआ छाल इनके क्वाथ से धोवे यदि पाक न होवे शूल हो तब प्याज को पीस किंचित् उष्ण कर पोटली बना सेंक करे अथवा गेहूं का चोकर और सैंधव दोनों को एकत्रितकर उपरोक्त क्रिया करे (नोट-कटि, नितम्ब आदि को भी) गुद भ्रंश के लिये कमल के कोमल पत्र या कमल पुष्प २-३ मा० मिश्री से खाय अथवा "चांगेरी घृत" को बर्ते।

चांगेरी घृत

चूका, बेर, दही, नींबू, जवाखार, सोंठ इनके क्वाथ में घृत डाल सिद्ध करे इसे थोड़ा २ पीने को देवे यह एक दूसरे तरह का और भी होता है अस्तु-गतांक में इसकी शांति के निमित्त वेदोक्त उपचार कहा जा चुका है अतः अत्यन्त सूक्ष्मविचार लिखता हूं पूर्णतः से लेख बढ़ जायगा।

'उद्गातः भगवती विचृतौ नाम तारके।
विश्वेदिषस्य मुञ्चतामधम पाशमुत्तमम्॥
अथर्ववेद द्वि० कां० द्वि० अनु० तृ० सू०

इस रोग के शांति के निमित्त १००८ वार उत्तम ब्राह्मण जो कि लोलुप न होवे एवं कुलीन तथा विद्वान हो शिव सकल्प सूक्त का पाठ करावे पश्चात् ढाक की समिधा तथा घृत एवं चरू से हवन करावे पुनः हवन करनेवाले तथा करानेवाले को (यदि न होवे तो एक ही को) १ कृष्णा गौ का दान करे सामर्थ्यानुसार कुछ स्वर्ण दान भी करे, और जो ऋचा अथर्ववेद का दिया है उससे जल पूर्ण घट को प्रति दिन आमंत्रित कर के घरके बाहर रोगी को बिठाकर उसके ऊपर जल छिड़क दिया करे (इति पद्मे गौतमोक्ते) अवश्य शांति होती है।

पथ्यापथ्य

जो २ पथ्यापथ्य अतिसार पर है

प्रायः वे ही इसमें भी समझना चाहिये, क्योंकि चिकित्सा भी उसी से मिलता जुलता है, तथापि कुछ लिखता हूं, प्रथम मूंग; मसूर, अरहर पुरानी की दाल, पुराने सांठी चावल का भात, बकरी, गा वा भेड़ का दूध, दही, बड़हर, अना बेला. सिंघाड़ा, चूका, भांग, कैथ कारवया, कसरु, तक्र, छाछ, ३ जामुन, धनिया, तेंदू, अफाम खपे शा, हिरण, तीतर आदि का तथा मछली खवरी का मांस पथ्य में है—तथा जागना, फ जल अधिक पीना, स्नान, स्त्री मूत्र आदि का वेग धारण, स्वेदन, धूमपान, अतिश्रम भक्षण गेहूं, जौ, मटर, उड़द, चना जमीकन्द, रतालू आदि कद, पान, ईख बेर आम खीरा ककरी सुपारी खीर तुषोदक गुड़ मलाई तथा दस्तावर जो वस्तु हों और इन उपरोक्त वस्तुओं को सर्वथा त्याज्य देवें।

सूचना

यद्यपि मैं इसे पूर्णतः न लिख सका तथापि आशा है कि आप लोग इतने से ही संतोष कर हमारे त्रुटियों को क्षमा पूर्ण औषधियों के गुणागुण प्रकाशित करेंगे क्योंकि ये सम्पूर्ण परीमें लिखे हैं उनसे प्रायः लाभ स्वभावतः है अस्तु पूर्वोक्त में अनुवासन तथा निरूहण का उल्लेख ने पर ध्यान करते ही है कि वास्ति (पिचकारी) है यद्यपि १ एक परन्तु २ भाग है जो घृत अथवा तैल आदि की वस्तु दी जाती (वास्ति देने की मात्रा ४ तो० से ८ तो० तक है) है वह अनुवासन कहती है तथा जो कि क्वाथ दूध और तैल को एकत्र करके वस्ति दी जाती है उसे निरूहण कहते हैं।

व्यायाम मासिक पत्र

—:o:—

कुश्ती लाठी वगैरह व्यायामों की सचित्र सहायता देनेवाला हिंदी मासिक पत्र है। वार्षिक मूल्य २॥)

पता—व्यायाम कार्यालय रावपुर लखनऊ

मूंगफली खूब खाया करो.

(ले२—प्रोफेसर रामकृष्ण बर्मा, बी० ए० बी० एस० सी० एल० एम० एस०)

अमरीका में प्रति साल मूंगफली की पैदाइश अधिकता के साथ होती है, लगभग ३ करोड़ बुसल के कम कभी नहीं होती एक बुसल का भार ३२ सेर है कई वर्षों से वहां के निवासी इसे अधिकताके साथ खाने लगे हैं मुरब्बा इसका बहुत उत्तम होता है इसके साथ २ अन्य प्रकार की कई सेवन की ऐसी भी किस्में हैं जिनके अनुसार सेवन करना प्रथम कभी ध्यान न दिया जाता था यह कम काश्तकारी के अफसरों ने यह प्रगट किया है कि यह उत्तम आहार है मांस भक्षियों में सब से उत्तम पौष्टिक शक्ति बछ्र्क गाय का मांस गिना जाता है परन्तु अगर दो समान व्यक्तियों के साथ २ एक को मूंगफली दुसरे को गाय मांस खिलाया जावे तो मूंगफली भक्षण करनेवाला अधिक हृष्ट पुष्ट और बजन में भारी निकलेगा इससे स्पष्ट है कि मूंगफली में गाय के मांस से भी अधिक शक्ति है इससे वहाँपर मूंगफली के केक, बिस्कुट और अन्य प्रकार के आहार बनाये जाते हैं लगभग सौ वर्ष का अरसा हो गया कि पश्चिमीय संसार में सुघर और गुलामों के आहार के लिये मूंगफली बोयी जाती थी अफरीका से जितने हबशियों को पकड़ कर अमरीका में लाते थे उनको प्रथम जहाजों पर मूंगफली आहार को देते थे इसलिये कि यह आहार बहुत सस्ता पड़ता है और पालने के लिये अधिक ताकतवर है।

अमरीका के खेती डिपार्ट वालों का कहना है कि इस मूंगफली में मनुष्य शरीर के बृद्धि कारक और पालन योग्य सब हिस्से पाये जाते हैं अमरीका से मूंगफली जहाजों में भर कर फ्रांस और इटली को भेजी जाती हैं वहांपर इनका तेल निकाला जाता है यह तेल फिर अमरीका भेजा जाता है जिसकी बोतलों पर लिखा रहता है कि खालिस जैतून का तैल परन्तु यह एकदम धोका देना है क्योंकि मूंगफली और जतून दोनों का तेल आपस में बहुत मिलता जुलता है अमरीका के युक्तप्रांत से जितना साबुन आता है और जैतून के तेल के नाम से बेचा जाता है उसमें जैतून का तेल बिलकुल नहीं होता है उसमें यही मूंगफली का तेल है जो जैतून तेलके समान सब स्थान पर कार्य देता है।

अमरीका के पश्चिमी हिस्से में मूंगफली से तेल अधिक निकाला जाता है कारखानों के आस पास जो लोग रहते हैं वह मूंगफली की खली खरीद लेते हैं और उसको पीसकर उसके केक बिस्कुट

बनाते रहते हैं और खूब खाते हैं जिससे हृष्ट पुष्ट होते हैं यह मूंगफली अमरीका में दो प्रकार की पाई जाती है जिसमें एक प्रकार की जमीन में जड़ से फलनेवाली और दूसरी डाली पर फलने वाली है फलनेवाली मूंगफली छोटी होती है परन्तु उसकी गिरी भारी होती है अगर एक बुशल मूंगफली छिलका रहित की जावे तो जमीन के अन्दर फलनेवाली में ११ सेर डालियों वाली में १५ सेर निकलती हैं सम्पूर्ण पैदावार का पौन हिस्सा फलनेवाली ही होती हैं यह मूंगफली जो डालियों में फलती है युक्तप्रांत के उन हिस्सों में पाई जाती है जो हिस्सा खाड़ियों के पास में है यहांपर लोग कपास को कीड़ों से हानि पाकर अब मूंगफली ही तैयार करते हैं जो कपास से अधिक फायदे मंद समझा जाता है जमीन के नीचे रहनेवाली मूंगफली भून कर खाते हैं और ऊपर फलनेवाली मिठाई इत्यादि में डाली जाती है कुछ अमरीका के हिस्से में बादाम के स्थान पर भी व्यौहार किया जाता है कई वस्तुयें मूंगफली से बनाकर उनमें बादामका सत मिला देते हैं जिसे बादाम की वस्तुओं के नाम से बेचा जाता है दक्षिणी अमरीका के निवासी मूंगफली से ऐसे उत्तम आहार बनाते हैं जो उत्तरी अमरीका वालों को अभी तक ज्ञात ही नहीं है हमारे आर्यावर्त में अभी नाम मात्र को मूंगफली की खेती होती है विदेशों से तेल आता है जिससे साबुन आदि बनाये जाते हैं और खाने के लिये भुनी मूंगफली या कच्ची का व्यौहार होता है बम्बई आदि शहरों में इसे शक्कर के जलाव में डालकर पट्टी अवश्य बनाते हैं और कोई व्यौहार नहीं किया जाता है।

पाक आदि जो औषधी के बनाये जाते हैं इनकी गणना औषधी में नहीं है बल्कि आहार में वह पौष्टिक होते हैं उनमें कीमत भी अधिक लगती है अगर उनके साथ में सिर्फ मूंगफली का पाक बनाकर सेवन किया जाय तो बहुत कम लागत है और गरीब से गरीब व्यक्ति खा सकते हैं और बल वीर्य की वृद्धि करके पुष्टि लाभ कर सकते हैं।

भुनी मूंगफली की अपेक्षा कच्ची मूंगफली खाना अधिक लाभ दायक है अगर अर्श रोगी व्यक्ति अपने आहार में नित्य आधपाव तक खाकर जल पी लिया करें तो कुछ दिन में अर्श मिट जायगा और कब्ज दूर होकर शरीर हृष्ट पुष्ट हो जायगा।

क्षय रोगी के लिये पोष्टिक आहार कम हजम होता है अगर कैसा भी जीर्ण व्यक्ति हो उसे सिर्फ मूंगफली और मुनक्का का खूब सेवन करावें तो सम्भव नहीं है कि फिर किसी प्रकार क्षय रह सके इसके सेवनसे ३-४ दिनमें शरीरका गुरुत्व बढ़ जाता है इसके सेवन कालमें जलके स्थानमें गोड़ा दुग्ध देवे तो अति उत्तम है प्रमेह वीर्य क्षीण कमजोरी वाले कृश व्यक्ति जो दिन रात औषधियों की फिक्र में रहते हैं और औषधि सेवन करके अपने पेट को कूड़ा खाना बना डाला है वह सब चिकित्सा

छोड़ कर मूंगफली कच्ची ५ तोला से एक सेर तक खा जावें और दुग्ध घी आदि यथावश्यक सेवन करते जांय तो मनोऽभिलाष लाभ होगा।

बच्चों के शरीर में मूंगफली का तैल नित्य मलने से बच्चे हृष्ट पुष्ट होकर बढ़ते हैं मूंगफली का चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी बनाकर उसमें डाल देवे कि एक दम सूखा खूब कड़ा पाक बन जाय इसे बच्चों को खिलाने से खुशी से खाते हैं और उन की शक्ति बढ़ती जाती है ताकतवर शरीर हृष्ट पुष्ट होता है।

मन्दाग्नि ग्रसित व्यक्ति यदि आहार त्यागकर मूंगफली और लवण सेवन करे तो दो तीन दिनमें सब व्याधि जाती रहेगी।

उदर रोग वालों के लिये मूंगफली सेवन करना फायदे मन्द है।

अस्तु कहां तक कहा जाय इस में इतनी शक्ति है कि दूषित मल को रेचन के द्वारा निकाल कर शक्ति शरीर में बढ़ाना प्रारम्भ कर देती है इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि अन्य देशों के समान अपने देश में भी इसकी पैदावार अधिकता से करके इसके गुणों से फायदा उठावें गाय भैंस बकरी सब हत्यारे लोग काट काट कर भक्षण किये जाते हैं दूध घी मिलेगा नहीं इससे इसीके द्वारा भारतवासी व्यक्ति भी अपनी रही सही शक्ति की रक्षा करें।

लम्बे लोह खरल

यह खरल लम्बे (किश्ती नुमा) चिकने खूबसूरत मय घोटने की उत्तम मुसली सहित रहते हैं इनकी लम्बाई १५॥ इञ्च चौ० १० इञ्च ऊंचाई ५। इञ्च वजन में २५ सेर के है। २ सेर औषधि सरलता पूर्वक घोटी कूटी जा सकती है इसके सिवाय तप्त खरलादि पारदीय संस्कार इन्हीं खरलों द्वारा किये जाते हैं प्रत्येक खरल का मूल्य १०) इन्हीं खरलों के आधे साइज व वजन के भी खरल तैयार किये गये हैं जिनका मूल्य ५) रु० है खरल का आर्डर देते समय पेशगी अवश्य भेजें नहीं तो आर्डर रद्दी समझा जायगा पता पूरा मय रेलवे स्टेशन के होना चाहिये।

मँगाने का पता

श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

इटावा यू० पी०

अनुभवसार

वीर्य स्तम्भन और हमारे सिद्ध प्रयोग

(१) वीर बहूटी (लाल धोरिया) का बारीक चूर्ण कर पानी में घोलें जब पानी महावर के रंग का हो जावे तब मोटे खद्दर के ४ अंगुल कपड़े को अच्छी प्रकार तर करके छाया में सुखा लेवें तदनन्तर बत्ती बनाकर दीपक में घी डालकर तर करके सम्भोग समय प्रज्वलित करें जब तक दीपक जलता रहे तब तक स्तम्भन रहे विषय की इच्छा शांत न हो।

(२) अरबी घोड़े की पूंछ का बाल और गदहे की पूंछ का बाल लेकर बेरकी गुठली में छिद्र कर दोनों बालों को पोह दें और सम्भोग समय जितना कड़ा सह सकें लिंग मूल में बांधें जब तक बंधा रहेगा मैथुन समय वीर्य स्खलित न होगा।

(३) भादों या माघ मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को अर्ध रात्रि समय कलिहारी की जड़ कमर में बांधने से वीर्य स्तम्भन होता है।

(४) मोर शिखा और विष्णुकान्ता की जड़ शनिवार को निमंत्रण देकर इतवार को ले आवे तदनन्तर रेशमी वस्त्र में बांधकर कंगन की तरह हाथ में बांध कर स्त्री रमण करे तो वीर्य बंधेगा होता है।

(५) पुष्य इतवार को वस्त्र रहित होकर इन्द्रायन (इडोरन) की जड़ लाकर त्रिकुटा का चूर्ण सम भाग मिला कृष्णा गाय के दूध से गोली बनावे बेर प्रमाण एक गोली खाकर एक गोली मुखमें रक्खे तो रति कर्म में वीर्य स्तम्भन होय)

(६) सहदेई के बीज पान के साथ खावे तो वीर्य स्तम्भन होय।

(७) कमलगटा को शहद के साथ पीसकर नाभी में लेप करे जब तक नाभी पर लेप रहेगा तब तक वीर्य स्तम्भन रहेगा।

(८) जंगली सूकर की दाहिनी डाढ़ लेकर वस्त्र से कमर में बांध कर स्त्री रमन करने से वीर्य स्तम्भन होगा।

(९) स्यामो तुलसी के बीजों को पान में रख खावे रस चूसता रहे तो वीर्य स्तम्भन होता है।

(१०) काला डुंडुभ नाम का सर्प की हड्डी लेकर कमर में बांधकर रमन करने से वीर्य स्तम्भन होता है जबतक कमर से हड्डी न खोली जाय।

(११) एक पल (छटांक भर) खस को लेकर एक तोला सोंठ मिलाकर काढ़ा बनाकर सोलहवां हिस्सा गुड़ मिलाकर

पी जावे और विषय करे तो वीर्य स्तम्भन होय जब तक नमक न खाय।

(१२) कच्ची सुपारी को लेकर उस को बीच से खाली कर आक (मदार) का दूध भर दे ऊपर मुख पर मोम लगा मुख में रखने से वीर्य स्तम्भन होता है।

(१३) छछूंदरको अंडकोषको चमड़े की ताबीज में भरकर कमर में बांधे जब तक कमर में रहेगा तब तक वीर्य स्खलित नहीं हो सकता पेट की तरफ लाने से स्खलित होगा।

(१४) संभोग के समय कौंच की जड़ डेढ़ अंगुल प्रमाण लेकर मुखमें रख रस चूसता रहे तो वीर्य स्तम्भन होय

(५) कुचले को असली शराब में पीसकर बीसो नखों पर लेप कर सूखनेपर सम्भोग करे तो वीर्य स्तम्भन होय।

(१६) मैथुन के समय कुत्ते की पूंछ काट लेवे जिसमें पूंछ में कुछ हड्डी हो उसे चालिस दिन जमीन में गाड़ देवे जब मांस गलकर हड्डी रह जावे तब निकाल कर छेद कर सूत पोहदे कमर में बांधकर स्त्री रमण करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

नोट—जब कुत्ता कुत्तिया एकमें जुड़े हों तभी पूंछ काटना चाहिये।

महावीरप्रसाद वैद्य पिंडखर

अदृश्य लोकांजन गुटिका

तोष रचित रति मंजरी पुस्तक में निम्न लिखित दो गुटका लिखे हैं उन्हें हम पाठक बन्धुओं के सन्मुख प्रस्तुत करते हैं।

गुटका नं० १

खंजन ज्यावे पींजरे सात पख शिर होय।
तादिन दृष्टि न आवई धरे पींजरे टोय॥
छाती पर कंचन मढ़े लीजे मुख में ताहि।
सो सब को देखत फिरे कोउ न देखे वाहि॥
१०२८

गुटका नम्बर २

असित मँजारिहि प्याइये गोघृत जबहिलाइ
सो अरु तेल कपास को कांचो दीप बराइ
अमां अर्द्ध निशि मनुजकी खोपरी काजरुपारि
अंजन नैनन कीजिये कंचन ताहि निहारि
१०३०

नोट—नं० २ गुटका का ठीक २ अर्थ नहीं मालूम होता है यदि कोई अनुभवी सज्जन उक्त गुटका का संगत अर्थ कर सकें तो सूचित करने की कृपा करें। पुस्तक में "सो अरु तलं कपास को कांचो दीपक बराई" ऐसा पाठ है।

श्रीनिवास रामरत्न शास्त्री

बनौषधि अपूर्व योग

जिस नुसखे द्वारा एक ही दिन में नपुंसकत्व नाश होता है जिसकी स्त्री पास हो उसी को इस प्रयोग द्वारा लाभ उठाना चाहिये।

पलाश की जड़ को तेज चाकू से चीर फाड़कर नीचे एक कटोरी रक्खे और ऊपरसे आग उपलोंकी सुलगादे जिससे उस जड़का अर्क कटोरे में गिरे।

उसको पानमें लगाकर एक मराठीका फूल (गुलबा सरूप) करके बीड़ा बनवा खा जावे एक ही रात को लाभ होगा।

एस० पी० क्षत्रिय एम० एस० एम०

कर्णामृत तैल

आध पाव काले तिल का तेल लेकर उसमें एक जिंदा घोंघा (शाम्बूक) का मांस समूचा डालकर धीमी धीमी आंच से उक्त मांस को बिलकुल जला दें तदनन्तर तेल को छानकर बोतल या शीशीमें रख छोड़ें।

यह तेल रोजाना २-३ बूंद कान में डालने से कर्णशूल, कर्णनाद, कर्णस्राव बाधिर्य रोग नष्ट हो जाता है।

पारद गुटिका

१ पारद का धट (बरगद) के दुग्ध में १ प्रहर खरल करने से पारद बधन होता है। इच्छानुसार जितनी बड़ी चाहें गोली बनाकर तैयार कर नीबू स्वरस में १ प्रहर रखली करने दें।

गुण—यह गुटिका वीर्य को १ अथवा २ घटे तक रोकने की शक्ति रखती है।

अजीर्ण बिन्दु

तेल लौंग ३० बूंद

तेल सोंठ ३० बूंद

तेल अजवायन ३० बूंद

विधि—तीनों को मिलाकर शीशी में रख छोड़े। मात्रा तीन बूंद से ५ बूंद तक; बच्चों को १ बूंद मिश्रीमें रखकर खिलावें इसके अतिरिक्त दांत दर्द, बिच्छू का काटना, तत्तैया दंश जन्य विष आदि को शीघ्र ही नष्ट करता है।

अध्यापक रामप्रसादजी वैद्य

(१) अर्श पर—सुर्मा श्वेत २ मा गुड़ पुराना ८ तो० की २१ गोली बना सुबह १ बटी खाय, खटाई व वादी वस्तु से परहेज करे। दोनों प्रकार की अर्श जाय।

(२) मृगीपर—काला खनखजूर लेकर सुखाले समान भाग काली मिर्च मिलाकर घोट कर नस्य बनाले मृगी के समय नस्य दें मृगी जाय।

(३) उदावर्तपर—जवायन ४ माशा शाम को भिगो दे प्रातःकाल ६ मा० मिश्री मिला छानकर पी जाय उर्द्ध वात जाय।

(४) क्षय कांस पर—बांसाके पीले पत्ते का क्वाथ नमक छोड़ पिये क्षय का जाय।

(५) अरुचि पर—कागजी नीबू काटकर अग्निपर धरे पीपर इलायची सोंठ मिलाकर पीसकर बुरकदे क्षुधा बढ़े ज्वर नाश हो जी की मिचली जाय।

(६) क्षुधा सागर—सौंफ, धनियां जवाक्षार, सज्जीक्षार, मूलीक्षार करेला का स्वरस सुखाया हुआ अदरख का सत, नीबू का सत, काला नमक, सेंधा नमक सांभर नमक, बिड नमक सब समान भाग मिलाकर बोतल में धरे। खुराक ३ माशा उदर के समस्त रोग नाश हों।

(७) खुश्की व पित्त की दवा—नीबू का रस ५१ हरड़ ५। नमक लाहोरी १ तो० जवाक्षार १ तो० बनारसी राई १ तो० अजवायन खुरासानी १ तो० सबको कूट पीसकर बोतल में धरले खुराक १ तो०।

(८) हाजमा व आमाशय शोधक— छोटी हरड़ व बड़ी हरड़ सम भाग ले कौंचुले जल में उबाल कर पानी निचोड़ ले फिर घी में भून ले १॥ पाव मिश्री मिलादे खुराक १-२ तोला बलानुसार खाय, बादी बवासीर मुर्दा बदहजमी को दूर करे।

(९) तिला ध्वजभंग—स्याह धतूरेबीज मूसली १-१ तो० मेंदा लकड़ी १ तो० जमालगोटा १ तो० कुचला १ तो० कूट छानकर ३ माशा लेप कर ऊपर बंगला पान बांध दे। जब छाले आवें तब नैनू लगावे ऐसा ही तीन बार करे लाभ होगा।

आयुर्वेदाचार्य पं० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी (गौतोना)

नामधारी वैद्यराज

वैद्यक पढ़ो है नां, मढ़ो है लोभ लालच में,
माठा सोंठ धनियां पियावे महा ज्वर को।
बैठे निज बैठक विशाल माल गल्ले डार,
सौगुनो कसाई तेन माने देव गुरु को॥
कविराम महरी वह ति वाके गहरी सु,
वैद्य अगर हरी हमारो मन मुरको।
जाने निज नारीको न भेद धावें पर नारी हेत,
गहे जाकी नारी सो सिधावें सुरपुर को॥

"माधुरी" से

अनुभव सिद्ध योग और

भारतीय वैद्यों की अनुदारता

यदि एक अद्भुत बात कोई ज्ञात मुझ को हो गई।
तो हाय! मेरे साथ ही संसार से वह खो गई॥
उस को छिपा रक्खूं न मैं तो कौन पूछेगा मुझे।
कितने प्रयोग प्रदीप इस अनुदारता से हैं बुझे॥

पाठको! आज हम उन प्रयोगों को आप की सेवा में परीक्षार्थ रखना चाहते हैं जिन प्रयोगों को कि पं० मुंशीरामजी वैद्य कुटवस्थ जि० मुजफ्फरनगर निवासी ने अधिकांश में वैद्यों को हर एक प्रयोग १०-१० रुपये लेकर विक्रय किया है और हमने भी ४००) रु० व्यय करके मुंशीरामजी को कार्यालय में रखकर येनकेन प्रकारेण प्राप्त किये हैं (कारण कि वह इन प्रयोगों को प्रायः गुप्त ही रखते हैं और हमने पितामह प्रपितामह आदि के अनुभवसिद्ध बतलाते हैं। हम इन प्रयोगों को अवकाश न होने के कारण अपने अनुभव में नहीं ला सके हैं) पाठकों से विनय है कि इन को समयानुसार शीघ्र ही अपने २ अनुभव में लाकर गुणागुण 'राकेश' में प्रकाशनार्थ भेजें।

योग नं० १

सन्तान जीवन प्रयोग—माजूफल, मूंगफली, बड़ी इलायची, देवपुष्प, समुद्रफल, जायफल, नागकेशर, प्रत्येक ४-४ माशे, शिवलिंगी बीज १॥ तोला।

विधि—इन समस्त औषधियों को फराश के स्वरस में घोट कर गोली बनावें गर्भ स्थापित रहने के ६१ वें दिन १-१ गोली गर्भिणी स्त्री पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बछड़े वाली गाय के मिश्री से मीठे किये हुए दूध से खिलावें।

गुण—जिस स्त्री के कन्या ही कन्या प्रसव होती हों उसके अवश्य ही पुत्र होगा।

योग नं० २

गर्भ शिशुपाल बटी—समुद्र फल, देवपुष्प, नागकेशर, मयूरशिखा बूटी, शिवलिंगी बीज प्रत्येक १-१ तोला विनया बीज ३ माशे।

विधि—समस्त औषधियों को कूट कपड़ छानकर गुलाब के अर्क में चने प्रमाण बत्ती बनावें।

सेवन विधि—गर्भ के तीन महीने

समाप्त होने के बाद अर्थात् ६० वें दिन ६ बीज शिवलिंगी के गौ दुग्धसे निगलवावें तदनन्तर दूसरे दिन अर्थात् चतुर्थ मासके प्रथम दिन ५ बीज शिवलिंगीके प्रातःस्नान करके गौ दुग्ध से खावें। दूसरे दिवस ४ बीज शिवलिंगी के पुनः उपरोक्त अनुसार गौ दुग्ध से खावें। तदनन्तर हर रोज १—१ गोली सुबह ऊपर कहे हुए योगकी गौ दुग्ध से स्नान करके खावें और बराबर प्रसव दिवस तक इसी विधिसे खाती रहें। दिन में सोना, मांसाहार खटाईखाना त्यागे रहें।

नोट—जब बच्चा प्रसव होगा। उस वक्त बच्चे के दोनों हाथों में १-१ गोली और १-१ शिवलिंगी बीज निकलेगा। यही गोली व बीज दाई बच्चे को साफ करते वक्त हाथ से निकाल ले उसे स्वर्ण तावीज में बांधकर गले में पहिना देने से बच्चा दीर्घायु महा बुद्धिमान होता है। ध्यान रहे कि गर्भिणी स्त्री को जो दुग्ध दिया जावेगा वह काली गाय वर्ण में हो और बछड़ा से ब्याई हुई हो अगर बछड़ा गाय १ ही वर्ण के हों तो विशेष उत्तम है मृतवत्सा स्त्री को भी यह योग लाभदायक है।

योग नं० ३

गर्भ स्थापन—श्वेतनील बीज १ टंक, हींग असली १ टंक, सनका बीज १ टंक गुड़ ६ माशे।

विधि—सब चीजें पृथक २ कूट पीस कर गुड़ में मिलाकर बेर प्रमाण बटी बनावें तदनन्तर जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उसी दिन से यह काढ़ा पिलावें।

तिल १ तोला, नकछिकनी १ तोला पुराना गुड़ २ तो० तीनों चीजोंको ६ छटांक जल में औटावें जब आधा शेष रहे पिलावें बाद को उपरोक्त गोली प्रातःकाल शीतल जल से खिलावें १ मास पर्यंत—बाद को द्वितीय मास में रजोधर्म हो तब २ गोली सुबह शीतल जलसे दें और हर रोज शाम को उपरोक्त क्वाथ १ सप्ताह तक दें।

आठवें दिन स्त्री संपूर्ण शृंगार से अलंकृत होकर तथा घृतयुक्त खीर आदि सात्विकी भोजन कर रात्रि दूसरे पहर में कामोन्मत्त होकर गर्भ स्थापन (सम्भोग) करें अवश्य ही गर्भ स्थापित होगा।

नोट—स्त्री व पुरुष दोनों को २ मास पूर्व से ही ब्रह्मचर्य रहना चाहिये।

योग नं० ४

कुमार संजीवन प्रयोग—एक पोथिया लहसन ६ माशा पुराने गुड़में लपेटकर गोली बनावें। आस पास चारों तरफ १—१ शिवलिंगी बीज चिपटा दें। स्त्री को गर्भ के ६१ वें दिन स्नान कर सात्विकी उत्तम भोजन करा शाम को पूर्वाभिमुख बैठकर शीतल जल से १ घूंट से गोली खिलादें। तदनन्तर ८१ वे दिन फिर इसी क्रियानुसार यही उपरोक्त गोली खिला दें अवश्य ही जिन के कन्या ही का या प्रसव होती हैं पुत्ररत्न पैदा होगा।

योग नं० ५

विचित्र तैल—बंडालबीज १ तोला, कटुतुम्बी बीज १ तोला, कड़वी तोरई बीज १ तोला, हुलहुलबीज १ तोला, इन्द्रायन बीज १ तो०, राई मकड़ा १ तो०, पमार के बीज १ तो० जमालगोटा १ तो० पीली सरसों १ तो० श्वेत कनेर, नीलाथोथा, नौसादर १—१ तो०।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों को यवकुट करके आतशी शीशी में भर कर पाताल यन्त्र से तैल निकालें।

सेवन विधि—इस तैल में फाहा रुई का तर करके जिस मनुष्य की छाती पर रक्खेंगे वमन होगी नाभि पर रखने से दस्त होंगे।

नोट—जब वमन वो दस्त बन्द करना चाहें शीतल जल से हाथ पैर धो डालें बस शांति होगी।

योग नं० ६

कालान्तक रस—शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध कनकबीज काले, काली मिर्च, शुद्ध हरताल तवकी, स्वर्ण माक्षिक भस्म।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों को कूट कपड़ छान करके वृहत्दंती के क्वाथ की ३ भावना दें बाद को सुखाकर १-१ रत्ती प्रमाण बटी बनावें।

मात्रा १—१ गोली अद्रक के स्वरस में दे।

गुण १५ प्रकार के सन्निपातों पर विजय होती है। विशेष कर प्रलापक सन्निपात में, जिसमें रोगी चारपाईसे उठ कर भागे, वृथा बके, स्वेद प्रवाह हो, अधिक क्या कहें मरणासन्न अवस्था में भी १००) रु० की बाजी लगाकर रोगी को आराम कर सकता है।

योग नं० ७

आनन्द मङ्गल घृत—मोम उत्तम १२ तोला, मालकांगनी तेल २० तो० पीपरमेंट १॥ तो० दालचीनी का तैल ६ माशे ज़ैफल संदल १ तो० कपूर १ तो० लौंग तैल १ तो०।

निर्माण विधि—प्रथम मालकांगनी के तैल को आगपर रखकर गर्म करें और मोम डाल दें जब सब मोम व तैल एक हो जावे शेष सब चीजें प्रथम ही १ शीशी भर कर हिल कर लें ये हिल की हुई दवायें उसी हिले हुए मोम तैल में मिला दें और चौड़े मुंह की शीशी में भर कर रख छोड़े बस आनन्द मंगल घृत तैयार है।

सेवन विधि और गुण—किसी भी प्रकार का सिर में दर्द हो इसमें से थोड़ा सा लेकर सर में मल दीजियेगा दर्द सब काफूर होगा।

वाचक वृन्द! स्थानाभाव से ये सिर्फ सात ही प्रयोग इस वक्त प्रकाशित किये जाते हैं। शेष और भी महत्वपूर्ण योग चमत्कारी तीसरे वर्ष से प्रकाशित किये जायंगे। धैर्य रक्खें। विनीत—मैनेजर

नोट—यह वही प्रयोग हैं जो हिन्दी य व रूप में उपहार रूपमें मुंशीरामजी रक्खे थे।

—सम्पादक

वैद्यवरों के उत्तर

उत्तर प्रश्न नं० ४

द्विवेदी जी ! आप क्षुद्र रोगों में से कुनख नामक रोग है। इस रोग में आप जब नाखून जमकर कुछ बढ़ने लगे तो नाखूनके अन्दर अर्थात् नख और मांस के मध्य में पक्का सुहागा नारियल जल में पीस कर गीला २ प्रवेश हर तीसरे रोज करें सुबह शाम को त्रिफलादि घृत मीठे गो दुग्ध में डालकर पिलावें।

तदनन्तर यह प्रलेप करें पीछे जो नाखून बढ़ें उसे आसानी से काट दें।

प्रलेप प्रथम से ही एक सजल नारियल लेकर उसमें उत्तम चावल भर दें और ३-४ दिन तक सड़ने दें, जब दुर्गंध आने लगे, तब निकाल कर मय गरी के पीसकर प्रलेप करें इस प्रकार कुछ ही दिवस पश्चात् कुनख रोग नष्ट होगा। कभी कभी नारायण तैल या पिंडतैल से स्निग्धता करते रहें।

—सम्पादक

उत्तर प्रश्न नं० ४

महाशयजी ! आप कुनख रोग के शमनार्थ हर दिवस गर्म जलमें किंचित किसी प्रकार का स्नेहन मिलाकर सेचन किया करें बाद को चक्र तैल अर्थात् कच्ची घानी का तैल का फाहा रख कर तर रक्खें।

नाखून को पिछली ओर बढ़नेसे काट दिया करें और नाखून के भीतर आगे की ओर से थवक्षार भर दिया करें नाखून जुड़कर सुडोल निकलेगा। खानेमें गोजाना काकोल्यादि घृत मिश्री दुग्धके साथ पिलाया करें।

आयुर्वेदज्ञों का दास—
एक राजेश प्रेमी

उत्तर प्रश्न नं० ५२

पं० धरणीधरजी शास्त्री, मैंने अन्त्र वृद्धि पर अधिक तो नहीं ३-४ रोगियोंपर निम्न योग प्रयुक्त कर पूर्णतया लाभ पाया है।

अंत्रियों को अंड कोष से एरंड तैल लगाकर ऊपर को चढ़ा चमड़े की चार अंगुल चौड़ी पट्टी जो कि डाक्टरोंके यहां मिल सकती है, लेकर कमर में नाभि से नीचे पेड़ पर जितना रोगी सह सके कस कर बांधे—तदनन्तर अंडकोष और आन्त्र उतरने के मार्ग जो दोनों तरफ मोटे २ स्नायु से दबाने पर प्रतीत होते हैं उनपर

आमाहल्दी २ तो०, फटकरी सफेद २ तो० पीली तमाखू का धूरा ४ तो०, तीनों को बारीक पीस कपड़ छानकर शूकर वसा में सान कर गर्म करें और एरण्ड पत्र पर लेपन कर गर्म २ बांधे।

रात को भेषजरत्नावलीके वृद्धि रोगाधिकार का बृहत् सैंधवादि तैल अंडकोष तथा पेडू पर मर्दन करते रहें।

और खाने में प्रातःकाल गंधर्वहस्त तैल भेषजरत्नावली का १ से २॥ तोला पिलावें शाम को बृहत दंती घृत ६-६ माशे गौ दुग्ध में मीठा डालकर प्रथम वृद्ध वाधिकावटी खाकर ऊपर से पियें उपरोक्त पट्टी १—१ सप्ताह बाद खोलें अगर अन्त्र उतरे तो उपरोक्त अनुसार ही चढ़ा कर पट्टी बांधा करें।

रामनरायण श्रीवास्तव

उत्तर प्रश्न नं० ६०

'घवर बरुआ' यह नाम पुस्तककारकी प्रांतीय भाषा में नाम है। निघंटु में इसके नाम का पता नहीं लगता है।

आप पुस्तकार के प्रांतके वैद्यों से पता करें।

उत्तर प्रश्न नं० ४६

शुद्ध अष्ट संस्कारित पारद १ तो० शुद्ध गंधक १ तो० शुद्ध सिंगिया विष १ तो०, सोंठ, मिर्च, पीपर प्रत्येक का कपड़ छन कर चूर्ण एक २ तो०।

विधि—प्रथम पारद गंधक की चमक रहित कज्जली कर शुद्ध सिंगिया मिला १२ घंटे तक खरल करे फिर त्रिकुटे का चूर्ण जो ऊपर लिखा है एक में मिलाकर खरल करे फिर कृष्ण भृंगराज स्वरस की सात पुट देकर रत्ती प्रमाण गोली बनाले।

सेवन विधि—१ गोली सुबह शाम या आवश्यक समय पर जलसे रोगलास वायु का सिर दर्द पित्तका, कफका, सन्निपातका रक्त का, क्षयका, आधासीसी, शंख का कनपटी, अनंतवातका, कृमिज, सूर्य के साथ २ घटने बढ़नेवाले दर्द ५ मिनट में दूर होते हैं इन गोलियों का रस तथा लेप भी सिर दर्दमें उपकारी है, इसके अलावा शरीर के किसी भाग में दर्द हो इसे सेवन कराइये इसका 'समीर पन्नगरस बटी' नाम है, अनुभूत है इसके अलावा समस्त वायुरोग कफ के रोग पित्त के रोग शमन होते हैं वद्यवर अपने अनुमानसे रोग बल विचार कर मात्रा घटा बढ़ा सकते हैं।

ले० भन्डारीलाल वैद्यराज पो० सिनगौड़ी

उत्तर प्रश्न नं० ३६

कडुवी तुम्बी की जड़का स्वरस १ पाव समुद्र फेन १ छटांक, मैनसिल शुद्ध १ छटांक, धतूरे का स्वरस १० तो० अर्कपत्र स्वरस ५ तो० तिल का तेल ११ सवा सेर उपरोक्त दवा और स्वरस तेल में डाल पचावे तेल मात्र रह जाने पर छान कर बोतल में रख ले इसी तेल को रात को कर्ण में भर लेना, कुछ दिनों में कान के समस्त रोग कर्णनाद, बाधिर्य, कर्णस्राव

(कान बहना) कर्णकण्डू, कर्णकृमि कर्णनासूर और बधिरता आदि समस्त रोग समूल नष्ट होते हैं इसे हमने अनेक रोगियों पर अजमाकर लाभ उठाया है

भण्डारीलाल वैद्यराज सिनगौड़ी

उत्तर प्रश्न नं० ३८

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोहाभस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध तूतिया ताम्बा भस्म, कौड़ी भस्म, बावची बीज, बिड़ नमक, शंख भस्म, चित्रक की जड़, भुनी हींग, कुटकी, जवाखार, सज्जी, सुहागा, शुद्ध कायफल, रसौत, जयंती, सर्व औषधियां सम भाग।

बनाने की विधि—प्रथम पारा गंधक की कज्जली कर समस्त भस्में हींग, नमक सज्जी सुहागा, मैनसिल, तूतिया मिला २४ घंटे खरल करे फिर काष्ट औषधियों का प्रथक २ कषाय पूर्ण उसीमें मिला कर गिलोय स्वरस अदरख स्वरस कुमारी स्वरस प्रत्येक की एक २ दिन भावना देकर १ रत्ती प्रमाण की गोली बनाले।

सेवन विधि—१ गोली सुबह १ गोली सांझ को जल से रोगनाश, यकृत, प्लीहा उदर रोग मंदाग्नि, अजीर्ण, शूल गुल्म अग्नमांस, अरुचि आदि समस्त उदर के रोग नाश होते हैं यह शास्त्रोक्त महामृत्युञ्जय रस है, इसमें मैंने अपने अनुभव से कुमारी स्वरस में १ भावना देना लिखा है जिस प्रकार मैं बनाता हूं और अनेक प्लीहा रोगियों पर भी इससे लाभ होता है।

नोट—इस दवा से किसी प्रकार की कमजोरी नहीं होती इससे बल बढ़ता है रसायन है।

वैद्यराज भंडारीलाल

उत्तर प्रश्न नं० ६१

महा क्षुधा वर्द्धक "हाथ भरा भूका" मेरा एक बहु धार का अनुभूत योग यह है बना कर काम में लावें तो उस पेटेन्ट भरा भूखा के सदृश ही गुण पायेंगे।

उत्तम मोटी घृत कुमारीका गुदा २५ सेर हर्र छोटी कूट कर १ सेर, अजवायन कूट कर १ सेर, सोंठ १ सेर, चित्रक २० तो० पिपलामूल २०, तो० सुहागा चौकिया २० तो०, कसीस १० तो०, नोसादर ४० तो०, कैथ का गूदा २॥ सेर, गुड़ १० सेर लेकर चिकने मिट्टी पात्र में डाल कर लहम उठावे, आसव सदृश मद्यवत् गंध आने लगे। ६-७ दिन बाद या जब फेन उठके लगेलब भभके में डाल कर अर्क खैंचें, इस अर्क का स्वाद मध्यवत् होगा।

इस अर्क १६० तोला में चित्रक, अजवायन जीरा दोनों, हींग भुनी, नोसादर, सुहागा फूला, पोदीना सूखा यवक्षार, इमलीक्षार, नीबू सत्व, अमलवेंत, निशोथ, सज्जीक्षार कालीमिर्च, अपामार्ग क्षार, सोंठ, धनियां मूली क्षार, पलाश क्षार, सैंजना क्षार, मंडूर भस्म, १-१ तोला नमक पांचो २५ तो कूट पीस कर उपरोक्त अर्क में हल करे और ६० बूंद शंखद्राव १० तो० जमीरद्राव मिला कर रख छोड़े २-३ दिन बाद

१ या १॥ तोला की मात्रा में सेवन करे बडी भूख लगेगी एवं खरिष्ट से गरिष्ट भी जन क्षण मात्र में जीर्ण होजायगा।

उत्तर प्रश्न नं० ४३

बाजपेयी जी! सूर्यतापी शुद्ध शिलाजीत असली २०) रु० सेर तथा असली ब्राह्मी बूटी २) सेर आप श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी से मंगालें।

—मैनेजर

उत्तर प्रश्न नं० ५८

मूंगा का भस्म १ तो० वंग भस्म ६ माशा, इलायची बड़ी दाना ६ माशा वंशलोचन बाढ़िया ६ मा० सब वस्तुओं को पीसकर बारीक करें डेढ़ माशा फकी लेकर ऊपर से ताजा गऊ का दूध मिश्री मिला पावभर पिये दोनों वक्त पथ्य से गरम वस्तु आदि न खावे तो सब शिकायतें दूर हो जायगी।

वैद्य महावीरप्रसाद

उत्तर प्रश्न नं० ५१

लोध ३ तो०, रसोत ३ तो०, जीरा सफेद ३ तो० फिटकरी फुलाई ३ तो० हल्दी ३ तो० मुलहटी ३ तो० काली मिर्च १॥ मा० अफीम ३ मा० नीलातूतिया भुना ३ मासा महीन पीस डालो और पोस्त अफयून ५- आना भर लेकर १॥ सेर पानी में औटाओ आधा रहनेपर उतार लो छान लो ऊपर की सब दवाइयां पानीमें डाल बोतल भर लो चार रोज बाद छान कर बोतल भर लो ५- आने भर उम्दा उड़नेवाली शराब उसमें मिलाओ चौथे आठवें रोज छान लो नहीं बिगड़ेगी।

उत्तर प्रश्न नं० ३६

दारु हल्दी का क्वाथ ४ छटांक
दशमूल का क्वाथ ४ "
मुलहटी का क्वाथ ५।
कदली मूल स्वरस ५।
तिल तेल ५।

इन सब को एकत्र करे इसके बाद कूट कड़वा, बच, सहजने के बीज, सौंफ, रसोत, देवदारु, जवाखार, सज्जीखार, बिड़ नमक, सेंधा नमक, रसकपूर, सिंदूर, ये सब ६-६ मा० लेकर चूर्ण कर पानी में डालकर कलक करके उपर्युक्त सब क्वाथ तेल में मिलाकर पिलावे, जब तेलमें खूब फेन आने लगे और लुगदी कड़ी हो जाय उसकी बत्ती सी बटने लगे तब नीचे उतार ले और ठंडा होनेपर छानकर रक्खे।

सेवन विधि—प्रथम कानको साफ करले तब रुई तेल में भिगोकर कान में फिरा लिया करें इस ही प्रकारसे ३४ बार करना चाहिये।

नोट—कुंअर रणधीरसिंहजी आप उपरोक्त योग तैयार कर सेवन कीजिये यह योग शतशोऽनुभूत है आराम होनेपर प्रतिज्ञानुसार २५) राकेश की सहायतार्थ देने के लिये तैयार कर रखिये यह सत्य है।

उत्तर प्रश्न नं० ६२

उत्तम बाढ़िया धोया हुआ साफ कलमी

शोंग आधपाव और पिपरमेंट की पत्ती का स्वरस एक पाव निकाल साफ पत्थर के खरल में घोटे जब गाढ़ा हो जाय तब २ तोला कपूर डली देकर घोंटे, बाद टिकिया बना सुखा ले फिर दो चीनी मिट्टी के प्याले ले एक तोला कपूर और लेवे चूण कर प्याले में बिछा दे फिर टिकिया रख दूसरा प्याला उसके ऊपर उल्टा धर संधि कपड़ मिट्टी से बंद कर सुखा ले। फिर चूल्हेपर धर नीचे मोमबत्ती या घी का दीपक कनिष्टांगुली के बराबर बत्ती डाल जलावे। ऊपर के प्याले के ऊपर भीगा कपड़ा रख दे ठंडा होनेपर खोले प्याले में कलम मिलेगी यही पिपरमेंट का सत है।

रामप्रसाद अध्यापक

उत्तर प्र० नं० ३०

महाशय जी जो वस्तु उक्त वैद्य ने खिलाई उसका वर्णन आप आपने प्रश्नमें कर चुके हैं। उसके अतरिक्त और कुछ नहीं है यदि दूसरी दवा से रोगी नपुंसक हुआ होता तो आप की दवा से आराम न हो सकता अतः सिद्ध है कि हलदी व तेंदू का चूर्ण सम भाग में बकरे के मूत्र की सप्त भावना देकर खुश्क किया कामनासार्थ दिया गया इससे काम तो जाता रहा परन्तु नपुंसकता उत्पन्न हो आई

उत्तर प्रश्न नं० ३१

इलायची छोटा, केसर कश्मीरी, तज-कक्कमी, जावित्री, तेजपात, लौंग, रायफल कमी मस्तंगी, अकरकरा, भंग, सोंठ, पीपर सब १-१ माशा कस्तूरी १ तो० मिश्री १ तो० सब को कूट पीस कपड़ छनकर सोने से पूर्व ३ माशा चूर्ण ३ मा० शहद मिला चाट जावे ऊपर औंटाया हुआ गो दुग्ध ½ भर पीले ५ बादाम छोड़कर और खटाई न खाँय ईश्वरेच्छा से आप की इच्छा पूर्ण होगी। सेवन पश्चात् गुणागुण प्रकाशित करा देना।

उ० प्रश्न नं० ३३

आक के दुग्ध में नमक कंकड़ी छोड़कर छाया में धर दीजिये तीसरे रोज नमक निकाल कर छान लें जमा दूध कपड़े में रह जायगा पानी अलग हो जायगा।

आप तमाम स्त्रीहा रोग में हितकर होगा।

उत्तर नं० ३५

महाशयजी! इस रोग का नाम सूर्यावर्त आथ है यह वात दोष से उत्पन्न होती है गर्म जल में ऊनका कपड़ा भिगोकर दिन में तीन चार बार धो दिया करें। अच्छा हो जायगा। पेटेन्ट योग मुझे ज्ञात नहीं इसका उत्तर पेटेन्ट कम्पनीवाले दें।

उ० प्रश्न नं० ३७

महाशय! धातु द्रव करने की पुस्तक का नाम तो मुझ ज्ञात नहीं। हां उत्तम खालिस तेजाब गंधक आंबलासार लेकर उसमें सोने के वर्क गेर दे कुछ समय बाद शीशी हिला दे अर्कस्वर्ण तैयार हो जायगा १ औंस तेजाब में १ तो० वर्क छोड़ दें। अर्क तैयार होनेपर उत्तम संजीवनी सुरा

१० औंस में मिला लें यह उत्तम बल प्रद कास नाशक स्वर्णसव बन गया इसकी मात्रा १ बूंद से १५ बूंद तक है रोगी के बलाबल अनुसार दें।

उ० प्रश्न नं० ५५

सिंगिया विष की धूनी देनेसे अर्श फूल आवेंगे जब अर्शांकुर शूल नष्ट हो जांय तो उस पर संखिया अर्क दुग्ध में फेंटकर लगा दीजिये मसे कटकर गिर जांयगे। घावपर शतधौत घृत व कास गरी सफेदा मुरदासंख मैनसिल, गंधक अमलतास मिलाकर लगावे। फिर न उभरेंगे।

उ० प्रश्न नं० ५८

राकेश भाग २ अङ्क १२ के सम्पादकीय लेख से ज्ञात होता है कि रामदीन को यह शिकायत नहीं है अतः उत्तर देना वृथा है।

उ० प्र० नं० ५६

(१) भूफली का दूसरा नाम धहुफली भी है इसका वर्णनसे अगस्त मासके राकेश में प्रकाशित हो चुका है। धनौषधि विज्ञान में वही देख लें।

(२) खूबकलां का दूसरा नाम खाकसी यह तिब्ब निघण्टु में आया है।

(३) इसका उत्तर ३७ नं० में दे चुके हैं देख लें।

(४) उटंगन—यह लता जातिकी वनस्पति झाड़दार होती हैं पंजाब में व सिंध में अधिक होती हैं १ या १॥ फुट ऊंचा वृक्ष होता है, पत्ते आध इञ्च चौड़े लम्बे अनीदार होते हैं इस पर बोंड़ी लगती है बोंड़ी से बीज छुटे २ रोमयुक्त निकलते हैं प्रायः बीज काम में आते हैं।

डा० पं० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी

उ० प्रश्न नं० ४६

अ-पत्थर का चूना सात दिन पानी में भिगोकर पानी से निकाल कर सुखा लें ऐसा चूना पाव तोला छोटी इलायचीदाना पाव तो० नोसादर पाव तो० नकछिकनी पाव तो० कायफल १॥ तो० कपूर देशी १ मा० सबका बस्त्रगाल चूर्ण कर चावल भर सूंघने से शिर दर्द जाता रहेगा।

ब-अन्ने कंडा की राख शुंठी, सेंधा नमक यह तीन समान भाग घिसकर लगाने से शिर दर्द उतर जाता है।

क-एक तोला गौ घृत में सात दाना इलायची का जलाकर यह घी छान लेवे इस घी में कायफल को पत्थरपर घिस कर नस्य लेने से आराम होता है।

उ० प्रश्न नं० ५२

मैनफल लगाना, भांग की पटी बनाकर लगाना एरंड तेल दूध के साथ देना अगर, शंखभस्म पान में देना बड़ी अच्छा है।

रविशंकर शास्त्री

नोट—प्रश्न नं० ३६ व ४० का नम्बर सिल सिले में छूट गया है अतः पाठक उत्तर की प्रतीक्षा न करें। सम्पादक

आपसी वार्तालाप

श्रीमान् !

पृष्ठ ३०६ पर राजकिशोरजी वाजपेयी ने जो प्रश्न किया है उसका उत्तर यह है कि अम्बाशंकर का लेख तो मैंने देखा नहीं कारण प्रथम वर्ष की पूरी फाइल मेरे पास नहीं है। और सुधानिधि का भी अङ्क हम न देख सके थे। केवल अपना अनुभव ही दिया परन्तु वाजपेयीजी को तो दोनों विधियां ज्ञात हो चुकी हैं और ऋतु भी पञ्चकर्म का है अतः वाजपेयीजी दोनों विधियों की परीक्षा कर निर्णय कर लें। केवल द्रव्य ग्रहण करने ही में विभेद हैं शेष सब समान हैं। जिस विधिसे गुण प्रकट हो वह प्रकाशित करा दें परन्तु यदि अम्बा शंकर के अनुकूल द्रव्य ग्रहण की जाय तो यह भी लिखा जाय कि छाल की मोटाई कितनी, व भीतर की कितनी व बाहर की कितनी मानी जाय।

डा० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी

श्रीमान् पं० धरणीधरजी ! सादर वन्दे—

असन्तुष्ट होने की कोई बात नहीं, मैंने आपके दोनों कारणों का प्रथम प्रश्न में ही अनुमान कर लिया था और यथोचित उत्तर सं० ४-५ में दे चुका हूं। यह योग मैंने करावादीन इहसानी के हिन्दी अनुवाद से लिया था और अपने अनुभव में ७५ प्रति शत ठीक पानेपर प्रकाशित कराया मान लिया १ को फायदा नहीं किया तो योग व्यर्थ नहीं है। पुनः अन्यान्य व्यक्ति पर प्रयोग करिये लाभ प्रद होगा। कभी २ चन्द्रोदय वसन्तमालती आदि बहुमूल्य औषधियां फल प्रद नहीं होतीं तो क्या यह कहें कि योग ठीक नहीं।

डा० रामेश्वरप्रसाद द्विवेदी

प्रिय सहयोगी पाठकोंको विदित हो कि बहुत से लोगों में बड़ा भारी फरेब हो रहा है कि इनामका लालच देकर जनतासे अमूल्य वस्तुएं खींचकर अपना रोजगार कर धन कमाते हैं जैसे कि पं० विश्वेश्वरदयालु वैद्यराज बर लौकपुर (इटावा) ने अपने 'अनुभूत योगमाला' १५ जनवरी सन् ३० में लिखा था कि जिनके पास रसायन शास्त्र हो तो भेज दें १०१) रुपया इनाम दिया जायगा मैंने लिखा कि हमारे पास शौनोदक रसायन शास्त्र हैं अगर सवा सौ प्रतियां छपने पर दें, और २ पेज में हमारा विज्ञापन और फोटो ब्लाक में मंगा और लेखक में हमारा नाम और प्रकाशक

मैं अपना नाम ये कुल विषय मंजूर हों तो रजिस्ट्री द्वारा भेज देवे संपादकजी ने कहा कि मंजूर है आप भेज दो मैंने भेजा तब उन्होंने ५० प्रतियां देने को स्वीकार किया। और कहा कि फोटो ब्लाक भेजो फोटो ब्लाक लगा दिया जायगा, मैं फोटो के लिये कानपुर गया आठ रुपये खर्च किये और ४॥ रु० फोटो उतराई दी गई तिसमें ६ रुपये मनीआर्डर और फोटो चित्र संपादकजी के पास भेजा गया ब्लाक तो जरूर तैयार हुआ मगर न तो फोटो ब्लाक लगाया और न भूमिका हमारा लिखा न लेखक में हमारा नाम दर्ज किया। पुस्तक मुद्रित कर १० प्रतियां हमारे पास भेजी हैं पहिले यह भी लिख चुके थे कि आप की पुस्तक से मुझे धन कमाने की इच्छा नहीं मैं अनुभूत माला के ग्राहकों को मुफ्त दूंगा इन बातों को अब भूलकर विज्ञापन छपा डाला है कि "जो २ ग्राहक अनुभूत माला के बनावेगा उसको वह रसायन शास्त्र मुफ्त दिया जायगा। और कीमत आठ आना रक्खा है ५०० प्रतियां छपी हैं मंगालो पिछली बातें सब भूल गये दूसरे १५ अप्रैल पृष्ठ ३०८ नं० २१२ मैंने प्रश्न लिखा था मगर उत्तर दाताओंने उत्तर नहीं [illegible] संपादकजीने उत्तर दे दिया [illegible] अपनी पुस्तकोंके १०१ [illegible] प्रान मुझसे पूछते हैं [illegible] समझ पड़ा कि [illegible] कुछ उत्तर न दिया आप संपादकजी एक पत्र और भेजा था कि आप रसायन दिखा जाव मैं १०१ रुपया दूंगा मैंने उत्तर दिया था कि अगर मेरी पुस्तक की सारी विधियां बिलकुल गलत हों तो मैं दूना २०२ रु० दण्ड दूं, बादमें रसायन प्रकाशित कर डाला है।

मैंने यह शोधोदय रसायनके विषयोंपर हजारों रुपये खर्च किये हैं २० वर्ष के परिश्रमको फल स्वरूप यह पुस्तक अच्छी मिली थी बड़े २ महात्माओं के वचन [illegible] जिनका सेवा करते [illegible] हुए और मैंने सब [illegible] देने का वादा किया था। [illegible] को पहुँचीं बाकी आशा बिफल हुई।

(२) इसी तरह [illegible] कृष्णजी वर्मा के यहां भेजी थीं जिन्हों कोकशास्त्र अनुभूत माला में छपा डाला बाकी पुस्तकोंका पता नहीं है।

(३) वैद्य जगन्नाथप्रसाद मंत्री आगरा के यहां रति मंजरी और कोकमंजरी, वैद्यक शास्त्र, योग दर्पण, रजिस्ट्री द्वारा भेजा आठ माह हो गये खतका जबाब तक नहीं देते प्रस्तकें और प्रतियां देना तो दूर रहा।

(४) रामचन्द्र वैद्य इटावा के यहां "बाल चिकित्सा" नवीन रची हुई भेजी जिसको १॥ साल का अरसा हुआ न पुस्तक मिली न पत्र मिला न छपी हां इतना तो सब ने लिखा है कि रजिस्ट्री द्वारा आप की पुस्तकें मिली बाद मैंने कई पत्र भेजे उत्तर किसी ने नहीं दिया।

नोट—भारतीय रसायन शास्त्र

जो मेरा लेख है। उसमें अभी कई त्रुटियां बाकी हैं और अशुद्ध छपा है आशा है कि दुबारा 'राकेश किरणमाला' बरालोकपुरसे बहुत जल्द प्रकाशित कराऊंगा अभी चार छै पुस्तकें मेरे पास और भी हैं जो प्राचीन अप्रकाशित हैं मगर इसी तरह की धोखेबाजी समझ के प्रकाशित होनेमें त्रुटि बड़ी इसी तरह हमारे भारतवर्ष की वस्तुएं गुम हो गईं। अगर 'राकेश' की इसी तरह सचाई बनी रहेगी तो सारी पुस्तकें प्रकाशित करा दूंगा।

उपरोक्त महानुभाव पुस्तकोंकी बाबत समुचित उत्तर दे अनुग्रहीत करें।

निवेदक—

वैद्य महावीरप्रसाद पिंडवर

पो० बिसडा (बांदा)

अंक १२ वर्ष २ में सम्पादक महोदय "प्रश्नों में धूर्तता" शीर्षक लेख निकला खेद का विषय है कि उक्त महाशय यह रोग २ साल से था। और अभी तक मौजूद है। इस रोग में शरीर सूख कर कांटा हो गया है और मुझसे प्रश्न छपाने को कई बार कहा तब मैंने भेजा। प्रश्न छपते ही आपके एक मित्र * पटवारी साहब ने आपको सूचना दिया। आपके मित्र वर पटवारी साहब ने आपको एक पाक भी बना कर दिया था मगर उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। अब यदि महाशय को उक्त रोग न निकले तो मैं ५०) दण्ड प्रदान करूं। भवदीय—

ठा० रणधीर सिंह

---

* रामदीन श्रीवास्तव के नाम से प्रश्न स्वयं ठा० रणधीरसिंहजी ने प्रेषित किया था प्रकाशित होते ही रामदीनजीका पत्र आया कि मुझे यह रोग नहीं, तथा उक्त पटवारी साहब ने राकेश आफिसमें आकर साक्षी दी कि यह प्रश्न रामदीनसे सम्बन्ध नहीं रखता है। ठाकुर साहब को मर्ज है।

रामदीनजी, ठाकुर सा० पटवारी सा० आपस में परस्पर मित्र हैं अतः निर्णय कर सत्य उत्तर भेजें किसके रोग है आया फार्मेसी में आकर निर्णय करावें कारण कि पारस्परिक वैमनस्य होना अच्छा नहीं ताकि प्रतिवाद छापा जा सके।

सम्पादक—

बेरोजगारों को शुभ संदेश

क्या आप बेकारी से या गुलामी की जिंदगी से बेजार हैं? यदि हैं, तो डाक द्वारा पब्लिक व्यापारी वर्गों से व्यवहार कर घर बैठें, बिला मांडवलेक दर यहां १०० सौ रुपया तक द्रव्य उपार्जन कर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कीजिये। वि० मा० ६ आनों के टिकट भेजें।

श्रीराम तुलसीरामसिंह क्षत्रिय

आर्य हितैषी कार्यालय, जीवनपुरा (दक्षिणपुर)

भगवान धन्वन्तरि का दिव्य दर्शन



स्वस्थदेव !

मुझ रुग्ण ने आपकी आराधना करते करते अपने रुजाप्रसित शरीर की आयु के विपुल वर्ष व्यतीत कर दिये, परन्तु आप को आरोग्यदाता पुण्य प्रतिमा का दिव्य-दर्शन न मिला।

आपके मतानुयायी धुरंधर विद्वान कुलविद्य एवं कृतकार्य महानुभावों से आप के दिव्य दर्शन पाने हेतु पूजन अर्चन आदि विधि विधान जानने की विनय की। गहन से गहन खोज की, प्रशान्त सप्त तथा सरितः सरवरों के सन्निकट बैठकर अनेकानेक त्रयोदशियों में आपकी चतुर्भुजी मूर्ति के दर्शनार्थ प्रतीक्षा की, मनकी संकल्प विकल्प मयी प्रेरणा से विकट विपिनस्थली मध्यस्थित कन्दुकाकीर्ण कुश-काश आच्छादित कुटिया में बैठकर विद्वानों द्वारा वर्णित धन्वन्तरि स्तोत्र नियमानुकूल यथाविधि जप कर ध्यान किया।

कायिक, व मानसिक रुजोंसे पीड़ित, आपकी प्रेम मूर्ति दर्शन लिप्सा पूर्ति होती न देख, आपके प्रेमोन्माद में मधुरवादिनी वीणा बजा २ कर दीन-हीन भिक्षक के वेश में आप की गुण गरिमा का गान करते हुए देश देशान्तरों एवं दुर्गम स्थानों में भ्रमण कर आपके दर्शनार्थ छान बीन की, किंतु सब ही व्यर्थ !

स्वथ देव ! तुम न मिले। आशादेवी किनारा कर गई, पिशाचिनी निराशा के काले २ मेघ-भारव आकाश में मंडराने लगे नैराश्य के प्रहारों तथा शारीरिक, मानसिक अस्वस्थता एवं परिश्रमसे शरीर जर्जर हो असमर्थ हो गया। सन्ध्या काल था। एक शांति मय स्थानमें आंखें बन्द कर बैठ गया। और आपकी माधुरी मूर्ति का चिन्तवन करने लगा। एकाएक ध्यान में आया कि नवरात्रों में विन्ध्यक्षेत्र में आयुर्वेद मर्मज्ञ भगवान धन्वन्तरिजी के उपासक वैद्यवर वीर×इन्द्र जीने मेरी साङ्गोपाङ्ग दशा देख स्वथदेव के दर्शनार्थ सिद्धि विधि बताने का वचन दिया था अतः आज ही पत्र द्वारा पूंछूँ इस विचार की पुष्टि कर उक्त वैद्यजी का डाकसे पत्र प्रेषित कर दिया।

पत्रोत्तर आया। उन्होंने लिखा है कि इसी आगामी कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को भगवान् स्वस्थदेव धन्वन्तरिका प्रादुर्भाव हुआ था। अतः इसी तिथि को समस्त दिवस वृथा रखकर सन्ध्या को भगवान धन्वन्तरिजी की महा प्रसादी (हलुआ) तैयार कराकर उत्तम कुलके द्विज देव

पाठी ब्राह्मणद्वारा भगवान धन्वन्तरिजी की अवतार कथा विधि पूर्वक श्रवणकर तदनन्तर शांति में उसी समय मन वचन से स्वस्थदेव के दर्शन की प्रबलेच्छा एवं आह्वान करते हुए मन मन्दिर में हृदयासन बिछाओ, अञ्जलि देने निमित्त निर्मल अश्रु जल से भर कर दो नेत्र घट रक्खो। स्नेह सूत्र में भव्य-भाव कुसुमों से गुम्फित कर एक मञ्जु माला तैयार करो। धारणा की धूप, भक्ति का दीपक, प्रेमका नैवैद्य इसी प्रकार और भी आवश्यकीय सामग्री प्रस्तुत करो, भगवान स्वस्थदेव धन्वन्तरिजी हृदयासन पर पधारेंगे। बस दर्शनेच्छा की पूर्ति करते हुए रुजादि व्याधियों से निवृत्त होते हुए नव्य-भव्य शरीर पाओ। और प्रशादी का अर्द्ध भाग ब्राह्मण को देकर शेष बाल बच्चों वृद्धों को बटवाकर स्वयं पाओ।"

पत्र पढ़कर कुछ धैर्य बंधा। परन्तु निराशा के प्रहारों से हुई मर्मान्तक पीड़ा ने मुझे मूर्छित कर दिया।

कुछ समय पश्चात नेत्र खुले तो क्या देखता हूं कि उडुगन-मंडली मध्यस्थित राकेश देव अपनी अमृत मयी चारु चंद्रिका की वर्षा कर मेरी थकावट को दूर कर रहे हैं। सौरभित शीतल-मंद समीर मेरे शरीर पर अति से थपकियां देता हुआ पीड़ा हर रहा है।

मैं चौंक पड़ा, और विचारा यह सेवा कैसी! मैंने इसके साथ क्या उपकार किया है। हृदय तन्त्री झनझना उठा, और एकाएक मेरे अन्तस्तल हृदयासनपर भगवान धन्वन्तरि का आयुर्वेदीय उच्च कोटिका पाक्षिक "राकेश" लिये हुए चतुर्भुजी भव्य दर्शन, साथ ही एक शब्द प्रतिध्वनित हुआ।—

"बरालोकपुर इटावा प्रांत से उदय होनेवाले निःस्वार्थ प्रेमी 'राकेश" पाक्षिक पत्रको अपनाकर, संसारी व्याधि अर्थात् जरा-रुज भयसे निवृत्त हो जाओ, मेरी शक्ति इस में पूर्ण रूपेण वास करती है।"

ऐ वास्तविक प्रेम! उसी क्षण मेरे नेत्रों के समक्ष से अज्ञानान्धकार की जवनिका दूर हुई, और आपका दिव्य दर्शन एवं "राकेश" पत्र पाकर मनोवांछा पूरी हुई।

ले०—भगवान धन्वन्तरिका

प्रेमी 'इन्द्र"



प्रयोग परीक्षा फल

१—राकेश वर्ष २ उदय १ के अनुभवसार का योग नं० ५ गुलाबी फटकरी वाला चर्मरोगों, भगंदर, नाड़ी व्रण, पर मैंने अजमाया अच्छा और आशा तीत लाभ करता है।

२—इसी अंकोदय के इसी स्तम्भ का प्रयोगन० ३ "मस्तिष्क रंजक तैल" अच्छा है सर दर्द को फौरन नष्ट करता है।

३-राकेश वर्ष २ उदय पहिला पृष्ठ ३२ पर जो उष्ण वात (सुजाक) पर प० मुन्शीराम का जो खाने व पिचकारी लगाने की दवा कविता बद्ध लिखी है वह नई सुजाक पर अच्छा लाभ करती है। परन्तु पुरानी सुजाक में लाभ दायक सिद्ध नहीं हुई।

४—राकेश वर्ष २ उदय २ का अनुभवसार स्तम्भ का पृष्ट ६३ पर आधाशीशी पर नश्य अव्यर्थ साबित हुआ। तथा इस के नीचे "सर्व व्रण नाशक मलहम" व्रणों पर अच्छा लाभ करता है।

५—राकेश उदय २ वर्ष २ का पृष्ठ ६५ पर उत्तर प्रश्न नं० ७ को योग विशेष चमत्कारी है काश्यं रोग पर रामवाण है।

६—राकेश वर्ष २ उदय ३ का अर्द्धांगारी नटेश्वरसे १-१ पार्श्व का ज्वर तो दूर नहीं होता हां! कभी २ प्राकृतिक ज्वर में वेश में आकर तथा नेत्रों से अश्रुपात करते हुए देखा गया है।

मनोरायण श्रीवास्तव

राकेश उदय ४-५ वर्ष २ का अनुभवसार पृष्ठ ११५ नं० १-२ विशेष लाभ दायक इसी स्तम्भ का नं० ७ जो कि आतशक पर बस्ती प्रयोग है बहुत उत्तम प्रयोग ही नहीं बल्कि रत्न है। इसके विशेष गुण लिखने का वचन जो दुर्गाप्रसादजी वैद्य ने भविष्य में गुणागुण प्रकाशित होने पर दिया है लिखें ऐसे ही उत्तम प्रकाशित और भी करें।

राकेश वर्ष २ उदय ६ के अनुभवसार के प्रयोग जो कि पं० रामेश्वरप्रसाद जी की उदारता का परिचायक है आशातीत बहुगुण कारी हैं।

"क्लीवताङ्क" पृष्ठ १६८ की श्वेत मिंगरफ भस्म नपुंसक पर आशातीत लाभ करती है। प्रो० पं० बालकरामजी को कोटिशः धन्यवाद। इसके अतिरिक्त डा० इन्द्रदत्तजी शर्मा राजवैद्य के कृतीवता नाशक प्रयोग, तथा पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र स्नेह आयुर्वेदाचार्य प० रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी कोनोना, कविराज शशिकांतजी वैद्यशास्त्री के नपुंसकता नाशक योग विशेष लाभ दायक हैं।

ग्राहक नं० ६६५

"क्लीवताङ्क" पृष्ठ २४२ का अनुभूत पाक व तिला. यह दोनों प्रयोग साधारण नपुंसक के वास्ते लाभ दायक हैं।

राकेश वर्ष २ उदय ६-१० पृष्ठ २६२ का प्रयोग 'सार्सा परेला का दादा" वास्तव में रक्त दोष पर चमत्कारी गुण करता है। डा० इन्द्रदत्तजी शर्माको धन्यवाद है। इसी अंक के अनुभवसार स्तम्भ के प्रयोग उदरारि अर्क तथा सौंदर्य वर्धन [illegible], लेप से जुलाब लाभकारी है।

राकेश वर्ष २ उदय ११ पृष्ठ ३०८ [illegible] रक्तदोष पर प्रलेप कहीं लाभ करता है [illegible] नहीं—इसी अङ्क के पृष्ठ नं० ३१० का उत्तर नं० ५७ ऊर्ध्वरक्तपित्तपर अच्छा लाभ करता है।

प्रयोग परीक्षक वैद्यराज

राकेश वर्ष २ उदय १२ के अनुभवसार स्तम्भ का "रक्त पित्त और हमारानुभव" बहुत ही अच्छा है कविराज प० शशिकान्तजी वैद्यशास्त्री का यह लेख वास्तव में उत्तम और चिकित्सा में सहायक है। आशा है कि इस स्तम्भ को आप सदैव ही अलंकृत करते रहें।

निवेदक—

रामनारायण वै० भू० नुनहड़

ग्राहक अनुग्राहकों से निवेदन

और वार्षिक चन्दे की वी० पी०

पाठको! हम गत अगस्त के अङ्क में इस परिशिष्टाङ्क की मय उपहार के वी० पी० वार्षिक चन्दे की भेजने की सूचना दे चुके हैं।

परन्तु इस "परिशिष्टाङ्क को द्वितीय वर्ष के समस्त ग्राहकों को पाने का अधिकार था। अतः ग्राहक महानुभावों को सादर सूचित किया जाता है कि आगामी १५ दिसम्बर को राकेश के "प्रोहाङ्क" की मय उपहार के वी० पी० वार्षिक चन्दा ३) रु० की की जावेगी।

आशा है कि पाठक क्षमा करते हुए धैर्य रक्खें। प्रार्थी—मैनेजर

वैद्यवरो—

अगर आप को किसी भी शल्य चिकित्सा के साधनों एवं शास्त्रों की आवश्यकता हो तो हमसे पत्र व्यवहार करें।

श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी बरालोकपुर

(इटावा यू० पी०)

वैद्यसंसार समाचार

निखल भारत वर्षीय २१ वां वैद्य सम्मेलन

आगामी अखिल भारत वर्षीय वैद्य सम्मेलन आगत दिसम्बर मास में मैसूर में होगा-तैयारी बड़ी धूम धाम से होरही है निश्चित तिथियों का तथा सभापति निर्वाचन की सूचना शीघ्र ही प्रकाशित की जावेगी।

मुरादाबाद में धन्वन्तरि जयंती

यहां कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी रविवार को दोपहर के दो बजे से वैद्यराज पं० घनानन्दजी पंत के स्थान पर भगवान धन्वन्तरिजी की जयंती मनाई गई।

भगवान धन्वन्तर का पूजन, स्तवन, हवन आदि कार्य बड़े उत्साहसे सम्पन्न हुए पश्चात पंत जी महोदय ने कांतलोह चुम्बक, खर्पर, शख, तिक्त कोषातकी विषतिन्दुकणी आदि औषधियें दिखाईं। और उनके संदिग्ध गुणों का वर्णन किया। वैद्य सकल पांडे नैपालीजी ने भी कई औषधियों की चर्चा की, आगत वैद्यराजों का पंतजी की ओरसे पान सुपारी आदि के द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया तथा श्रीमती किरणदेवीजी वैद्या की ओर से मिठाई बांटी गई। जयंती महोत्सवमें सम्मिलित होनेवाले सज्जनों में निम्न लिखित नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वैद्यराज पं० भवानीशंकरजी शर्मा वैद्यराज पं० घनानन्दजी पंत, वैद्यराज पं० टीकादत्तजी पंत, वैद्यराज पं० बद्रीप्रसादजी शर्मा, वैद्यवर पं० सकल पांडे नैपाली, वैद्यवर पं० बुद्धसैनजी शर्मा, वृद्ध वैद्य लाला बसन्तरामजी जैन, प्रो० पं० रामसेवकजी पांडे गायनाचार्य इत्यादि—

भवदीय—
वैद्य शंकरलालजी मन्त्री
आयुर्वेद प्रचारिणी सभा

स्वदेशी वस्तुयें अपनाओ

युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के आगरे वाले अधिवेशन में, अनेक प्रस्तावों के साथ एक निम्न प्रस्ताव भी पास हुआ है।

"प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की अंतरंग सभा युक्तप्रान्त के वैद्यों से अनुरोध करती है कि वह स्वयं खद्दर पहिनें और विदेशी अन्य वस्तुओं का बहिष्कार करें। खास तौर से इङ्गलैण्ड की वस्तुओं का— मन्त्री



द्वितीय वर्ष समाप्ति और भावी प्रोग्राम।

इस परिशिष्टाङ्क से शिशु "राकेश" अपनी आयु के दो वर्ष समाप्त कर रहा है। जिन परम पुरुष श्री धन्वन्तर भगवान् की कृपा दृष्टि से इस वर्ष भी निर्विघ्नता पूर्ण राकेश मासिक से पाक्षिक होता हुआ, उन्नति शिखर पर आरोहण कर रहा है। उनके पावन पादार विन्दों में शिशु "राकेश" का शाष्टाङ्ग प्रणाम।

वाचको! इन दो वर्षों के अन्दर "राकेश" ने शिशुता आमोद प्रमोद से आयुर्वेद एवं आयुर्वेद प्रेमियों की जो सेवा की है। वह राकेश के गुणग्राही पाठकों को भली प्रकार विदित है। अतएव इसकी पुनरावृत्ति आवश्यक ही प्रतीत होती है।

हम जानते हैं कि 'राकेश' में अभी उन्नति प्रसार की बहुत कुछ गुंजायश है अर्थात् बहुत कुछ उन्नति क्षेत्र अवशिष्ट है। इस उन्नति का क्रम और गति क्या होगी। इसके उत्तर में हम "राकेश" की अब तक के उन्नति क्रम की ओर दयालु पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

कदाचित् कोई दयालु सज्जन 'राकेश' की अब तक की हुई उन्नति को सन्तोषहित उन्नति न समझें। पर ध्यान रहे कि ऐसा समझना अस्तित्व एवं वास्तविकता को अस्वीकार करना है। हां, यह सच है कि 'राकेश' ने बड़े २ विशेषाङ्क निकाल कर आयुर्वेद संसार में तहलका नहीं मंचाया। किंतु जो कुछ किया है। वह

मन्दगामी किन्तु निश्चित—

चरितार्थ कर दिया है। मेरे इस कथन की सत्यता "राकेश" के जन्म समय के आकार प्रकार और कलेवर की, और वर्तमान स्थिति की तुलना करने पर विदित हो जायगी।

इस "परिशिष्टाङ्क" में द्वितीय वर्ष गताङ्कों के शेष लेख तथा प्रश्नोत्तर आदि सभी शेष विषय पूर्णित हो प्रकाशित रहे हैं। सिवा दो लेखों "वैद्य व सामाजिक व्यवस्था" व "विशूचिका" के प्रो० रामकृष्णजी वर्मा द्वारा लिखित हैं

उक्त लेखक प्रोफेसर साहब को

बार साधारण पत्र सूचना एवं रजिष्टर्ड पत्र द्वारा शेष लेख भेजने को निवेदन किया गया। परन्तु अबतक लेख पूरित होकर प्रकाशनार्थ न आ सके! इन लेखों की अपूर्ति का इस पारिश्रमिक अंक में भी रहना, हमें खेद जनक हो रहा है।

पाठकों की पाठ्य विषय की रोचकता में अड़चन हुई उसका महान् दुःख है। हमें—और उसका उत्तर दायित्व है श्रीमान् प्रो० रामकृष्णजी वर्मा पर—

साथ ही प्रो० साहब ने शल्य तन्त्र आदि अन्वेषण पूर्ण विषय का विवेचन कर जो "राकेश" को उज्वलित किया। उसके लिये अवश्य ही धन्यवाद के पात्र हैं।

पुण्यभागी हैं वह सज्जन, जिन्होंने समय २ पर परामर्श दे दुखित रोगियों के जटिल रोगों को दूर कर स्वस्थता प्रदान की। उचित ही नहीं बल्कि पूर्ण साहाय्य है उन उदार मनानुभाव ग्राहकों का, जिन्होंने ग्राहक वृद्धि कर 'राकेश' को इस योग्य बनाया कि उसने इतने अल्प समय में निजी प्रेस प्रकाशनार्थ खोल, अपनी नींव (बुनियाद) अटल और सुदृढ़ बनाली।

सराहनीय हैं। 'राकेश' के वह अनुभवी विद्वान आयुर्वेदीय कृतविद्य एवं कृतकार्य सु लेखक, जिन्होंने अपना अमूल्य समय परोपकारार्थ दे, उदारता तथा सौजन्यता का परिचय दिया। हम 'राकेश' के लेखकों से आशा करते हैं कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार उत्तमोत्तम अन्वेषण पूर्ण लेख दे, राकेश को किसी कोटि में मिल सकें, ऐसा बनायेंगे, कारण कि किसी भी पत्र का उन्नत होना उसके सुलेखकों पर ही निर्भर है।

हां, निर्धारित समय पर निकलना भी पत्रोन्नति का मूल साधन कहा जा सकता है। जिसके लिये "राकेश" कर्मी २ निश्चित समय पर निकलने में विफल सा रहा। जिसके लिये कतिपय महानुभाव ग्राहकों ने अधैर्य हो कह डाला कि "क्या राकेश का प्रकाशन स्थगित है" ऐसे अधीर सज्जनों के प्रति हमारा निवेदन यही है कि "जिस भांति नभ मण्डल में राकेश अन्धकार को नाश कर निश्चल उदय होता है और होता रहेगा। उसी भांति आपका प्यारा आयुर्वेदज्ञों का सेवक यह "राकेश" आयुर्वेदीय नभ मण्डल में रुजान्धकार नष्ट करता हुआ सदैव ही उदय होता रहेगा।

अब रही यह बात कि "राकेश" भविष्य में क्या क्या करेगा।

इस विषय में हम यही कहना चाहते हैं कि पाश्चिमीय चिकित्सा के बजाय स्वदेशी चिकित्सा प्रचार करना, एवं आयुर्वेद के चमत्कारिक लुप्त प्राय गौरव को पुनः विशाल रूप से प्रकाशित करना, संदिग्ध औषधियों को पुनः विद्वानों द्वारा सत्यासत्य निर्णय करा सर्व साधारण को बताना, पशु चिकित्सा विषयक अनुभवी

चिकित्सा और क्रियायें बताना, दुष्प्राप्य जड़ीबूटियों का चित्र सहित उत्पत्ति स्थान एवं वैद्यवर्गों को सुलभता से प्राप्त हो सकें, इस विषय में पूर्ण उद्योग करना, शास्त्रीयविषयों का क्रमानुसार प्रकाशित करना, और पाठकों की सेवा में मासिक के बजाय पाक्षिक होकर पहुंचना, हर तीसरे मास किसी एक कठिन दुश्चिकित्स्य रोग पर बहुत शतशोऽनुभूत इलाज एवं विशेष विषय लेकर विशेषाङ्क रूप में अद्भुत छटा उदय होना आदि उपयोगी विषय पाठक तृतीय वर्षारम्भ आगामी इसी जनवरी में सजधज के साथ राकेश में देखेंगे।

इस उल्लेख धारणा को हम हृदय में निश्चित करते हुए मातेश्वरी जगदम्बा श्री भगवतीजी से विनय करते हैं कि वह हमारे इस शुभ कार्य को अपनी कृपा कोर कर्तालका प्रपात से पूर्ण करने की शक्ति दें!

—सम्पादक

"मेदो रोग की एक अजब बूटी"

और उसका अपूर्ण प्रकाशन

पाठकों ! उपरोक्त शीर्षक जो गताङ्क में प्रकाशित हो चुका है। यह लेख पं० कृष्णप्रसादजी त्रिवेदी बी० ए० द्वारा लिखित "बूटी दर्पण" में प्रकाशित हो चुका है। रामप्रसादजी पद्यपि यह लेख भेजते समय हमें सूचित नहीं किया था कि हमने "बूटी-दर्पण" से अथवा कहीं से अविकल उद्धृत करके भेजा है। अन्यथा हम प्रकाशित नहीं करते।

अब चूँकि रसयोगी "बूटी दर्पण" में यह लेख पूर्ण प्रकाशित है। इसलिये हम इसे अब अपूर्ण ही छोड़ते हैं। जिन महानुभावों को पूरा देखना हो वह उक्त पत्र में देख लें।

× × × × ×

पाठक ध्यान दें—

गतांक वर्ष २ उदयाङ्क ७ में "शुक्रजन्य" शीर्षक लेख प्रोफेसर बालकरामजी शुक्ल शास्त्री द्वारा लिखित जो प्रकाशित है उसके अन्त में भूल से प्रूफरीडर ने 'अपूर्ण' शब्द लिख दिया है-लेख वास्तव में पूर्ण छप चुका है। —सम्पादक



स्वर्ग में वैद्यक सनसनी

(गत द्वितीय अङ्क से आगे)

अधिकांश मृत मनुष्य इस भांति के भी पाये गये। जो गर्म स्वभावसे विपरीत अंगरेजी औषधियां खाकर जीवन लीला समाप्त कर आये हैं। इनकी रूह आत्मावे कुनेन आदि पश्चिमीय विषोक्त औषधियां इतने परिणाम में व्याप्त हैं। जिनका ज़हर पुनर्जन्म में भी शांत होता नहीं दीखता है।

इसके अतिरिक्त प्रेतात्मा विभाग इतना बढ़ रहा है कि मुझे हर दोनों पर शासन करना कठिन हो रहा है।

इसका कारण अकाल मृत्युयें हैं। जो अधूरे वैद्यों तथा अनपढ़ डाक्टरों की आट शराट औषधियां देने का दुष्परिणाम है। ऐसे मृतक हमारे दूतों को बड़ा ही तंग करते हैं। जब यह मरणासन्न आत्माओं को लेने जाते हैं तब बड़ी खींचातानी पड़ती है कहते हैं कि हम तो जिन्दा हैं न मृतक अतः वह अपनेको त्रिशंकुवत् बतलाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह भूत पिशाच आदि बन भूलोककी बासियों को तंग करते हैं। और उनका इतना रूप परिवर्तन कर देते हैं कि हमारे दूत उनको मृतक समझ कर ले आते हैं। परन्तु चेतनावस्था बाद उन्हें पुनः वापिस करना पड़ता है। अतः बड़ी आपत्तिमें पड़ा हूं

(यमराज)

यमराजकी विज्ञप्ति सुन भूलोकी पितर वैद्यों ने तथा ऋषि वैद्यों को आश्चर्य हर्ष तथा शोक भी हुआ। इसके बाद में भूलोक की रिपोर्टें सुनाई गई। जो स्थावर से सूक्ष्म ही में समाप्त की जाती। अन्त में सभी वैद्यों तथा पितरों व ऋषियोंने अन्तिम निर्णयकर सर्व सुधार सूचना भेजी, जो सदेश रूप में है। उस समय उसको भगवान धन्वन्तरि सभापति ने सूचीकृत कर भेजने की सम्मति दी।

यह अखिल पितर वैद्य तथा ऋषि वैद्य सभा अपने पौत्र वैद्यों से अनुरोध करती है कि वह निम्न नियमों का पालन करें। यदि वह ऐसा करने में असफल होंगे तो हम लोग उन अवज्ञा किये

वैद्यों का श्राद्ध तर्पण आदि ग्रहण न करेंगे। जिसके कारण उनकी प्रतिष्ठा भी उनकी हमारे द्वारा समाप्त हो जायेगी।

१—"प्रत्येक वैद्यराज तभी वैद्यराज कहलाने योग्य है। जब कि वह आयुर्वेद शास्त्र निर्मित औषधियों ही पूर्ण रूप से ग्रहण करेगा। एवं उसमें पारंगत होगा। यदि न हो तो वह वैद्यराज नहीं साधारण वैद्यराज है।

२—औषधि शास्त्र को पूर्ण रीति से कर उनकी अनभिज्ञता को दूर करना चाहिये, कारण कि यही तुम्हारा मूल अस्त्र है। इसकी दृढ़ता से ही तुम अनुत्तीर्ण होगे, यदि नहीं तो 'वैद्य' नहीं बिना सींग के 'बैल' हो।

३—यदि शस्त्र शास्त्रोक्त को पूर्ववत आलस्य से चिकित्सित न करोगे, तो चिकित्सा यात्रा में अनुत्तीर्ण होते हुए किसी कालेज इस प्रकार न रहोगे जैसे मुसाफिर टिकट हाथ में लिये हुए डाक गाड़ी में आलस्यवश न सवार हो उसके छूट जाने पर अवाक् हो रह जाता है।

४—यदि इस चिकित्सा को शिक्षित पर्व शुद्धता पूर्वक न अपनाओगे, तो रोग रूपी शत्रु से चिकित्सा युद्ध में इस प्रकार पराजित होगे जिस प्रकार रण कौशल में प्रवीण होता भी निरस्त्र सैनिक।

५—यह अधिकांश में आयुर्वेद विद्यालय एवं पाठशाला स्थापित कर आयुर्वेद वैद्य यों न तैयार करोगे तो इस प्रकार नेस्त नाबूद हो जायेंगे जिस प्रकार वर्षा ऋतु के पश्चात् 'वीर बहूटी'।

६—यदि पश्चिमीय जगत तथा आयुर्वेद के औषधियों की खिचड़ी बना चिकित्सक बनोगे तो खिचड़ी भोजन से आयुर्वेद की जो उसी प्रकार स्थापित करोगे जैसे रेवड़े वालों के चलते फिरते क्वाटर। ले०—'यमका दूत'

१—सर्प मृत्यु (सर्प विष का शर्तिया इलाज) संपूर्ण जगत में विषों की रानी दवा है। यदि विषैले जानवर इससे मर जाते हैं। विष खाते ही तत्काल प्रयोग हो जाता है। ऐसा भी चिकित्सा प्रणाली में अभी तक ऐसी दवा नहीं है। न कोई तैयार ही कर सकता है। व्यवहार करके तुरन्त ही फायदा उठावें इसके १०० फी सदी होते हैं दाम का शीशी १)।

२ कृष्ण संजीवनी—यह मुमूर्ष अवस्था की अत्यन्त दवा है। हृदय में शक्ति देकर दवा उसे बचा लेती है। आकस्मिक मृत्यु में यह प्राण डालने की काम है—मूल शक्ति जिन्दा होने से पशुओं पर प्रयोग करके देखा जा सकता है। का० फी शीशी ५॥) है।

मिलने का पता—

श्रीभगवत आयुर्वेदाश्रम फीलखाना, बेकनगंज कानपुर (इटावा)

शरद ऋतु की अनुपम भेंट

उत्तम पौष्टिक पाक सेवन कीजिये

प्रिय ग्राहको, तथा गृहस्थियो ! यही सबसे अच्छा समय है कि आप अपनी शारीरिक स्वास्थ्य कमी, वीर्यकी कमजोरी तथा पुरुषत्व को कायम रखने के लिये पौष्टिक औषधि सेवन करें। कारण कि इस ऋतु में स्वाभाविक मनुष्य की पाचनशक्ति अति तीव्र होकर पौष्टिक पदार्थ को पाचन कर वीर्य वृद्धि करने में विशेष सहायक हो सकती है—अतः आप हमारे यहांके विश्वस्त रूप से शुद्धता पूर्वक बने हुए शास्त्रोक्त पाक सेवन कीजिये विशेष प्रशंसा की आवश्यकता नहीं आप स्वयं एकबार मंगाकर अनुभव कर लेंगे।

कुछ पौष्टिक पाक

शतावरी पाक प्रसूत नाशक २॥) सेर
कौंच पाक महा पौष्टिक ३॥) "
मूसली पाक वीर्य वर्द्धक ५) "
अश्वगंधा पाक कृश० नाशक ३॥)
कुंकुम पाक, कामोत्तेजक ४)
कस्तूरी पाक महा उत्तेजक ८)
चन्दनानन्द मोदक, रक्तभेक ५)

नोट—जो सज्जन रोगानुसार अपनी इच्छा तुल्य पाक तैयार करवा कर सेवन करना चाहें हम विशेष ध्यान से शीघ्र बनवाकर भेज सकते हैं पर चौथाई मूल्य पेशगी देना होगा।

नपुंसक जीवन पाक कमजोरतानाशक १०) सेर
सौभाग्यसुंदा पाक स्त्री के सर्व रोग ४) "
सुपारी पाक, प्रदरका शत्रु ४) "
ब्राह्मी पाक, बुद्धि वर्द्धक २॥) "
भिलावा पाक, कुष्ठ नाशक ५) "
गोखरू पाक, मूत्र शोधक ३) "
चोबचीनी पाक, भगंदर नाशक ५) "

मैनेजर—श्रीभगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी
बरांवोकपुर इटावा (यू० पी०)